पं. श्रीराम शर्मा आचार्य
दर्शन एवं दृष्टि

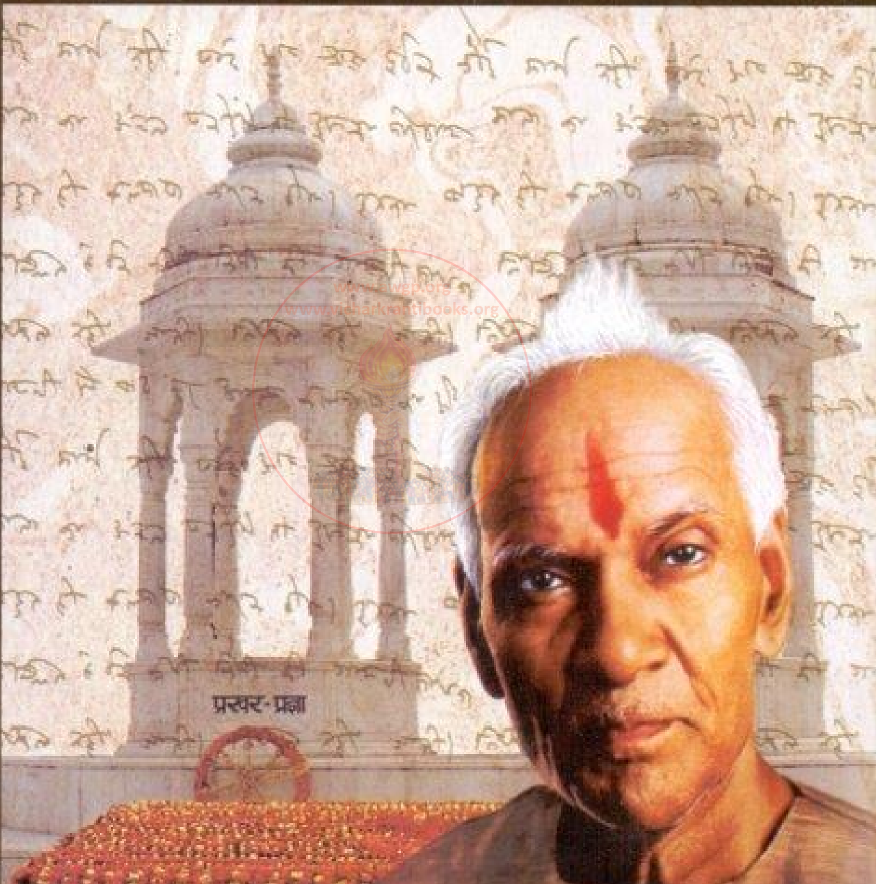

- ब्रह्मवर्चस्

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

दर्शन एवं दृष्टि

सम्पादक

ब्रह्मवर्चस

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

प्रकाशक

श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (TMD)

गायत्री नगर, श्रीरामपुरम्-शांतिकुंज, हरिद्वार

(उत्तराखण्ड) पिन-249411

प्रथम आवृत्ति-सन्-2012 मूल्य्-125/-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

Pt. Shriram Sharma Aacharya : Darshan Evam Drishti

- पं. श्रीराम शर्मा आचार्य : दर्शन एवं दृष्टि

- सम्पादक :
ब्रह्मवर्चस

- संशोधित संस्करण :
सन्- 2012

- मूल्य-125/-

- प्रकाशक :
श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (TMD)
गायत्री नगर-श्रीरामपुरम्-शान्तिकुञ्ज
हरिद्वार (उत्तराखण्ड)
पिन- 249411

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

गायत्री तीर्थ शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
फोन-01334-260602,260309, 260328 फैक्स 260688
ईमेल- shantikunj@awgp.org
बेवसाइट-www.awgp.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समर्पण

तेरा तुझको अर्पण क्या लागे मेरा ...

परम पूज्य गुरुदेव
पं. श्रीराम शर्मा आचार्य
एवं
परम वन्दनीया
माता भगवती देवी शर्मा
के
श्री चरणों में ...

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अनुक्रमांक

क्र.	विवरण	पृ.क्र.
1.	सम्पादकीय	V
2.	हमारे गुरुदेव	01
3.	पत्रिका विवरण	09
4.	अश्वमेध महायज्ञ	14
5.	विराट संस्कार महोत्सव	16
6.	प्रज्ञापुराण कथा आयोग	26
6.	प्रशिक्षण सत्र	42
7.	युग चेतना शिविर	55
8.	कार्यशालायें	56
9.	शिविर	57
10.	विभिन्न वर्गों के विशेष प्रशिक्षण सभा	59
11.	विशिष्ट सभा	75
12.	साधना की महत्ता और व्यवस्था	78
13.	गायत्री शक्तिपीठ	90
14.	गुरुग्राम आंवलखेड़ी	107
15.	अखण्ड ज्योति संस्थान	110
16.	गायत्री तपोभूमि	111
17.	शांतिकुंज	116
18.	सम्पन्न कराये गये संस्कार	137
19.	भाषान्तर विभाग	145
20.	ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान	146
21.	यज्ञ चिकित्सा	154
22.	भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा	161
23.	संगठन का स्वरूप	221
24.	जोन्स का विभाजन	278
25.	साधक की दैनन्दिनी	289
26.	प्रज्ञा मण्डल/महिला मण्डल/युवा मण्डल	297
27.	आपदा प्रबंधन	311
28.	श्रीराम झोला पुस्तकालय	316
29.	युग निर्माण फिल्म्स	319
30.	गायत्री कुंज देव संस्कृति विश्वविद्यालय	322

www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सम्पादकीय

समय के साथ बदलती परिस्थितियां नित नई चुनौतियां प्रस्तुत करती हैं। जटिलताओं के मकड़जाल में छटपटाती जीवित जीवनियां मानसिक तनाव, सांस्कृतिक विलम्बना और अपूर्णता से छुटकारा पाना चाहती है। सुविधाओं की ओर अंधी दौड़ के प्रतिभागी मृग मारीचिका के चक्रव्यूह में फँस जाते हैं। ऐसे में हताशा, कुंठा और निराशा का दावानल अपना प्रभाव दिखाकर प्रतिभाओं पर कुठाराघात करने लगते हैं। असमान्य परिस्थितियों के धरातल पर बहुआयामी जीवन को जीने की व्यवहारिक कला सीख कर यथार्थ के समीप पहुंचना सहज नहीं है। अखिल विश्व गायत्री परिवार के संस्थापक पं. श्रीराम शर्मा आचार्य की मानवीय जीवन लीला वर्तमान समय में प्रेरणा पुंज बनकर विश्व के करोड़ों लोगों के आत्म विश्वास को पुष्ट करके संतुष्टि के मार्ग प्रशस्त कर रही है। समाज के सभी पक्षों को एक साथ आत्मसात करना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। विज्ञान, दर्शन, कला, साहित्य, संगीत, ज्योतिष, कर्मकाण्ड, पराविज्ञान, सूक्ष्म जगत सहित अनगिनत गूढ़ विषयों के अनसुलझे रहस्यों पर पूर्ण अधिकार रखते हुए 3 हजार से अधिक पुस्तकों का लेखन, वेद, पुराण, उपनिषद, आदिग्रन्थ, विभिन्न धर्म ग्रन्थ, अध्यात्म साहित्य का सुस्पष्ट भाष्य, युग संगीत और नाद के पुरातन विश्लेषण को सम सामयिक रूप में स्थापित करना, अध्यात्म की पगदंडी से धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण जैसे लक्ष्यों का भेदन करना, साधारण मानव की कल्पना से परे है जिसे पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने अपने स्थूल शरीर से कर दिखाया। देव संस्कृति के साथ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पश्चिमी देशों का जुड़ना, आदि परम्पराओं, योग की विधाओं और आयुर्वेद की ओर रुझान, ज्योतिष, वास्तुशास्त्र और वैदिक रीतियों का बढ़ता प्रभाव गायत्री परिवार के विचार क्रांति अभियान को मिल रही सफलता का प्रत्यक्षीकरण ही तो है जिसे व्यवहार, तर्क और आंकड़ों की कसौटी पर मापा जा सकता है। जिज्ञासाओं को लेकर समस्याग्रस्त लोग निदान पाकर और विभीषिकाओं के जकड़े मस्तिष्क संतुष्ट होकर वापिस लौटते हैं तब उनका जीवन पं. श्रीराम शर्मा आचार्य को अवतारी सत्ता के रूप में स्वीकार कर परम पूज्य गुरुदेव मान सत् चिन्तक, सत् व्यवहार और सत् कर्म के मार्ग पर स्वमेव ही अग्रसर होने लगता है। ऐसे युग ऋषि, तपोनिष्ठ, वेदमूर्ति को साक्षात् ईश्वर के रूप में स्वीकारना अतिश्योक्ति नहीं बल्कि यथार्थता है।

पुस्तक के इस नवीनतम संस्करण में गुरुदेव की लेखनी से निर्मित कुछ बिखरे मोती, सन् 2010 तक के विस्तार के संक्षिप्त आंकड़े, संस्था की नीतियों–रीतियों से जुड़ी समीक्षा तथा भविष्य की योजनाओं की रूपरेखा आदि बानगी के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। वास्तविकता तो यह है कि अवतारी सत्ता के विराट स्वरूप और अनन्त तक विस्तारित विकास पर कलम चलाना मानवीय सामर्थ्य से परे है। ऐसे में युग ऋषि की चुम्बकीय ऊर्जा का अनुभव स्वयं किया जा सकता है परन्तु गूंगे के गुड़ की तरह उसके स्वरूप की पूर्ण व्यवस्थ करना सम्भव नहीं है। परमपूज्य गुरुदेव अपने अनुदान वरदान से आपकी जीवन वाटिका को पुष्पित पल्लवित और सुगन्धित कर पूर्णता प्रदान कर दें, इसी शुभकामना के साथ...

- ब्रह्मवर्चस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हमारे गुरुदेव

प्रकृति के नियम अटूट होते हैं। चक्रीय सिद्धान्त का आध्यात्मिक प्रतिपादन हर युग में हुआ है। अनाचार, अत्याचार, अव्यवस्था के वातावरण की विभीषिकाओं को समाप्त कर सतयुग की वापसी का क्रम परमसत्ता द्वारा निर्धारित है। समय के साथ बदलती परिस्थितियों को सुखद भविष्य की ओर ले जाने के लिए ईश्वरीय सत्ता का अवतरण परम पूज्य गुरुदेव श्री राम शर्मा आचार्य के रूप में धरती पर हुआ। साधना, तपस्या, त्याग और समर्पण के वरदानों को प्रतिभावनों पर लुटाकर गुरुदेव ने अल्प समय में ही युग शिल्पियों की सेना खड़ी कर दी है। अध्यात्म के आदिकालीन मूल्यों को सम–सामयिक परिस्थितियों के साथ जोड़कर सद्मार्ग पर चलने वालों की अन्तहीन कतार खड़ी करके पूज्य गुरुदेव ने विश्व को आश्चर्य चकित कर दिया। स्थूल शरीर के प्रयासों, प्रेरणाओं एवं मार्गदर्शन से कहीं अधिक सूक्ष्म शरीर की चेतनात्मक अनुभूति और अब कारण शरीर की रोमांचकारी संवेदनायें सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में प्रभावी हो रही है। गुरुसत्ता के साथ जुड़ जाने के बाद का जीवन नये युग के सोपान में पहुंचने जैसा अनुभव होता है। गुरुदेव के स्थूल शरीर की जीवन यात्रा साक्षात महाकाल की नर लीला है।

पूज्य गुरुदेव का जन्म अश्विन कृष्णा 13 संवत् 1968 में आगरा जिले के आँवलखेड़ा ग्राम में हुआ। यह यमुनापार, आगरा–जलेसर मार्ग पर आगरा से 12 मील दूर स्थित है। आज तो यहाँ पूज्य गुरुदेव की माताजी की स्मृति में स्थापित लड़कों का इण्टर कॉलेज एवं पूज्यवर द्वारा अपनी जन्मभूमि में स्थापित लड़कियों का डिग्री कॉलेज, एक चिकित्सालय तथा शक्तिपीठ स्थापित हो जाने से अच्छी–खासी कस्बे स्तर की जनसंख्या है, पर कभी यह छोटा–सा गाँव मात्र था। जिस घर में वे जन्मे, वह एक सम्पन्न घर था। 2000 बीघा जमीन थी। किसी बात की कमी नहीं थी। संभवतः उनके पिता पंडित रूपकिशोर शर्मा एवं माता दानकुंवरि जी, स्वयं भू मनु–शतरूपा की तरह तप–साधना कर साक्षात् भगवान को अपने घर जन्म लेने के लिए विवश कर दिया था। तप की अवधि में एक ही प्रार्थना रही होगी कि वे एक ऐसी सुसन्तति को जन्म दें जो अपने सत्कार्यों में विश्व–वसुधा को धन्य कर दे। यही हुआ भी।

उनकी प्राथमिक स्तर तक की तथा संस्कृत की शिक्षा घर रहकर ही एक उच्च संस्कारवान आत्मा पण्डित रूपराम जी के माध्यम से पूरी हो गई। मास्टर जी उन्हें नैसर्गिक परिसर में ले जाते व वहां अनौपचारिक तरीके से व्यावहारिक शिक्षा देते। प्रतिभा के धनी वे इतने थे कि वजीफे के साथ प्राइमरी बोर्ड की परीक्षा आगरा मण्डल से उत्तीर्ण की, किन्तु इसके बाद स्वयं ही इस बाबू बनाने वाली

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शिक्षा पर विराम लगा दिया। जब समय मिलता अपने कुछ सखाओं को लेकर चले जाते व अमराई के सघन कुंजों में बैठकर गायत्री व अध्यात्म–साधना की चर्चा करते।

जितना कुछ पढ़ा था, उससे विद्या ऋण चुकाने के लिए उन्होंने दलित, शोषित से लेकर हर उस बालक को जिसे विद्यार्जन का अवसर नहीं मिल पाया था, अक्षर–ज्ञान कराते थे ताकि इसके बाद वे व्यावहारिक जीवन की साधना सीखकर स्वयं को गढ़ सकें। विद्या विस्तार का उनका यह क्रम स्वयं के लिए और दूसरों को वितरित करने के लिये भी आजीवन चलता रहा।

पंडित मदन मोहन मालवीय द्वारा दिया गया गायत्री मंत्र और पिता द्वारा की गई उसकी सारगर्भित व्याख्या उन्होंने गांठ बांध ली थी। जब भी अवसर मिलता, घर से निकल भागते व किसी वृक्ष के नीचे गायत्री जप में निरत तब तक बैठे रहते जब तक कि घर वाले ढूढ़ न लें। क्रमबद्ध अनुष्ठान भले ही पन्द्रह वर्ष की आयु में हिमालयवासी अपने गुरु रूपी परोक्ष सत्ता से मार्गदर्शन के बाद आरम्भ हुए हों, परन्तु उन्होंने अपने ब्राह्मणत्व को वेदमाता गायत्री की नियमित उपासना के माध्यम से उपनयन संस्कार के बाद ही जगाना आरम्भ कर दिया था।

दैवी सत्ता का प्राकट्य जब किसी महामानव के जीवन में होता है तो सोने में सुगन्धि का काम करता है। परोक्ष मार्गदर्शक सूक्ष्म शरीरधारी ढूंढ़ते भी उन्हें ही हैं, जिनके माध्यम से उन्हें मानव मात्र के कल्याण हेतु सारा ढांचा विनिर्मित करना होता है। समष्टिगत चेतना का अवतरण जिस स्थूल तनधारी में होता है, फिर वह सामान्य न रहकर असामान्य अवतारी पुरुष हो जाता है। क्रियाकलाप चर्मचक्षुओं से तो सामान्य ही जान पड़ते हैं, किन्तु वह जो कुछ कृतत्व करता चला जाता है, वही उस युग की नीति का आधार बन जाता है। युग परिवर्तन ऐसी ही आत्मबल सम्पन्न आत्माओं के बलबूते बन पड़ता है।

पूज्य गुरुदेव के बाल्यकाल में ही पन्द्रह वर्ष की आयु के बाद आए वसंत पर्व के ब्रह्ममुहूर्त में पूजा की कोठरी में, एक प्रकाशपुंज प्रकट हुआ। उस दिव्य प्रकाश से सारी कोठरी जगमगा उठी। प्रकाश के मध्य एक योगी का सूक्ष्म छाया शरीर उभरा। इनका स्थूल शरीर एक ऐसे कृशकाय सिद्धपुरुष के रूप में है, जो अनादिकाल से एकाकी, नग्न, मौन, निराहार रहकर अपनी तप–ऊर्जा द्वारा अपने को अधिकाधिक प्रचण्ड–प्रखर बनाता चला आ रहा है। एक दिगम्बर देहधारी हिमराशि के मध्य खड़ी दुर्बल काया, यह तो स्थूल रूप में उपलब्ध उनका एकमात्र चित्र है, जो गुरुदेव की पहली हिमालय यात्रा के समय उनके आग्रह पर स्वयं स्वामी सर्वेश्वरानन्द जी ने उनके समक्ष प्रस्तुत किया। यही चित्र गायत्री परिवार में दृश्य प्रतीक के रूप में आज भी उपलब्ध है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

किन्तु इससे भी अधिक महत्वपूर्ण है, उनका सूक्ष्म अस्तित्व, जिसमें वे गति, काल, दिशा से परे सतत परिभ्रमण करते व अन्यान्य ऋषि–सत्ताओं की तरह प्रचण्ड प्राणधारी आत्माओं को मार्गदर्शन देते दिखाई देते हैं, वे ही अपने सूक्ष्म रूप में, दिव्य प्रकाश के रूप में गुरुदेव के समक्ष आये एवं उनके कौतूहल को समाप्त करते हुए बोले 'हमारे तुम्हारे जन्म–जन्मान्तरों के सम्बन्ध हैं। तुम्हारे पिछले जन्म एक से एक बढ़ कर रहे हैं, किन्तु प्रस्तुत जीवन और भी विलक्षण है। इस जन्म में समस्त अवतारी सत्ताओं के समतुल्य पुरुषार्थ करना है, भारतीय संस्कृति के नवोन्मेष हेतु एक विशाल संगठन देवमानवों का खड़ा करना है तथा इसके लिए प्रचण्ड तप–पुरुषार्थ करना हैं।'

महान मार्गदर्शक का सर्वप्रथम अनुग्रह जो पहले दिन मिला, उसने पूज्य गुरुदेव से सम्पूर्ण समर्पण मांगा, भावी जीवन मानव मात्र के हित हेतु जीने के लिए मांगा। उनके मास्टर ने उन्हें सच्चे अर्थों में नग्न, निर्वस्त्र कर दिया। अपना कहने जैसा उनके पास कोई पदार्थ तो क्या, शरीर, मन, भावना, कामना कुछ नहीं बचा। एक अवधूत स्थिति में लाकर उन्हें छोड़ दिया गया।

पहला आदेश था चौबीस लक्ष के चौबीस गायत्री महापुरश्चरण अगले दिनों सम्पन्न करना। उन्होंने कहा 'चाहे कितनी भी प्रतिकूलताएँ आएं, तुम्हें लक्ष्य अवश्य पूरा करना है, इस बीच कुछ समय स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी पड़ सकती है, पर नियम–भंग मत होने देना। जो भी समयक्षेप उधर हो उसकी पूर्ति पर तुमसे महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न कराये जा सकें। इस बीच चार बार हिमालय बुलाने की बात उन्होंने कही। कभी एक वर्ष के लिए, कभी कम अवधि के लिए।' हिमालय बुलाया जाना इसलिए जरूरी था कि वह सिद्ध आत्माओं की साधनास्थली है। वह ऐसा पारस है, जिसका स्पर्श मात्र कर व्यक्ति तपे कुन्दन की तरह निखर जाता है।

हिमालय यात्रा कब करनी है, इसका निर्देश समय–समय पर सूक्ष्मप्रेरणा के रूप में किए जाने की बात कह कर उस परोक्षसत्ता ने तीसरा निर्देश दिया कि जन्म जन्मांतरों से पुण्य संग्रह करती आ रही देवसत्ताओं की पक्षधर जाग्रतात्माओं को संगठित कर एक माला में पिरोया जाना है। वे ही नवयुग निर्माण, सतयुग की वापसी में प्रमुख भूमिका निभायेंगी। इसके लिए उन्होंने पूजागृह में जल रही दीपक ज्योति को लक्ष्य कर 'अखण्ड ज्योति' नाम से समय आने पर विचारक्रान्ति का अलख जगाने वाली एक पत्रिका आरंभ करने की बात कही व कहा कि उस दीपक को अब सतत जलाते रहना चाहिए। इसके प्रकाश से तुम्हें प्रेरणा मिलती रहेगी एवं समष्टिगत प्रवाह से वे सभी विचार प्राप्त होते रहेंगे, जिनके माध्यम से अगले दिनों अध्यात्म तंत्र का परिष्कार नवयुग का सूत्रपात होना है। अखण्ड

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दीपक ही समय–समय पर परोक्ष जगत से आने वाले दैवीय मार्गदर्शन को तुम तक पहुंचाएगा, अतः जहां भी रहो, इसे अपने पास पूजागृह में रखना। इसका मार्गदर्शन मात्र लोगों का कल्याण कर देगा।'

चौथा मार्गदर्शन था चौबीस लक्ष के चौबीस महापुरश्चरणों की समाप्ति पर एक विशाल सहस्रकुण्डी महायज्ञ आयोजित करना ताकि दैवी सत्ता की अंशधारी आत्माएं एक स्थान पर एकत्र हो सकें। इन्हीं में से गायत्री परिवार रूपी संगठन का बीजांकुर उभरने व कालान्तर में वृक्ष का रूप लेने की बात वे बता गए। यह भी कह गए कि समय–समय पर वे बताते रहेंगे कि उन्हें कौन सा कदम उठाना है? कब कहां स्थान परिवर्तन करना है, क्या कार्यक्रम कहाँ से आरंभ करना है। वे तो मात्र एक समर्पित शिष्य की तरह अपना कर्तव्य निबाहते रहें, शक्ति उन्हें सतत उनके द्वारा प्राप्त होती रहेगी।

दिव्य प्रकाशधारी सत्ता से निर्देश दिया कि जो आत्मबल का उपार्जन अगले दिनों होगा, उसका नियोजन प्रतिकूलताओं से जूझने, नवसृजन का आधार खड़ा करने तथा देवताओं की, ऋषियों की प्राणशक्ति का अंश लेकर जन्मी जाग्रतात्माओं का एक परिवार खड़ा करने के निमित्त करना है। उनका मूक निर्देश था कि 'प्रस्तुत वेला परिवर्तन की है। इसमें अगणित अभावों की एक साथ पूर्ति करनी है, साथ ही एक साथ चढ़ दौड़ी अनेकानेक विपत्तियों से जूझना है। इसके लिए व्यापक स्तर पर ऋषि सत्ताओं द्वारा जो मोर्चेबन्दी पहले की जाती रही है उसकी झलक–झांकी भी तुम्हें दिखाएंगे तथा तुम्हें किस प्रकार यह सब करना है, यह भी सतत बताते रहेंगे। आगे उन्होंने बताया कि 'हम लोगों की तरह तुम्हें भी सूक्ष्मशरीर के माध्यम से अति महत्वपूर्ण कार्य करने होंगे। इसके लिए पूर्वाभ्यास हिमालय यात्रा द्वारा सम्पन्न होगा।'

पूज्यवर की 1926 में अपने प्रकाशपुंज से भेंटवार्ता के बाद वर्षों का मूल्यांकन करें तो हम पाते हैं कि 1926, 27, 28 में तो उन्होंनें अनुष्ठानक्रम पूरी तरह चलाया। 1928 के उत्तरार्द्ध से 1936 के उत्तरार्द्ध तक वे स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के रूप में सक्रिय रहे। फिर बापू का निर्देश मिलने पर लेखनी की साधना, पूजा उपासना का नियमित क्रम 1937 से आरंभ कर 1941 तक यथावत चलाया एवं पूर्णाहुति के रूप में पहले दो शतकुण्डी गायत्री महायज्ञ 1953 तथा 1956 में तथा सहस्र कुण्डी महायज्ञ के रूप में 1958 में सम्पन्न किए। पूर्णाहुति तक उन्होंने सारे व्रत–अनुशासनों का निर्वाह उसी प्रकार किया जैसा कि उनके गुरु ने उन्हें बताया था। इस बीच में 1951 में वे एक बार हिमालय यात्रा पर गए, जो कुछ माह की थी व पुनः बाद में 1961 में एक वर्ष के लिए दुर्गम हिमालय उन्होंने प्रवास किया। सब कुछ अपने मार्गदर्शक के बताये निर्देशों के अनुरूप।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पूज्य गुरुदेव गायत्री महामंत्र के माध्यम से ऋतम्भरा, प्रज्ञा और ब्रह्मवर्चस की साधना करते थे। इन दोनों ही तत्वों को वे अपने आत्म–देवता में समाविष्ट मानते थे। उनका मत था कि जिसने अन्तःकरण को तपोवन बना लिया व वहां एकनिष्ठ होकर ब्रह्मचेतना से तादात्म्य स्थापित करने का प्रयास किया, वही सच्चा साधक है।

पूज्य गुरुदेव की साधना–पद्धति को जितना समीप से, गहराई से वंदनीया माता जी ने देखा व समझा था उतना अवसर शायद ही किसी को मिला हो। वंदनीया माता जी कहा करतीं थी कि गुरुदेव ने जितना कड़ा तप किया है, उतने ही दिव्य अनुदान उन्हें मिले हैं। वस्तुतः उनका सारा जीवन तपोमय रहा है, सब कुछ साधन से कमा सकने की असीम संभावनाएं होते हुए भी जो अपनी भौतिक महत्वाकांक्षाओं पर कड़ा नियंत्रण लगा ले, वह सही अर्थों में जीवन–संग्राम में प्रतिकूलताओं से लड़ रहा एक जुझारू योद्धा है।

चौबीस महापुरश्चरणों के बारे में लोगों को मात्र इतनी जानकारी है कि प्रतिदिन छह से आठ घण्टा बैठकर वे 40–90 मालाएं गायत्री का जप प्रतिदिन करते रहे। परम सात्विक, जौ की रोटी तथा छाछ पर निर्वाह करते रहे एवं अनुष्ठानकाल में प्रयुक्त बंधनों–प्रतिबंधनों का कठोरता से पालन करते रहे। गौ माता के गोबर में जो तिल–जौ निकलता है, उसे निथारकर स्वच्छ कर उससे जितना अन्न मिल जाता उसी से शरीरयात्रा चल जाती थी। तीन वर्ष तो वे नैमिषारण्य में रहे, वहां के व्यक्ति अभी भी बताते हैं कि श्रद्धालुओं द्वारा सरोवर में डाले गए चावलों को वे कपड़े की आड़ लगाकर एकत्र कर लेते थे व उतने को ही पकाकर बिना किसी मिर्च–मसाले के उदरस्थ कर नित्य 5 घण्टे जल में खड़े रहकर जप किया करते थे। यह तो वह पक्ष है जो अभी तक ज्ञात है, दृश्य है, प्रत्यक्ष है, पर उन दिनों प्रसिद्धि से दूर रहने के कारण वे उसे सम्पन्न कर सकें। चालीस वर्ष तक की आयु जो युवावस्था का चरमोत्कर्ष मानी जाती थी, उन्होंने कड़ी तप–साधना में नियोजित कर दी। इस अवधि में कितनी ही बार निराहार रहना पड़ा, मात्र मट्ठ पर ही जीकर अपनी काया का अनिवार्य, किन्तु सीमित पोषण वे करते रहे। वस्तुतः यह तो उनकी स्थूल व दृश्य साधना थी। मोटेतौर से जितना देखा जा सके, उतना ही समझा जा सकता है, पर वस्तुतः साधना उस क्रिया–कलाप तक ही सीमित नहीं थी।

साधारणतया साधक अपने साधना के स्वरूपों को गोपनीय ही रहने देते हैं, किन्तु गुरुदेव का जीवन तो एक खुली किताब है। उन्होंने जो भी किया उसे लेखनी के माध्यम से जन–जन तक पहुंचा दिया। जिसे उचित समझा, वाणी से समझाया व जिसे और अधिक पात्र समझा उसके रोम–रोम में वह ज्ञान समाविष्ट

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कर दिया। 1950 से 1961 के बीच की उनकी अखण्ड ज्योति पत्रिका गायत्री विज्ञान, गायत्री रहस्य, गायत्री के अनुभव, गायत्री तंत्र एवं गायत्री योग नामक पांच 200–200 पृष्ठ के ग्रंथ तथा तीन भागों में छपा, गायत्री महाविज्ञान इसका साक्षी है। बाद में विज्ञान सम्मत प्रतिपादनों के साथ जोड़कर अपनी सुबोध शैली में उन्होंने 1977 में चार विशेषांक अखण्ड ज्योति के प्रकाशित किए (मार्च से जून 1977) जिसमें उन्होंने साधना विधान का निचोड़ लिखकर रख दिया।

एक दिन मालवीय जी ने कहा 'यदि कांग्रेस को लोकप्रिय बनाना है तो हर घर से एक मुट्ठी अनाज या एक पैसा संग्रह करना चाहिए ताकि जनता यह समझे कि कांग्रेस हमारी है' औरों के गले यह परामर्श उतरा कि नहीं किन्तु बालक श्रीराम मत्त को यह सूत्र समझ में आ गया। उन्होंने युग निर्माण योजना से लेकर गायत्री परिवार खड़ा करने तक इसी सूत्र को लेकर व्यवहार में उतारा। परिणति स्वरूप मिली अपार जनश्रद्धा व प्रत्येक की घनिष्ट आत्मीयता। करोड़ों की पूंजी से बने इस संगठन की प्रत्येक गतिविधि के मूल में अंशदान की मूलवृत्ति आज भी जिन्दा है इसी से करोड़ों लोगों का एक संगठन बना है।

आसनसोल जेल का प्रसंग चल रहा था वहां से सरकार ने सभी को छोड़ दिया व सभी कलकत्ता पहुंचे। अन्य लोग तो मंच की तरफ बढ़ गये, पूज्य गुरुदेव उत्तर प्रदेश के ग्रामीण परिवार से आये सत्याग्रहियों के जत्थे में मिल गये, सबकी कुशल पूछी व उन्हीं के साथ लौट आए।

इन्हीं दिनों एक क्रांतिकारी काम उन्होंने और किया। गांधी–इर्विन समझौते के अन्तर्गत एक विषय लगानबन्दी का भी था। आगरा सबसे बड़ा जिला संयुक्त प्रान्त का था। लगानबन्दी सम्बन्धी आंकड़े पन्तजी ने नैनीताल से मंगवाये। पूज्य गुरुदेव ने अकेले गांवों में घूम–घूम कर किसानों के नाम, रकवा, लगान की रकम आदि की पूरी छान–बीन कर सारे आंकड़े तैयार किए। इतनी विस्तृत, प्रमाणिक जानकारी पंतजी के पास पहुंची तब उन्हें यह मालूम हुआ कि यह काम श्रीराम मत्त नामक एक देहाती स्वयंसेवक का है, तो उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। इन्हीं आंकड़ों के आधार पर पूरे प्रान्त के उन सभी देशभक्त किसानों या गांवों का लगान माफ कर दिया गया जिन्होंने लगानबन्दी का एलान किया था। स्वयं महात्मागांधी ने इस कार्य की प्रशंसा करते हुए कार्यकर्त्ताओं से कहा था कि 'कांग्रेस को कार्यकर्त्ता चाहिए तो इस स्तर का।' गुरुदेव के जीवनवृत्त का यह 1936 तक का प्रसंग बड़े उतार–चढ़ावों व संघर्ष भरे घटनाक्रमों से भरा है। इसका वास्तविक मूल्यांकन तब होगा, जब लोग जानेंगे कि एक सर्वोच्च स्तर का ध र्मोपदेशक, महर्षि अरविन्द की तरह ऐसा क्रांतिकारी जीवन जीता रहा, जिसकी हमें कोई जानकारी तक नहीं रही।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सत्याग्रह उनके जीवन में कूट–कूट कर भरा था। घर वाले नहीं चाहते थे कि वे स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लें। कम उम्र में शादी हो गई थी, ससुराल वाले भी असहयोग करते थे। घर वालों ने तो एक तरह से उन पर पहरा बैठा दिया था, पर वे एक दिन पाखाने जाने के बहाने घर से लोटा लेकर निकले और नेकर–बनियान में ही सीधे 'आगरा कांग्रेस स्वयंसेवक भर्ती दफ्तर' में जाकर रुके। उनकी अन्तःप्रेरणा इतनी जबर्दस्त थी कि वे किसी भी प्रतिरोध के सामने कभी झुके नहीं।

आगरा जिले का स्वाधीनता संग्राम सन् 1947 के गदर से ही प्रारम्भ हो गया था, जब आगरा के क्रान्तिकारियों नें अंग्रेजों के महत्वपूर्ण फौजी ठिकाने पर आक्रमण करने के लिए 30 कि.मी. लंबी यात्रा की थी। पांच जुलाई को भयंकर युद्ध हुआ था। सुचेता नाम का यह गांव फतेहपुर सीकरी मार्ग पर पड़ता है, जहां आज भी खुदाई में मिलने वाली हड्डियां इसे जिले के गौरवपूर्ण स्वाधीनता संग्राम की याद दिलाती है।

1919 में रौलट एक्ट आने के साथ ही यहां स्वाधीनता संग्राम के नये अध्याय की शुरूआत हुई, जिसे लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी, हृदयनाथ कुजंरू आदि निरन्तर हवा देकर भड़काते रहे। 1923–24 में श्रीकृष्णदत्त पालीवाल के आ जाने और सैनिक अखबार का प्रकाशन आरम्भ हो जाने के साथ ही यहां कांग्रेस संगठित हुई और इस जिले में व्यापक रूप से स्वाधीनता संग्राम प्रारम्भ हुआ। यों पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के हृदय में आजादी की आग तभी भड़क उठी थी, जब महात्मा गांधी ने देशव्यापी दौरा किया और विद्यार्थियों से गुलामी की जंजीरें मजबूत करने वाली अंग्रेजी शिक्षापद्धति के प्रति विद्रोह की आग भड़काई। उनकी अपील से सारे देश में व्यापक प्रतिक्रिया हुई। पूज्य आचार्य जी भला उससे अछूते क्यों रहते? वे तब तक प्राइमरी ही उत्तीर्ण कर सके थे, उन्होंने स्कूली पढ़ाई से मुंह मोड़ लिया। घर पर रहकर ही संस्कृत भाषा, अपने भारतीय आर्षग्रंथ तथा विशेष रूप से महापुरुषों की जीवनियां और राजनेताओं की वक्तृताएं पढ़ने में अभिरुचि करने लगे। विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने भी किसी स्कूल में शिक्षा नहीं पाई थी, उनका ज्ञान स्व–उपार्जित था। पूज्य आचार्य जी की विद्या भी इसी कोटि की थी। उससे उनके हृदय में स्वाभिमान और स्वाधीनता की आग तीव्र गति से भड़कती चली गई। राजनेताओं के भाषण सुनने के लिए वे दूर–दूर तक जाते। स्वयंसेवक के रूप में भर्ती हो जाने के बाद से तो आगरा ही उनकी गतिविधियों का केन्द्र बिन्दु हो गया।

श्री पालीवाल जी ने दैनिक सैनिक की स्थापना की। यहीं से पूज्य आचार्य जी के सक्रिय राजनीतिक जीवन का श्रीगणेश हुआ। उन्होंने प्रेस का कार्य,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कम्पोज, प्रूफ रीडिंग और लेखन आदि प्रारम्भ किया। अपना काम इनकी लगन, निष्ठा और कुशलतापूर्वक करते थे कि देखने वालों को भी आश्चर्य होता था। स्वभाव की मृदुलता के कारण वे न केवल दैनिक सैनिक परिवार के परम चहेते बने, अपितु श्री कृष्णदत्त पालीवाल जी के विशेष कृपापात्र भी बने। लेखन की प्रतिभा उन्होंने बाबू गुलाबराय एम.ए. के लेख पढ़–पढ़कर स्वयं विकसित की।

उनके क्रान्तिकारी गीत न केवल दैनिक सैनिक में छपे, अपितु कानपुर से छपने वाले समाचार पत्र 'विद्यार्थी', जिसके सम्पादक श्री गणेश शंकर विद्यार्थी थे, में भी नियमित रूप से प्रकाशित होते थे। श्री विद्यार्थी जी उनको निरन्तर प्रोत्साहित करते रहते थे, जिससे प्रेरित होकर उन्होंने अपने गीत कलकत्ता में छपने वाले दैनिक विश्वामित्र में भी भेजना प्रारम्भ कर दिया। इन गीतों ने समूचो बंगला में क्रान्ति की आग भड़काने में अपूर्व योगदान दिया। पीछे तो 'किस्मत' और 'मस्ताना' जैसी प्रसिद्ध पत्रिकाओं ने भी उनकी रचनाएं प्रकाशित करना प्रारम्भ कर दिया। ये गीत अक्सर कांग्रेस के कार्यक्रमों–अधिवेशनों में भी गाये जाते थे।

आगरा जिले में वहां से प्रायः 40 किलोमीटर दूर कस्बा जरार, कांगेस सत्याग्रह का मुख्य केन्द्र बन गया। उसे कांग्रेस की छावनी कहा जाता था। तब आगरा के कलेक्टर श्री विलियम्सन थे। गांव के जमींदार श्री सूरजपाल सिंह अंग्रेजों के बड़े खैरख्वाह थे। उन्हें बुलाकर विलियम्सन ने डांट लगाई और कहा कि यदि कांग्रेस छावनी जरार से हटी नहीं, तो उनकी जमींदारी छीन ली जाएगी और हथियार के लाइसेन्स भी छीन लिए जायेंगे। श्री सूरजपाल सिंह ने अपने गुण्डों को लेकर सत्याग्रहियों को बुरी तरह पीटना, कष्ट देना, महिलाओं को बेइज्जत करना, जेवर लूटना प्रारम्भ किया, पर सत्याग्रही टस से मस नहीं हुए। एक दिन श्रीचंद दोनोरिया को तो इतना पीटा कि वे बेहोश हो गए। उन्हें मरा समझकर छोड़ दिया गया। पीछे कई माह बाद बेहोशी दूर हुई।

इस बीच पूज्य आचार्य जी तथा अन्य सत्याग्रहियों सर्व श्री रामबाबू, टीकाराम पालीवाल (पंजाबी शेर), मूलचंद, रामचन्द्र पालीवाल, अली ठाकुर, मेघसिंह उमरेठा, मुरारीलाल तथा गीतम सिंह आदि ने लगातार संघर्ष जारी रखा। एक दिन तो विलियम्सन अपनी पुलिस लेकर चढ़ बैठा, एक ओर सूरजपाल सिंह के गुण्डे, दूसरी ओर पुलिस, सत्याग्रहियों की भयंकर पिटाई हुई। पूज्य आचार्य जी के हाथ में झण्डा था। पुलिस अधिकारियों ने उन्हें इतना पीटा कि वे बेहोश होकर कीचड़ में गिर गये, पर झण्डा नहीं छोड़ा वे उसे मुंह में दबाए रहे। उनकी छाती पर पैर रखकर ही पुलिस झण्डे को निकाल पायी, सो भी फटा हुआ। आचार्य जी रात भर कीचड़ में पड़े रहे। लोगों ने उन्हें मृत समझा। उन्हें डाक्टर के पास ले जाया गया। झण्डे का टुकड़ा अभी तक भी उनके दांतों में दबा हुआ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

था। उपचार के पश्चात् जब वे होश में आये, तभी वह टुकड़ा निकाला जा सका।

1942 का आन्दोलन चरम सीमा पर था, तब उन्होंने कई बार साबरमती की यात्रा की और गांधी जी के समीप रहकर प्रत्यक्ष सेवा–धर्म की शिक्षा ली। बापू कहते थे, स्वाधीनता तभी परिपुष्ट होगी, जब राजनीति के साथ धर्मतंत्र से लोकशिक्षण का कार्य भी चले। उन्होंने अध्यात्म की शक्ति से ही इतना बड़ा महाभारत लड़ा था, उसी शक्ति को वे सर्वोपरि मानते थे, उसी में सामाजिक हित सन्निहित देखते थे। उन्होंने इस कार्य के लिये पूज्य आचार्य श्री को सर्वथा सुयोग्य पात्र के रूप में देखा। उन्होंने इस क्षेत्र में कार्य करने की प्रेरणा दी। वे उनकी आज्ञा मानकर आगरा से मथुरा चले आये और उन्होंने साबरमती की तरह का आश्रम 'गायत्री तपोभूमि' बनाया और स्वतन्त्र प्रेस लगाकर 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका का प्रकाशन आरंभ किया।

वर्तमान में 1238315 अखण्ड ज्योति पत्रिका, युग निर्माण योजना पत्रिका 500220, प्रज्ञा अभियान पाक्षिक 102682प्रतियों में प्रकाशित हो रही है।

पत्रिका विवरण

राज्य	अखण्ड ज्योति	युग निर्माण योजना	प्रज्ञा अभियान
उ.प्र.	283810	168215	28122
म.प्र.	561318	200083	29410
बिहार	218410	4303	12881
राजस्थान	107504	115195	7507
गुजरात	–	–	9188
अन्य	67273	12524	14764
विदेश	–	–	810

जब गुरुदेव आगरा से मथुरा चले आए तो कागज के अभाव में हाथ से बने कागज व हैण्डप्रेस से स्वयं छापकर पत्रिका जन–जन तक पहुँचानी आरम्भ की, साथ ही उन्होंने अपनी प्रथम पंक्तियां इस प्रकार दीं –

'सन्देश वही मैं स्वर्गलोक का लाई।
इस भूतल को स्वर्ग बनाने आई।।'

'अखण्ड ज्योति' के आह्वान को इस रूप में बदलने का क्या मर्म हो सकता है? यह गहन विश्लेषण का विषय है, पर इसमें कोई सन्देह नहीं कि देवत्व से अभिपूरित विचार जो इस पत्रिका द्वारा जन–जन तक पहुँचते थे, वे धरती पर स्वर्ग जैसी परिस्थिति का ही निर्माण कर रहे थे। पाठकों को न केवल आन्तरिक उल्लास

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की अनुभूति होती थी, वरन् वे औरों से चर्चा कर उसका विस्तार ही करते थे। संभवत: पहले निमंत्रण को बड़ी चुनौती भरा मानकर विश्वयुद्ध की विभीषिका का हल समीप आते देख उन्होंने पहले ही इसकी भविष्यवाणी कर दी थी कि नवयुग का आगमन सन्निकट है, जिसमें सब की मन:स्थिति बदली हुई होगी व परिस्थितियाँ भी स्वयं तब बदल जायेंगी। आगे वर्षों तक यही आह्वान पत्रिका पर आता रहा।

पचासवें दशक के अंत में गुरुदेव संगठन पक्ष की नींव रखना प्रारंभ कर चुके थे। अत: उन्होंने सामूहिक साधना पर विशेष ध्यान देने की चर्चा आरंभ कर दी थी। अब तक उनकी स्वयं की कोई प्रशिक्षणस्थली भी मथुरा में नहीं थी, जिसमें वे आगन्तुक जिज्ञासुओं को ठहराते एवं संगठन की महत्ता समझाते, उनकी शंकाओं का समाधान करते अथवा परामर्श द्वारा प्रेरणा देते। जो भी परिजन आते वे घीयामण्डी मथुरा वाले घर में ही मिलने आते थे। स्थान छोटा था पर हर व्यक्ति उनका आतिथ्य पाकर जाता। न्यूनतम में अपना निर्वाह कर वे औरों का आतिथ्य कैसे कर पाते होंगे एवं साथ ही अपनी साधना का क्रम भी निर्बाध गति से चलाकर पत्र परामर्श एवं सम्पादन कार्य भी करते रहे, यह एक रहस्यमय प्रसंग है। जो भी उनके पास आया, वह उनके एवं वंदनीय माताजी के भाव भरे सत्कार एवं सत्परामर्श से निहाल होकर, उनका होकर गया।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

अब वे आगन्तुकों की बढ़ती संख्या देखकर एक ऐसा सुसंस्कारित स्थान ढूँढ़ रहे थे जहाँ वे अपने लंबे महापुरश्चरण की पूर्णाहुति कर सकें, साथ ही सुनियोजित सामूहिक साधना व शिक्षणक्रम भी चला सकें। यहीं से गायत्री तपोभूमि का शुभारम्भ माना जाना चाहिए। यह एक महज संयोग ही नहीं है कि जिस वर्ष गायत्री महाविज्ञान खण्डों में लिखा गया उसी वर्ष देश को स्वतंत्रता मिली एवं जब देश गणतंत्र बनने के बाद प्रथम अखिल भारतीय चुनाव प्रक्रिया की ओर बढ़ा, तभी गायत्री तपोभूमि की भी स्थापना हुई बल्कि यह तो एक दिव्य सत्ता की पूर्व निर्धारित योजना ही थी।

पूज्य गुरुदेव ने अपनी जीवनयात्रा के साधनाकाल रूपी पूर्वार्द्ध की पूर्णाहूति के लिए एवं भावी गतिविधियों को क्रिया रूप देने के लिए जिस स्थान का चयन किया, वह महर्षि दुर्वासा की तप–स्थली थी। यह स्थान यमुना किनारे मथुरा से वृन्दावन जाने वाले मार्ग पर स्थित था। मथुरा में गायत्री तीर्थ बनने की योजना किसी व्यक्ति के संकल्प से नहीं, वरन् माता ज़ी की प्रेरणा से बनी है। ब्रह्मविद्या के गंभीर अन्वेषण एवं विशद् विस्तार के लिए एक केन्द्रीय स्थान जरूरी था। कितने ही सूक्ष्म एवं रहस्यमय कारणों से वह स्थान मथुरा चुना गया, अब वहां गायत्री माता का मंदिर व तपोभूमि बनती है। यह स्थान बाद में गायत्री तपोभूमि नाम से प्रख्यात हुआ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ज्येष्ठ सुदी 10, गायत्री जयन्ती, 1952 ई. तक उन्होंने हस्तलिखित चौबीस लक्ष गायत्री मंत्र गायत्री तपोभूमि पहुँचाने के लिए प्रत्येक व्यक्ति से कहा। इस प्रकार एक हजार चुने हुए साधकों द्वारा इस लक्ष्य पूर्ति के लिए तिथि निर्धारित कर दी व उस दिन तक उन्हें हस्तलिखित गायत्री मंत्र प्राप्त हो गए। उन्होंने घोषणा कर दी कि ज्येष्ठ सुदी 10 संवत् 2010 गायत्री जयन्ती (सन् 1953) को कई महान् कार्यों की पूर्णाहुति होगी। उसमें प्रथम थी सहस्रांस गायत्री ब्रह्मयज्ञ की पूर्णाहुति। 125 करोड़ गायत्री महामंत्रों का जाप, 125 लाख आहुतियों का हवन, 125 हजार उपवास तीनों ही पूरे होने को आ रहे थे, वे सभी गायत्री जयन्ती तक पूरे हो जाने की संभावना उन्होंने व्यक्त की थी। दूसरा था सवा करोड़ हस्तलिखित मंत्रों के संकल्प की पूर्ति व उसकी भी पूर्णाहुति। तीसरा था स्वयं के 24–24 लक्ष के 24 पुरश्चरणों की पूर्णाहुति। चौथा था गायत्री मंदिर में गायत्री माता की पूर्ति की प्राणप्रतिष्ठा। ऋषिकल्प सात्विकता का इस आयोजन में पूरा ध्यान रखे जाने का उन्होंने आश्वासन दिया व स्वयं बैसाख सुदी 15 ज्येष्ठ सुदी 10 तक चौबीस दिन मात्र गंगाजल पीकर निराहार उपवास रखने की घोषणा की।

प्राण–प्रतिष्ठा पर्व के लिए पूर्व से पूज्य गुरुदेव ने तैयारियाँ कीं। भारतवर्ष के सभी प्रमुख तीर्थों (चौबीस सौ) का जल एवं सभी सिद्धपीठों (इक्यावन) की रज एकत्रित कर सभी तीर्थों व सिद्धपीठों को गायत्री तीर्थ में प्रतिनिधित्व देने की घोषणा की, छह माह में यह कार्य पूरा भी कर लिया गया। सात सौ वर्षों से जल रही एक महान् सिद्धपुरुष की धूनी की अग्नि की स्थापना करने की बात कही गयी। अधिकारी विद्वानों द्वारा यज्ञ, वेदपाठ, प्राणप्रतिष्ठा, मूर्ति स्थापना, रुद्राभिषेक, प्रवचन, सत्संग इस आयोजन में सम्पन्न होने की बात लिखी गयी। सवा करोड़ मंत्रलेखन भी प्रस्तावित गायत्री तीर्थ में उसी दिन स्थापित किए जाने की घोषणा की गयी।

इस आयोजन में बहुत बड़ी भीड़ को नहीं, मात्र 125 उन गायत्री उपासकों को बुलाया गया, जिन्होंने संतोषजनक ढंग से समस्त विधि विधानों को पूरा कर गायत्री उपासना सम्पन्न की थी। साथ ही ज्ञानवृद्ध, आयुवृद्ध, लोकसेवी, पुण्यात्मा, सतपुरुषों के पते भी माँगे गये, ताकि उनसे इस पुण्य आयोजन हेतु आशीर्वाद लिया जा सके। कितना कुछ सुनियोजित व शालीनता, सुव्यवस्था से भरा–पूरा आयोजन था, जिसमें स्वयं को सिद्ध न बताकर सबके आशीर्वाद माँगे, ताकि भूमि के संस्कारों को जगाकर एक सिद्धपीठ विनिर्मित किया जा सके।

सब कुछ इसी प्रकार चला एवं चौबीस दिन का जल उपवास पूज्य गुरुदेव ने निर्विघ्न पूरा किया। जो साधक ब्रह्म यज्ञ में आए थे, उन्हें मात्र दुग्ध दिया जाता व लकड़ी की खड़ाऊँ पर चलने और यथासंभव सारी तप–तितीक्षाओं का निर्वाह करने को कहा गया। गायत्री जयन्ती के दिन वाराणसी से पधारे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तीन संतों ने ब्रह्मयज्ञ की शुरुआत की। अरणिमंथन द्वारा अग्नि प्रज्ज्वलन का प्रयास किया गया, पर तीन–चार बार करने पर भी असफलता हाथ लगी। पूज्य गुरुदेव अधूरे बने गायत्री मंदिर के फर्श पर बैठे सारी लीला देख रहे थे। उन्होंने जटा पाठ, घन पाठ, समागान के लिए उपर्युक्त निर्देश दिए तथा अरणिमंथन हेतु लाए गए काष्ठ को अपने हाथ से स्पर्श कर वापस किया। एक सहयोगी को बुलाकर कहा कि नारियल की मूँज लाओ। उसके आने पर उसमें भी मंत्रोच्चारण द्वारा प्राण फूँके तथा पुनः अरणिमंथन किए जाने का निर्देश दिया। जैसे ही काष्ठों का घर्षण हुआ, मूँज को स्पर्श करा दिया। तुरन्त अग्नि प्रज्जवलित हो उठी, इसी यज्ञ कुण्ड में धूनी भी स्थापित कर दी गयी। यज्ञ पूर्ण हुआ एवं संध्या समय सभी के साथ संतरे का रस लेकर पूज्य गुरुदेव ने अपना उपवास तोड़ा। एक महायज्ञ जो सन् 1926 में इस महापुरुष ने आरंभ किया था, की पूर्णाहुति इस पावन दिन हुई। घोषणा की गई कि आगामी पांच वर्षों में एक शतकुण्डीय यज्ञ, एक नरमेघ यज्ञ एवं एक सहस्रकुण्डी महायज्ञ सम्पन्न होगा, जिसमें विराट् स्तर पर गायत्री साधक भाग लेंगे।

पूर्णहुति के दिन ही उन्होंने शाम को एक और विलक्षण घोषणा की कि अभी तक उन्होंने किसी को गुरु के नाते दीक्षा नहीं दी है। अभी सत्यधर्म की दीक्षा ही वे देते आये हैं। अब वे अगले दिन प्रातः अपने जीवन की पहली गुरुदीक्षा देंगे। जो लेना चाहें वे उस दिन उपवास रखें। स्वयं वे भी निराहार रहेंगे तथा अपने समक्ष साधकों को बिठाकर यज्ञाग्नि की साक्षी में दीक्षा देंगे। दीक्षा का यह प्रारम्भिक दिन था व उसके बाद अनवरत क्रम चल पड़ा। यही दिन दीक्षा के लिए क्यों चुना, यह एक साधक द्वारा पूछे जाने पर उन्होंने कहा कि 24 लक्ष के चौबीस महापुरश्चरणों की पूर्णाहुति व चौबीस दिन से जल–उपवास की समाप्ति पर उनमें अब पर्याप्त आत्मबल का संचय हो चुका है तथा अब वे अपनी परोक्ष सत्ता के संकेत पर अन्यों को अपने मार्ग पर चलने की विधिवत आध्यात्मिक प्रेरणा दे सकते हैं। ब्रह्मवर्चस सम्पन्न गुरुदेव ने पूर्णाहुति अगले दिन वाले गुरुवार से दीक्षा देना आरंभ किया व उनके माध्यम से स्थूलसूक्ष्म रूप में ज्ञान–दीक्षा, प्राणदीक्षा, संकल्प–दीक्षा लगभग पाँच करोड़ से अधिक व्यक्ति उनके महानिर्माण तक ले चुके थे। सिद्ध साधक का सिद्धतीर्थ बनाने का यह प्रथम सोपान पूर्ण हो चुका था। अब विशाल गायत्री परिवार बनाने की, संगठन को सुव्यवस्थित करने की सुविस्तृत स्तर पर तैयारी करनी थी, जिस निमित्त वे गायत्री तपोभूमि के निर्माण के बाद प्राणप्रण से जुट गए।

1953 की गायत्री जयन्ती पर जब उन्होंने गायत्री तपोभूमि की स्थापना कर अपनी पहली गुरुदीक्षा दी, तो एक अध्याय का पटाक्षेप हो गया था, वह था चौबीस लक्ष के चौबीस महापुरश्चरणों की साधना, जिसकी पूर्णाहुति उस दिन की गयी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तथा दूसरा अध्याय आरम्भ हो गया था, वह था गायत्री परिवार के रूप में एक सुव्यवस्थित संगठन की स्थापना। मणिमुक्तकों को ढूँढ़कर एकत्र कर उनमें प्राणशक्ति भरने का सुनियोजित कार्य यदि गायत्री जयन्ती सन् 1953 से आरंभ हुआ मानें, तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी। क्योंकि उसके पूर्व तो वे पृष्ठभूमि तैयार कर रहे थे, वातावरण गर्म कर रहे थे तथा हर परिजन को अपने वाले समय के लिए अपनी तैयारी कैसे की जाए, यह मार्गदर्शन दे रहे थे। 'गायत्री चर्चा' स्तम्भ द्वारा उन्होंने गायत्री के तत्वज्ञान को व्यावहारिक जामा पहनाकर उसे इतना जन–सुलभ बना दिया कि हर व्यक्ति जो उनके सम्पर्क में आया, वह गायत्री साधना न्यूनाधिक किसी न किसी रूप में करने लगा।

गायत्री महायज्ञ अभी बड़े रूप में सम्पन्न होने थे। यज्ञ की प्रेरणा 'संगतिकरण' अर्थात् परमार्थ प्रयोजनार्थ श्रेष्ठ व्यक्तियों का संघबद्ध होना, उन्हें भली–भाँति याद था। अतः उन्होंने शतकुण्डी व सहस्रकुण्डी महायज्ञों के रूप में बाजपेय, अश्वमेध, राजसूर्य यज्ञ परम्परा का पुनर्जीवन कर एक विशाल संगठन की स्थापना करने का संकल्प इसी दिन लिया।

पूज्य गुरुदेव लिखते हैं कि 'गायत्री तपोभूमि की स्थापना माँ भगवती की इच्छा और प्रेरणा से ही हुई है। इसका मुख्य कार्य होगा भारतीय संस्कृति, धर्म और आत्मविज्ञान की आधारशिला, गायत्री का जन–जन तक विस्तार। यह गायत्री तपोभूमि भारतवर्ष के तपस्वियों, गायत्री उपासकों का एक ऐसा केन्द्रीय संगठन बिंदु है, जहाँ उनका पारस्परिक संगठन व सहयोग स्थापित होगा। जन–साधारण में गायत्री साधना का विस्तार करने की जो योजना है, उससे राष्ट्र में एक तपोमयी भूमिका का सूक्ष्म वायुमण्डल बनेगा और उस वातावरण में अनेक मनोरम पुष्प प्रस्फुटित होंगे। 1954 की जून में पहला पंद्रह दिन का जीवनविद्या सत्र आयोजित हुआ जिसमें संजीवनी विद्या पर, जीवन जीने की कला पर व्याख्यानों का क्रम चला।' संभवतः यह बौद्धिक स्तर का पहला समागम था।

इसके पश्चात् जो दूसरा महत्वपूर्ण कदम पूज्यगुरुदेव द्वारा उठाया गया, वह था संगठन निर्माण हेतु पंद्रह माह का एक अनुष्ठान का शुभारंभ, जिसकी पूर्णाहुति 108 कुण्डीय महायज्ञ के यज्ञ के रूप में अप्रैल 1956 में की जानी थी। पंद्रह माह के इस अनुष्ठान में गायत्री विद्या का अधिकाधिक प्रचार जन–जन तक करने के लिए सबसे कहा गया व बसंत पंचमी 1955 को उन्होंने घोषणा की, कि वे 108 कुण्डीय महायज्ञ में नरमेध यज्ञ करेंगे। घोषणा चौकाने वाली थी, क्योंकि इससे तो पौराणिक आशय नरबलि का ही निकलता है। पूज्यवर ने स्पष्टीकरण किया कि विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा किसी उद्देश्य विशेष के लिए उच्चस्तरीय त्याग। अपना जीवन समाज को समर्पित करना तथा मन, बुद्धि प्राण, जीवन, इच्छा,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आकांक्षा आदि की परमार्थ के लिए यज्ञ भगवान् की आहुतियाँ दिया जाना। इस विशाल यज्ञ से जुड़ी नरमेध प्रक्रिया द्वारा उन्होंने ऋषिरक्त में छिपे त्यागतत्त्व का आह्वान किया तथा परिजनों, पाठकों की आत्माओं को झकझोरा।

1955 में पूज्य गुरुदेव ने मथुरा में भादों से महामृत्युंजय यज्ञ, विष्णुयज्ञ, शतचण्डीयज्ञ, नवग्रहयज्ञ तथा चारों वेदों के यज्ञों का आयोजन किए। इनमें जो मथुरा न आ सके उनसे अपने यहाँ एक छोटा–सा यज्ञ प्रति सप्ताह कर लेने का निवेदन किया। साथ ही किया गया नित्य नियमित जप करते रहने व मंत्रलेखन का अनुरोध भी। यज्ञ चैत्र माह 1956 (संवत् 2013) तक चलने थे। इनके समापन पर ही विशाल 108 कुण्डीय महायज्ञ व नरमेध यज्ञ का आयोजन किया गया। नरमेध प्रक्रिया देखने हजारों व्यक्ति आ जुटे। जिन्होंने समाज के लिए कार्य करने का संकल्प किया था, उनके हाथ अलग–अलग रंग की रेशम की डोरियों के खम्भों से बाँधे गये। उन्हें कलावा पहनाकर उन पर अक्षत पुष्प की वर्षा कर यज्ञ की समाप्ति पर उन्हें समाज को समर्पित कर बंधनमुक्त कर दिया गया।

इस यज्ञ में जो बीस अप्रैल से चौबीस अप्रैल, 1956 तक चला, कई विशिष्ट अतिथियों व बीस हजार से अधिक व्यक्तियों ने भाग लिया। लोकसभा के सभापति अनन्तशयनम् आयंगार ने इसका उद्घाटन किया। यह पूज्य गुरुदेव द्वारा तपोबल से जनशक्ति जुटाने के लिए किया गया संगतिकरण था। यह एक ऐसा महायज्ञ था, जिसकी परिणति पूरे भारत में स्थान–स्थान पर यज्ञायोजनों के रूप में होनी थी। अपने इस कार्यक्रम के अन्तिम दिन गुरुदेव ने घोषणा की कि भारत में वे 108 स्थानों पर गायत्री महायज्ञ छोटे–बड़े रूप में पूरे आगामी दो वर्षों में सम्पन्न करेंगे। वस्तुतः इनकी संख्या 108 न रहकर 1008 से भी अधिक हो गई एवं ये पाँच व नौ कुण्डीय से 108 कुण्डीय यज्ञ स्तर के हुए। इसके बाद विभिन्न अव्ययशीय आयोजन सम्पन्न किये गये।

www.vicharkrantibooks.org

अश्वमेध महायज्ञ

क्र.	स्थान	राज्य	अवधि
1.	जयपुर	राजस्थान	7–10 नवम्बर 1992
2.	भिलाई	छत्तीसगढ़	18–21 फरवरी 1993
3.	गुना	म.प्र.	3–6 अप्रैल 1993
4.	भुवनेश्वर	उड़ीसा	3–6 मई 1993
5.	लाईसेस्टर	इंग्लैण्ड	8–11 जुलाई 1993

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्र.	स्थान	राज्य	अवधि
6.	टोरोन्टो	कनाडा	23–25 जुलाई 1993
7.	लॉसएन्जिल्स	अमेरिका	19–22 अगस्त 1993
8.	लखनऊ	उ.प्र.	27–30 अक्टूबर 1993
9.	बड़ोदा	गुजरात	26–29 नवम्बर 1993
10.	भोपाल	म.प्र.	11–14 दिसम्बर 1993
11.	नागपुर	महाराष्ट्र	6–9 जनवरी 1993
12.	ब्राह्मपुर	उड़ीसा	26–29 जनवरी 1994
13.	कोरबा	छत्तीसगढ़	6–10 फरवरी 1994
14.	पटना	बिहार	23–26 फरवरी 1994
15.	कुरुक्षेत्र	हरियाणा	31 मार्च–3 अप्रैल 1994
16.	चित्रकूट	म.प्र.	16–20 अप्रैल 1994
17.	भिण्ड	म.प्र.	2–5 मई 1994
18.	शिमला	हिमांचल प्रदेश	22–25 जनवरी 1995
19.	बुलंदशहर	उ.प्र.	17–20 नवम्बर 1994
20.	हल्दीघाटी	राजस्थान	21 नवम्बर –2 दिसम्बर 1994
21.	राजकोट	राजस्थान	13–17 दिसम्बर 1994
22.	जबलपुर	म.प्र.	28–31 जन. 1995
23.	कोटा	राजस्थान	12–15 फरवरी 1995
24.	गोरखपुर	उ.प्र.	25–28 फरवरी 1995
25.	इन्दौर	म.प्र.	5–9 अप्रैल 1995
26.	शिकागो	अमेरिका	28–30 जुलाई 1995
27.	आँवलखेड़ा	आगरा उ.प्र.	3–7 नवम्बर 1995
28.	मोन्टरियल	कनाडा	26–28 जुलाई 1996
29.	तिरुपति	आन्ध्रप्रदेश	23–27 दिसम्बर 2001
30.	सैडने	ऑस्ट्रेलिया	1–3 अक्टूबर 2005
31.	मदुरई	तमिलनाडू	25 दिस. 05–01 जनवरी 06
32.	जोहॉन्सबर्ग	दक्षिण अफ्रीका	26–28 मई 2006
33.	लुधियाना	पंजाब	5–8 अक्टूबर 2006
34.	काशीपुर	उत्तराखण्ड	13–16 नवम्बर 2008
35.	ऑकलैण्ड	न्यूजीलैण्ड	27 फरवरी–1 मार्च 2009

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विशेष –

1.	हरिद्वार	उ.प्र.	श्रद्धांजलि समारोह	1–4 अक्टूबर 1990
2.	हरिद्वार	उ.प्र.	शपथ समारोह	5–8 जून 1992
3.	आंवलखेड़ा	आगरा उ.प्र.	प्रथम पूर्णाहूति (युग संधि महापारायण)	3–7 नवम्बर 1995
4.	नई दिल्ली	दिल्ली	विराट विभूति ज्ञानयज्ञ	8 अक्टूबर 2000
5.	हरिद्वार	उत्तरप्रदेश	महापूर्णाहूति (युगसंधि महापुरुश्चरण)	7–11 नवम्बर 2000

विराट् संस्कार महोत्सव

क्र.	स्थान	जिला	अवधि
		मध्यप्रदेश राज्य	
1.	शहडोल	शहडोल	19–22 दिसम्बर 98
2.	शाजापुर	शाजापुर	2–5 फरवरी 98
3.	सुजालपुर	शाजापुर	2–5 मई 98
4.	राजगढ़	धार	11–14 नवम्बर 98
5.	भोपाल	भोपाल	17–20 दिसम्बर 97
6.	टीकमगढ़	टीकमगढ़	25–28 मई 98
7.	बुरहानपुर	खण्डवा	29 दिस.–1 जनवरी 99
8.	सनावद	खरगोन	22–25 जनवरी 98
9.	जगदलपुर	बस्तर	14–17 मई 98
10.	बैतूल	बैतूल	16–19 जनवरी 98
11.	बालाघाट	बालाघाट	21–24 मई 98
12.	सीमामऊ	मन्दसौर	16–20 नवम्बर 97
13.	शामगढ़	मन्दसौर	16–20 नवम्बर 97
14.	बूढ़ा	मन्दसौर	22–25 नवम्बर 97
15.	महासमुन्द	महासमुन्द	29 दिस.–1 जनवरी 98
16.	शिवपुरी	शिवपुरी	7–10 जून 98
17.	छिंदवाड़ा	छिंदवाड़ा	23–26 दिसम्बर 97
18.	पांढुर्णा	छिंदवाड़ा	3–6 फरवरी 98
19.	पोरथा	बिलासपुर	30 जन.–2 फरवरी 98
20.	बिलासपुर	बिलासपुर	10–13 जनवरी 98

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्र.	स्थान	जिला	अवधि
21.	होशंगाबाद	होशंगाबाद	26–29 जनवरी 99
22.	रीवा	रीवा	28–31 अक्टूबर 98
23.	नेवरा	रायपुर	4–7 जनवरी 98
24.	रायपुर	रायपुर	7–10 जनवरी 99
25.	टुण्डरा	रायपुर	27–30 अप्रैल 98
26.	भाटापारा	रायपुर	1–4 जून 98
27.	खिलचीपुर	राजगढ़	11–14 नवम्बर 97
28.	राजगढ़	राजगढ़	11–14 अप्रैल 98
29.	रजमिलान	सीधी	7–10 जनवरी 97
30.	सिंगरौली	सीधी	27–30 दिसम्बर 97
31.	जयंतकालरी	सीधी	25–28 दिसम्बर 98
32.	सागर	सागर	6–9 दिसम्बर 98
33.	बण्डा	सागर	23–26 जनवरी 98
34.	सतना	सतना	7–10 फरवरी 99
35.	कोठी	सतना	1–4 जून 98
36.	बीरसिंहपुर (स्थगित)		
37.	माकड़ोन	उज्जैन	8–11 अप्रैल 98
38.	दमोह	दमोह	29 नवं.–2 दिस. 97
39.	बेरला	दुर्ग	3–4 फरवरी 98
40.	बेमेतरा	दुर्ग	5–8 फरवरी 98
41.	मोहारा	दुर्ग	9–12 फरवरी 98
42.	बालोद	दुर्ग	13–16 दिसम्बर 98
43.	भिलाई	दुर्ग	14–17 जनवरी 99
44.	दुर्ग	दुर्ग	21–24 मार्च 98
45.	क्षिप्रा	देवास	2–5 मई 98
46.	देवास	देवास	5–6 मई 98
47.	चाम्पा	चाम्पा जांजगीर	20–23 अप्रैल 98
48.	जशपुरनगर	जशपुरनगर	19–22 जनवरी 99
49.	पनागर	जबलपुर	26–29 मई 98
50.	नीमच	नीमच (मंदसौर)	9–12 फरवरी 98
51.	नरसिंहपुर	नरसिंहपुर	1–4 फरवरी 99

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्र.	स्थान	जिला	अवधि
52.	अशोकनगर	अशोकनगर (गुना)	5–8 दिसम्बर 97
53.	चिरमिरी	अम्बिकापुर	2–5 जनवरी 98

महाराष्ट्र राज्य

1.	शिरपुर	धुले	29 जन.–1 फर. 98
2.	भिवण्डी	ठाणे	23–26 दिस. 97
3.	नांदुरा	बुलढाणा	20–23 मई 98
4.	नवी मुम्बई	मुम्बई	20–23 मई 97
5.	पूना	पूना	30 मई–2 जून 97
6.	चन्द्रपुर	चन्द्रपुर	15–18 फरवरी 97
7.	नासिक	नासिक	—
8.	आसखेड़ा	नासिक	27–29 दिसम्बर 97
9.	नागपुर	नागपुर	1–4 जून 98
10.	अकोला	अकोला	8–11 मई 97

बिहार राज्य

1.	धनबाद	धनबाद	1–4 सितम्बर 98
2.	आरा	भोजपुर	10–14 अक्टूबर 98
3.	भागलपुर	भागलपुर	9–12 जनवरी 99
4.	कहलगांव	भागलपुर	17–20 जनवरी 98
5.	महेश खूंट	खगड़िया	20–23 अप्रैल 98
6.	बक्सर	बक्सर	21–24 मार्च 98
7.	फुसरो	बोकारो	2–5 अप्रैल 98
8.	रानी बछवाड़ा	बेगूसराय	24–28 नवम्बर 98
9.	गढ़पुरा	बेगूसराय	4–8 नवम्बर 98
10.	भभुआ	कैमूर	1–4 जून 98
11.	कटिहार	कटिहार	14–17 अप्रैल 98
12.	झुमरी तलैया	कोडरमा	8–11 अक्टूबर 98
13.	जमालपुर	मुंगेर	14–17 जनवरी 99
14.	मुजफ्फरपुर	मुजफ्फरपुर	27–30 मार्च 98
15.	शिवहर	शिवहर	8–11 अप्रैल 98

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्र.	स्थान	जिला	अवधि
16.	हजारीबाग	हजारीबाग	25–28 मई 98
17.	चक्रधरपुर	प. सिंहभूम	22–26 अक्टूबर 98
18.	बेतिया	प. प. चम्पारण	20–23 जनवरी 99
19.	पटना	पटना	29 अक्टू.–2 नव. 98
20.	टाटानगर	पू. सिंह भूम	2–5 मई 98
21.	पूर्णिया	पूर्णिया	8–11 अप्रैल 98
22.	तेलडीहा	पूर्णिया	8–11 अप्रैल 98
23.	मोतीहारी	पूर्वी चम्पारण	2–5 मई 98
24.	डाल्टेनगंज	पलामू	23–27 अक्टूबर 98
25.	डिहरी ऑनसोन	रोहतास	19–22 नवम्बर 98
26.	रांची	रांची	14–17 दिसम्बर 98
27.	खूंटी	रांची	10–13 जनवरी 98
28.	सीवान	सीवान	27–30 अप्रैल 98
29.	साहेबगंज	साहेबगंज	4–7 जनवरी 98
30.	छपरा	सारण	29 दिसं.–1 जनवरी 98
31.	धर्मचक्र	सारण	11–14 मई 98
32.	सुपौल	सुपौल	27–30 जनवरी 99
33.	दरभंगा	दरभंगा	14–17 मई 98
34.	दुमका	दुमका	11–15 नवम्बर 98
35.	देवधर	देवधर	4–7 मई 98
36.	मधुपुर	देवधर	17–21 नवम्बर 98
37.	हाजीपुर	वैशाली	8–11 मई 98
38.	पौनी हसनपुर	वैशाली	30 नवं.–4 दिसं. 98
39.	जहानाबाद	जहानाबाद	29 अप्रैल–2 मई 98
40.	खटांगी	जहानाबाद	19–22 अप्रैल 98
41.	हिलसा	नालंदा	20–23 मई 98
42.	जम्होर	औरंगाबाद	22–25 जनवरी 98
43.	नबीनगर	औरंगाबाद	25–28 नवम्बर 98
44.	बोधगया	गया	24–27 अप्रैल 98
45.	नगर उंटारी	गढ़वा	15–18 फरवरी 99

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्र.	स्थान	जिला	अवधि
		हिमांचल प्रदेश राज्य	
1.	धर्मशाला	कांगड़ा	24–27 अक्टूबर 97
2.	मण्डी	मण्डी	27–30 सितम्बर 98
		दिल्ली राज्य	
1.	नई दिल्ली	दिल्ली	8 अक्टूबर 2000
2.	पूर्वी दिल्ली	दिल्ली	27–31 जनवरी 99
		हरियाणा राज्य	
1.	यमुनानगर	यमुनानगर	21–27 मई 98
2.	फरीदाबाद–2	फरीदाबाद	27–30 नवम्बर 97
3.	पलवल	–	3–6 नवम्बर 97
4.	करनाल	करनाल	4–7 जून 98
5.	महेन्द्रगढ़	महेन्द्रगढ़	–
6.	कनीना	–	28–31 मई 98
7.	सिरसा	सिरसा	6–9 दिसम्बर 97
8.	सोनीपत	सोनीपत	2–5 अक्टूबर 98
		राजस्थान राज्य	
1.	खानपुर	झालावाड़	21–24 दिसम्बर 98
2.	झालावाड़	झालावाड़	26–29 दिसम्बर 98
3.	खानपुर पनवाड़	झालावाड़	19–22 जनवरी 98
4.	भवानीमण्डी	झालावाड़	20–23 अप्रैल 98
5.	चौमहला	झालावाड़	27–30 अप्रैल 98
6.	बकानी	झालावाड़	13–16 जून 98
7.	तारज	–	–
8.	झुंझुनू	झुंझुनू	22–25 अक्टूबर 98
9.	भीलवाड़ा	भीलवाड़ा	2–5 नवम्बर 98
10.	भरतपुर	भरतपुर	15–18 जनवरी 99
11.	पालगंधवा	डूंगरपुर	13–16 अप्रैल 98
12.	मालपुरा	टोंक	23–26 मई 98

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्र.	स्थान	जिला	अवधि
13.	बीकानेर	बीकानेर	10–13 जनवरी 99
14.	बाड़मेर	बाड़मेर	16–19 नवम्बर 97
15.	भवरगढ़	बांरा	5–8 जनवरी 99
16.	छीपाबड़ौद	–	10–13 जनवरी 98
17.	घाटोल	बांसवाड़ा	18–21 जनवरी 98
18.	बालोतरा	बालोतरा	5–8 जनवरी 99
19.	तालेड़ा	बूंदी	16–19 दिसम्बर 98
20.	थर्मलकोटा	कोटा	11–14 दिसम्बर 97
21.	महावीरनगर	–	31 दिसं.–3 जनवरी 98
22.	भीमगंजमण्डी	–	15–18 जनवरी 98
23.	चेचट	–	19–22 मई 98
24.	सिरसा	सिरसा	–
25.	चितौड़गढ़	चितौड़गढ़	24–27 दिसम्बर 98
26.	प्रतापगढ़	–	8–11 मई 97
27.	पाली	पाली	30–02 दिसम्बर 99
28.	नेछवा	सीकर	14–17 मई 98
29.	रींगस	–	8–11 अक्टूबर 98
30.	उदयपुर	उदयपुर	12–15 जून 98
31.	चूरू	चूरू	1–4 नवम्बर 97
32.	शाहपुरा	जयपुर	2–5 अक्टूबर 98
33.	जयपुर	–	15–18 मई 97
34.	जोधपुर	जोधपुर	8–11 नवम्बर 98
35.	भीनमाल	जालोर	4–7 फरवरी 97
36.	मेड़तासिटी	नागौर	28–31 अक्टूबर 98
37.	डेगाना	–	8–11 नवम्बर 97
38.	पुष्कर	अजमेर	29 जन.–1 फर. 98
39.	खैरथल	अलवर	11–14 नवम्बर 97
40.	अलवर	–	15–18 अक्टूबर 98

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्थान		जिला	अवधि
		उत्तरप्रदेश राज्य	
1.	शाहजहांपुर	शाहजहांपुर	28–31 मई 98
2.	मझोला	एटा	7–11 अक्टूबर 97
3.	अवागढ़	–	8–11 मई 98
4.	गुरसराय	झांसी	23–26 मई 97
5.	झांसी	–	8–11 अक्टू. 97
6.	गोपीगंज	भदोही	27–30 अप्रैल 98
7.	अयोध्या	फैजाबाद	7–10 अक्टूबर 98
8.	टिकरा	फतेहपुर	13–16 जून 98
9.	इटावा	इटावा	7–10 जून 97
10.	इलाहाबाद	इलाहाबाद	2–5 नवम्बर 98
11.	बलिया	बलिया	23–26 नवम्बर 97
12.	बहराइच	बहराइच	27–30 अक्टूबर 98
13.	बरेली	बरेली	11–14 दिसम्बर 97
14.	बांदा	बांदा	22–25 अक्टूबर 98
15.	बाराबंकी	बाराबंकी	7–10 अक्टूबर 97
16.	बदायूं	बदायूं	3–6 अक्टूबर 98
17.	पहासू	बुलंदशहर	17–20 नवम्बर 98
18.	नरौरा	–	16–20 सितम्बर 98
19.	अहमदानगर	–	8–11 फरवरी 98
20.	औरंगाबाद अहीर	–	4–7 फरवरी 98
21.	बलरामपुर	बलरामपुर	8–11 अप्रैल 98
22.	बलरामपुर चीनी मिल	–	12–15 अक्टूबर 97
23.	कानपुर	कानपुर	17–20 अक्टूबर 97
24.	डेरापुर	कानपुर देहात	5–8 दिसम्बर 97
25.	महराजगंज	महराजगंज	20–23 अप्रैल 98
26.	महोबा	महोबा	15–18 अक्टूबर 98
27.	मुरादाबाद	मुरादाबाद	18–21 अक्टूबर 98
28.	बुढ़ाना	मुजफ्फरपुर	1–4 जून 97
29.	थानाभवन	–	7–10 जून 98
30.	मोदीपुरम्	मेरठ	1–4 जून 97

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्र.	स्थान	जिला	अवधि
31.	दबथुआ	–	15–17 जून 98
32.	मऊ	मऊ	29 जन.–1 फर. 98
33.	घोसी	–	7–18 जून 98
34.	बिजनौर	बिजनौर	12–15 अक्टूबर 97
35.	मिर्जापुर	मिर्जापुर	8–11 नवम्बर 98
36.	चित्रकूट	कर्वी	1–4 जून 98
37.	हमीरपुर	हमीरपुर	20–23 जनवरी 99
38.	रुड़की	हरिद्वार	18–20 अक्टूबर 98
39.	मुंडलाना–हरचंदपुर	–	1–4 मई 98
40.	झबरेड़ा	–	3–6 जून 98
41.	लक्सर	–	11–14 जून 98
42.	मझिया	हरदोई	17–20 नवम्बर 97
43.	पूरनपुर	पीलीभीत	25–28 अक्टूबर 97
44.	राजगढ़	प्रतापगढ़	21–24 दिसम्बर 97
45.	रायबरेली	रायबरेली	17–20 नवम्बर 97
46.	लालगंज	–	16–20 दिसम्बर 98
47.	तिलोई	–	12–16 फरवरी 99
48.	रामपुर	रामपुर	15–18 अक्टूबर 98
49.	बुढ़ाखेड़ा	सहारनपुर	16–19 नवम्बर 97
50.	अम्बेहटापीर	सरसावां	27 फर.–2 मार्च 97
51.	सहारनपुर	–	9–12 अक्टूबर 98
52.	नैमिषारण्य	सीतापुर	1–4 अक्टूबर 97
53.	राबर्ट्सगंज	सोनभद्र	31 दिस.–3 जनवरी 99
54.	गुफ्तारगंज	सुलतानपुर	5–8 नवम्बर 97
55.	अमेठी	–	14–17 जून 98
56.	कोईरीपुर	–	1–4 नवम्बर 98
57.	रुद्रपुर	ऊधमसिंहनगर	1–4 अक्टूबर 97
58.	उन्नाव	उन्नाव	23–26 अक्टूबर 97
59.	मियागंज	–	10–13 दिसम्बर 97
60.	देहरादून	देहरादून	14–17 मई 98
61.	देवरिया	देवरिया	4–7 फरवरी 98

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्र.	स्थान	जिला	अवधि
62.	वाराणसी	वाराणसी	23–26 अक्टूबर 98
63.	चकिया	चन्दौली	13–16 नवम्बर 98
64.	डोभी	जौनपुर	29 दिस.–2 जन. 98
65.	उरई	जालौन	30 जन.–2 फर. 98
66.	–	जालौन	13–14 दिस. 97
67.	नई टिहरी	नई टिहरी (गढ़वाल)	8–11 अक्टू. 98
68.	बसखारी	अम्बेदकरनगर	17–20 दिस. 97
69.	अल्मोड़ा	अल्मोड़ा	23–26 अक्टू. 96
70.	मुनस्यारी	–	13–16 अक्टू. 97
71.	रानीखेत	–	12–16 जून 98
72.	लालगंज	आजमगढ़	2–5 मई 98
73.	ब्यावरा	आगरा	18–21 अप्रैल 98
74.	आगरा	–	6–9 नवम्बर 97
75.	अलीगढ़	अलीगढ़	12–15 अक्टू. 97
76.	मुरादनगर	गाजियाबाद	21–24 मार्च 98
77.	गोण्डा	गोण्डा	22–25 अक्टू. 98
78.	मोहम्मदाबाद	गाजीपुर	27–30 मार्च 98
79.	लखीमपुर	लखीमपुर खीरी	2–5 अप्रैल 98
80.	बन्थरा	लखनऊ	26–29 अक्टू. 97

उड़ीसा राज्य

1.	क्योंझर	क्योंझर	2–5 अप्रैल 98
2.	भद्रक	भद्रक	26–29 मार्च 98
3.	बालीगुड़ा	फूलवानी	20–23 नवम्बर 98
4.	भुवनेश्वर	खुर्दा	14–17 अप्रैल 97
5.	बौद्ध	बौद्ध	25–28 मई 98
6.	बारीपदा	बारीपदा	15–18 नवम्बर 98
7.	बलांगीर	बलांगीर	8–11 जनवरी 98
8.	कोरापुट	कोरापुट	7–12 दिसम्बर 98
9.	जूनागढ़	कालाहाण्डी	2–5 दिसम्बर 98
10.	रायगड़ा	रायगड़ा	26–29 नवम्बर 98

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्र.	स्थान	जिला	अवधि
11.	सम्बलपुर	सम्बलपुर	8–11 अप्रैल 98
12.	राऊरकैला	सुन्दरगढ़	16–19 जनवरी 98
13.	बलीचन्द्रपुर	जाजपुर	18–21 मई 98
14.	इटामारी	नयागढ़	20–23 मार्च 98
15.	नवरंगपुर	नवरंगपुर	15–18 जनवरी 98
16.	रम्भा	गंजाम	29 जन.–1फर. 98

चण्डीगढ़ राज्य

1.	चण्डीगढ़	चण्डीगढ़	16–19 अक्टू. 97

गुजरात राज्य

1.	केवड़िया कॉलोनी	भरूच	20–23 नवम्बर 98
2.	प्राणेथा	–	28–30 अप्रैल 97
3.	पादरा	बड़ौदा	30 नव.–3 दिस. 98
4.	सुरेन्द्रनगर	सुरेन्द्रनगर	25–28 नवम्बर 98
5.	कोड़िनार	जूनागढ़	12–15 दिस. 99
6.	नवसारी	नवसारी	17–20 दिस. 97
7.	अमरेली	अमरेली	2–5 मई 97
8.	अंकलेश्वर	अरूच	11–14 दिसम्बर 97
9.	नडियाद	खेड़ा	5–8 दिसम्बर 97
10.	मोघरोली	–	27–29 मार्च 98
11.	क्वांट	बड़ौदा	22–25 जनवरी 98
12.	बापी	बलसाड़	4–7 फरवरी 98
13.	गोधरा	पंचमहाल	4–7 जनवरी 98
14.	सूरत	सूरत	29 नवं.–2 दिसं. 97
15.	कुवांरदा	–	21–24 मार्च 98
16.	जामखंभालिया	जामनगर	8–11 अप्रैल 98
17.	वेरावल	जूनागढ़	16–19 जनवरी 98
18.	अहमदाबाद	अहमदाबाद	21–24 नवम्बर 98
19.	गांधीनगर	गांधीनगर	13–15 नवम्बर 98

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्र.	स्थान	जिला		अवधि
		विभिन्न		
20.	मदुरै	मदुरै	तमिलनाडु	10–12 अक्टूबर 99
21.	सांगली	सांगली	महाराष्ट्र	19–21 फरवरी 99
22.	बलरामपुर	बलरामपुर	उत्तरप्रदेश	27–30 अक्टूबर 99
23.	शिवसागर	शिवसागर	असाम	29 दिसं.99–2 जन. 2000
24.	कल्याण	मुम्बई	महाराष्ट्र	28–20 दिसम्बर 99
25.	सांगली	सांगली	महाराष्ट्र	15–17 जनवरी 2000
26.	दक्षिणेश्वर	हुगली	पं.बं.	23–26 जनवरी 2000
27.	बंगलौर	बंगलौर	–	2 जनवरी 2000
28.	बंगलौर	बंगलौर	–	18–20 फरवरी 2000
29.	जाफरपुर	मुजफ्फरनगर	उ.प्र.	29–31 मार्च 2000

प्रज्ञापुराण कथा आयोजन

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

क्र.	स्थान	जिला	अवधि
		हरियाणा राज्य	
1.	रादौर	यमुनानगर	11–14 नवम्बर 99
2.	घरौंडा	करनाल	15–17 नवम्बर 99
3.	सोनीपत	सोनीपत	18–21 नवम्बर 99
4.	अम्बाला	अम्बाला	22–25 नवम्बर 99
5.	भूड़कलां	यमुनानगर	27–30 नवम्बर 99
6.	कैथल	कैथल	1–4 नवम्बर 99
7.	गुहाणा	कैथल	5–8 दिसम्बर 99
8.	गोहाना	सोनीपत	1–12 दिसम्बर 99
9.	पानीपत	पानीपत	13–16 दिसम्बर 99
10.	रोहतक	रोहतक	17–20 दिसम्बर 99
11.	यमुनानगर	यमुनानगर	21–24 दिसम्बर 99
12.	कुरुक्षेत्र	कुरुक्षेत्र	25–28 दिसम्बर 99
13.	धनौरी	जींद	29 दिसं.–1 जन. 2000
14.	प्योदा	कैथल	2–5 जनवरी 2000
15.	गुड़गांव	गुड़गांव	6–9 जनवरी 2000
16.	बिलासपुर	यमुनानगर	11–14 जनवरी 2000

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्र.	स्थान	जिला	अवधि
		मध्यप्रदेश राज्य	
1.	मनावर	धार	21–25 जनवरी 99
2.	जोबट	झाबुआ	21–25 अक्टूबर 98
3.	कोच फैक्ट्री	भोपाल	2–6 फरवरी 99
4.	डबरा	ग्वालियर	22–26 सितम्बर 98
5.	खण्डवा	खण्डवा	11–15 जनवरी 99
6.	कसरावद	खरगोन	9–13 अक्टूबर 98
7.	इंदौर	इंदौर	16–19 अक्टूबर 98
8.	नारायणपुर	बस्तर	29 दिसं.–2 जन. 99
9.	बड़वानी	बड़वानी	16–20 जनवरी 99
10.	अंजड़	–	27–31 जनवरी 99
11.	कोरबा	कोरबा	10–14 दिसम्बर 98
12.	बालकोनगर	–	29 अक्टू.–2 नवं. 98
13.	गरोठ	मन्दसौर	7–11 अक्टूबर 98
14.	चिल्हटी	बिलासपुर	16–20 जनवरी 99
15.	बरघाट	सिवनी	4–8 जनवरी 99
16.	सिवनी	–	29 दिसं.–2 जनवरी 99
17.	राजनांदगांव	राजनांदगांव	10–14 जनवरी 99
18.	घोपारी	सीधी	23–27 जनवरी 99
19.	गोरबी कोलियरी	सीधी	29 जन.–2 फर. 99
20.	नागदा जं.	उज्जैन	13–17 अक्टूबर 98
21.	दन्तेवाड़ा	दन्तेवाड़ा (बस्तर)	23–27 जून 98
22.	दल्ली राजहरा	दुर्ग	4–8 जनवरी 99
23.	बागली	देवास	4–8 अक्टूबर 98
24.	अम्बिकापुर	अम्बिकापुर	16–20 दिसम्बर 98
25.	कुम्भराज	गुना	9–13 फरवरी 99
26.	एन.एफ.एल.	–	28 सित.–2 अक्टू. 98

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्र.	स्थान	जिला	अवधि
		महाराष्ट्र राज्य	
1.	शिदखेड़ा	धुले	4–8 नवम्बर 98
2.	यवतमाल	यवतमाल	5–9 दिसम्बर 98
3.	येलदारी कैम्प	परभणी	11–15 नवम्बर 98
4.	राजूरा	चन्द्रनगर	29 अक्टू.–3 नवं. 98
5.	चन्द्रपुर	चन्द्रपुर	11–15 दिसम्बर 98
6.	जलगांव	जलगांव	14–17 मई 98
7.	नासिक	नासिक	17–21 नवम्बर 98
8.	नागपुर	नागपुर	23–27 नवम्बर 98
9.	अमरावती	अमरावती	17–21 दिसम्बर 98
10.	गोंदिया	गोंदिया	23–27 दिसम्बर 98
		बिहार राज्य	
1.	देवहलिया	कैमूर	4–8 अक्टूबर 98
2.	विक्रमगंज	रोहतास	16–20 अक्टूबर 98
3.	गोपालगंज	गोपालगंज	6–10 दिसम्बर 98
		हरियाणा राज्य	
1.	फरीदाबाद–1	फ़रीदाबाद	16–20 सितम्बर 98
		राजस्थान राज्य	
1.	श्रीगंगानगर	श्रीगंगानगर	17–21 सितम्बर 98
2.	सागवाड़ा	डूंगरपुर	26–28 अक्टूबर 98
3.	सलूम्बर	डूंगरपुर	20–24 अक्टूबर 98
4.	सिरोही	सिरोही	26–30 दिसम्बर 98
5.	रावतभाटा	चितौढ़गढ़	30 सित.–4 अक्टू. 98
6.	खाटूश्याम	सीकर	18–22 मई 98
7.	खाटूश्याम	सीकर	20 मई 98
8.	गंगापुर सिटी	सवाई माधोपुर	8–12 जनवरी 99
9.	सलूम्बर	उदयपुर	8–12 जनवरी 99
10.	दौसा	दौसा	2–6 जनवरी 98
11.	लवाण	दौसा	5–8 जनवरी 98
12.	रतनगढ़	चारू	23–27 सितम्बर 98

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्र.	स्थान	जिला	अवधि

उत्तरप्रदेश राज्य

1.	एटा	एटा	16–20 फरवरी 99
2.	भिनगा	श्रावस्ती	4–9 जनवरी 99
3.	कायमगंज	फर्रूखाबाद	22–26 सितम्बर 98
4.	फैजाबाद	फैजाबाद	20–23 जनवरी 99
5.	फतेहपुर	फतेहपुर	5–8 फरवरी 99
6.	खागा	फतेहपुर	4–8 फरवरी 99
7.	रिसिया	बहराइच	–
8.	हैदरगढ़	बाराबंकी	22–26 नवम्बर 98
9.	रामसनेहीघाट	बाराबंकी	4–8 दिसम्बर 98
10.	रामनगर	बाराबंकी	7–10 जून 98
11.	बड़ौत	बागपत	28 सितं.–2 अक्टू. 98
12.	अनूपशहर	बुलंदशहर	14–18 जनवरी 99
13.	तुलसीपुर	बलरामपुर	30 दिसं. 98–3 जन. 99
14.	जे.के.मंदिर लॉन	कानपुर	23–27 अक्टूबर 98
15.	दीपगेस्ट हाउस	कानपुर	29 अक्टू. – 2 नवंबर 98
16.	फूलबाग कॉलोनी	कानपुर	4–8 नवम्बर 98
17.	किदवई नगर	कानपुर	28 नवं.–2 दिसं. 98
18.	घाटमपुर	कानपुर देहात	30 दिसं. 98– 3 जन 99
19.	फाजिलनगर	कुशीनगर	12–16 दिसम्बर 98
20.	भोगांव	मैनपुरी	17–21 अक्टूबर 98
21.	ढूठीबारी	महराजगंज	4–8 अक्टूबर 98
22.	बहजोई	मुरादाबाद	16–20 नवम्बर 98
23.	मुजफ्फरनगर	मुजफ्फरनगर	4–8 अक्टूबर 98
24.	जानसठ	मुजफ्फरनगर	17–21 जनवरी 99
25.	मवाना	मेरठ	16–20 सितम्बर 98
26.	पाढ़म	फिरोजाबाद	11–14 नवम्बर 97
27.	धामपुर	बिजनौर	16–20 सितम्बर 98
28.	मल्लावां	हरदोई	22–26 सितम्बर 98
29.	बीसलपुर	पीलीभीत	23–27 जनवरी 99
30.	कलीनगर	पीलीभीत	23–27 जनवरी 99

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्र.	स्थान	जिला	अवधि
31.	प्रतापगढ़	प्रतापगढ़	28 सितं.–2 अक्टू. 98
32.	उन्नाव	उन्नाव	11–15 अक्टूबर 98
33.	कोटरा	जालौन	11–15 जनवरी 99
34.	गोहिला	अम्बेडकरनगर	24–28 दिसम्बर 98
35.	ओरैया	ओरैया	10–14 फरवरी 99
36.	विधूना	ओरैया	22–26 सितम्बर 98
37.	दिबियापुर	ओरैया	10–14 नवम्बर 98
38.	बाह	आगरा	15–19 फरवरी 99
39.	नोयडा	गौतमबुद्धनगर	23–27 दिसम्बर 98
40.	खजनी	गोरखपुर	18–22 दिसम्बर 98
41.	सैदपुर	गाजीपुर	11–15 अक्टूबर 98
42.	निघासन	लखीमपुर खीरी	11–15 जनवरी 99
43.	लखनऊ	लखनऊ	10–14 दिसम्बर 98

उड़ीसा राज्य

1.	जंघीरा	क्योंझर	16–20 नवम्बर 98
2.	कांटाभांजी	बलांगीर	10–14 नवम्बर 98
3.	तितिलागढ़	बलांगीर	4–8 नवम्बर 98
4.	राऊरकेला	सुन्दरगढ़	4–8 दिसम्बर 98
5.	नालकोनगर	अंगुल	28 नवं–2 दिसम्बर 98
6.	हिंजिलीकट	गंजाम	22–26 नवम्बर 98

गुजरात राज्य

1.	गरियाधार	भावनगर	8–12 दिसम्बर 98
2.	भाटपुर	बड़ौदा	19–23 नवम्बर 98
3.	खत्तलवाड़ा	बलसाड़	28 अक्टूबर–1 नवंबर 98
4.	गांधीधाम	कच्छ	26–30 नवम्बर 98
5.	कलोल	मेहषाणा	20–24 दिसम्बर 98
6.	माण्डवी	सूरत	7–11 नवम्बर 98
7.	बारडोली	सूरत	13–17 नवम्बर 98
8.	संतरामपुर	दाहोद	1–5 नवम्बर 98
9.	नवसारी	नवसारी	16–19 नवम्बर 98
10.	मोटामण्डावरा	अमरेली	2–6 दिसम्बर 98
11.	बढ़वा	अहमदाबाद	14–18 दिसम्बर 98

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्र.	स्थान	जिला	राज्य	अवधि
		विभिन्न राज्य		
1.	क्षाचिन	सुल्तानपुर	उ.प्र.	10–13 दिसम्बर 99
2.	भगवतीकुंज	बलसमूह	उ.प्र.	15–18 दिसम्बर 98
3.	रिसड़ा	पश्चिम बंग	बंगाल	23–26 दिसम्बर 99
4.	बराका	पश्चिम बंग	बंगाल	27–30 दिसम्बर 99
5.	दुर्गापुर	पश्चिम बंग	बंगाल	30 दिसं.–1 जनवरी 2000
6.	सिलीगुड़ी	पश्चिम बंग	बंगाल	16–20 दिसम्बर 99
7.	सप्रसिद्ध	कालाहांडी	–	15–19 अक्टूबर 99
8.	चिल्हटी	बिलासपुर	म.प्र.	4–8 फरवरी 2000
9.	विजयवाड़ा	विजयवाड़ा	–	22–23 फरवरी 2000
10.	हमीदपुर	हमीदपुर	उ.प्र.	4–7 फरवरी 2000
11.	शिवपुरी	शिवपुरी	म.प्र.	8–11 फरवरी 2000
12.	हरदा	हरदा	म.प्र.	13–16 फरवरी 2000
13.	कानपुर	कानपुर	उ.प्र.	21 फर.–15 मार्च 2000
14.	पिहानी	हरदोई	उ.प्र.	3–5 मार्च 2000
15.	रायवाला	देहरादून	उ.प्र.	2–5 मार्च 2000
16.	भटिण्डा	पंजाब	पंजाब	24–27 मार्च 2000
17.	फिरोजपुर	फिरोजपुर	पंजाब	29 मार्च–2 अप्रैल 2000
18.	लुधियाना	लुधियाना	पंजाब	9–13 अप्रैल 2000
19.	जनकपुर	जनकपुर	नेपाल	24 मार्च–11 अप्रैल 2000
20.	धनौरी	धनौरी	हरियाणा	31 मार्च–3 अप्रैल 2000
21.	काठमांडू	काठमांडू	नेपाल	23 फर.–23 मार्च 2000

संभागीय पूर्णाहुति

क्र.	स्थान	जिला	अवधि
		मध्यप्रदेश राज्य	
1.	जगदलपुर	बस्तर	31 मई–1 जून 2000
2.	कोरबा	कोरबा	7–8 जून 2000
3.	रायपुर	रायपुर	27–28 मई 2000
4.	धर्मजयगढ़	रायगढ़	4–5 जून 2000

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्र.	स्थान	जिला	अवधि
		मध्यप्रदेश राज्य	
5.	भिलाई	दुर्ग	10–11 जून 2000
6.	जोबट	झाबुआ	–
7.	भोपाल	भोपाल	3–4 जून 2000
8.	छतरपुर	छतरपुर	6–7 जून 2000
9.	ग्वालियर	ग्वालियर	4–5 जून 2000
10.	खरगोन	खरगोन	24–25 मई 2000
11.	इन्दौर	इन्दौर	7–8 जून 2000
12.	सिवनी	सिवनी	28–29 मई 2000
13.	रीवा	रीवा	3–4 जून 2000
14.	रतलाम	रतलाम	21–22 मई 2000
15.	उज्जैन	उज्जैन	23–24 मई 2000
16.	दमोह	दमोह	31 मई–1 जून 2000
17.	जबलपुर	जबलपुर	–
18.	गुना	गुना	29–30 मई 2000
		महाराष्ट्र राज्य	
19.	भुसावल	भुसावल	1–11 जून 2000
20.	मुम्बई	मुम्बई	20–21 मई 2000
21.	हिंगोली	हिंगोली	29–30 मई 2000
22.	पुणे	पुणे	23–24 मई 2000
23.	सोलापुर	सोलापुर	26–27 मई 2000
24.	चन्द्रपुर	चन्द्रपुर	1–2 जून 2000
25.	नागपुर	नागपुर	24–25 मई 2000
26.	अकोला	अकोला	4–5 जून 2000
27.	औरंगाबाद	औरंगाबाद	7–8 जून 2000
		बिहार राज्य	
28.	आरा	भोजपुर	23–24 मई 2000
29.	बेगूसरय	बेगूसराय	7–8 जून 2000
30.	कटिहार	कटिहार	29–30 मई 2000

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्र.	स्थान	जिला	अवधि
		बिहार राज्य	
31.	मुंगेर	मुंगेर	7–8 जून 2000
32.	मुजफ्फरपुर	मुजफ्फरपुर	10–11 जून 2000
33.	पटना	पटना	–
34.	सहरसा	सहरसा	4–5 जून 2000
35.	दरभंगा	दरभंगा	26–27 मई 2000
36.	गया	गया	–

क्र.	स्थान	जिला	राज्य	अवधि
37.	कांगड़ा	कांगड़ा	हि.प्र.	2–3 जून 2000
38.	शिमला	शिमला	–	5–6 जून 2000
39.	उत्तरी दिल्ली	दिल्ली	दिल्ली	31 मइ–1 जून 2000
40.	प. दिल्ली	दिल्ली	दिल्ली	2–3 जून 2000
41.	मध्य दिल्ली	दिल्ली	दिल्ली	4–5 जून 2000
42.	पूर्वी दिल्ली	दिल्ली	दिल्ली	8–11 जून 2000
43.	दक्षिणी दिल्ली	दिल्ली	दिल्ली	6–7 जून 2000
44.	करनाल	करनाल	हरियाणा	8–9 जून 2000
45.	हिसार	हिसार	–	26–27 मई 2000
46.	मोहाली	पंचकुला	–	11–12 जून 2000
47.	सोनीपत	सोनीपत	–	29–30 मई 2000
48.	कलकत्ता	कलकत्ता	प. बंग.	3–4 जून 2000
49.	सिलीगुड़ी	सिलीगुड़ी	प.बंग.	1–2 जून 2000
50.	पटियाला	पटियाला	पंजाब	29–30 मई 2000
51.	मातृकुण्डिया	भीलवाड़ा	राजस्थान	3–4 जून 2000
52.	श्रीगंगानगर	श्रीगंगानगर	–	23–24 मई 2000
53.	वेणेश्वर	डूंगरपुर	–	20–22 मई 2000
54.	कोटा	कोटा	–	1–2 जून 2000
55.	पाली	पाली	–	10–11 जून 2000
56.	सीकर	सीकर	–	28–29 मई 2000
57.	जयपुर	जयपुर	राजस्थान	25–26 मई 2000
58.	जोधपुर	जोधपुर	–	7–8 जून 2000

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्र.	स्थान	जिला	राज्य	अवधि
59.	मकराना	नागौर	–	31 मई – 1 जून 2000
60.	शाहजहांपुर	शाहजहांपुर	उ.प्र.	23–24 मई 2000
61.	झांसी	झांसी	उ.प्र.	10–11 जून 2000
62.	फैजाबाद	फैजाबाद	–	1–2 जून 2000
63.	इलाहाबाद	इलाहाबाद	–	4–5 जून 2000
64.	बलिया	बलिया	–	26–27 मई 2000
65.	बहराइच	बहराइच	–	1–2 जून 2000
66.	बाराबंकी	बाराबंकी	–	4–5 जून 2000
67.	बुलन्दशहर	बुलन्दशहर	–	26–27 मई 2000
68.	कानपुर	कानपुर	–	10–11 जून 2000
69.	मुरादाबाद	मुरादाबाद	–	7–8 जून 2000
70.	मेरठ	मेरठ	–	10–11 जून 2000
71.	बिजनौर	बिजनौर	–	23–24 मई 2000
72.	राठ	हमीरपुर	–	7–8 जून 2000
73.	पीलीभीत	पीलीभीत	–	26–27 मई 2000
74.	सुलतानपुर	सुलतानपुर	–	10–11 जून 2000
75.	वाराणसी	वाराणसी	–	23–24 मई 2000
76.	आंवलखेड़ा	आगरा	–	10–11 जून 2000
77.	गोरखपुर	गोरखपुर	–	29–30 मई 2000
78.	लखनऊ	लखनऊ	–	–
79.	जैपुर	कोरापुट	उड़ीसा	30–31 मई 2000
80.	पुरी	पुरी	–	10–11 जून 2000
81.	राउरकेला	राउरकेला	–	6–7 जून 2000
82.	कांटामांजी	नुवापाड़ा	–	2–3 जून 2000
83.	श्रीनगर	टिहरी गढ़वाल	–	12–14 अगस्त 2000
84.	बोकारो	बोकारो	बिहार	1–2 जून 2000
85.	हजारीबाग	हजारीबाग	–	4–7 जून 2000
86.	टाटानगर	प.सिंहभूमि	–	6 जून 2000
87.	रांची	रांची	–	29–30 मई 2000
88.	वीरगंज	वीरगंज	नेपाल	23–24 मई 2000
89.	गोहाटी	गोहाटी	असम	9–10 सितम्बर 2000

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्र.	स्थान	जिला	राज्य	अवधि
90.	विलीमोरा	बलसाड़	गुजरात	7–8 जून 2000
91.	कायावरोहण	कायावरोहण	–	13–14 जून 2000
92.	मेहसाणा	मेहसाणा	–	4–5 जून 2000
93.	गोधरा	पंचमहाल	–	25–26 मई 2000
94.	हिम्मतनगर	साबरकांठा	–	3–4 जून 2000
95.	अहमदाबाद	अहमदाबाद	–	10–11 जून 2000
96.	डाकोर	आणंद	–	31 मई – 1 जून 2000

पहली बार अखिल भारतीय गायत्री परिवार की सदस्यता का पत्र सितम्बर 1956 की अखण्ड ज्योति में छापा गया व बाकयादा अधिकृत शाखाएं स्थापति कर दी गई। यह प्रगतिक्रम बताता है कि कितने सुनियोजित ढंग से संगठन का सूत्रपात पूज्यवर द्वारा किया गया।

दिसम्बर 1956 में पूज्य गुरुदेव ने एक वर्ष तक 24 लक्ष गायत्री महामंत्र का महापुरश्चरण सामूहिक स्तर पर किये जाने की आवश्यकता पर बल दिया तथा इसे 'आध्यात्मिक वरुणास्त्र' कहा, जो 1957 में संभावित प्रकृति प्रकोपों, अन्तग्रही प्रभावों तथा युद्धोन्माद की संभावनाओं से मानवमात्र को बचाने के लिए किया जाना था। जून, 1957 में पहला अखिल भारतीय गायत्री परिवार सम्मेलन 7 से 12 जून की तारीखों में बुलाया गया एवं गायत्री उपासक, शाखा कार्यवाहक या मंत्री तथा वृतधारी सक्रिय कार्यकर्ता, ये तीन श्रेणियां अपने परिजनों की करके प्रत्येक को जिम्मेदारियां बांट दीं। संगठन का महत्व सबको समझाया गया, विभिन्न प्रान्तों की गोष्ठियां की गयी तथा इस प्रकार गायत्री विद्या से संबंधित पुस्तकों द्वारा गायत्री व यज्ञ भावना का जन–जन तक विस्तार किया गया।

1957 की दिसम्बर अखण्ड–ज्योति में पूज्य गुरुदेव द्वारा बताया गया कि 14 सितम्बर 1958 से गुरु व नेप्च्यून की युति आरंभ हो रही है। ऐसे में पांच वर्ष भयंकर आपदाओं द्वारा ब्रह्मास्त्र अनुष्ठान 1958 में किया जाना चाहिए। इसकी महापूर्णाहुति स्वरूप 1008 कुण्डों का एक विशाल में महायज्ञ कार्तिक सुदी 12 से 15 (23 नवम्बर से 26 नवम्बर) 1958 की तिथियों में मथुरा में तपोभूमि में कराने की विधिवत् घोषणा कर दी गयी। यह यज्ञ 101 यज्ञशालाओं में 1 लाख होताओं द्वारा संपन्न होना था। इस विराट् आयोजन द्वारा एक लाख गायत्री उपासकों की श्रद्धाशक्ति का केन्द्रीकरण कर पूज्य गुरुदेव ने इस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विशाल संगठन को महायात्रा पर ला खड़ा किया।

इस विशाल आयोजन में उन्होंने अपने आत्मबल के सहारे सब कुछ जुए पर लगा दिया। बदले में एक लाख से अधिक निष्ठावान परिजनों का एक संगठन देखते–देखते खड़ा हो गया। इस दिव्य वातावरण में अन्तःप्रेरणा ने उन्हीं परिजनों को यह दायित्व भी सौंपा कि प्रत्येक व्यक्ति न्यूनतम एक हजार विचारशील व्यक्तियों को अपने समीपवर्ती क्षेत्र से ढूंढकर अपना सहयोगी बनाए।

युगनिर्माण योजना के विचार–क्रांति अभियान एवं धर्मतंत्र से लोक–शिक्षण की भूमिका, इस आयोजन से पूरी तरह बन गई। जिन–जिन व्यक्तियों ने इसमें भाग लिया उन्हें विभिन्न काम सौंपे गए, जिनसे संगठन सशक्त बना। कार्यकर्ताओं के जन्मदिवसोत्सव मनाने की परम्परा चलाना एवं पारिवारिक यज्ञ व सत्संग के रूप में न्यूनतम साप्ताहिक आयोजन। इनका बड़ी संख्या में प्रचलन हुआ। विधिवत् स्नान–ध्यान नियम–पूजन न कर पाने वालों के लिए गायत्रीमंत्रलेखन का क्रम चला। 2400 मंत्र लिखकर लोग कापियां गायत्री तपोभूमि में जमा करने लगे इससे आंदोलन बच्चों, बड़ों सभी के माध्यम से घर–घर तक पहुंच गया। जो पाठ कर सकें, उनमें वितरण करने के लिए एक रूपये की सौ की दर से एक करोड़ गायत्री चालीसा छापे गए, इन्हें महायज्ञ के प्रसाद के रूप में बांटा गया।

www.vicharkrantibooks.org

विचार क्रांति को घर–घर पहुंचाने के लिए पुस्तकों को पढ़ाने व वापस लेने की योजना के अन्तर्गत झोला पुस्तकालयों का क्रम चला। ज्ञानरथ, लोहे की धकेल गाड़ी के रूप में बने, जिनके माध्यम से युगसाहित्य के प्रसार में और भी तीव्रता आई। जन–जन तक प्रचार के लिए पूज्य गुरुदेव ने छोटी–छोटी विज्ञप्तियों व विभिन्न विषयों पर पच्चीस पैसी सीरीज के सत्तर पुस्तिका पैकेज लिखे। यह साहित्य झोला पुस्तकालयों व ज्ञानरथों द्वारा घर–घर पहुंचाया गया। इसी अभियान के अन्तर्गत सद्वाक्यों के स्टीकर, पोस्टर छपे जो घरों में, कमरों में सर्वत्र लगे दिखाई देने लगे। दीवारों पर आदर्श वाक्य लेखन का आंदोलन सब शाखाओं द्वारा चलाया गया, जिसमें युगप्रिवर्तन के लिए जिस विचारधारा की आवश्यकता थी, उसे सुन्दर अक्षरों में गांव–गांव की दीवारों पर लिखाया गया। साइकिलों पर धर्म–प्रचार की पदयात्रा हेतु चार–चार जत्थे निकले। रास्ते में मिलने वालों को गीत सुनाना और रात्रि को प्रज्ञासत्संग के माध्यम से रामचरितमानस की प्रगतिशील प्रेरणा, गीताकथा, वाल्मीकि रामायण तथा प्रज्ञा पुराण कथा का आयोजन चला पड़ा।

इसी महायज्ञ में स्थान–स्थान पर इसी स्तर के महायज्ञ विशुद्ध रूप से वनौषधियों द्वारा आयोजित होने की योजना बनी, जिसमें स्वयं पूज्य गुरुदेव कई

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्थानों पर गए। इन यज्ञों में सम्मिलित होने वालों में से प्रत्येक से यह कहा गया कि वे अपनी वैयक्तिक दुष्प्रवृत्तियों और सामाजिक कुरीतियों में से एक को संकल्पपूर्वक छोड़ें और न्यूनतम एक सत्प्रवृत्ति अपनाने का व्रत लें। उपस्थित लोगों में से अधिकांश ने ऐसा ही किया। कुरीतियों में से विशेषतया जातिगत ऊंच–नीच, धूम्रपान और दहेज को विवाहों में से हटाना, भिक्षा व्यवसाय, मृतकभोज जैसे कुप्रचलन एवं स्वार्थप्रेरित अनैतिकताओं को हटाने पर विशेष जोर दिया गया।

गायत्री तपोभूमि में आने वाले कार्यकर्ताओं को शिक्षण दिया गया कि वे न्यूनतम एक घण्टा समय और दस पैसा नित्य अपने क्षेत्र से सत्प्रवृत्ति–संवर्द्धन के लिए लगाते रहने का व्रत लें। अधिक सक्षम लोगों ने एक दिन की आय भी इस पुण्य–प्रयोजन हेतु दी। वानप्रस्थ परम्परा को पुनरुज्जीवित किया गया एवं अनेकों रिटायर्ड व्यक्तियों को समीपवर्ती क्षेत्र में सेवाकार्य करने के लिए तत्पर होने को कहा गया। इस प्रकार हजारों अनुभवी व्यक्ति सेवाकार्यों में जुट गए। वृक्षारोपण, स्वच्छता अभियान, सामूहिक श्रमदान, शिक्षासंवर्द्धन, नशा–निवारण, पर्दा–प्रथा निवारण, चल पुस्तकालयों की स्थापना जैसे रचनात्मक कार्यों को स्थान–स्थान पर आरंभ कर उनका मार्गदर्शन क्रम आरंभ कर दिया गया।

मार्च 1962 की अखण्ड ज्योति में पहली बार घोषणा पत्र के रूप में अधिकृत सत्संकल्प प्रकाशित किया गया। लाखों व्यक्ति इसमें दी गई आचारसंहिता के अनुरूप चलने लगे। इससे संगठन की जड़ें मजबूत हुई। सन् 1964 में युगनिर्वाण योजना का शतसूत्री कार्यक्रम प्रसारित किया गया। कार्यकर्ताओं के किशोर बालकों की विशेष शिक्षा के लिए एक वर्षीय पाठ्यक्रम निरन्तर चलाने का क्रम 1965 से आरम्भ किया गया, जिसमें वे गृह उद्योगों के माध्यम से आजीविका उपार्जन से समाज सेवा की शिक्षा सीखने लगे। ऐसे एक सौ छात्रों की भर्ती छात्रावास एवं प्रशिक्षण का प्रबन्ध किया गया।

गायत्री तपोभूमि मूलतः उपासना कार्यों के लिए बनी थी। 1971 तक तो नौ दिवसीय सत्रों के माध्यम से पूज्य गुरुदेव यह क्रम बराबर चलाते रहे, फिर प्रचार, प्रकाशन तंत्र के तेजी से बढ़ने से उनके वहां से शांतिकुंज आ जाने के बाद नई भूमि खरीद कर वहां प्रज्ञानगर बसाया गया तथा बड़े कार्यक्रमों के अनुरूप नई इमारतें बना दी गई और रोटरी ऑफसेट व बड़ी साइज की कई ऑफसेट मशीनें भी खरीदी गईं। इस प्रकार गायत्री तत्वज्ञान से आरम्भ हुआ लोकशिक्षण युग परितर्वनकारी साहित्य रचने वाली बहुमुखी कार्य–पद्धति के रूप में विकसित हो, सब दिशाओं में फैल गया। गुजराती, मराठी, उड़िया, अंग्रेजी आदि भाषाओं में साहित्य का अनुवाद होकर पत्रिका कई रूपों में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकाशित होने लगी।

चूंकि पूज्य गुरुदेव को ऋषि परंपरा के बीजारोपण व नई गतिविधियों को कार्यरूप देने हेतु मथुरा छोड़कर हरिद्वार आना था, उनकी विदाई के पूर्व जिम्मेदारी वितरण के निमित्त मथुरा के सहस्रकुण्डी यज्ञ स्तर के पांच महायज्ञ विभिन्न स्थानों पर हुए। बिहार में टाटा नगर, उत्तर प्रदेश में बहराइच, राजस्थान में भीलवाड़ा, मध्यप्रदेश में महासमुन्द तथा गुजरात में पोरबन्दर स्थानों पर ये कार्यक्रम बड़े उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुए। पूज्य गुरुदेव एवं माताजी दोनों इन कार्यक्रमों में गए एवं पूरे भारत में एक नये उत्साह का उभार आया व निर्धारित कार्यक्रमों में असाधारण अभिवृद्धि हुई।

संक्षेप में यही है सहस्रकुण्डी महायज्ञरूपी समुद्र मंथन की 14 रत्नों के रूप में उपलब्धियां, जो आने वाले चौदह वर्षों में एक विशाल संगठन के रूप में परिणत हुई, गायत्री परिवार को हस्तगत हुई एवं नवयुग के एक ऐसे मत्स्यावतार का जन्म हुआ, जो बढ़ते–बढ़ते उस स्थिति में आ पहुंचा है, जिसे एक सुनियोजित अनुशासित समाजसेवी संगठन के रूप में लाखों देवमानवों द्वारा सम्पन्न होता देखा जा सकता है।

ज्येष्ठ सुदी 10 संवत् 2018 (गायत्री जयन्ती 1961) को चारों वेदों के साथ उपनिषदों के तीन खण्ड गायत्री तपोभूमि, मथुरा से पूज्य गुरुदेव द्वारा सम्पादित हो पहली बार प्रकाशित हुए। उपनिषदों के ज्ञान–खण्ड, साधना–खण्ड एवं ब्रह्मविद्या खण्डों में कुल 108 उपनिषद् थे, जिनकी हिन्दी में सरल टीका पहली बार जन–समुदाय के समक्ष प्रस्तुत की गई थी। इसकी भूमिका में पूज्य गुरुदेव लिखते हैं कि 'उपनिषदों को जीवन का सर्वांगपूर्ण दर्शन ही कहना चाहिए। उनमें जीवन को शांति और आनन्द के साथ जीने तथा प्रगति–पथ पर निरन्तर आगे बढ़ते जाने की विद्या का भली–भाँति विवेचन हुआ है। लौकिक और पारलौकिक, बाह्य और आन्तरिक, व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन के दोनों ही पक्ष जिसके आधार पर समुन्नत हों, वह महत्वपूर्ण ज्ञान उनमें भरा हुआ है। इनकी एक–एक पंक्ति में अमृत भरा प्रतीत होता है। इस शाश्वत ज्ञान के समुद्र में जितना गहरा उतरा जाए, उतना ही अधिकाधिक आनन्द उपलब्ध होता चलता है।

इस भूमिका के साथ प्रकाशित समग्र आर्ष साहित्य को जब तत्कालीन राष्ट्रपति सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन् को भेंट किया गया, तो उन्होंने कहा कि 'यदि यह ज्ञान नवनीत मुझे कुछ वर्ष पूर्व मिल गया होता, तो संभवतः मैं राजनीति में प्रवेश न कर आचार्य श्री के चरणों में बैठा अध्यात्म दर्शन का शिक्षण ले रहा होता।' यह तथ्य सर्वविदित है कि स्वयं श्री राधाकृष्णन् ने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भारतीय व पाश्चात्य दर्शन पर अनेक टीकायें लिखीं हैं, जो विश्व भर में पाठ्य पुस्तकों के रूप में पढ़ाई जाती हैं।

चारों वेदों के संहिता पाठ समग्र रूप में कहीं भी एक स्थान पर उपलब्ध नहीं थे। सार्वदेशिक आर्यसभा, वैदिक पुस्तकालय, काशी विद्वत्परिषद् और वैदिक शोध संस्थान होशियारपुर जैसे कतिपय प्रकाशकों ने उन्हें अंश–अंश में प्रकाशित किया था। सम्पूर्ण पाठ प्राप्त करने के लिए गुरुदेव ने काशी, नदिया, पूना, नासिक की यात्रा की व अलग–अलग मण्डल अध्याय, सूक्त, मंत्र जैसा भी जहां से मिला, लिया एवं क्रमबद्ध किए गए। आर्ष साहित्य में वेद व उपनिषद के अलावा, छहों दर्शन, अठारह पुराण, बीस स्मृतियां, चौबीस गीताएं, आरण्यक, ब्राह्मण, निरुक्त, व्याकरण आदि भी आते हैं। ये सभी आसानी से मूलरूप में उपलब्ध नहीं थे। पुराणों का कार्य सबसे अधिक दुरूह था। लगभग साठ पुराणों के नाम मिलते हैं। पुराण, उपपुराण और महापुराणों का वर्गीकरण इन्हीं में से किया गया था। कुछ विद्वान् जिन्हें प्रमुख पुराण मानते हैं, दूसरे उन्हें उपपुराण व कुछ उन्हें महापुराण कहते हैं। पूज्यवर ने विद्वानों से सम्पर्क कर अठारह पुराणों की नामावली तय की। यद्यपि उन सब में परस्पर मतभेद था, पर अंतिम सम्मति उनकी ही उपयोगी और महत्वपूर्ण सिद्ध हुई।

सम्पूर्ण वाङ्मय जुटा लेने के बाद प्रत्येक ग्रन्थ पर भाष्य लिखने के लिए उन्हें एकान्त की आवश्यकता थी। पत्रिका और पुस्तकों का लेखन, सम्पादन, साधकों–जिज्ञासुओं से सम्पर्क व दिशा–निर्देशन, संगठन के संचालन आदि सभी कार्य अपने में महत्वपूर्ण थे। इन सबका सुनियोजनकर उपयुक्त व्यक्तियों को कार्यभार सौंप, वन्दनीया माताजी को अखण्ड ज्योति के संपादन की गुरुतर जिम्मेदारी संभलवाकर एक वर्ष के लिए तप करने गंगोत्री गोमुख के दुर्गम हिमालय वाले क्षेत्र में चले गए। साथ में सारे आर्ष वाङ्मय का मूल संकलन भी ले गए, ताकि तप से उद्भूत आत्मबल के प्रकाश में, साधना के बाद में उत्तरकाशी में रहकर सारा भाष्य व टीका का कार्य सम्पन्न कर सकें।

सारे भाष्य को उन्होंने क्रमबद्ध कर मथुरा भेजते रहने का क्रम चालू रखा। वह कम्पोज होता रहा, किन्तु छपाई तभी हुई, जब पूज्य गुरुदेव ने स्वयं आकर सारी अशुद्धियों को ठीककर स्वयं प्रूफ पढ़कर प्रेस में दिया। यही सर्वशुद्ध भाष्य प्रथम संस्करण के रूप में गायत्री 1961 को प्रकाशित हुआ। सर्वप्रथम वेद व उपनिषद् छपे, बाद में पुराण आदि अन्य ग्रन्थ। पुराणों ने थोड़ा समय जरूर लिया, क्योंकि इन्हीं में मध्यकाल के टीकाकारों द्वारा अपना उल्लू सीधा करने के लिए जोड़े गए अनावश्यक अंश ज्यादा थे। इन अंशों को पहचानना व पूर्वापर संगति बिठाकर उन्हें संपादित करना एक दुष्कर कार्य था;

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

किन्तु पूज्य गुरुदेव की अठारह से बीस घण्टे नित्य काम करने की शैली ने इस कार्य को आसान कर दिया व समग्र आर्ष साहित्य पांच वर्ष में छपकर जन सामान्य के सामने आ गया।

'मैं आस्तिकता और कर्त्तव्यपरायणता को मानव–जीवन का धर्मकर्तव्य मानता हूँ।' यह थीं प्रथम पंक्तियां उस अधिकृत सत्संकल्प की, घोषणा पत्र की, जिसे युग–निर्माण योजना का प्रारंभिक उद्‍घोष कहा जा सकता है। मार्च 1962 में पहली बार पूज्य गुरुदेव ने इस सत्संकल्प को लिखते हुए यह आह्‍वान किया कि नित्य प्रातःकाल एवं शुभ अवसरों पर इसे सामूहिक रूप से पढ़ा जाए। सभी परिजनों, पंजीकृत शाखाओं को एवं ज्ञान मंदिर चलाने वाले परिजनों को उद्‍बोधन करते हुए सितम्बर 1962 में उन्होंने कहा कि यह वह विचार बीज है, जिसके आधार पर युग निर्माण की संभावनाएं सुनिश्चित होंगी।

युग परिवर्तन की बात एक क्रान्तिकारी स्तर का विचारक ही कह सकता है। यही सोच सकता है कि सड़ी– गली मान्यताओं से घिरा यह समाज तभी बदल सकता है, जब व्यक्ति अपने आपको आमूल–चूल बदले। परिस्थितियों को बदलने की बात तो सब कहते हैं, पर मनःस्थिति को बदल कर विचार करने की शक्ति द्वारा अपने श्रेष्ठ संकल्पों को जाग्रत् कर यदि व्यक्ति स्वयं को बदल ले, तो यह सारा समाज बदल जाय। यह एक दार्शनिक एवं मनोविज्ञान का मनीषी ही सोच सकता है। 'युग' को बदलने जैसे असंभव दिखने वाले कार्य को तभी व्यावहारिक रूप दिया जा सकता है, जब उसकी एक इकाई समाज व उसकी भी एक इकाई परिवार तथा अन्ततः व्यक्ति का सर्वांगपूर्ण परिष्कार हो। मनुष्य बदलता है, तो जमाना भी बदलने लगता है। दृष्टिकोण में परिवर्तन आते ही वातावरण बदला हुआ दिखाई देने लगता है। एक एक व्यक्ति का निर्माण होता चले, तो युगनिर्माण हुआ दृष्टिगोचर होगा।' यह एक अवतार स्तर की सत्ता ही कह सकती है, जिसे भविष्य भी दिखाई पड़ता है एवं वर्तमान को बदलने का सारा ताना–बाना भी जो परोक्ष जगत् के साथ ही बुनती चलती है।

पूज्य गुरुदेव के जीवन के अस्सी वर्ष का हर दिन, हर पल एक महत्वपूर्ण निर्धारण से जुड़ा हुआ है। जिन्होंने उन्हें समीप से देखा व उनकी रीति–नीति का अध्ययन किया है, वे भली–भाँति जानते हैं कि वे अपने लिए एक सुनियोजित रूपरेखा निर्धारित करते आए। प्रत्येक बसंत पर्व उनका आध्यात्मिक जन्मदिन रहा है व वर्ष भर के महत्वपूर्ण निर्णय उसी दिन लिए जाते रहे हैं। ज्ञानपर्व के रूप में गायत्री जयंती एवं संकल्प–कर्म–अनुशासन पर्व के रूप में गुरुपूर्णिमा पर्व मनाये जाते हैं। हर दस वर्ष के अन्तराल से वे न्यूनाधिक समय के लिए 1941, 1951, 1960–61 व 1971 में हिमालय अज्ञातवास के लिए

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गये व अपने मार्गदर्शक का महत्वपूर्ण दिशा निर्देशन लेकर लौटे।

जनवरी 61 से उनकी लेखनी जून 1971 तक बराबर परिजनों को रुलाती रही, उद्वेलित करती रही व आगे का कार्य सम्हालने सम्बंधी मार्गदर्शन करती रही। चार–चार दिन के मिलनसत्र जून 70 से 71 तक सतत चलाये गये। इसमें गुरुदेव को अपने मन की बात कहने का मौका मिला। प्रत्येक सत्र में लगभग 2000 व्यक्ति एक वर्ष तक आये, इस प्रकार लगभग दो लाख व्यक्ति उनसे वर्ष भर में मिल गए।

विदाई सम्मेलन 16 जून 1971 से 20 जून 1971 तक गायत्री तपोभूमि मथुरा में सम्पन्न हुआ। सहस्त्राकुण्डी महायज्ञ से भी बड़ा यह समागम था व लाखों व्यक्तियों ने अश्रुपूरित नेत्रों से उन्हें विदाई दी। वे तथा वंदनीया माताजी एवं उनका अखण्ड दीपक शांतिकुंज हरिद्वार आ गए, जो अभी बनकर मात्र रहने योग्य स्थिति में ही था। नौ दिन तक वे घनिष्ट कार्यकर्ताओं एवं वंदनीया माताजी को महत्वपूर्ण निर्देश देते रहे एवं दसवें दिन रात्रि 2 बजे उठकर बिना किसी को बताए अपने गन्तव्य पर चले गये।

'अखण्ड ज्योति' निरन्तर जलती रही व पूज्य गुरुदेव की चिन्तन चेतना सभी का दैनन्दिन जीवन में मार्गदर्शन करती रही। जनवरी, 1972 में बंगला देश के मुक्ति युद्ध के समापन के बाद अल्प–अवधि के लिए पूज्य गुरुदेव शांतिकुंज अचानक आए वं माताजी को प्रत्यक्ष मार्गदर्शन देकर फिर चले गए। जून 1972 में अपनी गुरुसत्ता के मार्गदर्शन पर सप्तऋषियों की तपस्थली में रहकर ऋषिपरंपरा का बीजारोपण कर देवमानवों को विनिर्मित करने हेतु अपना प्रचण्ड तपोबल संचित कर वापस लौट आए। अपनी आत्म–कथा में अपनी ही लेखनी से उन्होंने इस एक वर्ष की अवधि में गुरुसत्ता द्वारा क्या निर्देश दिए गए, इनका खुलासा स्वयं किया है।

क्या करना होगा? इसके उत्तर में इतना ही कहा गया कि हरिद्वार आश्रम को गायत्री तीर्थ के रूप में विकसित करना होगा और उन प्रवृत्तियों का आरंभ करना होगा, जिन्हें पूर्वकाल में ऋषि करते रहे हैं। वह परम्पराएं लुप्तप्राय हो जाने से उन्हें अब पुनर्जीवन प्रदान करने की आवश्यकता होगी। संक्षेप में यही था सार–संदेश।

मूल कार्य यह था कि शांतिकुंज, जो ब्रह्मर्षि विश्वामित्र की तपस्थली रही है, में ऋषियों द्वारा संचालित समस्त गतिविधियों को चलाया जाय। इसके लिए उन्होंने महत्वपूर्ण परामर्श व प्राण–प्रत्यावर्तन सत्र सबसे पहले आयोजित किए। वस्तुतः गुरुदेव अपने तप की एक प्रखर चिनगारी सुसंस्कारी आत्माओं को देकर उन्हें ज्योतिर्मय बनाना चाहते थे; ताकि नवसृजन के लिए एक महत्वपूर्ण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जिम्मेदारी वे निभा सकें। ग्रहण करने की जिसमें पात्रता हो, ऐसे ही व्यक्तियों को स्वीकृति दी गयी। स्थान सिद्धपीठ था ही, उर्वर अन्तःकरण में प्राण–अनुदान का खाद–पानी देकर उस बीज को अंकुरित, पल्लवित करना था, जो असंख्यों परिजनों में से कुछ सौ में विद्यमान पाया गया।

प्रत्यावर्तन सत्र फरवरी 1973 से फरवरी 1975 तक चले। वे विशुद्धतः साधना मात्र थे। विभिन्न मुद्राओं, त्राटकयोग, सोऽहम्, नादयोग, आत्मब्रह्म की दर्पण साधना तथा तत्वबोध की साधना इनमें कराई गई। पंद्रह मिनट पूज्य गुरुदेव एकान्त में परामर्श भी देते थे। सीमित संख्या मे प्राणवान साधकों को यह अनुदान दिया गया। ऐसे प्रखर साधना सत्र फिर आगे कभी नहीं हुए। इस बीच तीन–तीन माह के वानप्रस्थ सत्र भी चले, अध्यापकों के तीन सत्र भी मई–जून 1974 में सम्पन्न हुए तथा साथ–साथ रामायण सत्र को फरवरी 75 से बन्द कर नौ दिवसीय जीवन साधना सत्र में बदल दिया गया। यही साधनाक्रम फिर आगे कल्पसाधना तथा चन्द्रायण सत्रों आदि के रूप में चलता रहा। विभिन्न सत्रों के माध्यम से युग शिल्पी तैयार होते रहे और आज भी यह क्रम चल रहा है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

प्रशिक्षण सत्र

वर्ष 1986–87

माह	एकमासीय	नौ दिवसीय	अतिथि	कुल
अप्रैल	078	356	6862	7296
मई	232	605	1711	2548
जून	480	765	2551	3787
जुलाई	377	687	3828	4892
अगस्त	580	840	1405	2825
सितम्बर	658	891	973	2522
अक्टूबर	491	512	1579	2582
नवंबर	268	431	1356	2055
दिसम्बर	190	392	928	1510
जनवरी	92	410	3858	4360
फरवरी	225	384	567	1176
मार्च	74	431	923	1428
कुल	3745	6695	26541	36981

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वर्ष 1987–88

माह	एकमासीय	नौ दिवसीय	अतिथि	कुल
अप्रैल	76	628	979	1683
मई	56	989	1742	2787
जून	95	1190	1483	2768
जुलाई	170	600	787	1557
अगस्त	180	720	1060	1960
सितम्बर	83	1005	1149	2237
अक्टूबर	46	592	1607	2245
नवंबर	56	416	963	1435
दिसम्बर	21	221	835	1077
जनवरी	115	646	3760	4521
फरवरी	147	248	3390	3785
मार्च	210	755	2062	3027
कुल	1255	8010	19817	29082

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

वर्ष 1988–89

माह	एकमासीय	नौ दिवसीय	अतिथि	कुल
अप्रैल	145	484	1389	2018
मई	167	1415	3643	5225
जून	145	1944	3591	5680
जुलाई	237	1391	7503	8931
अगस्त	258	1471	2169	3898
सितम्बर	170	1687	1459	3316
अक्टूबर	139	1490	2002	3631
नवंबर	60	321	1955	2336
दिसम्बर	041	0255	1071	1367
जनवरी	45	202	689	936
फरवरी	61	889	2878	3828
मार्च	50	503	1308	1861
कुल	1518	12052	29457	43027

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वर्ष 1989—90

माह	एकमासीय	नौ दिवसीय	अतिथि	कुल
अप्रैल	102	0998	1658	2758
मई	174	1317	2392	3883
जून	121	4484	2471	7076
जुलाई	97	1107	7952	9156
अगस्त	178	3679	1813	5670
सितम्बर	102	2123	1780	4005
अक्टूबर	122	3085	2212	5419
नवंबर	52	1142	2196	3390
दिसम्बर	51	830	1444	2325
जनवरी	88	908	7796	8792
फरवरी	61	1710	1369	3140
मार्च	24	1972	1123	3119
कुल	1172	23355	34206	61046

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

वर्ष 1990—91

माह	नौ दिवसीय	एकमासीय	अतिथि	पांच दिवसीय	कुल
अप्रैल	400	2584	1339	45	4368
मई	510	4118	2037	154	6819
जून	803	7026	2047	75	9951
जुलाई	4175	2410	2091	117	8793
अगस्त	1133	660	2347	82	4222
सितम्बर	115	319	1853	6615	8902
अक्टूबर	29	722	1334	135	2220
नवंबर	92	840	488237	13	489182
दिसम्बर	164	216	821	32	1233
जनवरी	214	228	1103	49	1594
फरवरी	153	370	1620	29	2172
मार्च	544	658	1286	46	2534
कुल	8332	20151	506115	7392	541990

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वर्ष 1991—92

माह	नौ दिवसीय	एकमासीय	अतिथि	प्रगतिशील जातीय सम्मेलन	कुल
अप्रैल	794	95	2147	1586	4622
मई	1280	206	3269	591	5346
जून	2487	320	10219	401	13427
जुलाई	414	189	4543	1529	6675
अगस्त	1441	205	3378	—	5024
सितम्बर	2422	291	3249	—	5962
अक्टूबर	2840	227	4667	1242	8976
नवंबर	760	139	3178	1661	5738
दिसम्बर	501	103	2197	589	3390
जनवरी	361	106	1392	844	2703
फरवरी	619	102	3885	844	2703
मार्च	492	66	2482	126	3166
कुल	14411	2049	44606	9413	70479

वर्ष 1992—93

माह	नौ दिवसीय	एकमासीय	नैतिक शिक्षा	बुद्धिजीवी
अप्रैल	1200	153	120	3291
मई	1100	264	—	—
जून	1241	300	—	14749
जुलाई	981	253	109	7613
अगस्त	1412	197	86	3474
सितम्बर	710	284	153	—
अक्टूबर	3104	164	—	1021
नवंबर	1022	84	65	1344
दिसम्बर	470	87	—	516
जनवरी	805	110	158	—
फरवरी	845	71	38	524
मार्च	1930	2080	873	6355
कुल	14820	2080	873	6355

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वर्ष 1993—94

माह	नौ दिवसीय	एकमासीय	नैतिक शिक्षा	कुल
अप्रैल	670	143	46	5851
मई	2768	375	201	14370
जून	5119	372	135	19709
जुलाई	2324	294	99	9687
अगस्त	2988	276	50	9882
सितम्बर	3328	312	—	11483
अक्टूबर	2351	180	48	10348
नवंबर	647	84	35	4315
दिसम्बर	321	84	—	2513
जनवरी	806	87	—	3671
फरवरी	868	96	20	4511
मार्च	846	142	—	4950
कुल	23036	2445	634	101290

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

वर्ष 1994—95

माह	नौ दिवसीय	एकमासीय	नैतिक शिक्षा	कुल
अप्रैल	960	201	—	6407
मई	3312	116	115	11161
जून	4382	180	—	16212
जुलाई	1330	272	50	11368
अगस्त	1655	346	70	8447
सितम्बर	1671	1036	148	10935
अक्टूबर	1658	194	58	6554
नवंबर	886	164	—	5315
दिसम्बर	610	123	117	3513
जनवरी	514	132	392	4018
फरवरी	522	121	88	3613
मार्च	578	80	408	4139
कुल	18078	2965	1446	19689

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वर्ष 1995–96

माह	नौ दिवसीय	एकमासीय	नैतिक शिक्षा	कुल
अप्रैल	1486	217	–	5750
मई	1985	348	–	8981
जून	5290	397	91	15474
जुलाई	1608	353	252	10883
अगस्त	2063	313	512	8335
सितम्बर	2167	254	447	7423
अक्टूबर	545	120	19	6916
नवंबर	722	94	–	20810
दिसम्बर	337	154	656	4919
जनवरी	382	104	177	4546
फरवरी	173	55	79	3173
मार्च	1541	73	255	6552
कुल	18299	2482	2488	103726

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

वर्ष 1996–97

माह	नौ दिवसीय	एकमासीय	नैतिक शिक्षा	पांच दिवसीय	कुल
अप्रैल	1324	206	–	–	6952
मई	2170	197	73	2187	13763
जून	–	209	146	4701	16182
जुलाई	6061	284	–	–	17774
अगस्त	5305	313	–	–	10479
सितम्बर	4715	262	–	–	9787
अक्टूबर	3061	171	277	–	10015
नवंबर	2301	156	127	–	8614
दिसम्बर	1539	59	66	–	5623
कुल	30223	2165	913	6888	115724

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वर्ष 1997–98

माह	नौ दिवसीय	एकमासीय	नैतिक शिक्षा	पांच दिवसीय	कुल
अप्रैल	6887	286	–	–	13854
मई	1075	313	35	2026	11816
जून	271	297	14	7110	22470
जुलाई	3095	502	15	–	17798
अगस्त	3280	349	204	–	11578
सितम्बर	4702	316	173	–	13987
अक्टूबर	3031	246	285	–	11558
नवंबर	1084	126	264	–	8946
दिसम्बर	664	126	378	–	5383
जनवरी	497	108	104	–	5138
फरवरी	972	130	102	–	7835
मार्च	1616	114	316	2096	10511
कुल	27174	2913	1890	11232	140874

वर्ष 1998–99

माह	नौ दिवसीय	एकमासीय	नैतिक शिक्षा	पांच दिवसीय	कुल
अप्रैल	–	197	64	6573	22500
मई	–	299	450	4537	14906
जून	–	533	20	5889	19717
जुलाई	3365	660	395	–	16061
अगस्त	4948	472	226	–	13471
सितम्बर	4363	345	79	–	11141
अक्टूबर	1703	201	350	–	10581
नवंबर	1856	182	140	–	9009
दिसम्बर	959	176	1100	–	7158
कुल	21027	3532	3304	17272	144604

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वर्ष 1999—2000

माह	नौ दिवसीय	एकमासीय	नैतिक शिक्षा	पांच दिवसीय	कुल
अप्रैल	—	208	116	2298	8427
मई	—	393	234	6891	25322
जून	—	574	218	12093	29061
जुलाई	—	348	284	5027	16770
अगस्त	3586	415	136	—	12157
सितम्बर	2362	301	222	—	10971
अक्टूबर	4007	203	319	—	21468
नवंबर	2017	182	2838	—	12761
दिसम्बर	953	148	341	—	7668
जनवरी	535	175	61	—	4988
फरवरी	715	116	392	—	7360
मार्च	501	89	43	—	6981
कुल	14676	3152	5204	26309	163934

वर्ष 2000—2001

माह	नौ दिवसीय	एकमासीय	नैतिक शिक्षा	पांच दिवसीय	कुल
अप्रैल	1882	226	—	—	10364
मई	—	332	—	4892	19775
जून	1573	439	185	6878	32239
जुलाई	1888	277	95	—	20579
अगस्त	3461	138	452	—	14132
सितम्बर	3667	287	118	—	14895
अक्टूबर	—	—	—	—	11653
नवंबर	265	—	—	—	9804
दिसम्बर	234	364	143	—	6834
जनवरी	230	74	60	—	6472
फरवरी	201	73	113	—	5430
मार्च	1042	70	—	—	7296
कुल	14443	2280	1166	11770	159473

विशेष — महापूर्णाहुति वर्ष नवम्बर 7891011 = 2575185

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वर्ष 2001—2002

माह	नौ दिवसीय	एकमासीय	नैतिक शिक्षा	पांच दिवसीय	कुल
अप्रैल	555	126	46	—	10540
मई	413	354	57	2000	19006
जून	—	403	69	13211	36876
जुलाई	1491	356	65	—	20267
अगस्त	1893	251	82	—	12108
सितम्बर	1953	219	58	—	14058
अक्टूबर	2395	143	41	60	13861
नवंबर	748	102	24	304	9863
दिसम्बर	378	54	24	375	7043
जनवरी	442	87	24	362	5987
फरवरी	356	63	25	311	7548
मार्च	308	72	68	379	7765
कुल	10932	2276	583	17002	164922

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

वर्ष 2002—2003

माह	नौ दिवसीय	एकमासीय	नैतिक शिक्षा	पांच दिवसीय	कुल
अप्रैल	1626	134	131	53	11477
मई	1390	80	419	122	17505
जून	3362	—	421	64	31839
जुलाई	2534	—	225	65	21280
अगस्त	2206	327	276	96	15960
सितम्बर	3007	324	233	110	15522
अक्टूबर	2847	247	135	60	16628
नवंबर	884	306	110	30	12913
दिसम्बर	553	325	136	41	9093
जनवरी	448	344	71	55	5898
फरवरी	344	261	105	12	10523
मार्च	726	301	153	59	10308
कुल	19927	2649	2430	767	178946

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वर्ष 2003–2004

माह	नौ दिवसीय	एकमासीय	नैतिक शिक्षा	पांच दिवसीय	कुल
अप्रैल	1999	214	26	–	
मई	2485	391	50	–	
जून	4683	543	61	–	
जुलाई	2293	274	72	–	
अगस्त	3400	271	30	–	
सितम्बर	5418	214	44	–	
अक्टूबर	1277	133	23	131	
नवंबर	1350	132	35	213	
दिसम्बर	960	75	15	245	
जनवरी	718	100	13	150	
फरवरी	475	99	13	209	
मार्च	1660	103	39	155	
कुल	26718	2549	421	1103	

विशेष : हरिद्वार–अर्द्धकुंभ 14 जनवरी से 14 मई 2004 कुंभ पर्व के स्नानार्थी जो शांतिकुंज आश्रम में रहकर साधना की।

वर्ष 2004–2005

माह	नौ दिवसीय	एकमासीय	नैतिक शिक्षा	पांच दिवसीय	कुल
अप्रैल	1205	198	139	150	14858
मई	3071	383	140	200	34682
जून	4237	386	132	190	31711
जुलाई	2678	295	150	220	20657
अगस्त	4124	263	436	215	19244
सितम्बर	3493	250	143	175	16857
अक्टूबर	4021	196	130	192	18856
नवंबर	1225	98	240	197	12973
दिसम्बर	766	98	225	227	8944
जनवरी	500	89	202	167	7512
फरवरी	527	72	300	173	9482
मार्च	600	96	296	170	–
कुल	25847	2328	2237	2106	–

विशेष :– भारत स्काउट्स एवं गाइड शिविर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वर्ष 2005–2006

माह	नौ दिवसीय	एकमासीय	नैतिक शिक्षा	पांच दिवसीय	कुल
अप्रैल	2676	251	26	—	15068
मई	2087	345	71	—	20927
जून	3412	299	37	—	34079
जुलाई	2515	182	51	—	22363
अगस्त	2463	270	60	—	16853
सितम्बर	4059	252	45	—	16727
अक्टूबर	2598	206	22	35	17729
नवंबर	1403	114	18	35	13308
दिसम्बर	611	113	22	35	8490
जनवरी	502	100	45	35	7309
फरवरी	558	125	30	40	11206
मार्च	725	150	50	50	10719
कुल	23609	2407	477	230	194776

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

वर्ष 2006–2007

माह	नौ दिवसीय	एकमासीय	नैतिक शिक्षा	पांच दिवसीय	कुल
अप्रैल	3075	238	—	—	16313
मई	3610	331	—	—	24268
जून	3879	389	—	—	38202
जुलाई	2815	293	—	—	30211
अगस्त	2701	327	—	—	21548
सितम्बर	2975	388	—	—	17861
अक्टूबर	2313	243	—	33	17362
नवंबर	2110	135	—	198	16138
दिसम्बर	1801	185	—	165	11416
जनवरी	1206	85	—	165	9092
फरवरी	595	67	—	198	9962
मार्च	630	141	—	66	11919
कुल	27710	2722	—	825	224229

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वर्ष 2007—2008

माह	नौ दिवसीय	एकमासीय	नैतिक शिक्षा	पांच दिवसीय	कुल
अप्रैल	3613	168	—	—	17934
मई	4446	415	—	—	27090
जून	4755	320	—	—	43657
जुलाई	3209	213	—	—	34420
अगस्त	2911	327	—	—	24878
सितम्बर	3565	30	—	—	19853
अक्टूबर	2789	149	—	—	18391
नवंबर	2701	99	—	66	17883
दिसम्बर	2055	80	—	165	12463
जनवरी	1126	67	—	165	9037
फरवरी	696	195	—	198	9386
मार्च	818	95	—	198	12185
कुल	32684	2158	—	792	247177

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

वर्ष 2008—2009

माह	नौ दिवसीय	एकमासीय	नैतिक शिक्षा	पांच दिवसीय	कुल
अप्रैल	1375	209	—	—	16195
मई	2473	274	—	—	28099
जून	4611	475	—	—	44078
जुलाई	2345	349	—	—	30568
अगस्त	2362	386	—	—	25782
सितम्बर	2604	349	—	—	19973
अक्टूबर	2111	167	—	—	17725
नवंबर	1204	95	—	186	16527
दिसम्बर	1009	130	—	155	11664
जनवरी	725	65	1020	155	12909
फरवरी	560	65	1213	186	11847
मार्च	2840	90	—	155	15180
कुल	24219	2654	2233	837	150547

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वर्ष 2009–2010

माह	नौ दिवसीय	एकमासीय	नैतिक शिक्षा	पांच दिवसीय	कुल
अप्रैल	1599	167	–	–	18340
मई	2783	485	–	–	23102
जून	5861	277	–	–	38395
जुलाई	2557	210	–	–	15310
अगस्त	4687	295	–	–	18348
सितम्बर	6004	355	–	–	16883
अक्टूबर	2165	–	–	–	15840
नवंबर	1840	150	–	–	18100
दिसम्बर	894	100	–	–	14081

www.awgp.org

युग शिल्पी प्रशिक्षण सत्र

क्र.	माह	वर्ष									
		2000	–01	–02	–03	–04	–05	–06	–07	–08	–09
1.	जनवरी	177	75	86	71	100	89	46	55	47	42
2.	फरवरी	116	73	64	105	99	72	90	45	120	54
3.	मार्च	91	63	72	153	103	97	78	86	65	164
4.	अप्रैल	227	125	133	214	198	133	138	98	113	283
5.	मई	337	361	424	391	383	206	201	215	177	227
6.	जून	434	456	425	543	386	150	214	180	275	126
7.	जुलाई	278	299	227	274	295	115	163	113	349	125
8.	अगस्त	282	255	287	271	263	156	187	177	386	199
9.	सितम्बर	289	220	233	214	250	178	208	107	349	–
10.	अक्टूबर	–	142	136	133	193	140	143	99	167	–
11.	नवम्बर	–	102	112	132	98	84	85	64	74	–
12.	दिसम्बर	364	54	136	74	98	72	65	55	100	–
		2595	2225	2325	2579	2466	1492	1618	1294	2222	1220

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एकमासीय युगशिल्पी सत्र

क्र.	माह	2005	2006	2007	2008	2009
1.	जनवरी	–	16	40	20	24
2.	फरवरी	–	32	16	30	24
3.	मार्च	50	26	41	33	33
4.	अप्रैल	118	111	75	55	60
5.	मई	140	210	206	189	228
6.	जून	149	179	179	188	123
7.	जुलाई	56	108	85	90	103
8.	अगस्त	84	157	80	86	
9.	सितम्बर	50	43	76	83	
10.	अक्टूबर	66	84	71	44	
11.	नवम्बर	28	52	27	19	
12.	दिसम्बर	30	28	26	23	

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

युगचेतना शिविर

क्र.	शहर	प्रदेश	दिनांक	वर्ष
1.	भोपाल	मध्यप्रदेश	13–14 सितम्बर	1998
2.	बैतूल	मध्यप्रदेश	24–27 अक्टूबर	2002
3.	फरसगाँव	छत्तीसगढ़	24–25 अप्रैल	2003
4.	जबलपुर	मध्यप्रदेश	31 अक्टू. से 2 नवं.	2003
5.	इन्दौर	मध्यप्रदेश	11–13 दिसम्बर	2004
6.	गुना	मध्यप्रदेश	14–16 जनवरी	2005
7.	लोनावाला	महाराष्ट्र	16–18 जून	2006
8.	बस्तर	छत्तीसगढ़	17 दिसम्बर	2006
9.	नागपुर	महाराष्ट्र	17 दिसम्बर	2006
10.	शांतिकुंज हरिद्वार	उत्तराखण्ड	30 दिसम्बर 06 से 04 जनवरी 2007	
11.	नीमच	मध्यप्रदेश	11–13 जनवरी	2007
12.	देवरिया	उत्तरप्रदेश	13–14 मार्च	2007
13.	अम्बिकापुर	छत्तीसगढ़	05–06 मई	2007
14.	राणेगणसिद्धि	महाराष्ट्र	08–10 जून	2007

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्र.	शहर	प्रदेश	दिनांक	वर्ष
15.	गोगुंदा (उदयपुर)	राजस्थान	16–17 जून	2007
16.	नोएडा	दिल्ली	15–16 सितम्बर	2007
17.	बिजनौर	उत्तरप्रदेश	06–07 अक्टूबर	2007
18.	छिंदवाड़ा	मध्यप्रदेश	31 अक्टू–02 नव.	2007
19.	बीकानेर	राजस्थान	05–07 जनवरी	2008
20.	बड़ोदरा	गुजरात	03–04 मई	2008
21.	अकोला	महाराष्ट्र	05–07 दिसम्बर	2008
22.	झालावाड़	राजस्थान	03–05 जनवरी	2009
23.	शाजापुर	म.प्र.	09–11 जनवरी	2009
24.	कटक	उड़ीसा	12–13 अप्रैल	2009

विदेश में सम्पन्न युवा चेतना शिविर

1.	विंस्टन हिल्स	आस्ट्रेलिया	11–13 मई	2007
2.	सिडारफाल्स कैलीफोर्निया	अमेरिका	11–15 जुलाई	2007
3.	माहवा (न्यूजर्सी)	अमेरिका	18–22 जुलाई	2007
4.	नार्थ कैरोलिना	अमेरिका	25–27 जुलाई	2008
5.	न्यूजर्सी	अमेरिका	31 जुलाई–03 अगस्त	2008
6.	फेंसा कॉलेज लन्दन	कनाडा	07–10 अगस्त	2008

क्षेत्रीय युवा चेतना शिविर

1.	बिजनौर	उत्तरप्रदेश	06–07 अक्टूबर	2007
2.	बलिया	उत्तरप्रदेश	03–04 अप्रैल	2008
3.	सिलीगुड़ी	प.बंगाल	12–13 मार्च	2008
4.	सहरसा	बिहार	16–17 मार्च	2008
5.	पूर्णिया	बिहार	14–15 मार्च	2008
6.	शांतिकुंज	उत्तराखण्ड	27–29 जून	2008

सम्पन्न हुई जोनल कार्यशालाएँ

1.	कोलकाता	पश्चिमबंगाल	09–11 अप्रैल	2004
2.	शांतिकुंज	उत्तराखण्ड	14–16 मई	2004
3.	शिमला	हिमांचल	11–14 जून	2004
4.	जयपुर	राजस्थान	23–25 जुलाई	2004

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

5.	सिलीगड़ी	प.बंगाल	17–19 सितम्बर	2004
6.	भोपाल	मध्यप्रदेश	26–28 नवम्बर	2004
7.	जमशेदपुर	झारखण्ड	14–16 अक्टूबर	2005
8.	नवी मुम्बई	महाराष्ट्र	12–13 नवम्बर	2005
9.	द्वाराहाट	उत्तराखण्ड	23–25 जून	2006
10.	शांतिकुंज	उत्तराखण्ड	29 जून–1 जुलाई	2006
11.	उन्नाव	उत्तरप्रदेश	22–24 दिसम्बर	2006
12.	हैदराबाद	आन्ध्रप्रदेश	22–24 दिसम्बर	2007
13.	पटना	बिहार	15–16 फरवरी	2008

शिविर

क्र.	शिविर के प्रकार	शिविर की उपस्थिति	योग
वर्ष 1971–72			
1.	5–5 दिवसीय स्थापना शिविर वर्ष भर (26 जून 71–30 मार्च 72)	3640	
2.	अतिथि 21 जून 1971 से	6280	9920
वर्ष 1972–73			
1.	10 दिवसीय अनुदान शिविर वर्षभर	4218	
2.	अतिथि	7114	11332
वर्ष 1973–74			
1.	5 दिवसीय प्राणप्रत्यावर्तन शिविर वर्षभर	3416	
2.	अतिथि	6400	9816
वर्ष 1974–75			
1.	10 दिवसीय वानप्रस्थ शिविर (तीर्थ यात्रा शिविर) (प्रत्येक वानप्रस्थी प्रशिक्षण के बाद ग्रामोत्थान की विभिन्न गतिविधियों को व्यावहारिक रूप देने के लिए महीने भर गाँव–गाँव जाकर वहां के जनजीवन को प्रशिक्षित करते रहे)	2988	
2.	अतिथि	11614	14602

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वर्ष 1975–1976			
1.	10 दिवसीय परिव्राजक शिविर	3810	
2.	10 दिवसीय रामायण शिविर	2700	
3.	अतिथि	10972	17482
वर्ष 1976–1977			
1.	महिला जागृति अभियान 1 वर्षीय कन्या प्रशिक्षण शिविर	140	
2.	3 मासीय महिला प्रशिक्षण शिविर	400	
3.	वानप्रस्थ शिविर (10 दिवसीय)	2630	
4.	अतिथि	13680	16850
वर्ष 1977–78			
1.	एक वर्षीय कन्या प्रशिक्षण शिविर	140	
2.	3 मासीय गृहलक्ष्मी प्रशिक्षण शिविर	550	
3.	9 दिवसीय साधना शिविर	3110	
4.	अतिथि	12220	16020
वर्ष 1978–79			
1.	एक वर्षीय कन्या प्रशिक्षण शिविर	140	
2.	3 मासीय महिला प्रशिक्षण शिविर	480	
3.	एक मासीय चान्द्रायण शिविर	1500	
4.	अतिथि	18078	20198
वर्ष 1979–80			
1.	एक वर्षीय कन्या प्रशिक्षण शिविर	140	
2.	एक मासीय चन्द्रायण शिविर	1380	
3.	10 दिवसीय वानप्रस्थ शिविर	800	
4.	शक्तिपीठ स्थापना शिविर	2000	
5.	5 दिवसीय जातीय सम्मेलन	10310	
6.	अतिथि	7890	22520
वर्ष 1980–81			
1.	पांच दिवसीय सम्मेलन	6220	
2.	एक मासीय परिव्राजक शिविर	1100	
3.	9 दिवसीय जीवन साधना शिविर और शोध शिविर	2242	
4.	अतिथि	14180	23742

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वर्ष 1981–82

1.	9 दिवसीय साधना शिविर और लेखन शिविर	1137	
2.	एक मासीय परिव्राजक शिविर	610	
3.	15 दिवसीय प्रज्ञापुराण कथावाचन शिविर	800	
4.	अतिथि	15436	17983

वर्ष 1982–83

1.	5 दिवसीय अनुदान शिविर	4088	
2.	एक मासीय लोक शिक्षण शिविर	1077	
3.	अतिथि	16438	21603

वर्ष 1983–84

1.	9 दिवसीय जीवन साधना शिविर	1814	
2.	एक मासीय कल्प साधना शिविर	2118	
3.	5 दिवसीय परामर्श शिविर	3580	
4.	अतिथि	19418	26930

वर्ष 1984–85

1.	5 दिवसीय परिवार शिविर (सम्मेलन)	8470	
2.	9 दिवसीय साधना शिविर	5530	
3.	एक मासीय लोक शिक्षण शिविर	1220	
4.	अतिथि	20418	35638

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

विभिन्न वर्गों के विशेष प्रशिक्षण सत्र

क्र.	प्रशिक्षण का प्रकार	विभाग एवं पद	दिनांक	प्रति. भागी संख्या	अन्य धर्मा–वलंबी
वर्ष 1985–86					
1.	बेसिक ट्रेनिंग कालेजों का नैतिक शिक्षा का प्रशिक्षण	बेसिक शिक्षा (प्राचार्य एवं शिक्षक)	20–28नव.	38	7
2.	बेसिक ट्रेनिंग कालेजों का नैतिक शिक्षा का प्रशिक्षण	बेसिक शिक्षा (प्राचार्य एवं शिक्षक)	29न.7दि.	57	3

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

3.	बेसिक ट्रेनिंग कालेजों का नैतिक शिक्षा का प्रशिक्षण	बेसिक शिक्षा (प्राचार्य एवं शिक्षक)	8–16 दिस.	43	3
4.	बेसिक ट्रेनिंग कालेजों का नैतिक शिक्षा का प्रशिक्षण	बेसिक शिक्षा (प्राचार्य एवं शिक्षक)	17–24 दिस.	62	1
5.	बेसिक ट्रेनिंग कॉलेजों का नैतिक शिक्षा का प्रशिक्षण	बेसिक शिक्षा (प्राचार्य एवं शिक्षक)	26 दि.2जन.	43	3
6.	जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी व्यक्तित्व परिष्कार प्रशिक्षण		4–11 जन.	47	4
7.	अपर जिला बेसिक शिक्षाधिकारी (प्रशिक्षण)		13–20 जन.	39	1
8.	शिक्षक एवं प्राचार्य (बी.टी.सी.)		22–27 जन.	72	3
9.	माध्यमिक शिक्षा के अंतर्गत जिला विद्यालय निरीक्षकों एवं स.बा.वि. निरीक्षिकाओं का व्यक्तित्व परिष्कार प्रशिक्षण		28–31 जन.	63	1
10.	उच्च शिक्षा के अंतर्गत बी.एड. कॉलेज के प्राचार्यों एवं प्राध्यापकों का नैतिक शिक्षा का प्रशिक्षण		3–9 फर. 86	63	5
11.	–	–	15–1फर.86	56	1
12.	–	–	22–28फर.86	35	–
13.	–	–	4–10 मार्च86	35	–
14.	–	–	11–17 मार्च 86	46	2
15.	–	–	18–24 मार्च 86	50	–
16.	–	–	29मा.–4अप्रै 86	81	–
कुल सत्र संख्या – 16 (सोलह)				830	34

वर्ष 1986–87

1.	नैतिक शिक्षा का प्रशि.	प्र.उ.वि.नि. उप.वि.निरि. स.बा.वि.नि. (बेसिक शिक्षा)	20 फर.–26 अप्रै. 86	63	1
2	–	–	27 अप्रै.–3 मई 86	66	4
3.	–	–	4–10 मई 86 66	4	
4.	–	–	11–17 मई 86	76	7

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

5.	—	—	18—24 मई 86	68	7
6.	—	—	25—31 मई 86	58	3
7.	—	—	1—7 जुलाई 86	76	1
8.	—	—	8—14 जुलाई 86	71	3
9.	—	—	27 जुला.—2 अग.86	82	2
10.	—	—	3—9 अगस्त 86	73	3
11.	—	—	10—16 अगस्त 86	68	3
12.	—	—	17—23 अगस्त 86	56	2
13.	—	—	24—30 अगस्त 86	82	5
14.	—	—	31 अग.—6 सित.88	94	4
15.	—	—	7—13 सितम्बर 96	82	8
16.	—	—	14—20 सितम्बर 86	62	3
17.	—	—	21—27 सित. 86	48	5
18.	—	—	28 सि.—1 अक्टू. 86	74	8
19.	—	—	14—20 अक्टू. 86	79	2
20.	—	—	21—27 अक्टू. 86	61	1
21.	वरिष्ठ शिक्षा अधिकारियों का विशेष प्रशिक्षण (गोष्ठी)	—	27—30 अक्टू. 86	37	1
22.	नैतिक शिक्षा प्रशिक्षण (बेसिक शिक्षा) उ.वि.नि.	—	3—9 नव. 86 37	1	
23.	माध्यमिक शिक्षा के अन्तर्गत राजकीय इण्टर कॉलेजों के प्रधानाचार्यों का व्यक्तित्व परिष्कार प्रशिक्षण		17—21 नवम्बर 86	62	2
24.	—	—	22—26 नव. 86	42	3
25.	—	—	27 नवं—1 दिस. 86	24	1
26.	माध्यमिक शिक्षा के अंतर्गत राजकीय इ.का. के प्रधानाचार्यों का व्यक्तित्व परिष्कार प्रशिक्षण—		19—22 दिसम्बर 86	54	1
27.	—	—	23—27 दिस. 86	55	2
28.	—	—	28 दिसं.—1 जन.87	62	3
29.	—	—	7—11 जनवरी 87	54	2

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

30.	–	–	12–16 जन. 87	62	2
31.	–	–	17–21 जनवरी 87	65	1
32.	–	–	22–26 जनवरी 87	89	8
33.	–	–	27–31 जनवरी 87	81	1
34.	–	–	6–10 फर. 8762	3	
35.	एस.डी.ओ./ए.आई.जी.एस.				
36.	व्यक्तिगत परिष्कार मुख्य मद्‌य निषेध प्रशिक्षण अधिकारी (उ.प्र.) मद्‌य निषेध विभाग		17–24 मार्च 87	23	–
	कुल सत्र संख्या – 36		2278	109	

वर्ष 1987–88

1.	व्यक्तिगत परिष्कार प्रशिक्षण	परिवहन विभाग उ.प्र. आर.टी.ओ. इन्सपेक्टर्स	10–14 अप्रैल 87	25	1
2.	स्काउट/गाइड	युवा कल्याण	15–24 अप्रैल 87	119	2
3.	व्यक्तित्व परिष्कार प्रशिक्षण	उ.प्र. खादी व ग्रामोद्योग बोर्ड के वरिष्ठ अधिकारी	25–29 अप्रैल 87	94	6
4.	–	–	30 अप्रै.–4मई 87	86	10
5.	नैतिक शिक्षा प्रशिक्षण	अधीक्षक (बेसिक शिक्षा)	6–10 मई 87	32	1
6.	–	जे.बे.शि.अ.	11–15 मई 87	52	1
7.	–	–	16–20 मई 87	39	1
8.	–	माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्य	21–25 मई 87	89	1
9.	–	–	26–39 मई 87	70	1
10.	–	–	31 मई–4 जून 87	42	1
11.	–	–	10–14 जून 87	26	1
12.	व्यक्तित्व परिष्कार प्रशिक्षण	ग्रामोद्योग विभाग	उ.प्र. खादी व 1–5 सित. 87	19	1
13.	–	–	6–10 सित. 87	14	3

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

14.	—	जिला प्रौढ़ शिक्षा अधिकारी उ.प्र.	11–15 सित. 87	40	3
15.	—	—	16–20 सित. 87	37	3
16.	स्काउट/गाइड	माध्यमिक विद्यालयों के प्राचार्य एवं शिक्षक उ.प्र.	5–14 अक्टूबर 87	108	5
17.	—	—	25–29 अक्टू. 87	79	1
18.	—	—	30 ऑ..–3 नवं.87	74	6
19.	—	—	4–8 नवं. 87	61	2
20.	—	—	9–13 नवं. 87	73	4
21.	—	—	14–18 नवं. 87	68	—
22.	—	—	19–23 नवं. 87	81	1
23.	—	—	24–28 नवं. 87	69	2
24.	—	—	29 नवं–3 दि. 87	89	1
25.	स्काउट/गाइड (प्रीहिमालय) वुड बैज प्रशिक्षण	शिक्षक/शिक्षिका उ.प्र.	5–14 दिसं. 87	62	2
26.	—	—	16–25 दिसं. 87	64	—
27.	—	—	27 दि.–5 जन.88	47	—
28.	—	—	7–16 जन. 88	56	3
29.	—	—	25ज.–3 फर. 88	60	3
30.	—	—	5–14 फर. 88	61	2
31.	—	—	16–25 फर. 88	29	—
32.	—	नेशनल स्काउट ट्रेनिंग	13–20 जन. 88	20	—
33.	—	ओवर लीडर ट्रेनिंग	25 फ.–2 मार्च 88	10	—
34.	व्यक्तित्व परिष्कार प्रशिक्षण सहायक परियोजना एवं पर्यवेक्षक उ.प्र.	प्रौढ़ शिक्षा विभाग अधिकारी	5–9 दिसं. 87	45	—
35.	—	—	10–14 दिसं. 87	38	2
36.	—	—	15–19 दिसं. 87	27	1
37.	—	—	20–24 दिसं. 87	40	—
38.	—	—	25–29 दिसं. 87	69	2
39.	—	—	30 दि.–3 जन.88	53	—

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

40.	–	–	4–8 जनवरी 88	37	1
41.	–	–	9–13 जन. 88	66	3
42.	–	–	14–18 जनवरी 88	42	1
43.	–	–	28जन.–1 फर. 88	71	2
44.	–	–	2–6 फरवरी 88	86	1
45.	–	–	7–11 फर. 88	46	–
कुल सत्र संख्या – 45				2515	81

वर्ष 1988–89

1.	व्यक्तित्व परिष्कार प्रशिक्षण	परिवहन विभाग स.स. परिवहन अधिकारी	9–13 मई 88	21	1
2.	स्काउट/गाइड	रोवर लीडर ट्रेनिंग (उच्च शिक्षा)	25 मई–3 जून 88	14	–
3.	पुनर्बोधात्मक प्रशिक्षण संदर्भ केन्द्रों के प्रधानाचार्य/शिक्षकों का स्काउट/गाइड/नैतिक शिक्षा का प्रशिक्षण	–	1–5 अगस्त 88	88	3
4.	–	–	6–15 अगस्त 88	117	7
5.	–	–	16–20 अगस्त 88	90	–
6.	–	–	21–30 अगस्त 88	106	3
7.	–	–	31अग.–5 सित.88	76	2
8.	–	–	5–14 सित. 88	55	–
9.	–	–	15–19 सित. 88	61	4
10.	–	–	20–29 सित. 88	60	1
11.	–	–	30 सि.–4अक्टू.88	76	2
12.	–	–	5–9 अक्टू. 88	69	3
13.	–	–	23–27 अक्टू. 88	69	3
14.	–	–	28 अक्टू.6 नवं. 88	45	1
15.	–	–	12–16 नवं. 88	43	8
16.	–	–	27 नवं–1 दि. 88	50	5
17.	–	–	2–11 दिसं. 88	45	3
18.	–	–	22–31 दिसं. 88	44	1

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

19.	—	—	1—10 जन. 89	54	3
20.	—	—	11—20 जन. 89	62	2
21.	—	—	21—30 जन. 89	59	5
22.	एन.सी.ई.आर.टी. (वर्कशाप)	—	17—21 नव. 88	26	—
23.	शिक्षा तथा ग्रामोद्योग विभाग की व्यावसायिक संगोष्ठी (प्रशिक्षण)	—	20—21 अगस्त 88	47	2
24.	स्काउट कमिश्नर्स कोर्स प्रशिक्षण	(विशेष)	20—21 अगस्त 88	47	2
25.	हरियाणा सरकार द्वारा भेजे गए विश्वविद्यालयों के शिक्षकों का मूल्य परक शिक्षा प्रशिक्षण	—	1—10 जनवरी 89	3	—
26.	व्यक्तिगत परिष्कार प्रशिक्षण	खादी एवं ग्राम. विभाग, उ.प्र. के अधिकारी/रेशम विभाग के अधिकारी	7—12 दिसम्बर 88	26	2
27.	—	—	11—14 दिस. 88	29	2
28.	—	—	15—18 दिस. 88	27	6
29.	—	—	19—22 दिस. 88	24	6
30.	—	मौन पालन विभाग	5—7 फर. 89	13	2
31.	स्काउट/गाइड प्रशिक्षण	जिला स्काउट कमिश्नर	21—24 दिस. 88	52	1
32.	—	जिला स्काउट सचिव	24—28 दिस. 88	35	—
33.	—	पेट्रोल लीडर ट्रेनर्स	11—17 जन. 89	46	2
34.	—	रोवर लीडर ट्रेनिंग (उच्च शिक्षा)	21—30 जन. 89	32	—
35.	उ.प्र.रा.स.प.नि.	—	22—28 फर. 89	84	5
36.	—	—	1—7 मार्च 89	78	4
37.	रोवर लीडर	—	8—17 मार्च 89	13	1
38.	उ.प्र.रा.स.प.नि.	—	26 मा.—1अप्रै 89	109	4
कुल				1974	95

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वर्ष 1989–90

1.	उ.प्र.रा.स.प.नि.	–	18–24 अप्रेल 89	107	5
	उ.प्र. भारत स्काउट गाइड सेमिनार जीन पीस एवं इको सेमिनार				
2.	प्रधानाचार्यों का नैतिक प्रशिक्षण	–	25–29 अप्रै. 89	42	1
3.	–	–	18–5 अग. 89	106	4
4.	–	–	6–10 अग. 89	106	5
5.	–	–	11–15 अग. 89	63	4
6.	–	–	16–20 अग. 89	80	1
7.	–	–	21–25 अग. 89	62	5
8.	–	–	26–30 अग. 89	60	4
9.	–	–	31अग.–4सित.89	60	3
10.	–	–	5–9 सित. 89	52	1
11.	–	–	10–14 सित. 89	62	2
12.	–	–	15–19 सित. 89	81	2
स्काउट गाइड प्रशिक्षण					
13.	–	–	20–29 सित. 89	123	1
14.	–	–	12–21 अक्टू.89	84	2
एन.सी.ई.आर.टी. वर्कशॉप					
15.	–	–	16–20 अक्टू. 89	4	–
16.	–	–	1–10 नव. 89	66	1
स्काउट गाइड प्रशिक्षण					
17.	पुलिस व्यक्तित्व परिष्कार प्रशिक्षण				
18.	–	–	1–6 दिसम्बर 89	89	3
19.	–	–	7–12 दिसम्बर 89	105	4
20.	स्काउट गाईड प्रशिक्षण	–	11–20 दिसम्बर 89	40	4
21.	सड़क परिवहन निगम	–	13–23 दिसम्बर 89	82	5
22.	पर्यावरण वर्कशाप एवं प्रशिक्षण	–	18–23 दिसम्बर 89	92	1
23.	–	–	21–30 दिसम्बर 89	61	2
24.	परिवहन निगम प्रशिक्षण	–	24–28 दिसम्बर 89	56	5

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

25.	–	–	29 दिस.–2 जन.90	49	1
26.	स्काउट एवं गाइड	–	31 दिस.–9 जन.90	49	1
27.	पर्यावरण कार्यशाला	–	3–8 जन. 90	56	1
28.	परिवहन विभाग	–	9–13 जनवरी 90	69	5
29.	स्काउट गाइड	–	10–19 जनवरी 90	25	2
30.	राज्य परिवहन निगम	–	14–18 जनवरी 90	63	10
31.	–	–	19–23 जनवरी 90	51	5
32.	स्काउट गाइड	–	20–29 जनवरी 90	54	1
33.	इकोरेस्टोटेशन वर्कशॉप	–	4–28 जनवरी 90	69	1
34.	पुलिस व्यक्तित्व परिष्कार प्रशिक्षण	–	3–5 फरवरी 90	33	1
35.	खादी ग्रामोद्योग सेमिनार	–	3–24 फरवरी 90	61	5
कुल				2213	109

वर्ष 1990–91

1.	एन.सी.ई.आर.टी. वर्क शॉप	–	8–12 अक्टू. 90	22	2
2.	महिला ग्राम्य विकास प्रशिक्षण	–	13–18 नवम्बर 90	16	1
3.	–	–	25–30 नवम्बर 90	26	2
4.	–	–	3–9 दिसम्बर 90	16	3
5.	–	–	17–22 दिसम्बर 90	11	1
6.	–	–	7–12 जनवरी 91	16	2
7.	–	–	25–30 जन. 90	30	2
8.	–	–	4–9 फरवरी 90	32	2
9.	–	–	18–23 फरवरी 90	30	2
पुलिस व्यक्तित्व परिष्कार प्रशिक्षण					
10.	–	–	26–30 नवम्बर 90	97	6
11.	–	–	1–5 दिसम्बर 90	130	4
12.	–	–	6–10 दिसम्बर 90	128	10
13.	–	–	11–15 दिसम्बर 90	127	3

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

14.	—	—	24—30 दिसम्बर 90	129	4
15.	—	—	31 दिस.—5 जन.91	129	3
16.	—	—	7—14 जनवरी 91	125	5
कुल				1064	52
वर्ष 1991—92					
1.	राज्य पुरस्कार स्का. /गाइड (उ.प्र.)		12—16 जून 91	21	—
2.	एस.डी.ओ. कृषि उ.प्र.	—	6—10 जुलाई 91	19	1
3.	—	—	12—16 जुलाई 91	12	—
4.	प्रार. रेंजर लीडर कोर्स (उ.प्र.)	—	15—24 जुलाई 91	23	1
5.	उच्च विद्या. प्रधानाचार्य बिहार	—	26—30 अगस्त 91	50	—
6.	—	—	31 अग.—4 सित.91	95	—
7.	राज्यपाल पुरस्कार शिविर भारत स्काउट/गाइड (उ.प्र.)	—	3—7 सितम्बर 91	14	1
8.	उच्च विद्या. प्रधानाचार्य बिहार	—	5—9 सितम्बर 91	14	1
9.	—	—	10—14 सितम्बर 91	26	—
10.	—	—	15—19 सितम्बर 91	55	7
11.	ई.का. प्रधानाचार्य उ.प्र.	—	16—20 सितम्बर 91	75	4
12.	उच्च विद्यालय प्रधानाचार्य बिहार	—	20—24 सितम्बर 91	82	—
13.	इंटर कॉलेज प्रधानाचार्य उ.प्र.	—	21 सि.—25 अक्टू.91	72	2
14.	—	—	26—30 सित. 91	62	3
15.	—	—	1—5 अक्टू. 91	46	6
16.	सामूदायिक गायन कोर्स भारत स्काउट गाइड उ.प्र.	—	1—5 अक्टू. 91	131	9
17.	खादी ग्रामोद्योग उ.प्र.	—	4—5 अक्टू. 91	12	—

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

18. जनपद संयोजक रोवर/रेंजर्स	–	11–13 अक्टू. 91	43	1
19. इंटर कॉलेज प्रधानाचार्य उ.प्र.	–	21–25 अक्टू. 91	80	2
20. –	–	26–30 अक्टूबर 91	64	2
21. –	–	11–15 नवम्बर 91	70	2
22. –	–	16–20 नवम्बर 91	39	1
23. –	–	21–25 नवम्बर 91	59	5
24. –	–	26–30 नवम्बर 91	89	5
25. एन.सी.ई.आर.टी. दिल्ली (मूल्य शिक्षा संगोष्ठी, रीज कॉ अजमेर राजस्थान द्वारा)	–	25–28 नवम्बर 91	26	–
26. बेसिक कोर्स स्काउट मास्टर गाइड कैप्टन, केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ लखनऊ (उ.प्र.)	–	7–16 दिसम्बर 91	47	'
27. स्का./गाइड राज. दीक्षा विद्यालय देहरादून उ.प्र.		10–16 दिसम्बर 91	37	3
28. बेसिक कोर्स स्का. मास्टर उ.प्र.		17–25 दिसम्बर 91	17	2
29. इफको भारत सरकार	–	17–22 दिसम्बर 91	22	–
30. एडवांरा गाइड कैप्टन्स उ.प्र.	–	20–29 दिसम्बर 91	14	–
31. पूर्व प्रारंभिक स्का./गाइड उ.प्र.		20–29 दिसम्बर 91	14	–
32. एन.सी.ई.आर.टी.दिल्ली (हिन्दी भाषा संगोष्ठी)	–	28 जन.–4 फर. 92	21	–
33. एन.सी.ई.आर.टी. दिल्ली (हिन्दी आशुलिपि प्रश्नपत्र संगोष्ठी)	–	18–24 फरवरी 92	9	–
34. डी.आर.ई.टी. के प्रधानाचार्य एवं व्याख्याता (राजस्थान सरकार)	–	1–5 मार्च 92	23	1
कुल			1668	62

www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वर्ष 1992–93

क्र.	कब से कब तक	चलने वाले सत्रों का विवरण	प्रतिभागी
1.	4–13 नवम्बर 92	केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ लखनऊ बेसिक कोर्स स्काउट मास्टर, गाइड कैप्टन प्रशिक्षण	53
2.	15–21 नवम्बर 92	मध्यप्रदेश शासन/व्यक्तित्व परिष्कार प्रशिक्षण (नैतिक मूल्यों का)	3
3.	25 दिसं.–31 जन. 93	एन.एस.एस. कैम्प/राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर (दस दिवसीय)	103
4.	16–24 जनवरी 93	राजस्थान रच. प्रशिक्षण महाविद्यालय लखनऊ स्काउट गाइड प्रशिक्षण	158
5.	12–16 फरवरी 93	भारतीय ग्रामीण महिला संघ प्रशिक्षण दिल्ली, बी.–13, ग्रेटर कैलास–1, नई दिल्ली	33
6.	24 फर.–5 मार्च 93	राष्ट्रीय सेवा योजना म्यूनिसिपल पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज मसूरी (देहरादुन)	54
7.	15–19 मार्च 93	नैतिक शिक्षा प्रशिक्षण कृषि निदेशालय कृषि भवन लखनऊ	18
8.	16–20 अप्रैल 93	नैतिक शिक्षा प्रशिक्षण कृषि विभाग उ.प्र.	16
9.	26–30 अप्रैल 93	कृषि विभाग उ.प्र. के अधिकारियों का मानवीय मूल्यों पर आधारित नैतिक प्रशिक्षण	30
10.	1–9 मई 93	स्काउट गाइड प्रशिक्षण शिविर मेरठ उ.प्र.	26
11.	14–17 मई 93	स्काउट गाइड प्रशिक्षण/भारत स्काउट गाइड बागपत मेरठ	27
कुल			521

वर्ष 1993–94

1.	7–11 जून 93	वर्कशाप से डेवलप एजुकेशनल रिसर्च प्रपोज, एन.सी.ई.आर.टी. 555/ई ममफोर्ड इलाहाबाद (यूपी)	22
2.	20–22 जून 93	परिषद उत्तरप्रदेश प्रधानाचार्य शैक्षिक गोष्ठी	113
3.	12–14 जुलाई 93	राजस्थान शिक्षक प्रशिक्षण विद्यापीठ शाहपुरा बाग अजमेर रोड, जयपुर	79

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

4.	16–20 जुलाई 93	नैतिक प्रशिक्षण कृषि विभाग उ.प्र.	9
5.	21–25 जुलाई 93	नैतिक प्रशिक्षण कृषि विभाग उ.प्र.	61
6.	22–26 नवम्बर 93	दिल्ली प्रधानाचार्य प्रशिक्षण शिविर	22
7.	23–27 नवम्बर 93	स्काउट शिविर (राज्यपाल पुरस्कार) उ.प्र.	13
8.	18–22 फरवरी 94	स्काउट गाइड शिविर उ.प्र.	6
9.	17–21 फरवरी 94	कृषि अधिकारी नैतिक शिविर उ.प्र.	8
10.	23–27 फरवरी 94	कृषि विभाग प्रशिक्षण सत्र उ.प्र.	6
11.	7–8 मई 94	उत्तरप्रदेश स्काउट काइड्स संगोष्ठी	80
12.	12–15 मई 94	अपट्रान अधिकारियों का नैतिक प्रशिक्षण लखनऊ उ.प्र.	12
13.	11–15 मई 94	कृषि विस्तार अधिकारियों का प्रशिक्षण उ.प्र.	8
14.	15–18 जुलाई 94	अपट्रान इण्डिया लिमिटेड लखनऊ के अधिकारियों का नैतिक प्रशिक्षण	32
15.	26–30 जुलाई 94	कृषि विभाग के अधिकारियों का नैतिक प्रशिक्षण शिविर	18
कुल			495

वर्ष 1994–95

1.	5–10 अगस्त 94	कृषि निदेशक अधिकारी उ.प्र. लखनऊ नैतिक प्रशिक्षण शिविर	35
2.	25–27 अगस्त 94	इफको प्रशिक्षण शिविर, हरियाणा हिमाचल	35
3.	13–16 सितम्बर 94	इफको अधिकार उ.प्र.	83
4.	26–22 सितम्बर 94	इफको अधिकारी उ.प्र.	65
5.	25–28 अक्टूबर 94	इफको अधिकारी बिहार	58
6.	5–10 दिसम्बर 94	गायत्री ट्रस्टी शिविर उ.प्र.	101
7.	2–8 जनवरी 95	मध्यप्रदेश ऋचा प्रशिक्षण सत्र (प्रथम सत्र)	221
8.	9–14 जनवरी 95	ऋचा सम्मेलन उ.प्र.70	
9.	11–14 मार्च 95	इफको सत्र पंजाब	40
10.	23–25 मार्च 95	इफको प्रशिक्षण सत्र हरियाणा	44

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

11.	22–31 मार्च 95	राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर बी.कॉम. एस.एन.जे.एन.पी.जी. कॉलेज हरिद्वार	109
12.	24–27 मार्च 95	गांधी शिक्षक महाविद्यालय गुलाबपुरा भीलवाड़ा राजस्थान	132
13.	9–14 जनवरी 95	ऋचा सत्र उ.प्र.	51
14.	17–18 जुलाई 95	एक दिवसीय समीक्षा गोष्ठी ऋचा उ.प्र.	176
15.	8–13 मई 95	ऋचा सत्र उड़ीसा	208
16.	28–30 जुलाई 95	तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर इफको अधिकारी वर्ग उ.प्र.	76
17.	13–14 जून 95	अधिकारी वर्ग ऋचा प्रशिक्षण शिविर उ.प्र.	95
कुल			1599

वर्ष 1994–95

1.	7–13 अगस्त 95	ऋचा सत्र गुजरात	512
2.	20–26 अगस्त 95	ऋचा सत्र आन्ध्रप्रदेश	59
3.	11–13 सितम्बर 95	स्काउट गोष्ठी उ.प्र.	98
4.	14–19 सितम्बर 95	ऋचा सत्र कर्नाटक	106
5.	14–19 सितम्बर 95	ऋचा सत्र महाराष्ट्र	243
6.	11–15 अक्टूबर 95	कृषि विभाग अधिकारियों का प्रशिक्षण उ.प्र.	27
7.	16–20 अक्टूबर 95	कृषि विभाग लखनऊ उ.प्र.	19
8.	10–16 दिसम्बर 95	ऋचा सत्र असम	6
9.	10–16 दिसम्बर 95	ऋचा सत्र पश्चिम बंगाल	3
10.	10–16 दिसम्बर 95	ऋचा सत्र सिक्किम	37
11.	10–16 दिसम्बर 95	ऋचा सत्र मणिपुर	34
12.	11–16 दिसम्बर 95	ऋचा सत्र मेघालय	9
13.	18–23 दिसम्बर 95	ऋचा सत्र राजस्थान	326
14.	18–23 दिसम्बर 95	ऋचा सत्र बिहार	46
15.	21–30 दिसम्बर 95	एस.एम.जे.एन.' (पी.जी.) कालेज हरिद्वार डिग्री कॉलेज	100
16.	1–6 जनवरी 96	ऋचा सत्र हिमांचल प्रदेश	121
17.	8–13 जनवरी 96	ऋचा सत्र पंजाब	21

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

18.	25–28 जनवरी 96	सूती वस्त्र उद्योग सत्र उ.प्र.	35
19.	6–10 फरवरी 96	व्यक्तित्व परिष्कार सत्र इफको पंजाब और जम्मू कश्मीर	50
20.	19–24 फरवरी 96	ऋचा सत्र मद्रास	9
21.	25–28 फरवरी 96	भारतीय तिब्बत सीमा पुलिस अकादमी मसूरी	20
कुल			1881

वर्ष 1996

1.	18–11 मार्च 96	गांधी शिक्षक महाविद्यालय, गुलाबपुरा भीलवाड़ा राजस्थान	158
2.	11–16 मार्च 96	ऋचा सत्र जम्मू एवं बिहार	73
3.	15–18 मार्च 96	व्यक्तित्व परिष्कार सत्र इफको उ.प्र.	74
4.	16–18 मार्च 96	गीता बजाज महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय जयपुर66	
5.	18–23 मार्च 96	ऋचा सत्र केरल	33
6.	18–23 मार्च 96	ऋचा सत्र मिजोरम	11
7.	18–23 मार्च 96	ऋचा सत्र असम	4
8.	18–23 मार्च 96	ऋचा सत्र नागालैण्ड	5

पांच दिवसीय जड़ी–बूटी प्रशिक्षण सत्र

दिनांक	समय	विषय/प्रवक्ता
16–08–2000	9.00 से 10.00	पंजीयन (रचनात्मक प्रकोष्ठ)
	12.00 से 1.30 अनुशासन गोष्ठी	शांतिकुंज परिचय एवं श्री नमोनारायण पाण्डेय
	2.00 से 3.15 दोप.	जड़ी–बूटी हमारी सांस्कृतिक विरासत एवं वनौषधि चिकित्सा का महत्व–डॉ. आर.पी. पाण्डेय
	3.30 से 4.30	ब्राह्मी, शंखपुष्पी, नायबूटी, –डॉ. अशोक तिवारी सफेद मूसली, शिवलिंगी बीज, भूमि आंवला (पहिचान, गुणधर्म, संचय, सुरक्षा और उपयोग)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

17–08–2000	8.00 से 9.00 प्रातः	मानव जीवन की गरिमा – डॉ. बृजमोहन गौड़
	9.15 से 10.15	आस्तिकता जीवन की अनिवार्य आवश्यकता – पं. चंद्रभूषण मिश्र
	10.30 से 11.30	नागरमोथा, अमलतास, गिलोय, पुनर्नवा, बिल्व, घृतकुमारी –डॉ. उमाकान्त रैना (पहिचान, गुणधर्म, संचय, सुरक्षा और उपयोग)
	2.15 से 3.15 दोप.	अर्जुन छाल, कुटज, कालमेघ –डा. देवाशीष साहू बहेड़ा, वास, वन तुलसी (पहिचान, गुणधर्म, संचय सुरक्षा और उपयोग)
	3.30 से 5.00 सायं	शांतिकुंज विरासत
18–08–2000	8.00 से 9.00 प्रातः	सांस्कृतिक विरासत – श्री वीरेश्वर उपाध्याय
	9.15 से 10.15	तनाव प्रबंधन– डॉ. ए.के. दत्ता
	10.30 से 11.30 दोप.	निशोथ, गोक्षरू, शतावर – डॉ. विकास गुप्ता सारिवा, मालकांगनी, गुड़मार (पहिचान, गुणधर्म, संचय, सुरक्षा और उपयोग)
	2.15 से 3.15	अभया, सर्पगंधा, आमलकी, यष्टीमधु, हल्दी, भृंगराज (पहिचान, गुणधर्म, संचय, सुरक्षा और उपयोग)
	3.30 से 4.30 सायं	कायफल, वायविडंग, शरपुंखा – श्री सुनील जी / वरुण, निर्गुण्डी, बच (पहिचान श्री ओंकार जी गुणधर्म, संचय, सुरक्षा और उपयोग)
19–08–2000	8.00 से 9.00 प्रातः	समय प्रबंधन व कार्यदक्षता – श्री कालीचरण शर्मा
	9.00 से 11.00	ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान भ्रमण – डॉ. अशोक तिवारी जड़ी बूटी पर शोध व जानकारी
	11.00 से 4.30 सायं	हरिद्वार–ऋषिकेश भ्रमण
20–08–2000	6.30 से 8.00	आदरणीया शैल जीजी से भेंटवार्ता
	9.00 से 10.30	विदाई उद्बोधन व समापन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वावलम्बी, अर्थव्यवस्था व ग्रामोत्थान सम्बंधी 7 दिवसीय विशिष्ठ प्रशिक्षण सत्र

(अवधि प्रतिमाह 10 से 16 एवं 29 से 4 या 5 तारीख में)

प्रथम दिवस –

9.00 से 10.00	रचनात्मक प्रकोष्ठ में प्रतिभागियों का पंजीयन
10.30 से 1.00	सत्र उद्घाटन–'दीप प्रज्ज्वलन, परिचयात्मक उद्बोधन
1.00 से 2.00	मध्यान्ह अवकाश
2.00 से 4.30	स्वावलम्बी ग्राम्य विकास, आदर्श गांव योजना, उसका उद्देश्य व स्वरूप, आदर्श गांव योजना में किए जाने वाले कार्यों का परिचय, आदर्श गांव योजना की सामयिक समीक्षा, मासिक प्रगति रिपोर्ट, शक्तिपीठों से रचनात्मक प्रशिक्षण व उसकी विधि व्यवस्था
6.30 से 8.00 सायं	गांव सेवा का मूलमंत्र व लोकसेवी का आचरण

द्वितीय दिवस –

7.00 से 8.30	आदर्श ग्राम योजना पर प्रस्तुतीकरण व प्रश्नोत्तरी
10.30 से 12.00	ग्रामीण बेरोजगारी व गरीबी निवारण, वर्तमान सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक परिवेश में स्वयं सहायता संस्कृति की आवश्यकता एवं गरीबी निवारण में उसकी भूमिका, स्वयं सहायता समूह एवं स्वयं सहायता बचत समूह की अवधारणा व उसकी आवश्यकता, समूह गठन के मूलभूत सिद्धान्त
12.00 से 1.00	व्यवसाय आधारित स्वयं सहायता बचत समूहों का गठन, समूह गठन के उद्देश्य एवं आधार
1.00 से 2.00	मध्यान्ह अवकाश
2.00 से 3.00	समूह की नियमावली एवं आचार संहिता, समूह द्वारा चलायी जाने वाली गतिविधियाँ
3.00 से 4.30	स्वयं सहायता बचत समूह द्वारा लेखा–जोखा, अभिलेखों का रख–रखाव
6.30 से 8.00 सायं	स्वयं सहायता समूहों का प्राथमिक सशक्तिकरण व बैंकों से संबद्धीकरण आदर्श गांव योजना, उसका उद्देश्य व स्वरूप बैंक सम्बद्धीकरण एवं उसके आधार प्राथमिक सशक्तिकरण की समीक्षा के चैक बिन्दु सम्बद्धता सम्बंधी नाबार्ड के विधिक प्रपत्र समूहों के स्थलीय निरीक्षण हेतु प्रपत्र का भरा जाना।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तृतीय दिवस –

7.00 से 8.30 प्रातः	स्वयं सहायता बचत समूह निर्माण पर पारस्परिक परिचर्चा प्रश्नोत्तरी के रूप में
10.30 से 1.00	स्वावलम्बन हेतु समूहों द्वारा संचालित कुटीर उद्योग, उद्योग चयन, गांवों में समूह द्वारा चलाए जाने वाले कुटीर उद्योगों को सहज, सरल व सुगम रूप देने के लिए उद्योग चयन हेतु ग्रामीण संसाधनों का विश्लेषण एवं उस पर आधारित उद्योगों का वर्गीकरण
1.00 से 2.00	मध्यान्ह अवकाश
2.00 से 3.00	कुटीर उद्योगों की खपत/विपणन व्यवस्था, स्थानीय खपत मुख्य आधार बने (खपत के अनुसार उत्पादन व उत्पादन के अनुरूप खपत), उत्पादों की गुणवत्ता, विपणन में शक्तिपीठों की भूमिका, खादी ग्रामोद्योग बोर्ड, प्रशिक्षण की व्यवस्था
3.00 से 4.30	बेकरी उद्योग का प्रायोगिक प्रशिक्षण, विभिन्न बेकरी उत्पाद बनाने की विधियाँ जैसे–बिस्किट, ब्रेड, केक आदि, इन्सटालेशन व आर्थिक पक्ष
6.30 से 8.00 सायं	स्वयं सहायता बचत समूह पर वीडियो फिल्म 'उभरती उमंग'

चतुर्थ दिवस –

7.00 से 9.00 प्रातः	गौ पालन
10.30 से 1.00	टिकाऊ व स्वावलम्बी खेती की पुनर्स्थापना, टिकाऊ खेती का स्वरूप प्राकृतिक खेती, जैविक खेती, गोमय–गौमूत्र से बनी नॅडेप कम्पोस्ट बनाने की विधि, खाद का अर्थशास्त्र, जीवाणु खादों (बायो फर्टिलाइजर) का परिचय व प्रयोग
1.00 से 2.00 दोप.	मध्यान्ह अवकाश
2.00 से 3.30 दोप.	केंचुआ खाद से प्राकृतिक खेती, वर्मी कम्पोस्ट (केंचुआ खाद) तैयार करने की विधि खाद का अर्थशास्त्र
3.30 से 4.30	स्वावलम्बी खेती–प्रश्नोत्तरी
6.30 से 8.00 सायं	ऊर्जा संरक्षण एवं वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों का विकास

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पंचम दिवस –

7.00 से 8.30 प्रातः	भारत में जलागम पद्धति द्वारा विकास की आवश्यकता क्यों? राष्ट्रीय जलागम परियोजना की अवधारणा व तत्वदर्शन
10.30 से 11.45	स्वावलम्बी व स्थायी जल स्त्रोत के विकास हेतु ग्रामीणों के लिए वर्षा जल संरक्षण की विधियाँ
11.45 से 1.00	क्षेत्र में हरीतिमा संवर्धन व वर्षा जल संरक्षण के लिए मिश्रित पौधशालाओं की स्थापना, मिश्रित पौधशालाओं का उद्देश्य व स्वरूप, स्थापना एवं संचालन विधि
1.00 से 2.00	मध्यान्ह अवकाश, गौ की महत्ता व उपयोगिता, स्वास्थ्य के लिए गाय के दूध, गोमय व गोमूत्र की उपयोगिता, टिकाऊ की खेती का आधार गोवंश, विभिन्न कुटीर उद्योगों का आधार गोवंश संरक्षण।
6.30 से 8.00 सायं	गौ से सम्बंधित वीडियो फिल्म

षष्ठ दिवस –

7.00 से 8.30 प्रातः	गौरक्षा–गोसंवर्धन, गौवंश की वर्तमान स्थिति व उसके दुष्परिणाम, आदर्श गौशालाओं की स्थापना, स्वरूप व उद्देश्य, गौशाला का संचालन–प्रबंधन व संचालित गतिविधियाँ, स्थापना की प्रारंभिक प्रक्रिया
10.30 से 1.00 प्रातः	महत्वपूर्ण जड़ी–बूटियों का परिचय, पहिचान, उत्पादन व उनके द्वारा स्वास्थ्य संरक्षण
1.00 से 2.00 दोप.	मध्यान्ह अवकाश
2.00 से 3.15	गर्भवती महिलाओं एवं शिशुओं का स्वास्थ्य, गर्भवती महिलाओं की देखभाल (शिशु की गर्भ से ही देखभाल), सुरक्षित प्रसव व जच्चा–बच्चा की देखभाल, प्रसवोपरान्त देखभाल
3.15 से 4.30	स्वस्थ जीवनचर्या से स्वास्थ्य, कमजोरी व बीमारी का कारण, उत्तम स्वास्थ्य के 4 सूत्र, खाद्य पदार्थ का चुनाव, खाने का तरीका, उचित परिश्रम, अव्यवस्था से बचाव/संयम
6.30 से 8.00 सायं	प्रशिक्षण पर सामान्य चर्चा प्रश्नोत्तरी के रूप में

सप्तम् दिवस –

7.00 से 8.00 प्रातः	प्रशिक्षणोपरान्त क्षेत्रों में प्रशिक्षकों की भूमिका, दायित्व व रिपोर्ट प्रेषण सम्बंधी जानकारी
8.30 से 12.00	प्रशिक्षणार्थियों का प्रशिक्षण सम्बंधी मूल्यांकन विदाई।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

साधना की महत्ता और व्यवस्था

समग्र शिक्षा वह है, जिसमें न केवल भौतिक जगत के विभिन्न विषयों की जानकारियाँ मिलें, वरन् व्यक्तित्व के सर्वतोमुखी विकास में काम आने वाला मार्गदर्शन भी सम्मिलित हो, जीवन के साथ जुड़े हुए प्रश्नों का समाधान और प्रगति पथ पर निरन्तर अग्रगमन के लिए प्रेरणाप्रद प्रकाश भी उपलब्ध होता हो। विद्या को इसी दृष्टि से अमृत कहा है कि यदि वह सही और सार्थक हो, तो उसके सहारे कल्पवृक्ष की तरह सभी अभीष्ट हस्तगत होते रह सकते हैं।

प्राचीन काल में गुरुकुलों, आरण्यकों एवं तीर्थ क्षेत्रों में बने ऋषि–आश्रमों में ऐसी व्यवस्था रहती थी। उनमें हर आयु के भावनाशील शिक्षार्थी पहुँचते थे और मनुष्य शरीर में देवत्व का बड़ा–चढ़ा अनुपात लेकर वापस लौटते थे। ऐसी शिक्षण संस्थाओं को 'नर रत्नों की खदान' कहकर गौरवान्वित किया जाता था। नालन्दा और तक्षशिला विश्वविद्यालय इसी स्तर के थे। बौद्ध विहारों और संघारामों में भी ऐसी ही व्यवस्था थी। इसी प्रभाव से धरती पर स्वर्ग का अवतरण होना और मनुष्य में देवत्व की झलक मिलना सर्वत्र संभव बना रहा। उस ऋषि वर्चस्व प्रधान समय को सतयुग कहा जाता रहा।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

इसी प्राचीन शिक्षा प्रक्रिया के सारे तत्व लेकर अपने स्वल्प साधनों के अनुरूप, शांतिकुंज को एक सामयिक शिक्षण एवं साधना केन्द्र के रूप में विनिर्मित किया गया है। गंगा की गोद, हिमालय की छाया, सप्तऋषियों की तपोभूमि आदि, प्राचीन काल से संचित अनेकानेक आध्यात्मिक संस्कारों के अतिरिक्त अखण्ड अग्नि में नित्य यज्ञ, शांतिकुंज की स्थापना से अभी तक विविध साधना सत्रों के माध्यम से लाखों साधकों द्वारा की गई साधना की ऊर्जा, 1926 से प्रज्वलित अखण्ड दीपक जिसके सामने प.पू. गुरुदेव ने 24–24 लक्ष के 24 महापुरश्चरण सम्पन्न किए, अखण्ड गायत्री जप, हिमालय की ऋषिसत्ता का दिव्य संरक्षण तथा परम पूज्य गुरुदेव एवं वंदनीया माताजी द्वारा की गई कठोर तपश्चर्या से यह स्थान अनुप्राणित है। इस प्रकार की विशेषताओं के कारण यह स्थान ऐसा है, जहाँ सामान्य लोगों द्वारा सामान्य ढंग से की गई साधनायें भी विशिष्ट फलप्रदान करती हैं।

शांतिकुंज में अनेकानेक भौतिक विषयों को पढ़ाने की व्यवस्था तो नहीं की गई है, क्योंकि उनके लिए सरकारी, गैर सरकारी स्तर पर सभी जगह व्यवस्थाएँ हैं। संजीवनी विद्या, जीवन जीने की कला का हर पक्ष जिसमें सम्मिलित रहे, ऐसे प्रशिक्षण की व्यवस्था यहाँ पर बनायी गयी है। प्रस्तुत योजना के अनुसार मुख्य रूप से दो प्रकार के सत्र चलते हैं (1) साधना प्रधान (2) प्रशिक्षण प्रधान। साधना प्रधान सत्रों के अन्तर्गत इन दिनों दो प्रकार के सत्र चल रहे हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नौ दिवसीय संजीवनी—साधना सत्र—

ये सत्र प्रतिमाह 1 से 9, 11 से 19 एवं 21 से 29 की तिथियों में अनवरत चलते हैं, जिनमें 24 हजार गायत्री मंत्र का लघु अनुष्ठान सम्पन्न कराया जाता है। प्रातः (सर्दियों में 4.00 बजे, गर्मियों में 3.30 बजे) जागरण से दिनचर्या प्रारम्भ होती है। दोनों समय प्रार्थना एवं आरती, त्रिकाल संध्या एवं तीन बार सत्संग के अतिरिक्त नित्य यज्ञ, अखण्ड दीप के दर्शन का नियमित क्रम रहता है। साथ ही साथ 30 माला प्रतिदिन के हिसाब से गायत्री मंत्र का जप किया जाता है। पूर्व संध्या अर्थात् 10, 20 एवं 30/31 तारीख को अनुष्ठान का संकल्प कराया जाता है। जिसमें साधना का उद्देश्य, आश्रम के अनुशासन एवं दिनचर्या समझायी जाती है। 9वें अर्थात् 9, 19 एवं 29 तारीख को प्रातः 10 बजे सत्र का समापन एवं विदाई हो जाती है।

अनुष्ठान काल में एक समय भोजन करने एवं दिनभर व्यस्त रहने की दिनचर्या रहती है। इसलिए इन सत्रों में उन्हीं को आना चाहिये, जिनकी शारीरिक मानसिक स्थिति साधना के अनुकूल हो। न्यूनतम 1 घंटा कमर सीधी करके बैठने एवं 5 से 11 माला जप करने का अभ्यास हो। संभव हो तो नौ दिवसीय सत्र करने के पूर्व 2—4 दिनों के लिए तीर्थ क्षेत्र में आकर दिनचर्या, अनुशासन एवं साधना का अभ्यास कर लें। सत्र की तिथि से दो महीने पूर्व आवेदन करें। न्यूनतम आयु 15 वर्ष हो। केवल संख्या लिख देने से स्वीकृति भेजना संभव न होगा। पत्र व्यवहार का पता स्पष्ट हो। आवेदन पत्र का प्रारूप अंत में दिया गया है।

www.vicharkrantibooks.org

अन्तः ऊर्जा—जागरण—साधना सत्र

दूसरे प्रकार के साधना सत्र 5 दिवसीय होते हैं, जिन्हें अन्तः ऊर्जा जागरण सत्र कहते हैं। ये सत्र प्रायः दीपावली के बाद से चैत्र नवरात्रि के पूर्व तक प्रतिमाह 1 से 5, 6 से 10, 11 से 15, 16 से 20, 21 से 25 एवं 26 से 30 की तिथियों में चलते हैं। 26 दिसम्बर से 5 जनवरी, वसंत पंचमी एवं ग्रीष्म ऋतु में सत्र नहीं होते हैं। साधना की तिथि से एक दिन पूर्व दोपहर तक पहुँचकर पंजीयन एवं अभ्यास—अनुशासन गोष्ठी में सम्मिलित होना पड़ता है। यह विशेष प्रकार का सत्र है, इसमें 5 दिन तक एक ही कमरे में अकेले मौन रहना होता है एवं निर्धारित साधनाएँ करनी होती हैं।

अन्तःऊर्जा जागरण की साधना प्रकारान्तर से पंचकोशों के जागरण की उच्चस्तरीय गायत्री साधना है। इसमें 'अन्नमय कोश' का परिष्कार विशेष हविष्यान्न का आहार होता है, तो सोऽहं साधना एवं प्राणायाम 'प्राणामय कोश' के जागरण की प्रक्रिया सम्पन्न करते हैं। त्राटक साधना (बिन्दुयोग) 'मनोमय कोश' की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जागृति में सहायक बनती है। आत्मबोध—तत्वबोध एवं दर्पण साधना से 'ज्ञानमय कोश' जाग्रत् होता है। स्वाध्याय तथा पूज्यवर की अमृतवाणी इसको और पोषण देते हैं। नादयोग एवं खेचरी मुद्रा की साधना से 'आनन्दमय कोश' जागृत होता है। प्रातः जागरण से रात्रि शयन तक निर्धारित सभी साधनायें सम्पन्न कराई जाती हैं, जिनके निर्देश 'साउन्ड सिस्टम' द्वारा कमरे में ही मिलते हैं। भोजन दोनों समय कमरे में मिलता है।

यह साधना अपेक्षाकृत कठिन है। अतः ऐसे ही लोगों को स्वीकृति दी जाती है, जो शारीरिक—मानसिक रूप से स्वस्थ एवं साधना करने की स्थिति में हो। जो कम से कम एक संजीवनी साधना (9 दिवसीय) सत्र सम्पन्न कर चुके हों एवं मिशन के किसी अभियान में सक्रिय भूमिका निभा रहे हों, वे ही परिजन अन्तःऊर्जा जागरण साधना सत्र के लिए आवेदन करें। आवेदन पत्र में ही 'नियमित समयदान व अंशदान' कितना कर रहे हैं कालम जोड़ लें। पासपोर्ट साइज के फोटो के साथ आवेदन करें। परिजनों की संख्या अधिक होने के कारण सत्र में प्रवेश केवल एक बार ही संभव है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

युगशिल्पी—प्रशिक्षण सत्र –

बाल्यावस्था से सुसंस्कारिता का शिक्षण देने वाले गुरुकुलों का स्थान आजकल सरकारी विद्यालयों ने ले लिया है। इनमें बौद्धिक विकास के लिए ढेर सारे विषयों की पढ़ाई तो होती है, किन्तु उसका व्यावहारिक जीवन से कोई ताल—मेल नहीं होता। युग शिल्पी (एक मासीय) सत्र के अन्तर्गत विद्यार्थियों के समग्र विकास की दिनचर्या का निर्धारण होता है। इसमें सत्प्रवृत्ति—संवर्द्धन व दुष्प्रवृत्ति—उन्मूलन, जनमानस के परिष्कार एवं लोक—शिक्षण की रूपरेखा समझायी जाती है।

गुरुकुल प्रणाली की तरह वर्षों तक चलने वाली शिक्षण प्रक्रिया समयाभाव एवं स्थानाभाव के कारण उतने लम्बे समय तक तो संभव नहीं है, किन्तु एक मास के अन्तर्गत उन सभी का बीजारोपण हो जाता है, जो समय आने पर फलती—फूलती एवं व्यक्तित्व को गौरवान्वित करती है। ये सत्र प्रतिमाह 1 से 29 की तिथियों में चलते हैं। युग शिल्पी सत्र के लिए वे लोग ही आवेदन करें, जो (1) शांतिकुंज में न्यूनतम एक नव दिवसीय संजीवनी साधना सत्र सम्पन्न कर चुके हों या (2) अपने स्तर पर एक अनुष्ठान कर चुके हों एवं मिशन के कार्यों में सहयोग दे रहे हों।

ऋषियों के विचारों को जन—जन में फैलाने के लिए संभाषण कला, ढपली बजाकर प्रेरणा गीतों का गायन, यज्ञ एवं विभिन्न प्रकार के संस्कारों के प्रेरक कर्मकाण्ड कराना, स्वास्थ्य, संरक्षण एवं बेकरी, अगरबत्ती, मोमबत्ती, स्क्रीन प्रिंटिंग,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्लास्टिक मोल्डिंग, लेमीनेशन, बागवानी, फल–संरक्षण जैसे कुटीर उद्योगों का प्रशिक्षण भी इसमें दिया जाता है।

परिव्राजक–प्रशिक्षण सत्र–

जन–जन में विद्या विस्तार हेतु व्यक्तित्व सम्पन्न शिक्षकों के निर्माण के लिए ऋषियों ने आरण्यक परम्परा का प्रचलन किया था। महर्षि अगस्त्य की वेदपुरी, ऋषि भारद्वाज की प्रयाग स्थिति प्रशिक्षण शाला तथा विश्वामित्र के सिद्धाश्रम ने व्यक्तियों को गढ़कर समय की माँग को पूरा किया था। तक्षशिला से निकले स्नातकों ने चाणक्य के इशारे पर जागरण की लहर फैलाकर बृहत्तर भारत की संरचना की, तो कुमारिल भट्ट नालन्दा में गढ़े गये, जिनकी रखी गई नींव पर शंकराचार्य ने सांस्कृतिक क्रान्ति का भवन निर्मित किया।

ऐसा ही दिव्य आरण्यक यहाँ पर स्थापित है, जिसमें लोकसेवी परिव्राजकों का प्रशिक्षण होता है। युग शिल्पी सत्र के दौरान व्यक्तित्व का निर्माण किया जाता है, तो परिव्राजक सत्र के अन्तर्गत व्यक्तित्व का, प्रतिभा का लोकहित में समर्पण करना होता है। शिक्षण प्रक्रिया युग शिल्पी जैसी ही होती है, किन्तु अतिरिक्त विषय के रूप में जन सम्पर्क से लेकर शक्तिपीठ की व्यवस्थापरक अन्यान्य नई जानकारियाँ विस्तार से दी जाती हैं। लोकसेवियों की आचार संहिता, आरती–पूजा, मूर्ति श्रृंगार, देवालय प्रबंधन, उद्यानिकी एवं सभी संस्कारों का व्यावहारिक प्रशिक्षण भी दिया जाता है। जिन्होंने युग शिल्पी सत्र सफलता पूर्वक सम्पन्न कर लिया है। तथा न्यूनतम तीन माह का समय समाज सेवा के लिए देना चाहते हैं, वे ही परिव्राजक सत्र के लिए आवेदन करें। प्रशिक्षण के दौरान होने वाला व्यक्तिगत खर्च एवं मार्ग व्यय साथ में लायें। यह सत्र प्रति माह 1 से 28 की तिथियें में चलते हैं। वयस्क व्यक्ति ही आवेदन करें। अकेली महिलायें आवेदन न करें।

रचनात्मक सत्र –

मिशन के रचनात्मक अभियान के अन्तर्गत–स्वावलम्बी ग्राम्य विकास का 9 दिवसीय एक प्रशिक्षण सत्र प्रत्येक माह नियमित रूप से चलता है। शांतिकुंज ने 'ग्राम विकास आन्दोलन' जो युग निर्माण के अगले चरण के रूप में प्रारंभ किया है। इसका लक्ष्य राष्ट्र के बहुसंख्यक समाज (ग्रामीण जनता) को अभाव पीड़ा से छुटकारा दिलाकर सुख–समृद्धि के मार्ग पर आगे बढ़ाने के लिए कारगर तंत्र खड़ा करना है। इसकी तिथि प्रतिमाह 29 से 7 रहती है।

यह प्रशिक्षण उन परिजनों/कार्यकर्त्ताओं के लिए है, जो 9 दिवसीय साधना सत्र तथा एक माह का युगशिल्पी सत्र किए हुए हैं, तथा एक गांव को गोद

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लेकर उसे स्वालम्बी बनाने के लिए सप्ताह में कम से कम एक दिन का समय लगाकर कार्य करने की रुचि रखते हैं। सत्र में प्रवेश के लिए रचनात्मक प्रकोष्ठ से निर्धारित प्रारूप पर अपनी व्यक्तिगत जानकारी भेजकर पूर्व स्वीकृति प्राप्त करना आवश्यक है।

45 दिवसीय लोकसेवी स्वावलम्बी 'ग्राम्य विकास' प्रशिक्षण सत्र –

प्रत्येक गाँव एक छोटे से तीर्थ के रूप में विकसित हो, जो संस्कार युक्त, व्यसनमुक्त, स्वच्छ, स्वस्थ, शिक्षित, स्वावलम्बी एवं सहकार–सहयोग से भरा–पूरा हो। इस हेतु 45 दिवसीय प्रशिक्षण सत्र जनवरी, मार्च, जुलाई, सितम्बर एवं नवम्बर माह की पहली तारीख से प्रारम्भ होते हैं। यह प्रशिक्षण केवल लोकसेवी कार्यकर्त्ताओं के लिए है, जो यज्ञ एवं दीपयज्ञ सम्पन्न करा लेते हों तथा सत्रोपरान्त न्यूनतम 3 माह का समयदान देने की स्थिति में हों, 10वीं कक्षा उत्तीर्ण, उम्र 21 से 60 वर्ष, शांतिकुंज का एक मासीय युग शिल्पी सत्र अथवा परिव्राजक सत्र अथवा युग निर्माण विद्यालय से एक वर्षीय कोर्स कर चुके हों, ऐसे परिजन अपना विवरण भेजकर आवेदन पत्र शांतिकुंज हरिद्वार से मंगा लें। सत्र में अनुमति पत्र मिलने पर साक्षात्कार के पश्चात् प्रशिक्षण सत्र में प्रवेश संभव होगा।

अन्य सत्र –

समय–समय पर सरकारी, गैर सरकारी संस्थाओं (कार्पोरेट सेक्टर) के अधिकारियों, प्रबंधकों व कर्मचारियों के नैतिक प्रशिक्षण सत्र तथा अन्यान्य विशेष सत्रों का भी आयोजन होता रहता है।

शिविरार्थियों के लिए आवास, भोजन एवं प्रशिक्षण आदि की निःशुल्क व्यवस्था है। यह क्रम इसलिए रखा गया है कि गरीब–अमीर सभी इसी प्रक्रिया से लाभान्वित हो सकें। किसी को आर्थिक कठिनाई के कारण इसे सुयोग से वंचित न रहाना पड़े। जिनकी सामर्थ्य है और वे श्रद्धानुसार–उदारतापूर्वक सहयोग स्वरूप कुछ देना चाहते हैं, तो उसे सहर्ष सम्मान के साथ स्वीकार कर लिया जाता है। भावनाशीलों की इस उदारता से ही आश्रम की व्यवस्था चलती है।

महिलाएँ अकेली न आयें। छोटे बच्चों को साथ न लायें, उनके कारण ध्यान बँटता है और प्रशिक्षण पूरा करने में अड़चन आती है। वृद्ध जिनका शरीर श्रमसाध्य दिनचर्या का निर्वाह नहीं कर सकता, उन्हें भी नहीं आना चाहिए। बच्चे, बूढ़े, बीमार, नशा करने वाले, आलसी–प्रमादी व्यक्तियों को सत्र में बिल्कुल नहीं आना चाहिए। किसी भी जाति के व्यक्ति, शिक्षित नर–नारी समान रूप से सम्मिलित हो सकते हैं। जेवर पहन कर तथा कीमती वस्तुएँ साथ लेकर किसी को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भी नहीं आना चाहिए।

हरिद्वार में अधिक सर्दी होने जैसा भय किसी को नहीं करना चाहिए। उत्तर भारत में साधारण स्थानों पर दिल्ली, हरियाणा क्षेत्र जैसी ठण्ड यहाँ भी पड़ती है। इतना अवश्य है कि गर्म कपड़ों की आवश्यकता अक्टूबर से मार्च तक पड़ती है। रजाई गद्दे किराये पर यहाँ उपलब्ध हो जाते हैं। जिन्हें गर्म पानी से नहाने का अभ्यास है, उनके लिए उसका भी प्रबन्ध हो जाता है।

विशेष ज्ञातव्य –

1. किसी भी सत्र में आने से पूर्व सत्र की अनुमति लेना अनिवार्य है। आने वाले परिजनों की केवल संख्या लिख देने भर से स्वीकृति भेजना संभव नहीं है। आवेदन पत्र स्पष्ट अक्षरों में भरकर भेजें।

2. पत्र भेजने वाले परिजनों को स्वीकृति न मिलने पर काफी निराशा होती है। स्वीकृति पत्र प्राप्त न होने के कई कारण है, जैसे पत्र का विलम्ब से मिलना, स्थान का भर जाना, पत्र में पता का न लिखना, अधूरा लिखना या खराब लिखावट के कारण पत्र का न पढ़ा जाना। अतः अपना पता स्पष्ट अक्षरों में और पूरा लिखें। कभी–कभी डाक विभाग की गड़बड़ी में भी पत्र प्राप्त नहीं हो पाते। पत्र भेजने के महीने भर पश्चात् स्वीकृति पत्र न मिलने पर फोन नं. 01334–260602, एक्सटेंशन 188 से सम्पर्क करें।

3. जो परिजन तीर्थ सेवन या विभिन्न प्रकार के संस्कार – पुंसवन, नामकरण, अन्नप्राशन, मुण्डन, विद्यारम्भ एवं दीक्षा कराने के उद्देश्य से दो–तीन दिनों के लिए आना चाहते हैं, वे कभी भी आ सकते हैं। पूर्व सूचना भेज दें।

4. कमरे की बुकिंग पहले से नहीं होती है। आगन्तुकों की संख्या के आधार पर ठहरने की व्यवस्था अलग से या सामूहिक रूप से होती है। गर्मी के महीने में संख्या अधिक होने के कारण आवास या अन्य असुविधाएँ हो सकती हैं। अतः जो लोग अन्य महीनों में सत्र कर सकते हैं, वे मई से आश्विन नवरात्रि तक के सत्रों के लिए आवेदन न करें।

4. शांतिकुंज, रेलवे स्टेशन–बस स्टैण्ड से प्रायः 7 कि.मी. दूर, ऋषिकेश रोड पर, सप्त सरोवर क्षेत्र में अवस्थित है। पूरा विक्रम 100 रु. या प्रायः 10 रु. प्रति सवारी चार्ज करते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आवेदन पत्र
(एक मासीय युग शिल्पी के लिए)

वे लोग ही आवेदन करें, जो शांतिकुंज में न्यूनतम एक नौ दिवसीय साधना सत्र कर चुके हों या घर पर एक गायत्री लघु अनुष्ठान कर चुके हों एवं मिशन के कार्यों में सहयोग दे रहे हों।

वांछित सत्र के लिए दो माह पूर्व ही आवेदन करें। साथ में युग शिल्पी सत्र हेतु अन्य परिजन आना चाहें तो नीचे दर्शाये विवरण को भरकर भेजें।

केवल वयस्क व्यक्ति (न्यूनतम आयु 18 वर्ष) ही आवेदन भरकर भेजें। अविवाहित कन्यायें अभिभावकों के साथ आ सकती हों, तो ही आवेदन करें।

1. श्री / श्रीमती / कु.................................पिता / पति श्री.....................................
2. पत्र व्यवहार का पूरा पता...ग्राम.............................
   पोस्ट..........................जिला..........................प्रान्त.....................पिन.....................
   मोबा. / फोन (एस.टी.डी. कोड सहित).............................
3. आयु / जन्मतिथि..............................शिक्षा...............................व्यवसाय
4. किस महीने में आना चाहते हैं?.................................
   स्थान भर जाने पर किस माह में आना चाहेंगे?.....................
5. गायत्री मंत्र दीक्षा कब, कहाँ ली?...........................
6. शांतिकुंज में कौन–कौन से सत्र, कब–कब सम्पन्न किए?...........................
7. अपने घर पर गायत्री लघु अनुष्ठान (24 हजार मंत्र जप) कितने सम्पन्न किये__
8. मिशन में चलाई जा रही मिशन की गतिविधियों एवं मँगाई जा रही मिशन की पत्रिकाओं का उल्लेख करें....................

शिविर के कड़े अनुशासन का भली–भाँति पालन करने एवं शारीरिक व मानसिक दृष्टि से रोगी न होने का अश्वासन देता / देती हूँ।

आवेदक का नाम.......................................हस्ताक्षर.....................................दिनांक............

साथ में आने वाले परिजनों का विवरण
(केवल युग शिल्पी सत्र के लिए)

नाम	आयु	शिक्षा	शांतिकुंज में नौ दिवसीय साधना सत्र कब–कब सम्पन्न किये?	अपने घर पर गायत्री लघु अनुष्ठान (24 हजार मंत्र जप) कितने सम्पन्न किये?

....

....

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आवेदन पत्र

(केवल नौ दिवसीय साधना सत्र के लिए)

(यह फार्म हिन्दी अथवा अंग्रेजी भाषा में स्पष्ट अक्षरों में भरें)

केवल वयस्क व्यक्ति ही जिनका न्यूनतम 5–7 माला गायत्री मंत्र जप का अभ्यास है, आवेदन भरकर भेजें। अविवाहित कन्यायें अभिभावक के साथ आ सकती हैं तो ही आवेदन करें।

1. श्री/श्रीमती/कु....................................पिता/पति श्री....................................
2. पत्र व्यवहार का पूरा पता..ग्राम...........................
   पोस्ट...........................जिला...........................प्रान्त...................पिन....................
   मोबा./फोन (एस.टी.डी. कोड सहित)............................
3. आयु/जन्मतिथि............................शिक्षा..............................व्यवसाय
4. किस महीने में कौन से सत्र में आना चाहते हैं?
   (1–9/11–19/21–29) ....
   यदि उसमें जगह भर चुकी हो, तो किस माह में आना चाहेंगे?.................
5. गायत्री मंत्र दीक्षा कब, कहाँ ली?............................
6. अपने स्तर पर कौन से, कितने अनुष्ठान सम्पन्न किए?..........................
7. शांतिकुंज में कौन–कौन से सत्र, कब–कब सम्पन्न किए हैं?...................
8. क्षेत्र में चलाई जा रही मिशन की गतिविधियों एवं मँगाई जा रही पत्रिकाओं का उल्लेख करें..................

दैनिक गायत्री उपासना, सबके लिए सुलभ उपासना साधना, जीवन देवता की साधना–आराधना, व्यक्तित्व–परिष्कार की साधना जैसी पुस्तकों का अध्ययन व मंत्र जप का अभ्यास स्वयं कर लिया है तथा साथी परिजनों से करा लिया है तथा शिविर के कड़े अनुशासन का भली–भाँति पालन करने एवं शारीरिक व मानसिक दृष्टि से रोगी न होने का आश्वासन देता–देती हूँ।

आवेदक का नाम....................................हस्ताक्षर.................................दिनांक............

स्वयं तथा साथ में आने वाले परिजनों का विवरण

(केवल नौ दिवसीय साधना सत्र के लिए)

नाम	आयु	शिक्षा	व्यवसाय	प्रतिदिन गायत्री जप में कितनी कितनी माला/समय लगाते हैं?
....				
....				

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नोट – जो भी शिक्षार्थी इस साधना सत्र में आना चाहें, वे इस आवेदन फार्म की फोटो स्टेट/नकल करके सादे कागज पर भेजें और इस फार्म को सुरक्षित रखें, ताकि दूसरे इसकी नकल करके आवेदन भेज सकें। वांछित सत्र के लिए दो माह पूर्व ही आवेदन करें।

गायत्री तीर्थ–शांतिकुंज हरिद्वार

कमरा नम्बर...............................

जिस उद्देश्य से आये हैं, उसे स्पष्ट लिखें – दर्शनार्थ/संस्कार सत्र/युग शिल्पी सत्र/नौ दिवसीय साधना सत्र/विशेष सत्र...............................

दिनांक...से...

पूरा नाम..

पिता/पति का नाम...

पूरा पता...

पोस्ट...........................जिला/प्रान्त...........................ईमेल...................................

टेलीफोन......................शैक्षणिक योग्यता.....................................उम्र.....................

व्यवसाय/वर्तमान पद तथा स्थान (जहाँ कार्यरत हैं)..

इससे पहले शांतिकुंज आए हैं, तो उसका विवरण लिखें..

अखण्ड ज्योति/मिशन की अन्य पत्रिकायें कब से मंगा रहे हैं? उसकी सदस्यता संख्या....................साथ आये सदस्यों का विवरण...

यदि कोई वाहन साथ हो तो वाहन नं. ....

साथ आये व्यक्तियों को आश्रम के अनुशासन समझाने एवं उनका पालन कराने का उत्तरदायित्व मैं निभाऊँगा।

समय..........................दिनांक..............................हस्ताक्षर.....................................

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आश्रम की दिनचर्या

दैनिक कार्यक्रम	अप्रैल से सित.	अक्टू. से मार्च
जागरण, प्रार्थना, दैनिक कार्य उपासना	3.30	4.00
प्रातः आरती	4.00	4.30
प्रातः ध्यान, सामूहिक जप	4.30	5.00
अखण्ड दीप दर्शन, ऋषि युग्म की चरण पादुकाओं को प्रणाम	5.15	5.45
सामूहिक यज्ञ एवं समस्त संस्कार	5.15	5.45
योगव्यायाम प्राणायाम		
प्रातः सत्संग प्रवचन	8.00	8.00
भोजन–प्रसाद	9.30	9.30
दीपदर्शन एवं गुरुसत्ता की चरण–पादुकाओं को नमन	12.30–3.30	12.30–3.30
ज्योति अवधारण साधना	1.30	1.30
मध्यान्ह कक्षा गोष्ठी	2.00	2.00
सामूहिक श्रमदान	3.30	3.30
सायंकालीन भोजन	4.30	4.30
सायंकालीन आरती	5.00	5.00
नादयोग ध्यान साधना	6.00	6.00
संकीर्तन/कथा/वीडियो/कक्षाएं	6.15	6.15
रात्रि विश्राम	9.00	9.00

नोट – संस्कार, दीक्षा, देवस्थापना एवं तीर्थ में श्राद्ध तर्पन हेतु संस्कार प्रकोष्ठ से सम्पर्क करें।

कृपया ध्यान दें –

1. अपनी नगदी व कीमती सामान अमानती कक्ष में जमा करायें। बाहर जाते समय कक्ष में ताला लगायें व स्वागत कक्ष को सूचित करें। मोबाइल आदि की सुरक्षा स्वयं करें।
2. कीमती आभूषण न पहनें एवं अपने सामान का ख्याल रखें। अपरिचित व्यक्तियों से अधिक मेल–जोल न बढ़ायें।
3. भीड़ के दिनों में आगन्तुकों के साथ असामाजिक तत्वों का छद्म रूप में प्रवेश हो सकता है। इनसे सतर्क रहें व शंका होने पर अवश्य सूचित करें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

4. खोये–पाये की सूचना मुख्य कार्यालय में अवश्य दें।
5. आश्रम की दिनचर्या का पालन करें।
6. गंगा में स्नान हेतु किनारे पर बैठकर या रस्सी पकड़कर ही नहायें। बहाव तेज है, न गहरे पानी में उतरें और न तैरने का प्रयास करें। वहां अक्सर दुर्घटनाएं हो जाती हैं।

विकास क्रम –

स्थान कम पड़ने से गायत्री नगर की नई जमीन खरीदी गई एवं उसमें देवमानवों को बसने के लिए आमन्त्रित किया गया। नगर का निर्माण एवं जड़ी–बूटी उद्यान लगाना प्रारंभ कर दिया गया। नगर का निर्माण एवं जड़ी–बूटी उद्यान लगाना प्रारंभ कर दिया गया। 1976–80 तक का समय ब्रह्मवर्चस की स्थापना, निर्माण तथा गायत्री नगर के गायत्री तीर्थ के रूप में स्थापित होने का रहा।

सभी ऋषियों की गतिविधयों के अनुरूप यहाँ उनसे संबंधित गतिविधियाँ भी आरंभ कर दी गयीं। भागीरथ परंपरा में ज्ञान गंगा का विस्तार, चरक परम्परा में दुर्लभ वनौषधियों का आरोपण व उन पर प्रयोग परीक्षण, व्यास परम्परा में युग–साहित्य के साथ–साथ चारखण्डों में प्रज्ञापुराण का सृजन, नारद परम्परा में संगीत के माध्यम से जन–जन की भावनाओं को तरंगित करने का शिक्षण, समर्थ गुरु रामदास व आद्यशंकराचार्य परम्परा में पाँच केन्द्रीय संस्थानों के अतिरिक्त चौबीस सौ प्रज्ञा संस्थानों की स्थापना, पातांजलि परम्परा में प्राण–प्रत्यावर्तन एवं प्रज्ञायोग की साधना द्वारा योगदर्शन को व्यावहारिक रूप प्रदान करना, विश्वामित्र परंपरा में प्राण–प्रत्यावर्तन एवं प्रज्ञायोग की साधना द्वारा योगदर्शन को व्यावहारिक रूप प्रदान करना, शंकराचार्य परंपरा में सिद्धपीठ की स्थापना कर संजीवनी विद्या का शिक्षण व नवयुग की पृष्ठभूमि का निर्माण, पिप्पलाद परम्परा में संस्कारी आहार के माध्यम से कल्पसाधना, सूतशौनक परंपर में रामचरित मानस की प्रगतिशील प्रेरणा व गीता–कथा तथा प्रज्ञापुराण कथा द्वारा समागमों का आयोजन व लोकशिक्षण ये कुछ महत्वपूर्ण स्थापनाएँ ऐसी थीं जिनसे गायत्रीतीर्थ को संस्कारित किया गया।

वैशेषिक–कणाद परम्परा में अध्यात्म–विज्ञान के समन्वय के अनुसंधान हेतु ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान की स्थापना जून 1979 में की गई जो कि अपने समय का एक भागीरथी पुरुषार्थ है।

भव्य निर्माण मठ, मंदिर तो अनेकों बने हुए हैं व बनते रहते हैं, किन्तु उनकी सार्थकता अभी है, जब उनमें काम करने वाले प्राणवानहों, किसी श्रेष्ठ उद्देश्य के साथ जुड़े हुए हों। यह चिन्तन तपस्वी, मनस्वी ऋषि प्रवर के मन को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सदैव मथता रहा कि समाज में जो सत्यवृत्तियाँ फैलानी हैं, दुष्प्रवृत्तियों के बाहुल्य से मोर्चा लेना है, उसके लिए जिस स्तर के व्यक्तियों की आवश्यकता पड़ेगी, उन्हें उपयुक्त वातावरण में श्रेष्ठ स्तर का शिक्षण भी देना पड़ेगा। उनकी सुसंकारित तभी अंकुरित, पल्लवित होगी जब उन्हें उर्वर भूमि में सभी अनुकूल परिस्थितियाँ मिलें।

'अखण्ड ज्योति' परिवार की स्थापना एक साधारण मनोरंजन करने वाली पत्रिका के सदस्यों का परिवार बनाने के लिए नहीं की गयी थी, अपितु इससे सम्पर्क में आने वाली हर संस्कारवान आत्मा को सत्परामर्श व स्वाध्याय हेतु श्रेष्ठतम पाठ्यसामग्री प्रदान की गयी थी। जो साहित्य विगत पचास वर्षों में पूज्य गुरुदेव ने लिखा वह युगसाहित्य कहलाया, जिसमें सामयिक समस्याओं का समाध ान व उलझनों का हल, परिस्थितियों के अनुरूप किया गया था।

गायत्रीनगर को युगशिल्पियों का प्रशिक्षण संस्थान बनाया गया – बौद्धविहारों और संघारामों जैसा। मात्र बसने के लिए, समय गुजारने के लिए धर्मशाला नहीं बनायी गयी, अपितु सांचे की भूमिका निभा सकने वाले प्राणवानों को, जो स्वयं 'डाई' बन सकें व दूसरों को भी अपने जैसा बना सकें, टीचर्स ट्रेनर (शिक्षकों के भी अध्यापक) की भूमिका निभा सकें, ऐसी प्रतिभाओं को रहने हेतु आमंत्रित किया गया। ऐसे प्राणवान आत्म–निर्माण और लोक–कल्याण की दुहरी साधना साथ–साथ कर सकें, इसलिए उन्हें परमार्थ कार्य में नियोजित होने को आमंत्रित किया गया। इसके लिए पूज्य गुरुदेव ने शर्त रखी कि जो अपनी भौतिक महत्वाकांक्षाओं को नियंत्रित कर ब्राह्मणोचित निर्वाह में तपोमय जीवन जी सकें तथा परमार्थ हेतु अपना 12 से 18 घंटे का श्रम समाज के नव–निर्माण हेतु लगा सकें, वे ही आएँ। कहना न होगा कि जो भी आए उन्हें पूरी कसौटी पर कसकर प्रशिक्षण प्रक्रिया से गुजारने के बाद रहने का अवसर दिया गया एवं उन्होंने गुरुदेव की इच्छा को पूर्ण करते हुए अपने पद, सम्मान, वैभव को लात मारकर यहाँ का सीधा, सरल जीवन स्वीकार किया। पूज्य गुरुदेव के निर्देशों के अनुरूप स्वयं के जीवन को, अपने परिवार को ढाला एवं देखते–देखते उच्च शिक्षित प्रतिभावान ढाई सौ व्यक्तियों का एक देवपरिवार यहाँ बस गया।

यह एक संयोग मात्र नहीं है कि जिस वर्ष ब्रह्मवर्चस के रूप में चौबीस गायत्री प्रतिमाओं से सज्जित केन्द्रीय शक्ति पीठ का उदघाटन हुआ, जिसमें प्रयोगशाला व दार्शनिक शोध ग्रन्थालय जुड़े थे, ठीक इस वर्ष गुरुदेव के चिन्तन क्षेत्र में एक नया चक्रवात घूम रहा था। वह था केन्द्र में प्रशिक्षित किये जा रहे समयदानी परिव्राजकों के माध्यम से पूरे भारत में फैले सत्प्रवृत्ति संवर्द्धन के कार्य का, धर्मतंत्र से लोक–शिक्षण रूपी महत्वपूर्ण कार्यक्रम का सुनियोजित विकेन्द्रीकरण। इसके लिए वसंत पंचमी, उनके आध्यात्मिक जन्मदिवस पर एक महत्वपूर्ण संदेश

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आया, वह था नवचेतना के निर्झर केन्द्रों के रूप में प्रज्ञा संस्थानों की स्थापना का। यह वर्ष था सन् 1979 का व युग–निर्माण योजना को प्रारंभ हुए पच्चीस वर्ष हो चुके थे, अतः उसका यह रजत जयन्ती वर्ष था। मात्र प्रतिपादन ही नहीं, अंतराल में सद्भावों को जगाने के लिए कए विशाल ज्ञानयज्ञ की आवश्यकता को देखते हुए चौबीस सौ स्थानों पर प्रज्ञा संस्थान, शक्तिपीठ या गायत्री तीर्थ स्थापित करने का निश्चय कर लिया गया। वर्तमान में 3308 गायत्री शक्तिपीठ, 9814 गायत्री प्रज्ञापीठ, 51340 प्रज्ञामंडल, 63818 महिला मंडल तथा 48811 युग सैनिक केन्द्र पूरे विश्व में कार्य कर रहे हैं।

शक्तिपीठों का प्रान्तवार ब्यौरा

प्रान्त	प्रतिष्ठित	अप्रतिष्ठित / निर्माणाधीन
गुजरात	291	115
राजस्थान	142	122
मध्यप्रदेश	428	333
छत्तीसगढ़	333	197
बिहार	184	103
झारखण्ड	57	26
उड़ीसा	70	88
महाराष्ट्र	72	68
उत्तरप्रदेश	272	290
उत्तराखण्ड	17	17
जम्मू	4	4
हिमांचल प्रदेश	31	16
हरियाणा	23	11
पंजाब	5	4
दिल्ली	4	4
प.बंगाल	4	3
असम	8	6
अरुणांचल प्रदेश	3	2
आंध्रप्रदेश	9	4
तमिलनाडू	4	4
कुल :	1891	1417

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धर्मतंत्र की दिशा –

परम पूज्य गुरुदेव ने राष्ट्र के नवनिर्माण के लिए जीवंत और जाग्रत शक्तिपीठों के निर्माण के संकल्प की घोषणा सन् 1979 के वसंत पर्व पर की थी, लेकिन समाज में समग्र परिवर्तन की आवश्यकता के लिए सांस्कृतिक चेतना के पुनर्जागरण की आवश्यकता वे बहुत पहले से ही बताते रहे हैं, उनका स्पष्ट मानना था कि लोगों की मान्यता, विचार और भावनाओं को बदलने से ही युग परिवर्तन का संकल्प पूरा हो सकेगा और यह कार्य धर्मतंत्र के माध्यम से ही भलीभाँति पूरा हो सकता है। यदि हमें समाज को बदलना है, तो धर्मतंत्र की दिशाधारा को बदलना होगा।

गुरुदेव ने स्वयं लिखा है कि भारतीय संस्कृति के वे प्रकाश दीप, जो दूर–दूर तक धर्म की शुभ्र किरणें फैलाते रहे, ये देव मंदिर ही हो सकते हैं। भगवान को साक्षी रखकर दुष्प्रवृत्तियों से बचाने और सन्मार्ग को अपनाने की प्रेरणा, धर्मसेवी पुरोहितों के लिए ही नहीं, उन धर्म संस्थानों से सम्बंध रखने वाले सामान्य जन समाज के लिए भी पथ–प्रदर्शक होती है। यह व्यवस्था ठीक प्रकार चलने लगे, मंदिरों में पूजा करने वाले अपने नित्य नियमित साधना क्रम के अतिरिक्त अपना धर्म प्रचार करने एवं धर्म प्रवृत्तियों के संचालन की जिम्मेदारी का अनुभव करें और उनकी पूर्ति के लिए प्राणपण से जुटे रहें, तो हमें उन संख्या से भी तिगुनी संख्या में धर्म सेवक मिल सकते हैं, जितनों के बल पर ईसाइयों ने गत डेढ़ सौ वर्षों से समस्त संसार की लगभग आधी जनसंख्या को ईसाई बना लिया।

आज पुजारी लोग केवल यह कोशिश करते हैं कि उन्हें जनता से अधिक से अधिक पैसे प्राप्त होते रहें। इसके लिए वे अन्य मंदिरों की प्रतिमाओं की अपेक्षा अपने मंदिर की मूर्ति को अधिक चमत्कारी बताते रहते हैं। जो भक्त इस मूर्ति को जितना अधिक भोग प्रसाद, वस्त्र–आभूषण चढ़ावेगा, उसे उतनी ही दैवी कृपा करने वालों के आर्थिक स्वार्थों की पुष्टि होती रहेगी। वे लोग धर्मसेवा के अपने मूलभूत कर्त्तव्य को एक प्रकार से त्याग बैठे हैं और उसके लिए जोर देने वालों को अपना अपमान करने वाला बताते हैं। मंदिरों में आये दिन जिन भ्रष्टाचारों की खबर आती रहती है उनसे जनता में अश्रद्धा भी बढ़ती है। वहाँ कोई धर्म प्रवृत्ति जीवित न रहने से, केवल प्रतिमा को स्नान–भोजन करा देने मात्र तक सीमित कार्यक्रम रहने के कारण अरुचि एवं उपेक्षा तो पहले से लोगों को होने लगी थी।

मंदिरों के संचालक इस दिशा में कोई उत्साह नहीं दिखाना चाहते। वे कुछ भी हेर–फेर करने से देवता या पुजारी के नाराज होने से कोई अनिष्ट हो जाने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की बात सोच कर डरते हैं। शांति चाहने की खोज में अनेक महत्वपूर्ण व्यक्ति एकाकी और असमाजिक जीवन व्यतीत करने लगे। धर्म सेवा, समाज सेवा, जन सेवा भी उन्हें व्यर्थ लगने लगी। अपना स्वर्ग, अपनी मुक्ति अपनी शांति के लिए वे एकान्त आवश्यक समझते हैं, जबकि सही बात यह है कि प्राणिमात्र की सेवा एवं जनहित में अपने को उत्सर्ग करने से ही कोई व्यक्ति स्वर्ग, मुक्ति एवं शांति का अधिकार बन सकता है।

धर्मतंत्र की शक्ति –

परम पूज्य गुरुदेव का कहना था कि देश की बहुत बड़ी सामर्थ्य धर्मतंत्र में लगी है। उसे समाज के प्रति उत्तरदायी होना चाहिए। समाज की श्रद्धा का दोहन ही न करे, उसके उचित मार्गदर्शन की व्यवस्था भी करे धर्मतंत्र। इस संदर्भ में उन्होंने लिखा है कि भारत वर्ष की जनता देव मंदिरों के लिए अगाध श्रद्धा रखती है, उनके लिए उसने भारी त्याग किया है और अब भी कर रही है। प्रायः 14500 करोड़ रुपये की इमारतें मंदिरों की बनी हुई है। यह रकम भारतवर्ष में फैली हुई रेलवे की सारी सम्पत्ति से भी अधिक है।

मंदिरों के जेवर–आभूषण, रत्न, नकदी, जमीन, जायदाद, व्यवसाय आदि के रूप में स्थायी सम्पत्ति का मूल्य भी लगभग 3000 करोड़ रुपया आंका जाता है। प्रायः 1300 करोड़ रुपया हर साल मंदिरों पर खर्च होता है। यह रकम उससे अधिक है, जितना धन सारे देश में शिक्षा पर व्यय होता है। (यहाँ दिए गये आँकड़े सन् 1948 के हैं। तब तक पैसे की कीमत आज के लगभग एक रुपये के बराबर थी)

पूजा से सम्बंधित 58 लाख मनुष्यों का जनता निर्वाह न भार वहन करती है। यह जनसंख्या भारत की सारी फौज एवं पुलिस को मिला देने पर भी उससे अधिक बैठती है। स्थायी सम्पत्ति, इमारतें, चालू खर्च, इन कार्यों में लगी हुई जनसंख्या एवं जनता के प्रमुख भावना केन्द्र होने की दृष्टि से मंदिरों का एक बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। जनता सरकार को बड़ी कठिनाई और आनाकानी के साथ जितना टैक्स अदा करती है, उससे बहुत कम टैक्स वह बड़ी प्रसन्नता पूर्वक धर्मकृत्यों के लिए खर्च करती है।

यह ठीक है कि धर्म के नाम पर आज जो धोखाधड़ी चारों ओर फैली हुई है, उससे जनता के विश्वास की नींव हिलने लगी है और इस ओर उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाना आरंभ हो गया है। पर अभी वह बुराई इस हद तक नहीं बढ़ी है कि धर्म को अनावश्यक एवं घृणा की दृष्टि से देखा जाय। वैसी स्थिति उत्पन्न होने से पूर्व ही यदि संभल जाया जाय, तो धर्म ने जो स्थान भारतवर्ष में बना रखा है, भावना की दृष्टि में तथा धनबल और जनबल की दृष्टि से एक चलती हुई

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परम्परा एवं व्यवस्था के सदुपयोग की दृष्टि से इस धर्म भावना का सदुपयोग आवश्यक है। यदि इस ओर विचारवान लोगों का ध्यान न गया और आज जो दुर्व्यवस्था चल रही है, वही चलती रही, तो न केवल राष्ट्र की एक महत्वपूर्ण प्रवृत्ति का दुर्व्यय ही होगा, वरन् इस बुराई की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप लोग पथभ्रष्ट होंगे, साथ ही धर्म की उपयोगिता का संदेहास्पद बन जायेगी। इस दिशा में सुधार न करने की हमारी उपेक्षा, नास्तिकवाद को तीव्र गति से फलने का खुला आमंत्रण देगी।

आरंभ गायत्री ज्ञान मंदिरों से –

शक्तिपीठों की योजना से पहले पूज्य गुरुदेव ने गायत्री ज्ञान मंदिरों के निर्माण का आवाहन किया था। गायत्री मंदिर नहीं, बल्कि घरेलू स्तर पर गायत्री ज्ञान मंदिरों की स्थापना की योजना उन्होंने दी थी।

भारतवर्ष के धर्मतंत्र का प्रमुख आधार यह देव मंदिर है। इनके द्वारा जनता की वही सेवा होनी चाहिए जो इनकी स्थापना का मूल उद्देश्य है। यदि वह उद्देश्य पूरा न होगा, वरन् उसके विपरीत कार्य होंगे, तो अति उत्साही सुधारवादी उन्हें निरूपयोगी ही नहीं, धर्म विरुद्ध भी बताने की अपनी योजना में सफल हो जायेंगे। आगे चलकर तो नास्तिकवाद का उत्साह, साकार पंथी और निराकार पंथी दोनों ही देव स्थानों का सफाया कर देगा। इसलिए भी हमें समय रहते चेतना होगा और मंदिरों में लगी हुई राष्ट्र की एक अत्यंत ही महत्वपूर्ण शक्ति को उपयोगिता की कसौटी पर खरी सिद्ध करना होगा।

लोग मंदिरों की कीमती बड़ी इमारतें बनाने में गर्व अनुभव करते हैं, पर अच्छा यह होता कि मंदिर चाहे फूँस के झोंपड़े में ही रहते, पर वहाँ से वह प्रकाश उत्पन्न होता रहता, जिससे अनेकों तमसाच्छन आत्माएँ प्रकाशमान होकर जगमगातीं। ऐसे ही मंदिरों की स्थापना पर हमने जोर दिया है।

गायत्री सद्बुद्धि की देवी है। गायत्री ज्ञान मंदिरों से सद्ज्ञान का प्रसार होते रहना आवश्यक है। इस प्रमुख उद्देश्य को भुला न दिया जाय। इन सामूहिक सार्वजनिक ज्ञान मंदिरों के अतिरिक्त प्रत्येक सदस्य को घर पर एक पारिवारिक गायत्री ज्ञान मंदिर भी होना चाहिए। शास्त्रों में लिखा है जिस घर में देव मंदिर न हो, वह श्मशान तुल्य है। घर में देवस्थान रहने से निश्चित ही घर के लोगों में आस्तिकता एवं धर्मबुद्धि स्थिर रहती है। घर में उपासना का वातावरण बना रहने से सतोगुण बढ़ता है और अनेकों बुराइयों से बचे रहने का अवसर रहता है। इस घर में माता की सच्ची मन से उपासना हो, उनकी स्थापना हो, वहाँ सुख शान्ति की, श्री–समृद्धि की, सफलता–सम्पन्नता की कमी नहीं रहती।

www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बुद्धि की देवी के प्रत्येक उपासक के लिए स्वाध्याय भी उतना ही आवश्यक धर्मकृत्य है जितना जप, ध्यान, पाठ, स्नान। बिना स्वाध्याय के, बिना ज्ञान की उपासना के बुद्धि पवित्र नहीं हो सकती, मानसिक मलीनता दूर नहीं हो सकती और इस सफाई के बिना माता का सच्चा प्रकाश कोई उपासक अपने अन्तःकरण से अनुभव नहीं कर सकता। जिसे स्वाध्याय से प्रेम नहीं, उसे गायत्री उपासना से प्रेम है, यह नहीं माना जा सकता। बुद्धि की देवी गायत्री का सच्चा भोजन स्वाध्याय है।

आगे चलकर पूज्य गुरुदेव ने कहा कि देश में पौराणिक शक्तिपीठों की स्थापना की तरह ही नये युग के अनुरूप मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए गायत्री शक्तिपीठों की आवश्यकता है। आरंभ में उन्होंने देश के विख्यात् 24 तीर्थ स्थलों पर शक्तिपीठ निर्माण की योजना दी।

अग्निपरीक्षा –

युगऋषि परम पूज्य गुरुदेव का अवतरण इस धरा पर 'नवयुग निर्माण' की दैवी योजना को मूर्त रूप देने के लिए हुआ। उन्होंने बार–बार यह कहा कि युग निर्माण तो सुनिश्चित है। उसके लिए युग शक्ति का जागरण ऋषि तंत्र द्वारा जगत में किया जा चुका है। युगशक्ति को स्थूल जगत में उतारने के लिए आत्मशक्ति सम्पन्नों को माध्यम बनाया जाना है। भक्त तो भगवान को सहायता के लिए हमेशा ही पुकारते रहते हैं, ऐसे युग परिवर्तन के अवसरों पर भगवान भी भक्तों को सहायता के लिए पुकारते हैं। जो जागृत आत्मा उनकी आवाज को सुनकर साहसपूर्वक अपनी भूमिका निभाने आगे आते हैं। वे रीछ, वानरों, ग्वालवालों, पाण्डवों आदि की तरह दुर्लभ यश और पुण्य के भागीदार बनते हैं। उनके जीवन धन्य, कृतकृत्य हो जाते हैं।

गायत्री शक्तिपीठों–प्रज्ञापीठों का ताना–बाना युगऋषि ने इसीलिए बुना कि उनके माध्यम से युग संदेश, युग देवता का आमंत्रण जन–जन तक पहुँचाया जा सके। जिनमें थोड़ा–सा उत्साह जागे, उन्हें भगवान के साथ साझेदारी के लिए प्रेरित, प्रशिक्षित करके जीवन साधना में लगा दिया जाये। आध्यात्मिक अनुशासन में जीवन जीने के अभ्यास से उनमें आत्मशक्ति जागे तथा वे युगशक्ति के अवतरण के छोटे ही सही, पर प्रामाणिक माध्यम बन सकें।

पीठों को पूजा केन्द्र नहीं आध्यात्मिक ऊर्जा वितरण केन्द्र बनाने की उनकी इच्छा और योजना रही है। वे इसके लिए बौद्ध विहारों में भवन कैसे थे, यह बात गौण हैं। वहाँ धर्म चक्र प्रवर्तन के लिए ऐसे प्राणवान साधक तैयार किये गये, जो अपनी साधना के बल पर हिमालय पार करके, समुद्र पार करके सुदूर देशों तक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चले गये और वहाँ बौद्ध मत को स्थापित–फलित कर दिखाया। शंकराचार्य के मठ भी छोटे थे, पर वहाँ से ऐसे प्राणवान परिव्राजक–सन्यासी तैयार होकर निकलते रहे, जिन्होंने शंकर दिग्विजय की पताका सर्वत्र फहरा दी।

पूज्य गुरुदेव ने भी यह तथ्य बार–बार दोहराया कि मैं पूजा स्थलों की संख्या बढ़ाने के पक्ष में नही हूँ मैं तो युग सृजन के लिए हिमालय की दिव्य ऊर्जा को हर क्षेत्र में फैलने के लिए ट्रांसफार्मर, सब स्टेशनों की तरह शक्तिपीठों को आध्यात्मिक ऊर्जा प्रसारण के सशक्त केन्द्रों के रूप में विकसित करना चाहता हूँ। शक्तिपीठों, प्रज्ञापीठों से उनकी यह अपेक्षा रही है कि वे क्षेत्र में जन–जन तक युग देवता का निमंत्रण पहुँचायें। जो उसे सुनकर उत्साहित हों, उन्हें युग साधना से जोड़ें। साधना, स्वाध्याय, संयम, सेवा में उनके स्तर को निरंतर बढ़ाने में मदद करें। इस प्रकार उनमें आत्मशक्ति का जागरण हो और वे युगशक्ति के संवाहक बनकर कृतकृत्य हो सकें।

निश्चित रूप से यह कार्य भवनों या मूर्तियों से संपादित नहीं हो सकता। इसके लिए तो प्राणवानों की टोलियाँ तैयार करनी होंगी। मंदिर में वहाँ श्रद्धा का वातावरण बने, भवनों में साधकों को प्रेरित–प्रशिक्षित, नियोजित करने की व्यवस्था बने, तभी अभीष्ट लक्ष्य पाया जा सकता है।

www.vicharkrantibooks.org

हम युगऋषि की जन्मशताब्दी मनाने की तैयारियाँ कर रहे हैं। उनके श्री चरणों में उनकी माँग के अनुसार दो करोड़ सक्रिय सदस्य या प्रज्ञा परिजनों तथा दो लाख कर्मठ कार्यकर्ताओं या प्रज्ञा पुत्रों की श्रद्धांजलि समर्पित करनी है। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए प्रत्येक शक्तिपीठ–प्रज्ञापीठ को अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। पूज्य गुरुदेव की कसौटी पर अपनी प्रामाणिकता सिद्ध करनी है। इस संदर्भ में उनकी अपील 'अपने अंग अवयवों से' के निम्नलिखित अंशों पर ध्यान दें – "अपनी थकान और सुविधा की बात न सोचें। जो कर गुजरें, उसका अहंकार न करें, वरन् इतना ही सोचें। हमारा चिंतन, मनोयोग एवं श्रम कितनी अधिक ऊँची भूमिका निभा सका? कितनी बड़ी छलाँग लगा सकें, यही आपकी अग्नि परीक्षा है। इसी में आपके गौरव और समर्पण की सार्थकता है। अपने साथियों की श्रद्धा व क्षमता को घटने न दें। उसे दिन दूनी–रात चौगुनी करते रहें।"

"....अगला कार्यक्रम ऊँचा है। आपकी ऊँचाई उससे कम न पड़ने पाए, यह एक ही आशा, अपेक्षा और विश्वास आप लोगों पर रखकर कदम बढ़ रहे हैं। आप में से कोई इस विषम बेला में पिछड़ने न पाए, जिसके लिए बाद में पश्चाताप करना पड़े...।"

यह अग्नि परीक्षा की बेला है। अग्नि परीक्षा किसी के साथ पक्षपात नहीं करती। चोखेपन को निखारना और खोटेपन को जला देना उसका स्वभाव है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पीठों के संचालकगण सावधान हों। 'गायत्री शक्तिपीठ : युग ऋषि की दृष्टि और दायित्व' तथा 'संगठन की रीति-नीति' पुस्तिकाओं का अध्ययन करें। आत्म समीक्षा करें और अपनी पीठ को युगऋषि की कसौटी पर खरा सिद्ध करके अनुपम श्रेय-सौभाग्य के भागीदार बनें। हजारों पीठों में से यदि हम युगऋषि की कसौटी पर खरी पीठों की 108-108 की दो-चार मालाएँ भी उनके श्री चरणों पर भेंट कर सके, तो कृतकृत्य हो जायेंगे।

पूज्य गुरुदेव की दृष्टि और हमारे दायित्व

परम पूज्य गुरुदेव शक्तिपीठों के निर्माण के संकल्प के प्रति अपने दृष्टिकोण को समय-समय पर प्रस्तुत करते रहे हैं। उनके महत्वपूर्ण अंशों को संकलित कर एक पुस्तक तैयार की गयी है – 'गायत्री शक्तिपीठ : पूज्य गुरुदेव की दृष्टि और हमारे दायित्व।' इस पुस्तक के अध्ययन से शक्तिपीठों के निर्माण के प्रति उनका दृष्टिकोण स्पष्ट हो जाता है। यहाँ उसके कुछ प्रेरक बिंदु प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

पीठ जीवंत हों, जन उपयोगी हों –

जिस प्रकार समर्थ रामदास ने महाराष्ट्र भर में छोटे-छोटे महावीर मंदिर बनाए थे, उसी प्रकार गाँव-गाँव प्रज्ञा मंदिर बनाए जाएँ। भले ही वे आकार की दृष्टि से छोटे और लागत की दृष्टि से सस्ते हों, पर उनमें धर्मतंत्र की गरिमा को बढ़ाने वाले जीवन्त कार्यक्रम सतत चलाए जाते रहेंगे।

दर्शनार्थ देव प्रतिमा की झाँकी करने के साथ ही इन देवालयों से वह प्रेरणा भी ग्रहण करेंगे, जो उनमें युग के अनुरूप पलटने-बदलने के लिए चिंतन में उत्कृष्टता और चरित्र में आदर्शवादिता का समावेश करने के लिए प्रबल उत्कंठा लिये हैं। इन्हीं प्रयासों को योजनाबद्ध रूप से इन गायत्री शक्तिपीठों के साथ ही सुनियोजित किया जा रहा है।

देवालयों (प्रज्ञा संस्थानों) की इमारत में चलते रहने वाले कार्यक्रमों की रूपरेखा निर्धारित है। प्रातः सायं सामूहिक प्रार्थना-आरती। दिन में दो-दो घंटे की तीन (कुल छह घंटे) प्रशिक्षण कक्षाएँ, जिनमें छोटी आयु के बालक, प्रौढ़, अधेड़ आयु के नर-नारी अपनी पढ़ाई की सुविधा प्राप्त करते रहेंगे। इनमें एक कक्षा स्कूली पढ़ाई वाले छात्रों के लिए रहेगी, दूसरी प्रौढ़ पुरुषों तथा तीसरी महिलाओं के लिए रहेगी। देश में फैली हुई निरक्षरता एवं शिक्षा में रुचि को हटाने के लिए यह कार्यक्रम अतीव उपयोगी सिद्ध होगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हमारा उद्देश्य–व्यक्ति निर्माण –

दर्शक देवता को प्रणाम करने पधारें, यह उचित है, पर इससे भी अधिक आवश्यक यह है कि देव संस्थान अपने समीपवर्ती क्षेत्र में धर्मधारणा को प्रतिष्ठित एवं परिपक्व करने के लिए भी प्रबल प्रयत्न करें। युग निर्माण के लिए व्यक्ति का दृष्टिकोण और चरित्र बदलना चाहिए। गायत्री शक्तिपीठें अपने कार्य क्षेत्र में इसी का सुनियोजित प्रयत्न करेंगी। उन्हें युगतीर्थ की संज्ञा देने में कोई अत्युक्ति नहीं है।

समग्र क्रान्ति के ऊर्जा केन्द्र –

जन सम्पर्क की सघनता आते ही उन मुख्य प्रयोजनों को हाथ में लिया जायेगा, जिनके लिए इतनी बड़ी और दूरदर्शितापूर्ण योजना बनाई गई है। रचनात्मक कार्यों में प्रौढ़ शिक्षा, गृह उद्योग, वृक्षारोपण, आँगनबाड़ी, स्वास्थ्य प्रबंधन, शिशु कल्याण, नारी जागरण, श्रमदान, स्वच्छता अभियान, पर्यावरण, सहकारिता, अल्पबचत जैसी कितनी ही सत्प्रवृत्तियों का बीजारोपण एवं अभिवर्धन करना है। सुधारात्मक कार्यक्रमों में नशेबाजी, छूत–छात, पर्दाप्रथा, शादियों में अपव्यय, दहेज, मृतकभोज, अन्धविश्वास, जमाखोरी, मिलावट, रिश्वत, बहुप्रजनन, छल, आक्रमण, जैसी उच्छेंखलता दुष्प्रवृत्तियों के विरोध में वातावरण बनाना प्रमुख है।

श्रद्धा का प्रसाद–ज्ञान –

देव प्रतिमा पर पैसा फेंकने का निषेध रहेगा। कोई दर्शक, श्रद्धावश कुछ चढ़ाना चाहेगा, तो तत्काल उसके बदले साहित्य प्रसाद (या संस्थान की रसीद) देने का क्रम रहेगा। चढ़ोत्तरी के धन का दुरुपयोग होने के कारण ही मंदिरों को निहित स्वार्थों द्वारा हड़प लेने का क्रम बनता है। गायत्री शक्तिपीठ एक नयी परम्परा स्थापित करने जा रहे हैं।

निंदा से बचें, प्रतिष्ठा पायें –

कई व्यक्ति देवालय बनाने के लिए भावावेश में अत्यंत उतावली करते है और भूल जाते हैं कि भावावेश में इमारत बना देना सरल है, पर इन देवालयों के पीछे पुजारी, पूजा सामग्री तथा इमारत का जो नियमित खर्च पड़ता है, उसका क्या प्रबंध होगा? यह अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष है, जिसकी आमतौर से उपेक्षा की जाती है। फलतः आज अधिकांश देव मंदिरों की बुरी दुर्दशा हो रही है। उतावले लोगों की मनोभूमि श्रेय प्राप्ति और अहंता की तृप्ति के इर्द–गिर्द ही घूमती रहती है। वे मंदिर निर्माता, प्रबंधक बनने के लिए व्यग्र दिखाई पड़ते हैं, ताकि किसी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आर्थिक लाभ का छिद्र ढूँढ़ सकें।. उपहास और अपवाद के प्रसंग खड़े होना, निर्माताओं की भर्त्सना तक की बात नहीं है, वरन इस संदर्भ में निर्देश करने वाली शक्तियों से लेकर प्रज्ञावतार तक को निद्रा का भाजन बनना पड़ेगा।

हमारी वंश परम्परा को जानिए –

परिजनों! आप हमारी वंश परंपरा को जानिए। अगर हमको यह मालूम पड़ा कि आप ने हमारी परम्परा नहीं निभाई, अपना व्यक्तिगत ताना–बाना बुनना शुरू कर दिया, अपना व्यक्तिगत अहंकार, व्यक्तिगत यश कामना और व्यक्तिगत धन (सुविधा) संग्रह का सिलसिला शुरू कर दिया, व्यक्तिगत रूप से बड़ा आदमी बनना शुरू कर दिया, तो हमारी आँखों से आँसू टपकेंगे और वे आँसू आपको चैन से नहीं रहने देंगे, आपको हैरान कर देंगे।

परम पूज्य गुरुदेव का जन्म शताब्दी वर्ष 2011–12 में विशुद्ध रूप से उनके क्रान्तिकारी विचारों के व्यापक विस्तार के जन भावनाओं में प्रगतिशीलता, पवित्रता, सृजनशीलता के विस्तार का लक्ष्य रखा गया है। इसके लिए प्रखर साधना को महत्व देते हुए समाज को साम्प्रदायिकता से ऊपर उठकर मानव मात्र के कल्याण के लिए प्रयत्नशील करना है। पूज्यवर के जन्मशताब्दी वर्ष के निमित्त सृजन साधना महापुरश्चरण आरंभ हो रहा है। इसकी पूर्णाहूति तक हम सबका ध्यान केवल जन मानस के परिष्कार पर ही केन्द्रित रहे, किसी भी प्रकार के बड़े भवनों के निर्माण की बात न सोचें, यही प्रार्थना है।

www.vicharkrantibooks.org

शक्तिपीठों का सहयोगी तंत्र

युग निर्माण आन्दोलन में गायत्री शक्तिपीठों की बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका है। उसी के अनुरूप उनके दायित्व भी बड़े हैं। पीठ पर आने वालों को सम्मानजनक मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन मिले, क्षेत्रीय कार्यक्रमों की व्यवस्थित योजना हो, केन्द्र और संगठन के साथ अच्छा तालमेल रहे, यह सब सभी परिजनों के परस्पर सहयोग से ही संभव है। इसके लिए शांतिकुंज से शक्तिपीठों के प्रबंधन के संदर्भ में चार प्रबंधन समितियों के निर्माण की रूपरेखा निर्धारित की गयी है। इस ओर पुनः ध्यान दिलाते हुए शक्तिपीठ से जुड़े समस्त परिजनों से जिम्मेदार समितियों के निर्माण का आग्रह किया जा रहा है, वहीं उनके दायित्वों का भी बिन्दुवार स्मरण किराया जा रहा है।

1. देवालय–आश्रम प्रबंधन समिति –

इस समिति पर वहाँ के स्थूल एवं सूक्ष्म वातावरण को सुरुचिपूर्ण एवं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्राणवान बनाने के दायित्व हैं। इसके कार्य हैं – 1. स्वच्छता सुव्यवस्था पर ध्यान देना – भवन पुते हों, दीवारों पर सद्वाक्य लगे हों। 2. लाल मशाल का भाव सहित बड़ा चित्र और युग निर्माण के सत्संकल्प बड़े साइज में लगे हों, शक्तिपीठ के बाहर और भीतर जन्मशताब्दी वर्ष के संदर्भ में भी एक बड़ा बोर्ड लगाया जाय, कार्यक्रमों की जानकारी वाला सूचना पट्ट हो, प्रमुख स्थानों पर गायत्री शक्तिपीठ के नामपट्ट–संकेतक बोर्ड लगाये जायें। 3. पर्याप्त हरीतिमा और वृक्षारोपण। 4. एक छोटी प्रदर्शनी शक्तिपीठ पर अवश्य हो। 5. झोला पुस्तकालय, ज्ञानरथ, वाचनालय, साहित्य स्टॉल की व्यवस्था हो। 5. बाल संस्कार शाला, स्वावलम्बन, साधना, कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण की व्यवस्था हो। 6. बाल संस्कार शाला, स्वावलम्बन, साधना, कार्यकर्ता प्रशिक्षण की व्यवस्था हो। 7. नियमित, समयबद्ध दैनिक क्रियाकलाप–त्रिकाल संध्या–ध्यान, प्रातः–सायं आरती, सत्संग, निःशुल्क यज्ञ–संस्कार। प्रभात फेरी, सामूहिक साधना। 8. सृजन साधना महापुरश्चरण की उपयुक्त व्यवस्था, 9. बसन्त पर्व, गायत्री जयन्ती, गुरुपूर्णिमा, श्रावणी पर्व, दोनों नवरात्रियों में परिजनों द्वारा सामूहिक अनुष्ठान साधना किये जाने की व्यवस्था बनाई जाये।, 10. वार्षिकोत्सव एवं माह में पड़ने वाले पर्व–त्योहारों को सामूहिक रूप से मनाने की व्यवस्था की जाय। 11. परिजनों कार्यकर्त्ताओं तथा अन्याय व्यक्तियों के जन्म–दिन, विवाह–दिवस का रिकार्ड रखना जाय तथा समय पर उन्हें मनाने की व्यवस्था हो। 12. क्षेत्र में यज्ञ एवं सभी संस्कार सम्पन्न कराने के लिए टोलियों की उचित व्यवस्था हो। 13. मिशन की विभिन्न योजनाओं, कार्यक्रमों, गतिविधियों को संचालित करते हुए उसका प्रगति–प्रतिवेदन नियमित रूप से शांतिकुंज को भेजने की व्यवस्था बनायी जाये।

www.vicharkrantibooks.org

2. विधि एवं वित्त प्रबंधन समिति –

पीठ के कानूनी दायित्वों का पालन करते हुए समाज और प्रशासन के विश्वास पर खरे उतरना, 2. हिसाब–किताब की प्रामाणिकता, 3. संगठन की सभी इकाइयों के हिसाब–किताब संबंधी मार्गदर्शन, उनकी वित्तीय आवश्यकताओं का उचित प्रबंधन, 5. ज्ञानघट–धर्मघट, दानपेटी आदि राशि का प्रबंधन।

3. संगठन प्रबंधन समिति –

अपने क्षेत्र की समीक्षा करते हुए नये लोगों को साधना, स्वाध्याय से जोड़ना। मंडलों का गठन–पंजीयन और उनकी जानकारी रखना। समयदान और अंशदान की व्यवस्था बनाना। सक्रिय संगठित समूहों (स–3) का गठन और समर्थ समयदानी सहयोगियों की खोज करना। क्षेत्र के दीक्षितों, संस्कारितों, पत्रिकाओं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के ग्राहकों की जानकारी रखना, उन्हें सक्रिय बनाना समस्त जानकारी केन्द्रीय–संगठन तन्त्र को देना। ट्रस्टियों, संचालकों, परिजनों/कार्यकर्त्ताओं एवं संगठन की विभिन्न इकाइयों के मध्य आपसी सामंजस्य–तालमेल तथा उनका शक्तिपीठ के विकास में सक्रिय सहयोग लेना।

4. आन्दोलन समिति –

पीठ से जुड़े लोगों को सतत साधना के लिए प्रेरित करना और साधना की ऊर्जा को सृजन अभियान में नियोजित करना। क्षेत्रीय समदानियों के कौशल के अनुरूप सप्त आन्दोलनों को पुष्ट करना। आपदा प्रबंधन समिति का गठन। एक गांव गोद लेकर उसे स्वच्छ, स्वस्थ, शिक्षित, संस्कार युक्त–व्यसन मुक्त, स्वावलम्बी, सहकारी ग्राम बनाना। कार्यक्षेत्र के पांच विद्यालयों को गोद लेकर उनमें उपयुक्त वातावरण बनाना।

प्रत्येक तीर्थ में शक्तिपीठ को एक या अधिक ब्रह्मवर्चस की शक्ति धाराओं का प्रतिनिधित्व करने वाली गायत्री प्रतिमाओं की स्थापना हेतु कहा गया तथा सत्साहित्य का एक प्रचार–केन्द्र व सत्संग हेतु एक–एक कक्ष विनिर्मित करने के लिए प्रेरित किया गया। जहाँ व्यवस्था बन पड़े वहाँ परिव्राजकों के लिए एक निवास भी बनाने को कहा गया। परिव्राजकों को स्थायी महन्त बनने के लिए नहीं बल्कि गायत्री यज्ञ का प्रचार–विस्तार इस पूरे क्षेत्र में कर, एक विनम्र लोकसेवी के रूप में सबका श्रद्धाभाजक बनने की प्रेरणा दी गयी। इन्हें तीन माह से लेकर एक वर्ष तक एक स्थान पर रहकर फिर बुद्ध के प्रचारकों की तरह आगे बढ़कर नया कार्यक्षेत्र संभालने की प्रेरणा दी गयी। केन्द्रीय शिक्षण तंत्र भी इसी स्तर का बनाया गया।

अपनी चौथी हिमालय यात्रा से लौटकर आने के बाद शांतिकुंज में रहकर अपनी 1972 से 1981 तक की दो पंचवर्षीय योजनाओं की घोषणा पूज्य गुरुदेव ने की थी। इन योजनाओं में पहले पांच प्रमुख कार्यों निज की तप–साधना द्वारा युग–निर्माण आंदोलन का परोक्ष सूत्र–संचालन, प्राण–प्रत्यावर्तन की सघन अनुदान, नारी जागरण का अभिनव सूत्रपात, वैज्ञानिक अध्यात्मवाद की स्थापना का भागीरथी प्रयास तथा प्रवासी भारतीयों में देव–संस्कृति का विस्तार में से चार की चर्चा तो हो चुकी। पाँचवाँ प्रसंग विदेश में बसे प्रवासियों व नागरिकों को देव–संस्कृति के महत्वपूर्ण निर्धारणों से अनुप्राणित कर इन्हें उस केन्द्रीय धुरी से जोड़ना था, जो प्राण–संचार करती रह सके। इसके लिए दिसम्बर, 1972 में स्वयं पूज्य गुरुदेव ने ढाई माह की अफ्रीका के पूर्वीभाग की यात्रा की। यह यात्रा कई उद्देश्यों से जरूरी थी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

युग–निर्माण की चर्चा करते समय वे सदा कहते थे कि मिशन का कार्य–क्षेत्र सारा विश्व है व अवधि तब तक की है जब तक कि यह युग, यह समय, यह धरा बदल नहीं जाती। शुरुआत उन लोगों से करना, उन्होंने अनिवार्य समझना, जो भारत के राजदूत बनकर पीढ़ियों से वहीं जा बसे थे, इनमें प्रधानता गुजरात प्रान्त से जाने वालों की है, किन्तु राजस्थान, पंजाब व अन्यान्य स्थानों से रोजगार हेतु बाहर गए परिजनों की संख्या भी कम नहीं है। इनमें से कई पूज्य गुरुदेव से अखण्ड–ज्योति के माध्यम से जुड़े हुए थे। इनसे पत्र–व्यवहार व मार्गदर्शन का क्रम चल ही रहा था। ये व्यक्ति न केवल अफ्रीका के तंजानिया, केन्या, मोमबासा, जाम्बिया, जिम्बाब्वे, कांगो, युगाण्डा, साउथ अफ्रीका, मलावी जैसे देशों में बसे हुए हैं, बल्कि यूरोप के इंग्लैण्ड, नार्वे, डेनमार्क, हालैण्ड जर्मनी तथा कनाडा, सूरीनाम, फिजी, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, मलेशिया एवं अमेरिका आदि राष्ट्रों में भी बहुतायत से विद्यमान हैं। इन सभी से मिलना तो इतनी कम अवधि में संभव नहीं था, किन्तु उस विधा की तो शुरुआत करनी ही थी, जिसके माध्यम से परिजनों को आवश्यक प्रेरणा, प्रकाश एवं दिशा–निर्देश दिया जा सके। अन्यान्य धर्मों के अनुयाइयों तथा विज्ञानवेत्ताओं से मिलना भी उनका उद्देश्य था, ताकि वसुधैव कुटुम्बकम् के लक्ष्य तक पहुंचने के लिए स्थूल शरीर से जो जाना जा सकना संभव है, वह इस यात्रा से जान लिया जाए।

वे अपने ममत्व भरे मार्गदर्शन से अनेकों परिजनों को अपना बनाकर लौटे व लौटते हुए उन्होंने कल्पना कर ली कि देव–संस्कृति के मूल स्वरूप से जब तक प्रत्येक भारतवासी को, प्रवासी नागरिकों को एवं विश्व–वसुधा पर बसने वाले हर व्यक्ति को अवगत नहीं कराया जाता, तब तक वे अज्ञान के अंधकार में भी भटकते रहेंगे। भोगवादी जीवन ही जहाँ सब कुछ है, नास्तिकतावादी तत्वदर्शन जहाँ हावी होता जा रहा हो, वहाँ भारतीय संस्कृति की आस्थावादी मान्यताओं का पहुँचना जरूरी है।

'अखण्ड ज्योति' मात्र हिन्दी व गुजराती तक सीमित रहने से मिशन का कार्यक्षेत्र फैल नहीं सकता था। अतः इस पुस्तक के प्रकाशन के दो वर्ष बाद एक योजना बनी, जिसमें पत्रिका अथवा पुस्तकें इंग्लिश, तमिल, तेलगू, बंगाली, गुरुमुखी जैसी पाँच भाषाओं में प्रकाशित किया जाए। युग शक्ति गायत्री के नाम से ये गुजराती, मराठी व उड़िया में पहले ही प्रकाशित हो रही थीं। साथ ही प्रवासी भारतीयों के लिए सांस्कृतिक चेतना, गायत्री एवं यज्ञ तथा योग के वैज्ञानिक स्वरूप का परिचय देने वाली तीन छोटी पुस्तिकाएं हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती में 1971–80 में प्रकाशित हुईं। गायत्री महाविज्ञान के समन्वित तीनों खण्ड तथा पूज्य गुरुदेव की आत्मकथा जो 1958 में लिखी गई, का अंग्रेजी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अनुवाद भी पुस्तक आकार में प्रकाशित हुआ। इन सभी में उपासना, साधना–आराधना से लेकर लोक सेवा सम्बंधी विशद मार्गदर्शन भी है।

पूज्य गुरुदेव का संकल्प है कि युगसन्धि के शेष दस वर्षों में उनका संदेश विश्व के जन–जन तक पहुँचे, इसके लिए विश्व की अन्यान्य भाषाओं में साहित्य का अनुवाद होते रहने से वे सूक्ष्म शरीर से प्रतिभाशालियों को प्रेरणा देते रहेंगे। फ्रेंच व रशियन में यह कार्य आरम्भ हो चुका है। विश्व में भाषाएँ तो 3000 के लगभग हैं, किन्तु मान्यता प्राप्त पांच ही हैं। अंग्रेजी, फ्रेंच, स्पेनिश, चीनी व रूसी। शुरुआत अभी तीन से हुई है, शेष के माध्यम से आचार्य श्री के पूरे वाङ्मय को विश्व के कोने–कोने तक पहुँचाया जा सकेगा, इसमें कोई संदेह नहीं। युग चेतना का आलोक पहुँचते ही संस्कृति के दूतों की भूमिका महत्वपूर्ण होगी, क्योंकि भारतवर्ष की झाँकी वहां के नागरिक उनमें देखेंगे। इसीलिए उनकी चेतना को झकझोरने का काम प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से यह तंत्र सतत करता रहेगा। तब 'युगनिर्माण' एक वास्तविकता बन जाएगा, हम सबके जीवन में साकार होने वाला एक सुखद सत्य होगा।

सूक्ष्मीकरण की एकाकी तप साधना, पूज्य गुरुदेव के जीवनकाल एवं मिशन के इतिहास का एक अति महत्वपूर्ण मोड़ है। इस अवधि में उनकी तप–साधना सूक्ष्म रूप से पाँच वीरभद्रों को क्रियाशील बनाने में लगी रही व लेखनी 'अखण्ड–ज्योति' एवं 'युगशक्ति गायत्री' के माध्यम से हर प्रज्ञा–परिजन के मन को सतत मथती रही। इसी दौरान सन् 1985 का वर्ष उनकी आयु का पिचहत्तरवाँ वर्ष होने के कारण ही रजत जयन्ती वर्ष मनाया गया एवं इसी वर्ष अप्रैल, 1985 में उन्होंने अपने जीवन के महत्वपूर्ण प्रसंगों पर पहली बार प्रकाश डाला।

इन दो वर्ष की अवधि में जिसका समापन वसंत पर्व 1986 पर हुआ, दर्शन–झांकी के कौतुक वाले वर्ग से उन्होंने मुक्ति पा ली एवं अनेकों ऐसे प्राणवान व्यक्ति उनसे जुड़ गये जो उनके मूल स्वरूप को, उनकी आत्मकथा को पढ़कर, भली–भाँति हृदयंगम कर उनके प्रत्यक्ष दर्शन न हो पाने की स्थिति में भी आ जुड़े थे। इनमें से कुछ देव–परिवार का अभिन्न अंग बन गये, कुछ क्षेत्र में सक्रिय हो गये जिन्हें आदर्शवाद रुच नहीं रहा था, वे स्वयं को तीव्र गति से चल रहे प्रज्ञावतार के प्रवाह में अपने को न जोड़, स्वतः अलग हो गये अथवा थपेड़ों ने उन्हें अलग कर दिया। इस प्रकार 1984–86 की अवधि प्रज्ञा–परिवार के लिए एक युगान्तरकारी परिवर्तन का स्वरूप लेकर आयी।

वसंत पर्व 1986 पर अपनी सूक्ष्मसत्ता के निर्देशानुसार उन्होंने तप–साधना को साथ जारी रखते हुए परिजनों से सीमित रूप से मिलते रहने का क्रम पुनः बना लिया, जो निर्बाध गति से वसंत पर्व 1990 तक चलता रहा। इन चार वर्षों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की अवधि में जो कार्य उनके मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ, वह विगत चालीस वर्षों के बराबर हुआ माना जा सकता है। इसी अवधि में उन्होंने कार्यक्षेत्र से जुड़े कार्यक्रमों को नई गति दी। सात लाख गांवों व एक लाख कस्बों तक पहुंचने के लिए एक नई कार्यशैली निर्धारित हुई। पूर्णाहुति वर्ष होने के कारण एक हजार 108 कुण्डीय गायत्री यज्ञों व इतने ही छोटे 24 कुण्डीय यज्ञों को मनाने का निर्णय 1986 में ही लिया गया। यह तीन वर्ष से चली आ रही देवात्मशक्ति की कुण्डलिनी जागरण साधना की महापूर्णाहुति थी। लाखों व्यक्ति इस माध्यम से मिशन से जुड़ गये। अगले ही वर्ष समय की आवश्यकता को देखते हुए इन यज्ञों का विस्तार देने के लिए न्यूनतम सामग्री में सम्पन्न करने के लिए दीपयज्ञों का निर्धारण हुआ, जो जन्मदिवसोत्सवों से लेकर एक लक्ष वेदीय दीपयज्ञों का स्वरूप लेता हुआ विस्तार लेता चला गया।

'नवसृजन के निमित्त महाकाल की तैयारी' में वे लिखते हैं – 'अब जीवन का दूसरा अध्याय आरंभ होता है। अब इसमें जो होना है उसे और भी अधिक महत्वपूर्ण एवं मूल्यवान माना जा सकता है। स्थूल के अतिरिक्त सूक्ष्म व कारण शरीरों का अस्तित्व अध्यात्म विज्ञानी बताते रहे हैं। उन्हें स्थूल शरीर की तुलना में असंख्य गुना अधिक शक्तिशाली कहा गया है। उन्हीं का प्रयोग अब एक शताब्दी तक किया जाना है। यह कार्य सन् 1990 के वसंत पर्व से आरम्भ किया जा रहा है यहाँ से लेकर सन् 2000 तक दस वर्ष युगसंधि का समय है। परिजन देखेंगे कि इस अवधि में जो गतिविधियां चलेंगी उसका केन्द्र 'शांतिकुंज हरिद्वार' होगा।

वसंत पर्व पर, प्रत्यक्ष मिलने का क्रम बंद होने से 30 अप्रैल, 90 तक जब उन्होंने निकटवर्ती कार्यकर्त्ताओं की एक विशेष गोष्ठी में ब्रह्मबीज के ब्रह्मकमल में विस्तृत होने एवं उसकी सुवास कोने–कोने तक पहुँचाने के लिए 7, 8 जून को ज्येष्ठ पूर्णिमा के अवसर पर 6 महानगरों में 6 विशाल ब्रह्मयज्ञ, लक्षवेदीय दीपयज्ञ के आयोजन की बात कही, तो संभवतः औरों को उनके इस अंतिम अध्याय पर शीघ्र पर्दा गिरने की बात मन में ही नहीं आयी होगी। किंतु वंदनीया माताजी एवं उनके समीपवर्ती सहयोगियों को भली–भाँति समझ में आ रहा था कि वे लक्ष्य निध ारित कर चुके हैं। उनको वसंत पर्व पर ही बता दिया गया कि गायत्री जयन्ती तक ही उनका दृश्य अस्तित्व है। उसके बाद वे सूक्ष्म व कारण शरीर को और सक्रिय बनाने के लिए परोक्ष जगत में विचरण कर जायेंगे। गायत्री जयंती तक वे क्रमशः अपनी चेतना को समस्त अंगों से सिकोड़ना चालू रखेंगे, ताकि इच्छानुसार जब चाहें, शरीर छोड़ दें।

इतना होने पर भी मन में यह आश्वासन था कि जून की पूर्णिमा के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ब्रह्मयज्ञों का निर्धारण उन्हीं का है। तब तक तो उन्हें सशरीर रहना ही है। किन्तु 8 मई को उन्होंने यह कहकर कि प्रस्तुत पूर्णिमा के कार्यक्रम श्रद्धांजलि कार्यक्रम होंगे व वे अपना शरीर माँ गायत्री के अवतरण के पुण्य दिन, गायत्री जयन्ती पर उन्हीं की गोद में सिर रखते हुए महाप्रयाण कर जायेंगे, सब कुछ स्पष्ट कर समीपवर्ती परिजनों को शोकविह्वल कर दिया। एकाएक कोई घटनाक्रम घटित होने पर संभवतः कोई बड़ी क्षति हो सकती थी, किन्तु वे सुनियोजित ढंग से अपने जीवनवृत्त का समापन करना चाह रहे थे।

महापुरुषों की लीला अपरम्पार होती है। स्थूल दृष्टि उन्हें भले ही समझ न पाए, किन्तु जो उन्हें समीप से देख चुके हैं, अपने सानिध्य में जिनको उन्होंने विगत छह–सात वर्षों की पूरी अवधि में रखा, उनको यह लीला समझ में आ रही थी। इस बीच उन्होंने मिशन की भावी रीति–नीति सम्बंधी स्पष्टीकरण, कार्यकर्त्ताओं के दायित्व तथा सूत्रंचालन सत्ता सम्बंधी महत्वपूर्ण निर्देश देते रहने का क्रम बनाए रखा। उनका कथन था कि 'शक्ति के जाने पर तो संस्था का काम रुक सकता है, किन्तु व्यक्ति के जाने पर नहीं। वे स्वयं शक्ति स्वरूप हैं एवं वंदनीया माताजी ही उनकी शक्ति को संग्रहीत रख परिजनों को दैनन्दिन जीवन से लेकर स्नेह बाँटने तक मिशन के दृश्य क्रियाकलापों सम्बंधी मार्गदर्शन, इसके बाद करती रहेंगी।'

उत्तराधिकारियों के रूप में वे लोकसेवी कार्यकर्त्ताओं की एक सशक्त टीम छोड़े जा रहे हैं, जिनसे उनकी अपेक्षा है कि वे उनके जैसा ही ब्राह्मणोचित जीवन जियेंगे, उनके जैसी ही संयमित दिनचर्या अपनाते हुए परमार्थ प्रयोजनों में अपनी सारी शक्ति नियोजित करेंगे। लोकेषणा को कभी पास नहीं फटकने देंगे व परस्पर प्रतिद्वन्द्विता आदर्शवाद के क्षेत्र में करेंगे। कौन कितना विनम्र बना, यही उसकी वरिष्ठता की कसौटी होगी। उनके द्वारा समर्पित भाव से ब्रह्मपरायण जीवन किस प्रकार जिया गया, इसी आधार पर उनका मूल्यांकन प्रत्यक्षतः इन दिनों वंदनीया माताजी एवं परोक्ष रूप से वे सतत करते रहेंगे व सतत उनकी चेतना को झकझोर कर वे कार्य कराते रहेंगे जो अब तक गुरुसत्ता ने उनसे कराया है।'

उन्होंने बार–बार यही कहा कि – 'यह काम भगवान का है, अवतार सत्ता का है, अतः कभी रुक नहीं सकता। सूक्ष्म व कारण शरीर से वे क्रमशः भारत एवं विश्व भर में सक्रिय होते हुए मूर्धन्यों को झकझोरेंगे एवं युगचेतना के आलोक को आगामी दस वर्षों में ही पूरे भारत व विश्वभर में संव्याप्त कर देंगे। ब्रह्मकमल जब परिपक्व स्थिति में पहुँचकर विभाजित होता है, तो अनेकों ब्रह्मबीज अपने पीछे छोड़ देता है। हमारे सम्पर्क में प्रत्यक्ष रूप से आए पच्चीस लाख कार्यकर्त्ता एवं इनसे भी सौ गुना अधिक वे जो अगले दिनों जुड़ेंगे, हमारा मार्गदर्शन सतत प्राप्त

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करते रहेंगे, क्योंकि अब हम उनके और अधिक निकट आ गये हैं, प्रत्यक्ष वंदनीया माताजी, आने वाले कुछ समय के लिए जब तक उनकी गुरुसत्ता उन्हें सक्रिय बनाये रखना चाहती है, सारे क्रियाकलापों का संचालन कर शांतिकुंज को एक विश्वविद्यालय का रूप देंगी जहां नियमित रूप से साधना–अनुदान के वितरण, ममत्व भरे मार्गदर्शन एवं कौशल–प्रशिक्षण का क्रम चलता रहेगा।'

उनके इन अंतिम दिनों में समीप रहने वाले एक चिकित्सक शिष्य को यह निर्देश नोट कराये जाते रहे, साथ ही उसके मन में बार–बार उनके शरीर को लेकर मच रहे अन्तर्द्वन्द्व व उहापोह को पढ़ते हुए समाधान भी दिया जाता रहा। उनका कहना था कि 'चेतना को मापने वाली मशीन अभी विज्ञान ने नहीं बनाई, अतः तुम जड़ यंत्रों से शरीर की जाँच–पड़ताल कर सब कुछ सामान्य पाकर भी हमें असामान्य पाते हो, तो इसमें दोष न यंत्रों का है, न तुम्हारा। स्थूल विज्ञान जिसको अध्यात्म से समन्वित करने का हम जीवनभर प्रतिपादन करते रहे, इन यंत्रों से नहीं बता सकता कि चेतना का 15 प्रतिशत अंश हम पहले से ही सूक्ष्म व कारण शरीर की तैयारी हेतु रवाना कर चुके हैं। पाँच प्रतिशत अंश जो शेष बचा है, इस काया की देख–रेख करता रहेगा, जब तक अनिवार्य है। यंत्रों अथवा औषधि द्वारा काया से छेड़–छाड़ न किए जाने का हमारा निर्देश है। जब हम शरीर छोड़ें तब न तो प्राणों को लौटाने की चेष्टा करना, न काया से मोह करना। इस पार्थिव शरीर की अन्त्येष्टि हमारे ही द्वारा विनिर्मित प्रखरप्रज्ञा–सजलश्रद्धा रूपी तीर्थ स्मारकों के समक्ष गायत्रीतीर्थ के प्रांगण में उपस्थित परिजनों की साक्षी में पावन गायत्री जयन्ती के दिन कर दी जाए। काया को औरों के दर्शन हेतु रोका न जाए, क्योंकि इससे परिजन हमारी काया से मोह करने लगेंगे व चेतना जो कि सब कुछ है, हमारा कतृत्व जो शाश्वत, चिरस्थायी है, को परे रख देंगे। हम चाहेंगे कि लोग हमारी चेतना से जुड़ें, इसी कारण हम अन्त्येष्टि यहीं, इसी शांतिकुंज में पावन गंगादशहरा गायत्री जयन्ती के दिन ही कराने का आग्रह कर रहे हैं। माताजी को हम शक्ति देंगे ताकि वे स्वयं पर नियंत्रण रख सकें व मिशन से जुड़े एक भी बालक को हमारी कमी अनुभव न होने दें।'

दो जून (गायत्री जयन्ती) की प्रातःकाल का समय था। ब्रह्ममुहूर्त था। वंदनीया माताजी को, परिजनों को क्या कहना है एवं आगे कैसे कार्य करना है, यह सन्देश उन्होंने दिया एवं फिर दोनों ने अन्तिम विदाई ली। दोनों को दृश्य शरीर के पृथक् होने की अनुभूति हो रही थी, किन्तु स्वयं पर वज्र रख वंदनीया माताजी अपने आराध्य का संदेश सुनाने नीचे चली आई। लगभग सात हजार से अधिक व्यक्तियों ने उस सन्देश को सुना, जो वंदनीया माताजी ने करुणासिक्त अंतःकरण से निकली अपनी वाणी से कहा। उनके उदबोधन के बाद प्रणाम व

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भोजन का क्रम चल पड़ा। जैसे ही युगसंगीत की प्रथम पंक्ति पूज्यवर के कक्ष में पहुंची – 'माँ तेरे चरणों में हम शीश झुकाते हैं' उनके हाथ नमन की मुद्रा में ऊपर उठे एवं हृदय की धड़कन बंद हो गई। कार्डियोस्कोप जो विगत तीन सप्ताह से ससत हृदय का स्पन्दन बता रहा था, अब यह संकेत दे रहा था कि 2 जून, 1990 की प्रातः 8 बजकर 5 मिनट पर स्थूल काया से प्राण विसर्जित हो, महाप्राण में विलीन हो चुके हैं। एक युग का पटाक्षेप हो चुका था।

वे अपनी शक्ति वंदनीया माताजी को हस्तान्तरित कर गये थे तथा उनके माध्यम से सारे परिजनों को वही ममत्व, दैनन्दिन जीवन तथा लोकसेवा के क्षेत्र से, नवनिर्माण से जुड़ा मार्गदर्शन सतत मिलता रहा। निधि के रूप में वे विनिर्मित शांतिकुंज, ब्रह्मवर्चस, गायत्री तपोभूमि तथा प्रज्ञा संस्थान, पच्चीस लाख सक्रिय भावनाशीलों का परिकर तथा चिंतन चेतना के रूप में प्रचुर परिणाम में साहित्य लिखकर छोड़ गए हैं।

पूज्य गुरुदेव ने बहुमुखी जीवन जिया है। बाल्यकाल में अपने गुरुदेव से साक्षात्कार से लेकर हिमालय यात्रा तक, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के नाते, यातना भुगतने से जेल यात्रा तक, परिजनों को स्नेह से अभिपूरित कर अपना अंग–अवयव बनाने तक, एक विश्वव्यापी समाजसेवी संगठन बनाने से लेकर अगणित भावनाशील लोक़सेवियों के निर्माण तक, अपनी चमत्कारी अनुभूतियों द्वारा अगणित व्यक्तियों को संजीवनी देने से लेकर आत्मविकास सम्बंधी मार्ग़दर्शन तक तथा लेखनी द्वारा अपनी चिन्तन–चेतना को जन–जन तक पहुँचाने जैसे कार्यों से भरा–पूरा यह विराट व्यक्तित्व रहा है।

पूज्य गुरुदेव ने कहा था कि – "मेरे जाने के बाद शोक न किया जाए क्योंकि मैं शक्ति के रूप में और अधिक विराट् परिसर में पहुँच जाऊँगा। सभी को मेरी अनुभूति होती रहेगी।' उनका अंतिम संदेश इस प्रकार है –

"अस्सी वर्ष जी गई लम्बी सोद्देश्य शरीरयात्रा पूरी हुई। इस अवधि में परम्परा को हर पल अपने हृदय और अंतःकरण में प्रतिष्ठित मानकर एक–एक क्षण का पूरा उपयोग किया। शरीर अब विद्रोह कर रहा है। यों उसे कुछ दिन और घसीटा भी जा सकता है, पर जो कार्य परोक्ष मार्गदर्शक सत्ता ने सौंपे हैं, वे सूक्ष्म और कारण शरीर से ही सम्पन्न हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में कृशकाय शरीर से मोह का कोई औचित्य भी नहीं है।

'ज्योति बुझ गई' यह भी नहीं समझा जाना चाहिए। अब तक के जीवन में जितना कार्य इस स्थूल शरीर ने किया है, उससे सौ गुना सूक्ष्म अन्तःकरण से संभव हुआ है। आगे का लक्ष्य विराट् है। संसार भर के छह अरब मनुष्यों की अन्तश्चेतना को प्रभावित और प्रेरित करने, उनमें आध्यात्मिक प्रकाश और ब्रह्मवर्चस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जगाने का कार्य पराशक्ति से ही संभव है। जीवन की अंतिम घड़ियाँ उसी उपक्रम में बीती हैं। इसके उपरान्त वे सभी परिजन जिन्हें हमने ममत्व के सूत्रों में बाँधकर परिवार के रूप में विस्तृत रूप दे दिया है, संभवतः स्थूल नेत्रों से हमारी काया को नहीं देख पाएँगे। पर हम उन्हें विश्वास दिलाते हैं कि इस शताब्दी के अंत तक, जब तक सूक्ष्म शरीर कारण के स्तर तक न पहुँच जाए, हम शांतिकुंज परिसर व प्रत्येक परिजन के अन्तःकरण में विद्यमान रहकर अपने बालकों में नवजीवन और उत्साह भरते रहेंगे। उनकी समस्या का समाधान उसी प्रकार निकलता रहेगा जैसा कि हमारी उपस्थिति में उन्हें उपलब्ध होता रहा है।

हमारे आपसी सम्बंध अब और भी प्रगाढ़ हो जायेंगे, क्योंकि हम बिछुड़ने के लिए नहीं जुड़े थे। हमें एक क्षण के लिए भी भुला पाना आत्मीय परिजनों के लिए कठिन हो जाएगा।

ब्रह्मकमल के रूप में हम तो खिल चुके, किन्तु उसकी शोभा और सुगन्धि के विस्तार हेतु ऐसे अगणित ब्रह्मबीज देवमानव उत्पन्न करे जा रहे हैं जो खिलकर समूचे संस्कृति सरोवर को सौंदर्य–सुवास से भर सकें, मानवता को निहाल कर सकें।

ब्रह्मनिष्ठ आत्माओं का उत्पादन, प्रशिक्षण एवं युग परिवर्तन के महान् कार्य में उनका नियोजन बड़ा कार्य है। यह कार्य हमारे उत्तराधिकारियों को करना है। शक्ति हमारी काम करेगी तथा प्रचण्ड शक्ति प्रवाह अगणित देवात्माओं को इस मिशन से अगले दिनों जोड़ेगा। उन्हें संरक्षण, स्नेह देने, खरादने, सँवारने का कार्य माताजी सम्पन्न करेंगी। हम सतयुग की वापसी के सरंजाम में जुट जाएँगे। जो भी कल्पनाएँ नवयुग के सम्बंध में हमने की थीं, वे साकार होकर रहेंगी। इसी निमित्त कायपिंजर का सीमित परिसर छोड़कर हम विराट् घनीभूत प्राण ऊर्जा के रूप में विस्तृत होने जा रहे हैं।"

देव समुदाय के सभी परिजनों को मेरे कोटि–कोटि आशीर्वाद, आत्मिक प्रगति की दिशा में अग्रसर होने हेतु अगणित शुभकामनाएँ।'

— श्रीराम शर्मा आचार्य

गुरुग्राम आंवलखेड़ा की विकास यात्रा

ग्रामीण अंचल में बसे आगरा जनपद के छोटे से उपेक्षित ग्राम की विकास यात्रा स्वाधिनता के बाद से गुरुदेव के रचनात्मक क्रियाकलापों के साथ प्रारंभ हो गई। भौतिक जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करने वाले सुविधा केन्द्रों से शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वाध्याय योग आदि से जुड़ी इकाइयों ने सन् 1950 से अपना क्रम प्रारंभ कर दिया था। सीमित साधनों को पैतृक विरासत से जुटा कर सार्वजनिक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

केन्द्र की स्थापना जनवरी 1950 में पूज्य श्री के कर कमलों से हुई। केन्द्र में अध्यात्म, योग, व्यायाम सामूहिक यज्ञ आदि की गतिविधियां प्रारंभ हो गई। क्षेत्रवासियों के सहयोग और उमड़ती श्रद्धा से सार्वजनिक केन्द्र कार्य क्षेत्र आस–पास के तीन दर्जन गांवों तक फैल गया।

सामाजिक चेतना को धनात्मक दिशा में विकसित करने के लिए शिक्षा के प्रचार–प्रसार पर गुरुदेव ने अपना ध्यान केन्द्रित किया। पैतृक सम्पत्ति से जुटाई गई आवश्यकताओं को पूरा करके गुरुदेव ने अपनी पूज्यनीया माता श्रीमती दान कुंवरि जी के नाम पर क्षेत्र की पहली शिक्षण संस्था की आधारशिला जुलाई सन् 1963 में रखी। वर्तमान में यही संस्था श्रीदान कुंवरि इण्टर कॉलेज के नाम से जानी जा रही कॉलेज के प्राचार्य के मार्गदर्शन में कॉलेज के योग्य शिक्षा विद् क्षेत्र में ज्ञान का प्रकाश फैला रहे हैं। संस्था का अपना विशाल भवन है। क्रीड़ा परिसर, पुस्तकालय, वाचनालय, सभा भवन, प्रार्थना–स्थल, वाहन, उद्यान तथा विज्ञान समस्त सुविधा केन्द्र है, जिसका उपयोग ग्रामीण क्षेत्र के सैकड़ों विद्यार्थी कर रहे हैं।

गुरुदेव के प्रमुख सूत्रों में महिला जागृति को प्राथमिकता के क्रम में स्थान दिया है। ग्रामीण क्षेत्र में बालिकाओं को शिक्षित करने के उद्देश्य से प्रयास किया गया। परिणाम स्वरूप सन् 1985 में गायत्री शक्तिपीठ के दक्षिणी परिसर के विशाल भवन में राजकीय बालिका हाईस्कूल की स्थापना की गई। गुरुदेव ने एकबार फिर प्रदेश के शासन तंत्र को झकझोरा। सन् 1987 में इस बालिका हाईस्कूल को राजकीय बालिका इण्टर कॉलेज बना दिया गया। वर्तमान में कॉलेज की प्राचार्या के नेतृत्व में योग्य प्रवक्ताओं द्वारा छात्राओं के सर्वांगीण विकास को नित्र नये सोपान तय किये जा रहे हैं। गायत्री शक्तिपीठ के दक्षिणी परिसर के 12 बड़े कमरों (हाल) में अध्ययन, बालिका क्रीड़ांगन में शारीरिक प्रशिक्षण, औषधि उद्यान में बागवानी तथा प्रवचन हाल में शिक्षणेत्तर क्रियाकलाप कॉलेज की छात्राओं द्वारा निरंतर चलते रहते हैं। युग संगीत, योग तथा भारतीय संस्कृति से जुड़े पहलुओं पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। बोर्ड परीक्षाओं के अच्छे परिणाम कॉलेज की छवि को दूर–दूर तक पहुँचा रहे हैं।

परम्परागत रूढ़ियों की जंजीरों में जकड़े क्षेत्रीय जनता के मध्य विभिन्न रचनात्मक कार्यों को मिशन द्वारा श्रृंखलाबद्ध ढंग से सम्पन्न कराया जा रहा है। उच्च शिक्षा की सुविधा के अभाव में क्षेत्रीय बालिकायें इण्टरमीडिएट उत्तीर्ण करके अपनी शिक्षा पर पूर्ण विराम लगाने पर विवश थीं। सन् 1996 में मिशन के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं के सक्रिय प्रयास से गायत्री शक्ति पीठ के उत्तरी परिसर की विशाल इमारत में राजकीय महिला महाविद्यालय की स्थापना हुई। स्नातक कक्षाओं में हिन्दी, अंग्रेजी, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र तथा राजनीति शास्त्र के नियमित शिक्षण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के साथ–साथ प्रतियोगिता परक आयोजनों को नियोजित किया गया है। आदि संस्कृति, योग, शारीरिक क्षमताओं, मानसिक विकास के कार्यक्रमों के निरंतर होते रहने से शिक्षा का घनात्मक वातावरण बहुमुखी प्रतिभाओं को विकसित कर रहा है। मिशन द्वारा उपलब्ध कराये गये विशाल भूखण्ड पर महाविद्यालय की मध्य इमारत बनकर तैयार हो गई। इमारत में गायत्री यज्ञ करके वर्तमान सन् 2000–2001 से शिक्षण कार्य प्रारंभ किया गया है। यह इमारत गायत्री शक्तिपीठ के पश्चिमी भाग में बनाई गई है। संस्था की प्राचार्या श्रीमती उर्मिला सिंह सहित सभी प्रवक्ता कर्मचारी क्षेत्रीय विकास के कार्यक्रमों को व्यावहारिक स्वरूप प्रदान कर अपना योगदान दर्ज कर रहे हैं।

स्वास्थ्य संवर्धन को मूर्त रूप में विकसित करने के लिये अक्टूबर 1995 में माँ भगवती देवी चिकित्सालय की आधारशिला मिशन के कर्मठ कार्यकर्ता जयपुर निवासी वीरेन्द्र अग्रवाल द्वारा रखी गई। वरिष्ठ कार्यकर्ताओं के सक्रिय प्रयास से चिकित्सालय की आधुनिक सुविधाओं युक्त इमारत न केवल बनकर तैयार हो गई, बल्कि प्रदेश सरकार ने इसे माँ भगवती देवी राजकीय सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र आंवलखेड़ा के रूप में घोषित किया। केन्द्र में सर्जरी, दंत चिकित्सा, महिला चिकित्सा, फिजीसियन, पैथोलॉजी, कुष्ठ निवारण, परिवार कल्याण, एड्स निवारण, नशा निवारण की सुविधायें, 30 बिस्तर वाले वार्ड, जनरेटर सुविधा, आपरेशन तथा आक्सीजन आदि की सुविधायें आम नागरिकों को मुहैया कराई जा रही हैं। केन्द्र का उद्घाटन विगत 25 मई 1997 को तत्कालीन मुख्यमंत्री सुश्री मायावती ने प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री रमापति शास्त्री की अध्यक्षता में किया।

गायत्री शक्तिपीठ के पूर्वी भाग में सार्वजनिक दूरभाष केन्द्र, पुस्तकालय, वाचनालय, प्राथमिक चिकित्सा, योग, जड़ी–बूटी संरक्षण एवं उपयोग, युग संगीत प्रशिक्षण की इकाइयां स्थापित हैं। जो स्वतंत्र रूप से मिशन के नेतृत्व में सक्रिय हैं। आगरा से जलेसर मार्ग, यातायात सुविधा, स्थानीय बाजार आदि मिशन के प्रयासों से संभव हुआ है। वैदिक कर्मकाण्ड, संस्कार, या वेदपुराण वाचन आदि के लिये दूर–दूर से श्रद्धालुओं की टोलियां आती हैं। विशेष रूप से नवरात्रि पर्वों, शिवरात्रि पर्व, महाकाल रात्रि पर्व, दीपावली, दशहरा, होली, गायत्री जयंती, वसंत पंचमी तथा गुरुपूर्णिमा पर मेलों का आयोजन होता है, जिसमें भाग लेने के लिये देश के कोने–कोने तथा विदेशों से भी श्रद्धालु आते हैं। गुरुदेव की जन्मस्थली प्रकाश स्तम्भ स्मारक गायत्री शक्तिपीठ पर भीड़ को नियंत्रित करने के लिए अतिरिक्त पुलिस बल की तैनाती प्रशासन द्वारा की जाती है।

गुरुदेव की जन्मस्थली गांव के मध्य में बने एक प्राचीन शैली की जमींदार गढ़ी के अन्तः कक्ष में है, जिसका स्वरूप उसी रूप में रखा गया है। गुरुदेव की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रथम कर्मस्थली जन्म ग्राम में जन्म स्थली के पश्चिमी भाग में एक भव्य प्रकाश स्तम्भ स्मारक का निर्माण किया गया है। जिसका लोकार्पण नवम्बर सन् 1995 में तत्कालीन प्रधानमंत्री नरसिंहा राव ने किया था। चित्र श्रृंखला दीर्घा, शिलालेख श्रृंखला दीर्घा, शक्ति स्थल, विशाल प्रकाश स्तम्भ, पुष्पवाटिका को स्मारक के विशाल परकोटै में वास्तुकला के अधार पर समायोजित किया गया है। जहां पहुंचने के लिये उत्तरी प्रमुख द्वार तथा पूर्वी सम्पर्क द्वार का उपयोग करना पड़ता है। पूर्वी द्वार के समीप ही आगन्तुक स्वागत कक्ष है, जहां से गुरु ग्राम पावन तीर्थ के संदर्भ में मार्गदर्शन प्राप्त किया जा सकता है। मार्गदर्शन के लिये गायत्री शक्तिपीठ के स्वागत कक्ष से भी सहायता ली जा सकती है। होटल रेस्टोरेंट एसोसिएशन आगर द्वारा टूरिस्ट पैकेज में आगरा से 24 कि.मी. दूर उत्तर दिशा में स्थित गुरु ग्राम पावन तीर्थ को शामिल किया है। विवरण में गायत्री शक्तिपीठ मंदिर आंवलखेड़ा को अखिल विश्व गायत्री परिवार के संस्थापक पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य की जन्मस्थली के विशेष दर्शनीय स्थल घोषित किया गया है। एसोसिएशन के तत्वावधान में प्रकाशित विश्व प्रसारित टूरिस्ट मैप में भी आंवलखेड़ा को प्रमुखता से दर्शाया है। यहां पहुंचने के लिये आगरा से टैक्सी, बस, टैम्पो आदि की सुविधायें उपलब्ध हैं। आगन्तुकों के लिये शक्तिपीठ के विश्राम गृह, अतिथि गृह में निःशुल्क आवासीय एवं भोजन व्यवस्था नियमानुसार उपलब्ध रहती है।

अखण्ड ज्योति संस्थान

परमपूज्य गुरुदेव ने सन् 1939 में अखण्ड ज्योति संस्थान, घियामंडी मथुरा की स्थापना की। अखण्ड ज्योति के समक्ष साधना अखण्ड ज्योति पत्रिका का प्रकाशन एवं युग केन्द्र की स्थापना तीन मंजिला भवन में की। वर्तमान समय में यहां कुल 18 कमरे, 2 सभागार तथा 2 गैरिज हैं। कम्प्यूटर विभाग, लेखन एवं संपादन विभाग, प्रसार विभाग, विश्रामालय, गोष्ठी हाल, सभागार, गुरुजी की साधना स्थली, प्रदर्शनी दीघा, कला पक्ष, आवासीय खण्ड, प्रशासनिक विभाग, विचार–विमर्श कक्ष की व्यवस्था अखण्ड ज्योति संस्थान में है जिसकी व्यवस्था पं. मृत्युंजय जी शर्मा दो दर्जन से अधिक समयदानी गायत्री परिजनों के सहयोग से कर रहे हैं। कलयुग की गंगोत्री शांतिकुंज है तो गोमुख के रूप में अखण्ड ज्योति संस्थान को परिभाषित किया जा सकता है। पत्रिका का प्रकाशन, मुद्रण एवं वितरण की पूरी व्यवस्था के अतिरिक्त अन्य प्रकाशनों को समायोजित करने का दायित्व इस संस्थान पर है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गायत्री तपोभूमि

गायत्री तपोभूमि एक संस्कारित तपस्थली एवं सिद्ध गायत्री पीठ है। इस पुण्य तपोभूमि में साधना करने का विशेष महत्व है। परमपूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य की 24 महापुरश्चरणों की पूर्णाहुति पर की गई स्थापना है – गायत्री तपोभूमि, मथुरा। इसका निर्माण गायत्री परिवार रूपी संगठन के विस्तार के लिए किया गया। इसकी स्थापना से पूर्व 2400 तीर्थो के जल व रज को संग्रहीत करके उनका पूजन किया गया। एक छोटी किन्तु भव्य यज्ञशाला में हिमालय के महान सिद्ध योगी की धूनी से 700 वर्ष पुरानी अखंड अग्नि की स्थापना यज्ञशाला के यज्ञ कुंड में की गई और एक गायत्री माता का मंदिर विनिर्मित किया गया। इस अवसर पर पूज्य गुरुदेव ने 30 मई 1953 से 22 जून 1953 तक 24 दिन का उपवास मात्र गंगाजल पर किया और वेदमाता गायत्री की मूर्ति की स्थापना एवं प्राण प्रतिष्ठा दिनांक 22 जून 53 को की गई। 2400 करोड़ गायत्री मंत्र लेखन नैष्ठिक साधकों द्वारा श्रद्धापूर्वक कराकर यहां पर संरक्षित रखा गया। इसी अवधि में अन्य कार्य भी होते रहे, जैसे 24 लाख गायत्री मंत्र जप, सवा लाख गायत्री चालीसा पाठ, यजुर्वेद व गीता के परायण, गायत्री सहस्त्रनाम, गायत्री कवच, रुद्राष्टाध्यायी, दुर्गा सप्तशती, रामायण आदि के पाठ, महामृत्युंज्य जप, 60 हजार आहुतियां आदि।

वसंत पंचमी सन् 1955 से 15 माह तक निरंतर यज्ञशाला में विशद् गायत्री महायज्ञ की श्रृंखला में गायत्री महायज्ञ के साथ विशेष सरस्वती यज्ञ, रुद्र यज्ञ, महा मृत्युंजय जप यज्ञ, विष्णु यज्ञ, शतचंडी यज्ञ, नवग्रह यज्ञ, चारों वेदों के मंत्र यज्ञ, ऋग्वेद यज्ञ, सामवेद यज्ञ, अथर्ववेद यज्ञ, ज्योतिष्टोम, अग्निष्टोम आदि श्रोत यज्ञ एक–एक माह तक होते रहे। इन यज्ञों की पूर्णाहुति 20–04–56 से 24–04–56 तक नवरात्रियों में 108 कुंडों की यज्ञशाला में 5–6 हजार व्यक्तियों द्वारा 125 लाख आहुतियों द्वारा हुई। 125 करोड़ गायत्री मंत्र जप किया गया। 250 ज्ञानमंदिरों की स्थापना की गई। नरमेध यज्ञ में कई व्यक्तियों ने जीवन दान दिया। दिनांक 20 अप्रैल 56 को परमपूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माता जी द्वारा सभी भौतिक पदार्थ जेवर, पुस्तक, प्रेस, जमीन आदि सब कुछ गायत्री माता को दान कर दी गई।

दिनांक 23 नवम्बर 58 से 26 नवम्बर 58 तक इस युग के महानतम सहस्त्र कुंडीय गायत्री यज्ञ का सूत्रपात इसी तपस्थली से किया गया जिसमें 4 लाख व्यक्तियों ने भाग लिया। 1024 कुण्डों की 128 यज्ञशालाओं में प्रतिदिन 1 लाख होताओं द्वारा 24 लाख आहुतियां, 24 करोड़ गायत्री मंत्र जप, सवा लाख गायत्री मंत्र लेखन व सवा लाख गायत्री चालीसा पाठ किए गए। इस महायज्ञ की प्रचंड ऊर्जा ने सारे देश में यज्ञों की धूम मचा दी। परिणामस्वरूप सन् 1969 में 5 बड़े

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सहस्त्र कुण्डीय यज्ञ महासमुंद (म.प्र.) बहराइच (उ.प्र.) पोरबंदर (गुजरात), भीलवाड़ा (राजस्थान) तथा टाटानगर (बिहार) में सम्पन्न हुए। इसके उपरांत यज्ञों की श्रृंखला निरंतर देश–विदेशों में भी चल रही है। इसी श्रृंखला में अनेक अश्वमेध यज्ञ और संस्कार महोत्सवों के रूप में विशाल यज्ञ भी देश–विदेश में सम्पन्न हुए हैं।

हिमालय प्रवास से लौटकर पूज्य आचार्यश्री ने युग निर्माण योजना के शतसूत्री कार्यक्रम, सत्संकल्प तथा युग निर्माण विद्यालय आरंभ करने की घोषणा की। यह स्वावलंबन प्रधान शिक्षा देने वाला तंत्र निरंतर सफलतापूर्वक चल रहा है। परमपूज्य गुरुदेव 1971 में गायत्री तपोभूमि का दायित्व पं. लीलापत शर्मा को सौंपकर शांतिकुंज हरिद्वार चले गए, किंतु यहां के कण–कण में उनकी प्राण चेतना का दर्शन किया जा सकता है। विराट प्रज्ञानगर युग निर्माण विद्यालय, साहित्य के प्रकाशन हेतु आधुनिक मशीनों का विस्तृत तंत्र यहां पर देखा जा सकता है।

यह तपोभूमि ऋषि दुर्वासा की तपस्थली है। 1953 से हजारों महानुभावों ने यहां गायत्री अनुष्ठान किए हैं और शिविरों में भाग लिया है। यहां प्रतिदिन प्रातः से सायंकाल तक नियमित अखंड जप व अखण्ड अग्नि में यज्ञ होता है। नवरात्रियों में सामूहिक अनुष्ठान भी होते हैं। अखंड दीप भी यहां प्रज्ज्वलित हैं।

परमपूज्य गुरुदेव ने गायत्री तपोभूमि को एक चैतन्य तीर्थ बताते हुए लिखा है कि 'मथुरा से एक मील दूर वृंदावन रोड पर सड़क के किनारे गायत्री तपोभूमि स्थित है। इसके पीछे ही पुण्य सलिला यमुना कल–कल निनाद करती हुई प्रवाहित होती है। यह भूमि ऐसी है जहां प्राचीनकाल में अनेक तपस्वियों ने प्रचंड तप करके अलौकिक सिद्धियां पाई है। इनकी तपस्या का पर्याप्त प्रभाव अभी भी इस भूमि में मौजूद हैं। भगवान कृष्ण की पुनीत क्रीड़ास्थली अपने भीतर एक दिव्य विशेषता धारण किए हुए हैं। इस स्थान की आध्यात्मिक शक्ति के कारण यहां पर की गई साधना बड़ी सरलतापूर्वक सफल होती है।' यहां सभी संस्कार निःशुल्क सम्पन्न कराए जाते हैं।

गायत्री तपोभूमि को प्रशासनिक खण्ड, प्रकाशन खण्ड, स्वाध्याय एवं स्वालम्बन खण्ड, शिक्षण प्रशिक्षण खण्ड, आवासीय खण्ड, अतिथि विश्राम खण्ड तथा भण्डार खण्ड के रूप में सात भागों में बांटा गया है।

प्रशासनिक खण्ड में कम्प्यूटर विभाग एकाउन्ट विभाग, लेखा विभाग, पत्राचार विभाग, व्यवस्था नियंत्रण विभाग, स्वागत कक्ष, पंजीकरण विभाग, आवास व्यवस्था विभाग, वितरण विभाग सहित दो दर्जन विभाग कार्य कर रहे हैं। प्रकाशन खण्ड में बिक्री विभाग, वितरण विभाग, प्रसार विभाग, संपादकीय विभाग, प्रूफरीडिंग विभाग, लेआउत विभाग, कला विभाग, मशीन रूम, प्लानिंग प्रोसेसिंग विभाग, संयोजन विभाग, बाइंडिंग सत्र आदि कार्य कर रहे हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वाध्याय एवं स्वालम्बन खण्ड में विशाल पुस्तकालय वाचनालय, शोध कक्ष, सहायक सामग्री विभाग, ग्रंथालय, कुटीर उद्योग प्रशिक्षण विभाग में 28 कुटीर उद्योगों का नियमित सत्रों में प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

शिक्षण प्रशिक्षण खण्ड में विद्यालय पत्राचार, पाठ्यक्रम विभाग, भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा विभाग, झोला पुस्तकालय विभाग, वेद विभाग, कर्मकाण्ड विभाग, जनजागरण विभाग आदि कार्य कर रहे हैं।

आवासी खण्ड में स्थाई कार्यकर्ताओं के लिए भगवती भवन, वरिष्ठ कार्यकर्ताओं हेतु गायत्री भवन, विद्यार्थियों के लिए छात्रावास क्रमांक 1, प्रशिक्षणार्थियों के लिए छात्रावास क्रमांक–2, प्रशिक्षकों हेतु शिक्षक आवास, प्रदर्शन के लिए संस्कृति भवन, अविवाहित कार्यकर्ताओं के लिए आचार्य भवन, दो विशाल रसोईघर, दो विशाल भोजनालय, डाकघर, इण्डियन ओवरसीज बैंक, छः गैरिज।

आवासीय खण्ड में ही शक्ति स्वरूपा मां गायत्री का विशाल मंदिर, महाकालेश्वर का मंदिर, 800 वर्ष की अखण्ड अग्नि, विशाल यज्ञशाला, कमलाकार विशाल जल संग्रहालय, सतसंग भवन, प्रवचन हाल, गोष्ठी कक्ष आदि हैं।

अतिथि विश्रामखण्ड में दुर्वासा भवन की तीन मंजिली विशाल इमारत पूर्ण सुविधायुक्त हैं। इसमें गोष्ठी कक्ष, सत्संग हाल, प्रवचन हाल, विचार विमर्श कक्ष भी है। भण्डार खण्ड में मशीन स्टोर, लेखा स्टोर, आवश्यक सामग्री स्टोर, परिवहन स्टोर, यांत्रिक कार्यशाला, उपकरण स्टोर, चार प्रकाशन स्टोर, कागज स्टोर आदि हैं।

www.vicharkrantibooks.org

गायत्री तपोभूमि द्वारा संचालित ज्ञानयज्ञ की योजनाएँ

1. ज्ञानमंदिरों की स्थापना –

आज की बढ़ी हुई अनैतिकता से, स्वार्थपरता से, आपाधापी से हर कोई दुखी है। आज की सामाजिक स्थिति, संकीर्णता, मूढ़ता और रूढ़ियों से बुरी तरह आक्रान्त है। हर कोई इसमें परिवर्तन चाहता है। गायत्री ज्ञान मंदिरों की स्थापना करके स्वाध्याय और सत्संग की व्यवस्था घर–घर बनाई जा सकती है। इसके लिए क्षेत्रीय कार्यकर्ता भाई–बहिन घर–घर जाकर व्यक्तिगत सम्पर्क करके, स्वाध्याय का महत्व समझाकर, ज्ञान मंदिर के साहित्य सैट घरों में स्थापित करते हैं।

2. विद्या विस्तार प्रचार केन्द्र पंजीयन योजना –

युग निर्माण योजना, मथुरा से साहित्य मंगाकर बिक्री द्वारा जन–जन तक पहुंचाने वाले परिजन सौ रुपया अमानत राशि भेजकर अपने विद्या विस्तार प्रचार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

केन्द्र का पंजीयन करा लेते हैं ताकि उन्हें साहित्य पर 25 प्रतिशत तथा अन्य दीगर सामान पर 15 प्रतिशत की छूट मिलती रहती है।

3. श्रीराम झोला पुस्तकालय –

गुरु दीक्षा के समय किए गए समयदान के संकल्प की पूर्ति हेतु यह योजना सभी कार्यकर्त्ताओं को चलानी होती है। इसके माध्यम से परिजन साहित्य के सैट अपने झोले में रखकर घर–घर बांटने और वापस लेने का पुरुषार्थ करते हैं। झोला पुस्तकालय अमृत बांटने का, प्रकाश बांटने का और कल्याण बांटने का अभियान है। यह असीम दान और अनुपम पुण्य परमार्थ है। यह योजना बहुत कम समय में साहित्य को जन–जन तक पहुँचाने में बहुत सफल हुई है।

4. माता भगवती स्वचलित पुस्तकालय –

युग निर्माण योजना, मथुरा द्वारा प्रकाशित सभी पॉकेट बुक्स के पृष्ठ–2 पर माता भगवती स्वचलित पुस्तकालय की योजना दी गई है। इस योजना के अन्तर्गत पाठक पुस्तक को पढ़ने के बाद किसी दूसरे व्यक्ति को देते चले जाते हैं। इस प्रकार एक ही पुस्तक कई घरों में सैकड़ों व्यक्तियों द्वारा पढ़ ली जाती है। जो परिजन गुरुदीक्षा में अंश दान की पूर्ति हेतु अपने धन का सदुपयोग ज्ञानयज्ञ में करते हैं वे इन पुस्तकों को मंगाकर नियत स्थान पर अपने नाम व पते की मुहर लगाकर पात्र व्यक्तियों में वितरित कर देते हैं। इस प्रकार युग ऋषि के विचारों को फैलाने में बहुत बड़ा योगदान करते हैं।

5. युग चेतना साहित्य वितरण योजना –

परमपूज्य गुरुदेव के क्रांतिकारी चिंतन को शीघ्रता से जन–जन तक पहुंचाने के लिए 30 पैसा मूल्य की 16 पेजी पाकेट बुक प्रकाशित की गई है। इन पुस्तकों को यज्ञ, धार्मिक आयोजन, सामाजिक गोष्ठी, सम्मेलन, पर्व, त्यौहार, जन्मदिन, होली, दिवाली, क्रिसमस, ईद, वैशाखी आदि अवसरों पर पुस्तकों पर अपने नाम, पते की मुहर लगाकर बांटना चाहिए। डाक से मंगाने के लिए न्यूनतम कुल 225 रु. भेजकर 900 पुस्तकें मांगनी चाहिए।

6. युग निर्माण योजना पत्रिका का विस्तार –

पूज्य गुरुदेव ने लिखा है कि युग निर्माण योजना पत्रिका को धरती पर स्वर्ग की दिशाधारा, कार्यपद्धति एवं संभावना को सर्वसाधारण के सम्मुख प्रस्तुत करने का कार्य सौंपा गया है सभी परिजन युग निर्माण योजना पत्रिका के सदस्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अवश्य बनें और दूसरों को भी प्रेरणा देकर इसके अधिक से अधिक सदस्य बनाएं। गुजराती भाषा में युग शक्ति गायत्री मासिक पत्रिका यहां से प्रकाशित होती है।

7. युग निर्माण विद्या परिषद (पत्राचार पाठ्यक्रम) –

देवसंस्कृति के आदर्शों एवं सिद्धान्तों की जानकारी जन–जन तक पहुंचाने की दृष्टि से पत्राचार पाठ्यक्रम यहां से प्रारंभ किया गया है। इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत प्रशिक्षणार्थी घर बैठे 3 माह की अवधि का पाठ्यक्रम 24 यूनिटों में पढ़कर परीक्षा देते हैं और उत्तीर्ण होने पर जीवन साधक का प्रमाण–पत्र प्राप्त करते हैं। इस योजना में जीवन जीने की कला एवं स्वस्थ रहने की कला के पाठ्यक्रम भी चलाने की योजना है।

पत्राचार पाठ्यक्रम केन्द्रों की संख्या

म.प्र.	1105
म.प्र.	1418
बिहार	303
राजस्थान	284
महाराष्ट्र	140
अन्य	473
गुजरात	228
कुल	**3951**

gp.org
www.vicharkrantibooks.org

8. युग सेना संगठन –

परमपूज्य गुरुदेव ने लिखा है कि युग निर्माण आंदोलन का अंतिम चरण संघर्ष होगा। इस हेतु क्रान्तिकारी चिंतन और जीवट वाले परिजनों का स्थान–स्थान पर युग सेना संगठन बनाया गया है। जो अपने क्षेत्र में यहां से उद्घोषित सात क्रांतियों के कार्यक्रम संचालित करते हैं। आस्तिकता संवर्धन, स्वास्थ्य संवर्धन, नारी जागरण, कुरीति उन्मूलन, व्यसन मुक्ति, सत्प्रवृत्ति संवर्धन–दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन एवं विवाहोन्माद प्रतिरोध आन्दोलन क्षेत्र में यहीं से संचालित किए जा रहे हैं।

जनजागरण प्रेस –

मथुरा वृन्दावन राजमार्ग पर बिरलामंदिर के पास जनजागरण प्रेस एक विलित भूभाग में सात खण्डीय भवन में स्थापित है। छपाई तकनीक के शिक्षण, प्रशिक्षण के साथ–साथ उच्चस्तरीय तकनीक से छपाई का कार्य इस प्रेस में किया जाता है। परम पूज्य गुरुदेव ने हैण्ड कम्पोजिंग की छपाई के काम शुरू किया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

था। आज वही छापाखाना भारत के चुनिंदा प्रेस में से एक है।

प्रथम खण्ड में प्रशासनिक द्वितीय में कम्पोजिंग, लेआउट, तृतीय में सम्पादन चतुर्थ में मशीन सत्र पंचम में बाइंडिंग षष्ठम में स्टोर तथा सप्तम खण्ड में विश्रामगृह व्यवस्थित किया गया है।

जागरण के उपकरणों की सूची

1. वेब आफसेट (रोटरी) आफसेट प्रा.लि.	2 मशीन (1 फार्म में 16 पेज हैं)	परफेक्ट रोटरी	40000 फार्म/घंटे
2. फोर कलर आफसेट (शीट फेड)	1 मशीन	सोलना, स्वीडन	3000 शीट/घंटे
3. सिंगल कलर शीट फेड इन्टरप्राइजेज (नागपुर)	1 मशीन	पी ओ 25 मनुग्राफ	6000 शीट/घंटे
4. फ्लो लाइन (गैंदरिंग, स्टचिंग, कटिंग)	1 मशीन	हैरिस, यू.एस.ए.	4000 मैगजीन/घंटे
5. एक्सपोजिंग कैमरा	1 मशीन	मेमोरि रिप्रो सिस्टम दिल्ली	
6. प्लेट बेकिंग ओवन	1 मशीन	मेमोरि रिप्रो सिस्टम दिल्ली	
7. डैम्पिग रोलर क्लीनर	1 मशीन	मेमोरि रिप्रो सिस्टम दिल्ली	
8. मेड स्विंग मशीन	1 मशीन	कुमारन इंडस्ट्री (बैंगलोर)	
9. कटिंग मशीन	4 मशीन	पोलीमास्टर इन्द्रोपाली मशीन कार्पो अमृतसर	
10. प्लेट ग्रेनिंग मशीन	2 मशीन		
11. बेडलिग मशीन (आटो)	1 मशीन	ईगल	
12. पेपर रील अनलोडिंग	1 मशीन	एलीवेटर	

शांतिकुंज

हरिद्वार सप्तसरोवर क्षेत्र में स्थित शांतिकुंज आश्रम की स्थापना जून 1971 में वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य एवं शक्तिस्वरूपा माता भगवती देवी शर्मा रूपी ऋषियुग्म की संकल्प शक्ति से हुई। सुप्रसिद्ध स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, राष्ट्र के नवनिर्माण की शतसूत्री योजना के सूत्रधार एवं आर्ष ग्रन्थों सहित प्रायः 3200 पुस्तकों के लेखक आचार्य श्री ने गायत्री तपोभूमि मथुरा, जो उनकी कार्यभूमि थी, छोड़कर हिमालय तप हेतु प्रस्थान किया। एक वर्ष के उपरान्त सप्तसरोवर क्षेत्र में शांतिकुंज के रूप में भारतीय संस्कृति की समस्त ऋषि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परम्पराओं की सर्वतोमुखी शिक्षण करने वाली धर्मतंत्र से लोकमानस को बदल देने वाली एक विश्वविद्यालय स्तर की इस संस्था को गायत्री परिवार के प्रमुख संचालन केन्द्र के रूप में स्थापित किया।

प्रायः साठ एकड़ से भी अधिक फैले इस आश्रम तीर्थ में बहुमुखी प्रवृत्तियों का सम्मिश्रण है। जहां जीवन जीने की कला के रूप में संजीवनी विद्या का नियमित एक माह के युग शिल्पी प्रशिक्षण द्वारा लोकसेवी कार्यकर्त्ताओं, युग पुरोहितों का उत्पादन भी किया जाता है। ये कार्यकर्त्ता साक्षरता विस्तार, हरीतिमा संवर्द्धन, गृह उद्योग–सहकारिता द्वारा गरीबी उन्मूलन से लेकर समग्र स्वास्थ्य संरक्षण तथा धर्मतंत्र से लोकशिक्षण की प्रक्रिया का प्रशिक्षण लेकर गांव–गांव अलख जगाते हैं व जन–जन की धर्मचेतना को जगाते हैं। तम्बाकू, शराब जैसी दुष्प्रवृत्तियों को समाज से मिटाने के लिए यज्ञ के माध्यम से देवदक्षिणा (बुराइयों का परित्याग) जैसे प्रयोग चलते हैं। प्रायः पांच करोड़ से अधिक व्यक्तियों को दुर्व्यसनों से मुक्त कर उनके घरों को स्वर्ग बनाने में इस संस्था को सफलता मिली है। आदर्श विवाह आंदोलन द्वारा दहेज व अपव्यय जैसी कुरीति से लड़कर इस मिशन ने डेढ़ लाख से अधिक आदर्श विवाह मिशन के स्थापना काल (1926 में अखण्ड दीप प्रज्ज्वलन) से अब तक कराये हैं, यह अपने आप में एक कीर्तिमान् है।

समाज के नवनिर्माण की प्रवृत्तियों के साथ–साथ गायत्री महाशक्ति की साधना एवं यज्ञ का तत्वदर्शन घर–घर फैलाने का शिक्षण इस संस्था के कार्यों की मूल धुरी है। शांतिकुंज आने के बाद युगऋषि ने 24 कुमारिकाओं के साथ अखण्ड दीपक के समक्ष 240 करोड़ गायत्री जप का अनुष्ठान सम्पन्न किया, जो अब यहां रहने वाले साधकों व निरन्तर आने वाले आगन्तुकों द्वारा नियमित रूप से वर्षभर में सम्पन्न किया जाता है। इस प्रकार यह अध्यात्म ऊर्जा से युक्त एक ऐसा सिद्धपीठ है, जहां आकर पवित्र मन से ध्यान करने वालों की मनोकामनाएँ स्वतः पूर्ण हो जाती हैं।

शांतिकुंज प्रतिभा–परिष्कार की एक अद्भुत प्रयोगशाला है, जहां समाज में प्रसुप्त पड़ी प्रतिभा को झकझोरने, उनकी सामर्थ्य को जगाने के प्रयोग निरन्तर चलते रहते है। इसके पांच माध्यम हैं – पहला साहित्य, जिसमें प्रमुख है 1937 से अनवरत प्रकाशित हो रही मासिक आध्यात्मिक पत्रिका 'अखण्ड ज्योति'। यह पूज्य गुरुदेव के प्राण–चेतना की संवाहक है। इसमें प्रकाशित लेख सोतों में–मूर्छितों में भी प्राण फूंक देते हैं। जीवन जीने की कला का शिक्षण, साधनात्मक उपचारों द्वारा आत्मबल संवर्द्धन का प्रशिक्षण तथा विज्ञान और अध्यात्म का समन्वयात्मक प्रतिपादन प्रस्तुत करने वाली यह पत्रिका साहित्य क्षेत्र में अनूठी है। बिना किसी विज्ञापन के मात्र लागत मूल्य पर प्रकाशित इस पत्रिका की ग्राह संख्या हिन्दी,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गुजराती, उड़िया, बंगला, तमिल, तेलगू, मलयाली, कन्नड़, अंग्रेजी व मराठी भाषाओं में 15 लाख से अधिक है। एक पत्रिका 10 व्यक्तियों द्वारा पढ़ी जाती है। इस प्रकार यह चिन्तन प्रायः एक करोड़ व्यक्तियों तक पहुंचता है। इसके अतिरिक्त 'युग निर्माण योजना' मासिक, गायत्री तपोभूमि मथुरा से परिवार एवं समाज निर्माण सम्बंधी मार्गदर्शन हेतु 1963 से सतत प्रकाशित की जा रही है। व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र एवं युग निर्माण सम्बंधी चिन्तन विचारों से भावनात्मक परिष्कार, वैज्ञानिक अध्यात्मवाद एवं व्यक्तित्व के सर्वाङ्पूर्ण उन्नयन जैसी विधाओं पर युगऋषि द्वारा लिखे साहित्य तीन हजार से अधिक छोटी–बड़ी पुस्तिकाओं के रूप में उपलब्ध है। इस पूरे साहित्य को 'पं. श्रीराम शर्मा आचार्य वाङ्मय' के रूप में विश्वकोश आकार के सत्तर (कुल 108) खण्डों में प्रकाशित किया गया है। किसी भी एक व्यक्ति द्वारा संभवत+ इतना अधिक साहित्य विश्व में अभी तक नहीं लिखा गया। समस्त आर्षग्रन्थों का सरल हिन्दी भाष्य आचार्य श्री द्वारा किया गया है। वेदों व उपनिषदों के विज्ञानसम्मत संस्करणों को अभी–अभी पुनः प्रकाशित किया गया है। कथानक शैली द्वारा लोकशिक्षण हेतु प्रज्ञापुराण के चार खण्ड जीवन का व्यावहारिक मार्गदर्शन हेतु प्रस्तुत करने के लिए पूज्य गुरुदेव द्वारा लिखे गए हैं।

प्रतिभा परिष्कार का दूसरा माध्यम है वाणी, जिसके माध्यम से शांतिकुंज में तपस्वी मनीषियों का प्रशिक्षण कर उन्हें उद्बोधन एवं वर्कशॉप–सेमीनार आदि के लिए देश भर में भेजा जाता है। विभिन्न विषयों पर तर्क सम्मत प्रतिपादन प्रस्तुत कर वे विचार क्रान्ति अभियान में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। ऐसे प्रायः एक लाख आंशिक समयदानी यहीं प्रशिक्षित किये गये हैं जो स्थान–स्थान पर यहां से भेजे जाते रहे। पौरोहित्य द्वारा संस्कार सम्पन्न कराके धर्मतंत्र के प्रगतिशील–परिष्कृत प्रयोगों के माध्यम से इन युग प्रवक्ताओं ने भारतीय संस्कृति को अक्षुण्ण बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। शांतिकुंज में निवास करने वाले कार्यकर्त्ताओं की संख्या समयदानियों सहित प्रायः बारह सौ से अधिक है, जो एकाकी या सपरिवार रहते हैं। इनमें से पांच सौ से अधिक उच्चस्तरीय शिक्षा प्राप्त प्रशिक्षक स्तर के विद्वान् हैं।

प्रतिभा परिष्कार का तीसरा माध्यम है – संगीत। संगीत के माध्यम से सोयी भाव–संवेदना को जगाकर लोकशिक्षण कर नारदीय परम्परा के अन्तर्गत जन–जन को नई दिशा देने का कार्य यहां के कार्यकर्त्ता सम्पन्न करते हैं। इसका प्रशिक्षण यहां अनवरत चलता रहता है। प्रायः 100 से अधिक प्रशिक्षक स्तर के प्रशिक्षित प्रवक्ता युगशिल्पियों को युगगायन की शैली सिखाते हैं। यही व्यक्ति घर–घर क्रान्ति गीतों, भक्ति गीतों, प्रेरणा गीतों द्वारा अलख जगाते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रतिभा परिष्कार का चौथा माध्यम है – व्यक्तित्व परिष्कार। इसके प्रशिक्षण सत्र जो सरकारी अधिकारियों से लेकर शिक्षक वर्ग के बुद्धिजीवी वर्ग के लिए नियमित रूप से शांतिकुंज में चलते रहते हैं। अभी तक 80 हजार से अधिक केन्द्रीय व प्रान्तीय सरकारों के अधिकारी यहां प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं।

प्रतिभा परिष्कार का अंतिम पांचवा माध्यम है – वीडियो फिल्म्स, टेलीविजन धारावाहिक, केबल टीबी, मल्टीमीडिया तथा नृत्य नाटिकाओं, एक्शन सांग, नुक्कड़ नाटकों द्वारा जन–जन का शिक्षण। लोकरंजन से लोकमंगल इस मिशन का एक प्रमुख कार्यक्रम है एवं इस माध्यम से करोड़ों व्यक्तियों तक पहुंचाने में इसे सफलता मिली है।

आयुर्वेद पर विज्ञानसम्मत अनुसंधान यहां की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। निष्णात चिकित्सक वनौषधियों पर शोध कर उनका विभिन्न रूपों में प्रयोग कर स्वस्थ जीवन शैली एवं पाश्चात्य औषधियों के दुष्प्रभावों से बचने का शिक्षण ही नहीं देते, बल्कि यहां किये गये प्रयोगों के निष्कर्षों के आधार पर निःशुल्क परामर्श भी देते हैं। 250 जड़ी बूटियों के चूर्ण तथा चाय का विकल्प 'प्रज्ञापेय' यहां लागत मूल्य पर उपलब्ध है। इस वैकल्पिक पेय ने सारे विश्व में क्रान्ति की है।

सभी प्रकार की औषधीय वनस्पतियों की एक विलक्षण प्रदर्शनी हरीतिमा देवालय के रूप में हिमालय के समीप स्थापित है। हिमालय की एक विराट् प्रतिमा परम पूज्य गुरुदेव की स्मृति में परम वंदनीया माताजी के निर्देशानुसार विनिर्मित की गयी है। प्रायः साठ फुट चौड़ी, तीस फुट मोटी व पन्द्रह फुट ऊँची प्रतिमा के समक्ष परिजन सतत ध्यान करते हैं। विभिन्न चोटियों, तीर्थ स्थलों का दर्शन करने व देव संस्कृति पर बनाये गये मल्टीमीडिया दर्शन को देखकर कृत–कृत्य होकर जाते हैं।

हर जाति, लिंग, भाषा, प्रान्त, सम्प्रदाय व राजनैतिक–सामाजिक वर्गों के व्यक्ति यहां आते हैं व प्रेरणा–संदेश लेकर जाते हैं। यह एकमात्र ऐसी संस्था है, जहां किसी का धर्म, संप्रदाय या जाति नहीं पूछी जाती। जनजाति, आदिवासी वर्गों व दलित वर्ग से लेकर हर धर्म सम्प्रदाय के व्यक्ति यहां आते हैं एवं अप्रतिम शांति पाते हैं। राष्ट्र के प्रायः सभी प्रधानमंत्री सभी दलों के नेता, मुस्लिम व अन्य संप्रदायों के नेता यहां आकर अपनी प्रगति के लिए मार्गदर्शन प्राप्त करते रहे हैं।

यहां पर रहने, भोजन, बिजली, पानी आदि का कोई शुल्क नहीं लिया जाता। प्रायः यहां पाच हजार से अधिक व्यक्ति निःशुल्क सात्विक पद्धति से बना भोग प्रसाद यहां के विशाल भोजनालय में प्राप्त करते हैं। श्रद्धा से वे जो कुछ दे जाते हैं वह स्वीकार कर उन्हें उसकी रसीद दे दी जाती है। मुट्ठी फण्ड पर चलने वाली इस संस्था में साधक स्तर से जुड़े हुए व्यक्ति नियमित 20 पैसे, एक रुपये अथवा एक दिन की आजीविका एवं अपने समय का एक घंटा प्रतिदिन देते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हैं, अपने आप में विश्व का यह एक अभूतपूर्व संगठन है। कोई करोड़पति स्तर का व्यक्ति इससे न जुड़ा होने पर भी प्रायः 12 करोड़ व्यक्ति इससे नैष्ठिक स्तर पर जुड़े हैं एवं श्रद्धा–भाव से ऋषियुग्म के लिए पुरुषार्थ करते रहते हैं।

राष्ट्र का ग्रामीण स्तर पर उत्थान हो, इसके लिए गौ केन्द्रित ग्रामीण अर्थव्यवस्थाएं एवं तत्संबंधी स्वावलम्बन प्रधान गृहोद्योगों का शिक्षण यहां नियमित रूप से चलता है। ग्राम्य चिकित्सा सेवा योजना के अन्तर्गत वैकल्पिक चिकित्सा प्रणाली एवं आयुर्वेद के 'नंगे पांव चिकित्सक' वाला प्रशिक्षण राष्ट्र की एक बहुत बड़ी आवश्यकता को पूरा कर रहा है। राष्ट्रीय जलागम विकास कार्यक्रम एवं स्वयं सहायता बचत समूह योजना के माध्यम से जल व रज का संरक्षण कर हरीतिमा संवर्धन–पर्यावरण संरक्षण एवं स्वावलम्बन का प्रशिक्षण गांव–गांव में फैली शाखाएं केन्द्रीय मार्गदर्शन तंत्र के अधीन करती हैं।

शांतिकुंज : एक दृष्टि में

गंगा की गोद, हिमालय की छाया में विनिर्मित शान्तिकुंज आश्रम हरिद्वार ऋषिकेश मार्ग पर स्थित है, जो युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं माता भगवती देवी शर्मा की प्रचण्ड तप साधना के संस्कारों से अनुप्राणित है। यह जाग्रत तीर्थ लाखों करोड़ों गायत्री साधकों का गुरुद्वारा है।

शांतिकुंज एक आध्यात्मिक सैनेटोरियम के रूप में विकसित किया गया है, जहां शरीर, मन एवं अन्तःकरण को स्वस्थ, समुन्नत बनाने के लिए अनुकूल वातावरण, मार्गदर्शन एवं शक्ति अनुदानों का लाभ उठाया जा सकता है।

जहां गायत्री माता का भव्य मंदिर तथा सप्तऋषियों की प्रतिमाओं की स्थापना है। गायत्री साधक यहां के साधनात्मक उपचार क्रम में भाग लेकर नवीन प्रेरणाएं तथा दिव्य ऊर्जा के अनुदान पाकर अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति में सहायता पाते हैं।

सन 1926 से प्रज्ज्वलित अखण्ड दीप जहां स्थापित है, जिसके सानिध्य में पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने कठोर तपश्चर्या करके इसे विशाल गायत्री परिवर की सारी महत्वपूर्ण उपलब्धियों का मूल स्रोत बनाया। इसके सानिध्य में 2400 करोड़ से अधिक गायत्री जप सम्पन्न हो चुके हैं। इसके दर्शन मात्र से दिव्य प्रेरणा एवं शक्ति संचार का लाभ सभी को मिलता है।

आश्रम की नौ कुण्डीय यज्ञशाला में नित्य नियमित रूप से हजारों साधक गायत्री यज्ञ सम्पन्न करते हैं। भारतीय संस्कृति के अन्तर्गत सभी संस्कार जैसे अन्नप्राशन, मुण्डन, विद्यारंभ, यज्ञोपवीत, विवाह तथा श्राद्ध कर्म आदि यहां निःशुल्क सम्पन्न कराए जाते हैं, इनके व्यावहारिक तत्वदर्शन से प्रभावित होकर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यहां नित्य बड़ी संख्या में संस्कारों के लिए लोग आते हैं।

शान्तिकुंज के भव्य जड़ी–बूटी उद्यान में 300 से अधिक प्रकार की दुर्लभ–सर्वोपयोगी वनौषधियां लगायी गयी हैं। विश्व भर में आयुर्वेद कॉलेजों के शिक्षार्थी तथा वैज्ञानिक जहां का वनौषधि उद्यान देखने आते हैं।

सभी आगन्तुकों की शारीरिक–मानसिक जांच पड़ताल निष्णात चिकित्सकों द्वारा यहां निःशुल्क की जाती है तथा उपचार परामर्श भी दिया जाता है।

जड़ी–बूटियों द्वारा जन–सामान्य के लिए अत्यंत सस्ती, सुगम एवं प्रतिक्रियाहीन चिकित्सा पद्धति के विस्तार–विकास के लिए यहाँ एक केन्द्र स्थापित है। बारह वनोषधियों के सम्मिलित योग से यहां बनी प्रज्ञापेय का प्रयोग चाय के स्थान पर बड़ी मात्रा में देश भर में हो रहा है।

ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान में अध्यात्म विज्ञान के महत्वपूर्ण सूत्रों को भौतिक विज्ञान के आधार पर शोध–प्रयोग द्वारा पुनः स्थापित करने का कार्य किया जा रहा है। मंत्रशक्ति, ध्यान, प्राणायाम, यज्ञ आदि सभी विधाओं के विज्ञान सम्मत प्रतिपादनों से लाखों की संख्या में विचारशीलों की मान्यताएं एवं आस्थाएं वैज्ञानिक अध्यात्मवाद से जुड़ी हैं। विश्वभर के विचारशील इसे देखने आते तथा प्रभावित होकर जाते हैं।

यहां का पत्राचार विद्यालय भारत एवं विश्व भर में बैठे जिज्ञासुओं, प्रज्ञा परिजनों को दैनन्दिन जीवन की उलझनों को सुलझाने का मार्गदर्शन देता रहता है। यहाँ के विशाल भोजनालय में प्रतिदिन प्रायः दो हजार से अधिक आकन्तुक श्रद्धालु तथा अनुमति लेकर आये शिक्षार्थी बिना मूल्य भोजन प्रसाद पाते हैं।

गरीबी तथा बेकारी उन्मूलन की आर्थिक क्रान्ति के अन्तर्गत औसत भारतीय स्तर की आजीविका उपार्जन हेु यहां एक स्वावलम्बन विद्यालय विनिर्मित है। जिसमें छोटे कुटीर उद्योगों से उपार्जन का निःशुल्क प्रशिक्षण दिया जाता है।

सौर ऊर्जा की उपलब्धियों पर आधारित तथा पवन ऊर्जा से चालित उपकरण यहां स्थापित हैं, जिनसे वैकल्पिक ऊर्जा का ग्रामीण वर्गों को शिक्षण दिया जाता है।

जन–सामान्य में जन–जागरण तथा लोक–शिक्षण के उद्देश्यों से यहां के आधुनिकतम वीडियो स्टूडियो में नाटक, गीत, एक्शनसांग तथा छोटी–छोटी टेलीफिल्में तैयार कर प्रज्ञा वाहनों के माध्यम से बड़े पर्दे पर पहुँचायी जाती है।

अध्यात्म के गूढ़ विवेचनों की सरल व्याख्या कर उन्हें जीवन में कैसे उतारा जाय, अपने चिन्तन, चरित्र एवं व्यवहार में उत्कृष्टता लाकर व्यक्तित्व को कैसे प्रभावकारी बनाया जाय, इसका सतत प्रशिक्षण यहां के नौ दिवसीय संजीवनी साधना सत्रों में चलता है, जो यहां वर्ष भर संपादित होते रहते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लोक–सेवियों का सर्वांगपूर्ण शिक्षण करके धर्मतंत्र से लोकमानस का परिष्कार यहाँ का एक विशिष्ट कार्यक्रम है। एक मास के सत्रों में प्रायः हजारों भावनाशील कार्यकर्त्ता नैतिक, बौद्धिक तथा सामाजिक क्रान्ति का परिपूर्ण शिक्षण लेने प्रतिमास आते हैं। शिक्षण, निवास एवं भोजन की व्यवस्था निःशुल्क है।

केन्द्र सरकार तथा राज्य सरकारों के विभिन्न पदाधिकारियों को यहां नैतिक, बौद्धिक तथा व्यक्तित्व परिष्कार का शिक्षण पाँच दिवसीय सत्रों में दिया जाता है। अब तक बीस हजार से अधिक अधिकारी इन मूल्य परम शिक्षणों से लाभ पा चुके हैं।

यहां से 'अखण्ड ज्योति' एवं 'युग निर्माण योजना' नामक हिन्दी मासिक तथा युगशक्ति गायत्री गुजराती, मराठी, उड़िया, बंगला, तमिल, अंग्रेजी एवं तेलगू भाषाओं में तथा प्रज्ञा अभियान पाक्षिक हिन्दी व गुजराती में प्रकाशित होते हैं। भारत और विश्व में इन सभी पत्रिकाओं के पाठकों की संख्या लगभग पच्चीस लाख है।

गायत्री परिवार के संस्थापक परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा गायत्री महाविद्या, जीवन जीने की कला, व्यक्ति, परिवार तथा समाज निर्माण जैसे विषयों पर तीन हजार से अधिक पुस्तकें लिखी गयी हैं, जिनका प्रकाशन गायत्री तपोभूमि एवं अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा द्वारा हिन्दी एवं अन्यान्य दस भाषाओं में किया गया है। इस युग साहित्य ने करोड़ों व्यक्तियों को निरन्तर प्रभावित–परिवर्तित किया है। गायत्री महाविज्ञान तीन भागों में, प्रज्ञा पुराण चार खण्डों में, समग्र आर्य साहित्य तथा वैज्ञानिक अध्यात्मवाद पर लिखा गया साहित्य विशेष रूप से लोकप्रिय हुआ है। वेदों के नवीनतम वैज्ञानिक रहस्यों को उद्घाटित करने वाले भाष्य विद्वज्जनों के लिए प्रेरणादायी सिद्ध हो रहे हैं।

परम पू. गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी को 1964 में सम्पन्न सर्वधर्म सभा में तत्कालीन पंजाब के गृहमंत्री श्री मोहनलाल शर्मा द्वारा 'लाईफ ऑफ इण्डिया' की उपाधि, 1976 में उ.प्र. के तत्कालीन राज्यपाल माननीय डॉ. एम. चेन्नारेड्डी द्वारा संस्कृत ऐकेडमी की सम्मानास्पद सदस्यता, 29 जनवरी 88 को उत्तरप्रदेश शासन द्वारा ताम्रपत्र एवं स्वाधीनता संग्राम सेनानी सम्मान पत्र जैसे सम्मान दिये गये।

27 जून 1991 को तत्कालीन उपराष्ट्रपति महामहिम डॉ. शंकरदयाल शर्मा जी द्वारा परम पूज्य गुरुदेव के सम्मान में एक रुपये का रंगीन डाक टिकट जारी किया गया। महामहिम राष्ट्रपति महोदय ने अपनी पुस्तक 'देशमणि' में 24 महापुरुषों को स्थान दिया है। उसमें केवल भारत–रत्न श्री लाल बहादुर शास्त्री तथा पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के सम्बंध में दो–दो लेख दिए हैं।

कृषि मंत्रालय भारत सरकार द्वारा शांतिकुंज को प्राकृतिक विपत्ति निवारण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सलाहकार परिषद की सदस्यता प्रदान की गई है।

इस आश्रम में समय–समय पर माननीय श्री एम. चेन्नारेड्डी, श्री सत्यनारायण रेड्डी (दोनों तत्कालीन राज्यपाल), श्री अर्जुन सिंह (पूर्व मानव संसाधन मंत्री), श्री विद्याचरण शुक्ल (संसदीय कार्य मंत्री), श्री श्रीपति मिश्र (पूर्व मुख्यमंत्री उ.प्र.), श्री दिग्विजय सिंह (पूर्व मुख्यमंत्री म.प्र.) श्री मुलायम सिंह (पूर्व मुख्यमंत्री उ.प्र.), श्री भैरोसिंह शेखावत (पूर्व मुख्यमंत्री राजस्थान), श्री अमर सिंह चौधरी (पूर्व मुख्यमंत्री गुजरात), श्रीमती मोहसिना किदवई, श्री इब्राहिम कुरैशी, मेजर जनरल कांति टेलर, श्री मुरली मनोहर जोशी, पूर्व सर्वोच्च न्यायाधीश श्री ललित मोहन शर्मा, श्री चंद्रशेखर सिंह (पू. प्रधानमंत्री) तथा प्रो. राजेन्द्र सिंह (रज्जू भैया) आदि अनेक महानुभाव पधार चुके हैं। इन सबने इस आश्रम की भूरि–भूरि प्रशंसा की है।

शांतिकुंज के प्रयत्नों से देश भर में 4000 से अधिक भव्य प्रज्ञामंदिर बने हैं। इनके माध्यम से मन–जन में आस्था–विस्तार तथा नैतिक पुनरुत्थान के कार्यक्रम दस लाख लोकसेवी कार्यकर्ताओं के द्वारा चलाये जाते हैं।

जन–जन में देवसंस्कृति का वंवर्धन तथा आस्था–संवर्धन हेतु शान्तिकुंज से प्रज्ञा टोलियाँ, जीप, कार एवं साइकिलों से देश भर तथा विदेशों में भेजी जाती हैं। स्थान–स्थान पर यज्ञ, दीपयज्ञ, संस्कार तथा साधना–सत्र आयोजित कर ये टोलियाँ लोकशिक्षण तथा ज्ञानालोक वितरण करती हैं।

बंदी जीवन में सुधार के लिए गायत्री परिवार द्वारा देशभर में कारागरों में कैदियों के जीवन में सुधार के लिए विभिन्न कार्यक्रम आन्दालन के रूप में चलाये जा रहे हैं। तिहाड़ जेल दिल्ली, लखनऊ, फतेहपुर, सतना, रीवा, सीधी, उज्जैन, पटना, सासाराम, भुवनेश्वर, काँगड़ा के कारागारों में जेल अधीक्षकों के सहयोग से चलाये जा रहे कार्यक्रमों में अभूतपूर्व सफलता मिली है।

शान्तिकुंज के तत्वावधान में चल रही यज्ञ श्रृंखला न केवल पर्यावरण, अपितु अन्य वैज्ञानिक प्रयोगों में भी इन यज्ञों को बहुत महत्वपूर्ण माना जा रही है। इनवायरनमेंटल एण्ड टेक्निकल कंसेल्टेण्ट्स ने उत्तरप्रदेश प्रदूषण बोर्ड की सहायता से यज्ञ के पर्यावरण पर प्रभाव का अनुसंधान करके बताया कि यज्ञ से हवा में सल्फर–डाय–आक्साइड की मात्रा 3.036 माइक्रोग्राम से घटकर 0.8 माइक्रम से घटकर 1.02 माइक्रोग्राम हो गयी। यज्ञ से पूर्व 100 मिली. पानी में 4500 बैक्टीरिया थे, जो यज्ञ के बाद घटकर केवल 1200 ही रह गये। अभी थोड़े से आँकड़े प्रस्तुत किये जा रहे हैं, पर ग्रा.वि.वि. चित्रकूट तथा छिंदवाड़ा (म.प्र.) के वैज्ञानिक इस दिशा में बहुत महत्वपूर्ण अनुसंधान कर रहे हैं। यज्ञ के द्वारा पर्यावरण पर पड़ने वाले इन संतोषजनक परिणामों को देखकर शांतिकुंज द्वारा भारत सरकार से सम्पर्क किया जा रहा है, जिससे कि संयुक्त राष्ट्रसंघ के माध्यम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

से यज्ञोपचार प्रक्रिया (यज्ञोपैथी) पर विश्वभर में होने वाले अनुसंधान कार्यों को प्रोत्साहित तथा विस्तारित किया जा सके।

समूचे राष्ट्र की कुण्डलिनी जागरण के लिए परम पूज्य गुरुदेव ने युग संधि महापुरश्चरण की घोषणा की थी, इसके अंतर्गत लगभग चौबीस लाख व्यक्ति आज भी प्रतिदिन लगभग 240 करोड़ गायत्री मंत्र का महानुष्ठान कर रहे हैं।

स्वास्थ्य सेवाओं की दृष्टि से हमारे गाँव नितान्त उपेक्षित है। इस उपेक्षा के निवारण के लिए गायत्री परिवार द्वारा सारे देश में चल–ग्राम्य–चिकित्सा सेवा प्रारम्भ की गई है। प्रारम्भ आगरा–आँवलखेड़ा से किया गया है, पर सारे देश में इसका विस्तार किया जा रहा है। न केवल स्वास्थ्य परीक्षण, अपितु निःशुल्क औषधियाँ देने की पूरी व्यवस्था की गई है। ग्रामवासियों को बौद्धिक शिक्षण भी दिया जाता है।

दैवी सत्ता द्वारा परोक्ष रूप में संचालित इस विराट् मिशन की सारी व्यवस्था लाखों व्यक्तियों द्वारा प्रतिदिन एक मुट्ठी अनाज एवं एक रुपये की राशि से ही चल रही है। निष्ठावान् परिजन एक से चार घण्टे नित्य समय, एक–एक दिन की आजीविका इस पुण्य प्रयोजन के लिए देते हैं। लगभग हजार उच्च शिक्षित कार्यकर्ता यहां स्थायी रूप से सपरिवार निवास करते हैं। निर्वाह हेतु वे औसत भारतीय स्तर का भत्ता–मात्र संस्था से लेते हैं।

अनुदान, उपादान –

शांतिकुंज युग ऋषि तपोनिष्ठ वेदमूर्ति पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं शक्ति स्वरूपा माता भगवती देवी के तप से अनुप्राणित, आध्यात्मिक चेतना का उद्गम केन्द्र है, मानव के नव निर्माण की एक प्रयोगशाला है तथा एक ऐसा स्थान है, जहां राष्ट्र के अभिनव निर्माण के प्रयोग निरन्तर चलते रहते हैं। इस प्रगतिशील आश्रम में प्राचीन काल के ऋषियों के गुरुकुलों, आरण्यकों जैसे अनुशासन पाले जाते हैं। यहां नियमित रूप से चलने वाले संजीवनी साधना सत्रों, 5 दिवसीय परामर्श सत्रों, विशेष परामर्श हेतु पूर्व सूचना देकर या स्वीकृति लेकर आये स्वस्थ व्यक्तियों को ही ठहराया जाता है। इस तीर्थस्थली में ठहरने वालों के लिए निध ारित नियमों का पालन अनिवार्य है। इन उद्देश्यों की प्राप्ति में यहाँ जाति, वंश, लिंग, धर्म, सम्प्रदाय का किसी तरह कोई भेदभाव नहीं है। यहाँ के वातावरण को इस तरह विनिर्मित किया गया है, जिससे कण–कण में प्राण ऊर्जा, साधना की प्रचंड ऊष्मा विद्यमान है। यहाँ का प्रशिक्षण, यहाँ की परम्परायें इतनी प्रखर हैं कि उनमें भाग लेने वाला कोई भी व्यक्ति कोरा नहीं जा सकता है। सामान्य व्यक्ति भी यहां के असामान्य आत्मिक शक्ति और मनोबल लेकर लौटते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तीर्थ निवास को तीर्थ सेवन कहा गया है। अर्थात् यहां की प्रवृत्तियों को आत्मसात् करने से ही वह लाभ मिलते हैं। उसके लिए यहाँ के दैनिक कार्यक्रम और विशिष्ट क्रिया–कलापों की पूरी जानकारी आवश्यक है।

समय विभाजन चक्र

क्र.	दैनिक कार्यक्रम	अप्रैल से सित.	अक्टू. से मार्च
1.	जागरण, प्रार्थना, दैनिक कार्य, उपासना आदि प्रातः जागरण	3.30	4.00
2.	प्रातः आरती	4.00	4.30
3.	प्रातः ध्यान, सामूहिक जप	4.30	5.00
4.	अखण्ड दीप दर्शन, ऋषि युग्म चरण पादुकाओं को प्रणाम	5.00	5.30
5.	सामूहिक यज्ञ एवं समस्त संस्कार	5.45	6.30
6.	प्रातः सत्संग प्रवचन	7.45	8.00
7.	भोजन–प्रसाद	9.30	9.30
8.	मध्यान्ह कक्षा, गोष्ठी	12.00	12.00
9.	अखण्ड दीपक एवं गुरुसत्ता की चरण पादुकाओं को नमन, भेंट परामर्श	12.30 से 3.30	12.30 से 3.30
10.	ज्योति अवतरण साधना	1.30	1.30
11.	सामूहिक श्रमदान	3.30	3.00
12.	सायंकालीन भोजन	4.30	4.00
13.	सायं आरती	5.00	5.00
14.	सायंकालीन नादयोग ध्यान साधना	6.00	6.00
15.	संकीर्तन एवं कथा अथवा वीडियो	6.15	6.15
16.	रात्रि विश्राम	9.00	8.00

कोई भी संस्कार, दीक्षा, देवस्थापना एवं तीर्थ श्राद्ध करना हो, तो एक दिन पूर्व संस्कार प्रकोष्ठ में नाम लिखवाया जाता है और जो समय व स्थान बताया जाये, वहां समय पर उपस्थित रहा जाना अनिवार्य है।

दीक्षा, विवाह संस्कार के लिए आवश्यक परामर्श संस्कार प्रकोष्ठ में तथा पूर्णाहुति के लिए सुपाड़ी, गोले जनरल स्टोर से प्राप्त किया जाता है।

ओढ़ने बिछाने के बिस्तर, झाड़ू, बल्ब, ताला, बाल्टी आदि दैनिक उपयोग की वस्तुएँ गद्दा स्टोर से मिलती हैं।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ध्यान साधना, कर्मकाण्ड प्रशिक्षण, गीत संगीत, पूज्य गुरुदेव–वन्दनीया माताजी के प्रवचनों के आडियो–वीडियो कैसेट कैसेट स्टाल पर मिलते हैं।

साहित्य स्टाल त्रिपदा भवन के सामने हैं। वहां से मिशन की पुस्तकें खरीदी जा सकती हैं। आश्रम की सभी पत्र–पत्रिकाओं 1. अखण्ड ज्योति, 2. युग निर्माण योजना, 3. युग शक्ति गायत्री गुजराती, 4. मराठी, 5. उड़िया, 6. तमिल, 7. तेलगू, 8. बंगला तथा 9. पाक्षिक प्रज्ञा अभियान की सदस्यता के लिए स्वागत कक्ष, साहित्य स्टाल, प्रज्ञा–1 के समीप, लेखा कार्यालय के समीप तथा ब्रह्मवर्चस इन सभी स्थानों में चन्दा जमा किया जा सकता है। जमा राशि की रसीद अवश्य लें।

अनुदान–चरण पादुकाओं पर चढ़ाकर नीचे लेखा कार्यालय से रसीदें लें, यदि रुकने का समय न हो, तो अनुदान लेखा कार्यालय में जमा करके रसीद लें। मध्यान्ह चरण पादुकाओं के दर्शन के पूर्व प्रतीक्षालय में मिशन की योजनाओं व प्रणेताओं के जीवन दर्शन पर वीडियो सतत चलता रहता है। आश्रम परिसर घूम लेने के बाद वहाँ बैठकर सभी उसे बारी–बारी देख सकते हैं। यहाँ निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण का प्रबंध है, उसके लिए अपरान्ह 1 से 3.30 बजे तक डिस्पेंसरी के ऊपर स्वास्थ्य परीक्षण कक्ष में सम्पर्क करें। आयुर्वेदिक औषधियाँ जड़ी–बूटी स्टॉल पर मिलती हैं। शिविरों की स्वीकृति के लिए स्वागत कक्ष के ऊपर ब्लाक में सम्पर्क करें, ऑफिस कार्यक्रम के सन्दर्भ में प्रतीक्षालय के सामने संगठन कार्यालय से सम्पर्क करें। समयदान के सम्बन्ध में प्रतीक्षालय के पास समयदान कार्यालय से सम्पर्क करें। पोस्ट ऑफिस, पंजाब नेशनल बैंक एवं टेलीफोन बूथ एवं जनरल स्टोर की सुविधाएं आश्रम परिसर में ही हैं।

परमपावन तीर्थ में आवास सम्बंधी अनुशासन, अनुबंध –

शान्तिकुंज एक परम तीर्थ स्थल है, जिसका उद्देश्य है विद्या विस्तार और प्रतिभा परिष्कार द्वारा राष्ट्र को सशक्त, समर्थ और जीवन्त बनाना। आश्रम परिसर की पवित्रता अक्षुण्ण बनी रहे, उस निमित्त निम्न अनुशासन बनाये रखने का विनम्र अनुरोध किया जाता है।

यहाँ नशीली वस्तुओं का सेवन वर्जित है। परिसर के अन्दर बीड़ी, सिगरेट न पियें, पान न खायें। चीखना, चिल्लाना, शोर मचाना, जोर–जोर से बातें करना, सीटी बजाना सर्वथा वर्जित है। प्रातः काल सोकर उठने से लेकर यज्ञ पूर्णाहुति तक यथा सम्भव मौन व्रत पालन करें। बच्चे शोर न मचायें यह ध्यान रखें।

वेशभूषा यथा संभव भारतीय और सभ्य शालीनों जैसी रखें, भड़कीले वस्त्र कदापि न पहनें। पति–पत्नी हैं, तो भी हाथ पकड़ कर न चलें, अशोभनीय हरकतें न करें। शौचालयों के उपयोग के बाद उन्हें पानी डालकर स्वच्छ अवश्य करें, नल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खुले न छोड़ें। परायी बहन–बेटियों से कृपया वार्तालाप न करें, बहुत आवश्यक हो, तो सिर नीचा रखकर बात करें।

बिजली का उपयोग जितना आवश्यक हो, उतना करें, अनावश्यक बल्ब न जलने दें। अपने वाहन कृपया पार्किंग स्थल में ही खड़े करें, सड़कें गन्दी न करें। अपने आवास आदि की स्वच्छता पर ध्यान दें। कूड़ा–कचरा कूड़ा पात्र में ही डालें, जहाँ–तहाँ न फैलाएं। जहाँ–तहाँ थूक कर अपवित्रता न पैदा करें।

भोजनालय में प्रवेश करते समय निरर्थक वार्तालाप अन्न देवता का अपमान समझा जाता है। बर्तन स्वच्छ करके जहाँ से लें, वहीं रखें। खिड़कियों से नीचे सामान न फेंकें। आश्रम से प्राप्त वस्तुएँ यथा स्थान लौटाना न भूलें।

शान्तिकुंज आध्यात्मिक संस्कारशाला है, यहाँ के सभी धार्मिक क्रियाकलापों में भावनापूर्वक भाग लें। फूल न तोड़ें, पौधे न उखाड़ें, जड़ी–बूटियाँ न टोड़ें। विद्यार्थी अध्ययन के लिए पत्तियां संग्रह करना चाहें, तो पहले उपवन विभाग से सम्र्क करें।

आश्रम के प्रशिक्षण में आये प्रतिभागीगण कृपया भोजन नियत समय पर करें, पश्चात् आग्रह न करें। अपने समय की सुरक्षा का स्वयं ध्यान रखें। अपरिचित, अनजान व्यक्ति कमरे में हो तो उसकी सूचना तत्काल समयदान कार्यालय/स्वागत कक्ष में दें।

किसी भी जानकारी–मार्गदर्शन के लिए कृपया स्वागत कक्ष, जन सम्पर्क अथवा समयदान कार्यालय से सम्पर्क करें। असुविधा या शिकायत भी यहीं बतायें। महिलायें गन्दे कपड़े टट्टियों में न डालें, उससे वे रुक जाती हैं, उन्हें कूड़ादान में डालें। बाहर घूमने जायें, तो स्वागत कक्ष में जानकारी देकर जायें, ताकि आवश्यकता पड़ने पर ढूँढ़ना न पड़े। यथा समय लौटें, देर से आयें, तो भोजन बाहर से करके आ जायें। आश्रम में भोजन सायं 6.30 बजे तक ही चलता है।

प्रातःकाल प्रणाम, अखण्ड दीप दर्शन अथवा यज्ञादि पवित्र संस्कारों के समय शान्ति बनाये रखें, पंक्तिबद्ध रहें और नियत प्रतिबन्धों का पालन करें। भेंट का समय दोपहर 12.30 से 3.30 तक ही है। भेंट के समय झोले, अटैची उचित सामान ले जाना वर्जित है।

इस क्षेत्र में गंगा तेज बहाव, गहरे खड्डे आदि के कारण असुरक्षित है। स्नान करने न जाएँ, जाएँ तो किनारे बैठकर स्नान करें। यहां पर अक्सर दुर्घटनाएं हो जाती हैं। प्रवचन के समय बच्चे, वृद्ध मलियें और जिन्हें बीच में उठना हो, वे कृपया पिछली पंक्तियों में बैठें। परिचय पत्र कुरते या कमीज पर लगाये रखें, ताकि यहां के स्वयं सेवक अनावश्यक पूछताछ न करें।

अपना कीमती सामान तथा रुपये पैसे स्वागत कक्ष के पास अमानत कक्ष

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में जमा करा कर रसीद प्राप्त कर लें। वहीं से आवश्यकतानुसार लेते रहें।

इस आश्रम के उत्पादक श्रम कर सकने वाले, मिशन के क्रियाकलापों में तन्मय होकर काम करने वाले समाज सेवियों के लिए ही स्थायी निवास का प्रबंध है। जो कोई भी इस दृष्टि से रुकना चाहे, वे अपना दृष्टिकोण स्पष्ट कर पहले व्यवस्थापक मण्डल से चर्चा कर लें।

शांतिकुंज के विभाग –

गायत्री तीर्थ–शांतिकुंज 12.7 एकड़ के विस्तृत भू भाग में फैला है, जहाँ प्रशासनिक विभाग, लेखा विभाग, पत्राचार विभाग, विदेश विभाग, कम्प्यूटर विभाग, निर्माण विभाग, विद्युत विभाग, जल विभाग, दूर संचार विभाग, भोजनालय, रसोईघर, कैन्टीन, पाक निर्माणशाला, चिकित्सालय, जड़ी बूटी निर्माणशाला, औषधि विभाग, जन सम्पर्क विभाग, समाचार सम्प्रेषण विभाग, इलैक्ट्रानिक मीडिया विभाग, जलपान विभाग, उद्यान विभाग, जनरेटर कक्ष, प्रतीक्षालय, महत्वपूर्णाहुति विभाग, संस्कार विभाग, वेद विभाग, कर्मकाण्ड विभाग, सुरक्षा विभाग, परिवहन विभाग, स्वावलम्बन विद्यालय, जनरल स्टोर विभाग, फोटो फीचर, फोटोग्राफी विभाग, देवात्मा हिमालय, प्रदर्शनी विभाग, वनस्पति विभाग, सेन्ट्रल स्टोर, काष्ठ शिल्प विभाग, महिला मण्डल विभाग, प्रज्ञा मंडल विभाग, रचनात्मक प्रकोष्ठ, शिक्षण–प्रशिक्षण प्रकोष्ठ, स्वागत कक्ष, प्रेस विभाग, प्रज्ञा अभियान पाक्षिक भवन, शांतिकुंज न्यूज एण्ड फीचर सर्विस, साहित्य स्थल, उद्घोषणा कक्ष, अमानती सामान गृह, खोया पाया विभाग, संगीत विभाग, साहित्य विभाग, आदि ग्रंथ विभाग, पुस्तकालय, वाचनालय, शोध सुविधा केन्द्र, मार्गदर्शन विभाग, शांतिकुंज मीडिया, आडियो स्टूडियो, वीडियो स्टूडियो, डबिंग विभाग, शिविर विभाग, कार्यक्रम संपादन विभाग, स्टेशनरी विभाग, संपादकीय विभाग, आवासीय व्यवस्था विभाग, सत्र व्यवस्था विभाग, शिक्षा प्रशिक्षण विभाग, विद्या मंदिर, सत्संग भवन, स्वावलंबन प्रशिक्षण के अन्तर्गत सिलाई, कढ़ाई, बुनाई, स्क्रीन प्रिंटिंग, वॉल राइटिंग, बैनर बोर्ड पेन्टिंग लेमिनेशन, थर्मोकॉल सज्जा प्रशिक्षण, फोटोग्राफी–वीडियोग्राफी प्रशिक्षण, निदेशन, छायांकन, स्क्रिप्ट लेखन, जड़ी बूटी निर्माण, बेकरी, अगरबत्ती मोमबत्ती मसाला उद्योग, चरक, खड़िया, प्लास्टर ऑफ पेरिस आदि के प्रशिक्षण सहित 151 विभाग स्वतंत्र इकाई के रूप में कार्य कर रहे हैं।

धर्म मंच से लोक शिक्षण

शांतिकुंज हरिद्वार 'धर्म मंच से लोक शिक्षण' की एक अनुपम व अनूठी एकेडेमी है। आचार्य श्रीराम शर्मा चहारदीवारी में पठन–पाठन का कार्य करने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वालों को ही शिक्षक नहीं कहते बल्कि संस्कृति व धर्म (कर्तव्यपरायणता) का बोध कराने वाला व्यक्ति भी लोक शिक्षक की भूमिका निभाता है। अध्यापक (आचार्य) गणों ने हमेशा संस्कृति, धर्म व राष्ट्र की रक्षा तथा उनके निर्माण में पुरोहित बनकर अग्रगामी भूमिका निभायी है, इसका इतिहास साक्षी है। वर्तमान में उत्पन्न विकृतियों को दूरकर सुसंस्कारिता के वातावरण निर्माण में अध्यापक गण अपना दायित्व समझें, अपनी संस्कृति को समझें व समझाएँ, युग धर्म का पालन करें।

भारतीय संस्कृति अध्यात्म का पर्याय है। अध्यात्म अर्थात् जीवन जीने की कला, जिसे संस्कृति कहते हैं। हमारी भारतीय संस्कृति नहीं मात्र सभ्यता है, जो बाहरी जीवन को सुंदर व रहन–सहन के तरीके सिखाती है।

भारतीय संस्कृति में 'मातृ देवो भव, पितृ देवो भव, तथा आचार्य देवो भव' की मान्यता रही है। विदेशों में उनका उतना महत्त्व नहीं। वर्ष में एक बार फादर डे, टीचर डे मनाकर उनको याद किया जाता है, जबकि हमारे यहाँ हमेशा उन्हें आदर–सत्कार से देखा व माना जाता है।

पश्चिम की सभ्यता आज व्यक्ति, परिवार, समाज पर हावी है। पश्चिम की सभ्यता बाजारवाद का पर्याय है। इसके हावी होने से भारतीय संस्कृति पर विपरीत प्रभाव पड़ा है। यह अपनी 'भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा' इस ओर बढ़ाया गया कदम है। यह चार शब्दों में निहित भावों को प्रदर्शित करता है। भारतीय से तात्पर्य जिस संस्कृति का उद्भव, पोषण व प्रचलन भारत की पावन भूमि पर भारतीय ऋषियों, तत्ववेत्ताओं द्वारा किया गया, संस्कृति जो श्रेष्ठ व कल्याणकारी जीवन जीना सिखाती है, का ज्ञान होना आवश्यक है, उसे व्यवहार में कैस लाएँ? उसकी क्या विशेषताएँ हैं, क्या–क्या उपलब्धियाँ हैं, यह समझ आई या नहीं, उसका मूल्यांकन आत्मशोधन, आत्मनिर्माण व आत्मोन्नति के रूप में किया जाना ही परीक्षा है। यह परीक्षा भारतीय संस्कृति का भली–भाँति ज्ञान (जानकारी व समझ) कराने वाली शिक्षण व्यवस्था है।

आज संस्कृति नाचना, गाना मात्र से समझी जाती है जिसे संस्कृति नहीं अपसंस्कृति कहें, तो ज्यादा ठीक है। कल्चर अर्थात् जीवन जीने की पद्धति जिसमें जिसमें प्रत्यक्षवाद, उपभोक्तावाद का बोलबाला है, जिसने संस्कृतिक मूल्यों का अवमूल्यन किया है।

संस्कृति अर्थात् विद्या जो जीवन में मूल्यों की स्थापना करने का ज्ञान कराती है, विनम्रता, आध्यात्मिकता के गुणों का अंतस्थ होना ही संस्कृति है। ज्ञान का विस्तार अध्यापकों में हो और उनकी सहायता से विद्यार्थियों में विनम्रता, सदाशयता, साहस एवं विवेक जैसे गुण तथा चिंतन, चरित्र व व्यवहार में उत्कृष्टता आए, यही इस परीक्षा का उद्देश्य है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सद्‌गुणों की खेती करना ही भारतीय संस्कृति है। विचार क्रांति ऐसे आती है। विद्या अर्थात् विनम्रता का भाव। ज्ञान का अनुपान संवेदना के साथ अंदर जाएगा, तभा व्यक्ति महान बनेगा। ज्ञान ही संस्कृति है। ज्ञान पवित्र होता है जैसा गीता में कहा है– "नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते"। सबसे बड़ा ज्ञान है अपनी आत्मा अर्थात स्वयं को जानना, स्वयं का सुधार ही संसार की सबसे बड़ी सेवा। ज्ञान के अभाव में तनावग्रस्त जीवन है। व्यक्ति हानि से (आर्थिक–व्यावसायिक) परेशान है। ज्ञान (समझदारी) ही समस्त समस्याओं का हल है।

भोगवाद एवं विषम परिस्थितियों में भी नकारात्मक सोच से प्रभावित हुए बिना बच्चों को आध्यात्मिकता (आशा–विश्वास) की ओर बढ़ाना है, ताकि के तनाव, अवसाद व भटकाव से बचें अर्थात् अनुत्तीर्ण या कम अंक प्राप्त होने पर आत्महत्या जैसे कार्य न करें। इसका ध्यान शिक्षक व अभिभावकों को रखना है। उनके अंदर सोये अर्जुन को जगाना है। उन्हें 'हरिए न हिम्मत' भविष्य में सफलता के लिए पूर्ण मनोयोग से कार्य करें, जैसे वाक्यों से प्रोत्साहित करें न कि डराएँ या अपशब्द कहकर अपमानित करें। अब्दुल कलाम साहब का कथन है कि बच्चों को सपना देखने को प्रोत्साहित करें, अच्छा व्यक्ति, श्रेष्ठ मानव, अच्छा शिक्षक, अच्छा पिता, बनने की चाह जगाएँ।

शिक्षक वही है, जो वाणी के साथ–साथ आचरण से शिक्षा दे। वही जो ज्ञान अर्जित करे, ज्ञान बाँटे और ज्ञान से जिए। आजकल जोर शिक्षा देने पर है, विद्या अर्थात् सद्‌गुण सिखाने पर नहीं। शिक्षा वह जो सभी विषयों की जानकारी देती है, जबकि विद्या ज्ञान देती है अध्यात्म, संस्कृति एवं उच्चस्तरीय गुणों को जीवन में उतारने की मनःस्थिति देती है।

भारत का इतिहास, ऋषियों और संतों का तथा गुरू–शिष्य परंपरा को आगे बढ़ाने का इतिहास रहा है। भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के माध्यम से निकली प्रतिभाएँ आने वाले भविष्य के महामानव हैं। बच्चों में अलग–अलग वृत्तियाँ होती हैं, उन्हें ही विकसित करना है, उनमें भावना पैदा करना है।

विद्यालय को आदर्श विद्यालय बनाने हेतु दस कार्यक्रम प्रस्तुत किए हैं, जिनकी आज महती आवश्यकता है–

(1) **आदर्श सद्‌वाक्यों का प्रचलन** – सद्‌वाक्य जीते जागते स्वाध्याय के माध्यम हैं। घरों में, विद्यालयों में सद्‌वाक्य लगाए जाने चाहिए, ताकि एक दिव्य वातावरण बने। गुरुदेव के सत्साहित्य से भी और आदर्श वाक्य निकाले जा सकते हैं। बजट नहीं हो तो सौजन्य से भी लगाए जा सकते हैं।

(2) **जन्म दिन मनाना** – विद्यालयों में गुरुजनों एवं विद्यार्थियों के जन्म दिन मनाए जाने हैं। एक सप्ताह या एक माह में एक बार एक कालांश या 30

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मिनट में उस सप्ताह/माह जिनका जन्मदिन आता है उन सभी का तिलक कर स्वस्तिवाचन/आशीर्वाद, एक अच्छाई ग्रहण करना एवं एक बुराई छोड़ने का संकल्प भी लेना है।

(3) **स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता** – देव संस्कृति विश्वविद्यालय के छात्र–छात्राओं ने बच्चों एवं युवाओं में योग के प्रति क्रांति पैदा की है। बच्चों को कैसे आसन, प्राणायाम एवं ध्यान कराने से रोग दूर रहते हैं तथा स्वास्थ्य लाभ होता है, बताना।

(4) **गमलों में स्वास्थ्य** – कुछ जड़ी बूटियाँ गमलों में लगाई जा सकती हैं, जिनमें तुलसी आदि लगावें तथा विभिन्न बीमारियों के समय काम में ली जा सकती हैं।

(5) **वाटिका एवं वृक्षारोपण** – विद्यालय में वृक्षारोपण करने एवं वाटिका लगाने से एक तरफ तो वातावरण सुरम्य एवं प्रदूषण मुक्त बनेगा, तथा दूसरी ओर पेड़–पौधों को बड़े होता देख सृजनात्मक से सभी प्रसन्न होंगे।

(6) **माह में एक दिन** – विद्यालय में सामूहिक श्रमदान करें। श्रम से अहंकार घटता है। 'श्रम नौकर करता है' इस वृत्ति से छुटकारा दिलाना है। छात्रों के मन में विद्यालय के प्रति गुरुकुल की भावना उभरती है।

(7) आध्यात्मिक मंडल/संस्कृति मंडल का गठन करें। इसके अंतर्गत सांस्कृतिक कार्यक्रमों का संचालन प्रति सप्ताह किया जाना है।

(8) शिविर वर्ष में एक बार तीन या एक दिवसीय शिविर का आयोजन करने से बच्चों में आत्मीयता एवं सहयोग की भावना का विकास होता है।

(9) पुस्तकालय/वाचनालय में छोटी–छोटी पुस्तकें तथा क्रांतिधर्मी/विद्या विस्तार योजना एवं अन्य साहित्य जो बालोपयोगी, चरित्र निर्माण संबंधी हो रखना चाहिए जिससे बालकों में सद्गुणों का विकास होगा, स्वाध्याय के प्रति रूचि जाग्रत होगी।

(10) **चार्ट एवं पोस्टर** – महामानवों, वैज्ञानिकों, संतों, ऋषियों, वीरों आदि के चित्र, पूर्ण विवरण/व्याख्या सहित लगाए जाएँ। साथ ही आसन एवं ध्यान से संबंधित चार्ट्स भी लगाये जाएँ।

ज्ञान की दो धाराएँ : शिक्षा और विद्या

परम पूज्य गुरुदेव ने शिक्षा एवं विद्या के समन्वय के संबंध में जो विचार अमृतवाणी में व्यक्त किए, उनके अनुसार मनुष्य की विशेषता ज्ञान। ज्ञान न हो तब। ज्ञानविहीन होने की वजह से चेतन होते हुए भी सभी प्राणियों को नीचे दर्जे में गिना जाता है। जीवन तो वनस्पति में भी है पर ज्ञान नहीं है। दूसरे भी हैं,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मक्खी, मच्छर हैं, कीड़े है, मकोड़े हैं, जीवन है उनमें भी जिंदगी है, मेढ़क में भी जिंदगी है, मछली में भी जिदंगी है, मेढ़क में भी जिदंगी है, मछली में भी जिदंगी है, कछुये में भी जिदंगी है। चिड़ियाँ में जिदंगी है, फिर उनको क्यों हम नीचे दर्जे का मानते हैं। उनमें एक ही कमी है। वह है ज्ञान की कमी। मनुष्य ज्ञान का देवता माना गया है। ज्ञान की वजह से, मननशील होने की वजह से, विचारशील होने की वजह से मनुष्य का स्तर ऊँचा उठा है। कल्पना कीजिए प्राचीनकाल में जब मनुष्य वनमानुष रहा होगा, जब उसको ज्ञान नहीं रहा होगा, सामाजिकता का ज्ञान नहीं रहा होगा और जीवन की जिम्मेदारियों का ज्ञान नहीं रहा होगा अपनी गौरव–गरिमा गुण, कर्म, स्वभाव की विशेषताओं के बारे में जानकारी नही रही होगी तब वह भी जैस डार्विन साहब कहते थे बन्दर की औलाद। वास्तव में बंदर की औलाद की तरीके से यह इनसान भी रहा होगा त लेकिन आज सृष्टि का स्वामी बना हुआ है किस वजह से हाथ–पाँव की वजह से? नहीं हाथ–पाँव उसके वही हैं, हाथ–पाँव में कोई अंतर नहीं हुआ है। लंबाई चौड़ाई में कोई अंतर नही हुआ है। नाक, कान, आँख की बनावट में कोई अंतर नहीं हुआ है, लेकिन जो अंतर हो गया है, वह यह है कि प्राचीन काल की तुलना में आज आदमी का ज्ञान बढ़ता हुआ चला गया है।

ज्ञान की दो धाराएँ हैं और दोनों को ही बढ़ाया जाना चाहिए। एक धारा वह है, जो हमारी जीविका प्राप्त करने के काम आती है। उसको शिक्षा कहते है। लोकव्यवहार उसकी के आधार पर सीखा जाता है। बच्चों को जो हम स्कूल में पढ़ाते हैं, वह शिक्षा पढ़ाते हैं। शिक्षा का मतलब है उनको लोकाचार आए। उनको यह मालूम पड़े कि संसार का बनावट क्या है? भूगोल क्या है? इतिहास क्या है? दुनिया में इनसान का चाल–चलन क्या रहा है? दुनिया में किस तरह के उतार–चढ़ाव आते रहे हैं? यह हम इतिहास से सीखें। पेड़ कैसे पैदा होते हैं? यह सृष्टि क्या है? राजनीति क्या है? समाज क्या है? नागरिक कर्त्तव्य क्या है? जीविका उपार्जन कैसे करना चाहिए? अर्थशास्त्र क्या है वगैरह बातें सीखकर के हम जीविका उपार्जन कर सकते हैं और जीविका उपार्जन की तरह से लोक व्यवहार में प्रवीण हो सकते हैं। लोक व्यवहार में प्रवीण बनने के सम्बंध में और जीविकोपार्जन के सम्बंध में जो जानकारियाँ हमको मिलती हैं, उसका नाम शिक्षा है। शिक्षा आवश्यक है शिक्षा न होगी तो आदमी अपने शरीर का सँभाल किस तरह पाएगा? समाज के साथ तालमेल किस तरह बैठा पाएगा? अपनी अकल का उपयोग किस तरह से कर पाएगा? इन सब जानकारियों के लिए शिक्षा तो आवश्यक है। लेकिन शिक्षा से ही काम चलने वाला नहीं है। शरीर के जीवन के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लिए भौतिक जीवन को ठीक बनाए रखने के लिए शिक्षा बेहद जरूरी है, लेकिन केवल भौतिक जीवन ही तो जीवन नहीं है।

एक और भी तो हमारा जीवन है, जिसको हम आध्यात्मिक जीवन कहते हैं। चेतना भी तो कोई हमारे भीतर है, आत्मा भी तो कोई हमारे भीतर है, विवेक भी तो कोई हमारे भीतर है। संवेदनाएँ भी तो कोई हमारे भीतर हैं। इन सबको ठीकरखने के लिए एक और चीज की जरूरत है, जिसका नाम है विद्या। ज्ञान की दूसरी धारा उसी को कहते है। जिसको विद्या कहा गया है। विद्या का पूरा नाम अध्यात्म विद्या आप मानें तो भी हर्ज नहीं है। आप ऋतंभरा प्रज्ञा इसको कहें तो भी हर्ज नहीं है। इसको आप गायत्री कहें, प्रज्ञा कहें तो भी हर्ज नहीं है। वास्तव में महत्व उसी का है। जानकारियों के बारे में दुनिया की जानकारियों के बारे में तो ढेरों आदमी ऐसे हैं जिनकी जानकारियाँ बहुत हैं, होशियार बहुत हैं। आदमी विद्यावान कम है क्या दुनिया में, कलाकार कम हैं क्या दुनिया में, चतुर आदमी दुनिया में कम है क्यात्र क्रियाकुशल लोगों की कमी है क्या? पर स्वयं के लिए और दूसरों के लिए क्या उपयोगी साबित हुएत्र आप बताइए न, जेलखाने में पड़े हुए लोगों को आपने नहीं देखा है। एक से एक होशियार आदमी और एक से एक समझदार आदमी, वही कैदखाने में, जालसाजों में पढ़े लिखे आदमी ही ज्यादा होते हैं। नासमझ आदमी जालसाजी नहीं कर सकते हैं। नासमझ आदमी जेबकटी कर सकते हैं और छोटे मोटे काम कर सकते हैं पर दुनिया में, जो बड़ी–बड़ी जालसाजियाँ हुई हैं यह पढ़े–लिखे लोगों ने की हैं। शिक्षा की बात मैं नहीं कहता। शिक्षा अपनी जगह पर मुबारक। इससे कुछ लेना देना नहीं पर यहां विद्या के बारे में कहा जा रहा है।

आपको विद्या का महत्व समझना चाहिए। विद्या का महत्व हम समझ सकें तो मजा आ जाए। विद्या से क्या मतलब। विद्या से मतलब है कि आप अपने विचारों का इस्तेमाल किस तरीके से करें। आप अपने शरीर का इस्तेमाल किस तरीके से करें। साधनों का इस्तेमाल किस तरीके से करें। परिस्थितियों का उपयोग किस तरीके से करें। अपने पास जो सामान और साधन मिला हुआ है या मिल सकता है आप उसको ठीक तरीके से इस्तेमाल कर पाएँगे बस इसी का नाम विद्या है। इसके लिए सामान्य लोकज्ञान से काम नहीं चलता, इसके लिए आदमी को जरा ऊँचे स्तर पर बैठकर विचार करना पड़ता है और यह देखना पड़ता है कि इंसान की गरिमा और इंसान की महत्ता की सुरक्षा किस तरीके से की जाए, उसके लिए क्या करना चाहिए बस इसी का नाम विद्या है और विद्या किसी को मिल जाए तब? तब धन्य हो जाते हैं। शास्त्रों में विद्या की महत्ता के लिए न जाने क्या से क्या कहा गया है विद्ययाऽमृतमश्नुते। विद्या को अमंत कहा गया है। जिसने विद्या प्राप्त कर ली, उसको अमृत मिल गया है। जो ठीक तरीके से उचित और अनुचित का हल जानता

www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है उसके लिए फिर दुनिया में कोई चीज मुश्किल नहीं रह जाती है।

जिसको यह मालूम है कि समस्याएँ किस तरीके से पैदा होती है और उनके समाधान क्या हैं यह लोगों को मालूम नहीं है। लोगों का यह ख्याल है कि परिस्थितियों की वजह से समस्याएँ पैदा होती हैं, लेकिन सही बात यह नहीं है।

परिस्थितियों की वजह से समस्याएँ उत्पन्न नहीं होतीं, दूसरों की वजह से समस्याएँ उत्पन्न नहीं होतीं, बल्कि आदमी की मनःस्थिति इसके लिए जिम्मेदार हैं। यह बात आमतौर से लोगों की समझ में नहीं आती। महापुरुषों के इतिहास को यदि आप पढ़ें, तो आप आसानी से जान सकते है। कि समस्याएँ कहाँ से उत्पन्न हुई और आदमी किस तरीके से बढ़े। अपने अब्राहम लिंकन का नाम पढ़ा है न, जार्ज वाशिंगटन को जानते हैं न, गाँधी जी का इतिहास पढ़ा है न। बुद्ध का इतिहास पढ़ा है न। इनकी परिस्थितियों में क्या खास बात थी बताइये। बल्कि सामान्य लोगों के बराबर और उससे भी गई बीती परिस्थितियाँ थीं, लेकिन गई बीती परिस्थितियों में भी उनकी मनःस्थिति इतनी शानदार, इतनी शानदार मनःस्थिति हुई कि न जाने कहाँ से कहाँ उठते और कहाँ से कहाँ बढ़ते चले गए। शंकराचार्य में क्या विशेषता थी, आप बताइए। समर्थ गुरु रामदास में क्या विशेषता थी आप बताइए। कबीर की क्या परिस्थितियाँ थीं, आप बताइए। कबीर को कौन कंधे पर उठाकर ले गया था, बताइए।

केवल मनःस्थिति थी, जिसमें विवेकशीलता मुख्य है। मनःस्थिति में एक चीज आ जाए, विवेक आदमी के भीतर आ जाए तो अपनी समस्याओं को हल कर सकता है और दूसरों की समस्याओं को हल कर सकता है और अपने पास जो साधन सामग्री मिली हुई है उसका ठीक तरीके से इस्तेमाल कर सकता है। आदमी को समय मिला हुआ है। आदमी को श्रम मिला हुआ है। आदमी को कैसे अच्छा शरीर मिला हुआ है, आदमी को कैसा बढ़िया वाला कुटुंब मिला हुआ है और आदमी को कैसे कार्यक्षेत्र मिला हुआ है। इस सारे के सारे क्षेत्र के उचित और अनुचित का समाधान हम निकाल नहीं पाते, क्या करना चाहिए क्या नहीं करना चाहिए? बस यहीं भटक जाते हैं, यहीं भटक जाने की वजह से कहीं के मारे कहीं जा पहुँचते हैं। जो हमको करना चाहिए वह हम कर नहीं पाते और जो हमको नहीं करना चाहिए, वह हम कर पाते हैं। इसकी क्या वजह हैं? इसकी वजह यह है कि हमारे पास खास किस्म का तजुर्बा नहीं है जिसको हम विवेक कहते हैं। ज्ञान का अर्थ यहाँ विवेक है। ज्ञान का अर्थ वह नहीं है, जिसे नॉलेज कहते हैं। ज्ञान का अर्थ है विजडम। विजडम यदि हमारे पास है तो हम हर चीज को उचित और अनुचित की कसौटी पर कस सकते हैं और सिर्फ उसी चीज को अपने जीवन में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धारण कर सकते हैं, जो करनी चाहिए।

इसके लिए सबसे बड़ी कमजोरी और सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि हम दूसरों को काम करते हुए देखकर दूसरों के रास्ते पर चलने लगते हैं। यह काम तो अंधी भेड़ों का है, यह इंसानों का थोड़े ही। इंसान, जहाँ ज्यादा लोग चलें वहीं हम चलें जो दूसरे लोग करें वही हम करें, जो दूसरे लोग कहें वही हम कहें। दूसरे लोग जिस तरीके से मरें हम भी मरें, यह भी कोई ढंग है। यह कोई ढंग नहीं। समझदारी का, आध्यात्मिकता का तकाजा आदमी को यह है कि प्रत्येक परिस्थिति के बारे में गुण के हिसाब से, उसके परिणाम के हिसाब से स्वयं विचार करना चाहिए। स्वतंत्र चिंतन इसी का नाम है। स्वतंत्र चिंतन अगर आपके पास है, तो आप उचित या अनुचित या निर्धारण कर सकते हैं।

आपने शिक्षा प्राप्त कर ली होगी, बहुत कर ली होगी और करनी चाहिए। लेकिन आप विद्या के बारे में वंचित न रहिए, गायत्री की महत्ता आपने जानी है, तो आप उसका वाहन बनना शुरू कीजिए। उसके वाहन की दो ही तो विशेषताएँ हैं एक तो यह कि नीर और क्षीर को अलग कर देता है। पानी और दूध को अलग कर देता है। इस दुनिया में जो कुछ भी मिला हुआ है घपला है सब गुड़गोबर मिला हुआ है। कहीं सचाई की झलक दिखाई पड़ती है और उसी के साथ में ठिटाई और बेईमानी का कितना गहरा पुट दिखाई पड़ता है। आप अलग किस तरीके से करेंगे। आपकी विवेकशीलता के माध्यम से यह संभव है कि आप दोनों को अलग कर दें, नहीं तो आप अलग नहीं कर सकेंगे। दूध और पानी मिलता ही चला जाएगा सचाई की थोड़ी सी झलक और बेईमानी का अधिक से अधिक माद्दा यही तो लोक व्यवहार है, दुनिया यही तो है। आप ऐसा मत कीजिए और हंस बनने की कोशिश कीजिए।

अपने समय का सदुपयोग करना सीखें, अपने शरीर का उपयोग करना सीखें, अपनी अकल का उपयोग करना सीखिए, अपने प्रभाव का उपयोग करना सीखिए, भगवान ने जो कुछ भी दिया है, उन सबका ठीक इस्तेमाल करना सीखिए। जरा सीखिए तो सही। आप अपने आपका ठीक चीजों का इस्तेमाल कर लें फिर? आपके सामने वह ढेरों की ढेरों समस्याएँ जो कभी आर्थिक तंगी के रूप में दिखाई पड़ती है, बीमारी के रूप में दिखाई पड़ती है, कभी मान अपमान के रूप में दिखाई पड़ती है, कभी लोगों के असहयोग के रूप में दिखाई पड़ती है, कभी क्या दिखाई पड़ती है आप उन सारी समस्याओं का मुकाबला कर सकते हैं, अगर आपने अपने आपको सही करने का ज्ञान प्राप्त कर लिया है और समझदारी को अपने जीवन में धारण कर लिया है और समझदारी को अपने जीवन में धारण कर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लिया है। बुरे आदमी हैं मान लिया बुरे आदमी हैं तो बुरे आदमियों के साथ में दूसरा सलूक कर सकते हैं। दिक्कत क्या है? आप एक डॉक्टर के तरीके से उनके साथ रवैया करना शुरू कर दीजिए। बुरे आदमी हैं तो बीमार भी तो बुरे आदमी हैं। बीमारियों से आप लड़िये और उसकी बीमारी की हिफाजत कर दीजिए। यह हो सकता है यह बिल्कुल हो सकता है। आप बैर तो रखें आप केवल बुराइयों से बैर रखें। हमला यदि आप पर हुआ है चारों ओर से बुराइयों ने किया है, अच्छाई में और बुराई में यदि आप फरक करना सीख लें तो मैं आपको ज्ञानवान कहा जा सकता है।

ज्ञानवान आप बनेंगे उस दिन आपका दरिद्र दूर हो जाएगा। क्योंकि आप बड़ों के साथ मुकाबला करने की तुलना में अपने छोटों के साथ मुकाबला करना शुरू कर देंगे। फिर आपको यह मालूम पड़ेगा कि आप मालदार हैं, आप अमीर है। आप संपन्न हैं भाग्यवान है, अगर आप बड़ों के साथ में मुकाबला करते रहेंगे तो यह मालूम पड़ेगा कि हम उनकी बराबरी के नहीं है। उनकी तुलना में गरीब हैं उनकी तुलना में गये बीते हैं। उनकी तुलना में दुखी हैं। तुलना की ही तो बात है। न कोई गरीब है दुनिया में न अमीर है। जो आदमी अपना मुकाबला अमीरों से करता है वह गरीब है और जो गरीबों से मुकाबला करता है वह अमीर है।

आपको अपनी गतिविधियों के बारे में दृष्टिकोण के बारे में विचार करना चाहिए। इसमें गलतियाँ कहाँ हैं, जहाँ कहीं गलतियाँ हैं यदि आप उनको सुधार पाएँ तो फिर आपको ऐसी चीज हाथ लग जाएयी जिसके आधार पर आप खुशी की जिंदगी जिएँगे। शांति की जिंदगी जिएँगे। मोहब्बत की जिंदगी जिएँगे। प्यार की जिंदगी जियेंगे और ऐसी जिंदगी जिएंगे कि जिसमें आपकी खुशी उन सब लोगों को मिले जो आपके नजदीक आते हों आपसे सम्बंध रखते हों। आपके घर वाले आपसे बेहद खुश देखे जाएँगे यदि आप विवेकशीलता को अख्तियार कर लें। आप अपने आपको ढाँचा बना लें साँचा बना लें। जो कोई भी आपके नजदीक आएगा उसमें ढलता हुआ चला जाएगा।

आपके—चंदन के नजदीक आने के बाद में यदि झाड़—झंखाड़ खुशबूदार बन सकते हैं तो कोई वजह नहीं अगर आप उन्नत स्तर के व्यक्ति हैं, तो जो भी आपके नजदीक आए जो भी आपका सहयोगी बने जो भी आपके सम्पर्क में आए, खुशहाल बने समुन्नत हो। आत्मकल्याण का भी इसी में रास्ता है। लोककल्याण का भी इसी में रास्ता है यह दोनों रास्ते आपके विद्या के आधार पर ज्ञान के आधार पर आपको मिल सके हैं। इसलिए शिक्षा के तरीके से विद्या का भी महत्व समझिए, उसको प्राप्त करने के लिए निरंतर कोशिश में लगे रहिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आवासी खण्ड –

व्यास भवन में 22 फ्लैट, सूर्य भवन में 12 फ्लैट, आचार्य भवन में 16 फ्लैट, भगवती भवन में 24 फ्लैट, तथा गैरित, विश्वामित्र भवन में 29 फ्लैट, वशिष्ट भवन में 59 फ्लैट, वशिष्ट हॉल, अत्रि भवन में 9 फ्लैट, कश्यम भवन में 9 फ्लैट, जमदग्नि भवन में 12 फ्लैट, प्रज्ञा भवन में 42 फ्लैट, त्रिपदा भवन में 30 फ्लैट, दुर्गा भवन में 15 फ्लैट, सावित्री भवन में 31 फ्लैट, सरस्वती भवन में 4 फ्लैट, ऋद्धि भवन में 22 फ्लैट, नालंदा भवन में 18 फ्लैट, तक्षशिला भवन में 18 फ्लैट, सिद्धि भवन में 18 फ्लैट, अन्नपूर्णा भवन में 6 फ्लैट, औषधालय भवन में 14 फ्लैट, लक्ष्मी भवन में 42 फ्लैट, लक्ष्मी हॉल, विवेकानंद हाल, सुभाष हाल, मंदाकिनी भवन में 42 फ्लैट, ऋतंभरा भवन में 53 फ्लैट, अदिति भवन में 12 हाल, याज्ञावल्यक भवन में 3 बड़े हाल, अनुसुइया भवन में 40 फ्लैट, अरुंधती भवन में 40 फ्लैट, कात्यायनि भवन में 24 फ्लैट, मैत्रिय भवन में 24 फ्लैट, आपाला भवन में 16 फ्लैट, पातांजलि भवन में 152 फ्लैट आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित हैं।

सावित्री भवन के पीछे नई बिल्डिंगों का निर्माण हो रहा है जिसमें 172 फ्लैट बनाए जा रहे हैं आवासी खण्ड के अलावा सभी विभागों के अपने अलग–अलग भवन, कार्यशाला, प्रशिक्षण शाला, गोष्ठी हाल, प्रवचन कक्ष आदि हैं। जिनका उपयोग विभागों की आवश्यकतानुसार वह स्वयं करते हैं।

www.vicharkrantibooks.org

शांतिकुंज द्वारा सम्पन्न कराये गये संस्कार

व्यक्ति और समाज को सुसंस्कृत बनाने के लिए शान्तिकुंज द्वारा देश और विदेश में विभिन्न संस्कार आयोजन सम्पन्न किये जाते रहे हैं। इस क्रम को आठ बिन्दुओं में स्पष्ट किया जा रहा है –

1. **पुंसवन संस्कार** – यह सारी प्रक्रिया ऋषियों के आयुर्वेदिक ज्ञान पर आधारित है। आज 'थ्रटेन्ड एबार्शन' से लेकर गर्भस्थ बच्चे पर हानिकारक औषधियों के प्रभाव तक कितनी ही प्रक्रियाएं वातावरण में विद्यमान हैं। इनकी सुरक्षा इ कर्म से होती है। साथ ही बालक के भौतिक शरीर के निर्माण के समय से ही अर्थात् गर्भ के तीसरे–चौथे माह में उस पर संस्कारों का रोपण किया जाता है।

देव सन्तति के उद्देश्य से किया जाने वाला यह संस्कार 1991, 1992, 1993, 1994, 1995, 1996, 1997, 1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010 में क्रमशः 2755, 5327, 8185, 10451, 15817, 16818, 18050, 13871, 19140, 120884, 16810, 15841, 21319, 18871, 21148, 22187, 24153, 23121, 28118, 28001 सम्पन्न किये गए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

2. **अन्नप्राशन संस्कार** – यह संस्कार बालक अथवा बालिका में यह भावना विकसित करने के लिए किया जाता है – वह हमेशा सुसंस्कारी अन्न ग्रहण करे। इस क्रम में शान्तिकुंज द्वारा सम्पन्न कराए गए इस संस्कार में 1991, 1992, 1993, 1994, 1995, 1996, 1997, 1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010 में क्रमशः 1521, 3726, 4514, 7106, 10703, 11211, 10318, 12341, 12810, 112001, 11301, 13108, 13889, 14384, 12819, 13431, 16310, 12317, 14484, 15810 बच्चों ने सुसंस्कारिता की इस शिक्षा को ग्रहण किया।

3. **नामकरण संस्कार** – पश्चिम में बिल्कुल भिन्न एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें गुण प्रधान नाम द्वारा यह प्रेरणा दी जाती है कि बच्चे जीवन भर उसी की तरह बनने का स्मरण करें। इस क्रम में 1991, 1992, 1993, 1994, 1995, 1996, 1997, 1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010 में क्रमशः 4125, 6360, 1431, 13304, 17823, 18104, 18999, 19004, 20100, 1218183, 213107, 21388, 22084, 22871, 23304, 24801, 24081, 25004, 26876, 27208 बच्चों ने सद्‌गुणी बनने का संकल्प लिया।

4. **मुण्डन संस्कार** – ऋषियों की यह मान्यता है कि मनुष्य न जाने कितनी योनियों में भटकता हुआ पाशविक संस्कार विचार मनोभाव धारण करता हुआ मानव योनि प्राप्त करता है। इन अनुपयुक्त संस्कारों का निष्कासन बालक के सही मानसिक विकास के लिए अनिवार्य है। नरपशु–नरकीटक से नरमानव, देवमानव में परिवर्तन हेतु यह प्रतीक संस्कार सम्पन्न किया जाता है। इस क्रम में 1991, 1992, 1993, 1994, 1995, 1996, 1997, 1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010 में क्रमशः 51012, 55662, 60376, 65626, 72186, 83000, 87314, 93087, 9874, 110501, 10787, 10818, 11183, 11483, 11638, 11021, 11940, 12708, 12941, 13871 बच्चों ने देवमानव बनने का संकल्प किया।

5. **विद्यारम्भ संस्कार** – आयु के पाँचवे वर्ष में संस्कार तब सम्पन्न किया जाता है, जब बालक का मस्तिष्क शिक्षा ग्रहण करने के योग्य हो जाता है। शिक्षा मात्र शिक्षा न रहकर विद्या बने, इसी का मनोवैज्ञानिक शिक्षण इस संस्कार में दिया जाता है। इस क्रम में 1991, 1992, 1993, 1994, 1995, 1996, 1997, 1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010 में क्रमशः 15580, 24184, 40047, 51830, 65147, 68107, 69314, 72101, 78738, 13108, 88111, 89310, 93012, 95380, 10012, 10831, 10984, 11876, 12010, 12114 बालकों ने आरुणि, श्वेतकेतु की तरह विद्या अर्जन हेतु कदम बढ़ाए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

6. दीक्षा एवं यज्ञोपवीत संस्कार – यज्ञोपवीत व्रतबन्धन है। सामान्यतः 8 से 10 वर्ष की आयु में यह सम्पन्न किया जाता है। यज्ञोपवीत में 9 धागे होते हैं, जो नौ गुणों के प्रतीक हैं। विवेक, पवित्रता, बलिष्ठता, शान्ति, साहस, प्रतिभा, धैर्य, कर्त्तव्यनिष्ठा, समृद्धि व सामूहिकता के 9 गुणों को गायत्री माता की मूर्तिमान् प्रतिमा के रूप में कन्धे पर हर समय धारण किया जाता है। यज्ञ पिता को कन्धे पर व गायत्री माता को हृदय पर एक साथ इस प्रतीक सूत्र के माध्यम से धारण कर व्रतशील जीवन के लिये संकल्पित होना पड़ता है। इस क्रम में 1991, 1992, 1993, 1994, 1995, 1996, 1997, 1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010 में क्रमशः 154628, 204725, 431375, 623631, 851141, 291012, 294218, 295338, 299873, 481117, 310873, 210331, 111951, 118101, 211210, 121374, 1138103, 139101, 148177, 158338 लोगों ने व्रतशील जीवन का संकल्प लिया।

7. जन्म दिवस संस्कार – मोमबत्तियाँ जलाकर, केक काटकर, महंगे प्रीतिभोजों में अपनी सम्पन्नता का प्रदर्शन करना ही आज इसका पाश्चात्य स्वरूप रह गया है। जबकि यह एक महत्वपूर्ण संस्कार वर्ष में एक बार मनायी जाने वाली आत्मबोध की महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। यह विशिष्ट संस्कार इस भावना के साथ मनाया जाना चाहिए कि हर आत्मा में महानता को प्राप्त होने वाली अनन्त सम्भावनाएं विद्यमान हैं। यदि इस दिन आत्मचेतना को झकझोरा जा सके तो व्यक्ति महानता के पथ पर आरूढ़ हो सकता है। इस क्रम में 1991, 1992, 1993, 1994, 1995, 1996, 1997, 1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010 में क्रमशः 1017, 1028, 2340, 4110, 5310, 6817, 7810, 6388, 18431, 4387, 5838, 8340, 9384, 10811, 11887, 11765, 12831, 12900, 13017 जन्म दिवस संस्कार सम्पन्न किये गये।

8. अन्यान्य संस्कार – इन उपरोक्त संस्कारों के अलावा मनुष्य व समाज को सुसंस्कृत करने वाले अन्यान्य संस्कारों के द्वारा 1991, 1992, 1993, 1994, 1995, 1996, 1997, 1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010 में क्रमशः 53420, 66312, 78767, 154026, 170838, 17831, 17538, 18408, 19388, 40874, 20105, 21118, 21843, 21210, 22830, 22737, 23001, 23786, 24382, 25810 लोगों को संस्कारवान् बनाने का प्रयास किया गया।

देव सन्तति के उद्देश्य से किया जाने वाला यह संस्कार 1991, 1992, 1993, 1994, 1995, 1996, 1997, 1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010 में क्रमशः 2755, 53278185, 10451, 15817, 16381, 16831, 16921, 17007, 42210, 19884, 22312, 23050, 23803,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

23381, 24831, 24811, 25931, 25973, 26877 सम्पन्न किये गए।

9. **आदर्श विवाह** – इन विवाह के साथ जुड़ी तड़क–भड़क, अपव्यय का प्रदर्शन, दहेज, बारात आदि की विकृतियों ने समाज में आज एक ऐसा संकट पैदा कर दिया है, जिससे सद्गृहस्थ निर्माण का तन्त्र ही समाप्त हो गया। विवाह संस्कार को इन कुरीतियों से मुक्त करने के लिए शान्तिकुंज ने आदर्श विवाह को आन्दोलन का रूप दिया है। जिसके अन्तर्गत दहेज और अपव्यय से मुक्त विवाह सम्पन्न कराए जाते हैं। इस क्रम में 1991, 1992, 1993, 1994, 1995, 1996, 1997, 1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010 में क्रमशः 10541, 21618, 25811, 33456, 31311, 32410, 32840, 33184, 33810, 33440, 84104, 34998, 34887, 35401, 35801, 36948, 37817, 38418, 38577, 39614 विवाह सम्पन्न कराये गये।

10. **देवस्थापना** – वर्तमान समय में पारिवारिक विघटन, बच्चों का कुसंस्कारी होते चले जाना आज एक सामान्य बात है। इस विकृति से निपटने के लिए शान्तिकुंज ने देव स्थापना कार्यक्रम के अन्तर्गत घर–परिवारों में गायत्री और यज्ञ की प्रक्रिया को स्थापित करके परिवार में आस्तिकता और सुसंस्कृत वातावरण को विनिर्मित करने का प्रयास किया है। इस क्रम में 1991, 1992, 1993, 1994, 1995, 1996, 1997, 1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010 में क्रमशः 43415, 62601, 87105, 110335, 150001, 151310, 152218, 1538101, 154481, 258441, 159971, 159988, 162812, 163844, 165183, 165997, 165901, 166107, 167851, 168991 परिवारें के वातावरण को संस्कारवान् बनाया गया।

11. **नैतिक शिक्षा के सत्र**– नैतिक शिक्षा की योजना के अन्तर्गत उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, हरियाणा आदि विभिन्न प्रान्तों की सरकारों ने अपने कर्मचारियों को शान्तिकुंज भेजकर उनके व्यक्तित्व को परिष्कृत, उन्नत व सुविकसित करने में तत्परता दिखाई। इस क्रम में 1991, 1992, 1993, 1994, 1995, 1996, 1997, 1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010 में क्रमशः 12336, 25153, 21501, 36541, 42218, 42412, 43831, 43941, 44812, 45301, 45401, 48884, 49001, 49488, 49001, 50876, 51871, 52984, 53010, 53311 व्यक्तियों ने भागीदारी की और अपने व्यक्तित्व का अनुकरणीय उदाहरण अपने कार्यक्रम में प्रस्तुत किया।

12. **दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन** – इस कार्यक्रम के अन्तर्गत नशा निवारण कार्यक्रम को प्राथमिकता दी गई। विभिन्न यज्ञीय आयोजनों में ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान के चिकित्सों की सहायता से 1991, 1992, 1993, 1994, 1995, 1996, 1997, 1998,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010 में क्रमशः 303171, 440731, 500000, 623505, 622101, 631015, 639812, 64867, 85884, 659410, 678891, 673044, 688903, 691431, 702101, 718312, 729217, 728210, 737387 लोगों ने शराब, चरस आदि नशों के दुर्व्यसनों का त्याग किया।

13. सत्प्रवृत्ति संवर्धन के अन्तर्गत वृक्षारोपण एवं स्वाध्याय की प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया गया।

(1) **वृक्षारोपण** – वृक्षारोपण कार्यक्रम के अन्तर्गत गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ताओं के द्वारा पर्यावरण सम्वर्धन के लिए देश के विभिन्न भागों में वर्ष 1991, 1992, 1993, 1994, 1995, 1996, 1997, 1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010 में क्रमशः 1156150, 1712650, 2225000, 2777417, 3131547, 3238410, 3353181, 34813001, 34819810, 4583008, 4835831, 4988418, 5081217, 5137125, 5210030, 5287621, 5393103, 5301887, 5499311, 5581731 वृक्षारोपण किया गया।

(2) **स्वाध्याय मण्डल** – अश्लील साहित्य की बढ़ती कुप्रवृत्ति को रोकने के लिए शान्तिकुंज ने देश भर में स्वाध्याय मण्डल की स्थापना को एक कार्यक्रम के रूप में लिया। इस क्रम में वर्ष 1991, 1992, 1993, 1994, 1995, 1996, 1997, 1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010 में क्रमशः बड़ी संख्या में स्वाध्याय मण्डल स्थापित किये गये। इसका विस्तृत विवेचन ग्राफ संख्या 8.14 में हैं। इसमें 1991 व 95 का विवरण उपलब्ध न हो पाने के कारण नहीं दिया जा सका। 1992 में 3087 एवं 1993 में 2121 तथा 94 में 4808 स्वाध्याय मण्डल स्थापित हुए। क्रमशः 1996 से 5304, 5381, 5483, 5590, 5681, 5788, 6431, 7508, 8103, 9384, 9891 10121, 11387, 12841, 12987

(3) **पत्रिकाओं का प्रकाशन** – स्वाध्याय की प्रवृत्ति को बढ़ावा देने के लिए उत्तर विचार सामग्री का प्रस्तुतीकरण शान्तिकुंज द्वारा प्रकाशित अखण्ड–ज्योति एवं युग निर्माण योजना मासिक के द्वारा किया जाता है।

राष्ट्र के साहित्यकारों को पूज्यवर आचार्यश्री के साहित्यकार स्वरूप से परिचित कराने की कार्य योजना

युग निर्माण मिशन के सूत्रधार परम पूज्य गुरुदेव युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी की लेखनी के आध्यात्मिक, दार्शनिक, मानवीय तथा मनोवैज्ञानिक आदि पक्षों (जो सारी मानव जाति को उनकी समस्याओं के समाधान सुझाते हैं)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

को यदि अद्वितीय एवं, ऐतिहासिक कहा जाए, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। झोपड़ीपट्टी से आलीशान अट्टालिकाओं तक, खेत–खलिहान से संसद के गलियारों तक, कला के चौगान से विज्ञान के दालान तक, संतरी संत से लेकर मंत्री महर्षियों तक जहाँ भी गुरुवर साहित्य पहुँचा, जिसने भी उसमें मज्जन किया, उसके जीवन का पोर–पोर सजल श्रद्धामय हो उठा, वह आदर्शों का श्रावणमास हो गया। प्रखर प्रज्ञा ने उसे ऐसे रंगा कि उसका कोर–कोर, छोर–छोर, हर ओर जीवन उत्कृष्टता का बसंत हो गया।

पत्र–पत्रिकाओं की भारी संख्या और उनकी खपत इस बात का परिचायक है कि लोगों को वास्तव में आज भी साहित्य पढ़ने की चाह है। साहित्य के नाम पर जो कुछ भी परोसा जा रहा है उससे सभी चिर परिचित हैं। ऐसी स्थिति में अन्तर्रात्मा पुकार–पुकार कर युगधर्म निभाने को प्रेरित करती है और कहती है कि पूज्यवर–गुरुवर के युग साहित्य की गंगा को अतृप्त समाज तक शीघ्रातिशीघ्र पहुँचाया जाय। यह कार्य बहुत सहज हो सकता है यदि हम देश के साहित्यकारों तक परम पूज्य गुरुदेव के साहित्यकार स्वरूप को विधिवत् पहुँचा सकें।

साहित्यकारों को जोड़ने के इस कार्यक्रम का उद्देश्य पूज्यवर के साहित्यिक स्वरूप को विश्व समाज के सामने लाना है। वर्तमान समय के साहित्य जगत को आत्मबोध–कर्तव्यबोध कराना और पूज्यवर के साहित्य के माध्यम से उन्हें वास्तविकता का दर्पण दिखाना इसका प्रमुख उद्देश्य होगा।

राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय साहित्यकार समाज तक पूज्यवर को अनूठे साहित्यकार के रूप में प्रस्तुत करने का उद्देश्य इससे पूरा होगा। पूज्यवर के एक विश्व धर्म, एक विश्व भाषा, एक विश्व राष्ट्र के स्वप्न–संकल्प को पूर्ण करने की दिशा में यह एक सार्थक प्रयास सिद्ध होगा।

कार्ययोजना

(1) विश्वविद्यालयों–महाविद्यालयों–स्कूलों कॉलेजों के विद्यार्थियों में सद्–साहित्य के प्रति रूचि जगाना।

(2) पूज्यवर के नाम पर स्कूल स्तर से लेकर राष्ट्रीय एवं अन्राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कारों की व्यवस्था करवाना। (साहित्य क्षेत्र में)

(3) निम्नलिखित सरकारी एवं गैर–सरकारी संस्थाओं को पूज्यवर के साहित्य से जोड़ना–

1. नोबल पुरस्कार समिति।
2. भारतीय ज्ञानपीठ
3. केन्द्रीय साहित्य अकादमी, जो देश की लगभग 22 भाषाओं में साहित्य प्रकाशित करती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

4. देश की सभी प्रान्तीय साहित्य अकादमियाँ।
5. साहित्य से जुड़ी विभिन्न प्रान्तीय, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय समितियाँ।
6. प्रान्तीय एवं राष्ट्रीय भाषा संस्थान, यथा—हिन्दी संस्थान, संस्कृत संस्थान आदि।
7. देश की सभी जिला स्तरीय साहित्य समितियाँ।
8. देश के विद्यालयीन/महाविद्यालयीन/विश्वविद्यालयीन पाठ्यक्रम निर्माण समितियों के विषय विशेषज्ञों तक पूज्यवर द्वारा रचित तत्सम्बन्धी विशिष्ट सामग्री पहुँचाना।
9. भारतीय सेना में धर्म शिक्षकों के लिए चलाये जाने वाले प्रशिक्षण की सामग्री हेतु पाठ्य प्रशिक्षण के निर्माता विशेषाज्ञों को इसकी जानकारी देना।

(सम्बन्धित संस्थानों/साहित्यकारों/विषय विशेषज्ञों से पत्राचार करके उन्हें तत्सम्बन्धित विषय सामग्री भेजी जाएगी।)

(4) साहित्यकारों को जोड़ने के इस कार्यक्रम का प्रचार–प्रसार देव संस्कृति विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के परिवीक्षाकाल (इण्टर्नशिप) का एक हिस्सा बनाया जाए। विद्यार्थी अपने कार्यक्षेत्र में साहित्यकारों, साहित्य–मण्डलों, साहित्यिक संस्थाओं एवं साहित्यिक पत्रिकाओं से सम्बन्धित आंकड़े एकत्रित कर लें। ये आंकड़े हमारी भावी योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए अत्यन्त लाभप्रद सिद्ध होंगे। इससे पूरे कार्यक्रम में मितव्ययिता एवं समय की बचत होगी।

(5) आगामी इण्टर्नशिप में पूज्यवर के साहित्यकार स्वरूप के प्रचार–प्रसार के लिए लिखित सामग्री, यथा ब्रोशर आदि विद्यार्थियों को उपलब्ध कराया जा सकता है। इससे इण्टर्नशिप में हमारे विद्यार्थियों को समय की जरूरत के अनुरूप अभिव्यक्ति के अधिकतम सुअवसर प्राप्त होंगे।

(6) देव संस्कृति विश्वविद्यालय के छात्र–छात्राओं में से साहित्यिक प्रतिभाओं का चयन करके उनके माध्यम से देश भर में साहित्यिक गतिविधियों को विस्तार दिया जाए। ये विद्यार्थी अपने पूज्य कुलपिता के साहित्यकार स्वरूप से राष्ट्र के साहित्यकारों को बखूबी परिचित करा सकते हैं।

(7) पूज्यवर के साहित्य पर विशेष शोध कार्य करने वाले चयनित व्यक्तियों/शोधार्थियों का सम्मान किया जाए।

(8) भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में पूज्यवर के साहित्यकार के स्वरूप पर लेख दिए जाएँ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक सशक्त माध्यम–साहित्यकार सम्मेलनों में मिशन की सहभागिता–

1 राष्ट्र के विभिन्न अंचलों में समय–समय पर सम्पन्न होने वाले परम्परागत तथा विशिष्ट साहित्यिक सम्मेलनों में देव संस्कृति विश्वविद्यालय–शान्तिकुंज सहित क्षेत्रीय युग निर्माणी प्रतिनिधियों की सहभागिता हो। जैसे– अखिल भारतीय साहित्य परिषद्, राजस्थान, शाखा बूंदी के द्वारा जनपद बूँदी में 05 अप्रैल 09 को आयोजित कार्यक्रम में विश्वविद्यालय प्रतिनिधियों की विशिष्ट सहभागिता हुई।

2 युग निर्माण मिशन के तत्वाधान में साहित्यिक सम्मेलनों के आयोजन करना तथा उनमें राष्ट्र की उदीयमान तथा दैदीप्यान साहित्यिक मनीषाओं की सहभागिता हेतु प्रयास।

3 जन्म शताब्दी समारोह (J.S.S) के विभिन्न आयोजनों में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से पूज्यवर के साहित्यकार स्वरूप को लोगों तक पहुँचाना।

4 देश की प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिकाओं, जैसे हंस, मधुमती इत्यादि में उनके सम्पादक की कलम से पूज्यवर के साहित्य पर सम्पादकीय लिखवाए जाएँ। साथ ही विभिन्न साहित्यकारों से मिशन की पुस्तकों पर पत्र–पत्रिकाओं में समीक्षाएँ लिखवाई जायें।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

5 भविष्य के लिए प्रस्तावित– जब उपरोक्त कार्यक्रम सुनिश्चित रूप ले लें, तब विश्वविद्यालयों के साहित्यिक प्रतिभा के धनी/साहित्यिक अभिरूचि सम्पन्न विद्यार्थियों, अधिकारियों तथा क्षेत्रीय युग निर्माणी कार्यकर्ताओं के अन्तर्गत निम्न आयोजन किए जा सकते हैं–

(1) त्रैमासिक साहित्यिक गोष्ठियाँ।

(2) त्रैमासिक साहित्यिक प्रतियोगितायें।

(3) इस विषय से सम्बन्धित कार्यक्रमों का लेखा–जेखा रखा जाए। जिसके आधार पर एक अच्छे स्तर की षट्मासी पत्रिका सम्पादित की जा सकती है, जिसमें पूज्य कुलपिता तथा उनके साहित्य पर बाहरी साहित्यकारों की समीक्षा/संस्मरण/लेख आमंत्रित करके प्रकाशित किए जायें। इस साहित्य मंथन के सार–संक्षेप को सदस्यता शुल्क के आधार पर क्षेत्रों में प्रचारित किया जाए।

6 जिसने अपने रंग से रंगों के भी अंग–अंग रंग दिये, रसों को भी सरस कर दिया। ऐसे जीवन चितेरे कुलपिता ने साहित्य संजीवनी पिलाकर राष्ट्रभाषा को कालयजी बना दिया। साहित्यिक सपने साकार करने की दिशा में विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग की स्थापना अहम भूमिका निभा सकती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भाषान्तर विभाग

विभिन्न भाषाओं में अनुवादित पुस्तकें

(1) 21 वीं सदी बनाम उज्जवल भविष्य भाग–1
(2) 21 वीं सदी बनाम उज्जवल भविष्य भाग–2
(3) युग की माँग प्रतिभा परिष्कार भाग–1
(4) युग की माँग प्रतिभा परिष्कार भाग–2
(5) सतयुग की वापसी
(6) परिवर्तन के महान क्षण
(7) जीवन साधना के स्वर्णिक सूत्र
(8) महाकाल का प्रतिभाओं को आमंत्रण
(9) प्रज्ञावतार की विस्तार प्रक्रिया
(10) नवसृजन के निमित्त महाकाल की तैयारी
(11) समस्याएँ आज की, समाधान कल के
(12) मनःस्थिति बदले तो परिस्थिति बदले
(13) स्त्रष्टा का परम प्रसाद प्रखर प्रज्ञा
(14) आद्यशक्ति गायत्री की समर्थ साधना
(15) शिक्षा ही नहीं, विद्या भी
(16) संजीवनी विद्या का विस्तार
(17) भाव संवेदनाओं की गंगोत्री
(18) महिला जागृति अभियान
(19) जीवन देवता की साधना–अराधना
(20) समयदान ही युगधर्म
(21) नवयुग का मत्सयावतार
(22) 21वीं सदी का गंगावतरण
(23) सबके लिए सुलभ उपासना साधना
(24) उपासना के 2 चरण जप और ध्यान
(25) गायत्री उपासना क्यों और कैसे?
(26) हमारा यज्ञ अभियान
(27) गायत्री विषयक शंका समाधान
(28) स्त्रियों का गायत्री अधिकार
(29) गायत्री मंत्र की विलक्षण शक्ति
(30) आत्मिक प्रगति के लिए अवलम्बन की आवश्यकता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(31) गायत्री की दैनिक साधना
(32) संक्षिप्त हवन पद्धति
(33) युग यज्ञ पद्धति
(34) युग संस्कार पद्धति
(35) मैं क्या हूँ?
(36) अध्यात्मवाद ही क्यों?
(37) समझदारों की ना समझी
(38) व्यवस्था बुद्धि की गरिमा
(39) हमारे साम आंदोलन
(40) ऋषि युग्म का परिचय

भाषायें जिनमें पुस्तकों का अनुवाद किया जा रहा है –

	भारतीय भाषा		विदेशी भाषा
1.	असमिया	1.	अंग्रेजी
2.	बंगला	2.	नेपाली
3.	उड़ीया	3.	चाईनीज
4.	मराठी	4.	स्पेनिश
5.	गुजराती	5.	फ्रेंच
6.	पंजाबी (गुलमुखी)	6.	पुर्तगीज
7.	उर्दू	7.	स्वाहिली
8.	सिन्धी		
9.	तेलगू		
10.	तमिल		
11.	कन्नड़		
12.	मलयाली		

सम्पर्क सूत्र :
मोबाइल 09358119918
E-mail : bpsk@awgp.org

ब्रह्मवर्चस् शोध संस्थान

शांतिकुंज के लगभग आधा कि.मी. दूर गंगा तट पर स्थित इस संस्थान के विशाल विस्तार के चार भाग हैं–

1. गायत्री की चौबीस शक्तिधाराओं के मंदिर
2. प्रयोगशाला
3. संदर्भ पुस्तकालय
4. वैज्ञानिक समुदाय

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गायत्री की चौबीस शक्तिधाराओं के मंदिर

गायत्री के चौबीस अक्षरों में चौबीस देवशक्तियाँ निवास करती हैं। इसलिए उनके अनुरूपों की ही पूजा–अर्चना की जाती है 1. आद्यशक्ति, 2. ब्राह्मी, 3. वैष्णवी, 4. शांभवी, 5. वेदमाता, 6. देवमाता, 7. विश्वमाता, 8. ऋतम्भरा, 9. मंदाकिनी, 10. अजपा, 11. रिद्धि, 12. ऋद्धि– इन बारहों को वैदिक कहा गया है।

बारह ज्ञान पक्ष की और बारह विज्ञान पक्ष की शक्तियों के मिलन से चौबीस अक्षर वाला गायत्री मंत्र विनिर्मित है। आचार्य जी ने गायत्री के आत्मिकी और आत्मभोतिकी दोनों पक्षों की गंभीर साधनायें कीं और उनके स्वरूपों को स्पष्ट किया। ब्रह्मवर्चस् शोध संस्थान के भूमितल पर इन चौबीस शक्तियों के भव्य मंदिर हैं। प्रत्येक मंदिर के दोनों ओर उस विशेष महाशक्ति की उपासना में प्रयोग आने वाले यंत्र–मंत्र एवं प्रयोगविधि तथा उसकी फलश्रुति का सांकेतिक विवरण दिया हुआ है। इस मंदिर निर्माण में मूर्ति विज्ञान, मंत्र विज्ञान व यंत्र विज्ञान के तत्वों का समग्र समावेश है।

प्रयोगशाला

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

प्रयोगशाला के तीन खण्ड हैं –

1. यज्ञ चिकित्सा की प्रयोगशाला,
2. आध्यात्मिक संसाधनों द्वारा शरीर, प्राण और मन अर्थात् समग्र जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का मापन करने वाली प्रयोगशाला,
3. वनौषधि अनुसंधानशाला और उससे जुड़ा हुआ वनौषधि उद्यान।

यज्ञ चिकित्सा की प्रयोगशाला –

यज्ञ के रोगोपचार, स्वास्थ सम्बर्धन, प्रकृति अनुकूल, वनस्पति संबर्धन जैसे अनेक पक्षों के वर्णन आर्ष ग्रन्थ करते हैं। यज्ञ चिकित्सा के इस पक्ष प्रयोग को परीक्षण की कसौटी पर कसने वाली वह प्रयोगशाला बहुमूल्य उपकरणों से सुसज्जित है। इनमें से सबका विवरण देना यहाँ समीचीन नहीं है। कुछ विशेष उपकरणों का परिचय यहाँ दिया जा रहा है।

थर्मोकपन यन्त्र – इसका उपयोग यज्ञाग्नि की ऊर्जा मापने के लिए किया जाता है। यह यन्त्र एक डालर पर 0 से 1100 डिग्री सेल्सियस तक तापमान बताने की क्षमता रखता है। याजक के पास कितनी ऊर्जा पहुंची एवं उससे दूर यज्ञ का लाभ लेने हेतु चारों ओर बैठे चुने हुए साधकों को कितना तापमान मिला, इसे मापने के लिए 0 से 200 डिग्री सेल्सियस तक का तापमान बताने वाले 'थर्मामीटर' रखे गए हैं। ये निर्धारण करते हैं कि यज्ञ प्रक्रिया में कितनी समिधाएं डाली जाएँ व आहुतियाँ कितनी हों?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अग्निहोत्र समिधाओं एवं हविष्य की एक धीमी ज्वलन प्रक्रिया है। कमल के आकार की सत्, रज, तम की प्रतीक तीन मेखलाओं वाले यज्ञ विज्ञान की इस प्रयोगशाला के इस केन्द्रीय मुण्ड का व्यास 31 सेमी. एवं गहराई 19 सेमी. है। यह पूर्णतः शास्त्रोक्त यज्ञ चिकित्सा के विधान से विनिर्मित है। जैसा कुण्ड का आकार है, वैसा ही धूम्र एकत्रीकरण हेतु ऊपरी मेखला से ऊंचाई पर एक हूड लगाया गया है, जो उठने वाले धूम्र को एकत्रित कर हौज नलिकाओं द्वारा चार कोनों पर स्थित चार उपकरणों तक पहुँचाता है। 'आर्सेट गैस एनालाइजर', 'ग्राह्य–लारेंस गैस एनालाइजर' तथा 'गैस लिक्विड क्रोमेटोग्राफी यन्त्र' के माध्यम से गैस स्पेक्ट्रम को और बढ़ाया जा सकता है। औषधि धूम्र में क्या कुछ है। जिससे सारी जानकारी स्वतः आ जाती है।

धूम्र कणों में विद्यमान आवेश को 'स्मोक आयन डिटेक्टर' यंत्र से मापते है। धूम्र को 'क्लाउड चेम्बर' एवं एक 'कम्बशन चेम्बर' से भी गुजारा जाता है। इससे कृत्रिम बादल बनाने एवं गैसों की परस्पर प्रक्रिया के यज्ञ भौतिकी पक्ष का विश्लेषण किया जाता है। इसके साथ ही जीवाणु, विषाणुओं पर धूम्र एवं भस्म की प्रतिक्रिया जानने के लिए 'अल्ट्रावायलेट किरण' की परिधि में कार्य करने हेतु 'आइसालेशन चेम्बर' है। जीवाणु वर्ग की कॉलोनीज पर औषधि धूम्र के प्रभाव का अध्ययन 'बाइनाकुलर, मोनोआकुलर, माइक्रोस्कोप' द्वारा करते हैं। यज्ञाग्नि की तीव्रता का मापन 'लक्समीटर' द्वारा किया जाता है। 'स्पेक्ट्रोस्कोप' द्वारा वर्ण विश्लेषण की प्रक्रिया सम्पन्न होती है। क्रोमोपैथी के अनुसार किन–किन वर्णों की प्रयोगकर्त्ता को आवश्यकता है, तदनुसार समिधा हविष्य का निर्धारण करते हैं। चरु में प्रयुक्त खाद्यान्नों के विश्लेषण हेतु 'सांक्सलेट फैट एक्सट्रेक्शन' का प्रयोग करते हैं।

यज्ञ प्रक्रिया में शब्द शक्ति – गायत्री मंत्र की ध्वनि ऊर्जा के विश्लेषण के लिए 'ऑसीलोस्कोप यंत्र' यहां रखा हुआ है। क्रिस्टलन माइक्रोफेन से मंत्र की ध्वनि तरंगें इस यंत्र तक पहुँचती हैं। शब्द तरंगों को फ्रीक्वेन्सी वेव पैटर्न तथा पिच के साथ लगे डेसीबल मीटर एवं इस यंत्र पर देखा जा सकता है। मैग्नैटिक डिस्क रिकार्डर के माध्यम से इन गूँजने वाली शब्द तरंगों को रिकॉर्ड कर लिया जाता है ताकि बाद में मंत्र शक्ति की विस्तृत जाँच 'रिवॉल्यूसन रिसर्च ऑसिलोस्कोप' से की जा सके। यज्ञ विज्ञान की प्रयोगशाला की ही भांति उच्चस्तरीय उपकरणों से सुसज्जित एक अन्य प्रयोगशाला में आध्यात्मिक साधनाओं के प्रभाव का विश्लेषण करते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आध्यात्मिक साधनाओं के मापन एवं विश्लेषण हेतु बनी प्रयोगशाला –

शोध संस्थान के प्रथम तल पर विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय को स्थापित करने में सहायक यह प्रयोगशाला 9 प्रमुख उपखण्डों में सक्रिय है –

1. **साइको फिजियोलॉजिकल एनालिसिस कक्ष** – यहाँ वैज्ञानिकों द्वारा शरीर और मन का विश्लेषण–अध्ययन किया जाता है।
2. **लंग फंक्शन कक्ष** – यहां प्राणायाम के प्रभावों का अध्ययन एक्सपायरोग्राफ एवं मिडस्पायरर यंत्र से करते हैं। मिडस्पायर यंत्र पूर्णतया कम्प्यूटराइज्ड है, जिससे प्राण शक्ति का विश्लेषण स्वचालित क्रम में हो जाता है।
3. **कार्डियोलॉजी कक्ष** – इस कक्ष में तीन विभिन्न उपकरणों का समुच्चय कार्डियक स्कोप हार्टरेट मीटर तथा ऑटोरिकार्डर के रूप में विद्यमान है। इससे ध्यान प्रक्रिया द्वारा हृदय पर पड़ने वाले प्रभावों की जाँच की जाती है।
4. **हिमेटोलाजी कक्ष** – हिमोग्लोबिन तथा रक्त कणों की संख्या व अनुपात, श्वेत कणों की संख्या व अनुपात, श्वेत कणों की संख्या व भिन्नता, कणों के जमने की गति आदि घटक मापे जाते हैं। साधना से एक माह में इनमें क्या परिवर्तन हुआ, इसके आधार पर भावी परामर्श दिया जाता है।
5. **बायोकेमेस्ट्री कक्ष** – इस कक्ष में रक्त की शर्करा, कोलेस्ट्राल आदि विभिन्न जैव रसायन तत्वों का विश्लेषण, स्पेक्ट्रोफोटोमीटर तथा आर.ए. 50 आदि यंत्रों से किया जाता है। इसमें से आर.ए. 50 यंत्र पूर्णतया कम्प्यूटराइज्ड है, जिससे बायोकेमेस्ट्री के लगभग 108 परिक्षण स्वचलित क्रम से किए जाते हैं।
6. **माइक्रोबॉयोलॉजी कक्ष** – यहाँ इन्क्यूबेटर, ओवर, कॉलोनी काउन्टर, आइसोलेशन चैम्बर व अल्टावॉयलेट लैंप के माध्यम से रोगाणुओं की कॉलोनी विभिन्न प्रकार के कल्चरमीडिया में पैदा की जाती है तथा माइक्रोस्कोप द्वारा उनकी स्थिति विभिन्न समयों पर देखी जाती है।
7. **इलेक्ट्रो–फिजियालोजी कक्ष** – शरीर की विद्युत सूक्ष्म जीवकोषों एवं स्नायुओं का उत्पादन है, जो बहिरंग में त्वचा, मांसपेशियों, आँखों की हलचल, हृदय के वाल्वस की ध्वनि तथा स्नायु समुदाय व हृदय के पेसमेकर की हलचल की प्रतिक्रिया स्वरूप स्किन रेसिस्टेन्स, इलेक्ट्रोमायोग्राम, निस्टेग्मोग्राम, फोनो कार्डियोग्राम, इलेक्ट्रो इन्केफ्लोग्राफ के रूपों में अंकित होती है। इन सभी के मापन की व्यवस्था तेईस चैनल ई.ई.जी द्वारा की जाती है। इसके अलावा अल्फा ई.ई.जी. बायोफीड बैंक का भी उपयोग इस क्रम में किया जाता है। बायोफीड बैंक के इस क्रम में रेस्पाइरेशन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बायोबीफबैंक, टेम्परेचर बायोफीड बैंक व जी.एस.आर. बायोफीड बैंक की भी सुविधा यहां उपलब्ध है। ताकि ध्यान प्रक्रिया का गंभीरता से अध्ययन किया जा सके।

8. **साइकोमेट्री कक्ष** – इस कक्ष में आडियो–विजुअल रिएक्शन टाइम, एप्टीट्यूड, लर्निंग मैजेज, स्ओडीनेस, मिरर ट्रेसिंग, साइजवेट इल्यूजन, ममुलरायर इल्यूजन, पिरामिड पल, मेसन्स डिस्क, मेमोरीड्रम, टैक्टिटोस्कोप, मसल्स फटीग, जी.आर.आर. आदि के द्वारा आई.क्यू. स्मरण शक्ति, सीखने की सामर्थ्य आदि विभिन्न मानसिक क्षमताओं पर आध्यात्मिक साधनाओं का प्रभाव देखा जाता है।

9. **ध्वनि विज्ञान कक्ष** – कक्ष में विभिन्न यंत्रों के माध्यम से शब्द शक्ति की प्रभावोत्पादकता का पता किया जाता है।

वनौषधि अनुसंधान शाला –

यहां विभिन्न उपकरणों से विविध प्रकार की जड़ी–बूटियों के रासायनिक विश्लेषण एवं उनके प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके विविध प्रयोगों को सम्पन्न करने के लिए ब्रह्मवर्चस् शोध संस्थान के परिसर में ही अनुसंधानशाला से ही जुड़ा बनौषधि उद्यान है, जहां बकुल, ब्राह्मी, जटामांसी, बच, सर्पगंधा, अश्वगंधा, पुनर्नवा, कण्टकारी, केवकान्द, बला, अतिबला, वृद्धदारू, भूर्वा, गोखरू, कालमेध, अपमार्ग एवं गिलोय आदि लगभग दो सौ दुर्लभ औषधियां लगायी गयी हैं। इन औषधियों पर जहां एक ओर यज्ञ धूम्र के प्रभाव को देखा जाता है, वही 'फाइटो कैमिस्ट्री लैब' में इनके गुण–धर्म का परीक्षण किया जाता है, ताकि आयुर्वेद को अपने मूल स्वरूप में लाया जा सके।

पुस्तकालय में हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, पारसी, बौद्ध, ताओ आदि विभिन्न धर्मों के साहित्य के अतिरिक्त तन्त्र, ज्योतिष, भारतीय एवं पश्चिमी दर्शन, इतिहास व संस्कृति, समाज विज्ञान, राजनीति, मनोविज्ञान, आयुर्वेद, आधुनिक चिकित्सा विज्ञान, रसायनशाला, भौतिक विज्ञान, खगोल विज्ञान, जन्तुविज्ञान, वनस्पति शास्त्र आदि अनेक विषयों की लगभग 50000 पुस्तकों का बहुमूल्य संग्रह है। इन संदर्भ ग्रन्थों के अलावा पुस्तकालय में एन्सायक्लोपीडिया ब्रिटैनिका, एन्सायक्लोपीडिया अमेरिकाना, एन्यायक्लोपीडिया ऑफ रिलीजन एण्ड इथिक्स, एन्सायक्लोपीडिया ऑफ साइन्स एण्ड टेक्नोलॉजी, वेल्थ ऑफ इण्डिया, एन्सायक्लोपीडिया ऑफ फिलासफी जैसे बीस विश्व कोष संग्रहीत हैं। इस संग्रह के साथ पुस्तकालय में टाइम, न्यूजवीक, साइन्स लेन्सेट, साइन्टिफिक अमेरिकन, जर्नल ऑफ इण्डियन काउन्सिनल ऑफ फिलासिफकल रिसर्च, जैसी 300 विश्व–विख्यात पत्रिकाएं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपने साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, द्विमासिक एवं त्रैमासिक क्रम से आती है। इस पुस्तकालय में यहाँ के शोधकर्ता वैज्ञानिकों के अतिरिक्त अन्य अनुसन्धानरत छात्र, छात्राओं के अध्ययन की भी सुविधा है।

ब्रह्मवर्चस् के मनीषी वैज्ञानिक

शोध संस्थान में कार्यरत अनुसन्धान कर्मियों के दो वर्ग हैं – पहला वर्ग मनीषियों का है, इस वर्ग में वे लोग, जो जीवन के सामाजिक, राजनैतिक, दार्शनिक पहलूओं के अध्ययन और शोध से संलग्न है। दूसरा वर्ग वैज्ञानिकों का है इस वर्ग में वे लोग हैं, जो यज्ञ, चिकित्सा, वनौषधि अनुसंधान तथा मानवीय व्यक्तित्व पर आध्यात्मिक साधनाओं के प्रभाव पर कार्य कर रहे हैं। इन मनीषी और वैज्ञानिकों के दो स्तर हैं – पहला स्तर उन लोगों का है, जो शोध संस्थान में स्थायी रूप से रहकर अपनी सेवाएँ संस्था को समर्पित कर रहे हैं। इन लोगों की संख्या लगभग 27 है, इनमें पुरुष भी हैं और महिलाएँ भी। शिक्षा और योग्यता की दृष्टि से ये सभी एम.डी., एम.एस., पी.एच.डी., एम.टेक., एमएससी, एम.ए. स्तर के हैं। इनमें से कोई व्यक्ति वेतनभोगी कर्मचारी नहीं है। सभी ने आचार्य जी के विचारों से प्रभावित होकर अपना जीवन लोकहित के लिए समर्पित किया है।

दूसरे स्तर के लोग, जिनकी योग्यता तो उपरोक्त स्तर की है, परन्तु वे बाहर क्षेत्रों में रहकर शोध कार्य में सहयोग देते हैं। समय–समय पर वे लोग आवश्यकता के अनुसार तीन मास, छः मास अथवा एक वर्ष का समय दान करके शोध संस्थान में रहकर भी शोध कार्य को गति देते हैं। इस तरह कार्यरत देश और विदेश के अनुसन्धानकर्मियों की संख्या दस हजार से भी ऊपर है। इन सभी का मार्गदर्शन, दिशा निर्देशन, ब्रह्मवर्चस् शोध संस्थान के निदेशक, डॉ. प्रणव पण्ड्या करते हैं।

ब्रह्मवर्चस के शोध उद्देश्य

शोध संस्थान की स्थापना के समय आचार्य जी ने ब्रह्मवर्चस्व में की जाने वाली शोध के चार उद्देश्य निश्चित किए थे–

1. वैज्ञानिक अध्यात्म के रूप में जीवन दर्शन की खोज।
2. अध्यात्म उपचारों द्वारा व्यक्तित्व की अन्तर्निहित शक्तियों का जागरण एवं इसकी वैज्ञानिकता।
3. एकौषधि अनुसन्धान।
4. यज्ञ चिकित्सा द्वारा समग्र स्वास्थ्य।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शोध की प्रक्रिया –

1. समग्र जीवन दर्शन की खोज –

परमपूज्य आचार्य जी के अनुसार दर्शन बौद्धिक क्रीड़ा न होकर जीवन दृष्टि है। यह दृष्टि जितनी पैनी, गहरी, व्यापक और समग्र होगी, जीवन को उतनी ही समग्रता से देखा–समझा और पहचाना जा सकेगा। समस्याओं का सही स्वरूप समझ में आने से समाधान भी सही मिल सकेंगे। जीवन कोई नितान्त शरीर के भीतर सिमटा हुआ तत्व नहीं है। मन की कल्पनाएँ चेतना का उत्कर्ष एक ओर उसे ईश्वर से जोड़ता है तो जीवन की आवश्यकताएँ उसका सौन्दर्य बोध प्रकृति से मिलाती हैं। अपनी समग्रता में मनुष्य प्रकृति और परमेश्वर दोनों से अविछिन्न रूप से जुड़ा है। जीवन दर्शन की समग्रता में इन तीनों के अन्तर्सम्बन्धों की व्याख्या भी समग्र होनी चाहिए।

ऐसे दर्शन, जिन्होंने मनुष्य को तो अपनाया लेकिन प्रकृति और परमेश्वर को भुला बैठे, यदि प्रकृति को यत्किंचित याद भी किया तो अपने स्वार्थ के लिए। ऐसे दार्शनिक मतों ने मानवी चेतना के उत्कर्ष के सारे रास्ते बन्द कर दिए। फलतः कल्पनाओं और भावनाओं की घुटन पे इन दार्शनिक सिद्धान्तों को स्वतः नकारना शुरू कर दिया। साम्यवाद का पतन इसी का परिणाम है, जो इस बात का द्योतक है कि इन्सान की नियति सामाजिक प्राणी बनना न होकर देव मानव बनना है। प्रकृति को सब कुछ मान बैठने वाले वैज्ञानिकों वे मनुष्य और प्रकृति के पारस्परिक सम्बन्धों की गहराई को विस्मृत कर प्रकृति का इस कदर दोहन और शोषण किया कि प्रदूषण, पर्यावरण जैसे अनेकों विपदाएँ खड़ी हो गयीं और ऐसा लगने लगा कि मनुष्य विनास के कगार पर जा पहुंचा है। जिन्होंने ईश्वर को सब कुछ माना, उन्होंने सम्बन्धों के आधार पर जीवन को ही नकारना शुरू कर दिया। प्रकृति और मनुष्य को सर्वथा हेय समझने वाले इस चिन्तन ने जीवन का अर्थ ही खो दिया।

सन् 1990 से पूर्व आचार्य जी के निर्देशन में और अब डॉ. पण्ड्या के मार्गदर्शन में काम करने वाले ब्रह्मवर्चस्व के अनुसंधान कर्मियों की टीम देश और विश्व के विभिन्न भागों में जाकर वहां की प्रथाओं, परम्पराओं, प्रचलनों, मान्यताओं, मूल्यों नीतियों का नए सिरे से अध्ययन कर रही है। यहां के शोधार्थी अपने देशव्यापी, विश्वव्यापी सर्वेक्षण में इस बात को गहराई से जानने की कोशिश में लगे हैं कि वर्तमान के और भविष्य के मनुष्य के जीवन के समाधान क्या हैं? उनकी जीवन दृष्टि क्या होनी चाहिए? ऋषियों का गौरवपूर्ण अध्यात्म विज्ञान इस उद्देश्य को पूरा कर सके, इसके लिए उसमें किस संशोधन अथवा परिवर्धन की आवश्यकता है? मनुष्य के व्यक्तित्व और समाज पर इसका क्या प्रभाव है? इस समाज और व्यक्ति पर किए गए मनोवैज्ञानिक प्रयोगों, शोध निष्कर्ष के आधार पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ऐसा सरंजाम जुटाया जा रहा है, जो मानव शक्तियों का क्षरण रोके, प्रकृति के साथ सम्बन्ध को मधुर बनाकर उसे विकास की ओर ले जाये।

व्यक्तित्व की अन्तर्निहित शक्तियों के जागरण की प्रयोग प्रक्रिया –

इस प्रक्रिया के अन्तर्गत शान्तिकुंज के तपः पूत वातावरण में एक मासीय और नौ दिवसीय साधना सत्र आयोजित किए जाते हैं। इन साधना सत्रों का क्रम पूरे वर्ष अबाध गति से चलता रहता है। एक मासीय सत्र प्रति मास की 1 तारीख से शुरू होकर 30 अथवा 31 तारीख को समाप्त होते हैं। नौ दिवसीय शिविर प्रतिमास की 1 से 9, 11 से 29, 29 से 30 तारीखों में संचालित होते हैं। इन दोनों सत्रों के साधना क्रम अलग–अलग हैं, जिनका निर्देशन आचार्य जी एवं माता भगवती देवी के बाद उनकी परम तपस्विनी पुत्री शैलबाला पण्ड्या करती हैं। आने वाले साधक उन्हीं से साधना सम्बन्धी परामर्श एवं मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं। भागीदार साधकों–साधिकाओं को आचार्य जी द्वारा प्रतिपादित वैज्ञानिक अध्यात्म के साधनात्मक प्रयोगों को निर्देशित क्रमानुसार सम्पन्न करना होता है। साधना–क्रम के अलावा भागीदार साधक शांतिकुंज में संचालित होने वाले लोकहित के कार्यक्रमों में भाग लेकर जीवन और साधना में एकात्मता सिद्ध करते हैं।

इन भागीदार साधकों–साधिकाओं का प्रथम परीक्षण साधनात्मक प्रयोग से पूर्व तथा साधनात्मक प्रयोग के बाद होता है। इन परीक्षणों के द्वारा आध्यात्मिक साधनाओं के प्रभावों का मापन होता है। शिविर समाप्त होने पर भागीदार व्यक्तियों को एक निश्चित साधनाक्रम को जारीख रखने का निर्देश दिया जाता है तथा शोध प्रविधि के अनुरूप उन्हें एक निश्चित समय के अन्तराल में पुनः बुलाया जाता है। बुलाए जाने का यह क्रम 'एक्सपेरीमेण्टल डिजाइन' के अनुसार होता है, जिसका उद्देश्य यह जानना होता है कि व्यक्तित्व की अन्तर्निहित शक्तियां किस क्रम में विकसित हो रही हैं। ब्रह्मवर्चस् के वैज्ञानिकों के अनुसार ये प्रभाव मनोरोगों की समाप्ति, प्रतिभा जागरण, पारिवारिक सामंजस्य, सामाजिक उत्कर्ष, अन्तर्दृष्टि के विकास के रूप में देखे गए हैं।

एकौषधि अनुसन्धान –

आयुर्वेद के विकास का इतिहास देखने पर ज्ञात होता है कि वैदिक काल में वनौषधियों का उपयोग उनके प्राकृतिक रूप में ही होता था। आसव–अरिष्ट का प्रयोग बाद में आरम्भ हुआ। रसोपारद योगों का इतिहास तो मात्र नौ सौ वर्ष पुराना है। वस्तुतः आर्यकाल को ही आयुर्वेद का स्वर्ण युग माना जाता है। आचार्य धन्वन्तरि से प्रारम्भ होकर यह चरक ऋषि पर समापत होता है। अथर्ववेद में 100

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सूक्त मात्र आयुर्विज्ञान पर हैं। जिनमें रोग निर्णय, चिकित्सा, लक्षण, शरीर तथा औषधियों का वर्णन है। वैसे तो चारों वेदों में थोड़ा–थोड़ा वर्णन आयुर्विज्ञान संबंधी है, पर मूलतः अथर्ववेद ही आयुर्वेद का जनक माना जाता है। 'इह खलु आयुर्वेद षष्टांगमुमांगमथर्ववेदस्य।' इसी कारण आज की प्रचलित आयुर्वेदिक औषधियों को ही प्रधान न मानकर उनके मूल स्रोत को देखा जाना जरूरी है। यहाँ उन्हें उनके प्राकृतिक स्वरूप में ही ग्रहण किए जाने का वर्णन किया गया है। शेष तो मध्य काल में जोड़े गए विधान हैं, जिनमें सभी संहिताएँ एवं निघण्टु आ जाते हैं।

मध्यकाल में यह भुला दिया गया है कि सम्मिश्रण से श्रेष्ठ एकौषधि है एवं वास्तविक सामर्थ्य तो उसके सक्रिय संघटकों में छिपी पड़ी है। वैदिक साहित्य के अलावा एकौषधि के सम्बंध में सर्वाधिक मंथ होम्योपैथी के साहित्य में मिलता है। डॉ. सैमुअल हैनीमैन ने सम्मिश्रण फार्मूले का विरोध करते हुए 'क्रॉनिक डिसिसेज' में लिखा है कि जीर्ण रोगों की उत्पत्ति का प्रधान कारण ही अनावश्यक औषधियों का प्रयोग है। यदि एक समय में एक ही अधिक औषधियाँ मिलाने पर जो अगणित समस्याएँ उठ गड़ी होती हैं, उनका 'ड्रग इन्कम्पेटोविलिटी' नामक ग्रन्थ में विस्तृत वर्णन है। डॉ. इरविक मार्टिन ने अपनी बहुचर्चित पुस्तक 'हेजार्ड्स ऑफ मेडिसिन' में इसकी चर्चा लगभग दो–सौ पृष्ठों में की है।

परमपूज्य पं. आचार्य श्रीराम शर्मा जी ने इसका हल 'एकौषधि विज्ञान' के रूप में निकाला है। उनकी संकल्पना के अनुसार ब्रह्मवर्चस्व के चिकित्साविदों ने मुलहठी, आंवला, हरड, विल्व, अडूसा, भरंगी, अर्जुन, पुनर्नवा, शंखपुष्पी, ब्राह्मी, निर्गुण्डी, सुण्ठी, नीम, सारिवां, चिरायता, गित्तेय, अशोक, गोक्षुर, शतावर, अश्वगंधा इन बीस औषधियों पर सफल प्रयोग परीक्षण करके सिद्ध किया है कि अपने गुण–धर्म के अनुसार किसी एक औषधि का पिसा हुआ चूर्ण उसके अनुरूप रोग का निवारण करने में समर्थ है। उदाहरण के लिए अकेले आंवला का चूर्ण ऊपरी पाचक संस्थान के रोगों के लिए पर्याप्त है।

यज्ञ चिकित्सा

समग्र स्वास्थ्य के लिए यज्ञ चिकित्सा के प्रभाव यजुर्वेद और अथर्ववेद में बहुतायत से मिलते हैं। वर्तमान समय में लुप्तप्राय इस प्रक्रिया को आचार्य जी ने न केवल पुनर्जीवित करने का प्रयास किया है, बल्कि उसे सशक्त वैज्ञानिक आधार भी प्रदान किया है। यह चिकित्सा पद्धति इस सिद्धान्त पर आधारित है कि रोग का वास्तविक कारण कीटाणु नहीं, बल्कि जीवनी शक्ति का क्षरण है। रोग के कीटाणु तो प्रायः वातावरण से विद्यमान रहते हैं, पर उसका प्रभाव उन्हीं पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

होता है, जिनकी जीवनी शक्ति कमलोर हो गयी है। यज्ञ विज्ञान वातावरण के परिशोधन के साथ जीवनी शक्ति के संवर्धन की सशक्त प्रक्रिया है।

इस प्रक्रिया का शोध अनुसंधान ब्रह्मवर्चस में इस हेतु बनी प्रयोगशाला में सम्पन्न किया जाता है। डॉ. प्रणव पण्ड्या के अनुसार यह मूलतः ध्वनि, ताप एवं भाव शक्ति का समन्वित प्रयोग है। इसके लिए प्रयोग किए जाने वाले मुख्य तत्व निम्न हैं। वनौषधियाँ, समिधाएँ, घृत, पूर्णाहुति में होमे जाने वाले पदार्थ, याधूम्र, यज्ञ ऊर्जा, यज्ञाविशष्ट एवं भस्म, चरु, कलश जल, मन्त्र शक्ति एवं कर्मकाण्ड, याजक गण, धर्मानुष्ठानों से जुड़ी तपश्चर्यायें। वेदों में इस तरह के यज्ञ को भैषज यज्ञ कहा है – 'भैषजकृतो हवा एवं यौवंविद ब्रह्मा भवति' अर्थात् उनमें वैद्यक शास्त्रज्ञ ब्रह्मा होता है, वे भैषज यज्ञ है।

1. **मन्द बुद्धि के लिए** – वन तुलसी के बीज, अपामार्ग, इन्द्रायण, करंजा की गिरी, दारूहल्दी, चौलाई के पत्ते, बिनौले की गिरी, लाल चन्दन।

2. **मष्तिष्क रोग के लिए** – बेर की गुठली का गूदा, मौलसिरी की छाल, पीपल की कोपलें, इमली के बीजों का गूदा, काकजंघा, बरगद के फल, खिरैटी, गिलोय।

3. **शीत ज्वर के लिए** – पटोल पत्र, नागरमोथा, मुटकी, नीम की छाल, गिलोय, कुड़े की छाल, करंजा, नीम के पुष्प।

यहां के निदेशक डॉ. प्रवण पण्ड्या के अनुसार इस सम्बंध में अब तक यहां किए गए प्रयोगों के परिणाम बहुत उत्साहवर्धक रहे हैं, जिससे तकरीबन 50000 लोग लाभान्वित हो चुके हैं। डॉ. पण्ड्या का कहना है कि यहां के द्वारा देश–विदेश में संचालित–आयोजित यज्ञों का उद्देश्य मानवता को समग्र स्वास्थ्य उपलब्ध कराना है। हम अपनी प्रयोगशाला में जिन औषधियों को जीवनी शक्ति संवर्धन एवं प्रतिभा जागरण के लिए उपयोगी पाते हैं, उन्हीं का व्यापक स्तर का प्रयोग अपने यज्ञों में करते हैं। इसके लाभकारी परिणामों का सर्वेक्षण अध्ययन गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ता देश और विदेश में कर रहे हैं। निकट भविष्य में उनका प्रकाशन किया जा सकेगा।

अग्निहोत्र : स्वास्थ्य, एवं कृषि पर प्रभाव

अग्निहोत्र, कृषि, पर्यावरण तथा प्राणीजगत के लिए एक वरदान है। प्रदूषित हो रहे पर्यावरण में जीवन जीना दूभर हो रहा है। जीवन के अस्तित्व को चुनौती दे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रहे पर्यावरणीय प्रदूषण का कारगर समाधान प्रस्तुत करता है अग्निहोत्र का विज्ञान।

यज्ञ – यज्ञ द्वारा वायु मण्डल की शुद्धि होती है। वायुमण्डल के शुद्ध रहने से हमारा मन शुद्ध रहता है इससे तन स्वतः स्वस्थ रहेगा।

पर्यावरण – 'अग्निहोत्र' के अनेक लाभ है। आकाश में व्याप्त गंदगी की काट करने की अग्निहोत्र में अपूर्व क्षमता है। यदि बड़ी संख्या में अग्निहोत्र हो और उनकी श्रृंखला बराबर चलती रहे तो बढ़ा हुआ वायु प्रदूषण जो टी.बी. दमा, कैंसर, अनिद्रा, तनाव, हृदय रोग, मधुमेह उत्पन्न करता है, का उचार हो सकता है।

जिस स्थान पर अग्निहोत्र होता रहता है तो अग्निहोत्र पात्र (पिरामिड आकार का) से स्पन्दन (Vibration) बना रहता है। उस स्थान की वनस्पति, पेड़–पौधों आदि को पोषक तत्व मिलने के कारण उनमें प्रफुल्लता मिलती है और वे सदा हरे–भरे रहते हैं। खादों तथा कीटनाशकों के दुष्प्रभाव को समाप्त करने में यह सक्षम है।

अग्निहोत्र का पर्यावरण में महत्व – आज कल यूरोप में बसों, कारों तथा दुकानों में स्टीकर लगे देखे जातें हैं "Heal the atmosphere Perform agnihotra" "अग्निहोत्र करों और वायुमण्डल स्वस्थ रखो"। प्रदूषण के कारण पर्यावरण में पुष्टिकारक तथ्वों का खात्मा हो रहा है। उन तत्वों की भरपाई करने में अग्निहोत्र पूर्णतया समर्थ है।

अग्निहोत्र का वैज्ञानिक आधार – यज्ञ का धूम्र आकाश में जाकर बादलों में एक विशेष प्रकार की सूक्ष्म खाद के रूप में मिल जाता है। वर्षा के जल के साथ जब वह पृथ्वी पर आता है तो उससे परिपुष्ट अन्न, घास वनस्पतियां उत्पन्न होती हैं, जिनके सेवन से मनुष्य तथा पशु–पक्षी सभी परिपुष्ट होते है। मंत्रोच्चार के ध्वनिकम्पन से लोगों का मानसिक परिष्कार भी होता हैं।

पौध क्रियाशीलता और अग्निहोत्र – अग्निहोत्र से वातावरण में फैलने वाला धुआँ पेड़ों, पौधों की पत्तियों को प्रभावित करता है। पत्तियों के सम्पर्क में आते ही धुआँ क्लोरोफिल उत्पन्न करने में उत्प्रेरक का कार्य करता है।

बगीचों पर प्रभाव– बगीचों में अग्निहोत्र को विधि–विधान से किया गया तो पाया गया कि सामान्य फलों की अपेक्षा फलों का आकार दुगुना और संख्या अधिक होती है।

वेदों में कृषि– यज्ञ से उत्पन्न पौष्टिक वायु, जल, धूम्र एवं भस्म से अन्न में रस, स्वाद, आरोग्य एवं पौष्टिकता की प्राप्ति होगी। मल एवं कृत्रिम खादों से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उत्पन्न अन्न को खाकर मनुष्य क्रूर और हिंसक होता जा रहा है। जबकि यज्ञों से उत्पन्न अन्न का खाने से मनुष्य में दया, प्रेम, सद्भाव परोपकार और सहयोग की भावना जागृत होती है।

यज्ञ भस्म का कृषि में उपयोग– यज्ञ सम्पन्न होने के बाद अग्नि को शांत होने के लिए 12 घण्टे के लिए छोड़ दिया जाता है, तब उस भस्म को खेतों में फैला देना चाहिये। यज्ञ की भस्म और उससे उपजने वाली फसल के अन्न भी उस खुशबू में सरोबार हो जाते हैं, जिन्हें खाने पर एक अलग सुगन्ध और स्वाद का एहसास होता है। अन्न के दाने संख्या में अधिक, आकार में बड़े तथा स्वाद में मधुर होते है। फसल को हानि पहुँचाने वाले शत्रु कीटों में फसल मुक्त रहती है।

गोबर का उपला– देशी गाय के गोबर में अमोनिया, फार्मेलिन तथा नाईट्रोजन, मिन्थाल, इन्डाल, फास्फोरिक ऐसिड व पोटास पाया जाता है। कन्डे की राख एक विलक्षण दुर्गन्ध रोधी होने के साथ ही कीट संघारक भी है। इसका उपयोग कृषक लोग अपने खेतों में वर्षो से खाद तथा कीट रोधक के रूप में कर रहे हैं। खेत में इसकी खाद पड़ने से दीमक आदि कीड़े नहीं हो पाते तथा फसल अच्छी होती है। इसीलिए देशी गाय के गोबर का कन्डा प्रयोग किया जाता है।

गोबर का कंडा सफाई से बना होना चाहिये। गोबर में कंकड़, पत्थर, मिट्टी, पत्तियां या घास आदि नहीं रहनी चाहिये। कंडा गोल तथा पतला रोटी के आकार में बनवाना चाहिये ताकि सुलगने में सुगमता रहे।

चावल – पालिस रहित बिना टूटे हुए चावल का प्रयोग उन्नत होता है।

घी – देशी गाय के घी में विशेष औषधीय गुण होते हैं। अग्निहोत्र में प्रयोग के समय यह अदृश्य ऊर्जाओं के वाहक के रूप में कार्य करती है एवं शक्ति शाली ऊर्जा इसमें बंध जाती है। चावल के साथ दहन के समय इससे आक्सीजन, इथोरिन आक्साईड, प्रोपाईलीन आक्साइड एवं फार्मेल्डिहाइक गैंसे उत्पन्न होती है। फार्मेल्डिहाइड जीवाणुओं के खिलाफ प्रतिरोधी शक्ति प्रदान करती है। प्रोपाईलीन आक्साईड वर्षा का कारण बनती है।

अग्निहोत्र की आग तैयार करने की विधि – सूर्योदय या सूर्यास्त से 8–10 मिनट पहले अग्निहोत्र पात्र में सर्वप्रथम एक चपटे आकार का उपले का टुकड़ा केन्द्र में रखते हैं। उसके ऊपर उपलों के टुकड़ों को इस प्रकार रखा जाता है, जिससे पात्र के मध्य वायु का आवागमन सुचारू रूप से हो सके।उपले के एक टुकड़े में गाय का थोड़ा घी लगाकर अथवा घी चुपड़ी रुई की बत्ती की सहायता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

से अग्नि प्रज्ज्वलित की जाये। शीघ्र ही रखे हुए अन्य उपले भी आग पकड़ लेंगे।

अग्निहोत्र का समय – ठीक सूर्योदय के समय विभिन्न प्रकार की अग्नि, ईथर एवं सूक्ष्म शक्तियाँ सूर्य से निकलकर पृथ्वी की ओर बहती हैं। यह प्रभाव अपने रास्ते में आने वाली अशुद्धता को नष्ट कर सभी को नवजीवन देता है। सूर्योदय और सूर्यास्त के समय के अग्निहोत्र के मंत्र बड़े ही प्रभावकारी होते हैं। दिन भर यह शक्तियां पृथ्वी पर बरसती रहती है और सायंकाल सूर्यास्त के समय यह वापस चली जाती है। अतः इन दोनों सन्धि बेलाओं में ही अग्निहोत्र का महत्व है।

अग्निहोत्र प्रक्रिया – तैयार अग्नि में ठीक सूर्योदय अथवा सूर्यास्त के समय पहले से बाएँ हाथ में कुछ चावल के दाने (लगभग एक चाय चम्मच) लेकर उसमें जरा सा घी डालें कि चावल भीग जाय। सही समय पर मन्त्रोचारण के साथ स्वाहा शब्द पर लिये गये घी चावल का आधा भाग अग्नि में डालें।

अग्निहोत्र मन्त्र – (सूर्योदय के समय) **1. सूर्याय स्वाहा, सूर्याय इदम् न मम्।** (चावल घी मिश्रित प्रथम भाग स्वाहा उच्चारण के साथ अग्नि में डालें) **2. प्रजापतये स्वाहा, प्रजापतये इदम् न मम्।** (चावल घी मिश्रित द्वितीय भाग स्वाहा उच्चारण के साथ अग्नि में डालें)

(सूर्यास्त के समय) **1. अग्नए स्वाहा, अग्नए इदम् न मम्।** (चावल घी मिश्रित प्रथम भाग स्वाहा उच्चारण के साथ अग्नि में डालें) **2. प्रजापतये स्वाहा, प्रजापतयें इदम् न मम्।** (चावल घी मिश्रित द्वितीय भाग स्वाहा उच्चारण के साथ अग्नि में डालें। अग्निहोत्र के समय तांबे के पात्र के आस–पास प्रचण्ड मात्रा में विशिष्ट ऊर्जा एकत्रित होती है तथा पात्र के पास चुम्बकीय क्षेत्र का निर्माण होता है, जोकि नकारात्मक ऊर्जा को निष्क्रिय कर देता है तथा सकारात्मक ऊर्जा को प्रबल बनाता है, जिसका लाभ सभी प्राणियों तथा वनस्पतियों को प्राप्त होता हैं)

जब हम अग्निहोत्र के पास बैठते हैं और उसके धूम्र को श्वांस द्वारा अन्दर लेते हैं तो वह फेफड़े व रक्त शिराओं में जल्द ही फैल जाता है। इसका रक्त संचार पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ता है साथ ही यदि हम अग्निहोत्र भस्म का सेवन करें तो और भी अधिक प्रभावशाली होता है। अग्निहोत्र से निकले वाले धुएं का मस्तिष्क एवं स्नायुतन्त्र पर अच्छा प्रभाव पड़ता है।

अग्निहोत्र से रोग निवृत्ति – प्रातःकाल इस भस्म को कपड़े से छान कर रख लिया जाता है इसके लिए किसी कॉच के पात्र पर एक धोती के टुकड़े को तान कर बांध दिया जाता है। इस पर अग्निहोत्र भस्म डाल कर कपड़े पर हाथ से रगड़ा जाता है, जिससे भस्म पाउडर के रूप में बर्तन में इकट्ठा होता रहता है, जब सारी भस्म छन जाती है तो ऊपर कुछ मोटा सा अवशेष बच जाता है उसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

किसी पेड़–पौधों की जड़ में डाल देना चाहिए, जो खाद का काम करता है।

पशुओं पर अग्निहोत्र का प्रयोग – यह भस्म जिस प्रकार मानव रोगों में लाभ पहुँचाती है, उसी प्रकार पशुओं के रोगों में भी लाभदायक है। यह भस्म उनको चारे अथवा पानी में मिलाकर दी जा सकती है।

पानी को शुद्ध करना – पीने के पानी को शुद्ध करने के लिए एक बाल्टी पानी में एक मुट्ठी अग्निहोत्र भस्म डालकर रख देते हैं। भस्म नीचे बैठ जाने पर पानी निथारकर प्रयोग करते हैं। यह स्वच्छ, प्रदूषण रहित तथा रोगाणु रहित हो जाता है।

व्यसन मुक्ति हेतु – नशेबाज को जहां अग्निहोत्र किया जा रहा हो वहां पर बैठाने अथवा लिटाने का परिणाम यह होता है कि व्यसनी व्यक्ति स्वयं व्यसन छोड़ देता है।

ब्रह्मवर्चस् शोध संस्थान की शोध प्रक्रिया का प्रत्यक्षीकरण –

ब्रह्मवर्चस्! शोध संस्थान की शोध प्रक्रिया को जानने, समझने, प्रत्यक्ष करने के लिए शांतिकुंज के वातावरण का शरीर प्राण और मन पर प्रभाव तथा पं. आचार्य श्री राम शर्मा जी के वैज्ञानिक अध्यात्म से व्यक्तित्व की अन्तर्निहित क्षमताओं का विकास, इन दो विषयों पर अध्ययन किया जाना चाहिए।

इस अध्ययन क्रम में शरीर, प्राण और मन पर आध्यात्मिक प्रक्रियाओं के प्रभावों के मापन हेतु जिन पैरामीटर्स का उपयोग किया गया, उनका विवरण इस प्रकार है –

1. नाड़ी दर – यह प्रति मिनट नाड़ी की गति का मापन है। सामान्य क्रम में यह दर 62 से 76 प्रति मिनट होती है। इसको स्टॉप वाच या मेनोमीटर से मापा जाता है। इसका सामान्य से अधिक बढ़ना बुखार, शरीर में दर्द, घबराहट, तनाव को सूचित करता है। इसका सामान्य से कम हो जाना डिस्निया श्वास लेने में कठिनाई के रोग को सूचित करता है। इसका असामान्य से सामान्य की ओर बढ़ना या घटना स्वास्थ्य में सुधार और तनावरहित होने का सूचक है।

2. श्वसन दर – यह प्रति मिनट श्वास–प्रश्वास की गति कामापन है। इसकी सामान्य दर 16 से 17 मिनट होती है। इसको स्टॉप वाच या मोनोमीटर से मापते हैं। इसका सामान्य से अधिक बढ़ जाना उत्तेजना, घबराहट या तनाव को सूचित करता है। सामान्य से कम होना डिस्निया का सूचक है। असामान्य से सामान्य की ओर बढ़ना या घटना स्वास्थ्य में सुधार और तनाव युक्त होने का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सूचक है।

3. रक्तचाप – धमनियों में रक्त का दबाव हृदय के संकुचन व प्रसारण के अनुसार घटता–बढ़ता रहता है। अतः रक्त दबाव की दो अवस्थाएँ होती है। (क) सिस्टोलिक दबाव–जब हृदय सिकुड़ता है, उस अवस्था में रक्त वाहिनियों द्वारा शरीर के विभिन्न अंगों तक रक्त पहुँचता है। उस अवस्था में नाड़ियों/धमनियों की दीवारों पर पड़ रहे दबाव को सिस्टोलिक दबाव कहते हैं। (ख) डायस्टोलिक दबाव–रक्त को पम्प करने के बाद हृदय जब अपनी शिथिलावस्था में होता है, उस स्थिति में धमनियों पर पड़ रहे दबाव को डायस्टोलिक दबाव कहते हैं।

4. वी.आर.टी. – इसमें दृश्य संवेदना द्वारा व्यक्ति की मानसिक सतर्कता एवं निर्णय क्षमता को मापते हैं। इसे भी इलेक्ट्रानिक रिएक्शन टाइमर द्वारा सेकेण्डों में नापा जाता है। परीक्षण में समय की कमी मानसिक सतर्कता, निर्णय क्षमता की अधिकता का सूचक है, जबकि समय की अधिकता मानसिक मंदता एवं अस्थिरता को सूचित करता है।

5. मिरर ट्रेसिंग – इसमें मस्तिष्क के दोनों गोलार्धों की कार्यक्षमता व मस्तिष्कीय सन्तुलन को मापा जाता है। इसका अधिक होना मानसिक क्षमताओं में बढ़ोत्तरी का द्योतक है।

6. स्टेडीनेस टेस्ट – इसमें मन की एकाग्रता, स्थिरता तथा मन का शरीर पर नियंत्रण क्षमता का आंकलन करते हैं। इसका अधिक होना मानसिक विकास का प्रतीक है।

7. एम.वी.वी. – यह परीक्षण वायु के उस आयतन को बताता है, जो अधिकतम श्वास द्वारा एक मिनट में प्रश्वसन और निश्वसन द्वारा छोड़ी गई है। इसकी सामान्य दर 120 से 160 लीटर प्रति मिनट होती है। यह आयतन दमा, वातस्फीती में कम हो जाता है। इसका बढ़ना फेफड़ों की कार्य क्षमता बढ़ने का द्योतक है।

8. पी.ई.एफ.आर.

9. एफ.ई.वी.

10. एफ.वी.सी.

इन परीक्षणों से श्वासनली व फेफड़ों की कार्यक्षमता का पता लगाते हैं। इनकी परीक्षण बुद्धि दर साधक की जीवनी शक्ति में वृद्धि दर की सूचक है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा

उद्‌भव एवं विकास –

यजुर्वेद में कहा गया है – "सा प्रथमा संस्कृतिः विश्ववारा" अर्थात हमारी देवसंस्कृति का विश्व में सर्वप्रथम उदय भारत में हुआ। इसीलिए यह भारतीय संस्कृति भी कहलायी। इसका उद्‌भव हिमालय की उपत्यिकाओं में हुआ, जिसे ब्रह्मवर्त, उत्तराखण्ड अथवा उत्तरांचल कला जाता है। यहीं से इस संस्कृति का संदेश हमारे ऋषि–मनीषियों द्वारा पूरे विश्व में ले जाया गया जिससे यह विश्व संस्कृति बनी और आध्यात्मिक रूप से हमारा देश भारत 'जगद्‌गुरु' कहलाया।

हमारी प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर इतनी समृद्ध है कि उसने एक समय समस्त विश्व को अपने रंग में रँग लिया था। इतिहासकारों के अनुसार कि एक समय अमेरिका भारत का एक प्रकार से उपनिवेश था, जहाँ शिव, गणेश, इंद्र, सूर्य, अग्नि आदि देवी देवता पूजे जाते हैं।

सन् 1927 में तिआहुआन (पेरु) अमेरिका में अमेरिकी तथा मिश्र की पुरातत्वीय विभाग की टीम ने संयुक्त रूप से उत्खनन कार्य किया और उन्हें खुदाई में एक ऐसा शिव त्रिशूल मिला जिसकी लम्बाई 850 फुट है। इसी के साथ 20 टन भारी और 24 फीट ऊँचा एक शिवलिंग भी मिला जिस पर ग्रह–नक्षत्रों की अंतरिक्षीय स्थितियाँ अंकित हैं। कालगणना के अनुसार इनका कालखंड 27000 वर्ष पूर्व का माना गया। इसी के साथ मैतिक्सकों में की गयी पुरातत्वीय खुदाई में एक सूर्य मंदिर के अवशेष मिले जिसमें 10 टन भारी सूर्य–प्रतिमा एवं तीन कतारों में उपलब्ध 48 प्रतिमाएँ भी उस काल का भारतीय कला एवं संस्कृति की साक्षी हैं।

मैक्सिकों में प्रति वर्ष 'रामसितवा' त्यौहार भारी हर्षोल्लास के साथ अब भी मनाया जाता है जिसमें रामलीला की झांकियाँ निकाली जाती हैं। मैक्सिको के ही प्राचीन मंदिर 'कोपन' की दीवारों पर हाथी पर सवार महावत के भित्ति चित्र, मुंडध ारी शिव, अनंत वासुकि, तक्षक, सूर्य आदि भारतीय चित्रकला की अंकित अमिट छाप है।

इसी प्रकार मिश्र के गाजा पिरामिड के भीतर वहाँ के राजाओं के हजारों वर्ष पूर्व के सुरक्षित शवों के सिरहाने रखे स्वर्ण पत्र पर भगवान सूर्य का चित्र अंकित है, सूर्य की ओर जाते हुए एक गाय का चित्र है जिसकी पूँछ पकड़े हुए एक मानव आकृति अंकित है, जो गाय की पूँछ को पकड़कर वैतरणी पार करने का संदेश देती दृष्टिगोचर होती है। कहा जाता है कि यहाँ अतीत में सूर्यवंशी राजाओं का राज्य था तथा कालांतर में मय संस्कृति विद्यमान थी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महाभारत के अनुसार 'बोलेविया' में भी सूर्यवंशी राजाओं का राज्य था। महर्षि उद्दालक तथा वेदव्यास का इसी अमेरिका पाताल लोक की यात्रा तथा अर्जुन का पाताल कन्या उलूपी से विवाह का महाभारत में उल्लेख है। आस्ट्रेलिया में भी भारत से मिलते–जुलते रिवाज आज भी वहाँ की मूल जातियों में विद्यमान हैं।

जर्मनी के इतिहासकार मैक्समूलर ने वेदों का अनुवाद करते हुए लिखा है – 'भारत ही वह देश है जिसने विश्व को 18 विद्या तथा 64 कलाओं का प्रकाश प्रदान किया है, जिसने ईश्वर और जीव संबंधी समस्त समस्याओं को सुलझाया है, जिसने अपने लोगों को हमेशा यही सिखाया है कि दुःख सहना देवत्व और दुःख देना आसुरी प्रवृत्ति है। यही वह देश है जिसने कभी अपनी दया को धर्म के नियंत्रण में नहीं रखा है, जो कि अच्छे कार्य में विश्वास रखता है – अच्छी जाति में नहीं। और यह कि जहाँ संतों की पूरी लाइन है जो भारतीय संस्कृति के उत्थान में अपना सर्वस्व अर्पित करते रहे हैं।"

भगवान बुद्ध का संदेश तथा बौद्धकालीन संस्कृति की विरासत आज भी पूरे मध्य एशिया, चीन, जापान, श्रीलंका, इंडोचायना, मलेशिया, जावा, सुमात्रा आदि देशों में जीवंत देखी जा सकती है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

ऐतिहासिक काल में अब से लगभग 2300 वर्ष पूर्व सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में प्रसिद्ध यूनानी यात्री एवं राजदूत मेगा स्थनीज ने अपने यात्रा विवरण में लिखा है कि राजधानी पाटलिपुत्र (पटना) सहित राज्य के विभिन्न हिस्सों में घरों में ताले नहीं लगते थे। सत्य, पवित्रता और ईमानदारी को आदरणीय माना जाता था।

चंद्रगुप्त मौर्य के एक हजार वर्ष पश्चात् सातवीं सदी में सम्राट हर्षवर्धन के शासन काल में चीनी यात्री ह्वेनसांग ने लिखा है कि भारतीय सीधे–सीधे स्वभाव के हैं, उनके चरित्र में स्पष्टवादिता एवं ईमानदारी का अद्भुत सम्मिश्रण है। वे सर्वत्र न्यायप्रिय हैं।

हर्षवर्धन के भी लगभग एक हजार वर्ष उपरांत सोलहवीं सदी के अंत में शहंशाह अकबर के वजीर अबुलफजल ने 'आइने अकबरी' में लिखा है कि हिंदू लोग धार्मिक, सहनशील, नम्र, न्यायप्रिय, त्यागी, सत्यनिष्ठ, कृतज्ञ, प्रभु–भक्त तथा अपरिग्रही होते हैं।

अंग्रेजी शासन के प्रारंभिक दौर में 18वीं सदी तक अंगरेजों ने लिखा है कि भारत के लोग समृद्ध हैं और संस्कृतिनिष्ठ हैं। अंगरेजों द्वारा ही भारतीय संस्कृति को सबसे बड़ा धक्का लार्ड मैकाले ने सन् 1835 फरवरी में उस समय दिया जबकि उसने भारतीय संस्कृति की रीढ़ तोड़ने के लिए ब्रिटिश पार्लियामेंट में प्रस्ताव पेश किया जो निम्नानुसार है –

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

2 फरवरी 1835 को ब्रिटिश संसद मेंलार्ड मैकाले का सम्बोधन (अनुदित) – "मैंने एक ओर से दूसरी ओर तक सम्पूर्ण भारत का भ्रमण किया है और एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं देखा जो भिखारी है, चोर है। मैंने इस देश में ऐसी संपदा, ऐसे उच्च नैतिक मूल्य, ऐसी प्रतिभा के लोग देखे हैं कि मैं नहीं सोचता कि हम कभी भी इस देश को जीत पाएँगे, जब तक कि इस देश की उस रीढ़ की हड्डी को ही न तोड़ दें, जो कि इसकी आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत है। इसलिए मैं प्रस्तावित करता हूँ कि हम इस देश की प्राचीन शिक्षा पद्धति या संस्कृति बदल दें, क्योंकि यदि भारतीय यह सोचने लगें कि अंगरेजी एवं वह सब कुछ जो विदेशी हैं, अच्छा है, हमारे अपने से बहुत बड़ा है, तो वे अपने आत्मगौरव, अपनी भारतीय संस्कृति को खो देंगे और वे वह हो जाएंगे जो हम उन्हें चाहते है। – सच्चे अर्थों में एक अधीनस्थ व शासित देश।"

इसके पश्चात् देश में सिलसिलेवार पश्चिमी सभ्यता का तेजी से फैलना तथा ग्राम पंचायत व्यवस्था, कुटीर उद्योग एवं प्राचीन पद्धति तथा पांडुलिपियों को समूल ध्वस्त करने का प्रयास ब्रिटिश शासन द्वारा प्रारंभ कर दिया गया।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा

भारतीय जनों को यह ज्ञान कराने का प्रयास किया जा रहा है कि हमारी भारतीय संस्कृति कला, साहित्य ने किन–किन देशों में अपना प्रभाव आज भी अक्षुण्ण बनाकर रखा है जिस पर हमें गौरव का अनुभव होना चाहिए।

इण्डोनेशिया – इन्डोनेशिया में अनेक नगरों के नाम भारत के समान हैं जैसे अयोध्या, तक्षशिला, हस्तिनापुर, गांधार, विष्णुलोक, लवपुरी आदि। यहां की राजधानी जकार्ता वस्तुतः 'यज्ञकर्ता' शब्द का अपभ्रंश है। विष्णु वाहन गरुड़ इण्डोनेशिया निवासियों का श्रद्धापात्र है, उनके नाम से 'गरुड़ एयरवेज कम्पनी' चलती है। 'गरुड़ पर सवारी कीजिए–गरुड़ गति से प्रवास करिए' जैसे विज्ञापन बाँटे व चिपकाए जाते हैं। इण्डोनेशिया में रामलीला बहुत लोकप्रिय है और यह क्रमशः अधिकाधिक कलात्मक होती गई है। यहाँ की संस्कृति में 'रामायण' के लिए गहरी श्रद्धा है। न्यूयार्क में एक इण्डोनेशियाई के होटल का नाम 'रामायण होटल' है।

सुमात्रा – सुमात्रा का प्राचीन नाम 'श्रीविजय' था। सुमात्रा में पाए जाने वाले प्राचीन खंडहरों में से अधिकांश शिव मंदिर हैं। यहाँ अभी भी रामसीता, हनुमान, रुद्रशिव, भवानी दुर्गा के मंदिर हैं और यथावत् पूजा होती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जावा — जावा में रामलीला। जावा में पर्वतों के नाम सुमेरु, अर्जुन, रावण आदि हैं तथा नदियों के नाम सरयू, वृंदा, प्रयाग, भगवन्ता आदि हैं। यहाँ के साहित्य में संस्कृत शब्दों और श्लोकों का उपयोग किया गया है। रामायण एवं महाभारत की कथाएँ यहाँ के साहित्य में भरी पड़ी हैं।

बाली द्वीप — पारिवारिक पूजा में सबसे अधिक महत्वपूर्ण 'सूर्य सेवन' या 'शिव की सूर्य के रूप में पूजा' है। इसके अतिरिक्त पारिवारिक धार्मिक कर्मकांडों में वे सब संस्कार भी किए जाते हैं जो कि गुह्य सूत्र में बताए गए हैं और जैसे जन्म संस्कार, नामकरण संस्कार, कर्णभेदन संस्कार, विवाह संस्कार, दाह संस्कार आदि। पूजा में घृत, कुश एवं मधु तथा पवित्र जल का उपयोग होता है। शवों को दाह संस्कार कर जलाया जाता है और श्राद्ध कर्म किये जाते हैं। देव प्रतिमाओं की समय–समय पर शोभा यात्रा निकलती है तथा रामलीला की धूम रहती है।

चीन — चीन धर्म पुस्तक 'चोकिंग' में कश्मीर से हिन्दुओं के उस देश में पहुँचने और सुव्यवस्थित समाज व्यवस्था बनाने का उल्लेख है। भारतीय बौद्ध भिक्षुओं का प्रवाह भारत से चीन की ओर अनवरत रूप से होता रहा। फलतः चीन में धर्मचक्र प्रवर्तन का क्रियाकलाप द्रुतगति से अग्रगामी होता चला गया। कई ग्रंथों का चीनी भाषा में अनुवाद हुआ। विशाल मंदिर, मठ गुहा, विहार एवं स्तूपों पर भारतीय संस्कृति व शैली की अभिन्न छाप रही है जो उनके ध्वंसावशेषों से स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है।

जर्मनी — जर्मनीवासियों की मान्यता है कि वे आर्य रक्त के विशुद्ध उत्तराधिकारी हैं। जर्मन विद्वानों ने सिद्ध किया है कि जर्मन शब्द 'शर्मन' का अपभ्रंश है और यह नामकरण तत्समय पहुँचे भारतीय ब्राह्मणों ने किया है और वहाँ सांस्कृतिक मान्यताओं का सूत्रपात किया। संस्कृत के अतिरिक्त अन्य किसी भाषा में वेद का अनुवाद होने का श्रेय जर्मनी को है। जर्मनी के प्रायः प्रत्येक कॉलेज में संस्कृत भाषा पढ़ाने की व्यवस्था है।

जापान — जापान की नारा नगरी में मथुरा वृंदावन जैसी राग रंग की धूमधाम रहती है। जापान में सूर्य देवता की पूजा होती है। वह अपने को सूर्य की संतान मानते हैं। ऐतिहासिक अवशेषों के अनुसार सूर्यवंशी राजाओं ने वहाँ पहुँचकर शासन सूत्र संभाला और राज्य व्यवस्था का सूत्रपात किया। बाद में बौद्ध प्रचारक वहाँ पहुंचे और वहाँ बौद्ध धर्म खूब फला–फूला। जापानी अक्षर हिन्दी की तरह ही ध्वनिपरक होते हैं उनकी वर्णमाला का क्रम देवनागरी जैसा ही है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कोरिया – प्राचीन कोरियाई साहित्य एवं भवन निर्माण कला पर भारतीयता की गहरी छाप है। 'सुकगोलाम्' गुफाएँ भारतीय गुफाओं की शैली पर ही बनी हैं। मंदिरों में बजने वाले वाद्य यंत्र वही हैं जो भारत में प्रयुक्त होते हे।।

रूस – ईसा की दसवीं शताब्दी तक रूसी लोग उन्हीं देवताओं की पूजा करते थे जो भारत में पूजित होते थे। रूसी पुरातत्व विभाग की खोज में ऐसे अनेक स्मारकों, मंदिरों, विद्यालयों, भित्त चित्रों, शिला लेखों, ग्रंथों, मूर्तियों तथा भग्नावशेषों का संग्रह किया गया है, जो उसमें प्राचीनकाल में भारतीय संस्कृति एवं बौद्धधर्म के प्रसार का प्रमाण देते हैं। रूस की महिला इतिहासवेत्ता बौलकावा ने स्वीकार किया है कि रूसी भाषा का विकास संस्कृत के आधार पर हुआ है। वहाँ के भाषा विज्ञानी बी. मकारैको का कथन है कि रूसी भाषा अँगरेजी की अपेक्षा हिन्दी, संस्कृत और बंगला के अधिक निकट है।

साइबेरिया – साईबेरिया के प्राचीन मंदिरों में स्थित मूर्तियाँ हिंदू देवताओं की हैं। वहाँ का बड़ा मंदिर 'महाकाल' देवता का है, जिसका स्वप्न संस्कृत श्लोकों में होता था। यहाँ के नगर में 108 स्तूप खंडहर रूप में है।

www.vicharkrantibooks.org

मिश्र – प्राचीन काल में मिश्र भारतीय संस्कृति का प्रमुख केन्द्र था। इस सुरम्य क्षेत्र को सर्वप्रथम भारतीयों ने ही आबाद किया था। भविष्य पुराण के अनुसार ऋषियों ने ही आबाद किया था। इस पुराण में ऋषियों के मिश्र में जाने और वहाँ सभ्यता का विस्तार करने का स्पष्ट वर्णन है।

मिश्र पर शासन करने वाले 'हिम्री' (क्षमी) राजा सूर्य और वरुण की पूजा करते थे। मंदिरों की परिक्रमा करने का प्रचलन था। मृतकों की चिता जलाई जाती थी और 13 दिन का शोक मनाया जाता था। 'अलमरना' के खुदाई में जो प्रमाण मिले हैं उनसे स्पष्ट है कि मिस्र निवासी गौ भक्त और सूर्य पूजक थे। पुराने मिस्र के देवी देवता हिंदू देवताओं के अनुरूप ही हैं। वहाँ के मंदिरों की रचना भारतीय वस्तु शिल्प की ही प्रतिकृति है। पिरामिडों में सुरक्षित मुर्द्रे तथा अन्यत्र पाई गई खोपड़ियों में से 80 प्रतिशत आर्य नस्ल के लोगों की हैं। पिरामिडों के भीतर सूर्य देवता की प्रतिमाएँ, मृतक के सिरहाने सोने के पत्र पर गौमाता की प्रतिमाएँ बनी हुई मिलने से लगता है कि वैतरणी पार करने के लिए गाय की पूँछ पकड़कर पार होने की भारतीय मान्यता का ही एक अनुकरण है।

अफ्रीका – प्राचीन काल की अफ्रीकी सभ्यता का विवरण वहाँ उपलब्ध जिन अवशेषों के आधार पर मिलता है, वे यही प्रमाणित करते हैं कि वहाँ पर सभ्यता का उद्भव भारतीयता के अनुगमन जैसा हुआ है। पूर्वी अफ्रीकी की भाषा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

'स्वाहिली' में हिन्दी और संस्कृत भाषा के शब्दों का आश्चर्यजनक बाहुल्य है। मॉरीशस तो वस्तुतः छोटा भारत जैसा ही है। वहाँ भारतीयों का बाहुल्य एवं वर्चस्व है।

अमेरिका – उपलब्ध खंडहरों में मंदिरों और देवी–देवताओं की मूर्तियों के जो अवशेष प्राप्त हुए हैं, वे बताते हैं कि प्राचीनकाल में अमेरिका एक प्रकार से भारत का सांस्कृतिक उपनिवेश ही था। इन्द्र, अग्नि, गणेश, शिव और सूर्य की मूर्तियाँ वैसी ही हैं जैसी भारत में पाई जाती हैं। मंदिरों और भवनों का निर्माण भी भारतीय वास्तुकला के अनुरूप ही था। भारतीय पौराणिक उल्लेख और मैक्सिको में प्रचलित 'किजकस' गाथाओं में आश्चर्यजनक साम्य है। मैक्सिको निवासियों की प्राचीन सभ्यता 'मय' कहलाती है। कपूरिगो (ग्वाटेवाला) में उपलब्ध शिला प्रतिमाओं में स्पष्ट भारतीय शिल्प छलकता देखा जा सकता है। जिस प्रकार अनेक खंभों वाले मंदिर भारत में जहाँ–तहाँ देख पड़ते हैं, उसी प्रकार 'यूक्टास' के ध्वंसावशेष 'थाईलैण्ड का लक्स' (हजार स्तम्भी) को देखा जा सकता है। पेरू शब्द का अर्थ संस्कृत में 'सूर्य का देश' है – सूर्य पुत्रों का देश। सूर्य अस्त होने पर रात्रि को वहाँ रहने का देश पेरु कहा जाए, सह स्वाभाविक है। भारतीयों का दिया यही नामकरण पेरु में अभी भी प्रचलित है। अमेरिका के तत्वदर्शी 'बिलडयूरेस' ने भारतभूमि को अनेक दृष्टिकोण से माता माना है। कनाडा के मूल निवासी 'इंडियन' शब्द से ही संबोधित किए जाते हैं। अमेरिका के इलियट की रचनाओं में तथा कविताओं में उपनिषदों के संदर्भ भरे पड़े हैं।

सांस्कृतिक दृष्टि से भारत के पड़ोसी देश

तिब्बत – कैलाश मानसरोवर का शिवतीर्थ–तिब्बत–बौद्ध धर्म का केन्द्र। देवी–देवताओं के प्रति श्रद्धा निष्ठा भारत के समान तथा साधना–उपासना भारतीय योग विद्या का ही अनुकरण।

नेपाल – राजाजनक की राजधानी जनकपुर (मिथिला), स्कन्द पुराण के अनुसार श्रीकृष्ण नेपाल के आराध्य भगवान पशुपति नाथ के दर्शनार्थ नेपाल गए थे। गौतम और कपिल मुनि के आश्रम उसी क्षेत्र में थे। याज्ञवल्क्य, विश्वामित्र, श्रृंगीऋषि का कार्य क्षेत्र भी यहीं था। नेपाल प्रदेश का नामकरण उसकी नैतिक विशेषता एवं धर्मनिष्ठा के आधार पर है। हिंदू धर्म व संस्कृति का मुख्य देश। बौद्ध–हिन्दू धर्म में समन्वय का दर्शन होता है। श्री सत्यकेतु विद्यालंकार के मतानुसार अग्रवंशी राजा अग्रसेन के पूर्वज नेमिनाथ ने इस देश को बसाया था। गोरखा 'गो–रक्षक' का अपभ्रंश है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भूटान – दक्षिणी भूटान में सनातनी हिन्दू धर्म शेष में बौद्ध धर्म। भारतीय संस्कृति व धर्म का प्रभाव सभी ओर।

बर्मा – इस क्षेत्र में विशाल विष्णु मंदिर जिसकी दीवारों पर दशावतारों की प्रतिमाएँ अंकित हैं। हिंदू देवी–देवताओं और रीति–रिवाजों का अनुकरण होता है। यहाँ जाति प्रथा नहीं है।

श्रीलंका – राजतंत्र चलाने वाले विज्ञान–धर्म गुरु तथा व्यवसायी भारतीय वंशधर ही रहे थे। उत्तर भारत के भारतीयों ने ही द्वीप को बसाया। धर्म प्रचारक 'बौद्ध' संघमित्रा और महेन्द्र पहुँचे थे। भारतीय धर्म ग्रंथों रामायण आदि में स्वर्गगिरि–लंका के विषय में वर्णन मिलता है।

कम्बोडिया – इतिहासकार केण्टलई और ली. टाओ युआन के कथनानुसार ईसा की तीसरी शताब्दी में यहाँ हिंदू राज स्थापित हो चुका था। सोमा (कम्बोडियन) और कौडिन्य (भारतीय) से उत्पन्न पुत्र कम्बोडिया का शासक बना। वर्मन बंधु सभी इसी वंश के थे। कम्बोडिया का प्राचीन नाम कम्बुज था। कम्बु लोग अपने को मनु की संतान मानते हैं। श्रीबागची के द्वारा प्राप्त शिलालेखों से कम्बोडिया के प्राचीन निवासी भारतीय नस्ल के थे। कम्बोडिया की प्राचीन भाषा भारतीय मुण्ड एवं खस भाषा से बहुत कुछ मिलती है। भाषा में संस्कृत शब्दों की भरमार है तथा 14वीं सदी तक संस्कृत राजभाषा रही। साहित्य में रामायण, महाभारत आदि ग्रंथों की कलाओं का बहुल्य है तथा पूजा, उपासना, कर्मकाण्ड, प्रथा–परम्पराएँ भारत के समान हैं जिनका प्रमाण मंदिरों, चित्रों, मूर्ति तथा शिलालेखों से मिलता है। लोकप्रिय शासकों में जयवर्धन, यशोवर्धन माने जाते हैं। इनके शासन काल में 100 महाविद्यालय उच्च कोटि की शिक्षा, पुस्तकालय तथा मंदिर थे। सांस्कृतिक दृष्टि से यह भारत के बहुत निकट है।

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का स्वरूप

आज पश्चिमी संस्कृति एवं सभ्यता का प्रवेश सिनेमा, टी.वी., इंटरनेट के माध्यम से घर के चौके तक हो गया। परम पूज्य गुरुदेव भारतीय संस्कृति के इस पराभव से अत्यंत व्यथित थे। उन्होंने लगभग 3400 पुस्तक–पुस्तिकाओं के माध्यम से लिखकर यह घोषित किया कि हम उल्टे को उलट कर सीधा कर देंगे, उन्होंने लिखा है "है नहीं तलवार अपने हाथ में तो क्या हुआ, हम कलम से ही करेंगे सिरफिरों के सिर कलम" परमपूज्य गुरुदेव की इसी लेखनी को, उनके विचारों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

को जन–जन तक पहुँचाने, बच्चों–बच्चों तक पहुँचाने के लिए उन्हीं की चेतना के फलस्वरूप वर्ष 1994 में प्रथम बार भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का आयोजन गायत्री शक्तिपीठ, भोपाल द्वारा किया गया। डॉ. के.वी. पण्ड्या, डॉ. पाटीदार, डॉ. रमन परिवार, टण्डन परिवार तथा नायक परिवार के साथ प्रारंभ की गई। यह परीक्षा लगभग 20 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में आयोजित हुई, जिसमें लगभग 2000 परीक्षार्थियों ने भाग लिया।

वर्ष 1995 में यह परीक्षा भोपाल के 114 उ.मा.वि. की 9वीं से 12वीं की कक्षाओं में आयोजित हुई जिसमें लगभग 7000 छात्र परीक्षा में बैठे। वर्ष 1995 में इस परीक्षा की सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना हुई कि परीक्षा में प्रत्येक शाला के प्रथम तीन छात्रों की मेरिट सूची में लगभग 350 छात्रों के नाम लगभग 10 पृष्ठों में टाइप थे। इस सूची को प्रदेश में प्रमुख अखबार, 'दैनिक भास्कर' में हम सब बोर्ड की परीक्षा–परिणामों की तरह छपवाना चाहते थे, ताकि परीक्षा पूरे प्रदेश में फैल जाए। भोपाल शक्तिपीठ के पास विज्ञापन देने को उस समय समुचित राशि नहीं थी। अतः हमारी शक्तिपीठ की टीम अखबार के मालिक के पास गई। हमने उनसे नपे–तुले शब्दों में निवेदन किया, "भाई साहब, भगवान का दिया आपके पास सब कुछ है, गाड़ी है, घोड़ा है, मकान है, कारखाना है, हम लोग भी गायत्री शक्तिपीठ की ओर से भगवान का, देश का यह कार्य कर रहे हैं और चाहते हैं कि 114 शालाओं के लगभग 10 पृष्ठों का छात्रों का यह परीक्षा परिणाम आपके अखबार में यदि छप जाए, तो शायद आप अनुमान नहीं लगा सके कि आप देश की कितनी बड़ी सेवा कर रहे हैं तथा यह आने वाला समय ही बताएगा।" प.पू. गुरुदेव की चेतना के अखबार मालिक परीक्षा परिणाम छापने को तैयार हो गए।

अखबार में दो दिन बाद दिनांक 12 अक्टूबर 1995 को जब भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का परिणाम छपा तो भोपाल सहित पूरे प्रदेश में एक फिजा बन गई, अखबार का लगभग आधा पेज 114 शालाओं एवं उनके मेरिटोरियस छात्रों के नामों से भरा पड़ा था। सभी शालाओं के विद्यार्थी, गुरुजन एवं आम जनता परीक्षा परिणाम पढ़कर आश्चर्यचकित थे कि यह कौन सी नई परीक्षा है, जो छात्रों को संस्कृति से जोड़ने का प्रयास कर रही है; काश! हमारी शाला भी इस परीक्षा में सम्मिलित हुई होती।

उपर्युक्त विज्ञापन एवं, तत्पश्चात् हुए पुरस्कार वितरण समारोह का यह परिणाम रहा कि वर्ष 1996 में जब भोपाल गायत्री शक्तिपीठ की टीम परीक्षा के प्रचार के लिये पूरे प्रदेश में निकली, तो उसका व्यापक स्वागत हुआ और 1996 में परीक्षार्थियों की संख्या सात हजार से बढ़कर प्रदेश में लगभग ढाई लाख तक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पहुँच गई, जिसमें मिडिल स्कूलों के छात्रों को भी शामिल कर लिया गया था।

वर्ष 1996 से प्रादेशिक विस्तार क्रम में भोपाल से डॉ. कर्मयोगी जी भी इस क्रम में सम्मिलित हो गए। जिससे प्रादेशिक विस्तार में और गति आयी। शनैः–शनैः परीक्षा को विभिन्न प्रांतों में भी विस्तार मिलता गया।

शीघ्र ही शांतिकुंज के तत्वावधान में भा.सं. ज्ञान परीक्षा प्रकोष्ठ, शांतिकुंज की मात्र चार सदस्यों – श्री आर.के. नायक, श्री मोहन सिंह भदौरिया, डॉ. पी.डी. गुप्ता, श्री जनार्दन मौर्य की छोटे बोर्ड आफिस जैसी टीम के साथ लीगल सेल के श्री विपिन सोरी, योगेन्द्र ठाकुर देशभर के सभी गायत्री शक्तिपीठ, जोन–उपजोनल परिजनों तथा सम्मानीय अध्यापकों के सहयोग से इस परीक्षा का विस्तार देश भर के लगभग 400 जिलों में हो गया। प्रत्येक प्रांत, जिला एवं तहसील स्तर पर समितियाँ गठित कर परीक्षा ढाँचे को एक व्यवस्थित स्वरूप दिया गया। जिसके लिए नियमावली भी तैयार कर सभी संबंधित जिलों को प्रदान कर दी गई। वर्ष 2004 तक कक्षा 6 से 8 तक जूनियर वर्ग तथा कक्षा 9 से 12 तक सीनियर वर्ग की पृथक पुस्तकें तथा पृथक–पृथक प्रश्न बैंकों के माध्यम से यह परीक्षा सम्पन्न होती थी। वर्ष 2005 में पुस्तक एवं प्रश्नबैंकों को एकजाई कर कक्षा 6 से 8,9 से 10 तथा 11 से 12 के 3 वर्गों में कक्षाएँ वर्गीकृत कर दी गईं। तत्पश्चात् वर्ष 2007 से कक्षा 5 को भी परीक्षा में सम्मिलित कर लिया गया तदनुसार कक्षा 5 से 6, 7 से 8 ,9 से 10 तथा 11 से 12 के चार वर्गों में कक्षाएँ वर्गीकृत कर दी गई। पुस्तकों के लेखन एवं संपादन क्रम में भोपाल के डॉ. प्रेम भारती जी एवं उनकी टीम का प्रमुख योगदान रहा।

वर्तमान में, देश के 22 राज्यों में हिन्दी तथा अंगरेजी भाषा सहित आठ भाषाओं में यह परीक्षा सम्पन्न हो रही है, जिसमें लगभग 38 लाख से अधिक छात्र वर्ष 2007 में परीक्षा में सम्मिलित हुए। प्रारंभ से लेकर अब तक देश के 3 करोड़ से अधिक परिवारों तक यह परीक्षा पहुँच चुकी है। परीक्षा में आकर्षण के प्रमुख बिन्दु, छात्रों क लिए भागीदारी प्रमाण पत्र तथा तहसील, जिला से लेकर प्रांतीय स्तर तक के आकर्षक पुरस्कार, स्कालरशिप तथा नैतिक मूल्यों के एक से तीन दिवसीय शिविर रहे हैं। राष्ट्रीय स्तर पर भी 25 से 28 अप्रैल 08 तक आयोजित चार दिवसीय राष्ट्रीय मेरिटोरियस छात्र शिविर देश भर के प्रांतीय मेरिटोरियस छात्रों के लिए शांतिकुंज में विशेष आकर्षण का केन्द्र रहा। इसी क्रम में परम आदरणीय गुरुजनों के लिए भी देश में लगभग सभी प्रांतों के शिविर शांतिकुंज में आयोजित किए गए। ऐसे शिविर प्रतिवर्ष आयोजित किए जाते हैं।

देश में सर्वाधिक छात्र संख्या बिठाने वाले जिले को शांतिकुंज द्वारा विशेष

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शील्ड तथा प्रमाण पत्र से पुरस्कृत किया जाता है। वर्ष 2005 से 2007 तक 3 वर्षों से यह गौरव राजस्थान के राजसमंद जिले को प्राप्त हुआ है, जहाँ वर्ष 2007 में जिले में लगभग 82 हजार छात्र सम्मिलित हुए। प्रतिस्पर्धा इतनी बढ़ चुकी है कि वर्ष 2008 में कतिपय जिलों ने तो एक लाख से भी अधिक छात्रों को परीक्षा में बैठाने का संकल्प लेकर साहित्य वितरण भी प्रारंभ कर दिया है।

हमारे अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रमुख तथा देव संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या इसे न केवल विस्तार दिया बल्कि प्रत्येक शाला में संस्कृति मंडलों की स्थापना हेतु प्रोत्साहन नीति अपनाई तथा यह भी घोषित किया कि प्रांतीय स्तर पर मेरिट में आए 12वीं के छात्रों के लिए देव संस्कृति विश्वविद्यालय में प्राथमिकता के आधार पर प्रवेश दिया जाएगा तथा अन्यान्य सुविधाएँ भी उन्हें उपलब्ध की जाएँगी। श्रद्धेय डॉ. साहब तथा परम आद. स्नेह सलिला शैल जीजी के आशीर्वाद से परीक्षा लक्ष्य है वर्ष 2008 में 50 लाख छात्र बैठाना तथा प.पू. गुरुदेव की जन्म शताब्दी 2011 तक इससंख्या को बढ़ाकर एक करोड़ के पार ले जाना कीतिमानी रहा।

कवि रवींद्र नाथ टैगोर की एक रूपांतरित कविता में लिखा है –

'साँध्य रवि ने कहा मेरा काम लेगा कौन,
रह गया सुनकर निरुत्तर जगत सारा मौन,
एक माटी के दिये ने नम्रता के साथ,
कहा जितना बन सकेगा – मैं करूँगा नाथ'

आइए! हम सब छोटे–छोटे माटी के दीपक की तरह मिलकर परम पूज्य गुरुदेव की विचार क्रांति की इस मशाल को पूरे विश्व में पहुँचाएँ।

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा

वर्ष	संख्या	वर्ष	संख्या	वर्ष	संख्या	वर्ष	संख्या
1994	2000	1995	7000	1996	250000	1997	350000
1998	450000	1999	1400000	2000	1600000	2001	3856100
2002	1733917	2003	205000	2004	2200000	2005	2450000
2006	3000000	2007	3450000	2008	4050000	2009	5830000
2010	9980000						

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संस्कृति ज्ञान परीक्षा राज्यवार सूची

क्र.	राज्य	जिला	स्कूल	क्र.	राज्य	जिला	स्कूल
1.	आंध्रप्रदेश	19	7322.	2.	बिहार	37	3364
3.	छत्तीसगढ़	20	6682	4.	गुजरात	30	9642
5.	झारखण्ड	24	3253	6.	चंडीगढ़	1	113
7.	दिल्ली	4	361	8.	हिमांचल	11	1044
9.	हरियाणा	15	1081	10.	जम्मू काश्मीर		14 1
11.	बंगलौर			12.	महाराष्ट्र	21	1161
13.	मध्यप्रदेश	52	14336	14.	उड़ीसा	29	2636
15.	पंजाब	12	322	16.	राजस्थान	34	30880
17.	उत्तराखण्ड	13	1222	18.	उत्तरप्रदेश	74	9900
19.	पश्चिम बंग	7	135	20.	तमिलनाडु	4	75
			योग :			411	86940

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

क्यों –

अखिल विश्व गायत्री परिवार शांतिकुंज, हरिद्वार एक सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक पुनरुत्थान के लिए संकल्पित एवं समर्पित संस्था है। इसके संस्थापक वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ युगऋषि, युगव्यास पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा है। युगतीर्थ, गायत्री तीर्थ शांतिकुंज में लोकमानस के परिष्कार हेतु सतत् प्रशिक्षण एवं रचनात्मक कार्यक्रम चलते रहते हैं। भारतवर्ष कभी जगद्गुरु था, तो यहाँ की सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक धारा के कारण जो कि हमारे ऋषियों, मुनियों द्वारा प्रतिपादित एवं अनुप्राणित थी। देशवासियों को पुनः आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक विचारधारा में समाहित करने, इस विलुप्त व विकृत होती सोच एवं देवसंस्कृति को पुनर्जीवित करने हेतु उन्होंने विचार क्रान्ति अभियान प्रारंभ किया। युग निर्माण योजना एवं व्यक्तित्व परिष्कार हेतु उन्होंने तप–साधना एवं गुरुकृपा से सभी वेद, पुराण, उपनिषद् के सरल भाष्य के साथ ही 3200 से अधिक पुस्तकें लिखीं। उनके द्वारा रचित साहित्य को घर–घर पहुँचाने, गायत्री अर्थात् सद्गान एवं यज्ञ अर्थात् सत्कर्म को चिंतन, चरित्र एवं व्यवहार में लाने हेतु अगणित प्रयास किये जा रहे हैं। इन्हीं प्रयासों की श्रृंखला में एक महत्वपूर्ण प्रयास भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के माध्यम से विद्यालयों के विद्यार्थियों में व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों की पुनर्स्थापना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करना है। 'अध्यापक है युग निर्माता–छात्र राष्ट्र के भाग्य विधाता' का सोच लिये विद्यार्थियों में पुनः भारतीय संस्कृति का गौरव बोध कराना, वैज्ञानिक आध्यात्मवाद को प्रतिपादित करने एवं समस्त विश्व की पीड़ित, अशांत मानवता को जागृत करने तथा स्थाई शांति एवं खुशहाली के लिए यह परीक्षा मील का पत्थर सिद्ध होगी। विद्यार्थियों में दूरदर्शी–विवेकशीलता एवं उच्चस्ततरीय संवेदनशीलता को जागृत करने, सत्य, प्रेम एवं न्याय का पाठ पढ़ाना, समय और प्रतिभा का उचित उपयोग सिखाना तथा जीवन जीने की कला में प्रवीणता लाने हेतु यह परीक्षा सार्थक है।

कैसे –

वर्ष 1994 में भोपाल में यह परीक्षा केवल 2000 विद्यार्थियों की भागीदारी से प्रारंभ हुई। वर्ष 1996–97 से अन्य प्रदेशों में भी यह परीक्षा प्रारंभ हुई तथा छात्र संख्या बढ़ते–बढ़ते वर्ष 2008 में 40 लाख विद्यार्थी इस परीक्षा से लाभान्वित हुए। आज देश की आठ भाषाओं में 20 राज्यों एवं केन्द्र शासित प्रदेशों में इसका आयोजन किया जाता है। लगभग 400 जिलों के एक लाख विद्यालय इस विधा से जुड़े हैं। परीक्षा का संचालन, गुरुसत्ता के सूक्ष्म संरक्षण एवं प्रेरणा से अखिल विश्व गायत्री परिवार की प्रमुख श्रद्धेया शैल जीजी एवं श्रद्धेय डॉ. प्रणव् पण्डया के कुशल मार्गदर्शन में गायत्री तीर्थ शान्तिकुंज, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) के भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा प्रकोष्ठ द्वारा किया जा रहा है। इसका प्रारंभ दो वर्गों में किया गया, तत्पश्चात् तीन व चार वर्गों की परीक्षाएँ आयोजित की गईं, लेकिन वर्ष 2009 से कक्षावार (5 से 12) आठ वर्गों में परीक्षा सम्पन्न होने जा रही है। यह परीक्षा प्रायः दिसम्बर तक सम्पन्न होती है तथा परीक्षा परिणाम फरवरी तक घोषित होते हैं। परीक्षा के दो माह पूर्व ही विद्यार्थियों को अध्ययन सामग्री (पुस्तक व प्रश्नबैंक) उपलब्ध करा दी जाती है। मूल्यांकन कक्षा 7 से 12 तक ओ.एम.आर. शीट का प्रयोग – कम्प्यूटर से जाँच एवं प्रमाण पत्र तथा कक्षा 5 से 6 का स्थानीय स्तर पर। कैलेण्डर, पोस्टर एवं ब्रोशर भी विद्यालयों में यथासमय पहुँचा दिये जाते हैं। जिससे अधिकाधिक विद्यार्थियों को जानकारी का लाभ मिल सके। इससे सम्बंधित शिक्षकों, छात्रों तथा परिजनों के शिविर समय–समय पर राज्यवार शांतिकुंज में आयोजित किये जाते हैं, जिसमें उन्हें परम पूज्य गुरुदेव के समाजोत्थान के विचारों एवं भारतीय संस्कृति के उद्देश्यों से परिचित कराया जा सके। परीक्षा सहयोग राशि के रूप में कक्षा पाँच एवं छः के विद्यार्थियों से मात्र 12 रु. तथा कक्षा सात से बारह तक 15 रु. प्रति छात्र लिये जाते हैं। इस राशि से अध्ययन सामग्री,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रश्न पत्र, प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार आदि की व्यवस्था की जाती है। तहसील, जिला एवं राज्य स्तर पर प्रावीण्य सूची में आने वाले सभी स्तरों के छात्र–छात्राओं को विशेष रूप से पुरस्कृत किया जाता है। प्रथम आने वाले विद्यार्थियों को शांतिकुंज की ओर से दो सौ रुपये प्रतिमाह छात्रवृत्ति दस माह तक प्रदान की जाती है तथा ऐसे कक्षा बारहवीं उत्तीर्ण विद्यार्थियों को देवसंस्कृति विश्वविद्यालय, शांतिकुंज में प्राथमिकता के आधार पर प्रवेश दिया जाता है। प्रावीण्य सूची में आने वाले विद्यार्थियों के लिए जिला, राज्य तथा राष्ट्रीय स्तर पर एक से तीन दिवसीय व्यक्तित्व परिष्कार के विशेष शिविर आयोजित किये जाते हैं।

परीक्षा के अतिरिक्त भी विद्यालयों में संस्कृति मण्डलों के गठन के साथ–साथ जन्म दिवस मनाना, सामूहिक श्रमदान, वृक्षारोपण, दीवारों पर महापुरुषों एवं संतों के अमृत संदेशों के पोस्टर लगाना आदि सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का संचालन किया जाता है। परीक्षा में प्रश्न ऐसे पूछे जाते हैं, जिससे मानसिक तीव्रता के साथ भावनाशीलता एवं आध्यात्मिकता का भी विकास हो। गायत्री परिवार के परिजन एवं संस्कृतिनिष्ठ अधिकारियों/अध्यापकों एवं परिजनों के त्याग एवं श्रम के फलस्वरूप यह परीक्षा सफलता के उच्चतम सोपानों तक पहुँच रही है। परमपूज्य गुरुदेव के जन्मशताब्दी वर्ष 2011–12 तक देश के दो लाख विद्यार्थियों के एक करोड़ विद्यार्थियों तक परिवार, समाज एवं राष्ट्रोत्थान के विचारों को पहुँचाने का प्रबल पुरुषार्थ इसके माध्यम से किया गया। आइए! हम सभी, भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा को विस्तार देकर ऋषि प्रणीत संस्कार एवं जीवन मूल्यों पर आधारित विचारों को अध्यापकों, अभिभावकों, विद्यार्थियों के साथ समाज के प्रत्येक वर्ग तक गहराई से प्रविष्ट कराने का पुरुषार्थ करें।

विद्यार्थियों के लिए प्रेरक पुस्तकें –

समय का सदुपयोग करें, सफलता के तीन साधन, शिष्टाचार और सहयोग, वेशभूषा शालीन रखें, श्रम है सुख का केतु, सदाचरण और मर्यादा पालन, बाल निर्माण कहानियाँ (भाग–1 से 16 तक), देखन में छोटे लगें, घाव करें गंभीर (भाग–1 से 4), भारतीय संस्कृति के संरक्षक–उद्धारक (भाग 1–6), सद्विचार, सत्कार्य एवं सत्साहस की घटनाएँ (भाग 1–2), शिष्ट बनें सज्जन कहलाएँ, सफलता के सात सूत्र–साधन, बालकों का भावनात्मक विकास, बड़े आदमी नहीं महामानव बनें, सम्मान के पात्र हमारे वयोवृद्ध, प्रज्ञायोग व्यायाम, ब्रह्मचर्य जीवन की अनिवार्य आवश्यकता, मनोबल के धनी व्यक्तित्व (भाग 1–2)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के लाभ एक विहंगम दृष्टि –

बढ़ेगी सुघड़ व्यक्तित्व के प्रति जागरूकता, होगा मानवीय गौरव का बोध, परिमार्जित होंगी अभिरुचियाँ, प्रखर होंगे विचार, जागेगा कर्त्तव्य बोध, छूटेंगे कुसंग और दुर्व्यसन, घटेगा वर्ग विद्वेष, जाग्रत् होगा मानवीय सद्भाव, बदलेगा जीवन के प्रति दृष्टिकोण, परिष्कृत होंगी भावनाएँ, सुधरेंगे आचरण, कम होंगे तनाव और अवसाद, विकसित होगा आत्मविश्वास, पनपेगा राष्ट्र गौरव, समग्र बनेगा व्यक्तित्व।

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा नियमावली

भारत राष्ट्र को जगद्गुरु होने का सम्मान, संस्कृति सूत्रों को राष्ट्र के जीवन में अपनाने से ही प्राप्त हुआ था। ऋषि आत्माओं एवं देव सत्ताओं ने अथक परिश्रम के उपरानत जिन मूल्यों को राष्ट्र में प्रतिष्ठापित किया था, वे सनातन मूल्य, भारतीय संस्कृति की आज भी अमूल्य धरोहर हैं, जो अंतरंग को परिष्कृत करके हमारे अन्दर प्रसुप्त पड़ी अनंत संभावनाओं को जाग्रत कर विराट स्तर तक पहुँचाते हैं।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

प.पू. गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने नई पीढ़ी को सही दिशा देने के लिए शिक्षा और विद्या के सार्थक समन्वय पर जोर दिया। मानवीय मूल्यों के विस्तार हेतु खड़ा किया गया विचार क्रान्ति अभियान वस्तुतः भारतीय संस्कृति के विद्या विस्तार का अभियान ही है। विद्यालयों में सभी किशोर, किशोरियों में ज्ञान के साथ श्रेष्ठताओं और शाश्वत मूल्यों को विकसित करना, ताकि वे स्वयं के मनोविकारों से लड़ाई लड़ कें एवं जीवन के हर क्षेत्र से नीचता, निष्कृष्टता एवं अवाँछनीयताओं को दूर कर सकें।

देश की छात्र पीढ़ी को, जो आने वाले कल का भविष्य है, उसे पाश्चात्य संस्कृति रूपी असुरता के चंगुल से निकालकर देव संस्कृति रूपी राजपथ पर चला देना ही हमारा अभीष्ट है। भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा इसका सटीक आधार है। यदि परीक्षा के माध्यम से गाँव, नगरों में फैले विद्यालयों, छात्रों तथा अध्यापकों को संस्कृति सूत्रों से जोड़ा जा सके तो युग परिवर्तन का आधार बनने तथा इसे साकार होते देर नहीं लगेगी।

'अध्यापक हैं युग निर्माता, छात्र राष्ट्र के भाग्य विधाता', शिक्षकों ने यदि यह मोर्चा संभाला तो इक्कीसवीं सदी का भारत होगा, अपने खोए हुये गौरव को प्राप्त करता हुआ नया भारत। छात्र–छात्राओं में नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विकास के लिए शांतिकुंज उन्हें भारतीय ज्ञान परीक्षा के माध्यम से नया चिन्तन दे रहा है। भा.सं.ज्ञा. परीक्षा के माध्यम से छात्र–छात्राओं के जीवन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में, उत्कृष्टता लाने के लिए विद्यालयों में संस्कृति मण्डलों की स्थापना का कार्यक्रम भी जुड़ा हुआ है। एक से तीन दिवसीय शिविरों के आयोजन से विद्यालय, छात्र, अध्यापक, अभिभावक, मिलजुलकर युग परिवर्तन से सम्बन्धित सप्त आंदोलनों से भी जुड़ेंगे। 'वयं राष्ट्रे जागृयाम् पुरोहिताः' की उक्ति अध्यापकों को सप्त क्रांति में योगदान के लिए प्रेरित कर रही है।

1. **साधना आन्दोलन** – पिछले हजार वर्षों से जिस अज्ञानांधकार युग में हमें रहना पड़ा है, उसके फलस्वरूप हमारे चिंतन की दिशाओं में विकृतियाँ इतनी बढ़ गई कि प्रगति के लिए किए गए सभी प्रयत्न छोटे पड़ते हैं। सुधार एवं प्रगति की सभी योजनाएँ चारित्रिक दुर्बलता से टकराकर निष्फल हो जाती हैं। कारण की तह में जाकर भावनात्मक नव निर्माण के लिए एक ऐसा प्रचंड अभियान चलाना आवश्यक हो गया है, जो जनमानस को चरित्र निष्ठा आदर्शवादिता, मानवीय सद्भावना, प्रचंड कर्मठता और औचित्य को अपनाने की साहसिकता से ओत प्रोत कर दें। उपासना साधना एवं आराधना से क्रमशः चिन्तन, चरित्र एवं व्यवहार को उत्कृष्ट बनाया जा सकता है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

2. **स्वास्थ्य आन्दोलन** – मिशन के मूलभूत सिद्धान्त "स्वास्थ्य शरीर, स्वच्छ मन, सभ्य समाज बनायेंगे" पर आधारित यह आंदोलन प्रत्येक नागरिक को उन्हीं के संसाधनों के अंतर्गत स्वस्थ जीवन जीने के सूत्र प्रदान करता है। इस संदर्भ में आहार–विहार, रहन–सहन, सफाई–व्यायाम, निरापद जड़ी बूटियों से उपचार, ऋतु पदार्थों का सेवन, मसाला वाटिका आदि के लिए लोक शिक्षण में भाव भरे प्रयास करने की आवश्यकता है, ताक सर्व साधारण को निरोग रहने के आधार समझने का अवसर मिले और बीमार पड़ने का संकट ही सामने न आए। शरीर संरचना, संतुलित आहार, रोगी परिचर्या एवं वनौषधियों संबंधी सभी जानकारी देना भी आवश्यक है।

3. **शिक्षा आन्दोलन** – स्वतंत्र भारत की आधी शताब्दी निकल जाने के बाद आज भी अशिक्षा अपनी जड़े जमाए बैठी हैं, जो प्रगति की पाँव की बेड़ी बनी हुई है। शिक्षा के माध्यम में अशिक्षित का जीवन बोझिल बना हुआ है। वस्तुतः अशिक्षा, जीवन का अभिशाप है। शिक्षा को विद्या से जोड़कर ही इस आन्दोलन को सफल किया जा सकता है।

4. **स्वावलम्बन आंदोलन** – किसी भी देश की खुशहाली स्वावलंबी नागरिकों पर टिकी होती है। हमारा राष्ट्र गाँव प्रधान, कृषि प्रधान है। यहाँ आर्थिक क्रांति आएगी, तो गाँवों को केन्द्रित कर बनाई गई योजनाओं द्वारा ही आएगी। ग्रामोद्योग

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हमारी आर्थिक शक्ति का आधार बनेंगे, तो ग्रामीण संस्कृति भी फलती–फूलती रहेगी, विकसित होती रहेगी। शहरीकरण, जो आज का सबसे बड़ी विभीषिका लाने वाला कारण बन गया है, उसे भी "गाँव की ओर वापस लौटे" अभियान को सार्थक बनाकर, कम किया जा सकता है। अतः आवश्यकता ऐसा आर्थिक तंत्र खड़ा करने की है, ताकि गाँव स्वावलम्बी व आकर्षक बन सके। वहाँ का हर निवासी अपने भविष्य के लिए आशान्वित व आश्वस्त हो सके तथा लघु एवं कुटीर उद्योग जैसे 1. गौ पालन एवं 2. गौ उत्पाद पर आधारित 3. घरेलू आवश्यकता से सम्बन्धित उत्पादन प्रारम्भ किये जा सकें।

5. पर्यावरण आन्दोलन – प्रकृति का यह आवरण जिसमें हम रहते हैं तथा निरंतर गतिशील बने रहते हैं, उसे पर्यावरण कहते हैं। इसके विभिन्न अंगों–मृदा, जल, वायु प्रकाश तथा वनस्पति एवं जीव–जंतुओं के आंतरिक सम्बंधों का संतुलन पर्यावरण संतुलन कहलाता है। प्रकृति के इस संतुलन का अपनी स्थिति में बने रहना, वनस्पतियों, जीवों प्राणियों तथा मानव के अस्तित्व के लिए आवश्यक है। मनुष्य ने अपनी भोगवादी जीवनशैली व साधन बढ़ाने के प्रयासों में विकास के नाम पर प्रकृति का अनियंत्रित दोहन कर उसकी श्रृंखला की अनेक कड़ियों को तोड़ डाला है। ईश्वर ने मनुष्य को जो भूमि, जल, वायु, आकाश, नदियाँ, पहाड़, विशाल हरे–भरे वन, वन्य जीवन निःशुल्क व पूर्णतः निर्दोष दिए थे, उनका स्वरूप बिगाड़ कर रख दिया है। वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, खाद्य प्रदूषण से प्रकृति में भारी असंतुलन पैदा हो गया है। अनियंत्रित वर्षा, प्रति वर्ष आने वाली बाढ़ें एवं सूखा–संकट भूकंपों की विनाशलीला, समुद्रों में तूफान इसी की परिणति है। अतः यदि मनुष्य को अब आगे अपना अस्तित्व बचाना है, तो प्रकृति विरोधी नहीं होकर, प्रकृति से दोस्ती करनी होगी।

6. नारी जागरण आन्दोलन – सुसंस्कृत परिवार ही नर रत्नों, श्रेष्ठ नागरिकों की खदान है। सुसंस्कृत परिवार में स्वर्ग के और विसंगत परिवार में नरक के दर्शन होते हैं। एक सुसंस्कृत परिवार की धुरी है – प्रगतिशील व सुसंस्कृत नारी। सुसंस्कृत परम्पराएं ही व्यक्ति, परिवार और समाज को समुन्नत बनाती है। नारी ही है जो समय, अनुभव, भावना कला और उदारता के गुणों से इस महत्वपूर्ण कार्य को ठीक तरह से कर सकने की मौलिक योग्यता भगवान के घर से अपने साथ लेकर आयी है। नारीशक्ति जागरण से ही उनमें क्षमता और उमंग बढ़ेगी।

7. व्यसन मुक्ति–कुरीति उन्मूलन आंदोलन – सभी जानते है कि तंबाकू, गुटका, शराब, चाय, काफी, कोकाकोला आदि व्यसन तथा मंहगे विवाह, मृतक–भोज एवं महँगे वस्त्र आदि कुरीतियों के कितने भयंकर दुष्परिणाम होते हैं। इस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जागरूकता को और बढ़ाने के लिए समाज के आदर्श निष्ठ, प्रामाणिक व्यक्तियों द्वारा व्यापक अभियान चलाया जाना है। दीवार लेखन, पुस्तकें, सभा, सत्संग, नाटक, वीडियो, रेडियो, टेलीविजन, व्यक्तिगत जनसंपर्क का व्यापक उपयोग कर इस आंदोलन को गति दी जा सकती है।

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के साथ–साथ संस्कृति मण्डलों की स्थापना, विद्यालयों में शिविरों का आयोजन, विद्यालयों में विद्यार्थियों एवं गुरुजनों के जन्म दिवस मनाना तथा विद्यालय और समाज में मिलीजुली शैक्षिक एवं सहशैक्षिक गतिविधियों का संचालन कर युग निर्माण योजना एवं सप्त क्रान्ति आंदोलन से आने वाली पीढ़ी को जोड़ना ही इस परीक्षा की सार्थकता है। शांतिकुंज एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय इस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं।

परीक्षा संचालन कैलेन्डर

क्र.	कार्य	समयावधि
1.	विद्यालयों में सम्पर्क	शिक्षा सत्र प्रारंभ होने से दो माह तक
2.	विद्यालयों से नामीनल रोल प्राप्त करना	शिक्षा सत्र प्रारम्भ होने से तीन माह तक
3.	अध्ययन सामग्री की मांग 10 प्रतिशत राशि के साथ शांतिकुंज भेजना	परीक्षा तिथि से तीन माह पूर्व
4.	अध्ययन सामग्री का वितरण	मांग पत्र प्राप्ति के बाद
5.	परीक्षा सहयोग राशि प्राप्त करना	परीक्षा तिथि के 15 दिन पहले तक
6.	प्रश्न पत्रों हेतु माँग भेजना	परीक्षा से 20 दिन पहले तक
7.	परीक्षा केन्द्र पर परीक्षा संचालन, व्यवस्था, पर्यवेक्षण आदि की तैयारी को सुनिश्चित करना	परीक्षा तिथि से 7 दिन पूर्व
8.	परीक्षा केन्द्र पर प्रश्न पत्र पहुंचना	परीक्षा तिथि के एक दिन पूर्व या 2 घंटे पूर्व
9.	परीक्षा का आयोजन	निर्धारित तिथि व कार्यक्रम के अनुसार
10.	परीक्षा उपरांत उत्तर–पुस्तिकाओं का पैकेट सील्ड होना	परीक्षा के तत्काल बाद
11.	उत्तर पुस्तिकाओं का सील्ड पैकेट जिला संयोजक को पहुचाना	परीक्षा के दिन या दूसरे दिन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

12.	उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन	परीक्षा तिथि से दो माह के भीतर
13.	परीक्षा परिणाम एवं मेरिट सूची तैयार कर राज्य समिति को भेजना	परीक्षा तिथि से दो माह के भीतर यथाशीघ्र कम्प्यूटर मूल्यांकन होने पर
14.	परीक्षा परिणाम एवं प्रमाण–पत्र विद्यालयों का भेजना	राज्य समिति के अनुमोदन होने के सात दिन के भीतर
15.	जिला एवं तहसील स्तरीय पुरस्कारों का वितरण	जनवरी/फरवरी तक
16.	आय–व्यय पत्रक (प्रारूप–10)	शांतिकुंज 28 फरवरी तक भेजना
17.	परीक्षा सहयोग राशि	10 प्रतिशत मांग पत्र के साथ एवं शेष राशि परीक्षा तिथि से 15 दिन पहले एवं प्रश्न–पत्र लेते समय तक

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

पृष्ठभूमि –

भारतवर्ष, ऋषि–मुनियों की यह देवभूमि अतीत में प्रकाश स्तम्भ की तरह से पूरे विश्व को अपनी देव संस्कृति से आलोकित करती रही है। इसके प्रमाण आज भी विश्व के अनेक देशों में उपलब्ध है। महात्मा बुद्ध के धर्म चक्र प्रवर्तन तक यह सांस्कृतिक आलोक दिग–दिगंत में प्रकाशमान होता रहा, किन्तु कालान्तर में विदेशी पराधीनता के कारण हमारी यह दिव्य संस्कृति ह्रासोन्मुख होने लगी।

युग दृष्टा पू.पं. श्रीराम शर्मा आचार्य, संस्कृति के इस निरंतर ह्रास से व्यथित रहे। उनकी यह चिंता थी, कि कहीं नई पीढ़ी भटक न जाए? अतः पीढ़ी को नई दिशा देने के लिए उन्होंने शिक्षा और विद्या के समन्वय पर जोर दिया और यह आवश्यकता प्रतिपादित की कि शिक्षा और विद्या का समन्वय ही भारतीय संस्कृति को बचा पाएगा। इसी तारतम्य में छात्र स्तर पर मध्यप्रदेश भोपाल में सन् 1994 में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा प्रारंभ की गई।

शनैः शनैः यह परीक्षा विस्तार पाती गई और पा रही है। हिन्दी और अंग्रेजी सहित अब यह देश की 8 भाषाओं में मध्यप्रदेश से उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, हिमांचल, उड़ीसा, आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु, बिहार, राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात, दिल्ली, पंजाब, चंडीगढ़, हरियाणा, छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल, झारखण्ड, जम्मू कश्मीर, अरुणांचल, त्रिपुरा, आसाम, मेघालय एवं अंडमान निकोबार द्वीप में फैल चुकी है। अन्य अहिन्दी भाषी प्रान्तों में भी शिक्षण सामग्री का स्थानीय भाषाओं में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अनुवाद कर पूरे देश में परीक्षा आयोजन की तैयारी की जा रही है। "चले शेष गाँव की ओर" का लक्ष्य रखते हुए उसे अधिक से अधिक विस्तार दिया जा रहा है।

इस परीक्षा के माध्यम से अनगढ़ता सुघड़ता में बदलेगी तथा छात्र–छात्राओं में अपनी संस्कृति के प्रति जागरूकता भी पैदा होगी। व्यक्ति, परिवार व समाज में सांस्कृतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना से राष्ट्र सुदृढ़ एवं गौरवान्वित होगा।

उद्देश्य –

1. छात्र–छात्राओं में स्कूली शिक्षा के साथ–साथ मानव मूल्यों का विकास करना।
2. सांस्कृतिक चेतना जागृत करना।
3. भारतीय संस्कृति का निकट से परिचय कराना।
4. श्रेष्ठताओं, संवेदनाओं और सद्गुणों के प्रति आकृष्ट करना।
5. संस्कृतिनिष्ठ जीवन जीने के लिए प्रेरणा देना।
6. सांस्कृतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को दैनिक जीवन से जोड़ना एवं जीवन में उतारना।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

परीक्षा का संचालन –

परीक्षा संचालन का मुख्य केन्द्र शांतिकुंज हरिद्वार है। राज्य, जोनल–संगठन, उपजोन, जिला–समिति, गायत्री चेतना केन्द्र, युवा संगठन, रचनात्मक ट्रस्ट, गायत्री शक्तिपीठ/प्रज्ञापीठें एवं उनके सहयोगी तंत्र परीक्षा संचालन के उपकेन्द्र हैं। भा.सं. ज्ञान परीक्षा की प्रमुख श्रद्धेया जीजी शैल बाला पण्ड्या है। सभी कार्य उनके तथा श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी के निर्देशन व मार्गदर्शन में होते हैं। सभी पत्राचार व पत्रोत्तर उन्हीं की सहमति व नाम से होते हैं।

परीक्षा क्रम –

1. परीक्षा वर्ष में एक बार सितंबर से दिसम्बर के बीच होती है। परीक्षा कार्यक्रम राज्यवार निर्धारित कर उनकी सूचना यथा समय दी जाती है।
2. राज्य स्तर पर निम्नानुसार चार वर्गों की अलग–अलग परीक्षा होती है – (अ) कक्षा 5 एवं 6 (ब) कक्षा 7 एवं 8 (स) 9 व 10 (द) कक्षा 11 व 12
3. राज्य स्तर पर प्रत्येक वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थी को 200 रु. प्रतिमाह 10 माह के लिए छात्रवृत्ति दी जाती है। द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थी को नकद/सद्साहित्य पुरस्कार में दिए जाते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

4. तहसील जिला और राज्य स्तर पर मेरिट में आने वाले छात्र/छात्राओं को पुरस्कार दिए जाते हैं।

5. परीक्षा में उत्तीर्ण–प्रत्येक छात्र/छात्राओं को प्रमाण पत्र दिया जाता है।

6. परीक्षा में शामिल होने वाले प्रत्येक छात्र/छात्राओं को लगभग दो माह पूर्व शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराई जाती है।

7. जिस विद्यालय से कम से कम 20 विद्यार्थी परीक्षा में शामिल होते हैं, उस विद्यालय को ही परीक्षा केन्द्र बना दिया जाता है। जिस विद्यालय में बीस से कम विद्यार्थी सम्मिलित होते हैं वहाँ के परीक्षार्थियों को निकट के परीक्षा केन्द्र में यथा सम्भव सम्मिलित किया जाता है।

8. मेरिट में आने वाले विद्यार्थियों के लिए तीन दिवसीय विशेष प्रशिक्षण शिविर जिला स्तर, व केन्द्र स्तर पर आयोजित किए जाते हैं।

9. भारतीय संस्कृति में रुचि रखने वाले और परीक्षा में सम्मिलित होने वाले छात्र/छात्राओं, अभिभावकों और शिक्षकों का विद्यालय में संस्कृति मण्डल (संस्कृति समिति) गठित कर वर्ष भर उनमें नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक मूल्यों के विकास का प्रयास किया जाता है।

10. इस वर्ष में गायत्री परिवार परिजन, शिक्षकों एवं अभिभावकों के लिए विशेष परीक्षा का आयोजन जिला स्तर पर किया जा रहा है जो वर्तमान में कक्षा 11 व 12 के स्तर की होगी।

केन्द्र स्तर (शांतिकुंज) के कार्य –

1. परीक्षा के प्रश्न बैंक, पुस्तकें, प्रमाण पत्र, प्रशस्ति पत्र, प्रश्न पत्र ब्रोशर आदि सामग्री मुद्रित कराना, संशोधित करना और जिला स्तर तक पहुँचाने की व्यवस्था करना।

2. परीक्षा के प्रश्न पत्र किसी पूर्व निर्धारित स्थान तथा तिथि पर केन्द्र द्वारा जिला संयोजकों/उपजोन/जोनल केन्द्र को उपलब्ध कराना।

3. समय–समय पर आवश्यकतानुसार परीक्षा सम्बंधी नियमों में संशोधन करना।

4. शांतिकुंज के निर्देशन में प्रान्तीय समन्वय समिति, शक्तिपीठ ट्रस्ट तथा जोनल संगठन प्रभारी द्वारा सभी जिलों के संयोजकों से परामर्श व सहमति से परीक्षा राज्य समिति का गठन किया जाता है, जो कि परीक्षा प्रकोष्ठ शांतिकुंज के मार्गदर्शन व निर्देशों का पालन करते हुए संपूर्ण राज्य में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संचालित परीक्षा व्यवस्था में सहयोग करती है। विवादास्पद स्थिति में शांतिकुंज परीक्षा संचालक का निर्णय तथा आदेश अंतिम और सर्वमान्य होगा।

5. राज्य एवं प्रत्येक जिला में आय–व्यय का व्यौरा प्राप्त करना।

6. राज्य/जिलों में सहयोगी समीक्षक, कोऑर्डिनेटर भेजना, जो विधि व्यवस्था एवं आय–व्यय की सहयोगात्मक समीक्षा करेंगे तथा उचित मार्गदर्शन देंगे।

7. राज्य स्तर पर पुरस्कार वितरण के लिए वास्तविक व्यय उपलब्ध कराना। पुरस्कार वितरण, प्रशिक्षण, शिक्षक सम्मेलन व अन्य कार्यों में होने वाले व्यय का अनुमानित बजट, अधिकृत राज्य समिति से, समारोह के एक माह पूर्व प्राप्त करना।

समितियों का गठन व स्वरूप –

राज्य, जिला, तहसील समितियों का यथासंभव कार्यकाल 2 वर्ष का रहेगा। आवश्यकतानुसार ही समितियों का पुनर्गठन जो आगे भी सामान्यतः जारी रहेगा। भा.सं.ज्ञा. परीक्षा प्रकोष्ठ शांतिकुंज की पूर्व सहमति लेकर ही करें बिना उनकी पूर्व सहमति या संज्ञान के किसी प्रकार का परिवर्तन न करें। समिति परिवर्तन का प्रस्ताव अनुमोदनार्थ शांतिकुंज भेजा जाये। शांतिकुंज के अनुमोदन के पश्चात् ही नई समिति प्रभावी होगी। सभी जिला समितियों का अनुमोदन कर भेजना, जो परीक्षा संचालन–व्यवस्था हेतु अधिकृत होती है।

राज्य समिति का गठन एवं कार्य –

शांतिकुंज परीक्षा प्रकोष्ठ की अनुमति एवं परामर्श लेकर प्रान्तीय समन्वय समिति, जोनल संगठन गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ताओं तथा जिलों के संयोजकों से परामर्श व सहमति से राज्य समिति का गठन किया जाए जो शांतिकुंज के निर्देशों का पालन करते हुए संपूर्ण राज्य में परीक्षा व्यवस्था में सहयोग करेगी। प्रत्येक स्थिति में शांतिकुंज प्रमुख का आदेश सर्वमान्य होगा।

राज्य स्तरीय समिति – (क) संयोजक (ख) सचिव/सदस्य (ग) विशेष आमंत्रित सदस्य (घ) जोनल संगठन प्रभारी सदस्य (ङ) शक्तिपीठ संगठन प्रभारी सदस्य (च) पूर्व परीक्षा जोन संयोजक/वरिष्ठ जिला संयोजक (छ) प्रान्तीय समन्वय समिति का सदस्य (ज) युवा मण्डल का सदस्य एवं महिला मण्डल की सदस्या

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ज्ञातव्य – यथासंभव राज्य समिति का संयोजक उन्हें ही नियुक्त/मनोनीत किया जाना चाहिए, जिन्हें भा.सं.ज्ञान परीक्षा कार्य सम्पन्न करने का पर्याप्त अनुभव हो।

राज्य समिति का कार्य –

1. परीक्षा के हित में शासकीय स्तर पर परीक्षा आयोजन की अनुमति एवं क्रियान्वयन में सहयोग प्राप्त करना अर्थात् शासनादेश प्राप्त कर सभी जिला संयोजकों को उसकी एक प्रति भेजना।
2. मथुरा जन–जागरण प्रेस, केन्द्र द्वारा निर्धारित प्रिंटिंग प्रेस से प्राप्त प्रश्न–पत्र पैकेट्स निर्धारित जिलों को मांग के अनुसार वितरण करना।
3. प्रश्न–पत्र प्राप्त करते समय जिलों से आय–व्यय पत्रक सहित अन्य शेष साहित्य का हिसाब–प्रारूप 13 में अनिवार्यतः प्राप्त करना। केन्द्र को देय राशि जिलों से शीघ्र ही केन्द्र को भिजवाना। जिलों से शेष साहित्य सीधे मथुरा जन–जागरण प्रेस को भिजवाना और जिलों की सूची एवं साहित्य का पूर्ण विवरण शीघ्र केन्द्र को भेजना।
4. जिलों से प्राप्त समान अंक पाने वाले एक से अधिक छात्र मेरिट में होने पर टाई ब्रेक द्वारा प्रश्नों का मूल्यांकन कर साक्षात्कार करके प्रावीण्य सूची तैयार करना। इसके लिए जोनल – संगठन/राज्य स्तर पर एक समिति का गठन करना, जिसका निर्णय अंतिम और सर्वमान्य होगा। समिति का गठन जोनल संगठन/राज्य समिति आम सहमति से करेगी, जिसमें सम्बंधित जिले के प्रतिनिधि अवश्य हों ताकि पारदर्शिता बनी रहे।
5. जिलों का परीक्षाफल परीक्षा के बाद अधिकतम दो माह की अवधि में अनिवार्यतः प्राप्त हो जावे ऐसी सुनिश्चित व्यवस्था बनाना। जिसके आधार पर राज्य स्तरीय प्रावीण्य सूची तैयार करना तथा उसकी प्रति प्रत्येक जिले को भेजना। ध्यान रहे परीक्षा परिणाम हर स्तर पर जनवरी/फरवरी के अंत तक घोषित हो जाना चाहिए। निश्चित समयावधि पश्चात् प्राप्त जिला मेरिट सूची के छात्रों को राज्य प्रावीण्य सूची में शामिल करने के लिए राज्य समिति बाध्य नहीं।
6. राज्य स्तरीय पुरस्कार व्यवस्था सभी की सहमति से करना। राज्य स्तरीय पुरस्कार वितरण सुविधानुसार किसी अन्य जिलों में किया जा सकता है।

विशेष – भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा 2005 की व्यवस्था से पूर्व जोन व्यवस्था को समाप्त कर दिया गया है। जो जोन संयोजक थे वे अपने क्षेत्र के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जोनल संगठन राज्य समिति के सदस्य के रूप में शांतिकुंज द्वारा मनोनीत सदस्य हैं तथा राज्य समिति/जोनल संगठन, केन्द्र के निर्देशन में कार्य करेंगे यथा – राज्य समिति/जोनल संगठन द्वारा निर्देशित सम्बन्धित जिलों का दौरा करना, प्रश्न पत्र पैकेट्स पहुँचाने की व्यवस्था करना, परीक्षा संचालन व्यवस्था में सहयोग करना। परीक्षा परिणाम समय से तैयार हो इसके लिए निर्दिष्ट जिला के संयोजकों को बार–बार सचेत करते रहना।

जिला समिति का स्वरूप एवं कार्य –

गठन – जिला समन्वय समिति, उपजोन– संगठन सभी ट्रस्टों के ट्रस्टीगण एवं मण्डलों के कार्यकर्त्तागण मिलकर सर्व सम्मति से जिला समिति का गठन करेंगे। शांतिकुंज को मान्य प्रपत्र पर गठित समिति के सदस्यों व पदाधिकारियों के हस्ताक्षर के साथ कार्यवाही की प्रति सहित अनुमोदन के लिए भेजेंगे। समिति का कार्यकाल सामान्यतः दो वर्ष का होगा। विशेष परिस्थिति में कम या ज्यादा किया जा सकता है।

(अ) पूर्व समिति प्रभारी (संयोजक) से नव समिति प्रभारी (संयोजक) शेष–देय राशि तथा पुस्तकों का हिसाब प्राप्त कर लें, क्योंकि वे ही सभी तरह के भुगतान व कार्य के लिए पूर्ण जिम्मेदार होंगे।

(ब) बिना शांतिकुंज की पूर्व अनुमति या संज्ञान के कार्यरत समिति में किसी भी प्रकार का, किसी के भी द्वारा परिवर्तन तथा संशोधन न किया जावे। वही समिति अधिकृत होगी जिसका गठन शांतिकुंज परीक्षा प्रकोष्ठ की सहमति तथा अनुमोदन से हुआ है।

(स) जिला में कुल परीक्षा शुल्क (सहयोग राशि) की निर्धारित प्रतिशत राशि से जिले के सभी व्यय, पुरस्कार, छात्र शिविर व शिक्षक सम्मान किये जाएँ, आय–व्यय पत्रक (प्रारूप 10 देखें) प्रत्येक वर्ष फरवरी माह तक शांतिकुंज को पूर्ण जानकारी के साथ भेजें। परीक्षा सहयोग राशि का उपयोग अन्य किसी निर्माण कार्य में या दान देने में न किया जाए।

जिला समिति का स्वरूप –

(1) संयोजक (2) सचिव (3) कोषाध्यक्ष (4) सदस्य (शिक्षा क्षेत्र से एक) (5) सदस्य (गायत्री परिवार से एक), (6) गायत्री शक्तिपीठ/प्रज्ञापीठ/रचनात्मक ट्रस्ट का मनोनीत सदस्य (7) युवा मण्डल का मनोनीत सदस्य (8) महिला/प्रज्ञा मण्डल का मनोनीत सदस्य (8) महिला/प्रज्ञा मण्डल का मनोनीत सदस्य (9) तहसील को–आर्डिनेटर्स (10) समन्वय समिति/उपजोन का मनोनीत सदस्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जिला स्तर के कार्य –

1. परीक्षा के हित में शासनादेश के आधार पर जिला शिक्षा अधिकारियों से परीक्षा के आयोजन की अनुमति प्राप्त कर सभी विद्यालयों को उसकी एक प्रति देना।

2. सत्रारम्भ से ही प्राचार्य/प्रधानाध्यापक से सम्पर्क कर परीक्षा आयोजन करने के सम्बंधित विद्यालय के प्राचार्य/प्रधान प्रधानाध्यापक को प्रारूप–1 में पत्र एवं परीक्षा सम्बंधी प्रपत्र नॉमीनल रोल्स ब्रोशर आदि विद्यालय में पहुंचाना।

3. नामीनल रोल तीन प्रतियों में तैयार कर विद्यालय से दो प्रतियाँ प्राप्त करना। परीक्षाफल तैयार होने के पश्चात् प्राचार्यो/प्रधानाध्यापक को परीक्षाफल से अवगत कराना तथा एक प्रति में भरकर देना।

4. परीक्षा में बैठने वाले छात्रों की निर्धारित परीक्षा शुल्क सभी स्तरों पर प्राप्त कर, जिला संयोजक के पास जमा कराना। जिन परिजन/शिक्षण को प्रवेश सहयोग राशि प्राप्ति का अधिकार दिया जाता है उसकी प्रारूप–4 में अधिकार पत्र जारी करना एवं उसका विवरण रखना।

5. परीक्षा सहयोग राशि की पावती निर्धारित नॉमीनल रोल पर प्राचार्य/प्रधानाध्यापक को प्रदान करना।

6. परीक्षा तिथि से एक या दो दिन पूर्व जिला समिति के संयोजक द्वारा प्रश्न पत्रों के विवरण का विवरण प्रारूप–9 में तैयार करना तथा प्रश्न पत्रों का शील्ड लिफाफा विद्यालयों को प्रदान करना तथा परीक्षार्थियों की जानकारी के लिए निर्देश प्रारूप–2 में योजना।

7. दूर के परीक्षा केन्द्रों पर एक/दो दिन पूर्व पहुँचकर प्रश्न–पत्र का सील्ड पैकेट केन्द्राध्यक्ष को प्रदान करना।

8. परीक्षा तिथि को परीक्षा के निर्धारित समय से एक घण्टा पूर्व परीक्षा केन्द्र पर पहुँचकर केन्द्राध्यक्ष से सम्पर्क करते हुए, परीक्षा–व्यवस्था, परीक्षा कक्ष में छात्रों के बैठने की व्यवस्था, पर्यवेक्षक आदि सुनिश्चित करना।

9. परीक्षा केन्द्र पर कम से कम एक–एक परिजन पहुँचाने की व्यवस्था करना।

10. सील्ड उत्तर पुस्तिकायें उसी दिन और दूरवर्ती क्षेत्रों के परीक्षार्थियों की दूसरे दिन अनिवार्य रूप से जिला/तहसील संयोजक (कों–आर्डिनेटर) के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पास जमा कराना।

11. यह सुनिश्चित करना कि परीक्षा केन्द्र दूर हो या निकटवर्ती, सभी पर उत्तर पुस्तिकाएँ परीक्षा के तत्काल बाद सील की जाएँ।

12. तहसील स्तर के परिजनों का पूर्ण सहयोग उत्तर पुस्तिकाओं की जांच में लेना। परीक्षक हेतु नियुक्ति पत्र प्रारूप–5 में जारी करना।

13. जिला/तहसील स्तर पर उत्तर पुस्तिकाओं का 40 दिन के भीतर ही मूल्यांकन और परीक्षा परिणाम तैयार करना तथा राज्य/केन्द्र को सूची भेजना।

14. प्रत्येक छात्र/छात्रा को इस परीक्षा में सम्मिलित होने का प्रमाण पत्र शांतिकुंज हरिद्वार द्वारा दिया जाता है। मेरिट में आने वाले छात्र/छात्राओं का प्रमाण–पत्र अलग होगा। प्रमाण पत्रों पर जिला एवं तहसील स्तरीय समिति छात्रों के नाम एवं विवरण की पूर्ति करवा कर यथाशीघ्र परीक्षा के केन्द्र के प्राचार्य/प्रधानाध्यापक तक पहुँचायेंगे। वे उन्हें अपने–अपने विद्यालयों के परीक्षार्थियों को वितरित करेंगे।

    इस वर्ष प्रमाण–पत्रों में अंकों के स्थान पर, सामान्य श्रेणी 1–50 प्राप्तांक पर, श्रेष्ठ श्रेणी 51–80 प्राप्तांक पर तथा उत्कृष्ट श्रेणी 80–100 प्राप्तांक पर देना है। प्राप्त श्रेणी पर सही का निशान लगायें शेष श्रेणी काट दें।

    आवश्यकतानुसार सम्बंधित ब्लाकों/तहसीलों में चयनित को–आर्डिनेटर को अपने क्षेत्र में परीक्षा सम्बंधी व्यय के लिए राशि उपलब्ध कराना। तहसील स्तर का पुरस्कार वितरण करना। तहसील स्तर पर 500 से कम प्रतिभागी होने पर तहसील स्तर के पुरस्कार न बाँटे जायें, किन्तु प्रावीण्य सूची हर हालत में बनाई जाए, क्योंकि हो सकता है छात्र जिले या प्रान्त की मैरिट सूची में स्थान बनान में सक्षम हो। जिला स्तर के लिए भी जिला प्रावीण्य सूची हर हालत में बने, लेकिन जिला स्तरीय पुरस्कार के लिए जिले में न्यूनतम 3000 छात्र परीक्षा में सम्मिलित हों।

15. निर्धारित जाँच तिथि (परीक्षा से 40 दिन) के अंदर अनिवार्य रूप से परीक्षा–फल तैयार कराना एवं प्रमाण पत्र तैयार कर शीघ्र ही छात्रों को वितरण हेतु संस्था, प्रमुख/प्रभारी को पत्र प्रारूप–7 में साथ देना।

16. मेरिट में स्थान प्राप्त छात्रों के समान अंक आने पर छात्रों का साक्षात्कार कर अंतिम मेरिट सूची तैयार करना और प्रत्येक वर्ग के सर्वोच्च अंकधारी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पांच छात्रों की मेरिट सूची बनाकर उत्तर पुस्तिका सहित राज्य समिति को भेजना।

17. जिला परीक्षाफल राज्य समिति द्वारा अनुमोदित होने तथा राज्य स्तरीय प्रावीण्य सूची के पश्चात् ही घोषित करना और उसकी प्रति, सम्बंधित विद्यालयों के प्राचार्य/प्रधानाध्यापक हो अनिवार्यतः भेजना।

18. विद्यालयों में संस्कृति मण्डल का गठन करना। संस्कृति मण्डल पुस्तिका प्रदान करना एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि की व्यवस्था करना।

19. संस्कृति मण्डल में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के उत्कृष्ट विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के माध्यम से समाज एवं विद्यालयों में घनिष्ठता स्थापित करना।

20. शाला कैलेण्डर के अनुरूप ही संस्कृति मण्डल की कार्य योजना बनाना तथा एक.दिवसीय शिविर आयोजित करना।

21. विद्यार्थियों में नैतिकता, जीवन मूल्य, श्रेष्ठता, संवेदना, सांस्कृतिक व आध्यात्मिक चेतना एवं मूल्यों की स्थापना हेतु विद्यालय के अन्दर एवं विद्यालय के बाहर गतिविधि चलाना एवं उनमें सद्गुणों का व्यावहारिक विकास करना।

22. जिला एवं तहसील स्तरीय पुरस्कार वितरण करना। पूरे जनपद/जिला में दौरा करने के लिए होने वाले व्यय को समायोजित करने का अधिकार जिला समिति को होगा। ध्यान रहे यह खर्च निर्धारित सीमा से अधिक न हो तथा मिशन की गरिमा बनी रहे।

23. जनपद जिला परीक्षार्थियों की राशि का हिसाब प्रारूप–8 मेंभरकर राज्य समिति को भेजेगा उतने ही प्रश्न–पत्र केन्द्र जारी करेगा।

24. सभी राज्यों में परीक्षा शुल्क लेने की अंतिम तिथि परीक्षा तिथि से 15 दिन पूर्व होगी। निर्धारित तिथि के पश्चात् कोई शुल्क नहीं लिया जायेगा। इसका पालन कठोरता से हो।

25. समय–समय पर परीक्षार्थियों की जानकारी जनपद/जिला संयोजक राज्य समिति को भेजेगा, जिससे राज्य समिति के पास यह सूचना रहे कि कितने प्रश्न पत्र भिजवाने हैं। प्रश्न पत्र प्राप्त करने के लिए राज्य समिति की ओर से एक मांग पत्र परीक्षा के 20 दिन पहले भेजें, जिसमें प्रश्न–पत्रों के पैकिटों की संख्या दर्शायी जाए। (प्रारूप–9 देखें)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

26. जनपद/जिला संयोजक का यह विशेष दायित्व रहेगा कि तहसील एवं ब्लाक सहित सभी सम्बंधित गायत्री परिजनों के आने–जाने का मार्ग–व्यय, पत्राचार एवं टेलीफोन आदि के व्हाउचर प्राप्त होते ही भुगतान करने में तत्परता बरतें।

27. जिन–जिन विद्यालयों से परीक्षा सहयोग राशि प्राप्त हो जाए, उसे एकत्रित कर जनपद/जिला स्तर पर निर्धारित बैंक में शीघ्रतिशीघ्र जमा करते रहें और अग्रिम राशि समायोजित कर शेष राशि को 'श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट वास्ते भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा शांति कुंज हरिद्वार' के नाम बैंक ड्राफ्ट या निम्नलिखित बैंक के खाते में पे–इन–स्लिप के माध्यम से जमा कर मूल प्रति अविलम्ब भेजें तथा छायाप्रति अपने पास रखें –

आईसीआईसीआई बैंक खाता – 023901000009
भारतीय स्टेट बैंक खाता – 10876860227
पंजाब नेशनल बैंक खाता – 3129010100000018
एक्सिस बैंक – 156010100024091

28. जिला संयोजक परीक्षा सामग्री की मांग की संख्या के साथ–साथ उसकी 10 प्रतिशत राशि अग्रिम भेजेंगे। यह राशि केन्द्रांश में समायोजित होगी।

29. पुरस्कार वितरण समारोह होने के पश्चात् आय–व्यय का ब्यौरा प्रारूप–10 में केन्द्र शांतिकुंज को 15 दिन के अंदर अवश्य भेजें जिसका पालन अनिवार्य है। परीक्षा आय–व्यय का लेखा किसी भी स्थिति में गायत्री शक्तिपीठ/प्रज्ञापीठ के आय–व्यय लेखा के साथ न रखा जाए।

तहसील स्तर की समिति, स्वरूप व कार्य –

जिला समिति तहसील स्तर पर प्रत्येक तहसील में से एक समन्वयक (को–आर्डिनेटर) स–3 (सहयोग सक्रिय सदस्यों) से प्राथमिकता के आधार पर चयन करेगी। कार्यकाल यथास्थिति अनुसार होगा। 'चले शेष गाँव की ओर' अभियान को सफल बनाने में अर्थात् भा.सं.ज्ञान परीक्षा का प्रकाश ग्रामों के विद्यार्थियों तक फैलाने में तहसील समितियों का विशेष योगदान होगा। जिला समिति तथा तहसील समिति परस्पर प्रत्येक कार्य में सहयोग देती रहेगी। समिति का स्वरूप निम्नांकित है – (1) समन्वयक (2) सचिव (3) सहायक कार्यकर्त्ता (प्रज्ञा मण्डल/महिला मण्डल के सदस्य/अन्य परिजन)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तहसील स्तरीय कार्य –

1. तहसील/ब्लाक की शालाओं में प्राचार्य/प्रधानाध्यापक सेसम्पर्क एवं अपने क्षेत्र में प्रचार करना। यदि कोई मार्ग व्यय हो, तो उसे जिला समिति वह करेगी। इस हेतु व्हाउचर देने होंगे।
2. विद्यालयों से छात्रों का नॉमीनल रोल तीन प्रतियों में तैयार कराकर दो प्रतियाँ जिला समिति को भेजना।
3. परीक्षा सम्बंधी सामग्री जिला समिति से प्राप्त करना तथा परीक्षा केन्द्रों पर ले जाने लाने की व्यवस्था सुनिश्चित करना। इस पर किया जाने वाला व्यय जिला समिति वहन करेगी।
4. तहसील/बलक की अधिक से अधिक शालाओं में परीक्षा करवाने का प्रयास करना।
5. अपने क्षेत्र के परिजनों की ऐसी व्यवस्था करना कि परीक्षा तिथि के दो घण्टा पूर्व परीक्षा केन्द्र पर पहुँचकर प्रश्न–पत्र का शील्ड पैकेट शाला–प्रमुख को दें और पर्यवेक्षण में सहयोग करें। यह प्रयास भी करना कि कम से कम एक परिजन प्रत्येक परीक्षा केन्द्र पर परीक्षा अवधि में अवश्य उपस्थित रहें। परीक्षा उपरान्त तहसील को–आर्डिनेटर परीक्षा से सम्बंधित परिजनों से अपनी तहसील के सभी परीक्षा केन्द्रों की उत्तर पुस्तिकाओं के सील्ड पैकेट प्राप्त करेंगे और तहसील/जिला मुख्यालय स्तर पर मूल्यांकन कराने की व्यवस्था करेंगे। उत्तरपुस्तिका जांच में यदि टाई हो, तो प्रश्न पत्र में लाइन के नीचे दिए गए उन्हीं छात्रों के प्रश्नों को जांचा जाये, जिन्हें समान अंक प्राप्त हुए हों। इन प्राप्त अंकों के आधार पर प्रथम, द्वितीय और तृतीय श्रेणी का निर्णय किया जाए एवं उनके नाम उत्तर पुस्तिका सहित जिले को भेजें। जब प्रान्तीय एवं जिले स्तर की प्रावीण्य सूची घोषित हो जाए, तो जिन छात्रों के नाम इस सूची में घोषित हो, उन्हें छोड़कर शेष की प्रावीण्य सूची पुरस्कार हेतु बना ली जाए।
6. आवश्यकतानुसार जिला समिति के सहयोग से तहसील स्तर का पारितोषिक वितरण समारोह करेंगे।
7. तहसील स्तर पर कम से कम 500 छात्र परीक्षा में सम्मिलित हों, तभी पुरस्कार वितरण किया जाएगा, अतः परिजनों को यह प्रयास करना होगा कि अधिक से अधिक छात्र परीक्षा में सम्मिलित हो।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

8. जिला समिति को पूर्ण सहयोग देना तथा तहसील स्तर के कार्यों को सम्पन्न करना।

9. अन्य कार्य जिला समिति के कार्यों के अनुसार किये जाएंगे।

वित्तीय व्यवस्था –

जिलों में कुल परीक्षा राशि से प्राप्त निर्धारित 35 प्रतिशत राशि, जिले के सभी व्यय हेतु रहेगी। यह राशि जिला संयोजक द्वारा बैंक में जमा की जाएगी। संयोजक, कोषाध्यक्ष तथा सचिव इन तीन में से दो के हस्ताक्षर से आहरित की जाएगी, इनमें संयोजक के हस्ताक्षर अनिवार्य होंगे। संस्कृति मण्डल के क्रियाकलापों पर होने वाला व्यय इसी राशि में समायोजित किया जाए।

सभी केन्द्र शांतिकुंज को देय पुस्तकों की सहयोग राशि किस्तों में भेजने का क्रम बनायें ताकि प्रश्न–पत्र लेते समय कुल देय राशि का भुगतान सुनिश्चित किया जा सके। एतदर्थ अपने निकटवर्ती निम्नलिखित बैंक खातों में "श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट एकाउन्ट बी.एस.जी.पी. के नाम बैंक पर्ची भरकर जमा राशि की पावती बैंक से प्राप्त करें। मूल–प्रति एक कॉपी साईज के सादे पन्ने पर चिपका कर शांतिकुंज को फैक्स द्वारा नम्बर 01334–260866 पर भेज देवें तथा मूल प्रति अपने पास सुरक्षित रख लेवें। प्रश्न–पत्र लेते समय जमा राशियों की मूल प्रतियाँ अपने पास लेकर आवें ताकि कुल भुगतान की गयी राशियों का मिलान केन्द्र में प्राप्त राशियों से सुनिश्चित कर अवशेष राशि का भुगतान समय पर कर सकें।

निर्धारित बैंकों में किसी एक भी शाखा अपने आस–पास न हो तो "श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट एकाउन्ट बी.एसजी.पी." के नाम ड्राफ्ट बनाकर रजिस्टर्ड डाक द्वारा शांतिकुंज भेजें।

पुरस्कार वितरण –

जो छात्र प्रान्त, जिला, एवं तहसील स्तर पर प्रत्येक वर्ग में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्रावीण्य सूची में प्राप्त करते हैं, उन्हें निम्नानुसार पुरस्कार राशि प्रदान की जाती है। पुरस्कार नगद/सद्साहित्य के रूप में देय होगा।

	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	रिमार्क
1. प्रान्त स्तर पर छात्रवृत्ति (200 रु. प्रति माह, 10 माह के लिए)	750/–	500/–	शांतिकुंज द्वारा देय	
2. जिला स्तरपर	400/–	300/–	200/–	जिला समिति द्वारा देय
3. तहसील स्तरपर	200/–	150/–	100/–	जिला समिति द्वारा देय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परीक्षा सहयोग राशि (शुल्क) –

क्रम	कक्षा	राशि प्रति	जिले का अंश	केन्द्र का अंश	विशेष विवरण
1.	5–6	12/–	4.20	7.80	मूल्यांकन यथावत्
2.	7–12	15/–	4.50	10.50	10.50 में 2 रु. कम्प्यूटराइज्ड मूल्यांकन के शामिल हैं।

राशि जमा करने की अंतिम तिथि परीक्षा तिथि से पन्द्रह दिनपूर्व होगी, इसके पश्चात् कोई शुल्क जमा न किया जाए, जिससे निश्चित संख्या में प्रश्न–पत्रों की व्यवस्था की जा सके। परीक्षा राशि प्रापतकर विद्यालय प्रमुख को नौमिनल रोड की प्रति में पावती आवश्य दें।

विशेष – आवश्यकतानुसार विशेष परिस्थितियों में सहयोग राशि में परिवर्तन शांतिकुंज द्वारा किया जा सकता है। परीक्षा सहयोग राशि में छात्रों को दी जाने वाली अध्ययन सामग्री, पुरस्कार, शिविर आदि में होने वाले व्यय शामिल हैं।

परीक्षा तिथि – परीक्षा तिथि केन्द्र शांतिकुंज द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रान्तों की स्थिति अनुसार वर्ष का कलेण्डर सामने रखकर निर्धारित की जाती है।

विशेष – परीक्षा तिथि में विशेष परिस्थितियों या विशेष कारणों से परिवर्तन या संशोधन का अधिकार केवल केन्द्र को है। सामान्यतः यह परीक्षा माह अक्टूबर–नवम्बर में आयोजित होती है।

अध्ययन सामग्री – कक्षा 5 से 12 के, प्रत्येक वर्ग के, परीक्षार्थियों को परीक्षा की तैयारी व ज्ञानअर्जन हेतु अध्ययन सामग्री प्रदान की जाती है –

1. संस्कृति सुमन – कक्षा पांचवीं एवं छठवीं के लिए
2. संस्कार सौरभ – कक्षा सातवीं एवं आठवीं के लिए
3. संस्कृति सुधा – कक्षा नवमी एवं दसवीं के लिए
4. संस्कृति मंजरी – कक्षा ग्यारहवीं एवं बारहवीं के लिए

अंग्रेजी एवं क्षेत्रीय भाषाओं – मराठी, उड़िया, तमिल, तेलगू, गुजराती, बंगाली, पंजाबी आदि अन्यान्य भाषाओं में उक्त पुस्तकें यथास्थिति अनुवाद कर दी जाती हैं। केन्द्र को देय शुल्क पर आधारित 1000 पुस्तकों पर प्रचार–प्रसार हेतु 25 पुस्तकें केन्द्र शांतिकुंज द्वारा निःशुल्क प्रदान की जायेगी, जिनका उपयोग विद्यालयों में प्रचार हेतु किया जाना है। शेष पुस्तकों की वापसी के साथ उतनी संख्या में प्रमाण–पत्र भी वापस करना होगा अन्यथा प्रमाण–पत्र का मूल्य भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सम्बन्धित जिला को वहन करना होगा। परीक्षा उपरांत शेष बची पुस्तकें जन–जागरण प्रेस मथुरा (उत्तरप्रदेश) को अविलम्ब पेड बिल्टी से भेजी जाये। भेजने की अवधि ा परीक्षा तिथि से दो माह तक अन्यथा शेष पुस्तकों की राशि भी जिलों द्वारा देय होगी। पुस्तकों के मांग पत्र के साथ 10 प्रतिशत अग्रिम राशि भेजने पर ही पुस्तकें भेजी जा सकेंगी। पुस्तकें आवश्यकतानुसार ही मंगाई जाएँ, अधिक नहीं, ताकि अनावश्यक ट्रांसपोर्ट व्यय से बचा जा सके। जितनी पुस्तकें जिला समिति मंगाती है उसकी देय राशि–भुगतान की जवाबदारी उसी जिले की होगी, चाहे उस जिले ने अन्य किसी जिले को पुस्तकें दे दी हो। अन्य जिलों को दी गयी पुस्तकों की पावती अवश्य प्राप्त कर केन्द्र को भेजें।

जिले को विशेष छूट – जो जिला प्रश्न पत्र लेते समय तक कुल देय राशि का 90 प्रतिशत अंश जमा करता है तथा शेष 10 प्रतिशत राशि को परीक्षा के बाद 10 दिन में केन्द्र को भुगतान कर देता है, और पुस्तकों का कोई लेनदेन शेष नहीं रहता है, तो उस जिला को 50 पैसे प्रति छात्र विशेष छूट के रूप में केन्द्र द्वारा देय होगा, जो कि विद्यालय व छात्र हित में व्यय किया जायेगा, जैसे कि शालाओं में सद्वाक्य आदि लगाना।

विलंबित भुगतान पर ब्याज राशि 12 प्रतिशत देय – जो जिला, परीक्षा पश्चात् दो माह की अवधि तक सम्पूर्ण देय राशि एवं शेष बची पुस्तकें जमा नहीं कराता है, उसे पुस्तक राशि पर 12 प्रतिशत ब्याज केन्द्र को देय होगा।

पुस्तकें मंगाने की अंतिम समय–सीमा – जिला संयोजक की प्राप्त मांग पर परीक्षा से 15 दिन पूर्व तक ही केन्द्र इसशर्त पर पुस्तकें भेजने की व्यवस्था करेगा कि माँग पर भेजी गयी पुस्तकें जिले से वापिस नहीं की जावेंगी।

संस्कृति मण्डल (संस्कृति समिति) प्रोत्साहन राशि – यदि कोई विद्यालय शत् प्रतिशत छात्र परीक्षा में शामिल करता है तथा संस्कृति मण्डल गठित करता है तो उसे 50 पैसा केन्द्र की ओर से तथा 50 पैसा जिला की ओर से अर्थात् कुल एक रुपया प्रति छात्र विद्यालय प्रमुख को संस्कृति मण्डल कार्यक्रम के व्यय हेतु दी जाएगी। यह राशि संस्कृति मण्डल गठन एवं उसके कार्यक्रम सम्पन्न करने का पूर्ण विवरण भा.सं.ज्ञा. परीक्षा प्रकोष्ठ, शांतिकुंज हरिद्वार में प्राप्त होने पर देय होगी।

प्रश्न–पत्र – परीक्षा के प्रश्न पत्र चार वर्गों में होंगे। प्रत्येक वर्ग के लिए 100 अंक का प्रश्न पत्र होगा। जो विभिन्न रंगों में अलग–अलग लिफाफों में 10, 20, 50, एवं 100 की संख्या के क्रम होंगे। प्रश्न पाठ्यक्रम (खण्ड–अ एवं ब) के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अतिरिक्त भी पूछे जा सकते हैं।

उत्तर चिन्हित करने का तरीका — परीक्षार्थी प्रश्नों का सही विकल्प चुनकर उत्तर के रूप में सामने बने गोले में बाल पेन से भरेंगे। जिन परीक्षार्थियों को ओ.एम.आर. शीट उपलब्ध कराई जाती है, उनको उत्तर उसी शीट में ही प्रश्न क्रमांक के सामने बने गोले में बाल पेन से भरना होगा।

प्रश्नों के प्रकार एवं रंग — प्रश्न–पत्र में वस्तुनिष्ठ प्रश्न या लघुउत्तरीय प्रश्न होंगे। पाठ्यक्रम पुस्तक के अलावा बाहर से 'संस्कृति मूलक' प्रश्न पूछे जा सकते हैं। प्रश्न पत्र में निर्धारित प्रश्नों के अतिरिक्त प्रश्न 'टाई ब्रेक' भी होंगे, जिन्हें प्रत्येक परीक्षार्थी को हल करना है, परन्तु वे उन्हीं परिस्थितियों में जाँचे जायेंगे जब मेरिट (प्रावीण्य सूची) में समान अंक पाने वाले एक से अधिक परीक्षार्थी होंगे। सभी स्तरों पर प्रश्न–पत्रों एवं लिफाफों के रंग अलग–अलग होंगे।

प्रावीण्य सूचियों का निर्धारण

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

तहसील स्तर की प्रवीण्य सूची — प्रत्येक छात्र प्रश्न–पत्र में लाइन के नीचे क्रमांक 1 से 5 तक दिये गये टाई ब्रेकर प्रश्नों को भी अनिवार्य रूप से हल करेंगे, लेकिन ये प्रश्न उन्हीं छात्रों के जाँचे जायेंगे जो प्रावीण्य सूची में समान अंक पाने वाले छात्र होंगे। इतने पर भी यदि टाई ब्रेक नहीं होता, तो उन छात्रों का तहसील स्तर पर ही साक्षात्कार करके टाई ब्रेक कर दिया जायेगा उसके पश्चात् आए मेरिट के प्रथम पांच छात्रों की सूची तैयार कर जिला संयोजक को प्रेरित कर दी जावे, लेकिन नामों की घोषणा जिले के परिणाम घोषित होने के बाद ही की जाये। इस साक्षात्कार समिति में जिला समिति का एक सदस्य भी होगा।

जिला स्तर की प्रावीण्य सूची — मूल्यांकन के पश्चात् मेरिट की पाँच उत्तर पुस्तिकाओं का पुनर्मूल्यांकन जिला स्तर पर ही किया जाएगा। इस हेतु (जिला–संयोजक सहित) जिला समिति के कुल तीन सदस्यों द्वारा ये पाँच उत्तर पुस्तिकाएँ पुनर्मूल्यांकित की जावेंगी तथा उनके द्वारा हस्ताक्षरित कर जिले की प्रथम, द्वितीय तृतीय सर्वोच्च अंक प्राप्त छात्रों की मेरिट सूची बनाई जाएगी। जिला स्तर पर यदि प्रथम तीन छात्रों में कोई टाई नहीं है, तो वह उस जिले की प्रावीण्य सूची कहलाएगी और राज्य समिति/जोनल संगठन को प्रान्तीय मेरिट सूची बनाने हेतु भेज दी जावेगी।

यदि जिला मेरिट सूची में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त तीन छात्रों से अधिक के समान अंक किसी भी स्तर में आते हैं, तो टाई ब्रेक प्रश्नों को मूल्यांकन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कर प्रथम, द्वितीय तृतीय स्थान प्राप्त छात्रों की सूची बनाई जाए।

यदि टाई के बाद भी जिला की किसी भी वर्ग की (जूनियर/माध्यमिक/उच्च. माध्य./उच्चतर माध्यमिक) प्रावीण्य सूची में समान अंक पाने वाले अधिक छात्र आते है। तो उनका जिला संयोजक तथा जिला समिति के दो सदस्यों की विशेष समिति साक्षात्कार लेगी एवं हस्ताक्षर करने के बाद जिला–प्रावीण्य सूची को अन्तिम रूप देगी, उसके बाद राज्य समिति को अनुमोदनार्थ एवं प्रान्तीय प्रावीण्य सूची हेतु भेज दी जाए। प्रान्तीय स्तर के परिणाम घोषित होने के बाद ही जिले का परिणाम घोषित होगा। राज्य समिति को केवल जिला प्रावीण्य सूची निम्न जानकारी के साथ भेजें – (अ) छात्र का नाम (ब) पिता का नाम (स) नाम विद्यालय तथा पता (द) कक्षा वर्ग (इ) प्राप्तांक।

नोट – प्रावीण्य छात्रों की सूची, मेरिट के आधार पर पाँच–पाँच उत्तर पुस्तिकाओं सहित राज्य समिति को भेजें।

राज्य स्तरीय प्रावीण्य सूची –

जिलों से प्राप्त सूचियों को एकजाई कर राज्य समिति चारों स्तर पर प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थानों की प्रावीण्य सूची तैयार करेगी। यदि राज्य स्तरपर भी टाई पड़ती है, तो राज्य समिति सीधे उन छात्रों को लिखितसूचना भेजकर साक्षात्कार के लिए निश्चित तिथि पर, आने का पत्र जिला संयोजक के माध्यम से प्रेषित करेगी। उनका मार्गव्यय राज्य समिति वहन करेगी। जिस तारीख को राज्य स्तरीय पुरस्कार वितरण समारोह सम्पन्न कियाजायेगा, उसी दिन पूर्वाह में टाई में आने वाले छात्रों का साक्षात्कार/मूल्यांकन होगा और प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थानों के लिए छात्रों का चयन किया जाएगा, तदोपरान्त ही समारोहों में उन नामों की घोषणा पुरस्कार दिए जायेंगे। पुरस्कार वितरण परीक्षा तिथि से दो माह के भीतर करने की व्यवस्था राज्य समिति करेगी। राज्य स्तरीय पुरस्कार पाने वाले छात्रों के नाम जिला और तहसील की प्रावीण्य सूची में से हटा दिये जायेंगे। जो छात्र जिले में पुरस्कृत होंगे, उनके नाम तहसील की प्रावीण्य सूची में से हटा दिये जायेंगे उन्हें छोड़कर सर्वोच्च अंकधारी तीन छात्रों को प्रथम, द्वितीय और तृतीय घोषित करके पुरस्कृत किया जायेगा। यदि किसी कारण टाई ब्रेक में आने वाले किसी छात्र को राज्य स्तर पर पुरस्कार मिल पाता, तो उसे राज्य स्तर पर मेडल, विशेष प्रमाण पत्र और साहित्य से पुरस्कार वितरण के समय ही समिति द्वारा सम्मानित किया जायेगा। राज्य स्तरीय प्रावीण्य सूची में आए छात्रों को देव संस्कृति विश्वविद्यालय में प्रवेश में प्राथमिकता एवं अन्य सुविधाएं दी जाएगी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रावीण्य सूची भेजने सम्बंधी विशेष सावधानी –

प्रावीण्य सूचियाँ तैयार करने के सम्बंध में राज्य, जिला एवं तहसील स्तरों पर परीक्षा–संयोजकों के लिए ध्यान देने योग्य यह है कि यदि वे अपने स्तर पर टाई ब्रेक करके समय सीमा में प्रावीण्य सूची को अगले स्तर परप्रेषित नहीं करते तो उस अगले स्तर की प्रावीण्य सूची बनाते समय उन छात्रों को सम्मिलित नहीं किया जायेगा अर्थात् टाई ब्रेक के वे छात्र अपने स्तर पर तो पुरस्कृत होंगे, परन्तु अगले स्तर पर नहीं हो पायेंगे, भले ही वे इसके योग्य हों, इस अव्यवस्था का उत्तरदायित्व सम्बंधित संयोजक/को–ऑडिनेटर का होगा, अतः कृपया समय सीमा का ध्यान अवश्य रखें। राज्य स्तरीय मेरिट सूची प्रति शांतिकुंज भी अवश्य भेजें। राज्यस्तरीय समिति का यह उत्तरदायित्व है कि वह तहसील एवं जिला स्तर पर प्रावीण्य सूची प्रस्तुत करने की समय सीमा निर्धारित करें, तद्नुसार जिले, तहसीलों को सूचित करें।

विशेष – राज्य, जिला एवं तहसील स्तर के समस्त सदस्य एवं पदाधिकारियों से अनुरोध है कि शांतिकुंज हरिद्वार से पत्र व्यवहार करते समय प्रत्येक पत्र का संबोधन आ.जी.जी. शैल बाला पंड्या के नाम से ही किया जाए। पत्र पर भा.सं. ज्ञान परीक्षा से सम्बंधित भी लिखा जाए।

अवशेष राशि – परीक्षा सम्पन्न होने के पश्चात् केन्द्र को समस्त देय राशि के भुगतान एवं अन्य व्ययों के बाद अवशेष राशि अन्य किसी मद में जमा न की जाए, उसे भारतीय संस्कृति ज्ञानपरीक्षा के खाते में जमा करें ताकि भविष्य में उसका उपयोग छात्र शिक्षक शिविरों के आयोजनों में, संस्कृति मण्डल गठन व कार्यक्रमों में किया जा सके। हर परिस्थिति में अंतिम निर्णय शांतिकुंज का होगा।

जिला स्तरीय विशेष परीक्षा योजना –

आधार – भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा देश के लगभग सभी राज्यों में आयोजित हो रही है। इस परीक्षा में कक्षा 5 से 12 के विद्यार्थी बैठते है। क्षेत्र से गायत्री परिवार परिजन,शिक्षकगण एवं अभिभावकों की माँग के आधार पर अब यह परीक्षा विद्यार्थियों के अतिरिक्त, पृथक से इनके लिए भी आयोजित की जाएगी। विद्यार्थियों की परीक्षा से परिजनों की यह परीक्षा पूर्णतः पृथक रहेगी।

परीक्षा – परिजनों के लिए प्रश्न–पत्र का स्तर वर्तमान में कक्षा 11 एवं 12 की परीक्षा के समकक्ष होगा।

परीक्षा शुल्क – 15/– रु. (पन्द्रह रुपये) प्रति परिजन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पुस्तिका — उच्चतर माध्यमिक स्तर (कक्षा 11, 12) की पुस्तक संस्कृति मंजरी के साथ सामान्य संस्कृति ज्ञान के प्रश्न भी पूछे जा सकेंगे।

परीक्षा केन्द्र — प्रारम्भ में प्रत्येक जिला स्तर पर गायत्री शक्तिपीठ।

मेरिट — इस परीक्षा की मेरिट पृथक रहेगी।

मूल्यांकन एवं प्रमाण पत्र — प्रत्येक जिला स्तर पर उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन अलग से होगा। शक्तिपीठ स्तर पर प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले परिजन को विशेष योग्यता प्रमाण पत्र देय होगा।

परीक्षा संयोजक — जिला संयोजक भा.सं.ज्ञा. परीक्षा/संयोजक/गायत्री शक्तिपीठ

परीक्षा समय — प्रत्येक जिले में उच्चतर माध्यमिक स्तर—की परीक्षा का दिनांक तथा समय ही इस परीक्षा का भी रहेगा।

प्रारूप—1
भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा

www.awgp.org

प्रति,

प्राचार्य/प्रधानाध्यापक

....

....

विषय : भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा को आयोजित करने के सम्बंध में।

महोदय,

मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, राजस्थान, बिहार, महाराष्ट्र, गुजरात, दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, चण्डीगढ़, उत्तराखण्ड, झारखण्ड, उड़ीसा तथा दक्षिण भारत के विद्यालयों में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का आयोजन कई वर्षों से किया जा रहा है अन्य राज्यों में भी प्रयास किये जा रहे हैं।

1. सन् .... में राज्यों में निर्धारित तिथि को यह परीक्षा .... से .... बजे तक आयोजित की जा रही है। अपने—अपने विद्यालयों में आप इस परीक्षा के केन्द्राध्यक्ष होंगे।
2. कक्षा पाँचवीं से छठवीं तक के छात्रों का परीक्षा शुल्क (सहयोग राशि) 12/— तथा कक्षा सातवीं से बारहवीं तक का शुल्क 15/— प्रति छात्र है।
3. कृपया इस परीक्षा में सम्मिलित होने के लिए छात्रों को प्रोत्साहित करेंगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

4. संलग्न नॉमिनल रोल पूरा कराकर उनकी तीन प्रतियाँ तैयार कराएँ इनमें से एक अपने पास रखें और दो अधिकृत गायत्री परिजन को दिलवा दें। इनमें से एक प्रति पर परीक्षाफल अंकित करके आपको वापस की जायेगी।

5. आपके मार्गदर्शन में यह परीक्षा विधिवत सम्पन्न हो अतः कृपया –

(अ) स्टाफ के किसी शिक्षक को परीक्षा प्रभारी नियुक्त कर दें।

(ब) वे आवश्यकतानुसार विद्यालय के कक्ष/कक्षों में परीक्षा हेतु छात्रों के बैठने की व्यवस्था करा दें।

(स) डेस्कों पर चॉक स्टिक से छात्रों के रोल नम्बर लिखवा दें।

(द) एक परीक्षा कक्ष में दो पर्यवेक्षक नियुक्त कर दें। वे नॉमिनल रोल से उत्तर पुस्तिका मिलान कर लें, सभी प्रवृष्टियाँ ठीक हों। वे नॉमिनल रोल की दो प्रतियों में अपने सामने परीक्षा कक्ष में ही छात्रों के हस्ताक्षर करा लें। अनुपस्थित के कालम में लाल स्याही से अनुपस्थित लिखें।

(य) विद्यालय केनोटिस बोर्ड पर लिखवा दें कि परीक्षार्थी परीक्षा समय से 15 मिनट पूर्व परीक्षा कक्ष में प्रवेश करें। यदि कोई परीक्षार्थी 30 मिनट विलम्ब से आता है, तो परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

(र) अधिकृत गायत्री परिजन आपको प्रश्न पत्र का सील्ड लिफाफा लाकर देंगे। कृपया देख लें और परीक्षा से 15 मिनट पहले पर्यवेक्षक, गायत्री परिजन तथा आप स्वयं हस्ताक्षर करके खोलने का कष्ट करेंगे।

(ल) शक्तिपीठ के प्रतिनिधि को परीक्षा अवधि में सभी कक्षों में निरीक्षण के लिए कृपया अधिकृत कर दें। परीक्षा के उपरान्त उत्तर पुस्तिकाओं को अपने सामने सील कराकर अधिकृत किये गये गायत्री परिजन को सौंप दें और बचे हुए प्रश्न पत्र भी लौटा दें।

(व) परीक्षार्थियों के लिए लिखे गये संलग्न निर्देशों से उनहें अवगत करा दें।

अपेक्षा है आपके आत्मीय सहयोग की। शुभकामनाओं सहित।

स्थान .... जिला संयोजक

तारीख......................... भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा

प्रतिलिपि :–

1. जिला शिक्षा अधिकारी.........................की ओर सादर सूचनार्थ प्रेषित।
2. विकासखण्ड शिक्षा अधिकारी.........................की ओर सादर सूचनार्थ प्रेषित।

जिला संयोजक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रारूप–दो

परीक्षार्थियों को निर्देश

1. परीक्षा का समय ....से......................तक रहेगा।
2. परीक्षा भवन में निर्धारित समय से 15 मिनट पूर्व पहुँचें।
3. उत्तरपुस्तिका में निश्चित स्थान पर अपना नाम, पिता का नाम, कक्षा तथा विद्यालय का नाम एवं अपना रोल नम्बर लिखकर हस्ताक्षर करें।
4. उत्तर पुस्तिका में प्रश्नों के तीन–तीन विकल्प दिये गये हैं जो उत्तर सही हों, उसी नम्बर के खाने में गोला भरा जाये। ओ.एम.आर. शीट में उत्तर देते समय प्रश्न के सामने बने खाने में गोला भरा जाए।
5. उत्तर में काटा–पीटी न करें। उत्तर दो जगह चिन्हित न करें, अन्यथा वह जांचा नहीं जाएगा।
6. परीक्षा भवन में नॉमिनल रोल पर हस्ताक्षर करें।

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा

www.vicharkrantibooks.org

प्रारूप–तीन

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा 20.......

नॉमीनल रोल

जूनियर/माध्यमिक/उच्च मा./उच्चतर माध्यमिक स्तर

(प्रत्येक स्तर के लिए अलग–अलग नॉमीनल रोल तीन–तीन प्रतियों में तैयार कराया जाए)

विद्यालय का नाम तथा पत्र व्यवहार का पूरा पता..

तहसील...................................जिला...प्रान्त.................................

दूरभाष...................................... प्राचार्य/प्रधानाचार्य का नाम...................................

क्र.	छात्र का नाम	पिता का नाम	कक्षा वर्ग	प्रदत्त शुल्क	परीक्षा कक्ष में हस्ताक्षर
1	2	3	4	5	6

	प्राप्तांक	विद्यालय में प्रावीण्य क्रम	छात्र की जन्मतिथि
	7	8	9

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्राप्त शुल्क का योग.................................. सहयोगी शिक्षकों (इनविजीलेटर्स) के नाम (1)..................................

(2)..................................

नोट :– तहसील/जिला संयोजक परीक्षा के बाद संख्या लिखें।

राशिप्राप्तकर्ता के हस्ताक्षर....................................

गायत्री परिजन का पूरा नाम एवं पता...................................

हस्ताक्षर केन्द्राध्यक्ष

पूरा नाम, पद, सील सहित

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

प्रारूप–चार

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा–20............

प्रवेश शुल्क प्राप्ति का अधिकार पत्र

श्री............................को भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा .... की परीक्षा शुल्क प्राप्त करने के लिए अधिकृत किया जाता है।

गायत्री परिजनों को आवश्यक सूचना – विद्यालय में नॉमिनल रोड की तीन प्रतियों एवं परीक्षा शुल्क लेकर अपने हस्ताक्षर करें और एक प्रति संस्था प्रमुख को वापस कर दें। इस राशि को तहसील कोऑर्डिनेटर/जिला संयोजक केपास जमा कराकर नॉमीनल रौल पर ही पावती के हस्ताक्षर करा लिये जायें।

जिला संयोजक

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रारूप—पांच

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा 20.........

परीक्षक नियुक्ति पत्र

क्रमांक दिनांक.....................

प्रति,

श्रीमान.....................

....

विषय : **परीक्षा मूल्यांकन कार्य।**

मान्यवर,

आपको भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा 20............. की उत्तर पुस्तिका के मूल्यांकन का दायित्व सौंपा जा रहा है। कृपया आप दिनांक.................. को निम्नलिखित मूल्यांकन स्थल पर पधार कर इस कार्य में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करने का कष्ट करें। मूल्यांकन में सतर्कता तथा गोपनीयता बनाए रखें।

धन्यवाद।

www.vicharkrantibooks.org

मूल्यांकन स्थल...........

जिला संयोजक

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा

प्रारूप—छः

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा 20........

यात्रा व्यय पत्रक

नाम प्राप्तकर्ता...पता..

तहसील...जिला...

दिनांक	कहाँ से	कहाँ तक	यात्रा का साधन	यात्रा व्यय	यात्रा का राशि	अन्य कारण

यात्रा विवरण—

प्राप्त धन राशि रुपये में........................

हस्ताक्षर प्राप्तकर्त्ता......................

दिनांक....................

तहसील कोऑर्डिनेटर/

जिला संयोजक

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रारूप–सात

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा 20.........

परीक्षाफल एवं प्रमाण पत्र

क्रमांक/भा.सं.ज्ञा.प./ दिनांक...................

प्रति,

श्रीमान् प्राचार्य/प्रधानाध्यापक

....

....

विषय :– भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा.................. के परीक्षाफल एवं प्रमाण पत्र प्रेषित करने के सम्बंध में।

महोदय,

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के सफल संचालन और यथेष्ठ सहयोग हेतु आपको तथा आपके सहयोगी गुरुजनों को हार्दिक धन्यवाद। हम इस पत्र के साथ संलग्न आपके विद्यालय से सम्मिलित परीक्षार्थियों का परीक्षाफल व प्रमाण पत्र प्रेषित कर रहे हैं कृपया इन्हें छात्रों तक पहुंचाने का कष्ट करें।

आशा है भविष्य में भी आपका ऐसा ही सहयोग मिलता रहेगा।

शुभकामनाओं सहित।

संलग्न – जिला संयोजक

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा

1. परीक्षा फल
2. प्रमाण पत्र (संख्या...............)

प्रारूप–आठ

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा 20......

प्रश्न पत्र प्राप्त करते समय प्रान्त को प्रस्तुत किया जाने वाला पत्रक

प्रान्तीय संयोजक.............................. दिनांक...................

प्राप्त सामग्री

(1)	जूनियर	(5–6)	....
(2)	मा. स्तर	(7–8)	....
(3)	उच्च. मा.	(9–10)	
(4)	उच्चतर मा	(11–12)	
	योग		....

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्तर	कुल छात्र संख्या	कुल प्राप्त शुल्क	प्रश्नपत्र संख्या	प्रमाण	प्रशस्ति पत्र	परीक्षा केन्द्रो की संख्या	पर्यवेक्षक शिक्षकों की सं.
जूनियर (5–6)							
मा. स्तर(7–8)							
उच्च.मा.(9–10)							
उच्च. मा.(11–12)							
योग							

65 प्रतिशत शेष राशि का ड्राफ्ट/पे इन स्लीप............बैंक का नाम......................

नोट :–

1. जिले में परीक्षा केन्द्रों की सूची जिसमें प्रत्येक केन्द्र के समक्ष परीक्षार्थियों तथा इनविजेलेटर्स की संख्या का उल्लेख हो। इसके साथ संलग्न करें।
2. प्रमाण पत्र एवं प्रशस्ति पत्र की सही संख्या।

हस्ताक्षर जिला संयोजक

नाम..............................

जिला..............................

प्रदेश..............................

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

प्रारूप–नौ

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा 20....

प्रश्न पत्र विवरण

विद्यालय का नाम	परीक्षा केन्द्र का नाम	परीक्षार्थियों की संख्या जून.	मा.	उ.मा.	उच्च.	अपेक्षित प्रश्न पत्रों की पैकेट संख्या 100/ 50/20/10
						योग

कुल पैकेट – जूनियर.........माध्यमिक...........उच्च.माध्य.................उच्चतर माध्य......

उपर्युक्त नमूने के आधार पर अपना माँग पत्र तैयार करें।

कुल परीक्षार्थियों के मान से प्रमाण पत्रों की संख्या.......................

संख्या के मान से प्रशस्ति पत्रों की संख्या

(प्रति 25 परीक्षार्थियों पर अधिकतम दो)...

जिले में कुल परीक्षा केन्द्रों की संख्या..

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विशेष – प्रश्न पत्र विवरण चार प्रतियों में तैयार करेंगे। एक प्रति प्रश्न–पत्र वितरण–केन्द्र जोनल/राज्य कार्यालय दूसरी प्रति मथुरा और तीसरी प्रति शांतिकुंज, हरिद्वार भेजेंगे। एक प्रति प्रश्न पत्र प्राप्त करते समय साथ लायेंगे।

दिनांक.................. हस्ताक्षर जिला संयोजक

नाम..................................

जिला का नाम................

प्रारूप–दस

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा–20..........

आय–व्यय पत्रक (जिला स्तर)

जिले का नाम.............................. जिला संयोजक का नाम.........................

छात्रों से प्राप्त शुल्क –

स्तर	छात्र संख्या	शुल्क	दिनांक
जूनियर	–	–	–
माध्यमिक	–	–	–
उच्च. माध्य.	–	–	–
उच्चतर माध्य.	–	–	–
योग	–	–	–

(एकत्रित राशि की निर्धारित राशि केन्द्र को देय होगी)

आय		व्यय	
1. शुल्क से प्राप्त निर्धारित राशि		मद	राशि
दिनांक	राशि	परीक्षा सामग्री	
....	....	यातायात	
....	....	यात्राएँ	
....		टेलीफोन एवं फैक्स	
2. अन्य स्त्रोत		डाक	
		स्टेशनरी, छायाप्रति	
....	....	भोजन, आवास व्यवस्था	
योग	....	जिला स्तरीय शिविर	
		जिला स्तरीय पुरस्कार वितरण समारोह	....
		तहसील स्तरीय पुरस्कार वितरण समारोह	....
		अन्य	
		योग	....

हस्ताक्षर जिला संयोजक

नाम..................................

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा–20.....

तत्वावधान–गायत्रीतीर्थ, शांतिकुंज हरिद्वार (उत्तराखण्ड) 249411

माँग पत्र (प्रारूप)

जिला संयोजक का नाम..

पूर्ण पता...

जिला सचिव का नाम..

पूर्ण पता...

जिले का नाम............................ ....पोस्ट..

पिनकोड..............................प्रान्त...........................फोन नं. (कोड सहित) ....

....फैक्स नं. ....

स्थानीय ट्रांसपोर्ट का नाम – पूर्ण जिसका सम्बंध मथुरा से हो.............................

क्र0	पुस्तक विवरण	हिन्दी भाषा	अंग्रेजी भाषा	अन्य भाषा	विद्यालयों की संख्या
1.	संस्कृति प्रसून – कक्षा 5वीं के लिए				
2.	संस्कृति पराग – कक्षा 6वीं के लिए				
3.	संस्कृति सौरभ – कक्षा 7वीं के लिए				
4.	संस्कृति संस्कार – कक्षा 8वीं के लिए				
5.	संस्कृति सुधा – कक्षा 9वीं के लिए				
6.	संस्कृति संबोध – कक्षा 10वीं के लिए				
7.	संस्कृति मंजरी – कक्षा 11वीं के लिए				
8.	संस्कृति शौर्य – कक्षा 12वीं के लिए				
9.	प्रमाण पत्र				
10.	प्रशस्ति पत्र /प्रवीणता पत्र				
11.	ब्रोशर				
12.	अन्य				

विशेष – 1. मांग पत्र के साथ 10 प्रतिशत अग्रिम राशि भी भेजें। उक्त सभी रिक्तियाँ स्पष्ट व साफ शब्दों में हिन्दी या अंग्रेजी में भरें।

2. बैंकों में राशि जमा करने हेतु पुराने एकाउन्ट नं. बदल गये हैं, नये एकाउन्ट नम्बर निम्नानुसार हैं –

श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टी.एम.डी.)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक्सिस बैंक – 15601010013912O
पीएनबी – 4694000100003986
एसबीआई – 30631606578
अब इन्हीं बैंक एकाउन्ट्स में भा.सं.ज्ञा. की राशि जमा की जावेगी।
दिनांक........................ जिला संयोजक
हस्ताक्षर

मूल्यांकन (जाँच) ओ.एम.आर. का प्रयोग –

1. कक्षा 7 से 12 के लिए ओ.एम.आर. शीट का उपयोग अनिवार्य किया गया है जिसका नमूना एवं उसके भरने (पूर्ति करने) के नियम पाठ्य पुस्तक के अन्तिम पृष्ठों पर दिया गया है। कक्षा 7 से 12 के प्रश्नों का मूल्यांकन परीक्षा तथा प्रमाण–पत्र ओ.एम.आर. के आधार पर होता है।
2. कक्षा 5–6 के प्रश्न पत्रों का मूल्यांकन तथा प्रमाण पत्र लेखन व्यवस्था स्थानीय स्तर पर जिला समिति द्वारा किया जाता है।
3. जिन जिलों की छात्र संख्या 5 हजार से कम होगी उनकी ओ.एम.आर. शीट का मूल्यांकन एवं प्रमाण पत्र लेखन जिला समिति द्वारा स्थानीय स्तर पर ही किया जाएगा।
4. 50 अंक तक प्राप्त छात्र/छात्रा को केवल अंकसूची प्रदाय होगी। 51 से 80 अंक धारी को श्रेष्ठ श्रेणी के तथा 81 से 100 तक को उत्कृष्ट श्रेणी के प्रमाण पत्र उनकी गरिमा अनुसार प्रदान होंगे।
5. नियमावली पृष्ठ 9 एवं 10 के अनुसार नई राज्य एवं जिला समिति गठन यथा–संभव जोन–उपजोन समन्वयकों की उपस्थिति एवं सर्व सम्मति से चयनकर किया जाये। शेष नियमों का यथावत पालन करें।

कक्षा 5वीं से कक्षा 12वीं के लिए
निर्धारित पाठ्य पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण
संस्कृत प्रसून – कक्षा पाँचवीं खण्ड (अ) विषय वस्तु

(1) **साहस और सामूहिकता का अनुपम चमत्कार** – साहसी बालक वर्द्धमान का अपने साथी को साहस, आत्म विश्वास के साथ अजगर के संकट से मुक्त करवाना। यही साहसी बालक वर्द्धमान आगे चलकर तीर्थंकर महावीर स्वामी के नाम से प्रसिद्ध हुए।

(2) **वीर बाला रत्नावली** – जैसलमेर किले की रक्षा का दायित्व का पालन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करने के साथ–साथ राजा के न्याय धर्म सिद्धानत के अनुसार शत्रु अलाउद्दीन के सेनापति का कैम्प में भी मेहमान की तरह आदर दिया।

(3) **प्रकृति के अनुपम उपहार वृक्ष वनस्पति** – प्रकृति में वृक्ष–वनस्पतियों के महत्व के बारे में प्रकाश डाला गया है।

(4) **सफल जीवन के पाँच सोपान** – श्रमशीलता/मितव्ययिता/शिष्टताशालीनता/स्वच्छता–सुव्यवस्था /उदार सहकारिता/ सफलता के इन पाँच सोपान के बारे में उदाहरण सहित वर्णन किया गया है।

(5) **गायत्री और यज्ञ** – गायत्री मंत्र के जप का प्रभाव तथा यज्ञ के महत्व के बारे में बताया है। भारतीय संस्कृति में यज्ञ को पिता एवं गायत्री को माता कहा है। गायत्री मंत्र की साधना से बालक खुशहाल चंद्र आगे चलकर महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती के नाम से विख्यात हुए।

(6) **व्यायाम और स्वास्थ्य** – नित्य व्यायाम करने से शरीर स्वस्थ रहता है। कुछ विशेष योग/आसन/उदाहरणार्थ – ताड़ासन विधि, हस्तासन विधि, वज्रासन विधि, उष्ट्रासन विधि, योग मुद्रा विधि आदि के बारे मे बताया गया है।

(7) **देशोद्धार का संकल्प** – स्वामी विवेकानन्द के संकल्प के बारे में विशेष वर्णन किया है।

खण्ड (ब) प्रश्न बैंक के विषय

1. अपना देश अपनी धरोहर
2. उत्सव पर्वों का देश भारत
3. भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्व
4. प्राचीन विश्व विद्यालय एक झलक
5. परिवार भाव, विश्व परिवार (वसुधैव कुटुम्बकम्)
6. वैज्ञानिक दृष्टिकोण वैज्ञानिक ऋषियों के नाम एवं उनकी अनुपम देन
7. काल गणना तथा कुछ साधारण ज्ञान से सम्बंधित प्रश्नावली।

संस्कृति पराग : कक्षा–6 वीं खण्ड (अ) विषय वस्तु

(1) **श्रम की रोटी खाओ श्रमशील बनो** – संसार का सबसे धनी व्यक्ति हेनरी फोर्ड को नींद नहीं आना, श्रमशील व्यक्तियों से भेंट, फोर्ड के जीवन में परिवर्तन, फोर्ड द्वारा भगवान् से प्रार्थना कि अगले जन्म में मुझे मजदूर बनाना यह संसार कर्मभूमि संघर्षभूमि है। यहाँ मनुष्य को सतत संघर्ष कर्म

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करते रहना पड़ता है।

(2) **बालक सुभाष की करुणा** – बालक सुभाष का बूढ़ी भिरवारिन माता से भेंट/आधा भोजन उसको देना बालक सुभाष के अन्दर उस माता के प्रति ऐसी करुणा जागृत हुई कि वह भारत माता की गुलामी को देखकर रोता रहा। सुभाष चंद्र बोस द्वारा आजाद हिन्द सेना का गठन राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए त्याग।

(3) **वैदिक धर्म** एवं [illegible]कृति **के उद्धारक आदि शंकराचार्य** – बाल्यकाल में पिता का [illegible]ा द्वारा ही पालन पोषण, बालक शंकर का श्रीमद् गोविन्द स्वामी द्वारा दीक्षा ग्रहण, वेदान्त का अध्ययन, अद्वैत सिद्धान्त का प्रचार, ब्रह्म सूत्र एवं ग्यारह प्रमुख उपनिषदों एवं भागवत गीता का भाष्य/संपूर्ण भारत को सांस्कृतिक/धार्मिक एकता में बाँधनें के लिए उत्तर दिशा में (बद्रीनारायण आश्रम) ज्योतिर्मठ, पूर्व दिशा (जगन्नाथपुरी) में गोवर्धन मठ, पश्चिम दिशा (द्वारिकापुरी) में शारदा मठ तथा दक्षिण दिशा (रामेश्वरम्) में श्रृंगेरीमठ की स्थापना की।

(4) **साहित्यिक ऋषि गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर** – 1861 में कलकत्ता में जन्म/साहित्य में रुचि, राष्ट्रीय गीत "जन–गण–मन अधिनायक" की रचना, दूसरी कविता **"अन्तर मन विकसित कर दें"** महात्मा गाँधी के आश्रम में गायी जाने वाली प्रार्थना। प्रसिद्ध पुस्तक **गीतांजलि** पर नोबल पुरस्कार प्राप्त किया तथा प्रमुख कार्य शांति निकेतन की स्थापना। अपनी व्यक्तिगत सम्पत्ति बेचकर संस्था का खर्च चलाया।

(5) **प्रार्थना उपासना** – प्रार्थना उपासना किसलिए की जाती है, यह विस्तार में बताया गया है। प्रार्थना सद्बुद्धि के लिए की जाती है। दोपहर, सायंकाल कभी भी की जा सकती है।

(6) **स्वास्थ्य एवं योग की महत्ता** – स्वस्थ और सुखी जीवन मनुष्य की प्रमुख आवश्यकता है – स्वास्थ्य केवल शारीरिक ही नहीं मानसिक और आत्मिक भी होता है। भारतीय जीवन पद्धति तो हमेशा से शारीरिक, मानसिक, आत्मिक स्वास्थ्य का महत्त्व दर्शाती रही है। योग का शायद साधारण व्यायाम भी हो सकता है। जिससे शरीर को स्वस्थ रखा जा सकता है। आत्मबल भी स्वास्थ्य के लिये विशेष महत्व रखता है।

(7) **विद्या वही जो जीना सिखाए** – ज्ञान के बिना मनुष्य और पशु में कोई अन्तर नहीं होता। ज्ञान की दो शाखाएँ हैं – एक जीविका प्राप्ति के लिये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तथा दूसरी शाखा वह है जो जीवन को आध्यात्मिक बनाती है।

(8) **गुटखा सेवन एक धीमा जहर** – गुटखों में जहर – हानिकारक पदार्थ होते हैं – वैज्ञानिकों के अनुसार यह चार प्रकार के होते हैं। गुटखा खाना मौत को आमंत्रण देना है, इससे तन्तु शोध का रोग होता है।

(9) **हँसिए और जीवन को मधुमय बनाइए** – खिल–खिलाकर हँसना, हास्य विनोद, मुस्कराहट–मनुष्य के स्वास्थ्य को अचूक बनाने की दवा है।

(10) **संस्कृति का स्वरूप** – संस्कृति अर्थात् ऐसे मूलभूत विचार एवं व्यवहार जिससे मानव जीवन में अच्छे संस्कार उत्पन्न हो सकते हैं। सभ्यता, शिष्टाचार को प्रारम्भ से सीखना चाहिए। सभ्यता संस्कृति और शिष्टाचार को जीवन का अंग बनाना होगा।

(11) **पंचायत का फैसला** – सिकंदर द्वारा एक ग्राम में चुपके से जाकर एक ग्राम पंचायत का फैसला सुनना, विषय था धरती में स्वर्ण कलश की प्राप्ति– इन फैसलों से सिकंदर भारतीय संस्कृति, न्याय विधान से बहुत प्रभावित हुआ।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

(12) **पं. श्रीराम शर्मा आचार्य (श्रीराम मत्त) का स्वतन्त्रता संग्राम में योगदान** – स्कूली पढ़ाई से मुँह मोड़कर घर पर रहकर शिक्षा ग्रहण की और स्वतंत्रता आन्दोलन में अपने आप को समर्पित किया। ताम्रपत्र स्वीकार कर पेंशन राशि राष्ट्र हित में समर्पित। आचार्य जी के सम्मान में एक रुपये का डाक टिकट प्रसारित किया गया।

खण्ड–ब : प्रश्न बैंक के विषय

1. भारतीय धर्म एवं जीवन दर्शन
2. सा संस्कृति : प्रथमा विश्व वारा
3. भारत का स्वर्णिम इतिहास
4. स्वास्थ्य पर्यावरण
5. सम्मानित खिलाड़ी और भारत
6. विविध
7. शोधकर्त्ता हमारे ऋषि और जीवन मूल्य
8. विज्ञान के बढ़ते चरण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संस्कृति सौरभ : कक्षा–7, खण्ड–अ, विषय वस्तु

(1) **आदर्श का शुभारम्भ स्वयं से –** चन्द्रशेखर आजाद द्वारा हिन्दुस्तान रिपब्लिक आर्मी नामक क्रान्तिकारी संगठन का गठन एवं सूखी रोटी खाकर किफायत से रहने का आदर्श स्वयं ने प्रस्तुत किया।

(2) **भाव संपदा का धनी –** माननीय गाँधी द्वारा हरिजन फंड के लिये दान की अपील/एक आदिवासी बालक द्वारा अपने घर में लगा एक काशीफल भेंट किया। आदिवासी बालक के भाव संपदा की कहानी/बापू द्वारा भाव संवेदना प्रगट हुई।

(3) **न जनता से गाफिल न मालिक से –** छत्रपति शिवाजी के किलेदार द्वारा सप्ताह में एक बार वस्त्रों की सफाई के बारे में बताना, तब शिवाजी ने कहा–तुम न जनता से गाफिल हो न मालिकों के मालिक से।

(4) **कौन अपना–कौन पराया –** भगत सिंह एवं राजगुरु द्वारा चलती ट्रेन से लटकते हुये एक बूढ़े को अंदर ट्रेन में बैठाना/सम्मान/तिरस्कार/अविश्वास/विश्वास के बारे में सहयात्रियों को यह बताना कि जीवन की कीमत इस आधार पर ही आँकी जाती है।

(5) **लोकसेवी सृजन शिल्पी ऐसे हों –** यूनान के राजदूत का भारत के सम्राट के गुरु चाणक्य से भेंट एक दीपक बंद दूसरा दीपक जलाना – राजकोष की बचत के लिये दीपक के प्रकाश में परिवर्तन का वृतान्त।

(6) **दुर्बुद्धि भस्मासुर इस तरह जल मरा –** भस्मासुर असुर का तप/भगवान शंकर द्वारा भस्मासुर को वरदान देना – जिस पर हाथ रख देगा तुरन्त भस्म हो जाए। असुर की सोच – मनोवृत्ति ही उसका विनाश का कारण बनी। भगवान् विष्णु द्वारा पार्वती का स्वरूप/सिर पर हाथ रखकर नृत्य करवाना, भस्मासुर का भस्म होना।

(7) **कुरीति को तोड़ा हम्मीर ने –** हमीर का हठ ऐतिहासिक सत्य है – पर करुणा और कृतज्ञता के भी धनी थे। चित्तौड़ नरेश द्वारा विधवा मंडल मुखी का विवाह प्रस्ताव स्वीकार करके लगन मंडप में पहुँचकर विवाह कर लिया।

(8) **आत्म विश्वास की विजय –** डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का आत्म–विश्वास/मलेरिया पीड़ित होकर भी परीक्षा में बैठे, इतना आत्मविश्वास था कि वह फेल नहीं हो सकते/ आचार्य से बहस भी हुई, जुर्माना भी किया पर अपने विश्वास पर अडिग रहे तथा लिपिक की गलती से उनका नाम उत्तीर्णी छात्रों की लिस्ट में छपने से रह गया था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खण्ड–ब, प्रश्न बैंक के विषय

1. **अपना देश अपनी धरोहर** – देव भूमि भारत/ पुण्य भूमि भारत/ हमारे आधारभूत ग्रन्थ, हमारी नदियाँ पर्व एवं त्योहार
2. **भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्व** – भारतीय संस्कृति का अर्थ, संस्कृति की विशेषताएं, प्रतीक चिन्ह, भारतीय संस्कृति देव संस्कृति।
3. **साधना** – उपासना, पवित्रीकरण, प्राणायाम, प्रार्थना, ध्यान, जप
4. **स्वास्थ्य** – आहार, संतुलित भोजन, जागरण, उषापान
5. विविध प्रश्न
6. आर्थिक स्वावलम्बन
7. व्यसन मुक्ति व कुरीति उन्मूलन

संस्कृति संस्कार : कक्षा 8वीं खण्ड (अ), विषय – वस्तु

(1) **पन्नाधाय** – महारानी कर्मवती के छोटे पुत्र उदयसिंह महारानी कर्मवती द्वारा जौहर, उदय सिंह, चित्तौड़ के राजकुमार, पन्नाधाय के पुत्र का नाम चन्दन–राजकुमार से बड़ा होने तक, दासीपुर बनवीर को राजकाज का दायित्व सौंप दिया। बनवीय अत्यंत क्रूर निकला, वह राजकुमार उदयसिंह को मारना चाहता था। पन्नाधाय ने अपनी बुद्धि से अपने पुत्र का बलिदान कर दिया। उदय सिंह को वहाँ से निकाल कर बड़ा किया।

(2) **संस्कृति बोधक संत रैदास** – संत रामानंद से दीक्षा प्राप्त की – 120 वर्ष की आयु में अपनी देह त्यागी। उद्देश्य समाज को सद्गुणी बनाना लोगों को धार्मिक एवं सामाजिक पाखण्डों से दूर रहकर ईश्वर की आराधना करने पर बल दिया।

(3) **स्वाध्याय दैनिक जीवन की अनिवार्य आवश्यकता** – शिक्षा ही ऐसी शक्ति है जिससे प्राणी विवेकशील बन सका है। सत्संग से बुद्धि का विकास, सत्संग पुस्तकों का भी हो सकता है। स्वामी रामतीर्थ, सरदार पटेल हमारे लिए एक आदर्श हैं। फ्रेंकलिन वैज्ञानिक होते हुए स्वाध्याय के माध्यम से अर्जेण्टाइना का राष्ट्रपति बना।

(4) **लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक** – "स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा।" तिलक के शब्द जिन्हें 'बाल' के नाम से जाना जाता है। महाराष्ट्र में राष्ट्रीय आन्दोलन के संगठन का भार अपने ऊपर लिया। गणेश पूजा का आयोजन परम्परागत रूप से प्रारम्भ किया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

1889 में तिलक कांग्रेस में शामिल हुए। 1905 में बंगभंग विरोध आंदोलन में लाला लाजपतराय/विपिनचन्द्र पाल भी उनके साथ।

(5) **अष्टांग योग** – योग के आठ अंग – यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि।

(6) **सत्प्रवृत्ति संवर्धन की दिशा में** – युवा पीढ़ी की दुर्व्यसनों (शराब, जुआ, बीड़ी, गुटखा) से किस प्रकार दूर रखने के लिए प्रेरित किया जाए। दूर संचार, पत्र–पत्रिकाओं, दूरदर्शन को माध्यम बनाया जा सकता है। चिकित्सा अधिकारी अभिभावक के रूप में सोचना प्रारम्भ करें। उत्तरदायी सरकार का भी प्रयास होना चाहिए।

(7) **संस्कार परम्परा एवं मानव में देवत्व का उदय** – भारत देश में संस्कारों का विशेष महत्व है। बालक को सँवारना ही संस्कार है। माता–पिता के आचरण से बालक को संस्कार मिलते हैं। ध्रुव, शिवाजी, अभिमन्यु के ऊपर माता–पिता के आदर्श संस्कारों का प्रभाव। देश में जितने भी संत महापुउष हुये हैं जैसे तुलसी, सूर, मीरा, कबीर, नानक, रामदास आदि संतों का समाज को संस्कारित करने में बड़ा योगदान रहा है।

(8) **शिष्टाचार का यथोचित पालन करें** – अनुशासनहीनता को रोकने के लिये शिष्टाचार के नियम तथा उसकी मर्यादाएँ बनाई गई है। शिष्टाचार के सामान्य नियमों का पालन न करना केवल अशिष्टा ही नहीं बल्कि असभ्यता भी मानी जाएगी।

(9) **गोवंश संवर्धन एवं उत्पाद** – खेती बाड़ी का कार्य कम होता जा रहा है ऐसा व्यवसाय जो कृषिकार्य का पूरक हो सकता है। वह है गौपालन– जिसके माध्यम से आय स्रोत भी बनाया जा सकता है।

अ– खेत का चारा, खरपतवार, पशुओं के चारे में काम आ सकता है।

ब– पशुओं से कम्पोस्ट खाद का प्रयोग, गाय के गोबर से खाद, बैलों से खेती पुशओं के गोबर से बायो गैस प्लांन्ट, गाय का दूध स्वास्थ्य के लिये उपयोगी। गौमूत्र औषधि है। पशुओं की हड्डियों का प्रयोग रासायनिक खादों के निर्माण मे।

(10) **भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ** – विचार स्वातंत्र्य, लोकमंगल, आत्मोत्कर्ष, धर्म और सभ्यता की पृथक्ता, कर्म फल की मान्यता, भारतीय संस्कृति में उच्च आदर्श, भारतीय संस्कृति मे पतन का प्रादुर्भाव।

संस्कृति चर्चा का विषय नहीं है, बल्कि आदर्शों को जीवन में उतारा जाए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खण्ड—ब, प्रश्न बैंक के विषय

1. वस्तुशास्त्र – प्रकृति के सिद्धान्तों के अनुरूप जाने का प्राचीन विज्ञान है।
2. ध्यान, साधना
3. कुरीतियाँ एवं दुर्व्यसन
4. महानता के सम्बंध में विविध प्रश्न
5. साधना—आराधना
6. समग्र स्वास्थ्य

संस्कृति सुधा : कक्षा – 9, खण्ड—अ : विषय वस्तु

(1) **प्रमाद का दुष्परिणाम** – पृथ्वीराज द्वारा गौरी को हरा देने के बाद गर्व हो गया था। संयोगिता से विवाह होने के बाद उसके रूप जाल में ऐसे खो गये कि प्रबंध भी भूल गये। गौरी ने जयचंद का सहयोग लेकर पुनः आक्रमण किया। पृथ्वीराज चौहान संयोगिता के प्रेम में सब कुछ भूल गये थे। चंद कवि एवं संयोगिता के फटकार के बाद जब वह युद्ध के लिये निकले, तो सब समाप्त हो गया था। यह था प्रमाद का दुष्परिणाम।

(2) **संत की सहिष्णुता** – संत जुलाहा का स्वभाव शांत एवं नम्र था। लड़कों द्वारा शरारत, साड़ी का भाव पूछा, टुकड़े करते गये और बोला अब यह साड़ी तो किसी के काम की नहीं है। लड़के को शरम आयी उसने कीमत देनी चाही। जुलाहा ने कीमत भी नहीं ली। तुमसे पैसा ले लेता, तो तुम्हारा भी हाल वही होता जो साड़ी का हुआ है। जुलाहा था दक्षिण भारत का महान संत तिरुवल्लूवर। जिनका लिखा ग्रन्थ 'कुरल' आज 2000 वर्ष बाद भी बड़ी श्रद्धा से पढ़ा जाता है।

(3) **परिश्रम की कमाई में आस्थावान रैदास** – रैदास फटे जूते की सिलाई में तल्लीन रहते थे। पारस लेकर उनके पास एक सज्जन आये। वह सज्जन पुरुष थे इन्द्र, जो उनको पारस पत्थर देने आये थे। उन्होंने उसे लौटा दिया और कहा मैं परिरम एवं ईमानदारी की कमाई में विश्वास रखता हूँ।

(4) **निर्भीक किन्तु सहनशील संत** – गुरुनानक गांव के जमींदार दौलत खाँ के मोदी खाने में नौकरी करते थे। दौलत खाँ के दबाव में कभी संत आये नहीं। दौलत खाँ के साथ मक्का की यात्रा/ मैदान में सोकर पैर काबा की ओर किये। लोगों द्वारा उनको काफिर कहना, नानक ने कहा जिधर खुदा नहीं हो उधर ही मेरे पैर कर दो। सभी जगह खुदा है – बौद्धिक संकीर्णता के भाव को समाप्त किया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(5) **धर्म की महत्ता** – गुरु गोविन्द सिंह का मुगलों से युद्ध करना। गुरु सिंह के पुत्र अजीत सिंह और जुझार सिंह दोनों पुत्रों के साथ चमकोर किले में योजना बनाना। माता जी एवं दो कुमारों फतह सिंह और जोरावर सिंह को रसोइये गिरफ्तार करवा दिया गया। सरहिंद के नवाब ने दोनों कुमारों को धर्म परिवर्तन के लिये कहा – बालक तैयार नहीं हुये। उन्होंने निर्भय बलिदान देकर धर्म की रक्षा की।

(6) **परदारेषु मातृवत्** – शिवाजी के सामने–सेनानायक ने स्वर्ण मुद्राओं का ढेर लगा दिया। शिवाजी के सामने एक अन्य सेनानायक द्वारा तंबू में प्रवेश के साथ ही एक महिला को बुर्के में ढँकी हुई पेश किया। वह सेनानायक बहलोल खाँ की पत्नी थी। शिवाजी द्वारा – उस महिला को यह कहना कि काश मैं तुम्हारी कोख से जन्म लेता–परस्त्री माता के समान होती है।

(7) **मोह विजय** – औरंगजेब द्वारा छत्रपति शिवाजी को स्वतंत्र राजा स्वीकार करना। नानाजी द्वारा मांगलिक प्रसंग को (उनके पुत्र का विवाह) छोड़कर जीजाबाई के आदेश के अनुसार (पुत्र के विवाह का मोह छोड़कर) कोंकण विजय के लिये अपने छोटे भाई एवं एक हजार सैनिकों के साथ निकल पड़ना। तानाजी का शहीद होना, गढ़ आया पर सिंह चला गया।

(8) **संघर्ष से घबराना मत सफलता चरण चूमेगी** – स्वामी विवेकानन्द का शिकागो में जाकर डॉ. बैरोज से मिलने क लिए पता पूछना। मिल नहीं पाये। होटल में नहीं ठहरने देना। कहीं स्थान नहीं मिला। ठहरने के लिये महिला द्वारा आवभगत 11 सितम्बर 1893 को सर्व धर्म सम्मेलन में भाषण देना। रात कठिनाई से गई पर सफलता प्राप्त की।

(9) **सन्यासी कौन** – स्वामी विवेकानन्द का भारत भ्रमण/युवक भेंट/सन्यास और सन्यासी की परिभाषा बताना सन्यास वह है जो मोक्ष की ओर प्रेरित करें और सन्यासी वह जो मुक्ति की इच्छा करे। मुक्ति साधक की। वह युवक शरतचन्द्र गुप्त स्वामी सदानन्द हुये।

(10) **माँ के आभूषण** – उन्नीसवीं शताब्दी का अंतिम पड़ाव, वयोवृद्ध बंगाली ठाकुरदास का सीमित परिवार के साथ जीवनयापन करना, कभी भोजन भी नहीं मिल पाता था। मेदिनीपुर में रहना, दो रुपये माहवार की नौकरी, बेटा हुआ बड़ा/बना ईश्वर चंद्र विद्यासागर/बेटे द्वारा माँ की सेवा करना, माँ ने बेटे से तीन गहने माँगे। पहला गाँव में स्कूल, दूसरा गाँव में दवाखाना तथा तीसरा अनाथ बच्चों के लिये रहने व खाने की व्यवस्था करना।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खण्ड—ब, प्रश्न बैंक के विषय

(1) अपना देश अपनी धरोहर – सांस्कृतिक समन्वय हमारी विशेषता, वीर सपूतों के अनुकरणीय चरित्र/परिवार समाज का मेरुदंड/भारतीय परिवार की विशेषताएँ/अपने प्रदेश जम्मू कश्मीर, पश्चिम बंगाल, बिहार/सिक्किम/विविध प्रश्न।

(2) भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्व

(3) साधना—स्वाध्याय, संयम

(4) स्वास्थ्य—आसन, प्राणायाम, ध्यान

(5) आर्थिक परिवर्तन

(6) पर्यावरण

(7) व्यसन मुक्ति एवं कुरीति उन्मूलन

संस्कृति संबोध : कक्षा—10वीं खण्ड (अ) विषय—वस्तु

(1) **समग्र स्वास्थ्य** – शारीरिक स्वास्थ्य के साथ ही मानसिक, भावनात्मक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य में संतुलन बनाए रखने से मनुष्य पूर्ण स्वस्थ रह सकता है, इस बात को प्रतिपादित किया गया है। आत्म विश्वास रखना, चाहे कैसी भी परिस्थितियाँ व कठिनाईयाँ आयें। स्वास्थ्य जो बुद्धि से सम्बंधित है वह मानसिक स्वास्थ्य कहलाता है। संयम और धैर्य रखने से भावनात्मक स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

(2) **नव जागरण के अग्रदूत महर्षि अरविन्द** – उन्नीसवीं सदी भारत देश में महामनीषियों के अवतरण की बेला रही है। जिन्होंने अपने दिव्य योग बल से भारत भूमि को स्वाधीनता का स्वर्णिम सूर्योदय दिया। महर्षि अरविन्द उनमें से अग्रणी रहे हैं। 7 वर्ष की आयु में इंग्लैण्ड पढ़ने गये। 1893 बड़ौदा महाराज के यहाँ उच्च पद पर काम किया, अंग्रेजों से घृणा हो गयी। क्रान्तिकारियों से सम्बंध। पत्नी को पत्र में लिखा मेरे देश की भूमि मेरी माता है। मैं परमात्मा के दर्शन पाकर रहूँगा। अंग्रेजी भाषा संस्कृति के महान पक्षधर श्री अरविन्द को भारत की दुर्दशा के लिए उत्तरदायी अंग्रेजों से घृणा हो गई। आर्य नामक मासिक पत्र तथा पूर्व में अंग्रेजी में कर्मयोगिनी का प्रकाशन। पाण्डिचेरी में एकान्त साधना में अंतिम समय व्यतीत किया।

(3) **आधुनिक भारत के विश्वकर्मा श्री विश्वेश्वरैया** – महान शिल्पी मोक्ष मुण्डम विश्वेश्वरैया का जन्म कोलार गाँव (मैसूर) बैंगलोर में बी.ए. तक की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शिक्षा उच्च शिक्षा में प्राप्त की थी। पूना में छात्रवृति सहित इंजीनियरिंग में प्रवेश लिया। राजकीय सेवा में इंजीनियर के पद पर रहे। धूलिया नदी के नीचे से पाइप लाइन, पूना की नहर का निर्माण। अंग्रेज गवर्नर विश्वेश्वरैया पर अंग्रेज अभियन्ताओं से भी अधिक विश्वास करते थे। चुनौती पूर्ण कार्य किया हैदराबाद के निजाम के आग्रह पर बाढ़ से उजड़े हैदराबाद का दुबारा निर्माण। मैसूर का नया निर्माण। नो वर्क नो फूड के सिद्धान्त पर विश्वास। समय पर काम करना, समय पर भोजन, समय पर सोना, नियमित व्यायाम तथा क्रोध से दूर रहते थे। नव भारत के श्रेष्ठ शिल्पी।

(4) **जीवन जीने की कला** – जीवन जीने की कला का आदर्श स्वरूप–व्यक्ति को विनम्र, सरल, मृदुभाषी, परिश्रमी तथा निश्छल होना चाहिए। जीवन में सादगी और विचारों में उच्चता श्रेष्ठ जीवन का मापदण्ड है। अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह ईमानदारी से करना। तीन ऋण होते हैं – देव ऋण (प्रकृति या पृथ्वी माता का ऋण), ऋषि ऋण (समाज ऋण), पितृ ऋण (माता–पिता का ऋण)। अतः उपरोक्त ऋण से मुक्ति के लिये माता–पिता की सेवा, समाज सेवा, पृथ्वी सेवा करना चाहिए। आत्म–निग्रह, आत्म–संयम, सादा जीवन सही जीवन के लिये के लिये अत्यन्त आवश्यक है। जीवन केवल फूलों का गुलदस्ता नहीं है, यह काँटों की सेज भी है। जरा ध्यान से मन में सोचें सत्कर्म आज कुछ हो पाया, आयु के अंश को लेकर देखो। सूरज छुपने चला गया।

(5) **प्रदूषण कारण एवं निदान** – पर्यावरण के कुछ प्रमुख क्षेत्र निम्नलिखित हैं

(अ) **वायु प्रदूषण** – शुद्ध वायु की आवश्यकता है। अतः जंगल/हरियाली आवश्यक है।

(ब) **जल प्रदूषण** – जल ही जीवन है, अस्वच्छ एवं प्रदूषित जल स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है।

(स) **ध्वनि प्रदूषण** – शब्द को ब्रह्म कहा है और यही शब्द जब उग्र और कर्कस विकराल रूप ले ले, तो वह मारक हो जाता है। वाहनों, विमानों, का कल कारखानों से होने वाले ध्वनि प्रदूषण को कैसे नियन्त्रित किया जाये।

(द) **मृदा प्रदूषण** – निरन्तर रासायनिक खाद व रासायनों का प्रयोग भूमि को वन्ध्या बना रहे हैं। भूस्खलन, भूकम्प, भूमि कटाव व धरती पर पड़ती चौंड़ी–चौड़ी दरारें। सबसे अधिक पर्यावरण की क्षति कभी न सड़ने वाला कूड़ा–कचरा पोलीथीन के प्रयोग से हो रहा है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(6) **ग्रामोत्थान** – स्वस्थ आदर्श ग्राम से सारा विश्व स्वस्थ एवं पुष्ट होगा। भारत एक ग्राम प्रधान देश है। राष्ट्र का चहुँमुखी विकास ग्रामोत्थान द्वारा ही सम्भव है। ग्रामोत्थान के प्रमुख विषय–कृषि प्रबंधन/ गौ पालन/ स्वावलम्बन/ स्वास्थ्य/ संरक्षण/ शिक्षा/ सामुदायिक कार्य/ भूदान यज्ञ के प्रणेता स्वराज यज्ञ के महा मनीषी आचार्य विनोबा भावे, विश्व निर्माण के मूल में ग्रामोत्थान को मानते हैं।

(7) **सद्‌गुणों की पुण्य प्रतिमा महारानी अहिल्याबाई** – अहिल्याबाई का जन्म एक गरीब किसान मनकोजी के घर में हुआ। मंदिर में इन्दौर के महाराज होल्कर अहिल्याबाई से बहुत प्रभावित हुए। तथा अपने पुत्र के साथ विवाह का प्रस्ताव मनकौजी को दिया। पालकी में ले जाकर इन्दौर में अपने पुत्र खण्डेराव से विवाह कर दिया। अहिल्याबाई इन्दौर के युवराज की युवरानी बनीं। उनके एक पुत्र तथा कन्या का जन्म हुआ। खण्डेराव भरतपुर राज्य द्वारा युद्ध में शहीद हुए। तथा सती होने का विचार त्याग दिया। पुत्र मालीराव गद्दी पर बैठा। उसकी भी मृत्यु हो गई। अहिल्याबाई ने इन्दौर के शासन की बागडोर अपने हाथ में ले ली। मृत्यु पर अपने सेनापति तुकोजी राव को गद्दी सौंप दी।

(8) **मानव मूल्य एक परिचय** – मानव के जीवन में मूल्यों का विशेष महत्व है। देश, काल, परिस्थितियों के अनुसार स्वभाव, व्यवहार, आदत के कारण जीवन ऊँचा उठता है। सत्य, ईमानदारी, अहिंसा, प्रेम, त्याग, सहायता, दया, कृपा, करुणा, उदारता, सहनशीलता आदि ऐसे सद्‌गुण हैं जो अनायास ही मानव–मूल्य के रूप में विकसित होकर किसी भी व्यक्ति को गरिमामय बना देते हैं। मानव मूल्यों की आधार भूमि तथा मानव–मूल्य क्यों महत्वपूर्ण है पर विशेष प्रकाश डाला गया है।

(9) **विविध, दुःखों का निवारण** – दुःखों का कारण है – अज्ञान, अशक्ति, अभाव – जो व्यक्ति इनको दूर करने में समर्थ होता है, वह इतना ही सुखी होगा। इन तीनों दुःखों के निवारण के बारे में प्रकाश डाला गया है।

(10) **भारत माता के निर्मय सेनानी सरदार पटेल** – स्वतंत्रता के बाद भारत के प्रथम गृहमंत्री श्री पटेल ने शरणार्थियों की समस्या को हल किया। भारत स्वतंत्रता के बाद देशी राज्यों का गणतन्त्र भारत में विलय, सरदार पटेल का विशेष योगदान रहा है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खण्ड (ब) : प्रश्न बैंक के विषय

(1)	रामायण	(2)	संस्कृति एवं कला
(3)	पर्यावरण	(4)	विविध विषय–सामान्य ज्ञान से सम्बन्धित
(5)	स्वाध्याय	(6)	सांस्कृतिक चेतना
(7)	नारी शक्ति	(8)	व्यसन मुक्ति, कुरीति उन्मूलन आदि।

संस्कृति मंजरी, कक्षा–11वीं, खण्ड (अ) : विषय वस्तु

(1) **कर्त्तव्य बोध** – जिस कर्त्तव्य के मार्ग पर डट जाने की हम शक्ति माँगते है। वह कर्त्तव्य हैं क्या? कर्त्तव्य को समझने के लिए असत्य से सत्य की ओर बढ़ना, अज्ञान के अंधकार से निरंतर प्रकाश की ओर प्रगति करते रहना, विनाश रूपी मृत्यु से सतत विकास रूपी अमरता की ओर अग्रसर होना ही कर्त्तव्य को समझना है। कर्त्तव्य प्रेरणा का मूल मंत्र है।

कर्त्तव्य बोध सहज सम्भव है – जैसे जो व्यवहार अपने लिये प्रतिकूल लगे वह दूसरों के साथ नहीं किया जावे। कर्त्तव्य का व्यावहारिक पक्ष – अच्छे नागरिक की तरह जीवन निर्वाह – जैसे नल की टोंटी खुली है समय निकालकर उसे बंद करते जायें। रोड पर पत्थर पड़ा है उसे उठाकर साइड में डाल दें। सड़क पर पीड़ित व्यक्ति की सहायता करना। हम सुधरेंगे, युग सुधरेगा, हम बदलेंगें, युग बदलेगा। यह नारा नहीं व्यवहार दर्शन है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

(2) **स्वाध्याय** – जीवन में आगे बढ़ने के लिये स्वाध्याय अति आवश्यक है – इस पाठ में स्वाध्याय क्यों तथा स्वाध्याय कैसे किया जाए, इस पर प्रकाश डाला गया है।

(3) **संयम** – संयम का जीवन में बहुत बड़ा महत्व है। संयम को ही आत्मनुशासन कहते हैं। संयम के प्रकार – मनोनिग्रह को संयम कहते हैं। समय संयम, अर्थ संयम, विचार संयम, इन्द्रिय संयम विशेष प्रकार के संयम के प्रकार हैं।

(4) **ध्यान और एकाग्रता** – कुछ लोग ध्यान के द्वारा उस परम तत्व को आत्मा में ही देखते हैं। ध्यान और एकाग्रता एक दूसरे के पूरक हैं। ध्यान से एकाग्रता हो सकती है, तो दूसरी ओर एकाग्रता के बिना ध्यान सम्भव नहीं है। आगे ध्यान कैसे करें इस पर प्रकाश डाला गया है। इस पाठ में एकाग्रता वृद्धि के उपाय पर भी प्रकाश डाला गया है। व्यावहारिक ध्यान

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एवं एकाग्रता के लौकिक स्वरूप को भी समझा गया है।

(5) **चिंतन और चरित्र** – चिंतन और चरित्र दोनों शब्द एक दूसरे के पूरक हैं। चिंतन का जीवन में विशेष महत्व है। चरित्र की श्रेष्ठता सतत शुद्ध चिंतन के अभ्यास से ही अर्जित की जा सकती है। चरित्र निर्माण के सूत्र हैं – मन की पवित्रता, सदाचरण का अभ्यास, स्वमूल्यांकन, आत्म–विश्वास एवं आत्मनिर्भरता, उदारता एवं सहृदयता।

(6) **विनय और विवेक** – विनय और विवेक ऐसे दो सद्गुण हैं जिनसें हम अपने और अपने आसपास के जीवन को सुन्दर और श्रेष्ठ बना सकते हैं। **विनय** – दो अर्थों में प्रयुक्त होता है – प्रथम विनम्रता, दूसरा अनुशासन। कोई व्यक्ति विनम्र है तो वह अनुशासित भी अवश्य होगा। **विवेक** – बुद्धि तो हर एक को प्राप्त होती है, किन्तु विवेक किसी–किसी के पास ही रहता है। जिसके द्वारा वह अपनी बुद्धि का सही–सही उपयोग कर पाता है।

(7) **अविस्मरणीय प्रसंग** – परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य की दयालुता का उदाहरण। एक महिला का गुरुजी से भेंट होना, अजमेर एक साथ–साथ जाना, वहाँ जाकर उनको नवजात शिशु का देना। वही बच्चा आज इंजीनियर बनकर माँ की सेवा कर रहा है।

(8) **बाल जीवन के संस्कार** – इतिहास में अनेक ऐसे उदाहरण हैं जिनसे स्पष्ट है कि बचपन में उनके बारे में निश्चयपूर्ण कुछ नहीं कहा जा सकता। पं. विष्णु शर्मा द्वारा राजकुमारों को कुछ ही दिनों में व्यवहार आदि में पारंगत बनाना। छत्रपति शिवाजी को बचपन से माता जीजाबाई द्वारा संस्कार देना। महात्मा गांधी, सुभाष चन्द्र बोस आदि ऐसे व्यक्तित्व हैं जिनको बचपन से ऐसे संस्कार प्राप्त हुये कि वे इतिहास में अपना स्थान बना सकें।

(9) **देव संस्कृति विश्वविद्यालय** – सांस्कृतिक नवोन्मेष को संकल्पित एक स्थापना शांतिकुंज हरिद्वार में गुरुदेव एवं माताजी के भावलोक में चार दशक पूर्व हुआ।

उद्देश्य – संस्कृति के विकास हेतु अथक प्रयास देवसंस्कृति पर आधारित विज्ञान की विशेष धाराएँ गुरुदेव के विचारों पर आधारित नवीन सामाजिक संरचना। शिक्षण एवं शोध का कार्य चार संकायों में मनोविज्ञान एवं योग क्लीनिक आदि। महाकाल मारक एवं ध्यान कक्ष, तथा शिक्षण एवं शोध की मौलिक विशेषताएँ एवं आगामी योजनाओं पर विशेष प्रकाश डाला गया है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खण्ड–ब, प्रश्न बैंक के विषय

(1) अपना देश अपनी धरोहर
(2) हमारे पर्व एवं त्यौहार
(3) अपने प्रदेश
(4) भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्व – भारतीय संस्कृति विश्वसंस्कृति – प्रतीक चिन्ह, षोडश संस्कार।
(5) आराधना – उपासना, साधना, प्रतिमा पूजन, लोक आराधना के विविध सोपान।
(6) समग्र स्वास्थ्य
(7) आर्थिक स्वावलंबन
(8) पर्यावरण
(9) व्यसन मुक्ति एवं कुरीति उन्मूलन विषयों पर विविध प्रश्न

संस्कृति शौर्य : कक्षा – 12वीं, खण्ड (अ) विषय वस्तु

(1) **युवा चेतना के प्रेरक स्वामी विवेकानन्द** – भगवान् को खोजने तुम कहाँ जाओगे भगवान् को गरीब, दुखी, और दुर्बल में देखो और पहले उन्हीं की पूजा करो। अपने बड़े से बड़े शत्रु के प्रति भी अच्छे और उपकारी शब्दों का प्रयोग करो आपस में न झगड़ो। जीवन की उन्नति के लिये विश्वास, सच्चाई और निष्ठा को जीवन के आधार बनाओ। उपरोक्त अभिव्यक्ति युवाओं में चेतना शक्ति के विस्तार हेतु प्रेरक कही जा सकती है। स्वामी जी की देशवासियों के प्रति विशेष चिन्ता थी। स्वार्थ और मोह से व्यक्ति मुक्त कैसे हो। इसी पर इसका गहन चिंतन रहता था।

(2) **क्या धरती दम तोड़ रही है?** – शताब्दी की सबसे बड़ी संभावित त्रासदी की ओर चेतावनी–पूर्ण संकेत कर रही है, इक्कीसवीं सदी की बीमार धरती। **आपदाएँ** – ग्रीन हाउस गैसें, बढ़ता ली स्तर और सुनामी त्रासदी, पृथ्वी की अनियत्रिंत घूर्णन शक्ति, पिघलती बर्फ के खतरे। **आपदा प्रबंधन – संस्थापित प्रबंधन** – पर्यावरण हमारी प्राथमिक वरीयता। **तत्कालिक प्रबंधन** – ग्रीन हाउस गैसेज के उत्सर्जन में 5 प्रतिशत कमी का लक्ष्य निर्धारित, पर्यावरण असंतुलन के समाधान हेतु जल प्रबंधन, मानसून प्रबंधन तथा कृषि प्रबंधन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(3) **श्रद्धावान् लभते ज्ञानम्** – तमिलनाडु के रामेश्वर नगर के तमिल भाषी परिवार में जन्मे मिसाइल मैन भारत के पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने अग्नि की उड़ान नामक आत्मकथा में अपनी जीवन यात्रा में प्रेरक बने शिक्षकों के बारे में प्रकाश डाला है।

(4) **संघर्ष के साथी** – मेवाड़ की स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत महाराणा प्रताप परिवार जनों के साथ बीहड़ जंगलों में, विपत्तियों की मार झेल–झेलकर मानों वज्र के समान कठोर हो चुके हैं। अबोध बालक के लिये किसी प्रकार एकत्र सामग्री से रोटी बनाई, पर वह भी वन विलाव ले भागा, घुटने नहीं टेकने दिये। अकबर की सेना जो सेनापति मानसिंह के नेतृत्व में युद्ध कर रही थी उस समय प्रताप सलीम तक पहुँच गये। सलीम नीचे गिरा पर चेतक के पैर काट दिये – सादड़ी के झालामन्ना, शक्तिसिंह भाई भी जो अकबर के साथ युद्ध कर रहा था, पसीज उठा और उसने महाराणा का साथ देना प्रारम्भ किया। भामाशाह का महाराणा से मिलना–भामाशाह द्वारा अपनी सम्पत्ति का महाराणा को समर्पित करना। भामाशाह का त्याग इतिहास में विशेष महत्व रखता है।

(5) **दुर्व्यसन बनाम असफलता** – नयन बारहवीं कक्षा का विद्यार्थी कुसंगति का शिकार हो गया। विद्यालय में रसायन विज्ञान के गुरुजी ने प्रधानाचार्य से मिलकर एक प्रदर्शनी का आयोजन किया। गुटके का सेवन जहर, मदिरा सेवन के दुष्प्रभाव, नशीले पदार्थों कासेवन आदि के बारे में जानकारी प्रदर्शनी में दी गई। प्रदर्शनी के अंत में एक सभा का आयोजन रखा गया, जिसमें नशीले पदार्थों को त्यागने का संकल्प विद्यार्थियों ने दिया। उसके बाद नयन ने भी दुर्व्यसन को त्याग दिया और आगे चलकर वह एक मेधावी छात्र के रूप में माना जाने लगा।

(6) **देवसंस्कृति के द्वार** – विपिन ने कक्षा बारह में चौथा स्थान प्राप्त किया। देव लोक पधारे उसके पिता उससे कहा करते थे दुष्प्रवृत्तियों से महाभारत का मोर्चा अब कर्त्तव्यनिष्ठ युवक/बालक सम्हालेंगे। और मनुष्य में देवत्व का उदय तथा धरती का स्वर्ग का अवतरण का काम करेंगे। संस्कृति में द्वार से आया देवदूत देवसंस्कृति विश्वविद्यालय के नाम से जाना जाता है। विपिन की देवदूत से मुलाकात के बाद शिक्षा का उत्तम मार्ग खुलने लगा। ज्ञान दीक्षा के साथ, तीन वर्षीय स्नातक व दो वर्षीय स्नातकोत्तर, मानवीय चेतना, मनोविज्ञान, भारतीय संस्कृति, पत्रकारिता एवं जनसंचार, कम्प्यूटर, अंग्रेजी साहित्य तथा दूरस्थ शिक्षा केन्द्रों के द्वारा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विशेष कोर्स का संचालन देवसंस्कृति विश्वविद्यालय की भारत के युवाओं को बहुत बड़ी देन है।

(7) **भारतीय संस्कृति चेतना के प्रणेता** – भारतीय समाज में कभी संत तो कभी सिद्ध ज्ञानी वक्ता, विद्वान और धार्मिक नेता माने जाने वाले सांस्कृतिक चेतना के संवाहक पं. श्रीराम शर्मा आचार्य इन सभी गुणों से बढ़कर मानवीय व्यथा वेदना की अनुभूतियों की करुण कराह से हाहाकार करती एक उद्विग्न आत्मा की सशरीर अभिव्यक्ति कहे जा सकते हैं। गुरुदेव के जन्म से लेकर शांतिकुंज की हरिद्वार में स्थापना/एक घण्टा समयदान, एक रुपया नित्य या माह की एक दिन की आय तथा एक मुट्ठी अनाज रोज निकालने की मानव सेवा साधना के प्रणेता युग ऋषि की राष्ट्र को बहुत बड़ी देन है।

(8) **परिस्थिति पर नहीं, मनःस्थिति पर उत्कर्ष सम्भव** – 'लक्ष्मी और सरस्वती की कृपा कभी एक साथ नहीं होती' इस कहावत में कितनी सच्चाई है यह विवादास्पद हो सकता है – पर यह भी सत्य है कि गरीब व्यक्ति भले ही धनवान् न बने ज्ञानवान् बन सकता है। उदाहरण है – सूरदास, तुलसीदास, प्रेमचन्द, शरदचन्द्र, रामचन्द्र शुक्ल, महावीर प्रसाद द्विवेदी, निराला, जयशंकर प्रसाद आदि ऐसे कई विद्वान साहित्यकार हुये जिनकी आर्थिक स्थिति काफी शोचनीय है। पर अपने तप साधना से उन्होंने जगत् को कुछ देने में सफलता प्राप्त की। विद्या व ज्ञान प्राप्ति में किसी का भी वश नहीं चलता, जमशेदजी टाटा के जीवन में भी हमें शिक्षा प्राप्त होती है। अमेरिका के प्रथम राष्ट्रपति भी एक उदाहरण हैं – जो विशेष परिस्थितियों में इतने महान व्यक्ति बन पाएँ।

(9) **आत्म–प्रबंधन की दिशाएँ** – प्रातः उठकर कोई एक अच्छा विचार सूत्र मन में धारण करें और फिर चिंतन प्रारम्भ करें। जो व्यक्ति सहयोग करे उसको धन्यवाद दें। हमेंशा प्रसन्न रहें, दूसरों को भी प्रसन्न रखें। दूसरों के लिये जो भी अच्छा कर पाएँ, करें। सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति से अच्छे विचार प्राप्त करें तथा दूसरों को भी बताएँ।

(10) **एक महान भारतीय डॉ. अम्बेडकर** – मेधावी युवक अमेरिका व इंग्लैण्ड से उच्च शिक्षा प्राप्त करके बैरिस्टर की डिग्री लेकर भारत आये। अर्थशास्त्र के प्रतिष्ठित विद्यान एवं महान विधिवेत्ता। संविधान सभा की प्रारूप समिति के अध्यक्ष। प्रथम विधि मंत्री के रूप में हिन्दू कोड बिल एक–दो धाराओं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के रूप में करके पास किया। समाज सुधारक एवं दलित बन्धु के रूप में उन्हें जाना जाता है।

खण्ड–ब, प्रश्न बैंक के विषय

1. अपना देश – अपनी धरोहर
2. भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्व
3. उपासना – साधना
4. समग्र स्वास्थ्य
5. आर्थिक स्वावलंबन
6. पर्यावरण

संगठन का स्वरूप

ऋषि सत्ता की सोच के अनुरूप संगठनात्मक ढांचा –

परम पूज्य गुरुदेव ने इस तथ्य की ओर बार–बार ध्यान दिलाया है कि यह समय युग परिवर्तन की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है। संत सूरदास, फ्रांसीसी भविष्य का नेस्ट्रॉमस आदि से लेकर महात्मा बहाउल्ला, स्वामी विवेकानंद, योगी श्री अरविन्द आदि ने जिस महान युग के आने के सुनिश्चित संकेत दिए हैं, उसकी अति महत्वपूर्ण अवधि यही है। जब भी ऐसे समय आते हैं, तब परमात्मसत्ता उपयुक्त माध्यमों के सहयोग से अद्भुत परिवर्तनों की व्यवस्था बनाती है। इस प्रकार की व्यवस्था जुटाने–बनाने में ऋषितंत्र की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण रही है।

पूज्य गुरुदेव ऋषि चेतना के युगीन प्रतिनिधि के रूप में अवतरित और सक्रिय हुए। उन्होंने देखा कि सारी विसंगतियों के पीछे मनुष्य की अनास्था और दुर्बुद्धि है, जो उससे दुष्कर्म करा रही है और संस्कृतिक आदर्शों के विपरीत अपसंस्कृति का वातावरण बना रही है। उपचार के रूप में उनके माध्यम से सद्बुद्धि और सत्कर्म की साधना जनसुलभ बनकर देवसंस्कृति के उन्नयन और विकास का संकल्प उभरा। उन्होंने स्वयं कठोर साधना की तथा बड़ी संख्या में युगसाधक तैयार करके, हिमालय के ध्रुव केन्द्र से प्रवाहित विचार प्रवाह और शक्ति प्रवाह को जनसुलभ बनाया और उस आधार पर सृजन आन्दोलन चलाया।

आंदोलन का लक्ष्य मानव समाज को स्वस्थ शरीर, स्वच्छ मन, सभ्य समाज की महान् उपलब्धियाँ प्रदान करना है। यह तीन विभूतियाँ भावनात्मक नव निर्माण के द्वारा ही संभव होंगी। आत्म निर्माण, परिवार निर्माण और समाज निर्माण की तीन साधनायें पूरी करने से ही उपरोक्त तीन वरदान मानव जाति प्राप्त करेंगी, जिससे चिरस्थायी सुख–शांति का आनंद एवं संतोष–लाभ प्राप्त किया जा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सकेगा। धरती पर स्वर्ग का अवतरण इन्हीं भागीरथ प्रयत्नों द्वारा संभव होगा। अपने परिवार के छोटे से संगठन से इस परम पुनीत अभियान का शुभारंभ किया गया था। बीज तब छोटे रूप में बोया गया था, पर आगे चलकर यह विशाल वट–वृक्ष के रूप में परिणत हो गया है। इसमें कोई शक नहीं कि इन दिनों विनाशकारी असुरता बहुत जोर दिखा रही है। फिर भी अंतरिक्ष में ऐसे दिव्य प्रवाह उमड़े हैं, जो इस सुन्दर विश्व की गरिमा को जीवित रखने के लिए गतिशील हैं। ध्वंस की चुनौती सृजन ने स्वीकार की है और असुरता को सर्वभक्षी–सर्वनाशी न होने देने के लिए देवत्व ने प्रतिरोध का साज सजाया है। अपने मिशन का संगठनात्मक ढाँचा इन्हीं दिव्य प्रयत्नों की एक झाँकी युग निर्माण योजना, प्रज्ञा अभियान, विचार क्रांति अभियान, देव संस्कृति दिग्विजय अभियान, गायत्री परिवार के ज्ञानयज्ञ के रूप में देखी जा सकती है।

नव सृजन के लिए उभरी दिव्य हलचल ने इस बात के लिए विवश किया कि जनमानस में संव्याप्त विकृतियों के नियंत्रण और भावनात्मक परिष्कार के लिए कुछ कारगर प्रयास किये जायें। जिस सत्ता ने यह हलचल उत्पन्न की उसी ने यह मार्ग भी सुझाया कि यह प्रयोजन संघ शक्ति के माध्यम से ही होगा और यह संगठन धर्म–प्रकृति का होना चाहिए। धर्मतंत्र की सामर्थ्य असीम है, जो जनमानस के अंतःकरण मर्मस्थल को स्पर्श करके दिशा और दृष्टि का निर्धारण करता है। अस्तु, उस दिव्य हलचल की यह प्रेरणा उचित ही थी कि धर्मतंत्र की संगठनात्मक प्रवृतियाँ, बढ़ी हुई असुरता का शमन करने के लिए सजग हों और आगे आयें।

सूक्ष्म जगत् की दिव्य प्रेरणा ही करना चाहिए कि आठ वर्ष के भीतर गुरुसत्ता के हिमालय प्रवास के बाद उपरोक्त दैवी प्रयोजन की पूर्ति का संकल्प लेकर युग निर्माण आदोंलन सामने आया। मोटी दृष्टि से इस प्रयास को मानुषी समझा जा सकता है पर वस्तुतः इसके पीछे नियति का विधान एवं अतिमानवीय शक्तियाँ ही काम कर रही हैं।

ठोस–सबल आधार

युगऋषि ने संगठन का लौकिक आधार भी बहुत ठोस और सबल बनाया है। इसके दो मुख्य सूत्र हैं (1) यह संगठन साधना से परिष्कृत सृजनशील व्यक्तियों का है, जो पारिवारिक संवेदना के आधार पर जुड़ें हैं। (2) इसकी कार्यपद्धति जन आकांक्षाओं के तथा युग की माँग के अनुरूप है। इन्हीं दो कारणों से भारत का स्वतंत्रता संग्राम भी सफल हुआ था। पूज्य गुरुदेव ने इस संदर्भ में जो लिखा था, उसके कुछ अंश यहाँ दिये जा रहे हैं। परिजन ऋषि के वचनों पर ध्यान दें और तदनुसार अपना मूल्यांकन एवं विकास करें। इससे नवसृजन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अभियान को कदम–कदम आग बढ़ाते रहना कठिन नहीं है। उक्त दो सूत्रों के संदर्भ में अपने आन्दोलन की संगति स्वतंत्रता आन्दोलन के साथ बिठाते हुए उन्होंने लिखा है कि–

स्वतंत्रता आन्दोलन के समय एक तो, एक से एक बढ़कर भावनाशील और निर्मल चरित्र वाले व्यक्ति इसमें सम्मिलित हुए थे, दूसरे देश की जनता का बच्चा–बच्चा जिस स्वतंत्रता की आवश्यकता अनुभव करता था, उसी की पूर्ति को लक्ष्य बनाकर कांग्रेस चल रही थी। ठीक यही इतिहाहस ज्यों का त्यों युग निर्माण योजना दुहरा रही है और ठीक उसी आधर पर उसे जन सहयोग मिल रहा है तथा असंभव समझा जाने वाला लक्ष्य नितांत संभव होता दीख रहा है।

किसी कार्य की सबसे बड़ी सफलता उसका पुष्ट होना तथा ठोस आधार बनना कहा जा सकता है। सारे देश में बिखरे हुए कार्यकर्ताओं में गहन आत्मीयता का भाव और लोक हित में अपना अधिक से अधिक योगदान देने की प्रबल लालसा एक ऐसा तथ्य है, जिसकी झलक मात्र पाकर लोगों का मन हर्षित–प्रफुल्लित हो उठता है। समाज के विभिन्न वर्गों में विभिन्न स्तरों पर शक्ति और समाज की स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार युग निर्माण के नैष्ठिक परिजनों को निस्पृह भाव से कर्त्तव्यरत हर कोई हर जगह देख सकता है।

जनता की जो आकांक्षाएँ आज हैं, उसी के अनुरूप युग निर्माण योजना मार्गदर्शन दे रही है। भावनाओं का परिवर्तन, सृजनात्मक कार्यों में पारस्परिक सहयोग का उत्साहपूर्वक नियोजन, अवांछनीयता से हर क्षेत्र में लड़ पड़ने का शौर्य–साहस– यह तीनों ही प्रवृत्तियाँ ऐसी हैं, जो एक बार उभरी सो उभरीं। असुरता में ही पनपने की शक्ति हो सो बात नहीं है, देवत्व में भी आत्म विस्तार की क्षमता है। उसे यदि अवसर मिल सके, तो उसका अभिवर्द्धन और भी अधिक द्रुतगति से होता है। एक व्यक्ति दूसरों को बनाये – यही है सच्चा और ठोस आधार।

पोल आधार वह है, जिसमें लाउडस्पीकर चिल्लाते और अखबार लंबे–लंबे समाचार छापते हैं। मंच–पंडाल बनते, धुँआधार भाषण होते और पर्चे–पोस्टरों के गुब्बारे उड़ते हैं। किराए पर जुलूस की भीड़ जमा करने का भी अब एक व्यवस्थित धंधा चल पड़ा है। यह फुलझड़ियाँ बिल्कुल बचकानी हैं और आंदोलनों के नाम पर यही तमाशे हर ओर खड़े दिखाई पड़ते हैं। इस विडंबना के युग में युग निर्माण योजना अपना अलग आधार लेकर ही चल रही है अपना सिद्धांत। चंदा मांगते फिरने से काम शुरू करना नहीं, वरन् घर से खैरात शुरू करना, स्वयं समय और पैसा खर्च करके अपनी निष्ठा का परिचय देना और उसी से दूसरों में अनुकरण की आकांक्षा उत्पन्न करना, यही है अपना वह क्रियाकलाप, जिसने लक्ष्य की ओर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

द्रुतगति से चलने में कीर्तिमान् स्थापित किया है।

कार्यक्रमों की चर्चा अन्यत्र की गई है। यहाँ कार्य करने की शैली का प्रसंग है। युग निर्माण परिवार का हर सदस्य यह व्रत लेकर चलता है कि वह तब तक चैन न लेगा, जब तक कि अपने ही जैसे निष्ठावान् और कर्मठ दस नए व्यक्ति तैयार न कर लेगा। उसके लिए वह एक घंटा समय निकाल कर अपने परिवार, पड़ौस, मित्र, सम्पर्क, परिचय, अपरिचय के क्षेत्र में मारा–मारा फिरता है, घर–घर जाता है, जन–जन का द्वार खटखटाता है। पढ़ों को पढ़ने के लिए देता है, बिना पढ़ों को सुनाता है। आज की परिस्थितियों के साथ योजना द्वारा प्रस्तुत समाधानों को समझाता है।

हर दिन 10–15 लोगों से सम्पर्क करना, सिर खपाना उद्देश्य बनाया गया हो, तो सफलता कहाँ न मिलेगी? सहानुभूति के साथ बात के सुनने वाले, समर्थन करने वाले, रुचि लेने वाले प्रायः सभी बनते हैं, क्योंकि प्रतिपादन सारगर्भित है। छोटे–मोटे आयोजनों की श्रृंखला संस्कारों और पर्वों के माध्यम से चलती ही रहती है। महीने में एक दो कार्यक्रम होते ही रहते हैं। उनमें उन सहानुभूति वाले व्यक्तियों को अनुरोधपूर्वक लाया जाता है। घनिष्ठता बढ़ती है, उत्साह उमड़ता है, और देखते–देखते नए अपरिचित लोग इन प्रवृत्तियों में इस तरह जुट जाते हैं, मानो वे वर्षों पुराने पदाधिकारी या संस्थापक, संचालक ही इस मिशन के हों।

एक से दस, दस से सौ, सौ से हजार, हजार से दस हजार, दस हजार से लाख। दस की संख्या गुणित होती चली जाय, तो पाँचवे चक्र में पहुँचते–पहुँचते एक से दस लाख बन जाते हैं। यह सिद्धान्त गणित के आधार पर ही सही नहीं है, यथार्थता के आधार पर भी सही है। इसे देखना हो तो आज से लगभग अर्द्धशताब्दी पूर्व उस व्यक्ति को देखना चाहिए जिसने एक पंद्रह रुपये मासिक के किराये के घर में बैठकर इस अभियान का एकाकी आरंभ किया था और अब उस परिवार में एक लाख सक्रिय सदस्यों, कर्मठ कार्यकर्ताओं और कर्मयोगी वानप्रस्थों की विशाल सृजन सेना खड़ी है। खड़ी ही नहीं रही उलट–पुलट और उथल–पुथल के मोर्चों पर मोर्चे जीतती भी चली जा रही है।

परिवार के परिजनों ने जब यह शपथ ले रखी हो कि उस प्रकाश को वह अपने तक सीमित नहीं रखेगा, वरन् कम से कम दस को प्रकाशवान् करेगा, दस कल्पवृक्ष लगाएगा। दस सृजन सेना में सैनिक भर्ती करेगा, तो कोई कारण नहीं कि इस छोटे से संकल्प को पूरा न किया जा सके। जहाँ आज एक चिनगारी है, कल वहाँ तिनके जलते दिखते हैं। यह विकासोन्मुख क्रम यदि क्रमशः प्रचंड दावानल का रूप धारण करता चला जाय, तो इसमें आश्चर्यजनक कुछ भी नहीं, यह नितांत स्वाभाविक और सरल प्रक्रिया है। घास की जड़ हो, तो उसमें से दस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पत्ते फूटने में कितनी देर लगती है। निराशा वहाँ हाथ लगेगी, जहाँ आसमान से कागज के फूल गिराये जाएंगे और फिर उनसे पुष्प वाटिका बनी या नहीं यह इंतजार किया जाएगा।

युग निर्माण योजना की सबसे बड़ी सम्पत्ति उस परिवार के परिजनों की निष्ठा है, जिसे कूटनीति एवं व्यक्तिगत महत्वाकाँक्षाओं के आधार पर नहीं, धर्म और अध्यात्म की निष्ठा के आधार पर बोया, उगाया और बढ़ाया गया है। किसी को पदाधिकारी बनने की इच्छा नहीं, फोटो छपाने के लिए एक भी तैयार नहीं, कुछ गँवाने के लिए जो आए हों, उनके बीच इस प्रकार का छल–छद्म लेकर कोई घुसने का प्रयत्न भी करे, तो उस मोर का पर लगाने वाले कौए को सहज ही पहचान लिया जाता है और चलता कर दिया जाता है। यही कारण है कि इस विकासोन्मुख हलचल में सम्मिलित होने के लिए कई व्यक्तिगत महत्वाकांक्षी आए, पर वे अपनी दाल गलती न देखकर वापस लौट गए। यहाँ निस्पृह और भावनाशील, परमार्थ परायण, निष्ठा के धनी को ही सिर माथे पर रखा जाता है। धूर्तता को सिर पर पाँव रखकर उलटे लौटना पड़ता है। यह विशेषता इस संगठन में न होती, तो महत्वाकांक्षाओं ने अब तक इस अभियान को भी कब का निगल कर हजम कर लिया होता।

www.vicharkrantibooks.org

निष्ठा फलित होती गई

हमने युगऋषि के निर्देशों पर ध्यान दिया। उनके द्वारा निर्धारित अनुशासनों को बरतते हुए कार्य आरंभ किया और उसके आश्चर्यजनक परिणाम सामने आते चले गए। पूज्य गुरुदेव ने अध्यात्म की सबल आधार शिला पर नैतिक, सांस्कृतिक पुनरुत्थान का जो अभियान चलाया, उसकी अब तक की उपलब्धियों को अध्ययनकर्ता अद्भुत, चमत्कारी स्तर का कहते हैं, तो उसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं है। उसके कुछ सर्वविदित उदाहरण निम्नानुसार हैं–

मथुरा में एक सामान्य से दिखने वाले व्यक्ति द्वारा, पन्द्रह रुपये मासिक किराये के मकान से प्रारंभ किया गया आन्दोलन, दीप से दीप प्रज्ज्वलन के क्रम से बढ़ता हुआ लाखों कार्यकर्त्ताओं और करोड़ों समर्थकों के एक सबल संगठन के रूप में प्रतिष्ठित हो गया। इसके विकास की तुलना विज्ञानीजन मत्स्यावतार से करते पाए जाते हैं।

गायत्री जैसी गूढ़ विद्या को जन सुलभ बनाने का अनोखा प्रयोग हुआ। धर्मक्षेत्र के अधिकांश मूर्धन्य उसके विरोध में रहे, ऐसे सामान्य लोग प्रचारक–प्रसारक बने, जिन्हें परम्परा के अनुसार गायत्री मंत्र सुनने का भी अधिकार नहीं था, लेकिन गायत्री विद्या के विस्तार का प्रवाह अबाध रूप से बढ़ता चला गया। भगवान

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

श्रीराम के संरक्षण में रीछ—बंदरों द्वारा समुद्र पर बाँध बना देने जैसी घटना हुई।

यज्ञ विज्ञान को युगानुरूप स्वरूप देकर उसे जीवन को संस्कारित करने की युगानुरूप विधा के रूप में स्थापित किया गया। इस संदर्भ में भी गायत्री विद्या जैसा ही चमत्कार हुआ। गत दिनों की लोक मान्यता के अनुसार जिन्हें यज्ञ में आहुतियाँ डालने का भी अधिकार नहीं था, वे यज्ञ पुरोहित के रूप में सक्रिय हुए और यज्ञीय आन्दोलन का प्रवेश घर—घर तक हो गया। परम्पराओं के नाम पर किए जाने वाले समर्थों के प्रतिरोध नाकाम होते चले गए। तमाम विरोधी भी अभियान में शामिल होने लगे।

जीवन जीने की कला के रूप में अध्यात्म को पुनः स्थापित किया जा सका। जहाँ अध्यात्म को दकियानूसी लोगों, जीवन के हारे—थके लोगों के लिए पनाहगाह के रूप में उपेक्षित माना जाने लगा था, वहाँ उसे प्रगतिशील जनजीवन का अंग माना जाने लगा। उसके माध्यम से आत्म समीक्षा, आत्मशोधन, आत्मनिर्माण एवं आत्मविकास जैसे श्रेष्ठ लक्ष्य प्राप्त करने का उत्साह उभरने लगा।

लोक आराधना की सनातन अवधारणा को फिर से युगानुरूप प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। आध्यात्मिक उच्चस्तरीय साधना प्रयोगों से लेकर सेवा कार्यों ईश्वर के विराट् रूप की आराधना के रूप में अपनाने, ईश्वर की दी हुई दिव्य विभूमियों और लौकिक सम्पदाओं का एक अंश इश्वरीय प्रयोजनों में अर्पित करने की सज्जनोचित जिम्मेदारी को निभाना जीवन का पवित्र कर्त्तव्य मानने की पुण्य परिपाटी पुनः प्रतिष्ठित हो उठी। "परमार्थ में ही सच्चा स्वार्थ है, यह तथ्य भली भाँति समझ में आने लगा।"

एकता—समता की दिशा में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त हुई। विभिन्न ध ार्मिक एवं सामाजिक स्तरों पर नर—नारी को समान विकास के अवसर प्राप्त हुए। जहाँ नारियों को गायत्री मंत्र जपने एवं यज्ञ में आहुतियाँ डालने तक का अधिकार नहीं था, वहाँ उन्हें पौरोहित्य एवं यज्ञ संचालक स्तर के अवसर और अधिकार सम्मानपूर्वक प्राप्त हुए। अवर्ण—सवर्ण, अमीर—गरीब और विभिन्न सम्प्रदायों, सभी वर्गों के जिज्ञासुओं को युग साधना में समान रूप से प्रवेश एवं विकास के अवसर प्राप्त हुआ। अन्य सामाजिक और राजनैतिक आन्दोलनों में नारी और कथित पिछड़े वर्ग को उचित स्थान एवं अधिकार देने के तमाम आन्दोलन जो उपलब्धियाँ हासिल न कर सके, युग निर्माण आन्दोलन में उन्हें युगऋषि के निर्देशन पर चलते हुए सहजता से प्राप्त कर लिया।

संघशक्ति के जागरण और सुनियोजन के क्रम में इस युग के नए कीर्तिमान् बने। जन सामान्य के समय दान, अंशदान के ऐसे कार्य सफलता पूर्वक सम्पन्न हुए, जिन्हें विपुल साधन—सम्पन्न सरकारी तंत्र, उच्च प्रतिभा सम्पन्न एवं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सम्पत्तिवान संगठन भी अचंभित रह गए। नगरों से गाँवों तक व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण एवं समाज निर्माण के सूत्रों और प्रयासों का विस्तार, धर्मतंत्र से लोकशिक्षण जैसी प्रभावशाली विधा का व्यापक ताना–बाना, आश्वमेधिक से लेकर कुंभ स्तर के आयोजनों को न्यूनतम समय एवं संसाधनों से सफल बना देने जैसे तमाम उदाहरण इस संदर्भ में प्रस्तुत किए जा सकते हैं।

सामूहिक आध्यात्मिक पुरुषार्थ करने की सनातन ऋषि प्रणाली या युगानुरूप प्रगतिशील स्वरूप उभारने और उसके सफल अनुष्ठान प्रयोग करने में उच्चस्तरीय सफलता प्राप्त हुई। जप, तप एवं यज्ञ अनुष्ठानों को किसी व्यक्ति एवं परिवार के स्वार्थ की सीमा से ऊपर उठकर समाज के व्यापक हितों के साथ जोड़ा गया। सन् 62 के अष्टग्रही योग, चीनी आक्रमण, पाक युद्ध, आपातस्थिति, स्काइलैब आदि से उपजे संकटों के समाधान से लेकर युग संधि महापुरश्चरण के सामूहिक साधना प्रयोगों के नए कीर्तिमान बनाए। राष्ट्रहित एवं विश्व कल्याण जैसे प्रयोजनों की सिद्धि के लिए लौकिक पुरुषार्थों के समानान्तर आध्यात्मिक पुरुषार्थों के लिए अनोखा जन उत्साह जगाने में सफलता मिली।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

सम्मोहित नहीं, उत्साहित हों

जब कभी किसी समर्थ के मार्गदर्शन, संरक्षण में निष्ठा भरे प्रयास किए जाते हैं, तो उनमें सफलता मिलती ही है। भगवान् राम के साथ रीछ–वानरों द्वारा समुद्र पर बाँध बनाना, श्रीकृष्ण के साथ ग्वाल–वालों द्वारा ब्रज में कंस के विरुद्ध आन्दोलन चलाना, भगवान् बुद्ध के साथ बौद्ध भिक्षुओं द्वारा धर्म चक्र प्रवर्तन के अन्तर्गत अद्भुत कार्य करना इसी प्रकार की सफलताओं के उदाहरण हैं। प्रत्येक चरण की सफलता के साथ साधकों, कार्यकर्त्ताओं में अगले चरण को अधिक प्रभावशाली ढंग से उठाने और पूरा करने के लिए उत्साह और मनोबल बढ़ना चाहिए। यह उचित भी है और आवश्यक भी।

किन्तु कई बार ऐसा होता है कि साधक, कार्यकर्तागण, किसी एक चरण की सफलता और उसके कारण मिलने वाले यश से इतने सम्मोहित हो जाते हैं कि अगले चरण की आवश्यकता ही भूल जाते हैं। ये वे लोग होते हैं जिनकी दृष्टि साफ नहीं होती। उन्हें अपना लक्ष्य ठीक–ठीक दिखाई नहीं देता। अपनी गरिमामयी जिम्मेदारी का ठीक–ठीक बोध नहीं होता। इसीलिए वे एक सीढ़ी ऊपर चढ़ने को उससे मिलने वाली वाहवाही को ही अपने प्रयास की अन्तिम सफलता मान लेते हैं। ऐसी भूल बड़ी घातक होती है। वास्तव में एक चरण की सफलता आगे आने वाले चरण को पूरा करने की नई जिम्मेदारी का बोध कराती है। वानर सेना यदि समुद्र पर बाँध बना लेने की सफलता से आत्म सम्मोहित हो जाती है,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तो क्या होता? फिर लंका के योद्धाओं के साथ युद्ध करके श्रीराम की विजययात्रा में वे कैसे भागीदार बन पाते? भिक्षुओं को उनके त्याग और भगवान बुद्ध के आशीर्वाद के कारण जो अपूर्व सुविधा–सम्मान मिला, वे उसी को अपनी उपलब्धि मान लेते, तो सुदूर देशों तक भगवान् बुद्ध का कल्याणकारी संदेश कैसे पहुँचता?

युग निर्माण परिवार, गायत्री परिवार को भी इस समय यही सावधानी बरतनी है। पूर्व पंक्तियों में जो असाधारण सफलताएँ गिनाई गई हैं, वे सब वास्तविक हैं। उनके कारण जनता से जो श्रेय, सम्मान, साधन मिल गए हैं, उन्हीं को अपनी वास्तविक उपलब्धि मान लेना भारी भूल होगी। जिन्होंने पूज्य गुरुदेव के महान् लक्ष्य को नहीं समझा, जिन्होंने उनकी भावना का स्पर्श ठीक से नहीं पाया, वे ही ऐसी भूल कर सकते हैं। वे ही पहले चरण की सफलताओं से सम्मोहित होकर अपनी अगले चरण की श्रेष्ठतर भूमिकाओं को नजरअंदाज कर सकते हैं। जिनकी दृष्टि साफ है, जिन्हें युगऋषि की हार्दिक भावना, वेदना, संकल्पशीलता का थोड़ा भी अनुभव किया है, उन्हें तो यही शोभा देता है कि वे प्रत्येक चरण की सफलता के साथ उससे उत्साहित होकर अगले चरण की सिद्धि के लिए अपनी नई भूमिका निभाने की तैयारी में पूरी शक्ति के साथ जुट पड़ें।

www.vicharkrantibooks.org

अगले चरण की माँग

पूज्य गुरुदेव ने नवयुग सृजन के तीन अनिवार्य चरण कहे हैं (1) व्यक्ति निर्माण (2) परिवार निर्माण (3) समाज निर्माण। व्यक्तियों के चिन्तन, चरित्र एवं व्यवहार को श्रेष्ठ मानव के स्तर पर पहुँचाना जरूरी है। श्रेष्ठ व्यक्तियों को पारिवारिक अनुशासनों की मर्यादा में रहने, करने का अभ्यास कराना तथा सामाजिक दायित्वों की पूर्ति के लिए जागरूक और योग्य बनाना होगा। जो परिवर्तन चिन्तन, चरित्र व्यवहार में लाए जाने हैं, उन्हें गहरा और व्यापक रूप देना होगा। इसके लिए बौद्धिक क्रान्ति, नैतिक क्रान्ति एवं सामाजिक क्रान्ति के लक्ष्य सामने रखने होंगे।

जिस कार्य को व्यापक स्तर पर सफल बनाना हो, उसे तीन प्रक्रियाओं में से गुजारना होता है (1) प्रचारात्मक, इसके अन्तर्गत अधिक से अधिक व्यक्तियों को सृजन सूत्रों से सुपरिचित एवं सहमत कराना पड़ता है। (2) रचनात्मक, इसके अन्तर्गत सहमत व्यक्तियों को उनकी रुचि और क्षमता के अनुरूप किसी श्रेष्ठ कार्य में लगाना होता है। एक–एक करके सृजनात्मक लक्ष्यों को पूरा करना होता है। (3) संघर्षात्मक, इस चरण के अन्तर्गत प्रचार एवं सृजन के मार्ग में आने वाली बाधाओं को निरस्त करते रहना होता है। इन तीनों ही प्रक्रियाओं में अगले चरण की जिम्मेदारियाँ उठाई जाएँ, यह समय की माँग है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अभी तक इस देव परिवार ने प्रचारात्मक जिम्मेदारियों को ही विशेष रूप से उठाई और निभाई है, लेकिन युग निर्माण जैसे लक्ष्य को देखते हुए हमारी उपलब्धियाँ अभी कम ही हैं। ऋषियों के संरक्षण, मार्गदर्शन में मनुष्य मात्र को उज्ज्वल भविष्य की ओर ले जाने वाली इस ईश्वरीय योजना की जानकारी अभी तक कितने प्रतिशत लोगों तक पहुँची है? अभी कितनों तक इसे पहुँचाना है? जो सहमत हुए उनमें से कितनों को योजनाबद्ध ढंग से सृजन साधना में लगाया जा सका और कितनों को अभी लगाना है? सृजन के मार्ग में कहाँ–कहाँ, कौन–कौन सी बाधाएँ आ रही हैं? सामने आने वाली बाधाओं के निवारण के लिए कहाँ–कौन सी रणनीति बनानी और कहाँ कितनी सहायता पहुँचानी है? इन सब प्रश्नों पर विचार करने से स्पष्ट दिखाई देता है कि पिछली उपलब्धियाँ भले ही कितनी शानदार रही हों, अभी हमें बहुत महत्वपूर्ण कार्य सम्पादित करना है। पहले से कई गुनी शक्ति, सूझबूझ और तालमेल भरे कौशल के साथ अभियान को गति देनी है।

पूज्य गुरुदेव ने सूक्ष्मीकरण साधना के दौरान यह बात स्पष्ट रूप से कही कि हमें पहले की अपेक्षा अधिक शक्ति ओर अधिक कौशल की जरूरत पड़ेगी। रहने के लिए झोपड़ी का सामान्य मकान बनाना है, तो अपने को चार सहयोगियों का एकाध कारीगर की मदद से काम पूरा हो जाएगा, लेकिन यदि विशाल मंदिर, भवन, पुल, या बांध आदि बनाने हों, तो उसके लिए बड़ी मात्रा में सामग्री एवं श्रम जुटाने के साथ उच्च तकनीकी क्षमता वाले विशेषज्ञों को भी जरूरत पड़ती है। अनुभवी विशेषज्ञों को अपने साथ जोड़ा जाय या अपने साथ जुड़े लोगों को ही विशेषज्ञों के रूप में विकसित किया जाए, यह जरूरी होता है।

प्राथमिक स्तर के कार्य तो अकेले–अकेले, फुटकर प्रयासों से भी हो गए, लेकिन अब तो समर्थ संगठन बनाना एवं प्रामाणिक तंत्र विकसित करना जरूरी हो गया है। गायत्री, यज्ञ संस्कार, जीवन जीने की कला आदि की उपयोगिता बड़ी संख्या में लोग स्वीकार करने लगे हैं। अब उन्हें प्रत्यक्ष जीवन में सफल बनाने की व्यवस्था बनानी होगी। उसके लिए प्रत्यक्ष प्रमाण देने एवं प्रभावी प्रशिक्षण की व्यवस्था बनाने की जरूरत है। यह सब कार्य सामूहिक स्तरपर सुसंगठित एवं योजनाबद्ध प्रयासों से ही संभव होंगे। अस्तु, अगले चरण की जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिए साधना–संगठन–सशक्तिकरण की प्रक्रिया चालू करना जरूरी हो गया है।

सुसंगठन की अनिवार्यता

महत्वपूर्ण कार्यों के लिए श्रेष्ठ संगठित तंत्र अनिवार्य हो जाता है। पूज्य गुरुदेव ने इस संदर्भ में बहुत कुछ लिखा और कहा है। वर्तमान समय में संगठन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की महत्ता एवं अनिवार्यता की ओर दिशा निर्देश देने के लिए उनके वाङ्मय क्र. 46 से चयनित निम्नांकित अंश परिजनों की स्मृति जगाने के लिए प्रस्तुत किया जा रहा है।

भगवान् बुद्ध के तीन प्रधान उपदेशों – बुद्धं शरणं गच्छामि, धम्मं शरणं गच्छामि, संघं शरणं गच्छामि, में धर्म और विवेक की शरण में जाने के समान ही संगठित होने की महत्ता का भी प्रतिपादन किया गया है। यह संघ बल ही था, जिसने सारे एशिया में उस साधनहीन युग में भी बौद्ध धर्म का झंडा गाड़ दिया। ईसाइयों के संगठित प्रयत्नों का ही फल है कि दुनिया की आधी से अधिक जनसंख्या को पिछले दो सौ वर्षों में ईसाई बना लिया गया। शास्त्र ने इस युग का सर्वोपरि माध्यम संगठन को ही घोषित करते हुए कहा है – संघे शक्तिः कलौयुगे। राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय, सामाजिक, आर्थिक सभी क्षेत्रों में आज संगठन की तूती बोलती है। जिसकी पीठ पर संघ बल है, उसके पीछे अन्य बल उसी प्रकार फिरते हैं, जैसे सूर्य के आसपास नवग्रह परिक्रमा लगाया करते हैं।

आज समाज में असंगठन, फूट और घृणा का साम्राज्य छाया हुआ है। जातियों और उप–जातियों के जंजाल में फँसकर इस समाज ने अपने आपको हजारों टुकड़ों में बाँट डाला है। एक टुकड़ा दूसरे टुकड़े को छूने तक से घृणा करता है। हम आपस में मिल–जुलकर बैठना सीखें, विचार–विनिमय की आदत डालें, अपने अतीत और भविष्य का चिन्तन करते हुए वर्तमान का आधार नियोग करें। परस्पर प्रेम, एकता और संगठन के महत्व को स्वीकार करें। एक–दूसरे की उन्नति में सहायक बनकर सर्वांगीण उन्नति के पथ पर तेजी से अग्रसर हों। जो अविवेकपूर्ण कारण हमारी एकता में बाधक बने हुए हैं, उन्हें बीन–बीन कर फेंक दें, यही उचित है।

हमारे हर कार्य में सामूहिकता की, समाज हित की दृष्टि प्रधान रहे, अपना स्वार्थ साधें, पर वह कहीं भी समाज हित का विरोधी न हो। अलग डेढ़ चावल की खिचड़ी पकाना, अकेले बैठना, अकेले खाना, अकेले का लाभ सोचना, अनात्मवाद है, असुरता है। वह वृत्ति हम भारतीय तत्वज्ञान के आदर्शों के मानने वालों के लिए सर्वथा अनुपयुक्त एवं अशोभनीय है। मिल–जुलकर रहने, साथ–साथ काम करने, सबके हितों का एक–केन्द्रीकरण करने में ही हमारा कल्याण है। आत्मा लघु है, अणु है। उसे परम आत्मा–परमात्मा विभु बना देने में ही आत्मोन्नति का परम लक्ष्य सन्निहित है। संसार में भौतिक उद्देश्यों को लेकर अनेक संगठन मौजूद हैं, वे अपने–अपने कार्यक्षेत्र में उस संगठन शक्ति के आधार पर सफलता प्राप्त कर रहे हैं। यदि हमें धार्मिकता एवं आध्यात्मिकता को विकसित करना है, तो उसका आधार भी संगठन ही होगा। संगठन पर ही हमारे भविष्य का उत्थान और पतन निर्भर है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

'एकला चलो' का नारा अपने स्थान पर सही है, पर इसे उसी स्थिति में स्वीकारा जा सकता है, जब प्रयास अपने ढंग का सर्वथा अनूठा हो और मिलते–जुलते कार्य अन्यत्र कहीं अस्तित्व में न हो, किन्तु जहाँ ऐसे कार्य हो भी रहे हों और संगठन की बड़ी शक्ति भी हो, वहाँ उसके साथ मिल–जुल कर कार्य करने में ही भलाई है। बहुमूल्य उपलब्धि इसी स्थिति में संभव है। एक रेशे की रस्सी और अकेला सामान दुकान चलाते नहीं देखा गया है। महत्वपूर्ण सुधार–संशोधन और युग समस्याओं का शमन संगठनात्मक पुरुषार्थ द्वारा ही संभव है। प्रत्येक को इसकी शक्ति समझनी चाहिए।

सज्जनों का संगठन आवश्यक

संगठन का मूल्य लोग न समझते हों, ऐसी बात नहीं है। यदि उससे अनजान रहे होते, तो कबीले और गिरोह कैसे बनते? अनेकों जातीय पंचायतें, राजनैतिक पार्टियाँ दिखाई पड़ती हैं, उनका अस्तित्व प्रकाश में कैसे आता? साम्प्रदायिक कर्मकाण्डों के धूम–धड़ाके किस आधार पर विनिर्मित होते? इतना ही नहीं, चिड़ियाँ और वन–पशुओं के झुण्ड जहाँ–तहाँ विचरते क्यों दीख पड़ते?

www.vicharkrantibooks.org

शोचनीय और चिन्ताजनक बात एक ही है कि सज्जनों, सेवाभावियों के सत्साहस से सँजोये हुए परिवार संगठित रूप से काम करते दिखलाई नहीं पड़ते। इस असंगठन का ही परिणाम यह है कि भ्रष्टता और दुष्टता हर क्षेत्र में पनपती और पैर पसारती दृष्टिगोचर होती है। कारण यह नहीं है कि अनाचार में असुरता में अधिक शक्ति होती है। मुख्य कारण यही है कि अनाचारी संगठित होकर कार्य करते हैं और सज्जन बहुधा असंगठित बने रहते हैं।

देवासुर संग्राम में अनेकानेक पौराणिक उपाख्यान पढ़ने–सुनने को मिलते हैं। उन सब का एक ही उपक्रम है – असुरों ने आक्रमण किया, देवता हारे और भागे। इसके उपरानत उन्हें अकल आई, संगठित हुये और संयुक्त शक्ति का विकास किया। भीतर से नया विश्वास और साहस उपजा, सूझ–बूझ ने काम किया और उपयुक्त स्थिति बनी। इतना होते ही दैवी शक्ति का अनुदान भी उन्हें उपलब्ध हुआ। सही समझ आने पर सही मार्ग का अवलम्बन किया, प्रत्याक्रमण संजोया गया। अबकी बार सारी स्थिति बदल गई, असुरों को परास्त होना पड़ा और देवताओं ने अपना खोया वर्चस्व पुनः उपलब्ध किया।

देवासुर संग्राम वाले समस्त कथानक इस प्रकार के ही हैं। सभी एक ही निष्कर्ष निकलता है कि मात्र सज्जन या सौम्य होना ही पर्याप्त नहीं, साथ ही समर्थ और बलिष्ठ भी होना चाहिए। यहाँ एक बात और भी स्मरणीय है कि शरीर बल एवं शस्त्रबल गिने तो बलिष्ठता में ही जाते हैं, किन्तु वास्तविक चिर स्थायी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बल संगठन ही होता है। संयुक्त शक्ति ही वास्तविक शक्ति है। मिल–जुल कर रहने, एक–दूसरे की कठिनाई में सहायता करने, अनीति के विरुद्ध मोर्चा लगाने और अनाचारियों की दाल न गलने देने के लिए एकजुट होकर, तनकर खड़े हो जाने की प्रक्रिया भी ऐसी है, जिससे दुष्टता को एक कदम आगे बढ़ने के लिए सौ बार विचार करना पड़ता है।

संगठन का प्रदर्शन तो एक साथ या इकट्ठे जन समुदाय को देखकर भी हो जाता है, पर वास्तविकता तब बन पड़ती है, जब एक–दूसरे के साथ संयुक्त शक्ति के रूप में उभरें, एक–दूसरे को एक विश्वास दिलायें कि कठिन समय में हम सब विशेष रूप से एक रहेंगे और एक–दूसरे की सहायता करने में पीछे न रहेंगे। इसके लिये बिना उद्देश्य की, मात्र कौतुहलवश एकत्रित हुई भीड़ जन समुदाय भर ही कहीं जा सकती है। उसके पीछे कोई शक्ति न होने से अभीष्ट प्रयोजन की सिद्धि नहीं हो पाती। संगठन की शर्त है – एक विचारधारा और लक्ष्य निर्धारण की स्थिति होना। इस प्रकार का एकत्रीकरण भी सशक्त समारोह का स्वरूप प्रदर्शित करता है। जुलूस, समारोह, रैली, आयोजन, प्रदर्शन, हड़ताल आदि के पीछे यही भावना प्रदर्शित होती है कि एक विचारणा के आधार पर एक उद्देश्य के लिए कितने लोग एक साथ हैं और वे कुछ करने के लिये अपना निश्चय कितने साहस के साथ प्रदर्शित करते हैं। जब सामान्य प्रदर्शन हवा को इधर से उधर मोड़ने में बड़ी भूमिका निभा सकते हैं, जो जहाँ वस्तुतः किसी बड़े उद्देश्य के लिये ठोस संगठन और सुनिश्चित कार्यक्रम हो, तो जनता का रुख बनाने–बदलने में उसका अच्छा–खास महत्व हो सकता है।

साधना आधारित संगठन

युग निर्माण परिवार अथवा गायत्री परिवार नामक संगठन की अपनी कुछ विशेषताएँ हैं। जैसे – इस परिवार से जुड़ा हर व्यक्ति मानता है कि यह नवयुग सृजन का महत्वपूर्ण समय है। मनुष्य ने पिछले दिनों ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में भारी प्रगति की है, लेकिन इस प्रगति क्रम में कुछ ऐसी भूलें कर बैठा, जिसके कारण मनुष्य और मनुष्यता के अस्तित्व पर ही संकट के बादल छाने लगते हैं। विसंगतियों से, संकटों से बचकर मनुष्य मात्र को अज्ज्वल भविष्य की ओर ले जाने के लए एक अभियान चल पड़ा है। जो तीन समर्थ शक्ति धाराओं के त्रिवेणी संगम के रूप में क्रियाशील है। समर्थ धाराएँ हैं – 1. योजना एवं शक्ति परमात्म सत्ता की। 2. मार्गदर्शन एवं संरक्षण ऋषि सत्ता का। 3. पुरुषार्थ एवं सहकार नैष्ठिक युग साधकों का।

हर मनुष्य में दिव्य क्षमताएँ हैं उन्हें उपयुक्त जीवन साधना द्वारा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विकसित–परिष्कृत करना संभव हैं आत्म कल्याण एवं लोकमंगल के श्रेष्ठ कार्यों में वही व्यक्ति सफल हो सकते हैं, जो अपने चिंतन, चरित्र एवं व्यापार को श्रेष्ठतर बनाने की जीवन साधना में निष्ठापूर्वक लेते रहते हैं। जीवन साधना के अनिवार्य सूत्र हैं, साधना (परमात्मा की उपासना) स्वाध्याय, संयम, सेवा।

उपासना – मनुष्य महान् है और उससे भी महान् हैं, उसका सृजेता–परमात्मा। जल, वायु, जैसे प्रकृति घटक जब तक अपने मूल प्रवाह के साथ जुड़े रहते हैं तब तक वे स्वच्छ, श्रेष्ठ बने रहते हैं। मूल प्रवाह से अलग होते ही उनमें विकार पनपने लगते हैं। इसीलिए आत्म चेतना को अपने मूल प्रवाह परमात्म चेतना के साथ जोड़कर रखना चाहिए। यह लाभ भाव भरी उपासना के माध्यम से भली प्रकार पाया जा सकता है।

दुर्गति का कारण दुर्बुद्धि होती है तथा सद्‌गति सद्‌बुद्धि के सहारे ही प्राप्त होती है। इसलिए उपासनाकाल में परमात्मा से अपने और सबके लिए सद्‌बुद्धि अवश्य माँगनी चाहिए। सर्वव्यापी परमात्मा की कल्याणकारी दिव्य धाराओं को अपने अन्तःकरण में धारण करने, व्यक्तित्व में शामिल करने के सनातन प्रभावी सूत्र गायत्री साधना में है। इसलिए हर सदस्य प्रतिदिन कम से कम 10 मिनट का समय गायत्री महामंत्र के जप के साथ परमात्म चेतना के साथ ईंधन एवं आग की तरह एकरूप होने का ध्यान करता है। जप के समय भावना की जाती है कि हमारा शरीर, मन, अन्तःकरण दैवी संचार को स्वीकार करके उज्ज्वल भविष्य के अनुरूप बन रहा है।

गायत्री मंत्र में ईश्वर के किसी नाम का रूप का उल्लेख नहीं है। इसलिए किसी भी मत या सम्प्रदाय के साधक इसे बिना झिझक के जप सकते हैं। फिर भी किन्हीं को संकोच हो, तो वे अपनी श्रद्धा के अनुरूप इष्ट मंत्र या नाम का जप उक्त भावना के साथ कर सकते हैं।

स्वाध्याय – मनुष्य–जीवन विचारों से संचालित होता है। यदि प्रकाश की व्यवस्था न हो, तो अंधकार घेरने लगता है। इसी प्रकार यदि श्रेष्ठ विचारों से सम्पर्क न रहे, तो अज्ञान का अँधेरा सताने घिरने लगता है। हीन विचार सताने लगते हैं। इसलिए मनुष्य को श्रेष्ठ विचारों का स्वाध्याय (अध्ययन, मनन, चिन्तन) नियमित रूप से करते रहना चाहिए।

युगऋषि ने वर्तमान समय में व्यक्तिगत एवं पारिवारिक जीवन को अनगढ़ता से बचाकर सुगढ़, सुसंस्कृत बनाने के लिए व्यावहारिक विवेक सम्मत सूत्र लिख, छापकर सबके लिए सुलभ बना दिए हैं। मिशन द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओं अथवा पुस्तिकाओं के माध्यम से उनका एक अंश पढ़ या सुनकर उसे जीवन में धारण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करने का नियमित प्रयास किया जाय।

संयम – मनुष्य को परमात्मा ने बहुमूल्य शक्तियाँ–प्रवृत्तियाँ प्रदान की हैं। उन्हें जाग्रत करने, गलत दिशा में न बहने देने तथा श्रेष्ठ प्रयोजनों में लगाने के लिए संकल्पपूर्वक अभ्यास करना जरूरी है। इन्द्रिय संयम, अर्थसंयम, समय संयम तथा विचार संयम की दिशा में हर व्यक्ति एक–एक करके दोषों को घटाने, गुणों को जाग्रत् करने का क्रम बनाए।

सेवा – उपासना, स्वाध्याय एवं संयम साधना के प्रभाव से मनुष्य में दिव्य क्षमताएँ जाग्रत होती हैं। अपना एवं अपने परिवार का निर्वाह उसके सीमित अंश से पूरा होने लगता है। इसलिए उसके समय, प्रभाव, ज्ञान, पुरुषार्थ एवं धन साधनों का एक अंश लोकमंगल के लिए लगाने का क्रम बनाना चाहिए।

समयदान अंशदान – उपरोक्त चारों साधनाओं को निभाते–बढ़ाते रहने के लिए मनुष्य को नियमित रूप में कम से कम एक घंटा समय तथा साधनों का एक अंश निकालते–लगाते रहना चाहिए। अंशदान, मुट्ठीफंड के बारे में युगऋषि की अपील इस प्रकार के हर व्यक्ति प्रारंभ में एक/आधी रोटी के बराबर अन्न या उसका मूल्य, अथवा एक/अथवा आधा कम चाय का मूल्य नित्त निकालें। उसे स्वयं या संगठन के माध्यम से उक्त प्रयोजनों की पूर्ति में लगाएँ। बाद में वह अंश माह में एक दिन की आय अथवा अपने सुनिश्चित प्रतिशत के रूप में निकालना एवं नियोजित करना संभव होता है।

प्रज्ञा परिजन – जो व्यक्ति उपरोक्त नियम अनुशासनों को स्वीकार करके अपनी श्रद्धा एवं सामर्थ्य के अनुसार जीवन साधना में प्रवृत्त होते हैं, वे सभी इस देव परिवार के सदस्य, साधक, सहयोगी, सभ्य, प्रज्ञा परिजन आदि कहलाते हैं। व्यक्तिगत स्तर पर कोई भी (किसी भी मत, पंथ या जाति से सम्बद्ध) नर–नारी इस परिवार के सदस्य के रूप में स्वयं को विकसित कर सकता है।

प्रज्ञापुत्र – जो परिजन मिलजुलकर समयदान एवं अंशदान का सुनियोजन करने के लिए संकल्पित होकर कार्य करते हैं, वे समयदानी, प्रज्ञापुत्र, सृजन सैनिक आदि कहे जाते हैं। संगठन बनाने, बढ़ाने, पुष्ट करने की जिम्मेदारी इन्हीं की होती है। पत्रिकाओं के सदस्यों, साधकों आदि प्रज्ञा परिजनों से पारिवारिक ढंग का सम्पर्क बनाए रखकर उन्हें क्रमशः विकसित करते रहने का दायित्व भी इन्हीं को पूरा करना होता है। विकसित होने वाले परिजनों को किसी संगठित इकाई के साथ जोड़ने, नई इकाइयाँ संगठित करने का कार्य भी वही करते हैं। जीवन साधना के स्तर, समयदान की क्षमता, जिम्मेदारी उठाने की सामर्थ्य के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आधार पर उन्हीं में से परिव्राजक (कनिष्ठ, वरिष्ठ) वानप्रस्थ, पुरोहित, प्रशिक्षक, नियोजक, समन्वयक स्तर के समर्थ समयदानी उभर कर आते हैं।

सहयोगी सम्य – जो परिजन साधना–स्वाध्याय की न्यूनतम साधना श्रद्धापूर्वक करते रहते हैं, सेवा साधना का नियमित क्रम तो नहीं चला पाते, संगठनात्मक प्रवृत्तियों में सीधी भागीदारी तो नहीं कर पाते, लेकिन इस अभियान के साथ हार्दिक लगाव रखते हैं। समय–समय पर अपने समय, प्रभाव, अनुभव, पुरुषार्थ एवं धन के माध्यम से अभियान को विकसित एवं पुष्ट करते रहने का प्रयास करते रहते हैं। इतन तीनों तरह के परिजनों की संख्या बढ़ती रहे तथा क्षेत्र में देवसंस्कृति की व्यूह रचना पुष्ट होती रहे, यह अभीष्ट है। इसके लिए समयदानियों प्रज्ञापुत्रों को संगठित होकर कार्य करना जरूरी है।

संगठित इकाइयाँ – जो साधक–परिजन प्रज्ञापुत्र आदि व्यक्तिगत स्तर से आगे बढ़कर सुसंगठित होकर अधिक प्रभावशाली ढंग से कार्य करना चाहते हैं, वे स्वयं को किसी संगठित इकाई के साथ जोड़कर प्रामाणिकता के अनुशासित अंग बन सकते हैं। यह संगठन ऋषि परम्परा के अनुयप ही विकसित हो रहा है। इसका ढाँचा परिवारगत है, संस्थागत नहीं। सरकारी नियमों के अनुपालन की दृष्टि से जो संस्थागत ढाँचे (ट्रस्ट आदि) बनाने भी पड़ते हैं, वे भी पारिवारिक संगठित तंत्र के एक अंग के रूप में ही कार्य करते हैं।

प्रज्ञापरिजन, साधक आदि मिलकर जो संगठन बनाते हैं, उसकी आधार भूत इकाई को प्रज्ञामण्डल, महिला मण्डल, युवा मंडल, संस्कृति मंडल आदि कहा जाता है। किसी नगरीय या ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत विभिन्न मंडल मिलकर संगठन की कुछ बड़ी इकाई सक्रिय संगठित समूह (स–3) गठित कर लेते हैं। सक्रिय संगठित समूह के समर्थ समयदानियों में से स–3 की समन्वय समिति चयनित कर ली जाती है। समन्वय समिति में शामिल मण्डलों को संख्या के अनुसार 10 से लेकर 30 तक सदस्य हो सकते हैं। समन्वय समिति के सदस्यों में 5 बहन–भाइयों को सम्पर्क सूत्र के रूप में चिन्हित कर लिया जाता है। सम्पर्क सूत्र के लिए नामित व्यक्ति स–3 तथा केन्द्र के बीच प्रगति, सूचना एवं निर्देशों के आदान–प्रदान की जिम्मेदारी निभाते हैं। स–3 की समन्वय समिति केन्द्र एवं क्षेत्र के बीच सम्पर्क की मान्य इकाई है। संगठन की बड़ी (पीठ, प्रखंड–ब्लाक, तहसील, या जिला स्तर की) संगठित इकाइयाँ इन्हीं के समन्वय से बनती है। आगे उनका स्वरूप स्पष्ट किया जा रहा है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मण्डल का गठन और रीति–नीति

युग संधि काल में, दैवी प्रयोजन के लिए ईश्वर की साझेदारी के यह सूत्र जिन्हें रुचें और जो संगठित होकर आगे बढ़ना चाहें, ऐसे कोई भी प्राणवान् व्यक्ति अकेले ही मण्डल के गठन की शुरुआत कर सकते हैं। इसका सूत्र है एक से पाँच से पच्चीस।

इच्छुक नर/नारी अपने चार साथियों सहयोगियों को इस प्रक्रिया के लिए सहमत करें। जब उनका व्यक्तिगत क्रम चल पड़े, तो अपने सम्पर्क के चार–चार व्यक्तियों को भी इस प्रक्रिया से जोड़ें। उपासना, स्वाध्याय, संयम, सेवा आदि का व्यक्तिगत क्रम चलाने के साथ में सप्ताह में एक बार सामूहिक उपासना, सामूहिक स्वाध्याय–सत्संग की व्यवस्था बनाएँ। इसे साप्ताहिक साधना संगोष्ठी कहते हैं। इसे किसी परिजन के घर पर या किसी सार्वजनिक पवित्र शांत स्थान पर सम्पन्न किया जा सकता है। इसके लिए साप्ताहिक अवकाश का दिन उपयुक्त रहता है।

साप्ताहिक गोष्ठी के लिए कोई सुविधाजनक सार्वजनिक स्थल अथवा किसी परिजन के आवास को चुना जा सकता है। विभिन्न सदस्यों के यहाँ क्रमशः साप्ताहिक गोष्ठी करने का क्रम भी अपनाया जा सकता है। यदि गोष्ठी का स्थान बदलना हो, तो एक गोष्ठी समाप्त होते ही अगले सप्ताह की गोष्ठी का स्थान घोषित कर देना चाहिए। जहाँ गोष्ठी होनी है, उसके निकटवर्ती क्षेत्र के परिचितों–श्रद्धालुओं को भी गोष्ठी में शामिल होने के लिए सादर आमंत्रित किया जाना चाहिए।

प्रयास किया जाना चाहिए कि नगर/गाँव के हर मोहल्ले में प्रज्ञा/महिला मण्डल गठित और सक्रिय हो जाएँ, ताकि उनके माध्यम से घर–घर में देव संस्कृति के सूत्रों को स्थापित और विकसित करने का क्रम सुचारू रूप से चलाया जा सके। क्षेत्र की आवश्यकता के अनुसार समर्थ मण्डल अपने सक्षम सदस्यों के माध्यम से अनेक मण्डल विकसित करने का क्रम बनाते रह सकते हैं।

कोई नवगठित मण्डल जब कम से कम 6 माह नियमित रूप से सक्रिय रहे और अपनी कार्य योजना के अनुसार अपने निर्धारित क्षेत्र की जिम्मेदारियाँ संभाल लें, तब उसका पंजीयन शांतिकुंज से करा लेना चाहिए।

घर–घर आस्तिकता का वातावरण बनाना चाहिए, संस्कार परम्परा की स्थापना करके परिवारों को पुनः नर रत्नों की खदान बनाने का प्रयास करना, इसके लिए पर्याप्त संख्या में समयदानी–कर्मठ कार्यकर्त्ताओं को खोज निकालना तथा प्रशिक्षित करना।

इतना क्रम चल पड़े, तो फिर विविध रचनात्मक–सुधारात्मक (अशिक्षा, निवारण, विद्याविस्तार, नशा निवारण, स्वाध्याय संवर्धन, स्वच्छता संवर्द्धन, अंधविश्वास,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कुरीतियों का निवारण, पर्यावरण–वृक्षारोपण, स्वावलम्बन, कुटीर–उद्योग का विकास) आदि कार्यों को हाथ में लिया जा सकता है।

मंडल के सदस्य अपने मंडलों की गतिविधियाँ चलाते हुए उसे विकसित और पुष्ट बनाने का प्रयास करें। निकटवर्ती क्षेत्रों में चलने वाले कई मण्डल मिलकर एक सक्रिय संगठित समूह (स–3) बनाने का प्रयास करें। यदि पहले से ही कोई स–3 सक्रिय है, तो अपने मण्डल को उसके साथ जोड़ लें।

मण्डल अपने संगठन की आधारभूत इकाई है। कई मण्डल मिलकर ही बड़ी संगठित इकाइयाँ बनाएँगे। क्षेत्र में संगठन की स्थिति एवं शक्ति का आकलन मण्डलों के द्वारा उपलब्ध जानकारियों, आँकड़ों के आधार पर ही होगा। अस्तु, हर मण्डल के पास अपने मण्डल से सम्बद्ध प्रामाणिक एवं नवीनतम जानकारियों का लेखा–जोखा (रिकार्ड) होना चाहिए। हर मण्डल अपने पास एक रजिस्टर एवं फाईल रखे, जिसमें अपने मण्डल सम्बंधी प्रामाणिक जानकारियाँ निम्नानुसार अंकित हों – 1. मण्डल के कार्य क्षेत्र की कुल आबादी। 2. मण्डल के कर्मठ सदस्यों की संख्या एवं सूची। 3. नियमित उपासक–वरणी/भागीदारों की संख्या एवं सूची। 4. विभिन्न पत्रिकाओं के ग्राहकों की संख्या एवं सूची। 5. दीक्षित व्यक्तियों एवं देवस्थापना करा चुके परिवारों की संख्या एवं सूची। 6. जिन घरों में संस्कार, जन्मदिन आदि मनाये जा चुके हैं या नियमित मनाये जाते हैं, उनकी संख्या एवं सूची। 7. ऐसे प्रभावशाली व्यक्तियों की सूची, जो समयदानियों, सदस्यों की नियमित सूची में भले न आते हों, किन्तु मिशन से प्रभावित हैं तथा उनके प्रभाव एवं संसाधनों का लाभ समय–समय पर मिशन को मिलता रहता है।

कर्मठ सदस्यों का कर्तव्य है कि वे उक्त सभी प्रकार के व्यक्तियों से नियमित सम्पर्क रखें। उन्हें अपने देव परिवार का सदस्य मानते हुए उनसे आत्मीयता एवं सहयोग के भाव विकसित करें। उनके विकास और प्रगति के लिए सचेष्ट रहें। उन्हें समर्थक, साधक, सहयोगी स्तर से क्रमशः विकसित करते हुए समयदानी एवं कर्मठ कार्यकर्ता स्तर तक ले जाने का प्रयास करें। इसके लिए सम्पर्क की जिम्मेदारी परस्पर बाँट लें। हर साप्ताहिक सत्संग के बाद अपने सम्पर्क अध्ययन के आधार पर अपने परिवार की समीक्षा करें। हर माह अपनी सूचियों में आवश्यक संशोधन कर लिया करें। केन्द्र या सम्बद्ध स–3 को भेजी जाने वाली जानारियां इन्हीं सूचियों के आधार पर भेजी जाएँ।

सक्रिय संगठित समूह (स–3)

जैसा कि नाम से स्पष्ट होता है, इस इकाई में कई सक्रिय मण्डल होंगे। वे नियमित साधना, सत्संग की गतिविधियाँ स्वतंत्र रूप से चलाएँगे, लेकिन क्षेत्रीय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

व्यूह रचना के लिए संगठित इकाई के रूप में विकसित प्रतिष्ठित होंगे। बड़े नगरों में ऐसे कई सक्रिय संगठित समूह कार्य करेंगे। कस्बों में एक या दो समूह भी पर्याप्त हो सकते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों के लिए कम से कम 10–12 गाँवों को अपनी पहुंच में लेने की क्षमता ऐसे समूह में होनी चाहिए। एक समूह में 5–10 से लेकर 30–40 मण्डल तग संगठित हो सकते हैं। यह संगठित समूह अपनी सदस्य संख्या के आधार पर छोटे–छोटे क्षेत्रों की जिम्मेदारी सँभालें। उन जिम्मेदारियों को सँभालने के लिए उन सबके पास अपने–अपने समयदानियों और अंशदानियों की व्यवस्थित सूची होनी चाहिए।

हर प्रज्ञा/महिला मण्डल अपने समयदानियों के माध्यम से लगभग 2000 से 5000 तक की आबादी वाले क्षेत्र की जिम्मेदारी सँभालें। मण्डलों का समूह (स–3) मिलकर एक बड़े क्षेत्र, नगर के कुछ मोहल्ले, ग्राम समूहों, विकास खण्ड आदि को देव संस्कृति से अनुप्राणित करने की जिम्मेदारी उठाएँ तथा उसके अनुरूप अपनी क्षमता विकसित करें। हर सक्रिय संगठित समूह (स–3) को 20–30 हजार से लेकर एक–दो लाख तक जनसंख्या वाले क्षेत्र की जिम्मेदारी सँभालनी चाहिए। ग्रामीण क्षेत्रों में बड़े घेरे में भी कम आबादी आती है, जबकि नगरों में अपेक्षाकृत बहुत छोटे घेरे में भी काफी आबादी आ जाती है। इसलिए परिस्थितियों के अनुसार जिम्मेदारियाँ सँभाली जानी चाहिए।

स–3 (सक्रिय संगठित समूह) में भौगोलिक दृष्टि से उन क्षेत्रों के मण्डलों को शामिल किया जाना चाहिए, जहाँ के परिजन आसानी से परस्पर सम्पर्क करते रह सकते हैं। सभी मण्डल अपने–अपने लिए निर्धारित लक्ष्य प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहेगे। वे अपने साप्ताहिक सत्संगों में अपने कार्यों की प्रगति की समीक्षा भी करते रहेंगे।

समन्वय समिति माह में औसतन एक बार सभी मण्डलों के सुयोग्य प्रतिनिधि मिलकर विचारों का आदान–प्रदान करेंगे। इन प्रतिनिधियों की मण्डली को समन्वय समिति कहेंगे। यह समन्वय समिति हर वर्ष केन्द्रीय सम्पर्क सूत्र के रूप में कार्य करने के लिए लगभग 5 जिम्मेदार परिजनों के नाम आम सहमति से निर्धारित कर लेगी। केन्द्र में इनके पूरे नाम–पते (फोन नम्बर, यदि हो तो) भेज दिये जायेंगे। संगठन कार्यालय हर सूचना पत्रक (सर्कुलर) इन सभी के पते से भेजेगा। इससे किसी एकाध व्यक्ति के निष्क्रिय हो जाने या एकाध पत्र गुम हो जाने से सम्पर्क तंत्र लडखड़ायेगा नहीं।

समन्वय समिति की बैठकों में प्रज्ञा/महिला मण्डलों के ऐसे प्रतिनिधि भेजे जाने चाहिए, जो अपने मण्डल की प्रगति–विशेषताओं और आवश्यकताओं को सबके सामने ठीक से रख सके। वहाँ चर्चा–परामर्श में हुए निर्धारणों को अपने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मण्डलों में ठीक से प्रस्तुत कर सकें। इसके लिए 3–4 व्यक्तियों को तैयार रखना चाहिए, ताकि एकाकी लाचारी की स्थिति में अन्य कोई प्रतिनिधित्व कर सके।

इसी प्रकार स–3 की समन्वय समिति में केन्द्रीय सम्पर्क सूत्र के रूप में ऐसे व्यक्तियों को रखना चाहिए, जिनके पास सौंपे गये दायित्वों का भार उठाने के लिए पर्याप्त समय और क्षमता हो। यदि केन्द्र से कोई सूचना प्राप्त हो, तो तत्काल आपस में सम्पर्क करें और हर मण्डल तक समय रहते सूचना पहुँचाने की व्यवस्था बनाएँ। इसी प्रकार केन्द्र यदि स–3 से सम्बद्ध मण्डलों के बारे में कोई सूचना चाहे, तो प्रामाणिक स्तर पर इकट्ठा करके केन्द्र तक पहुँचाया जा सके।

व्यवस्था क्रम – हर सक्रिय संगठित समूह की समन्वय समिति का एक छोटा सा कार्यालय होना चाहिए। सम्पर्क सूत्र वाले परिजन स्वयं अथवा किसी कर्मठ समयदानी के सहयोग से निम्नानुसार आँकड़े रखें।

- अपने स–3 में कुल कितने सक्रिय प्रज्ञा/महिला/युवा मण्डल हैं?
- उनकी जिम्मेदारी का क्षेत्र कितना है तथा उसमें किनती जनसंख्या है?
- मण्डल में कितने साधक–वरणी/भागीदार/सहयोगी सदस्य हैं?
- हर क्षेत्र में अखण्ड ज्योति/युग निर्माण योजना/अन्य भाषाई पत्रिकाओं एवं पाक्षिक पत्र के ग्राहकों की कितनी–कितनी संख्या है?
- कितने लोग दीक्षित हैं, कितने घरों में देवस्थापनाएँ हैं? झोला पुस्ताकालय या ज्ञानरथ चलाने वाले कौन हैं?
- उनसे नियमित सम्पर्क बनाये रखने के लिए कितने समयदानी हैं? समयदानियों के नामों की सूची में उनके समयदान की अवधि तथा योग्यता नोट होनी चाहिए।
- स–3 की समन्वय समिति के सदस्यों की सूची। इस सूची में सम्बद्ध मण्डलों में से किन–किन मण्डलों के किन–किन व्यक्तियों की प्रतिनिधित्व के लिए चुना गया है और उनकी अनुपस्थिति में पूरक के रूप में किन्हें पहुँचना चाहिए? यह स्पष्ट अंकित रहे। यह ध्यान रहे कि नाम खानापूर्ति के लिए नहीं, अपितु ऐसे सक्षम प्रतिनिधियों के ही हों, जो अपने मण्डल की प्रगति सूचना तथा आवश्यकताएँ सबके सामने रख सकें तथा किये गये निर्धारणों को मण्डलों तक पहुँचाने और लागू करने में जिम्मेदार सिद्ध हो सकें।
- हर माह समन्वय समिति की बैठक हो, जिसमें हर मण्डल के प्रतिनिधि अपने यहाँ के प्राथमिक आँकड़े लेकर पहुँचें। उनके आधार पर एक संयुक्त रिपोर्ट हर माह नए आँकड़ों के आधार पर तैयार करायी जाये।

  कार्यालय के रखरखाव की जिम्मेदारी आपसी सहमति से किसी सक्षम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मण्डल या पीठ की समन्वय समिति को सौंपी जा सकती है। रिकार्ड रखने में कुशल किन्हीं परिजनों के समयदान का उपयोग इस हेतु आसानी से किया जा सकता है।

समन्वय समिति की बैठकें कार्यालय या किसी अन्य उपयुक्त स्थान पर की जा सकती है। बैठक के समय प्राप्त सूचनाओं के आधार पर ही क्षेत्रीय आवश्यकताओं की पूर्ति एवं विस्तार की कार्य योजनाएँ बनाई जा सकेंगी। हर स–3 की समन्वय समिति अपने क्षेत्र में कोई रचनात्मक एवं सुधारात्मक अभियान भी चलाये। अपने समयदानियों और समर्थ सहयोगियों में जिस रुचि और क्षमता वाले व्यक्ति पर्याप्त मात्रा में हों, उन्हीं के अनुरूप कार्यक्रम हाथ में लिये जा सकते हैं। इन आन्दोलनों की प्रगति सूची अलग से तैयार की जानी चाहिए।

कर्मठ सदस्यों की संख्या के अनुसार उनकी सूची समन्वय समिति कार्यालय में रहनी चाहिए। इसी के साथ समयदानियों में ऐसे परिजनों की सूची भी होनी चाहिए, जो समय भले ही कम दे पाते हों, लेकिन विशेष गोष्ठियों अथवा किन्हीं रचनात्मक व सुधारात्मक कार्यक्रमों के संचालन में कुशल हों।

स–3 के जिम्मे जो क्षेत्र हैं, उसमें कहाँ–कैसे विस्तार–विकास आदि किया जा सकता है? हर मण्डल को कैसे पुष्ट एवं प्रभावी बनाया जा सकता है? जिन क्षेत्रों में व्यूह रचना की दृष्टि से नए मण्डल बनाये जाने आवश्यक हैं, उसके लिए क्या कार्य योजना हो? क्षेत्र के लिए निर्धारित रचनात्मक–सुधारात्मक आन्दोलनों को कैसे अधिक प्रभावशाली बनाया जाये? ऐसे और किसी प्रकार के बिन्दुओं पर समन्वय समिति में विचार विमर्श किये जाने चाहिए।

जो निर्धारण हो, उन्हें हर क्षेत्र में लागू करने के लिए जिम्मेदारियाँ बाँट ली जायें। कुछ परिजनों को सहयोगी समीक्षकों का भी कार्य सौंपना चाहिए। घूम–घूम कर देखें कि कहाँ क्या हो पा रहा है। उनके पास इसके लिए पर्याप्त समय भी होना चाहिए तथा आवश्यकतानुसार प्रोत्साहन, प्रेरणा एवं सहयोग देने का कौशल भी होना चाहिए।

संयुक्त समन्वय समितियाँ (संसय)

जहाँ परिजनों, प्रज्ञापुत्रों द्वारा मंडल बन जाएँगे, मण्डलों को मिलाकर सक्रिय संगठित समूह बन जाएँगे और वे अपनी–अपनी निर्धारित जिम्मेदारियाँ प्रमाणिक ढंग से सँभालने लगेंगे, उन्हें केन्द्रीय संगठन तंत्र की सुदृढ़ इकाई मान लिया जाएगा। ऐसे स–3 की समन्वय समिति के कार्यालय को प्रज्ञापीठ जैसी मान्यता दी जायगी, भले ही उनके पास पीठ जैसा कोई अपना भवन न हो। उन्हें क्षेत्र के परिजनों, मण्डलों के माध्यम से अभियान को नई गति देते रहने की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जिम्मेदारियाँ सौंपी जाती रहेंगी और उसके लिए उन्हें प्रशिक्षण एवं सहयोग देने की व्यवस्था बनाई जाती रहेगी।

पू. गुरुदेव की सूक्ष्मीकरण साधना के बाद उनका हीरक जयंती वर्ष मनाया गया था। उसी दौरान उन्होंने कहा था कि मेरा मन 10 हजार हीरों का हार पहनने का हो रहा है। उनका अभिप्राय था देश में अपने संगठन की ऐसी 10 हजार प्रामाणिक इकाइयों का तंत्र स्थापित करना, जो देश की पूरी आबादी तक उनके अभियान का प्रकाश पहुँचाती रहें। हीरों की तरह उनकी चमक (प्रामाणिकता, प्रभावशीलता) कम न हो। अपने क्षेत्र की औसतन 1 लाख आबादी तक मिशन का आलोक पहुँचाते रहने में समर्थ 10 लाख सक्रिय संगठित सकूह मिलकर देश की 100 करोड़ आबादी को दिशा, प्रेरणा, प्रगति देते रह सकते हैं। ऐसी स्थाई चमक वाली इकाइयों (स–3) को हीरक मानकर हम सब परिजन पू. गुरुदेव को उनकी इच्छा के अनुरूप 10 हजार हीरों का हार जितनी जल्दी भेंट कर सकें, उतना ही अच्छा है।

इन इकाइयों (स–3) का सीधा सम्बन्ध केन्द्र से रहेगा; लेकिन क्षेत्र में बड़ी जिम्मेदारियाँ सँभालने के लिए इन्हें और भी बड़ी इकाइयों में बाँधकर सृजन सैनिकों की सुदृढ़ सैन्य रचना बनाई जाएगी।

www.vicharkrantibooks.org

बृहत्तर इकाइयाँ – पहले स्पष्ट किया जा चुका है कि मंडलों के सुयोग्य प्रतिनिधियों को मिलाकर बनाई गई समितियाँ, समन्वय समितियाँ कहलाएँगी। इनके पास अपने 50 हजार से लेकर दो–तीन लाख आबादी वाले क्षेत्र में अपने परिजनों, सैनिकों की स्थिति एवं शक्ति के आँकड़े और उनकी कार्य योजनाओं की जानकारी रहेगी। समन्वय समिति के सदस्य तद्नुसार क्रमशः कार्य विस्तार एवं सैनिकों के प्रशिक्षण नियोजन की व्यवस्था बनाते रहेंगे।

इन्हें मिलाकर क्रमशः वृहत्तर इकाइयाँ गठित की जाती हैं। इन्हें किसी प्रखण्ड (ब्लाक), तहसील (सब डिवीजन) और जिला स्तरीय संयुक्त समन्वय समियितों के साथ सम्बद्ध किया जाता है। ये संयुक्त समन्वय समितियां अपनी सम्बद्धता के अनुसार प्रखण्ड, तहसील या जिला स्तरीय कहलाएँगी। उस क्षेत्र में यदि कोई प्रज्ञापीठ, शक्तिपीठ या रचनात्मक ट्रस्ट है, तो 'सं.स.स.' के कार्यालय उन्हीं भवनों में होना श्रेयस्कर है। जहाँ ऐसा होगा, वहाँ उस ट्रस्ट के ट्रस्टियों में से दो प्रतिनिधि भी 'सं.स.स.' के सदस्य रहेंगे। इन संगठित इकाइयों में ट्रस्टों की सहभागिता होने से क्षेत्र को बल मिलेगा। पीठों की प्रतिष्ठा बढ़ेगी और संगठन को कानूनी रजिस्टर्ड ट्रस्टों के माध्यम से अपने आय–व्यय का अधिक प्रामाणिक लेखा–जोखा रखने का लाभ मिलेगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जिस क्षेत्र में निर्धारित कार्ययोजना के अनुसार स–3 सक्रिय हो जाएँ वहाँ उनके संयोग से अपेक्षाकृत बड़ी संगठित इकाइयाँ बना लेनी चाहिए। हर स–3 को किसी पीठ, ब्लाक, तहसील या जिले स्तर की संयुक्त समन्वय समिति से जुड़ जाना चाहिए। किसी भी प्रज्ञापीठ या शक्तिपीठ के स्तर का मूल्यांकन इस आध ाार पर किया जायेगा कि उनके साथ स्वाभाविक रूप से कितने क्षेत्र के परिजन जुड़े हैं अथवा उन्होंने कितने क्षेत्रों के कर्मठ परिजनों का विश्वास जीतने और उन्हें सहयोग उपलब्ध कराने में सफलता पायी। जिस जिले में एक से अधिक पीठें सक्रिय हों, वहाँ आम सहमति से यह तय कर लेना चाहिए कि पूरे जिले की व्यूह रचना के लिए कहाँ कार्यालय बनाना उचित होगा? यदि किसी जिले में एक भी पीठ नहीं है या अपेक्षाकृत दूर है तो क्षेत्र के सक्रिय समूह निकटवर्ती किसी भी जिले की पीठ से जुड़ सकते हैं। पीठ न होने अथवा वहाँ की व्यवस्था सटीक न होने पर स–3 समूह आम सहमति से जिला मुख्यालय अथवा जिले की किसी भी सक्षम इकाई में अपना जिला स्तरीय कार्यालय बना सकते हैं।

पीठ या तहसील स्तरीय कार्यालय में उससे सम्बद्ध प्रत्येक सक्रिय संगठित समूह के आंकड़े के आधार पर यह तय किया जा सकेगा कि कौन–कौन सी इकाइयाँ अपने क्षेत्र की जिम्मेदारी सँभालने में सक्षम–स्वावलम्बी हैं। जिनमें शक्ति कम है, उन्हें कैसे विकसित किया जाये? जिले या क्षेत्र के जिन इलाकों में अभी संगठन की पहुँच नहीं है, वहाँ प्रचार एवं संगठन के लिए क्या कार्य योजना बनायी जाये? जागृत् क्षेत्रों के थोड़े–थोड़े समयदानियों को एकत्रित करके कैसे नये क्षेत्रों को प्रभाव में लिया जाये? इन सब बिन्दुओं को लक्ष्य करके योजना बनाने और उन्हें लागू करने की जिम्मेदारी इन केन्द्रों को उठानी होगी। विभिन्न तरह के प्रशिक्षण अपने क्षेत्रीय या केन्द्रीय प्रशिक्षकों के माध्यम से आयोजित करने की जिम्मेदारी भी पीठों या ऐसे केन्द्रों की ही होगी।

केन्द्रीय टोलियों को इसके लिए भली प्रकार प्रशिक्षित करके भेजा जा रहा है कि वे हर क्षेत्र को संगठन एवं सृजन की दृष्टि से सक्षम कैसे बनाएं? जहाँ परिजन अपनी ओर से उत्साह दिखाते हैं, सक्रियता बरतते हैं, वहाँ केन्द्रीय सहयोग और ऋषि सत्ता का अनुग्रह सहज ही जुड़ जाएगा।

समर्थ समयदानियों का प्रामाणिक तंत्र

युग निर्माण अभियान के अन्तर्गत क्षेत्रीय संगठित इकाइयों को अगले चरण की जो जिम्मेदारियाँ सौंपी जा रही हैं, उनके कुशल निर्वाह के लिए सुयोग्य समयदानियों का समर्थ और प्रामाणिक तंत्र विकसित करना जरूरी है। युग

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निर्माण जैसे महान् अभियान के अन्तर्गत सृजन सैनिकों के क्षेत्रीय संगठनों की जिम्मेदारियाँ भी काफी बड़ी और व्यापक हैं। जैसे – निर्धारित क्षेत्र के 100 प्रतिशत लोगों तक मनुष्य मात्र को उज्ज्वल भविष्य की ओर ले जाने वाली इस दैवी योजना की जानकारी प्रभावशाली ढंग से पहुँचाई जाती रहे। उन्हें इससे सहमत करने के प्रयास चालू रहें।

जो लोग जितने अंशों में सहमत होते चलें, उन्हें व्यक्ति, परिवार एवं समाज निर्माण के जीवन सूत्रों को थोड़ा बहुत अपनाने के लिए प्रेरित किया जाये। उन्हें प्रज्ञा परिजनों की श्रेणी तक विकसित और संगठित किया जाये। जिनका न्यूनतम क्रम चल पड़े, उन्हें अगले चरणों में प्रवेश करने के लिए अपनत्व भरा प्रोत्साहन, सहयोग दिया जाने लगे। उन्हें क्रमशः सृजन सैनिकों,समयदानी प्रज्ञापुत्रों के स्तर तक लाया जाये। जो स्तर तक उभरें, उन्हें अभियान को विस्तार देने और पुष्ट बनाने के लिए विभिन्न जिम्मेदारियाँ सौंपी जाएँ। उनकी योग्यता बढ़ाते रहने के लिए उन्हें क्षेत्रीय एवं केन्द्रीय स्तर पर चलने वाले विभिन्न प्रशिक्षणों में शामिल करने की व्यवस्था बनाई जाए।

युग निर्माण मिशन का लक्ष्य बड़ा व्यापक है। गायत्री परिवार या युग निर्माण परिवार का गठन इसे व्यापक बनाने के लिए ही किया गया है, लेकिन कोई एक संगठन अकेले इसे पूरा नहीं कर सकता। सृजनात्मक उद्देश्य से गठित तमाम संगठनों को इसके साथ जोड़ना जरूरी है। सृजन सैनिकों को पहले चरण में तो अपने संगठन से जुड़ी विभूतियों को युगसृहजन यज्ञ में नियोजित करने का तंत्र बनाना है, अगले चरण में तमाम संगठनों से जुड़ी सृजनशील प्रतिभाओं की क्षमताओं को भी एक जुट करके युग दुर्गा, युगशक्ति को जागृत करने का भी कौशल दिखाना होगा।

उक्त सभी कार्य पूर्ण या अंशकालीन जीवन्त समयदानियों के माध्यम से ही किये जाने हैं। युगऋषि के तप का एक प्रभाव यह भी देखने को मिलता है कि उनके अभियान की सफलता के लिए बड़ी संख्या में, हर वर्ग के व्यक्ति उत्साहित हो उठते हैं। उनके उत्साह और स्तर के अनुरूप उन्हें सम्मानपूर्वक कार्य सौंपने,सहयोग देने की व्यवस्था बनाई जा सके, तो हर क्षेत्र में आवश्यकता के अनुरूप समयदानी नियमित रूप से मिलते रह सकते हैं। नैष्ठिकों के सुनियोजन के साथ दिव्य सत्ता का अदृश्य सहयोग सहज ही जुड़ जाता है। दोनों के संयोग से मिलने वाली पहले चरण की छोटी–छोटी सफलताएँ अगले चरण की बड़ी जिम्मेदारियों को उठाने का उल्लास एवं साहस पैदा करती रहती हैं। काम आगे बढ़ता रहता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यह करें –

हर मंडल एवं सक्रिय संगठित समूह के अन्तर्गत परिजनों के अलावा समयदानियों की सूचियाँ तैयार कर ली जाएँ। समयदानियों में से ऐसे प्रतिभा सम्पन्नों को खोजा जाय जो 10–20 समयदानियों को स्नेह, सम्मान, सहयोग देते हुए उन्हें उनकी रुचि और क्षमता के अनुरूप कार्य सौंपते रहें। अपने साथ लेकर उनकी झिझक छुड़ाने, योग्यता बढ़ाने, कार्य की समीक्षा करते हुए आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी सँभल सकें। जो समयदानी अपने क्षेत्र के परिजनों में से समयदानियों को उभारने, उनका विश्वास जीतकर उन्हें टोलीवद्ध करके सुनिश्चित जिम्मेदारी उठाने में सफल हो उन्हें समर्थ समयदानी कहा जाए। समयदानियों की हर 10–20 की टोली के साथ ऐसे दो–तीन समर्थ समयदानी अवश्य चिन्हित किए जाएँ।

स–3 की समन्वय समिति के पास ऐसे समर्थ समयदानियों की सूची, उनके साथ जुड़े नियमित समयदानियों की सूची सहित रहे। हर समयदानी को जनसम्पर्क की कला सिखाई जाए। उनमें प्रचारक एवं पुरोहित स्तर की योग्यताएँ क्रमशः बढ़ाई जाती रहें। समर्थ समयदानियों में इससे आगे प्रशिक्षक, समन्वयक, नियोजक स्तर की कुशलताएँ विकसित करने के प्रयास किए जाएँ। इन्हीं में से विभिन्न आन्दोलनों को गति देने, योग्य अग्रदूत पैदा करने की कार्ययोजना बनाई जाती रहे।

इन समर्थ समय दानियों के सहयोग के लिए हर क्षेत्र में कुछ 'समर्थ सहयोगी' खोजे और स्थापित किए जाएँ। ऐसे समर्थ सहयोगी समय भले ही कम दे पाते हों, लेकिन वे मिशन के प्रति गंभीर निष्ठा रखते हैं तथा अपने प्रभाव, कौशल एवं संसाधनों से समयदानियों की सेवा करने की भाव भरी क्षमता रखते हों। ध्यान रहे – ऐसे समयदानियों को 'साहब' (बॉस) बनकर नहीं, सहयोगी साधक बनकर कार्य करना होगा। पू. गुरुदेव ने स्पष्ट कहा है कि युग नेतृत्व अगले दिनों उन्हीं के हाथों में ठहरेगा, जो सेवा–सहयोग के भाव से उसे सँभालेंगे। जनता की सेवा समयदानी स्वयं सेवक ही करेंगे तथा वे ही उनका विश्वास जीतेंगे। स्वयं सेवकों के लिए मार्ग सुगम बनाने की साधना यह समर्थ समयदानी करेंगे, तो अनोखा श्रेय–सम्मान पायेंगे। स्वयं सेवकों तथा उन्हें सहयोग देने वाले उक्त प्रकार के विशेषज्ञों का सुसंयोग जहाँ भी बन जाएगा, वहाँ साधना एवं संगठन सशक्तीकरण की दिशा में वांछित प्रगति होने लगेगी।

समयदानी तंत्र – हर पीठ या समर्थ शाखा स–3 समूह के पास समर्थ समयदानियों की सूची होनी चाहिए। स–3 की समन्वय समिति में थोड़े–थोड़े ही प्रतिनिधि रहेंगे। लेकिन क्षेत्र के कार्य विस्तार के हिसाब से समर्थ समयदानी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सहयोगी समूह के सदस्यों की संख्या काफी होनी चाहिए। इसमें ऐसे समयदानियों के ही नाम होंगे जो – समयदानियों को प्रेरणा देने, प्रशिक्षण देने और उन्हें आवश्यक कार्यों में नियोजित करने की क्षमता रखते हों। उनके माध्यम से क्षेत्रीय समयदानियों की उपयोगिता बढ़ती रहेगी। ऐसे समयदानी, जो केन्द्रीय प्रतिनिधि के रूप में कार्य करने की क्षमता रखते हैं, लेकिन एक साथ अधिक समय न निकाल पाने के कारण केन्द्र को समयदान नहीं दे पाते, उनके थोड़े–थोड़े समय का उपयोग क्षेत्रीय कार्यक्रमों के लिए सीधे या केन्द्र के सहयोग से किया जा सकेगा। ऐसे समयदानी जो प्रशिक्षक बनने की क्षमता रखते हों, उन्हें केन्द्र के सहयोग से कुशल प्रशिक्षक के रूप में विकसित करके क्षेत्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम को प्रभावी बनाया जा सकता है।

शिक्षण संस्थाओं, प्रबुद्ध संस्थानों में मिशन का संदेश देने के लिए बड़ी संख्या में प्रवक्ता चाहिए। समर्थ समयदानियों में जो अच्छे प्रवक्ता हों, उन्हें इसके लिए अल्पकालीन प्रशिक्षण देकर तैयार किया जा सकता है। ऐसे परिजन क्षेत्र में बहुत हैं। उनके सक्रिय होते ही विचार क्रान्ति का उद्घोष बड़ी तीव्रता से हर क्षेत्र में किया जा सकेगा।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

स–3 के साथ स–4 जरूरी

सक्रिय संगठित समूहों को, उनकी समन्वय समितियों तथा संयुक्त समन्वय समितियों को जो बड़ी जिम्मेदारियाँ सँभालनी हैं, उसके लिए उनके पास समर्थ समयदानी सहयोगी समूह (स–4) होना जरूरी है। वे बड़ी संख्या में परिजनों से सम्पर्क बनाने, कार्य विस्तार करने, विभिन्न आन्दोलनों को गति देने के लिए बड़ी संख्या में समयदानियों को विकसित और नियोजित करने में सफल होंगे।

स–4 में समर्थ समयदानियों और उनके समर्थ सहयोगियों का सुसंयोग होगा। पहले कहा जा चुका है कि जो लोग 'बॉस' बनकर नेतृत्व करना चाहेंगे, वेसफल नहीं होंगे। सेवकों के सेवक, उनके सहयोगी बनकर, उनका प्रेम और विश्वास जीतकर आगे बढ़ने की रीति नीति अपनाने वाले समर्थ परिजन नेतृत्व के यश के साथ ऋषि सत्ता का विशेष स्नेह अनुदान भी प्राप्त कर सकेंगे। इसलिए समर्थ समयदानियों के साथ तीसरा 'स' सहयोगी के रूप में जुड़ना जरूरी है।

अच्छे व्यक्ति बहुत समर्थ और भले हो सकते हैं, लेकिन किसी एक व्यक्तिको कभी भी किसी कठिनाई, लाचारी का सामना भी करना पड़ सकता है। समूह बनाकर चलने से, परस्पर सहयोग के आधार पर ऐसी कठिनाइयों का निराकरण संभव हो जाता है। इसी के साथ वह दूसरों की विशेषताओं का लाभ लेने देने की भी सुविधा सहज ही बन जाती है। इसलिए अपने संगठन में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समयदानियों के नियोजन की जिम्मेदारी सहयोगी भाव से समूह बनाकर चलने वाले समर्थ समयदानियों को सौंपने की रीति नीति बनाई गई है।

युग निर्माण अभियान ऋषि अनुशासन के अनुरूप अपने सृजन सैनिकों की व्यूह रचना बना रहा है। इस व्यूह रचना के साथ ही हर क्षेत्र में अभियान के विकास एवं पुष्टि का क्रम चल पड़ेगा। मिशन के विकसित क्षेत्रों के सहयोग से क्षेत्र में जनहित की नई योजनाओं को लागू किया जा सकेगा। इसी के साथ विकासशील एवं नए क्षेत्रों के विकास की दीर्घकालीन कार्य योजनाओं को विश्वासपूर्वक लागू किया जा सकेगा।

कौशल निखारें — उभरते व्यक्तियों को खोज कर उन्हें स्नेह, सम्मान देते हुए संगठन का अंग बना लेना एक बड़ी कला है। उनमें उच्च भावना और जोश के साथ अनेक कमियाँ अनगढ़तायें भी होती है। संगठन में उनकी भावनाशीलता एवं जोश को सुरक्षित रखते हुए उनके दोषों को काबू में रखने की क्षमता होनी चाहिए। राग के कारण दोषों की अनदेखी और द्वेष के कारण गुणों की उपेक्षा बहुधा होती रहती है। संगठक अपने अन्दर के राग–द्वेष को साधना–पुरुषार्थ से पूरी तरह निरस्त भले न कर पाये, किन्तु साधना के साथ गुरुकृपा को जोड़कर उन्हें इना मर्यादित, सीमित अवश्य रख सकता है कि वे युगधर्म में बाधक न बनें। किसी के दोष पहचानने में राग को आड़े न आने दिया जाये तथा गुणों के उपयोग के मार्ग में द्वेष को अडंगेबाजी न करने दी जाये। पौराणिक काल से स्वतंत्रता संग्राम तक के इतिहास में ऐसे प्रमाण पर्याप्त मात्रा में मिल सकते हैं। राग–द्वेष से पूरी तरह मुक्त तो कोई बिरले युग पुरुष ही रहे हैं, लेकिन उनके सहयोगियों में राग–द्वेष से पूरी तरह मुक्त तो कोई बिरले युग पुरुष ही रहे हैं, लेकिन उनके सहयोगियों में राग–द्वेष को काबू में रखकर कर्तव्य पालन की कुशलता बनाये रखेने की क्षमता अवश्य रही है। पूज्य गुरुदेव जैसे अजातशत्रु, आत्मीयता के धनी के संरक्षण एवं समर्थ अनुदानों की छाया में तो ऐसा कर पाना किसी भी नैष्ठिक के लिए कठिन नहीं होना चाहिए।

अस्तु: हर क्षेत्र के परिजन अपने संगठन को अधिक विस्तृत एवं अधिक समर्थ बनाने के लक्ष्य सामने रखें। युग निर्माण परिवार एवं अपने संगठन को भी समर्थ बनायें तथा सृजन कार्यों में लगे अन्य संगठनों को भी उपर्युक्त कथन के अनुसार प्रेरणा–प्रोत्साहन देकर उन्हें ऋषितंत्र के अनुग्रह का अधिक लाभ प्राप्त कराने का भी प्रयास करें।

इन दायित्वों को पूरा करने के लिए कुछ सुनिश्चित लक्ष्य बनाकर चलना होगा तथा व्यक्तियों एवं संगठनों को उनकी रुचि एवं क्षमता के अनुरूप कार्य सौंपने का आत्मीयता भरा कौशल भी दिखाना होगा। फिर हम यह कहकर संतोष

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

न कर सकेंगे कि हमारे मण्डल, शाखा या ट्रस्ट का ढर्रा ठीक चल रहा है। गुरु संवेदना के प्रभाव से हमारा मन उसके लिए तड़पेगा कि अपने क्षेत्र में युग निर्माण का सबल आधार खड़ा करने योग्य संगठन अब तक क्यों नहीं बना? अपने क्षेत्र को यदि सत्ता के आध्यात्मिक जीवन सूत्रों से सिंचित, संस्कारित करने योग्य हमारे संगठन की हैसियत कैसे बने?

तब हम कार्य करने वाले, साधन–सहयोग देने वाले हर व्यक्ति को उसी प्रकार सम्मान देने का प्रयास करेंगे, जैसे श्रीकृष्ण ने राजसूर्य में भाग लेने वाले हर प्रतिभागी के चरण पखारे थे, जूठी पत्तल उठाकर श्रेय अनुभव किया था। अभी हमें एक ही गुरु के प्रति आस्थावान् गायत्री परिजनों के साथ संगति बिठाना कठिन लगता है, लेकिन गुरु संवेदना का रस छूते ही हमारी संगठन क्षमता निखर उठेगी। तब हम गायत्री परिजन ही नहीं, नवसृजन के लिए छोटे–मोटे कार्य करने वाले हर संगठन को अपना अंग मानकर उन्हें अपनत्व से बाँध लेंगे।

क्रमशः विकास–विस्तार – हर क्षेत्र में हर व्यक्ति तक नव सृजन अभियान की धारा पहुँचाने के लिए व्यूह रचना जल्दी से जल्दी बना लेनी है। जहाँ व्यूह रचना बन जाए वहाँ जन जीवन से 'असंस्कृति' का प्रभाव हटाकर 'सुसंस्कृति' की स्थापना के प्रखर प्रयास किये जाने हैं। सबसे पहला सृजन है 'जनमानस का निर्माण' न्यूनतम उपासना एवं स्वाध्याय के माध्यम से जुड़ने वाले नर–नारियों को क्रमशः आदर्शनिष्ठ नागरिकों, आदर्श परायण लोक सेवियों–सृजन सैनिकों के रूप में विकसित किया जाना है। जहाँ ऐसे व्यक्ति और समूह पर्याप्त संख्या में विकसित हो जाएँगे, वहाँ अनेक सृजनात्मक–सुधारात्मक आन्दोलन खड़े किए जा सकेंगे। जहाँ जिस प्रकृति के कर्मठ–जिम्मेदार व्यक्ति तैयार किए जा सकें, वहाँ उसी प्रकार के स्वास्थ्य संवर्धन और शिक्षा–स्वावलम्बन, व्यसन मुक्ति–कुरीति उन्मूलन जैसे आन्दोलनों की सफल शुरुआत की जा सकती है। ऐसे आन्दोलनों को गति देने के लिए शान्तिकुंज में स्वास्थ्य, शिक्षा, रचनात्मक संकाय स्थापित किए जा चुके हैं। क्षेत्र में विकसित इस प्रकार के तंत्र शांतिकुंज की केन्द्रीय व्यवस्था के अंग–उपांगों की तरह तालमेल पूर्वक कार्य करेंगे।

केन्द्रीय तंत्र के अंग–उपांग

तंत्र की रूपरेखा – समय की आवश्यकता और कार्य के विस्तार के आधार पर केन्द्र ने गंभीर अध्ययन के बाद संगठन की वर्तमान रूपरेखा बनाई है। ऋषि निदेशन की मर्यादा में इसके लिए सुसम्बद्ध विकेन्द्रित तंत्र (वैल को–ऑर्डिनेटिड डिसैट्रलाइज्ड सिस्टम) विकसित करने का प्रयास चल रहा है। प्रकृति भी अपना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कार्य इसी ढंग से करती है। शरीर के विभिन्न अंग–अवयव अपने–अपने ढंग से निर्धारित कार्य करते रहते हैं, लेकिन पूरे शरीर में हृदय द्वारा संचार एवं मस्तिष्क के स्नायुमंडल का समन्वित तंत्र स्थापित है। प्रकृति के अन्य घटकों में भी ऐसी ही व्यवस्था बनी रहती है। इसके लिए अपने संगठन तंत्र की रूपरेखा निम्नानुसार है–

केन्द्र – बृहत्तर संभाग (जोन्स) – सम्बद्ध जिले – तहसील प्रखंड आदि नगरों के मुहल्ले, वार्ड, ग्राम आदि।

इसे संगठन का खाका, नक्शा कहा जा सकता है। खाका किसी ढंग से ऊपर से नीचे, नीचे से ऊपर की ओर बनाया जा सकता है। परिजनों को तंत्र का स्वरूप समझाने के लिए यह जरूरी है, लेकिन वास्तविक ढांचा जब बनता है तो वह नीचे से, नींव से ऊपर की ओर ही बनता है। इसलिए अपने संगठन के तंत्र को विकसित करने के लिए यही अनुशासन अपनाया जा रहा है। जोन्स, जिलों, प्रखंड आदि के प्रावधान कार्यकर्त्ताओं को अपने–अपने क्षेत्र में परिजनों को, सैनिकों को संगठन की रूपरेखा समझाने की जिम्मेदारी सौंपी जा रही है। उभरने वाले संगठनों को सूत्रबद्ध करने के लिए कार्यालय, प्रशिक्षण केन्द्र आदि विकसित करने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। लेकिन संगठन का वास्तविक ढांचा तो नीचे ऊपर की ओर ही बढ़ेगा। उसका क्रम यह होगा –

क्षेत्र के सहयोगी सभ्य साधक, समयदानी सृजन सैनिक आदि	प्रज्ञामंडल, महिला मंडल, युवा मंडल, संस्कृति मण्डल आदि	समन्वय समितियाँ, स–3 समर्थ समयदानी तंत्र, सम्पर्क सूत्र प्रतिनिधि
प्रखण्ड, तहसील, जिला स्तरीय	संयुक्त समन्वय समिति समर्थ समयदानी तंत्र सम्पर्क सूत्र प्रतिनिधि	बृहत्त संभाग जोन्स उनके कार्यालय प्रशिक्षण प्रकाशन तंत्र

—— केन्द्र के संभागीय विकास विभाग प्रशिक्षण, समन्वय तंत्र

उक्त रूपरेखा से स्पष्ट होता है कि अपने संगठन तंत्र के आधार मण्डल एवं उनके द्वारा गठित स–3 एवं स–4 समूह होंगे। स–3 के माध्यम से भौगोलिक दृष्टि से हर क्षेत्र को सक्रिय संगठित इकाइयों के साथ जोड़ा जा सकेगा। स–4 के माध्यम से समयदानियों के साथ केन्द्र के संवेदन सूत्र जुड़े रहेंगे। समयदान कार्यालय भी समयदानियों की विशाल फौज को अनुशासित ढंग से नियोजित करने के लिए स–4 समूहों को आधार बनायेगा। संगठन से सम्बद्ध कार्यों, योजनाओं के संदर्भ में केन्द्र द्वारा पीठों के ट्रस्टियां के साथ ही सभी स–3 समूह के सम्पर्क सूत्रों को भी सूचनाएँ भेजी जाती हैं। इस प्रकार स–3 एवं स–4 समूह केन्द्र के अंग–उपांगों, स्नायु तंत्र की तरह प्रतिष्ठित होंगे। हर बड़ी संगठित

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इकाई अपने क्षेत्र की संगठित इकाइयों को अधिक समर्थ एवं प्रभावी बनाने के लिए प्रयास करेगी। केन्द्रीय तंत्र ऐसे प्रयास करने वालों के लिए जिला स्तरीय एवं संभागीय (जोनल) केन्द्रों के माध्यम से कार्य करता रहेगा।

हर स–3 का सीधा सम्बन्ध केन्द्र से तो होगा ही, लेकिन वे अपने क्षेत्र की किसी प्रज्ञापीठ/शक्तिपीठ अथवा जिला स्तरीय संयुक्त समन्वय समिति के साथ भी जुड़े रहेंगे। किसी भी प्रज्ञापीठ/शक्तिपीठ से जुड़े स–3 की भी एक संसय होगी। यह समिति ट्रस्ट मण्डल से भिन्न होगी, किन्तु उसमें ट्रस्ट के प्रतिनिधियों को भी रखा जाता है। ट्रस्ट मण्डल की मुख्य जिम्मेदारी केवल इतनी होती है कि जनता द्वारा ट्रस्ट को सौंपी गयी चल–अचल सम्पत्ति का संरक्षण और नियोजन संतोषजनक ढंग से करें। समन्वय समिति का न्यूनतम कर्त्तव्य यह होता है कि पूरे क्षेत्र में मिशन–अभियान की प्रगति और पुष्टि की समुचित रूपरेखा बने और क्रियान्वित हो। क्षेत्र को आध्यात्मिक ऊर्जा से सम्पन्न बनाने के लिए अपने तंत्र को स्वावलम्बी एवं सक्षम बनायें।

हर प्रज्ञापीठ/शक्तिपीठ पर भी एक कार्यालय होना चाहिए। पीठ से सम्बद्ध हर संगठित समूह के प्रगति/विस्तार के आँकड़े वहाँ होने चाहिए। स–3 के साथ कितने मण्डल जुड़े हैं। प्रत्येक मण्डल के निर्धारित रिकार्ड की संक्षिप्त जानकारी (समरी) वहाँ रहे। समय–समय पर होने वाले परिवर्तनों के आधार पर रिकार्ड में संशोधन कियाजाता रहे। समन्वय समिति की बैठकों में हर मण्डल के आँकड़ों की समीक्षा की जाती रहे। विकास/प्रोत्साहन/प्रशिक्षण आदि की व्यवस्था इन्हीं प्रामाणिक जानकारियों के आधार पर की जाती रहेगी।

पूरे जिले की इस प्रकार की जानकारियाँ जिले के किसी शक्तिपीठ पर अथवा सामूहिक निर्धारण के आधार पर किसी अन्य स्थान पर होनी चाहिए। यदि किसी प्रज्ञापीठ/शक्तिपीठ पर सक्रिय संगठित समूहों की समन्वय समितियों को दी जाने वाली सुविधाएँ नहीं हैं, या उनकी व्यवस्था नहीं बन पा रही है, तो उसके लिए आम सहमति तथा केन्द्र की अनुमति से उपयुक्त व्यवस्था किसी सक्षम केन्द्र पर की जा सकती है। वैसे केन्द्र के प्रयास यही हैं कि जहाँ तक संभव हो संयुक्त समन्वय समितियों के कार्यालय, योजना केन्द्र प्रज्ञापीठों, शक्तिपीठों में ही बनें। यह अपेक्षा की जाती है कि पीठों से जुड़े वरिष्ठ परिजन पीठों को इस दृष्टि से समर्थ बनाएँ।

बृहद् संभागों का निर्धारण इस प्रकार किया गया है कि हर जोन के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अन्तर्गत अपने मिशन की दृष्टि से कुछ विकसित क्षेत्र, कुछ विकासमान क्षेत्र तथा कुछ नए अविकसित क्षेत्र शामिल हों। विकसित क्षेत्र के समर्थ समयदानियों के सुनियोजन से विकासमान एवं नए क्षेत्रों के विकास की प्रभावी कार्ययोजना को मूर्त रूप दिया जाता रहेगा। प्रारंभ में थोड़े से ही केन्द्रों को इसके लिए तैयार किया जा रहा है, क्रमशः उनकी संख्या भी आवश्यकतानुसार बढ़ाई जाती रहेगी।

कहा जा चुका है कि किसी भवन या संगठन का ढाँचा नीचे से नींव से ही शुरू होता है। जहाँ परिजन, सृजन सैनिक मिलकर, सक्रिय मण्डल गठित कर लेंगे, मान लिया जाएगा कि वहाँ नींव का काम हो गया। जहाँ मण्डल मिलकर स–3 बना लेंगे, वहाँ माना जा सकता है कि संगठन का आधार तल तक का काम हो गया। जहाँ प्रखंड, तहसील स्तरीय संयुक्त समन्वय समितियों का संतोषजनक स्वरूप बन गया, वहाँ भवन के स्तंभ उभर आने जैसी स्थिति मानी जा सकती है। जहाँ स्तंभ स्तर के प्रतिनिधियों के संयोग से जिला स्तरीय संगठन उभरा, वहाँ माना जा सकता है कि स्तंभों को परस्पर बाँधने, संयुक्त बल देने वाले बीम बन गए। इसके ऊपर जोन्स की छत, युग निर्माण के समर्थ प्रयोगों के शिखर जैसे शिखरों का भार डाला जा सकता है।

www.vicharkrantibooks.org

यह सारे कार्य अपने 'मैं' को हम में समर्पित करने वाले, ऋषिपुत्रों, अग्रदूतों के साधनात्मक पुरुषार्थ एवं कौशल से ही संभव होगा। ऋषितंत्र इसके लिए समुचित स्नेह, आशीर्वाद एवं शक्ति के अनुदान देने को सन्नद्ध है। इन उच्च स्तरीय अनुदानों को पाने में वही साधक सफल हो सकेंगे। जो व्यक्तित्व को परिष्कृत करने और संगठन को सशक्त बनाने की युग साधना में सारे पूर्वाग्रह छोड़कर पूरी निष्ठा से जूझ पड़ेंगे। विश्वास है कि युग सैनिक युगऋषि द्वारा पेश की गई इस कटौती पर भी खरे उतरेंगे और अद्भुत श्रेय सौभागय के पात्र बनेंगे।

साप्ताहिक गोष्ठी महत्व और कार्य विधि

प्रज्ञा/महिला मण्डलों के लिए साप्ताहिक सत्संग–संगोष्ठी का क्रम चलाना अनिवार्य रखा गया है। इसके तीन चरण हैं – 1. सामूहिक उपासना, 2. सामूहिक स्वाध्याय–सत्संग, 3. प्रगति की समीक्षा एवं अगले चरणों का निर्धारण। इन सभी का अपना–अपना असाधारण महत्व है।

सामूहिक उपासना से साधकों के मन एक होते हैं, जिससे आत्मीयता बढ़ती है तथा संकीर्ण स्वार्थों से ऊपर उठकर इच्छाओं–आकाँक्षाओं में सामूहिक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हिम के भाव बढ़ने लगते हैं। देव परिवारों के विकास के लिए ऐसा होना अनिवार्य है। इससे श्रद्धा विकसित होती है। सामूहिक स्वाध्याय सत्संग से विचारों में एकरूपता आती है, मतभेद तथा संशय समाप्त होते हैं तथा श्रेष्ठ पुरुषों के आदर्श विचारों को जीवन में धारण करना सहज संभव हो जाता है। नवसृजन की दिशा में एक जुट होकर पुरुषार्थ करने के लिए यह आवश्यक है। इससे प्रज्ञा प्रखर बनती है।

प्रगति समीक्षा और नये निर्धारणों के माध्यम से अपने लिए आवश्यक परिष्कार तथा विकास का जीवन्त क्रम बना रहता है। विकास के क्रम में स्वाभाविक रूप से होने वाली चूकों तथा उभरने वाले दोषों का समय पर उपचार करते हुए अपनी बढ़ती हुई क्षमता तथा मिलने वाले दिव्य अनुदानों को सुनियोजित करने का सहज क्रम बन जाता है। इससे निष्ठा सुदृढ़ होती जाती है।

कार्यविधि – संगोष्ठी के लिए निर्धारित स्थल पर पूर्व व्यवस्था के लिए मण्डल के किन्हीं सदस्यों को निर्धारित समय से 15–20 मिनट पूर्व पहुँचकर वहाँ स्वच्छता, व्यवस्था कर लेनी चाहिए। इसके लिए पहले से ही जिम्मेदारी स्वीकार या सौंप दी जानी चाहिए। कार्यक्रम निर्धारित समय पर प्रारम्भ एवं समाप्त कर देने की सावधानी बरती जानी चाहिए। इससे मण्डल की तत्परता और प्रमाणिकता का स्तर बढ़ता है। शामिल होने वाले भी निःसंकोच होकर भाग लेने लगते हैं। साप्ताहिक संगोष्ठी के बाद नियमित सदस्यगण दो–दो, तीन–तीन की टोलियाँ बनाकर कम से कम 5 घरों में सम्पर्क करते प्रसाद देते हुए घर लौटे। इस सम्पर्क क्रम में नए घरों में सद्विचार पहुँचाने का प्रयास करें। पुराने सम्पर्क के जो लोग संगोष्ठी में न पहुँचे हों, उनके कुशल समाचार लेने और गोष्ठी के विवरण देने का कार्य भी इस सम्पर्क क्रम में किया जाना उचित है।

कार्यक्रम के संचालन के लिए किन्हीं अनुभवी वृद्ध उपयुक्त सदस्य/सदस्या को जिम्मेदारी सौंप देनी चाहिए। आने वालों को सम्मानपूर्वक यथा स्थान क्रमबद्ध ढंग से बिठाने तथा अन्य व्यवस्थाओं के लिए सुयोग्य स्वयं सेवक नियुक्त रहने चाहिए। निर्धारित तीनों चरणों के सहित कार्यक्रम को डेढ़ से दो घंटे में समाप्त कर लेना चाहिए।

सामूहिक उपासना के क्रम में पहले प्रेरणाप्रद भजन–कीर्तन करना चाहिए। इससे अंतःकरण तनावमुक्त होता है, हीन भावना के निवारण और उमंग–उल्लास के संचार का सुयोग बनता है। सुविधानुसार ढपली, मँजीरे, करताल आदि का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रयोग करते हुए कीर्तन के माध्यम से भक्तिरस में डूबने का प्रयास करना चाहिए। इसके बाद सामूहिक रूप से सस्वर गायत्री मंत्र बोलकर गुरु वंदना तथा सर्वदेव नमस्कार का क्रम चलायें। फिर मंच पर स्थापित 5 दीपक प्रज्ज्वलित करके 24 बार सामूहिक रूप से गायत्री मंत्र का उच्चारण एक स्वर में एक साथ करें। भावना करें कि मंत्र के प्रभाव से गुरु–ईश अनुग्रह से हम सबके मन एक हो रहे हैं।

दूसरे चरण में सामूहिक सत्संग का क्रम चलाया जाए। सत्संग के लिए विषय पहले से निर्धारित रहें। सत्संग में शामिल होने वालों के स्तर और उनकी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए विषय चुने जायें। इसके लिए पूज्य गुरुदेव के साहित्य, मिशन की पत्रिकाओं के महत्वपूर्ण अंश चुने जा सकते हैं। एक सप्ताह पहले ही निर्धारण हो जाने से लोग उस विषय को पढ़–समझकर आते हैं और अधिक लाभ उठा पाते हैं। निर्धारित अंश पढ़कर सुनाने तथा सुयोग्य व्यक्तियों द्वारा उसके व्यावहारिक पक्ष को स्पष्ट करने का क्रम चलाना चाहिए। विभिन्न पक्षों के विचार सामने आने से हर व्यक्ति की मनन–चिंतन की क्षमता विकसित होती है। विचारों को पचाकर जीवन में संचालित करना संभव होता है। विचारों को समझने तथा व्यक्त करने की सामर्थ्य क्रमशः बढ़ती जाती है, जिससे जीवन के परिष्कार एवं विकास का सहज क्रम चल पड़ता है।

मंत्र पूरे होने पर 15 मिनट मौन मानसिक जप करें। भावना करें कि हम सबकी सद्भावना संयुक्त होकर मनुष्य मात्र के लिए उज्ज्वल भविष्य की संरचना में ऋषिसत्ता के प्रयासों के साथ जुड़ रही है। युगशक्ति का संचार हम सबके अंदर हो रहा है। समय पूरा होने पर संचालनकर्त्ता द्वारा सस्वर गायत्री मंत्री बोला जाय, सब साथ दें। भावना करें कि हम सब दिव्य अनुदान पाकर दिव्य संरक्षण में युग धर्म निर्वाह के लिए तैयार हो गए हैं। अंत में अगले सप्ताह के लिए सूचनाएँ देकर, शांतिपाठ एवं प्रसाद वितरण के साथ समापन किया जाना चाहिए।

प्रगति समीक्षा – सत्संग के बाद व्यक्तिगत एवं टोलीगत स्तर पर स्वीकार किए गए उत्तरदायित्वों की प्रगति समीक्षा की जानी चाहिए। जिनका समयदान और जन सम्पर्क का क्रम ठीक चल रहा है, उनकी सराहना करते तथा चूकने वालों को प्रोत्साहन–सहयोग देकर आगे बढ़ाने का क्रम बनाया जाय। साधना एवं सेवा कार्यों में जो कठिनाइयाँ आती हों, उनके समाधान खोजे, सुझाव जाने चाहिए। घर–घर सम्पर्क करने एवं संस्कार आदि घरेलू कार्यक्रम सम्पन्न कराने के लिए समयदानी व्यक्तियों/टोलियों की जिम्मेदारी सौंपी जानी चहिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सामने आए कार्यों के अनुरूप नए चरण निर्धारित किए जाने चाहिए। केन्द्रीय निर्देशों–पत्रों के प्रकाश में अपने दायित्वों को स्पष्ट कर लेना चाहिए। जैसे – साप्ताहिक सत्संग–संगोष्ठियों में नियमित रूप से शामिल होना तथा प्रति सप्ताह लगभग 40–50 घरों में जन सम्पर्क करके उन्हें देव संस्कृति के सूत्रों के प्रति जागरूक बनाना। उनकी मानसिकता के अनुसार उन्हें पू. गुरुदेव के विचारों तथा कार्यक्रमों से जोड़ते रहना। सम्पर्क में आए समर्थ सहयोगी व्यक्तियों में से नैष्ठिक समयदानी, युग सैनिक निकालते रहना। उनकी आस्था पुष्ट करते हुए उन्हें प्रशिक्षित करके कार्यक्रमों को चलाने की जिम्मेदारी सँभालने योग्य बनाना। समयदानियों की, नैष्ठिक सदस्यों की संख्या बढ़ने पर उनके माध्यम से नए मण्डल खड़े करना, उन्हें समर्थ एवं स्वावलम्बी बना देना। नए क्षेत्रों में नवजागरण अभियान फैलाना तथा नए रचनात्मक कार्यों का सिलसिला चलने के प्रयास करना।

पीठों को समर्थ, प्रमाणिक बनाएँ –

पूज्य गुरुदेव नवसृजन की ईश्वरीय योजना को धरती पर व्यावहारिक रूप देने हेतु अवतरित हुए। तप बल से युगशक्ति का प्रवाह जागृत किया और इसे जन–जन तक पहुँचाने की व्यवस्था बनाई। नर–नारी युगशक्ति के प्रवाह से जुड़ने लगे। युग सैनिकों, युग साधकों की संख्या बढ़ने लगी। जगह–जगह उनके छोटे–छोटे संगठन भी उभरने लगे। युगशक्ति की जागृत् धारा से जुड़ने के लिए जन–जन के मनों में उत्साह उभरने लगा। तब आवश्यकता अनुभव हुई सृजन साधकों, सृजन सैनिकों को सुसंगठित करके, युग सृजन अभियान की प्रामाणिक व्यूह रचना बनाई जाय। इसके लिए जगह–जगह ऐसे अपने स्थलों की जरूरत अनुभव हुई, जहाँ –

युगशक्ति का तीर्थ जैसा जीवन्त प्रवाह अनुभव किया जा सके। जन सामान्य बिना भेदभाव के युगसाधना एवं युगधर्म सम्बंधी मार्गदर्शन पा सकें। वहाँ से संस्कारित आध्यात्मिक वातावरण में साधना करके आत्मोत्कर्ष और आत्मशान्ति की दिशा में प्रगति कर सकें। सृजन साधक, सृजन सैनिक सुविधापूर्वक मिल बैठ सकें। सामूहिक साधना एवं प्रशिक्षण क्रम चलाकर अपनी संख्या और योग्यता बढ़ाते रह सकें। युग साहित्य के स्वाध्याय, प्रचार–प्रसार, धर्मतंत्र से लोकशिक्षण की गतिविधियाँ संचालित की जा सकें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सृजन सैनिकों की छावनी की तरह उसे विकसित और प्रयुक्त किया जा सके। क्षेत्र में विकास की संभावनाओं का अध्ययन करके, वहाँ की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए समयदानियों के प्रशिक्षण—नियोजन का प्रखर एवं प्रामाणिक क्रम चलाया जा सके। सृजन सैनिकों की संख्या एवं योग्यता बढ़ाते हुए बौद्धिक, नैतिक एवं सामाजिक क्रान्तिकारियों से सम्बंधित विविध आन्दोलनों को गतिशील किया जा सके।

उक्त सभी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उन्होंने शक्तिपीठों, प्रज्ञापीठों की योजना लागू की। ऋषितंत्र द्वारा जगत् सूक्ष्म प्रवाह को प्रत्यक्ष रूप देने के लिए स्थूल तंत्र विकसित करने की रीति—नीति समझाई गयी। उसे लागू करने के लिए परिजनों को प्रेरित किया गया।

उन्होंने कहा मैं पीठों को मात्र पूजा स्थलों, उपासना स्थलों तक ही सीमित रखने के पक्ष में नहीं हूँ। उन्हें आध्यात्मिक ऊर्जा के समर्थ केन्द्र एवं सृजन सैनिकों की समर्थ छावनियों के रूप में विकसित किया जाना है। यह कार्य भवन बनाने या मूर्तियाँ स्थापित करने भर से नहीं होगा, इसके लिए तो युगधर्म के लिए संकल्पित, आध्यात्मिक ऊर्जा सम्पन्न प्राणवानों का ध्रुवीकरण और सुनियोजन करना होगा।

वे (गुरुदेव) पीठों के साथ प्राणवान् परिजनों का कितना समर्थ तंत्र जुड़ा होने की अपेक्षा रखते रहे हैं, इसका अनुमान लगाने के लिए उनके अगले कथन पर ध्यान दें। उन्होंने कहा कि अपने समय में इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए आदि शंकराचार्य ने 4 शंकरपीठ स्थापित किए थे। मैं 24 पीठ स्थापित करूँगा। स्पष्ट है कि उनके अनुसार पीठों को भारत की कुल आबादी के 24वें भाग (4 करोड़ से अधिक) को दिशा देने, अर्जित करने में समर्थ होना चाहिए।

प्रज्ञापीठों, शक्तिपीठों के नाम पर स्वतंत्र भवनों की संख्या तो 2400 से भी अधिक हो चुकी है, किन्तु देखना यह है कि उनमें से कितनों को युगऋषि की आकांक्षा के अनुरूप प्रामाणिक एवं क्षमता सम्पन्न बनाया जा सकता है। साधना संगठन सशक्तीकरण अभियान के अन्तर्गत यदि देश में कम से कम 24 से 108 के बीच समर्थ पीठों को विकसित किया जा सके, तो प्रगति को संतोषजनक कहा जा सकेगा। इस अभियान के अन्तर्गत संगठन बनाने का प्रयास भी किया जा रहा है। पीठों को संगठन की इस व्यूह रचना के महत्वपूर्ण केन्द्रों के रूप में विकसित होना चाहिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्रम व्यवस्था समझें–अपनाएँ –

पीठों से जुड़ें मूर्धन्यों, ट्रस्टियों, वरिष्ठ परिजनों को अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाकर पीठों को ऋषि अनुशासन और केन्द्रीय व्यवस्था के अनुरूप समर्थ और प्रामाणिक बनाने के लिए प्रयास करने चाहिए। पीठों को दो प्रकार की समानान्तर धाराओं का अनुपालन, दो प्रकार के दायित्वों का निर्वाह करना जरूरी है। वे हैं–

1. **नैतिक दायित्व** – इसके अन्तर्गत वे सारी जिम्मेदारियाँ आती हैं, जिन्हें पूरा करने की अपेक्षा गुरुसत्ता ने की है। इन्हें पूरा करना दो–चार व्यक्तियों के बूते की बात नहीं है। इसके लिए तो क्षेत्र के सभी नैष्ठिकों की सुसंगठित शक्ति और तालमेल युक्त प्रयासों की जरूरत होती है। जिस तरह भिन्न–भिन्न प्रवृत्तियों वाली देव शक्तियों के एकीकरण से दुर्गा शक्ति विकसित हुई थी, उसी प्रकार भिन्न–भिन्न प्रवृत्तियों वाले नैष्ठिकों की संयुक्त शक्ति के सहारे युग शक्ति का प्रभाव उभरेगा। युगसंधि की इस महत्वपूर्ण बेला में यह सब करना उच्च स्तरीय जीवन साधना का महत्वपूर्ण अंग माना जायेगा।

2. **कानूनी दायित्व** – नैष्ठिक सृजनसैनिकों, अग्रदूतों को कार्य करने की सुविधा प्रदान करने के लिए निर्मित पीठों के साथ चल–अचल सम्पत्ति का जुड़ना स्वाभाविक है। सरकारी नियमों के अनुसार ऐसी सार्वजनिक सम्पत्ति की देखभाल, रख–रखाव की जिम्मेदारी कुछ विश्वासपात्र लोगों को सौंपी जाती है। जिन्हें न्यासी कहा जाता है। इन ट्रस्टियों का दायित्व बनता है कि वे कानूनी मर्यादाओं का पालन करते हुए संस्थान की चल–अचल सम्पत्ति का प्रामाणिक और पारदर्शी हिसाब–किताब रखें। इसी के साथ नैतिक दायित्व पूरा करने वाले नैष्ठिकों को सम्मानपूर्वक कार्य करने की सुविधाएँ जुटाने का प्रयास करें।

कानूनी दायित्वों को पूरा करने के लिए कानूनी मार्गदर्शिका "ट्रस्ट के प्रबन्ध एवं कानून" केन्द्र द्वारा प्रकाशित की जा चुकी है। सुयोग्य व्यक्तियों के सहयोग से उसका अध्ययन करते हुए केन्द्र के साथ परामर्श का क्रम बनाए रखकर उनका अनुपालन भली प्रकार किया कराया जा सकता है। (महत्वपूर्ण होते हुए भी) यह काम सीमित है और थोड़े प्रयासों से भी सध सकता है। नैतिक दायित्वों का अनुपालन इस अभियान का प्राण है। इन दायित्वों के क्षेत्र का विस्तार भी बहुत है। इसके प्रति अधिक जागरुकता, तत्परता तथा बेहतर तालमेल भरे प्रयासों की जरूरत है। इसके प्रति अधिक जागरूकता, तत्परता तथा बेहतर तालमेल भरे प्रयासों की जरूरत है। क्षेत्रीय सृजन सैनिकों की संगठित इकाइयों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

को पीठों के साथ जोड़कर ही इन दायित्वों का निर्वाह किया जाना संभव है।

पूज्य गुरुदेव ने कहा कि पीठों का मूल्यांकन इनके भवनों की विशालता, तथा मूर्तियों की भव्यता से नहीं, उनके द्वारा निभाए जाने वाले नैतिक दायित्वों के आधार पर ही किया जा सकता है। अस्तु: पीठों का मूल्यांकन इसी आधार पर किया जा रहा है कि उनके साथ कितने बड़े क्षेत्र की संगठित इकाइयाँ (मण्डल एवं सक्रिय संगठित समूह) जुड़ी हैं? उनमें परस्पर विश्वास एवं सहयोग का कैसा क्रम बैठाया गया है? कानूनी दायित्वों के निर्वाह के साथ ही नैतिक दायित्वों के निर्वाह की भावी सामर्थ्य कितनी है?

सामर्थ्य बढ़ाएँ–निखारें –

कानूनी दायित्वों को सँभालने की क्षमता विकसित करना आसान है। एक–दो कानूनी समझ वाले परिजनों, प्रामाणिक ढंग से हिसाब–किताब रखने वालों के सहयोग से यह दायित्व पूरे हो सकते हैं। नैतिक दायित्वों की पूर्ति के लिए पीठों को क्षेत्र की संगठित इकाइयों से जुड़कर, उनमें से समर्थ समयदानियों को छाँटकर उन्हें निम्नानुसार नैतिक जिम्मेदारियाँ सौंपनी चाहिए।

1. **कानूनी और आर्थिक** – हिसाब की प्रामाणिकता–पारदर्शिता। प्रामाणिकता से सरकारी प्रशासन का विश्वास बना रहेगा। पारदर्शिता से सहयोगी एवं श्रद्धालुओं का विश्वास मजबूत होता रहेगा, यह दोनों विश्वास पाना, किसी भी अच्छे संस्थान के लिए जरूरी है। ट्रस्टियों, सुयोग्य व्यक्तियों की एक टोली को यह दायित्व सौंपा जाना जरूरी है।

2. **आश्रम व्यवस्था** – पीठ का सूक्ष्म एवं स्थूल वातावरण किसी ऊर्जावान् आध्यात्मिक आश्रम अथवा प्राणवान् तीर्थ जैसा रहे। देवपूजन, उपासना, यज्ञ, संस्कार आदि का प्रभावी क्रम चलता रहे। आध्यात्मिकता का वातावरण बनता, पुष्ट होता रहे। वहाँ पहुँचने वाले साधकों, श्रद्धालुओं के साथ मधुर व्यवहार करने और उचित मार्गदर्शन देने की व्यवस्था रहे। स्वच्छता के साथ सात्विक साज–सज्जा बनी रहे। वहाँ पहुँचने वाला हर व्यक्ति आध्यात्मिक ऊर्जा अनुदान पाता रह सके। इसके लिए भी इस प्रकार की रुचि और क्षमता वाले परिजनों की एक टोली को सेवा का दायित्व सौंपना चाहिए।

3. **संगठन व्यवस्था** – पीठ की वास्तविक एवं प्रत्यक्ष शक्ति उसके साथ जुड़े संगठन से ही सिद्ध होती है। किस–किस क्षेत्र में आध्यात्मिक ऊर्जा संचरित करने, युग निर्माण आन्दोलन को गतिशील बनाने के लिए पीठ का तंत्र जिम्मेदार है?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कहाँ–कहाँ मिशन का प्रकाश पहुँचा? कहाँ पहुँचना है? कहाँ–कहाँ संगठन बने? कहाँ बनने हैं? संगठनों की सक्रियता और प्रभाव में वृद्धि कैसे हो? कितने समयदानी–अंशदानी हैं? उनके समय–साधनों के नियोजन की, उनकी संख्या तथा योग्यता बढ़ाने की क्या व्यवस्था बने? इन सभी कार्यों को सुचारू रूप से चलाने, संभावनाएँ तलाशने और तद्नुसार व्यवस्थाएँ बनाने के लिए उपयुक्त रुचि एवं क्षमता वाले समर्थ समयदानियों की एक टीम को ये दायित्व सौंपे जाने चाहिए।

4. **आन्दोलन व्यवस्था** – युग निर्माण योजना का सबसे बड़ा आन्दोलन श्रेष्ठ व्यक्तित्वों का, श्रेष्ठ जनमानस का निर्माण है। साधना आन्दोलन इसी निमित्त है। किसी भी आन्दोलन की सफलता उसे चलाने वाले व्यक्तियों के व्यक्तित्व के स्तर पर निर्भर करती है। यह कार्य अपने आन्दोलन की धुरी है। मिशन के श्रेष्ठतम व्यक्तियों को अपने समय और कौशल का अधिकांश अंश इसी कार्य के लए लगाना चाहिए। इसी के साथ हर समयदानी को उसकी रुचि एवं क्षमता के अनुसार किसी रचनात्मक प्रवृत्ति में लगाने की व्यवस्था बनानी चाहिए। क्षेत्र में कहाँ–कहाँ किन आन्दोलनों को गति दी जा सकती है? अपने क्षेत्र में किस–किस क्षमता के कितने समयदानी हैं? उनमें से किन्हें किन आन्दोलनों में लगाया जा सकता है? उन्हें वांछित योग्यता प्रशिक्षण एवं संसाधान देने के लिए क्या व्यवस्था बनाई जा सकती है? इन सब बातों पर विचार करके उनके व्यावहारिक हल निकालते रहने के लिए भी इस कौशल के व्यक्तियों को जिम्मेदारी सौंपी जानी चाहिए।

संगठित तंत्र के प्रामाणिक अंग

पीठों में कानूनी व्यवस्था, आश्रम व्यवस्था, संगठन व्यवस्था एवं आन्दोलन व्यवस्था सँभालने वाले, उन व्यवस्थाओं को क्रमशः विकसित और पुष्ट बनाते रहने योग्य सक्षम समयदानी परिजन एकजुट होकर कार्य करने लगेंगे, उन्हें पूज्य गुरुदेव की योजना को साकार करने का श्रेय, सौभाग्य और पुण्य अर्जित करने में अवश्य सफलता मिलेगी। वे क्षेत्रीय परिजनों, सृजन सैनिकों को संगठन सूत्र में बाँधकर उनको योजनाबद्ध ढंग से सृजन कार्यों में लगाने का कौशल विकसित कर सकेंगे और पवित्र यश के पात्र बनेंगे।

साधना–संगठन सशक्तीकरण के अन्तर्गत परिजनों को मण्डलों में, मण्डलों को सक्रिय संगठित समूहों में गठित करने का अभियान चल रहा है। स–3 के प्रतिनिधियों को भी किसी पीठ, प्रखण्ड, तहसील या जिला स्तरीय संयुक्त समन्वय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समिति के साथ जुड़ने के लिए कहा जा रहा है। इन सभी प्रकार की समन्वय समितियों को निकटस्थ पीठों में अनेक प्रकार की सुविधाएँ दी जा सकती हैं। जैसे – कार्यालय स्थापित करना तथा समय–समय पर गोष्ठियाँ करना। समयदानियों के प्रशिक्षण सत्र, अथवा साधकों के साधना सत्र चलाना। आसपास के क्षेत्र के, विभिन्न आन्दोलनों के अनुभवी परिजनों से मार्गदर्शन पाना। पीठ से सम्बद्ध मण्डलों को पीठ की रसीद बुकें देकर उनके अर्थतंत्र को अधिक व्यवस्थित एवं अधिक प्रमाणिक रूप देना। सक्रिय संगठित समूहों एवं विभिन्न आन्दोलन समूहों और केन्द्र के बीच सूचना एवं सहयोग के आदान–प्रदान हेतु माध्यम बनाना।

जिन पीठों में ऊपर सुझाए गए सूत्रों के अनुसार व्यवस्था बनाई जा सकेगी उनके साथ क्षेत्र की संगठित इकाइयाँ बड़े चाव से जुड़ जाएँगी। पीठ से जुड़ी संयुक्त समन्वय समितियों के समर्थ समयदानियों में से ही ऊपर दर्शाए गए दायित्व सँभालने वाले कर्मठ व्यक्ति उपलब्ध होंगे। इससे पीठों की प्रतिष्ठा बढ़ेगी। मिलने वाले सहयोग में बढ़ोत्तरी होगी और क्षेत्र में युग निर्माण की गतिविधियों का विस्तार होगा, सभी प्रकार लाभ ही लाभ मिलेगा। लेकिन यह तभी संभव होगा, जब पीठों की व्यवस्था से जुड़े मूर्धन्य परिजन इस कार्य को उच्चस्तरीय साधना मानकर करेंगे। यदि कानूनी अधिकार से अहंकार से बचकर, पूज्य गुरुदेव के विश्वस्त शिष्य–सहायक की मानसिकता में पहुँचा जा सके, तो इसके लौकिक एवं पारलौकिक दोनों प्रकार के लाभ होंगे। प्रारंभ में नए अनुशासन स्वीकार करने और नए अभ्यास बनाने में कुछ कठिनाइयाँ अनुभव होंगी, लेकिन बाद में जो श्रेय, संतोष एवं दिव्य अनुदानों का नया प्रवाह खुलेगा, वह इस जन्म के साथ अगले जन्मों को भी धन्य बनाने में समर्थ होगा।

केन्द्र से ऐसी व्यवस्थाएँ बनाई जा रही हैं कि जो पीठें पूजा स्थली या गायत्री साधना के प्रचार केन्द्र से आगे बढ़कर ऋषि संकल्प के अनुरूप प्रज्ञापीठ, शक्तिपीठ की जिम्मेदारियाँ सँभालने को तत्पर हों, उन्हें परामर्श एवं सहयोग देकर आगे बढ़ाया जा सके। विश्वास है कि हर क्षेत्र में प्राणवान् परिजन अपने क्षेत्रों में स्थापित पीठों को इस धारा में आगे बढ़ाने के लिए नैष्ठिक प्रयास करेंगे।

अर्थानुशासन –

पूज्य गुरुदेव ने अपने अभियान की अर्थ व्यवस्था साधकों, सहयोगियों के श्रद्धा भरे अंशदान से चलाने की रीति–नीति निर्धारित की है। इसके लिए वे कहते रहे हैं कि हर साधक, सहयोगी देव प्रयोजनों के लिए कम से कम आधी रोटी या

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आधे कम चाय जितना अंशदान, अन्न या नकद रूप से अवश्य करे। सामर्थ्य और भावनानुसार अधिक अंशदान देने के लिए सबको छूट है। पूज्य गुरुदेव चाहते रहे हैं कि अपने संगठन की छवि समाज के सामने देवता, दाता की ही रहे; याचक की नहीं। अपनी श्रद्धा से हम जो अंशदान निकालें, उसी को एकत्रित करके पूरी ईमानदारी और भरपूर कौशल के साथ उसे खर्च करें। इस क्रम में भी भीतर से ईमानदार और बाहर से प्रामाणिक बने रहना आवश्यक है। जो लोग भीतर से ईमानदारीनहीं बरत पाते, वे गुरुसत्ता द्वारा स्थापित मर्यादाएँ तोड़ने के पात्र ही बनते हैं। जो लोग ईमानदार होते हुए भी अर्थ व्यवस्था की प्रामाणिक पारदर्शी व्यवस्था नहीं बना पाते हैं, जनविश्वास खो देते हैं और अपयश के पात्र बनते हैं।

प्रज्ञा मंडल/महिला मंडल आदि अपने क्षेत्र में साधकों, सहयोगियों को अंशदान एवं समयदान के लिए प्रेरित करें। प्राप्त साधन, धन एवं समय का सुनियोजित ईमानदारी और सूझबूझ के साथ करने की पवित्र जिम्मेदारी निभायें। अंशदान के नियोजन का क्रम यों बनायें – एक डुप्लीकेट पुस्तिका अथवा कापी पर अंशदान अंकित करके उस पर दाता के हस्ताक्षर करा लिया करें। साप्ताहिक सत्संग या पारिवारिक संस्कार सहयोग आदि में जो धन आरती या देव दक्षिणा में चढ़ता है, उसी के एक अंश से उस घर में युग साहित्य स्थापना या किसी पत्रिका को चालू करने का निर्णय भी लिया जा सकता है।

जो धन एकत्रित होता है, उसका हिसाब कर साप्ताहिक सत्संग में सबके सामने रखा जाता रहे। वही उसके खर्च के मदों पर भी चर्चा की जा सकती है। यदि उसका कुछ अंश केन्द्र या किसी पीठ में सहायतार्थ देना है तो वह निर्णय भी आम सहमति के साथ ही किया जाये।

परिजन जो मण्डल का स–3 का हिसाब सामने पास रखते हैं, वे भी अपने अंशानुदान को संयुक्त खाते में ही में जमा करें। इससे नुक्ताचीनी करने वालों को शान्त किया जा सकेगा और विश्वस्तों को उत्साहित किया जा सकेगा।

कुछ मण्डल अपने मण्डल के नाम से रसीदें छपवा लेते हैं, ऐसा करना विधि सम्मत नहीं है। ध्यान रहे कि जो संस्थान सरकारी रेवेन्यू (वित्तीय) अनुशासन में पंजीकृत (रजिस्टर्ड) नहीं है, उनकी छपाई गयी रसीदें प्रशासन की दृष्टि में वैधानिक नहीं होती। इसलिए किसी मण्डल को शांतिकुंज के रजिस्ट्रेशन के आधार पर ही रसीदें नहीं छपा लेनी चाहिए। वैधानिक अर्थानुशासन का परिपालन हम सबके लिए आवश्यक है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पीठों से तालमेल – यदि मण्डल या स–3 की समन्वय समिति के सदस्य अपने हिसाब को अधिक प्रामाणिक बनाने के लिए छपी रसीदों का उपयोग करना चाहें, तो उन्हें किसी प्रज्ञापीठ, शक्तिपीठ के रजिस्टर्ड ट्रस्ट की रसीदों का इस्तेमाल करना चाहिए। उसके लिए अनुशासन निम्नानुसार है – केन्द्र की ओर से पीठों के मूर्धन्य परिजनों को निर्देश दिए गए हैं कि वे अपनी कानूनी समिति के अलावा क्षेत्र के कर्मठ एवं प्रामाणिक परिजनों की एक कार्यकारिणी समिति भी बना कर रखें। यह समिति संगठन को अनुशासित ढंग से अपने साथ जोड़कर रखेगी।

किसी मण्डल को स–3 की समन्वय समिति या किसी (संसस) के नामित प्रतिनिधि (सम्पर्क सूत्र) पीठ के ट्रस्ट की रसीदों की माँग आवेदन पत्र देकर करेंगे। पीठ को कार्यकारिणी या संसस की संस्तुति पर पीठ का लेखा विभाग से आवश्यक संख्या में रसीदें इसू कर दी जाएँगी। पाने वाले उन्हें बाकायदा हस्ताक्षर करके प्राप्त करेंगे। उन रसीदों को अपने संगठन के मण्डलों के प्रामाणिक सदस्यों को सौंपने एवं उनसे हिसाब रसीदों सहित पीठ के लेखा विभाग को उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी वे ही नामित सदस्य सँभालेंगे। पीठ से रसीद लेने वाले मण्डल उन रसीदों के माध्यम से इकट्ठा किए गए स्वेच्छा सहयोग का हिसाब रखेंगे। हर माह या पीठ द्वारा निर्धारित अवधि में अपना हिसाब प्रामाणिक बाउचरों के साथ पीठ के लेखा विभाग के पास जमा करते रहेंगे। यदि उनके हिसाब में कोई कमी होगी, तो लेखा विभाग के सदस्य उन्हें इंगित करके ठीक कराएँगे।

हिसाब के साथ बची हुई शेष रकम जमा करना जरूरी नहीं है। मण्डल या स–3 के सदस्य उसे अपने पास रख सकते हैं, लेकिन उस राशि को औसत आवश्यकता से अधिक नहीं होने देना चाहिए। संचित पैसा अकारण तकरार एवं शक का कारण बनता है। बचत अधिक होने की स्थिति में उसे 'संसस' का साथ परामर्श करके पीठ या केन्द्र को दे देना चाहिए। इससे उस राशि का उपयोग किन्हीं अविकसित क्षेत्रों को विकसित करने या सृजन सैनिकों के लिए आवश्यक सूचनाएँ जुटाने के लिए किया जा सकेगा। बचत की सहयोग राशि के पीठ या संसस कार्यालय के स्तर पर संगीत उपकरण, साउण्ड सिस्टम, छोटे आयोजन के लायक शामयाने, बैनर, प्रदर्शनी आदि की व्यवस्था की जा सकती है। इससे छोटे–छोटे आयोजनों की लागत घटेगी और सुविधा बढ़ेगी। इस प्रकार जहाँ अर्थ व्यवस्था की प्रामाणिक एवं पारदर्शी व्यवस्था बनेगी, वहाँ आपसी विश्वास और सहयोग बढ़ता रहेगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रज्ञा संस्थान की जीवन्तता के लिए अनिवार्य प्रवृत्तियाँ
दैनिक गतिविधियाँ – आन्तरिक
प्रातःकालीन (समय प्रातः 4 से 9 बजे तक)

जागरण प्रार्थना, आरती, ध्यान एवं ऋषि चिन्तन (अमृतवाणी) कैसेट द्वारा।
प्रज्ञा गीतों की रिकार्डिंग।
प्रणाम दर्शन।
सद्चिन्तन लेखन (अमृत कण)
प्रज्ञा योग
यज्ञ संस्कार, सत्संकल्प का वाचन
भोग

मध्यकालीन (समय दोपहर 12 से 4 बजे तक)

ज्योति अवधारणा साधना
विचार विमर्श गोष्ठी
छोटी कक्षा के बच्चों के लिए बाल संस्कार शाला चलाना
प्रौढ़ शिक्षा शाला
सामूहिक श्रमदान

सायंकालीन (समय सायं 5 से रात्रि 9 बजे तक)

आरती–चालीसा
नादयोग
भोग
संकीर्तन/कथा–सत्संग/वीडियोदर्शन
रात्रिकालीन प्रार्थना/शयन।

दैनिक गतिविधियाँ (बाह्य)

दो घण्टा प्रतिदिन जन सम्पर्क।
नये परिजनों से – विशेष रूप से सेवा निवृत्त होने वाले हो चुके उनसे मिलने जुलने का क्रम, नये धर्मघट एवं अन्न घट स्थापित करने एवं यज्ञ संस्कारों के लिए लोगों को प्रेरित–प्रोत्साहित करने हेतु।
घर–घर जाकर विभिन्न यज्ञ–संस्कार आदि कार्यक्रम सम्पन्न कराना।
अंशदानियों से सम्पर्क, ज्ञान घटों एवं अन्न घटों की वसूली।
दीक्षितों, देवस्थापना, वेदस्थापना, वाङ्मय स्थापना कराने वालों से सम्पर्क।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्षेत्र में नियमित – झोला पुस्तकालय, ज्ञानरथ, दीवार लेखन, पत्रिकाओं का विस्तार एवं वितरण।

साप्ताहिक गतिविधियाँ (बाह्य एवं आन्तरिक)

प्रभात फेरी
सामूहिक साधना
दीवार लेखन
शक्तिपीठ परिसर की सम्पूर्ण सफाई
विद्यालयों में बच्चों के बीच गोष्ठी–मार्गदर्शन, प्रोत्साहन
अखण्ड ज्योति पत्रिकाओं के पाठकों का मूल्यांकन

मासिक गतिविधियाँ

माह में पड़ने वाले पर्व त्यौहार सामूहिक रूप से मनाना।
ट्रस्टियों एवं सक्रिय कार्यकर्त्ताओं की बैठक, कार्यकारिणी गोष्ठी।
मण्डलों की गोष्ठी, अन्य स्वयंसेवी संस्थाओं से सम्पर्क।
मिशनरी प्रगति रिपोर्ट केन्द्र शांतिकुंज भेजना।
माह में एक बार निकटवर्ती क्षेत्र में (10–15 या 20 कि.मी. की परिधि में) भ्रमण–सम्पर्क (ग्राम–प्रदक्षिणा, साईकिल यात्रा आदि)
रचनात्मक गतिविधियों के अन्तर्गत निकटवर्ती गाँव/नगर/मुहल्लों को चुनकर आदर्श ग्राम योजना के अन्तर्गत स्वच्छता अभियान, सामूहिक श्रमदान, हरीतिमा संवर्धन एवं स्थान–स्थान पर निःशुल्क चिकित्सा शिविर लगाना।

वार्षिक गतिविधियाँ

वार्षिकोत्सव मनाना।
रंगाई–पुताई।
क्षेत्र की सामाजिक धार्मिक संस्थाओं का सहयोग – सम्मान समारोह मनाना
समय पर आय–व्यय की आडिट रिपोर्ट शांतिकुंज भेजना।

अन्य अनिवार्यताएँ

(अ)

- प्रज्ञा संस्थान का बोर्ड लगाना।
- दिनचर्या का बोर्ड लगाना।
- गायत्री तीर्थ शांतिकुंज का लेमिनेटेड चित्र लगाना।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

- जगह–जगह पर प्रज्ञा संस्थान के स्थान की मार्गदर्शक पट्टिकाएँ लगाना विशेषतः नगर के प्रवेश द्वार के समीप पीठ परिसर में स्थायी सद्वाक्य लेखन।
- आवश्यक साज सज्जा–गमलों आदि की व्यवस्था, पुष्प वाटिका, स्वच्छता, सुसज्जा, सुरक्षा पर विशेष ध्यान देना।
- ध्वनि विस्तारक यंत्र की व्यवस्था।
- कम से कम 5 कुण्डीय यज्ञ से सम्बन्धित आवश्यक साधन–सुविधाओं की व्यवस्था।
- पूरे दिवस पीठ पर एक दो व्यक्ति की उपलब्धता।
- पुस्तकालय–वाचनालय/ज्ञान रथ साहित्य स्टॉल एवं प्रचार सामग्री की उपलब्धता।
- सत्संकल्प, आरती, चालीसा, एवं लाल मशाल का व्याख्या चित्र वाले स्थायी बोर्ड लगाना।
- समय–समय पर समयदानियों के लिए आवश्यक प्रशिक्षण, पंजीयन एवं नियोजन की व्यवस्था बनाना।
- प्रशिक्षित परिव्राजक की उपलब्धता।
- कार्यालय की व्यवस्था।
- आगंतुक अतिथियों का सुझाव रजिस्टर एवं कार्यक्रम माँग रजिस्टर।

(ब)

- ट्रस्टियों के मध्य तालमेल एवं समन्वय की रीति–नीति होना अनिवार्य है।
- ट्रस्टियों एवं कार्यकर्त्ता भाइयों के बीच आत्मीयता एवं खुलापन हो। सभी कार्यों में पारदर्शिता होनी चाहिए।
- ट्रस्ट मण्डल अथवा सम्पत्ति में कोई परिवर्तन करने हेतु शांतिकुंज से पूर्वानुमति प्राप्त करें। ट्रस्ट परिवर्तन का रिकार्ड रखें एवं उसका अनुमोदन शांतिकुंज से करावें। कार्यकारिणी का गठन अनिवार्य।

ट्रस्ट चार प्रकार की व्यवस्था समितियाँ जिसमें प्रत्येक में न्यूनतम 5 से 7 सदस्य हों –

- आश्रम (देवालय) प्रबंध समिति
- विधि एवं लेखा (वित्त) प्रबन्धन समिति
- संगठन प्रबंधन समिति
- आंदोलन प्रबन्ध समिति।
- मुख्य प्रबन्ध ट्रस्टी को कोई भी निर्णय अकेले नहीं लेना चाहिए। ट्रस्ट मण्डल के संयुक्त निर्णय पर कार्य करना चाहिए।
- दान पत्र अथवा अचल सम्पत्ति हेतु पट्टा या खसरा, दानपत्र या रजिस्ट्र

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

किसी व्यक्ति विशेष के नाम पर न होकर ट्रस्ट के नाम पर हो।

- समय–समय पर शांतिकुंज से परामर्श करना व उसे स्वीकार करना।
- ट्रस्टी–कार्यकर्त्ताओं की संयुक्त समन्वय समिति बने जिसमें स–3, स–4 नगरीय तहसील एवं विकासखण्ड/न्याय पंचायत स्तर के सक्रिय कार्यकर्त्ता जोड़े जायें।
- आंचलिक केन्द्र, उपकेन्द्र से सतत संपर्क एवं सूचनाओं के आदान–प्रदान का क्रम बने।
- ट्रस्टियों के व्यक्तिगत परिचय निर्धारित प्रारूप के अनुसार शांतिकुंज भेजें एक प्रति अपने कार्यालय में रखें।
- आपदा प्रबन्धन एवं पर्यावरण वाहिनी का गठन।
- स्वयंसेवी, सामाजिक, धार्मिक संस्थाओं में लाल मशाल पोस्टर–चित्र, सत्संकल्प की स्थापना।
- प्रबुद्ध वर्गों की प्रज्ञा परिषद की स्थापना, विद्यालय/महाविद्यालय में संस्कृति मण्डल का गठन।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

समर्थ समयदानियों का विकास एवं नियोजन –

परिजनों से अपील की गई है कि समय की माँग पूरी करने के लिए अपने–अपने क्षेत्र में समयदानी प्रतिभाओं को खोजने, गढ़ने, विकसित करने का महत्त्व समझें और क्रम अपनाएँ। ऋषि तंत्र के संरक्षण–मार्गदर्शन में जिस संगठन ने दर्जनों अश्वमेघ सफलतापूर्वक सम्पन्न किये, महाकुंभ स्तर का आयोजन चमत्कारी ढंग से सम्पन्न कर दिखाया, वह संगठन क्षेत्रीय माँगों की पूर्ति के लिए व्यक्तियों और संसाधनों के अभाव की बात करें, तो शोभा नहीं देता। लोग सांस्कृतिक आध्यात्मिक सूत्रों की ओर उपेक्षा बरतते थे, लेकिन युगऋषि के जीवन सूत्रों की ओर उनका ध्यान आकर्षित करने का संकल्पयुक्त प्रयास किया गया, तो अविश्वसनीय ढंग से जनरुचि उभरी। जनरुचि के आधार पर उनके समाधान के लिए उपयुक्त मार्गदर्शकों, सहायकों की आपूर्ति के लिए संकल्प युक्त प्रयास किये जाएँ, तो उसके भी ऐसे ही श्रेष्ठ परिणाम अवश्य प्रकट होंगे।

अस्तु:, मण्डलों, मण्डलों की समन्वय समितियों, नगर, जिला या शक्तिपीठ स्तर पर सुगठित संयुक्त समन्वय समितियों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे यह जिम्मेदारी सँभालें। समयदानियों की सुव्यवस्था बनाने के लिए उनके सक्षम सहयोगियों का प्रामाणिक तंत्र बनाएँ। ऐसा करने का संकल्प लेंगे, तो गुरु कृपा से उन्हें व्यवस्था का कार्य कौशल भी प्राप्त होगा और सेवा की उत्कृष्ट मनोभूमि विकसित करने के योग्य साधना पुरुषार्थ भी सिद्ध होगा। इससे लौकिक यश और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आध्यात्मिक श्रेय संतोष दोनों ही प्राप्त हो सकेगा।

कार्य–निर्धारण – पहले स्पष्ट किया जा चुका है कि व्यक्ति की रुचि एवं क्षमता के अनुरूप काम या काम की माँग के अनुरूप उपयुक्त व्यक्तियों को तलाशने और जिम्मेदारी सौंपने का क्रम चल पड़े, तो फिर न व्यक्तियों की कमी रहे और न कामों की। इसलिए यह प्रभावी तंत्र बनाने के लिए स–4 के सदस्यों को भी इसी कौशल का प्रयोग करना होगा। इस प्रयास में दो प्रकार की प्रक्रियाएँ अपनानी होंगी। 1. कुछ समर्थ समयदानी ऐसे मिलेंगे, जो किसी एक धारा का पर्याप्त अनुभव रखते हैं। उन्हें तत्काल उसी धारा में प्रयुक्त किया जा सकता है। 2. कुछ ऐसे परिजन होंगे, जिनके पास समय है, प्रतिभा भी है, लेकिन जो कार्य करना है उसका अनुभव नहीं है। ऐसों को प्रशिक्षित करके, न्यूनतम आवश्यक अनुभव देकर फिर काम सौंपा जा सकेगा। दोनों ही प्रक्रियाओं को समयानुसार लागू करते रहने की व्यवस्था बनानी होगी।

कार्य कौन से हाथ में लें? कहाँ से शुरू करें? किस तरह के व्यक्तियों को उसकी जिम्मेदारी सौंपे? इस संदर्भ में कुछ सूत्र संकेत यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

(क) प्रचारक–प्रवक्ता – हर क्षेत्र में नए लोगों, ग्रामों, मुहल्लों, संस्थानों में यह तथ्य समझाने वाले कुशल समयदानी चाहिए कि यह युग परिवर्तन का महत्वपूर्ण समय है और अपने जीवन में सुख, शांति की प्रगति के लिए ऋषि प्रेरित जीवन जीने की कला के सूत्र अपनाने में लाभ ही लाभ है। सामान्य रूप से अपने मिलने वालों से वार्ता के दौरान तो लोग अपनी बात कह भी लेते हैं, लेकिन समूह में, गोष्ठियों–सम्मेलनों में ढंग से अपनी बात प्रस्तुत करने की कला कुछ ही लोग विकसित कर पाते हैं। जिनमें समझने और समझाने की स्वभाविक क्षमता हो, उन्हें इस श्रेणी के समर्थ समदानियों में रखा जा सकता है। शिक्षकों, वकीलों, एजेण्टों में यह क्षमता स्वाभाविक रूप से होती है। उन्हें पूज्य गुरुदेव की पुस्तकें देकर, उनके अनुसार प्रवचन तैयार करने के लिए प्रेरित–प्रशिक्षित करना कठिन नहीं है।

यदि इस कोटि के समयदानियों का समूह विकसित पंजीकृत कर लिया जाये, तो शिक्षण संस्थाओं, देवालयों, विभिन्न क्लबों, स्वैच्छिक संगठनों में अपनी बात पहुँचाने का एक सुव्यवस्थित तंत्र किसी भी क्षेत्र में विकसित किया जा सकता है। देश और विदेश में बहुत बड़ी संख्या में लोग युगऋषि के व्यावहारिक मार्गदर्शक सूत्र जानना चाहते हैं। हर क्षेत्र में बड़ी संख्या में ऐसे समयदानी उभरें, तभी समय की मांग की आपूर्ति की जा सकेगी।

यह कार्य जरा भी कठिन लगे, तो पूज्य गुरुदेव के निर्देशों को ध्यान में रखा जाए। उन्होंने कहा है 'मुझे वक्ता नहीं, नैष्ठिक संदेश वाहक चाहिए' वक्ता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपने ज्ञान का अहंकार दिखाने लगता है, जिसे लोग पसंद नहीं करते। संदेश वाहक श्रद्धा एवं विनम्रतापूर्वक सिद्ध पुरुष का उपयोग संदेश नपे–तुले शब्दों में प्रस्तुत करता है, तो लोग उसे सहज ही समझ भी लेते हैं और अपना भी लेते हैं। उन्हीं की पुस्तकों से (पोइन्ट्स) बनाए जाएँ, उपयुक्त उदाहरण के साथ दिए जाएँ, तो बात बन जाती है।

विद्यालयों में संदेश देना हो, तो नैतिक शिक्षा (दोनों भागों) में से रुचि एवं आवश्यकता के अनुरूप विषय चुने जा सकते हैं। पुस्तक में विषयों के प्रतिपादन के साथ उपयुक्त उदाहरण तथा इस संदर्भ में उठने वाले प्रश्न भी दिए गए हैं। जीवन निर्माण, व्यसन कुरीतियों से बचाव, देश एवं समाज सेवा के सूत्र सभी प्रकार के विषय उसमें है। चयन और प्रस्तुतीकरण का कार्य बहुत कठिन नहीं है।

देवालयों में दीपयज्ञ के माध्यम से युग धर्म की बात समझाना सबके लिए सद्बुद्धि, सबके लिए उज्ज्वल भविष्य की प्रार्थना करना, समझाना; उपासना, साधना–आराधना आदि का स्वरूप स्पष्ट करना; प्रज्ञा पुराण कथा के माध्यम से युग धर्म एवं श्रेष्ठ जीवन का मर्म समझाना, थोड़े से अभ्यास से ही संभव हो सकता है।

विभिन्न संगठनों में क्रान्तिधर्मी साहित्य के आधार पर प्रवचन संदेश दिए जा सकते हैं। युग की माँग प्रतिभा परिष्कार, मनःस्थिति बदले तो परिस्थिति बदले, परिवर्तन के महान् क्षण, जीवन देवता की साधना–आराधना जैसे विषयों को पुस्तकों के आधार पर कोई भी कुशल वक्ता थोड़ी–सी तैयारी से ही प्रस्तुत कर सकता है।

इस प्रकार क्षेत्र में प्रचारक–प्रवक्ता स्तर के समयदानियों की आपूर्ति थोड़े प्रयास से ही की जा सकती है। प्रशिक्षण के लिए शांतिकुंज का भी सहयोग किसी सीमा तक लिया जा सकता है। प्रचारकों, प्रवक्ताओं की आपूर्ति का कार्य इस क्रम में सबसे सुगम है। आगे के कार्य कुछ और अधिक गंभीर प्रयासों से पूरे हो सकेंगे।

(ख) प्रेरक–पुरोहित – प्रचारकों–प्रवक्ताओं से अथवा साहित्य या सम्मेलनों से प्रभावित होकर लोग आध्यात्मिक जीवन सूत्रों को अपनाने के लिए उत्साहित हो जाते हैं। उनमें से कई दीक्षा या देव स्थापना भी लेते हैं। कुछ चुपचाप उपासना या स्वाध्याय से जुड़ जाते हैं। ऐसे लोगों को प्रेरणा, प्रोत्साहन तथा मार्गदर्शन की जरूरत बार–बार पड़ती है, कभी उनका अपना मन कमजोर पड़ जाता है तो कभी कोई बहकाने लगता है। कभी परिस्थितियाँ दबाव डालती हैं। कभी उनके मन में जिज्ञासाएँ उठती हैं, असमंजस उभरते हैं, जिनका समाधान समय पर न होने से मन कुंठित होता है। इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भी समर्थ समयदानी परिजनों में पर्याप्त संख्या में साधक मनोभूमि के व्यवहार कुशल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

व्यक्ति चाहिए। इनमें साधकों, सृजन सैनिकों की जिज्ञासाओं का समाधान करने की क्षमता के साथ उन्हें स्नेह, आत्मीयता देने की भी सामर्थ्य होनी चाहिए। यदि ऐसे व्यक्तियों की आपूर्ति न की जा सकी, तो प्रचारकों, प्रवक्ताओं का प्रयास थोड़े ही समय में अपना प्रभाव खोता रहेगा। युग ऋषि की कृपा से अपने परिजनों में ऐसे व्यक्ति भी पर्याप्त संख्या में पाए और उभारे जा सकते हैं।

(ग) **प्रशिक्षक, संगठक** – उक्त वर्गों के साथ इस वर्ग के समर्थ समयदानी भी हर क्षेत्र में चाहिए। गायत्री परिवार की संगठित इकाइयाँ विकसित करने और उन्हें मजबूत बनाने के लिए ऐसे ही समयदानी काम आएँगे। हर क्षेत्र में साधना, शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलम्बन, पर्यावरण, कुरीति एवं व्यसन उन्मूलन तथा नारी जागरण आन्दोलनों को गति देना जरूरी है। हर आन्दोलन में नये–नये लोग जुड़ते ही रहते हैं। उन्हें संगठित रखना जरूरी होता है। संगठनों के सामने तमाम कठिनाइयाँ आती हैं, उन्हें हर करने के लिए उनहें समर्थ सहयोग की जरूरत होती है। समर्थ समयदानियों में से कुछ को उनकी रुचि एवं क्षमता से अनुरूप यदि प्रशिक्षण एवं संगठन की प्रनिया की अधिक प्रभावशाली बनाते रहने की जिम्मेदारी सौंपी जाए, तो हर क्षेत्र में संख्या एवं गुणवत्ता (क्वान्टिटी और क्वालिटी) दोनों दिशाओं में असामान्य प्रगति होती देखी जा सकती है।

(घ) **समीक्षक नियोजक** – ऊपर वर्णित योग्यताओं वाले समयदानियों की पूरी क्षमता का उपयोग कैसे हो? उनके कार्यों के परिणाम श्रेष्ठ से श्रेष्ठतर कैसे निकलें? व्यक्तियों के लिए उपयुक्त क्षेत्र एवं क्षेत्रों क लिए उपयुक्त व्यक्तियों की व्यवस्था कैसे अधिक प्रभावी बने? इन सब विषयों का समीक्षात्मक अध्ययन करते हुए निष्कर्षों के आधार पर कार्यशैली बनाने एवं उसे क्रियात्मक रूप देने की व्यवस्था बने, तो उक्त सभी वर्गों के विशिष्ट समयदानियों की शक्ति का भरपूर लाभ उठाया जा सकता है। इस प्रयोजन को प्राथमिकता देते हुए, इस कौशल में प्रवीण कुछ परिजनों को जिम्मेदारी भी सौंपनी चाहिए।

उक्त सभी विशेष क्षेत्र में अपने विषय का कौशल होना जितना जरूरी है, उतना ही जरूरी है उनके अन्दर उसके अनुरूप आध्यात्मिक स्तर। वे अपने कार्य को ऋषितंत्र द्वारा सौंपा हुआ पवित्र कार्य समझें। कार्य करने वालों को प्यार एवं सम्मान देते हुए उनके सहयोगी बनकर रहें। जो सिद्धान्त वे बताते हैं, उन पर चलने का नैष्ठिक प्रयास स्वयं भी करते हों, यह जरूरी है। युग ऋषि द्वारा निर्दिष्ट इन सूत्रों को व्यवहार में लाकर हर क्षेत्र में तेजस्विता विकसित की जा सकती है। इन दिशा में प्रयास करने वालों को शांतिकुंज का उपयुक्त योगदान और युग ऋषि का शक्ति प्रवाह भी मिलता रहेगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अन्य संगठनों से तालमेल –

युग ऋषि का मिशन महान् है। युग निर्माण जैसे महान् लक्ष्य की पूर्ति किसी एक अकेले संगठन के द्वारा संभव नहीं है। पूज्य गुरुदेव ने युग निर्माण परिवार या गायत्री परिवार नामक संगठन 'युग निर्माण' के ऋषि संकल्प में अधिकाधिक संस्कारवारों की भागीदारी बढ़ाने के लिए ही किया है। अस्तु अपने संगठन के विस्तार के प्रयास के साथ ही नवसृजन की दिशा में निष्ठापूर्वक कार्य कर रहे अन्य संगठनों के साथ भी समन्वय, सहयोग स्थापित करना जरूरी है।

पूज्य गुरुदेव सूक्ष्मीकरण साधना के बाद यह कहने लगे थे कि सन् 2000 के बाद युग निर्माण का प्रवाह जगह–जगह से फूट–फूट कर उमड़ेगा। ऐसा भाव स्पष्ट दिखाई देने लगा है। आदर्श व्यवस्था के लिए व्यवस्थापकों के जीवन में आध्यात्मिक सूत्रों का जीवन मूल्यों का होना जरूरी समझा जाने लगा है। आदर्श समाज व्यवस्था के लिए पारिवारिक संवेदना युक्त रीति–नीति को विज्ञानीजनों में भी मान्यता दी जा चुकी है। अस्तु: जो भी समर्थ व्यक्ति अपना संगठन श्रेष्ठ समाज की स्थापना के लिए प्रयत्नशील हैं, उन्हें नवसृजन के उद्देश्यों के लिए एक जुट करना भी सृजन सैनिकों का दायित्व बनता है।

युगऋषि ने युगशक्ति के प्रतीकात्मक रूप में 'लाल मशाल' को स्थापित किया है। इसकी व्याख्या सहित चित्र विभिन्न आकारों में प्रकाशित किए जा चुके हैं। जनसमूह में हर वर्ग के अच्छे विचार और अच्छी चाह वाले कर्मठ नर नारी है। इनकी संयुक्त शक्ति का प्रतीक समूह के बीच में उभरा हाथ है। हाथ की मशाल अज्ञान, अभाव, अशक्ति को दूर हटाकर विवेक, समृद्धि एवं सद्शक्ति साधना समाज की स्थापना के सृजनात्मक संकल्प की प्रतीक है। ज्वाला सृजन की ऊर्जा है, जो मनुष्यों के पुरुषार्थ एवं युगशक्ति के संयोग से उभरती है। उसका आभा मण्डल ईश्वरीय सत्ता के समर्थ संरक्षण–समर्थन का बोध कराता है।

हमें स्वयं समझना चाहिए तथा अन्य समझदारों को समझाना चाहिए कि युगशक्ति का, युगदुर्गा का युगीन स्वरूप यही है, जिसे जगह–जगह उभरना और सक्रिय होना है। इस महान तथ्य का सतत स्मरण दिलाते रहने के लिए जगह–जगह 'लाल मशाल' के व्याख्यायुक्त चित्र स्थापित करने कराने का क्रम भी बहुत हितप्रद होगा। इसके लिए संकल्पयुक्त प्रयास किए जाने चाहिए। इसी के साथ श्रेष्ठ व्यक्तियों–संगठनों के संयोग से जगह–जगह युगशक्ति की जीवन्त इकाइयाँ विकसित करने में अपनी भूमिका निभानी चाहिए। पूज्य गुरुदेव ने इसके लिए स्पष्ट निर्देश देते हुए अपने विचार व्यक्त किये हैं कि हम अपना मंच तो हर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

किसी को नहीं दे सकते; किन्तु सत्कार्यरत किसी भी संगठन या व्यक्ति को अपने कार्यक्रमों और सहयोग का लाभ अवश्य दे सकते हैं।

अस्तु; नवसृजन के लिए उपयोगी किसी भी कार्य में लगे व्यक्तियों या संगठनों को प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं सहयोग देने का क्रम तत्परता और कुशलता पूर्वक करते हैं। उनके कार्यों एवं रीति–नीति का अध्ययन करें। मिशन के उद्देश्यों के अनुरूप जो कार्य लगें उनकी उचित सराहना के साथ सहयोग देने की भी व्यवस्था बनाएँ। शतसूत्रीय कार्यक्रम के अन्तर्गत सज्जनता का सहयोग तथा सत्कार्यों के अभिनन्दन की रीति–नीति अपनाई जानी चाहिए।

जब उनके साथ आपसी समझ (अंडरस्टैण्डिंग) बनने लगे, तो उन्हें उनके द्वारा किये जाने वाले कार्यों के अनुरूप विचार क्रान्ति के सूत्रों का बोध कराया जाये। उनके कार्यों से सम्बंधित युग साहित्य उन्हें (सशुल्क या निःशुल्क) उपलब्ध करा या जाये। नवसृजन के लिए विचार क्रान्ति की आवश्यकता महत्ता समझाते हुए उन्हें उसके विभिन्न पक्षों से जोड़ा जाए। इससे कार्यों में समग्रता–प्रभावशीलता बढ़ेगी और परस्पर निकटता–आत्मीयता का बोध होगा।

विचार क्रान्ति के सूत्र जब उनकी समझ में आने लगें, तो नैतिक क्रान्ति के सूत्रों का बोध कराया जाये। आस्था संकट और उसके निवारण के मर्म उन्हें समझाए जाएँ। समझाया जाय कि मनुष्य महान् है लेकिन उससे भी महान् है उसका सृजेता–परमात्मा। श्रेष्ठतम आदर्शों का समुच्चय ही परमात्मा का वह रूप है। जिसको सहज लक्ष्य करके मनुष्य आगे बढ़ सकता है। वैश्वचेतना के साथ सम्पर्क बनाए रखकर इस आपाधापी के युग में कोई भी व्यक्ति मनुष्योचित नैतिक बल का इतना सम्पादन कर सकता है कि स्वयं भी अविचलित रहकर लक्ष्य की ओर बढ़ता रहे और दूसरे बहुतों को भी बढ़ाने में समर्थ हो सके। इसके लिए 'सबके लिए सद्बुद्धि सबके लिए उज्ज्वल भविष्य' की प्रार्थना से लेकर प्रखर जीवन साधना के क्रम अपनाने, उन पर आगे बढ़ाने के लिए प्रेरणा एवं सहयोग देने का क्रम बनाये रखा जाये।

इस प्रकार युग चेतना की प्रेरणाओं का एक अंश पकड़कर बढ़ने वालों को भी क्रमशः समग्रता और समरसता की ओर बढ़ाया जा सकेगा। श्रेष्ठ व्यक्तियों और संगठनों की विशेषताओं का सुसंयोग ही 'युगदुर्गा' के अदम्य रूप में प्रकट होगा।

सृजन सैनिक सावधान रहें

हमारे देव परिवार के सदस्यों को अपना विकास युग ऋषि द्वारा निर्देशित

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सूत्रों के अनुसार ही करना चाहिए। जिस समाज को दिशा देने के लिए हम ऋषिसत्ता से जुड़े हैं, यदि उसी समाज के रोगों के हम शिकार होने लगेंगे, तब बात कैसे बनेगी? विकारों–विसंगतियों से बचने तथा सही दिशा में आगे बढ़ते रहने के लिए एक मार्गदर्शिका पूज्य गुरुदेव द्वारा समय–समय पर दिए गए निर्देशों को संकलित करके छापी गई है उसका नाम है 'लोक सेवियों के लिए दिशाबोध।'

संसार के महामानवों द्वारा किये गये महान् कार्यों की सफलता के पीछे जहाँ अनेक अन्य सुयोगों की भूमिका रही है, वहाँ एक बड़ी बात निश्चित रूप से रही है कि वे अपने स्तर के अनेक साथी–सहयोगी जुटाने में भी सफल हुए हैं। संयुक्त शक्ति ने एक–दूसरे का साहस बढ़ाया है। लोगों की दृष्टि में उनके प्रामाणिक, वजनदार होने का विश्वास जगाया है।

क्षुद्रता का एक बड़ा घातक दुर्गुण यह होता है कि वह एकाकी श्रेय–लाभ के लिए आतुर रहती है। दूसरों के द्वारा दिये गये सहयोग का मूल्यांकन नहीं करती। श्रेय की लालसा जब अति की सीमा तक पहुँचती है, तो मण्डली का गुणगान करने की अपेक्षा स्वयं के कौशल का ही बखान करने लगती है। विग्रह यहीं से खड़ा होता है और संगठनों में टूट–फूट हो जाती है – इस खतरे को समझते हुए दूरदर्शी लोगों का दृष्टिकोण यह रहता है कि वे 'मैं' के स्थान पर 'हम' का ही प्रयोग करते हैं। इससे श्रेय विभाजित होकर प्रकारान्तर से सभी के हिस्से में आ जाता है। और अपने को पीछे रखने की स्थिति में साथियों की गौरवान्वित होने की लालसा का पोषण हो जाता है। सत्प्रयोजनों के लिए खड़े किये गये संगठनों के स्थायित्व में यह एक बड़ा कारण है कि श्रेय के लिए छीना–झपटी का अवसर न आने पाये, वास्तविक संगठक एक कदम पीछे रहें।

क्षुद्रता का एक दूसरा पक्ष भी है कि किसी प्रयास का संचालक–संयोजक बनने के लिए आतुरतापूर्वक लालायित होना। जब समूह का हर व्यक्ति अपनी प्रमुखता दिखाने का प्रयत्न करता है, तो अन्य साथियों में भी वैसी ही ईर्ष्या जगना स्वाभाविक है। संस्थाओं में पदाधिकारी बनने के प्रश्न पर प्रायः खींचतान–पार्टीबन्दी हो जाती है और उस उद्देश्य को ही नष्ट करती है, जिसके लिए संगठित या एकत्रित हुए थे।

इनसे बचें – सार्वजनिक जीवन में प्रवेश करने वालों को तीन एषणाओं से बचे रहने का भरसक प्रयत्न करना चाहिए – पुत्रैषणा, वित्तैषणा, और लोकैषणा। पुत्रैषणा का अर्थ है – संतान की संख्या अधिक बढ़ा लेना और उन्हीं को सुसम्पन्न

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बनाने का ताना–बाना बुनते रहना। मोह इसी स्थिति का नाम है। दूसरा दुर्गुण है – वित्तैषणा, धन–वैभव की लिप्सा। इस कारण लोकसेवी का चरित्र गिरता है, विश्वास उठता है और आत्मबल में कमी आती है। लोकसेवा के क्षेत्र में प्रवेश करने वालों को औसत नागरिक स्तर का ही निर्वाह अपनाना चाहिए, अन्यथा लोग अनुमान लगाते हैं कि सार्वजनिक क्षेत्र से ही कुछ कमाया और जमा किया गया है। इस प्रकार के सन्देह की गुंजायश न रहे, इसी में सेवा–संगठनों में काम करने वालों की शान है।

तीसरी सबसे भयंकर है – लोकैषणा। यश, लालसा, बड़प्पन सिद्ध करने के लिये रचे गये प्रपंच। अपने को समुदाय का वरिष्ठ सिद्ध करने के लिए अपनी ओर से किया गया प्रयास इसी श्रेणी में आता है, उससे लाभ के स्थान पर हानि होती है। लोग इस दुर्बलता को सहज भाँप लेते हैं और किये गये सेवा कार्यों को भी विज्ञापनबाजी कहकर व्यंग्य–उपहास करने लगते हैं। श्रद्धा चली जाती है और सम्मान तथा विश्वास घट जाता है, सेवा कार्यों के लिये जो समयदान–अंशदान आदि किया गया था, उसके बदले श्रेय लूट लेने पर लोग आरोप लगाते और आक्षेप लगाने लगते हैं। इसीलिये दूरदर्शी लोग अपना सम्मान बनाये रखने के लिए दूसरों को यश देने और स्वयं पीछे रहने की नीति अपनाने हैं।

समूहों का स्वरूप प्रकारान्तर से संगठन जैसा बन जाता है। उसमें कार्य संचालन के लिये पैसा भी किसी न किसी प्रयोजन के लिए जमा होता है। इसका हिसाब–किताब ऐसा रखा जाय, जिसमें किसी शंकाशील को भी अँगुली उठाने का अवसर न मिले। यदि अपना कुछ वास्ता हिसाब से हो, तो उस आय–व्यय को बिना पूछे ही इस प्रकार बनाते रहना चाहिए, इससे चर्चा का विषय बनने से पूर्व ही स्थिति का समाधान होता रहे। किसी के द्वारा किया गया सेवा कार्य कितना ही बड़ा क्यों न हो, पर यदि यश, लिप्सा और पैसे के घोटाले सम्बंधी आक्षेप लगने लगे तो अपनी और संगठन दोनों की ही प्रकारान्तर से क्षति होती है। इस सन्दर्भ में जितना अधिक पाक–साफ रहा जाय उतना ही अच्छा है।

प्रदर्शन नहीं प्रवृत्ति – संगठन का प्रदर्शन भी कहीं–कहीं जरूरी होता है। लेकिन उसमें स्थिरता और प्रभावोत्पादकता तभी आती है, जब वह प्रदर्शन ही न रहे– प्रवृत्ति भी बन जाए। पू. गुरुदेव ने इस संदर्भ में कठिन समय में एक दूसरे के साथ रहने और सहयोग देने के विश्वास को प्रमुख आधार कहा है। जहाँ परस्पर के विश्वास का क्षेत्र सीमित है, वहाँ संगठन का व्यापक एवं प्रभावी होना किसी तरह संभव नहीं हो सकता। अस्तु; एकल निष्ठा को समूह निष्ठा में, मैं को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हम में बदलने की साधना हर संगठक को करनी ही होगी। साथ ही श्रेय सम्मान के उदार वितरण को भी स्वभाव एवं तंत्र का सहज अंग बनाना होगा। देवों के पातक से बचें – एक बार पू. गुरुदेव ने एक वेद मंत्र का भाष्य समझाया, जिसमें प्रार्थना की गई है – हे परमात्मा! हमें देवों के पातक से बचाएँ। दुष्ट या असुर प्रवृत्ति के लोग अपनी सुख सुविधाओं के लिए लड़ पड़ते हैं। देवगण असाधारण गुण एवं शक्तियों के धनी होते हैं। अपने गुणों और शक्तियों का बोध और उनके प्रति आत्म विश्वास भी होना जरूरी है, लेकिन अपनी विशेषताओं से सम्मोहित होकर जब दूसरों की विशेषताओं को नकारा जाने लगता है तब देव भी विपत्ति में फँसने लगते हैं। देवों का एक–एक करके असुरों से लड़ते जाना और पराजित होना उनकी इसी दुर्बलता का प्रतीक है। केनोपनिषद् में कथा है कि दिव्य यक्ष द्वारा रखे एक तिनके को अपनी एकाकी शक्ति से वरुण बहा न सके, पवन उड़ा न सके, अग्नि जला न सके, इन्द्र तोड़ न सके। यह प्रसंग भी देव शक्त्यिों की सीमा, मर्यादा का बोध कराने के लिए ही है।

पू. गुरुदेव ने युग निर्माण के ईश्वरीय संकल्प में भागीदारी के लिए देव परिवार के गठन की बात कही है। यह सच है कि युगऋषि द्वारा निर्दिष्ट साधना ने बड़ी संख्या में मनुष्यों में देवत्व का विकास किया है। जगह–जगह देव परिवार की छोटी संगठित इकाइयाँ बन गई हैं। इस मुकाम पर आकर हमें अपने इष्ट प्रयोजन की सिद्धि के लिए देवों के पातकों से बचने के लिए भी समुचित साधना करनी होगी। युगऋषि के निर्देशों के प्रकाश में आत्म समीक्षा करें और देखें कि सत्प्रयासों के बीच चूक कहाँ–किस रूप में हो रही है? उस समीक्षा के आधार पर विविध साधना (बुद्धं शरणं, धम्मं शरणं एवं संघं शरण) का स्तर बढ़ाएँ, तो साधना संगठन सशक्तीकरण की दिशा में हर क्षेत्र में सराहनीय प्रगति हो सकती है।

मान्यता एवं पुरुषार्थ निखारें – देव प्रयोजन से जुड़ा हर परिजन और हर संगठित इकाई यह मानकर चले कि – हम ऋषि तंत्र के साथ पूर्व संस्कारों के आधार पर जुड़े हुए हैं। देवत्व का विकास और ईश्वर के साथ साझेदारी हमारे लिए सहज स्वाभाविक प्रक्रिया के अंग हैं। यदि हमें ऐसा नहीं लगता तो कहीं आत्म दर्शन–आत्म परिष्कार–आत्मबोध में कमी है।

हमारे अन्दर देवत्व का स्तर हर चरण पर बढ़ता रहना चाहिए। अंत:करण में देवत्व का स्तर सुधरे बिना अगले चरण के युगधर्म के पालन की जिम्मेदारी उठाना संभव नहीं होगा।

देवत्व को संगठित होना ही है। वरुण, वायु, अग्नि आदि शक्ति धाराएँ देव

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धाराएँ हैं। यह सभी अपने आप में समर्थ हैं – सफल हैं, लेकिन इनमें से कोई भी प्रकृति का रक्षण–पोषण अकेले नहीं कर सकती। इसलिए इन्हें अपनी भिन्न भिन्न प्रकृतियों के बावजूद भी अपने–अपने गुणों को एक–दूसरे में समर्पित करके प्रकृति चक्र प्रकृति यज्ञ चलाना पड़ता है। देव परिवार की छोटी–छोटी संगठित इकाइयाँ भी ऐसी ही देव धाराओं के रूप में है। वे अपने क्षेत्र में सफल और समर्थ भले हों, युग सृजन के यज्ञ में अकेले सफल नहीं हो सकतीं। उन्हें अपनी स्वभावगत भिन्नताओं को परे हटाकर परस्पर सहयोग की साधना करनी ही पड़ेगी। यदि देवों के पातकों से अपनी रक्षा न की जा सकी, विशेषता का अहं भुलाकर संगठित समग्रता की ओर न बढ़ा जा सका, तो बात बनेगी नहीं। अस्तु, देवत्व के स्वाभिमान का बोध करते हुए भी देवों के पातक से बचने की साधना तो हम सबको करनी ही होगी।

संगठन के विकास और उसे प्रभावी बनाने के लिए जो विश्वास और सहयोग चाहिए, उसे हीनता या अहंता के विकास ही नहीं पनपने देते। जिस प्रमाणिकता एवं पारदर्शिता की जरूरत पड़ती है, उसे अपनी क्षुद्रताजन्य अहंता ही नहीं साधने देती। अन्यथा देव परिवार के सदस्यों के लिए ऋषि सत्ता से जुड़े साधकों के लिए ऐसा कर पाना जरा भी कठिन नहीं है।

अस्तु, साधना संगठन सशक्तीकरण के लिए क्षुद्र अहंता के विष से बचना और विनम्र समर्पण के अमृत का पान करते रहना जरूरी है। पू. गुरुदेव ने जिन युगानुकूल जीवन सूत्रों को हमारे लिए जाग्रत किया है, उनका सेवन करना, उन्हें अपनाना–आत्मसात करना ही हमारे लिए सुख, श्रेय एवं सौभाग्य का आधार बन सकता है।

संयुक्त समन्वय समिति की कार्ययोजना –

1. प्रज्ञापीठ / शक्तिपीठ / चरणपीठ / निर्माणाधीन पीठ / प्रज्ञा सत्संग हॉल / प्रज्ञामंडल / महिला मंडल / संस्कृति मण्डल / शाखा / सक्रिय संगठित समूह / रचनात्मक केन्द्र के क्रियाकलाप को व्यवस्थित एवं सुनियोजित बनाने के लिए विकासखंड (प्रखण्ड) / तहसील स्तर पर एक समन्वय समिति गठित की जाये।
2. निर्धारित क्षेत्र में स्थित प्रज्ञापीठ / शक्तिपीठ / चरण पीठ / निर्माणाधीन पीठ / प्रज्ञा सत्संग हॉल / प्रज्ञा मंडल / महिला मंडल / शाखा / सक्रिय संगठित समूह / रचनात्मक केन्द्र के आय–व्यय का लेखा–जोखा–अपनी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आर्थिक पारदर्शिता रखने हेतु – ट्रस्ट के दो ट्रस्टी, स्थानीय शाखा/मंडल/ स–3 के दो–दो एवं तहसील समन्वय समिति के दो नामित सदस्य (न्यूनतम 11 सदस्यीय) संयुक्त व्यवस्था बनायें। दान पात्र/रसीद बुकें/ज्ञानघट/साहित्य अन्य प्रचार सामग्री आदि (दीगर) का आर्थिक नियंत्रण, व्यवस्था, समीक्षा उपर्युक्त संयुक्त व्यवस्था के सदस्यों द्वारा ही की जाये।

3. क्षेत्र का कोई भी प्रज्ञा मंडल/महिला मंडल/शाखा/ संस्कृति मंडल अपने स्तर पर अलग से दान की रसीद बुक छपवायें और न कहीं उपयोग करें। अपने समीपवर्ती रजिस्टर्ड गायत्री परिवार ट्रस्ट से (जो शांतिकुंज एवं स्थानीय चेरिटी कमिश्नर द्वारा पंजीकृत हो) से दान की रसीद बुक लेकर उपयोग करें तथा उसका हिसाब सम्बंधित ट्रस्ट को देते रहें।

4. प्रत्येक प्रज्ञापीठ/शक्तिपीठ में शांतिकुंज से प्रशिक्षित स्थानीय अथवा क्षेत्रीय सुयोग्य व्यक्ति को परिव्राजक के रूप में नियुक्त करें। उनके साथ मिशन के समर्पित समयदानी स्थानीय सक्रिय कार्यकर्त्ता भाई–बहनों की टीम सहयोग हेतु तैयार करें। प्रचारक, पुरोहित, प्रशिक्षक, नियोजक की टीम क्षेत्रीय स्तर पर प्रशिक्षण के माध्यम से विकसित करें।

5. मिशन को व्यापक एवं गतिशील बनाने के लिए अविकसित क्षेत्रों में नये प्रज्ञामंडल, महिला मंडल, संस्कृति मंडल, सक्रिय संगठित समूह का गठन करें एवं मिशन की पत्रिका अखण्ड ज्योति, युग शक्ति गायत्री, युग निर्माण योजना, पाक्षिक प्रज्ञा अभियान, युग प्रवाह वीडियो मैगजीन के अधिकतम नये सदस्य बनायें।

6. निर्धारित क्षेत्र में स्थित किसी भी संगठित इकाई–प्रज्ञापीठ/शक्तिपीठ/चरण पीठ/ निर्माणाधीन पीठ/ प्रज्ञा सत्संग हॉल/ प्रज्ञामंडल/ महिला मंडल/ शाखा/ सक्रिय संगठित समूह/ रचनात्मक केन्द्र में किसी प्रकार का आपसी मतभेद, विरोध, विवाद, असहमति होने पर उसका समाधान जिला संयुक्त समन्वय समिति द्वारा केन्द्रीय मार्गदर्शन, आचार संहिता एवं अनुशासन के अंतर्गत आम सहमति से करें। उसके लिए केन्द्र/जोनल केन्द्र द्वारा नामित सहयोगी समीक्षक न्यूनतम 2 या 3 व्यक्ति के समक्ष बैठक में परस्पर विचार विमर्श करें एवं उचित निष्कर्ष, समाधान निकालें। इस सम्बंध में शांतिकुंज का निर्णय सर्वोपरि एवं सर्वमान्य होगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

7. प्रत्येक दो माह में या जरूरत के अनुसार निर्धारित स्थान पर विकासखंड/तहसील समन्वय समिति की बैठक में क्षेत्र में प्रज्ञापीठ/शक्तिपीठ/ चरणपीठ/ निर्माणाधीन पीठ/ प्रज्ञा सत्संग हॉल/ प्रज्ञामंडल/ महिला मंडल/ संस्कृति मंडल शाखा/ सक्रिय संगठित समूह/ रचनात्मक केन्द्र के सभी सक्रिय सदस्य भाग लें। केन्द्र जोनल केन्द्र द्वारा निर्धारित सहयोगी समीक्षक गोष्ठी का संचालन करें एवं गोष्ठी से उभरे कार्य योजना की रिपोर्ट, निष्कर्ष शान्तिकुंज भेजें।

8. तहसील/विकासखंड (प्रखंड) संयुक्त समन्वय समिति अपने कार्यक्षेत्र में सप्तसूत्री आंदोलन (साधना, शिक्षा, स्वास्थ्य, नारी जागरण, व्यसन मुक्ति कुरीति उन्मूलन, स्वावलंबन, पर्यावरण) को व्यापक एवं गतिशील बनायें। साधनात्मक, प्रचारात्मक, रचनात्मक, संगठनात्मक विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण केन्द्र जोनल केन्द्र के निर्देशन में करें।

9 संगठनात्मक लाल मशाल व्याख्या चित्र, सत्संकल्प प्रत्येक संज्ञा संस्थान, सामाजिक/धार्मिक संगठन, मण्डलों में स्थापित किये जायें। समन्वय समिति के सभी भाई–बहन गुरुसत्ता को साक्षी रखकर संगठन को समर्थ, सशक्त बनाने हेतु समर्पित एवं निःस्वार्थ भाव से कार्यरत रहें। किसी प्रकार का मनोमालिन्य, द्वेष, विग्रह तनाव नहीं बढ़ायें। "सलाह लें–सम्मान दें।" हिल–मिल कर रहें, मिलजुलकर कार्य करें।" स्नेह, आत्मीयता, सहकार पूर्ण वातावरण बनायें। सृजन सहयोगी बनें एवं बनायें।

10. मिशन की कार्य योजना के विस्तार हेतु समयदानियों के लिए दो माह के सघन प्रशिक्षण की व्यवस्था शांतिकुंज में बना दी गई है। जिसके अन्तर्गत एक मासीय युग शिल्पी सत्र के सफल समापन के बाद चयनित प्रतिभागी परिव्राजक प्रशिक्षण सत्र में भाग लेते हैं। अपने क्षेत्र के भावनाशील उत्साही, सुशिक्षित, योग्य, स्वस्थ एवं सेवा निवृत्त योग्य परिजनों को इन शिविरों में अपना पत्र देकर भेज सकते हैं। इच्छुक परिजन स्वतंत्र रूप से भी स्वीकृति मँगाकर आ सकते हैं।

उक्त योजना को क्षेत्र की सभी संगठित इकाइयों, प्रज्ञा संस्थानों के सदस्यों की उपस्थिति में आम सहमति से स्वीकृत करायें तथा पूरी कार्यवाही की छायाप्रति केन्द्र को भी भेजें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गायत्री परिवार की संगठनात्मक संरचना

(प्रारंभ)

परिजन

(पाठक, दीक्षित, उपासक, श्रद्धालु, ज्ञानघट/धर्मघट वाले, अंशदानी, सहयोगी, देव, स्थापना, वेद स्थापना, वाङ्मय स्थापना, संस्कार कराने वाले)

प्रज्ञामण्डल/महिलामण्डल (ग्राम/वार्ड/मुहल्ला/कालोनी स्तर पर)

ग्राम पंचायत/वार्ड/कस्बा/क्षेत्र स्तर पर

सक्रिय संगठित समूह (स–3)

♦ 5 से 25 मण्डल (ग्रामीण क्षेत्र)
♦ 10 से 15 किमी. तक
♦ 5 से 50 मण्डल (शहरी क्षेत्र)
♦ **समन्वय समिति** (सभी मण्डलों के दो–दो सक्रिय सदस्य)
♦ न्यूनतम 11 सदस्य (गोष्ठी मासिक)
♦ केन्द्रीय सम्पर्क सूत्र (तीन जिम्मेदार कार्यकर्त्ता)

समर्थ समयदानी सहयोगी समूह (स–4) (समर्थ समयदानी/समयदानी)

♦ पूर्णकालिक समयदानी
♦ अंशकालिक समयदानी
♦ प्रचारक, पुरोहित, प्रशिक्षक
♦ उत्प्रेरक, नियोजक, समन्वयक योजनाकार

विकासखंड/तहसील स्तर पर

संयुक्त समन्वय समिति (न्यूनतम 11 सदस्य)

♦ सभी ग्राम पंचायतों/वार्ड/क्षेत्रों की समन्वय समिति से नामित सदस्य
♦ भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के सहयोगी
♦ शक्तिपीठों/प्रज्ञापीठों के नामित ट्रस्टीगण
♦ रचनात्मक केन्द्र/ट्रस्ट से नामित सदस्य
♦ समर्थ सहयोगी (प्रबुद्ध–प्रभावशाली/साधन सम्पन्न)
♦ दो माह में एक बार/जरूरत के अनुसार
♦ केन्द्रीय सम्पर्क सूत्र (तीन जिम्मेदार कार्यकर्त्ता।)

समर्थ समयदानी सहयोगी समूह (स–4)

(समर्थ समयदानी/समयदानी)
♦ पूर्णकालिक समयदानी
♦ अंशकालिक समयदानी
♦ प्रचारक, पुरोहित, प्रशिक्षक
♦ उत्प्रेरक, नियोजक, समन्वयक, योजनाकार

जिला स्तर पर

संयुक्त समन्वय समिति (न्यूनतम 11 सदस्य)

♦ सभी तहसीलों की संयुक्त समन्वय समिति के नामित सदस्य
♦ भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के समन्वयक
♦ शक्तिपीठों/प्रज्ञापीठों के नामित ट्रस्टीगण
♦ रचनात्मक केन्द्र/ट्रस्ट के नामित सदस्य
♦ समर्थ सहयोगी (प्रबुद्ध–प्रभावशाली/साधन सम्पन्न)
♦ गोष्ठी छः माह/एक वर्ष में एक बार
♦ केन्द्रीय सम्पर्क सूत्र (5 जिम्मेदार कार्यकर्त्ता)

समर्थ समयदानी सहयोगी समूह (स. 4)

♦ (समर्थ समयदानी/समयदानी)
♦ पूर्णकालिक समयदानी
♦ अंशकालिक समयदानी
♦ प्रचारक, पुरोहित, प्रशिक्षक
♦ उत्प्रेरक, नियोजक, समन्वयक, योजनाकार

केन्द्रीय तंत्र (शान्तिकुंज हरिद्वार)

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सक्रिय संगठित समूह (स–3)
(छः मासीय प्रगति पत्रक)

स–3 पंजीयन क्रमांक....................भेजने की तिथि..............................

पिछली रिपोर्ट के अनुसार सम्बद्ध मण्डलों की कुल संख्या..........................

इस बीच नए विकसित हुए मण्डलों की संख्या............................

इस अवधि में निष्क्रिय हो गए मण्डलों की संख्या...................

वर्तमान में स–3 से सम्बद्ध कुल सक्रिय मण्डलों की संख्या.....................

(सक्रिय मण्डलों के समन्वयकों के नाम पतों की सूची संलग्न करें)

समन्वय समिति के सदस्यों की संख्या..................है। (नाम पते सहित सूची अलग से संलग्न करें)

समूह समन्वय/कार्यालय का नाम एवं पता...

हस्ताक्षर

सम्पर्क सूत्र–1...

हस्ताक्षर

सम्पर्क सूत्र–2...

हस्ताक्षर

सम्पर्क सूत्र–3...

हस्ताक्षर

(इस अवधि में स–3 या इससे सम्बद्ध किसी मण्डल द्वारा चलाए गए उल्लेखनीय कार्यों–उपलब्धियों का संक्षिप्त ब्योरा अलग से लिखकर संलग्न करें। यह क्रम छः माह में एक बार अवश्य पूरा करें। बीच में कोई उल्लेखनीय परिवर्तन होने पर यह पत्रक कभी भी भरकर भेजा जा सकता है।)

तहसील/विकासखंड स्तरीय संयुक्त समन्वय समिति

स्थान...................................

पूरा पता..................................

गाँव.................................पो0.................................तहसील..................................जिला.

.................................राज्य.................................पिनकोड..................................फोन नं.

(एस.टी.डी. कोड सहित)................................निवास..................................कार्यालय..

.................................फैक्स नं0..................................

(सम्पर्क सूत्र) : नाम पूरा पता फोन नं. एस.टी.डी., फैक्स नं. सहित

1..

गाँव.................................पो0.................................तहसील..................................जिला.

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

..............................राज्य.................................पिनकोड.................................फोन नं. (एस.टी.डी. कोड सहित)...............................निवास.................................कार्यालय.. ....फैक्स नं....................................

2..
गाँव.................................पो0.................................तहसील.................................जिला. ....राज्य.................................पिनकोड.................................फोन नं. (एस.टी.डी. कोड सहित)...............................निवास.................................कार्यालय.. ....फैक्स नं....................................

3..
गाँव.................................पो0.................................तहसील.................................जिला. ....राज्य.................................पिनकोड.................................फोन नं. (एस.टी.डी. कोड सहित)...............................निवास.................................कार्यालय.. ....फैक्स नं....................................

स्पष्टीकरण –

इस संयुक्त समन्वय समिति में ....(संख्या) स–3 शामिल है। उनकी सूची (पंजीयन क्रमांक सहित) संलग्न है।

इसमें कुल........................सदस्य हैं, जो सम्बन्धित स–3 की समन्वय समिति द्वारा नामित हैं। नाम पते की सूची संलग्न है।

सम्पर्क सूत्र के रूप में अंकित व्यक्तियों का अनुमोदन समिति के सदस्यों ने किया है और इन सभी ने अपनी जिम्मेदारी स्वीकार की है।

यह समन्वय समिति........................प्रज्ञापीठ/शक्तिपीठ के साथ जुड़ी है। रसीदें उसी ट्रस्ट की प्रयोग में ली जाती हैं।

विशेष – जिला संयुक्त समन्वय समिति में से केन्द्रीय सम्पर्क सूत्र के लिए 5 जिम्मेदार व्यक्तियों के नाम, पते, फोन–फैक्स सहित इसी प्रायप के अनुसार भेजें।

जोन्स का विभाजन

संगठन सशक्तीकरण हेतु बनाए गए गायत्री परिवार के सात जोन्स

विश्व में जब भी महत्वपूर्ण स्तर के सुधार–संशोधन के कार्यक्रम चले हैं, युग समस्याओं का समाधान खोजा गया है, तो उसका क्रियान्वयन संगठनात्मक पुरुषार्थ द्वारा ही सम्पन्न हुआ है। संगठन की शक्ति अपार होती है। जिसके साथ संघबल होता है, उसके पीछे अन्य बल उसी प्रकार फिरते हैं, जैसे सूर्य के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आस–पास नवग्रह परिक्रमा लगाते हैं। गायत्री परिवार रूपी संगठन इसीलिए अपना एक स्थान अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर रखता है, सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है – आशावाद का प्रतीक है एवं इक्कीसवीं सदी– उज्ज्वल भविष्य का उद्घोष सभी को स्पष्ट सुनाई देता है। प्रस्तुत वर्ष साधना संगठन–सशक्तीकरण वर्ष है। यह प्रक्रिया साधना की धुरी पर चलते हुए एक लम्बी (75 वर्ष की) यात्रा पूरी करने के बाद की जा रही है। निश्चित ही इस पुरुषार्थ में साधना प्रधान है, इसीलिए इसके सशक्त होने की संभावनाएँ सुनिश्चित दिखाई देती हैं।

परम पूज्य गुरुदेव ने "अखिल विश्व गायत्री परिवार" रूपी इस संगठन को आत्मीयता–संवेदना–ममत्व की धुरी पर खड़ा किया है एवं एक ही सम्पदा इसके लिए प्रयुक्त की है, वह सम्पदा है भावनाशीलों का समयदान। गुरुसत्ता ने कहा कि समय ही जीवन है एवं श्रम ही वैभव है। त्याग–बलिदान की सघन भाव श्रद्धा के बलबूते उन्होंने जन–जन का समय माँगा एवं एक विराट् व्यापक तंत्र खड़ा हो गया। परम पूज्य गुरुदेव का संगठनात्मक मार्गदर्शन एवं परम वंदनीय माताजी का आत्मीयता भरा स्पर्श पाकर यह संगठन विराट्तर होता चला गया एवं इसके द्वारा देव संस्कृति दिग्विजय के आश्वमेधिक, वाजपेय स्तर के महापुरुषार्थ सम्पन्न हुए। दो विराट् महापूर्णाहुतियाँ युग संधि महापुरश्चरण हेतु आँवलखेड़ा (1995) एवं हरिद्वार (2000) में सम्पन्न हुई, जिनमें लाखों भावनाशीलों की भागीदारी रही।

साधना संगठन सशक्तीकरण के क्रम में केन्द्रीय एवं क्षेत्रीय कर्मठ परिजनों के संयोग से ऐसा समर्थ तंत्र विकसित किया जाना है, जो हर क्षेत्र में नवसृजन की आवश्यकता के अनुरूप व्यक्तियों को समझता, स्वीकारता और सँभालता रह सके। इस प्रक्रिया के अन्तर्गत विकसित, अर्द्ध विकसित एवं अविकसित क्षेत्र को मिलाकर पूरे भारत को सात जोनों (बृहत् संभागों) में बाँटा गया है, ताकि एक विराट् मंथन इन सात क्षेत्रों में केन्द्र के मार्गदर्शन तंत्र द्वारा समयदानियों की फौज के माध्यम से संभव हो सके। यह सात जोन इस आधार पर बाँटे गये हैं कि प्रत्येक में कुछ विकसित–समर्थ समयदानियों से भरे क्षेत्र हों–शक्तिपीठें हों या केन्द्र के तंत्र हों। नए क्षेत्रों के लिए विकसित क्षेत्र से समयदानियों की आपूर्ति होती रहे एवं उनके केन्द्र–शक्तिपीठें प्रशिक्षण शिविरों की छावनियों की भूमिका निभाती रहें। यह सात जोन इस प्रकार हैं –

(1) हैदराबाद – नागपुर जोन –

इस जोन के अन्तर्गत महाराष्ट्र (34 जिले), आंध्र प्रदेश (23 जिले) तमिलनाडु (24 जिले), कर्नाटक (20 जिले) , केरल (14 जिले) कुल मिलाकर 115 जिलों वाला यह जोन सबसे बड़ा है। इसमें महाराष्ट्र के विकसित क्षेत्र के उत्तरीय व मध्य भाग के जिले, मुम्बई क्षेत्र तथा आंध्र का नवविकसित क्षेत्र पशिक्षण केन्द्रों की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एवं समयदानियों की आपूर्ति की महती भूमिका निभायेंगे। जहाँ मिशन विगत कई वर्षों से सक्रिय है – वहाँ अब प्रशिक्षक–नियोजक एवं क्षेत्रीय समयदानी दो स्तरों के कार्यकर्त्ताओं के निर्माण व सुनियोजन का तंत्र खड़ा किया जाना है। इससे हम सुदूर दक्षिण तक पहुँच सकेंगे एवं आवश्यकतानुसार हर क्षेत्र में कुछ बड़े कार्यक्रम सम्पन्न कर सकेंगे। इस पूरे जोन के वर्तमान में दो केन्द्र नागपुर एवं हैदराबाद बनाये गये हैं। बाद में इनके 8–10 उपकेन्द्र भी बनाए जा सकते हैं। चेन्नई, बंगलोर, त्रिवेन्द्रम जोन उपकेन्द्र के रूप में विकसित हो रहे हैं।

(2) टाटानगर–सिलीगुड़ी जोन –

यह जोन भी काफी बड़ा है, इसमें कुल 105 जिले हैं। यह उत्तर पूर्व के सारे क्षेत्र सहित प्रायः दस प्रान्त एवं भूटान–नेपाल राष्ट्रों का प्रतिनिधित्व करता है। इसमें झारखण्ड के 18 जिले, पश्चिमी बंगाल के 17 जिले, आसाम के 25 जिले, अरुणाचल प्रदेश के 13 जिले, मणिपुर के 8 जिले, मिजोरम के 2, नागालैण्ड के 7, त्रिपुरा के 3, मेघालय के 5, सिक्किम के 4 तथा भूटान के 7 जिलों सहित बिहार के पूर्वी भाग के 4 जिले सम्मिलित किये गये हैं, साथ में नेपाल के पूर्वी भाग के 2 अंचल भी लिये गये हैं। झारखण्ड के टाटानगर क्षेत्र एवं पश्चिमी बंगाल के सिलिगुड़ी को इस जोन का प्रशिक्षण केन्द्र छावनी बनाया गया है। बिहार व झारखण्ड के जाग्रत् क्षेत्रों तथा पश्चिम बंगाल के कोलकाता (दक्षिणी भाग) व सिलिगुड़ी (उत्तरी भाग) से समयदानियों की आपूर्ति की जाएगी। बाद में असम से जुड़े लघु प्रांतों तथा बंगाल में उपकेन्द्र बनाए जा सकते हैं।

(3) शांतिकुंज–मोहाली (चण्डीगढ़) जोन –

यह उत्तरी पश्चिमी सीमा से जुड़ा बड़ा व्यापक क्षेत्र है। इसमें भी लगभग 84 जिले आते हैं। यह क्षेत्र जहाँ उत्तरांचल की हिमालय से लगी सीमाओं को छूता है, वहाँ दिल्ली व पश्चिमी उत्तर प्रदेश के सात जिलों को भी अपने घेरे के लिए है एवं पाकिस्तान से लगी पूरी सीमा तक फैला है। इसमें उत्तरांचल के 13 जिले, जम्मू–कश्मीर के 14 जिले, पंजाब के 14, हरियाणा के 19, हिमांचल के 12 तथा राजस्थान के हनुमानगढ़–श्रीगंगानगर सहित 2 जिले एवं दिल्ली (पूरे राज्य सहित) पश्चिमी उत्तर प्रदेश के 7 जिले हैं। शांतिकुंज एवं मोहाली शक्तिपीठ (चण्डीगढ़) को अभी इनका केन्द्र बनाया गया है। बाद में उपयुक्त स्थानों पर इनके उपकेन्द्र खोले जायेंगे।

(4) चित्रकूट–आँवलखेड़ा जोन –

यह मध्य भारत का वह क्षेत्र है, जहाँ मिशन बड़े व्यापक रूप में फैला हुआ है, किंतु ग्राम–ग्राम तक पहुँचने के लिए एक व्यापक पुरुषार्थ रचनात्मक स्तर का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अनिवार्य है। इसमें कुल 112 जिले हैं, पर इसमें अधिकांश विकसित क्षेत्र हैं। इसमें उत्तरप्रदेश के 51 जिले (तराई व पश्चिमी क्षेत्र छोड़कर), मध्य प्रदेश के सभी जिले (दक्षिणी व पश्चिमी क्षेत्र छोड़कर), बिहार के 20 जिले (पटना सहित गंगा के दक्षिणी भाग के) शामिल किये गये हैं। अभी चित्रकूट एवं आँवलखेड़ा को इसका केन्द्र बनाया गया है, किंतु बाद में आवश्यकता एवं विकास के स्तर के आधार पर कई स्थलों को उपकेन्द्र बनाया जा सकेगा।

(5) बस्ती (अयोध्या)–मुजफ्फरपुर जोन –

इसमें नेपाल के सभी 64 जिले, उत्तर प्रदेश के तराई क्षेत्र के जिले तथा उत्तरी बिहार के पाँच जिले, इस प्रकार कुल अस्सी जिले गये हैं तथा बस्ती (अयोध्या) (उ.प्र.) एवं मुजफ्फरपुर (बिहार) को जोनल केन्द्र बनाया गया है। बाद में जिम्मेदारी उठाने में सक्षम स्थानों को उपकेन्द्र के रूप में विकसित किया जा सकेगा।

(6) राजस्थान–गुजरात जोन –

यह भी बड़ा सघन व मिशन के प्रभाव की दृष्टि से महत्वपूर्ण क्षेत्र है, जहाँ काफी कार्य किया जा चुका है। इसमें राजस्थान के 29 जिले एवं गुजरात के 25 जिलों सहित दक्षिण–पश्चिमी मध्यप्रदेश के 6 जिले लिये गये हैं। इनके तीन केन्द्र क्षेत्र की विराट्ता व सघनता को देखकर बनाए गए हैं – अहमदाबाद (क्रांतिकुंज), गाँधीधाम (कच्छ) एवं पुष्कर (अजमेर) को आंचलिक केन्द्र बनाया गया है। इसमें दक्षिणी पश्चिमी म.प्र. के 6 जिलों के तथा गुजरात–राजस्थान के सक्रिय क्षेत्रों के प्राणवान् कार्यकर्त्ता रिसोर्स पर्सन्स बनेंगे व सारे क्षेत्र का संगठनात्मक मंथन किया जाएगा। इस पूरे जोन में 60 जिले हैं।

(7) छत्तीसगढ़–उड़ीसा जोन –

इसमें रायपुर, भिलाई, जगदलपुर, सम्बलपुर, भुवनेश्वर को जोनल केन्द्र के रूप में बनाया गया है।

निर्धारित बृहत् संभागों (जोन्स) में जो केन्द्र विकसित, स्थापित किये जा रहे हैं, उनमें यही व्यवस्था बनायी जानी है कि वहाँ समर्थ समयदानियों के एकत्रीकरण, प्रशिक्षण एवं सुनियोजन की व्यवस्था बन जाये। इसी के लिए केन्द्र के वरिष्ठ अनुभवी कार्यकर्त्ताओं के संगठनात्मक दौरे 2002 के अंत तक समाप्त हो चुके हैं। यह निश्चय किया गया है कि केन्द्र एवं क्षेत्र के समर्थ समयदानी मिलकर यह व्यवस्था बनायेंगे कि हर क्षेत्र में वहाँ की आवश्यकता के अनुरूप अग्रदूतों के प्रशिक्षण–नियोजन का क्रम सतत चलता रहे। हर क्षेत्र में युग सृजेताओं–अग्रदूतों समयदानियों की संख्या और क्षमता–पात्रता बढ़ती रहे। इस व्यवस्था क्रम में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समयानुसार वाच्छित परिवर्तन किए जाते रहेंगे।

इन केन्द्रों के माध्यम से हर क्षेत्र में शीघ्र ही बड़ी संख्या में अग्रदूत स्तर के समयदानी तैयारी किए जा सकेंगे। जिस क्षेत्र में अधिक संख्या में ऐसे समयदानियों का तंत्र बन जाएगा, उन स्थानों को भी सहायक छावनियों के रूप में मान्यता देकर उनको विकसित करने का क्रम चलाया जायगा।

जोन, उपजोन तथा सम्बंधित जिले

मध्यजोन

(1) चित्रकूट जोन –

(अ) चित्रकूट उपजोन – चित्रकूट, हमीरपुर, बांदा, इलाहाबाद, कौशाम्बी, रीवा, सतना, सीधी, सिंगरौली

(ब) शुक्लागंज उपजोन – उन्नाव, कानपुर देहात, कानपुर, औरैय्या, इटावा, कन्नौज, फतेहपुर, फर्रुखाबाद

(स) झांसी उपजोन – झांसी, ललितपुर, उरई, जालौन, दतिया, टीकमगढ़, महोबा

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

(2) आँवलखेड़ा जोन –

(अ) आँवलखेड़ा उपजोन – आगरा, फिरोजाबाद, मैनपुरी, महामायानगर, एटा, अलीगढ़, मथुरा, काशीराम नगर

(ब) लखनऊ उपजोन – लखनऊ, बाराबंकी, रायबरेली, हरदोई, सीतापुर

(स) वाराणसी उपजोन – वाराणसी, चन्दौली, सोनभद्र, मिर्जापुर, भदोही, जौनपुर, आजमगढ़, मऊ बलिया, गाजीपुर, कैमूर (भभुआ)

(3) भोपाल जोन –

(अ) भोपाल उपजोन – भोपाल, रायसेन, विदिशा, सिहोर, होशंगाबाद, राजगढ़, हरदा

(ब) उज्जैन उपजोन – उज्जैन, शाजापुर, रतलाम, मंदसौर, गुना, अशोकनगर, नीमच

(स) इन्दौर उपजोन – इन्दौर, देवास, धार

(द) **दमोह उपजोन** – दमोह, सागर, छतरपुर, पन्ना

(इ) **जबलपुर उपजोन** – जबलपुर, नरसिंहपुर, मंडला, डिण्डोरी, कटनी, शहडोल, उमरिया, शिवनी, अनूपपुर

(फ) **ग्वालियर उपजोन** – ग्वालियर, भिण्ड, मुरैना, शिवपुरी, श्योरपुरकलाँ

(ज) **बड़वानी उपजोन** – बड़वानी, खरगोन, बुरहानपुर, झाबुआ, खण्डवा, अलीराजपुर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पूर्व जोन

(1) टाटा नगर जोन –

(अ) टाटानगर उपजोन – सिंहभूम (इस्ट), सिंहभूम (वेस्ट), चाईबासा, सराईकेला

(ब) राँची उपजोन – रांची, गुमला, लोहरदगा, सिमडेगा

(स) पलामू उपजोन – पलामू, लातेहार, गढ़वा

(द) देवघर उपजोन – देवघर, दुमका, जामताड़ा, गोड्डा

(इ) बोकारो उपजोन – बोकारो, धनबाद, गिरिडीह

(फ) हजारीबाग उपजोन – हजारीबाग, कोडरमा, चतरा

(ज) साहेबगंज उपजोन – साहेबगंज, पाकुड़

(2) पटना जोन –

(अ) जहानाबाद उपजोन – जहानाबाद, अरबल

(ब) पटना उपजोन – पटना, नालंदा

(स) आरा उपजोन – आरा, बक्सर

(द) रोहतास उपजोन – रोहतास, नवादा, औरंगाबाद, गया

(इ) मुंगेर उपजोन – मुंगेर, भागलपुर, बांका

(फ) लखीसराय उपजोन – लखीसराय, शेखपुरा, जमुई

(3) कोलकाता जोन –

(अ) आसनसोल उपजोन – आसनसोल, वीरभूमि, वर्धमान

(ब) बंडेल उपजोन – हावड़ा, हुगली, मंदनीपुर

(स) कोलकाता उपजोन – कोलकाता, 24 परगना उत्तर, 24 परगना दक्षिण,

(द) पुरलिया उपजोन – पुरलिया, बांकुड़ा

(इ) नदिया उपजोन – नदिया, मुर्शिदाबाद

दक्षिण–पश्चिम जोन

(महाराष्ट्र, गोवा एवं सम्बन्धित म.प्र.)

(1) नागपुर जोन –

(अ) नागपुर उपजोन – भण्डारा, गोन्दिया, वर्धा

(ब) चन्द्रपुर उपजोन – चन्द्रपुर, गढ़चिचोली, यवतमल

(स) अकोला उपजोन – अकोला, अमरावती, वाशिम, बुलढाना

(द) छिन्दवाड़ा उपजोन – छिन्दवाड़ा, बैतूल, बालाघाट

(इ) जलगाँव उपजोन – जलगाँव, धुलिया, नाशिक, नन्दुरबार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(फ) हिंगोली उपजोन – हिंगोली, लातुर, परभणी, नांड़ेर, औरंगाबाद, उस्मानाबाद, बीड़, जालना

(2) **पुणे जोन –**

(अ) पूणें उपजोन – पुणे, सातारा, सोलापुर, अहमदनगर, सांगली, रत्नागिरी

(ब) गोवा उपजोन – गोवा, सिंधुदुर्ग, कोल्हापुर

(स) सांगली उपजोन – सांगली, कोल्हापुर, सोलापुर

(3) **मुम्बई जोन –**

(अ) नवी मुम्बई उपजोन – नवी मुम्बई, अणुशक्तिनगर, रायगढ़, डॉकयार्ड रोड, एरोली

(ब) नालासोपारा जोन – नालासोपारा, अंधेरी, बोरीवली, दादर, दहिसर

(स) भिवण्डी उपजोन – भिवण्डी, मुलुण्ड, कल्याण, थाणे, भायखला, घाटकोपर, उल्हासनगर

(दक्षिण–पूर्व)
छत्तीसगढ़–उड़ीसा जोन

www.vicharkrantibooks.org

(1) **रायपुर जोन –**

(अ) रायपुर उपजोन – रायपुर, धमतरी, महासमुंद

(ब) राजनांदगांव उपजोन – राजनांदगांव, दुर्ग, कवर्धा

(स) बस्तर उपजोन – बस्तर, जगदलपुर, दंतेवाड़ा, कांकेर

(द) कोरबा उपजोन – कोरबा, जांजगीर–चांपा, रायगढ़

(इ) अम्बिकापुर उपजोन – अम्बिकापुर, जशपुर, कोरिया

(फ) बिलासपुर उपजोन – बिलासपुर

(2) **भुवनेश्वर जोन –**

(अ) भुवनेश्वर उपजोन – भवनेश्वर, खुरदा, पुरी

(ब) नुआपाड़ा उपजोन – नुआपाड़ा, कालाहाण्डी, बलांगिर

(स) कटक उपजोन – कटक, जगसिंहपुर, जाजपुर, ढेंकानाल, अनुगुळ, केन्द्रापाड़ा

(द) रम्भा (गंजाम) उपजोन – गंजाम, गजपति, नयागढ़, फुलबाणी, खुर्दा (कुछ अंश)

(इ) बालेश्वर उपजोन – बालेश्वर, मयुरभंज, भद्रक, केंदूझर

(फ) कोरापुट उपजोन – कोरापुट, रायगढ़ा, मालकानागिरी, नवरंगपुर

(ज) सम्बलपुर उपजोन – सम्बलपुर, सुवर्णपुर, बौद्ध, देवगढ़, बरगढ़, झारसुगड़ा, सुन्दरगढ़

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पश्चिमोत्तर जोन

(1) कुरुक्षेत्र जोन –

(अ) कुरुक्षेत्र उपजोन – कुरुक्षेत्र, यमुनानगर, पंचकुला, अम्बाला, करनाल, कैथल

(ब) जम्मू उपजोन – जम्मू, कठुवा, राजौरी, पुंछ, डोडा, उद्यमपुर, श्रीनगर, अनंतनाग, बड़गाँव, बारामुला, कूपवाड़ा, लेह, कारगिल, पुलवामा

(स) शिमला – शिमला, सोलन, सिरमौर, किन्नौर

(द) बिलासपुर – बिलासपुर, मण्डी, कुल्लू लाहौलस्पिति

(इ) कांगड़ा – कांगड़ा, हमरीपुर, ऊना, चम्बा

(फ) सोनीपत – सोनीपत, पानीपत, रोहतक, झज्जर, जीन्द

(ज) हिसार – हिसार, सिरसा, भिवानी, फतेहाबाद

(च) लुधियाना – लुधियाना, जालंधर, अमृतसर, गुरदासपुर, कपूरथला, मोगा, फिरोजपुर, फरीदकोट, भटिण्डा, मुक्तसर, फतेहगढ़, चण्डीगढ़

(ई) मोहाली – मानसा, संगरूर, पटियाला, होशियारपुर, नवांशहर, रूपनगर

www.vicharkrantibooks.org

(2) शान्तिकुंज जोन –

(अ) शांतिकुंज – हरिद्वार, बिजनौर, सहारनपुर, मुजफ्फरपुर, बागपत, मेरठ, मुरादाबाद

(ब) बुलन्दशहर – अलीगढ़, हाथरस, जे.पी.नगर

(स) नई टिहरी – टिहरी गढ़वाल, पौड़ी गढ़वाल, रुद्रप्रयोग, चमोली (गोपेश्वर), उत्तरकाशी, देहरादून

(द) हल्दूचौड़ – नैनीताल, ऊधमसिंह नगर (रुद्रपुर), अल्मोड़ा, पिथोरागढ़, चम्पावत, बागेश्वर

(3) नोएडा जोन –

(अ) नोएडा – दिल्ली राज्य, गौतमबुद्धनगर, गाजियाबाद, फरीदाबाद, गुड़गाँव, महेन्द्रगढ़, रेवड़ी, पलवल

उत्तर जोन

(1) अयोध्या जोन –

(अ) अयोध्या (फैजाबाद) उपजोन – सुल्तानपुर, प्रतापगढ़, अम्बेडकर नगर

(ब) बस्ती उपजोन – सिद्धार्थनगर, संतकबीरनगर

(स) गोरखपुर उपजोन – महाराजगुज, कुशीनगर, देवरिया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(द) बरेली उपजोन – रामपुर, बदायूँ
(इ) गोंडा उपजोन – बहराईच, बलरामपुर, श्रावस्ती
(फ) शाहजहाँपुर उपजोन – शाहजहाँपुर, लखीमपुरखिरी, पीलीभीत

(2) काठमाण्डू –

(अ) जनकपुर उपजोन (सागरमाथा अंचल) – धनुषा, महोत्तरी, सरलाही, सिन्धुला, रामेछाप, सागरमाथा, ओखलदुंगा, सोलखुम्बु, भोजपुर, सीराहा, सप्तरी
(ब) वीरगंज उपजोन (नारायणी अंचल) – चितवन, मकवानपुर, वारा, परसा, रातहट
(स) काठमाण्डू उपजोन (बागमती) – धाटिंग, रसुवा, ललितपुर, काम्रेपलान्थोक, भवतपुर, सिन्धुपलांग चौक, नुवाकोट
(द) बुटवल उपजोन (लुम्बिनी, गंडकी, धौलागीरी अंचल) – नवलपरासी, भैरहवा, कपिलवस्तु, रूपनदेही, अर्धाखाँची पालपा, गोरखा, कासकी, मनांग, तनहुँ, मुस्तांग, स्यांगजा, लमजुंग, पर्वत, बागलुंग, म्यागदी, गुल्मी
(इ) नेपालगंज उपजोन (भेरी, राप्ती, कर्णाली अंचल) – बाँके, वर्दिया, जाजरकोट, सुर्खेत, दैलेख, सल्यान, प्युठान, रुकुम, रोल्पा, दाङ, हुम्ला, मुगु, कालीकोट, डोल्पा
(फ) धनगढ़ी उपजोन (सेती अंचल) – अछाम, बझाङ, बाजुरा, डोटी, कैलाली
(ज) महेन्द्रनगर (महाकाली अंचल) – दार्चुला, बैतडी, डडेलधुरा, कंचनपुर

(3) मुजफ्फरपुर जोन –

(अ) मुजफ्फरपुर उपजोन – वैशाली, सीतामढ़ी, शिवहर, जनकपुर
(ब) सीवान उपजोन – छपरा, गोपालगंज
(स) बेतिया उपजोन – मोतीहारी, वीरगंज
(द) दरभंगा उपजोन – समस्तीपुर, मधुबनी

पूर्वोत्तर जोन

(1) सिलीगुड़ी जोन –

(अ) पूर्णिया उपजोन – पूर्णिया, कटिहार, अररिया
(ब) सिलीगुड़ी उपजोन – किशनगंज, कोशीअंचल नेपाल, मोसड़ (विराटनगर), सुनसरी, भोजपुर, उदयपुर, धनकुटा, मेची अंचल नेपाल (झापा, ईलाम, पाँचथर, तेरथुम), दार्जिलिंग, माल्दा, जलपाई

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गुड़ी, कुचबिहार, पूर्वी दिनाजपुर, जयगाँव, सिक्किम, (पूर्वी गंगटोक, पं. ग्यालसिंग, उ. मंगन, द. नामची), भूटान

(2) गुवाहाटी जोन –

(अ) गुवाहाटी उपजोन – मेघालय, कामरूप, नलबारी, बरपेटा, रंगिया, धुबड़ी, बंगाईगाँव, दरंग (मंगलदेई), कोकराझाड़, द र ं ग (मंगलदेई), सोनितपुर (तेजपुर), मोरीगाँव, नगाँव, करबी आँगलोंग (दीफू), उ. कछार पहाड़ी (हाफलौंग)

(ब) तिनसुकिया उपज़ोन – जोरहाट, गोलाघाट, शिवसागर, डिब्रूगढ़, तिनसुकिया, अरुणांचल प्रदेश (लोहित, तिरप, दिवांगबैली (अनीनी, चांगलांग)

(स) सिल्चर उपजोन – कछार (सिल्चर), करीमगंज, हेलाकांडी, ग्वालपारा, मिजोरम, मणीपुर, त्रिपुरा, नागालैण्ड

(द) निर्जूली (ईटानगर) उपजोन – लखीमपुर (उत्तरी), धेमाजी, अरुणांचलप्रदेश (तवांग, पश्चिमी कामेंग, बामडिला), पूर्वी कामेंग (सेप्पा), पश्चिमी सियांग (आलंग), पूर्वी सियांग (पासीघाट), अपरसियांग (यींगकिंग), लोअर सुबन शिरी (जीरो), अपर सुबनशिरी (दापारिजो), चेंग्लांग, तिराप (खोन्सा), पापुमपारे (ईटानगर)

(3) सहरसा जोन –

(अ) सहरसा उपजोन – सहरसा, खगड़िया, बेगूसराय, मधेपुरा, सुपौल

पश्चिम जोन

(1) अहमदाबाद जोन –

(अ) अहमदाबाद उपजोन – अहमदाबाद, गाँधीनगर, खेड़ा, आणंद, साबरकाँढा

(ब) बड़ौदा उपजोन – बड़ौदा, नर्मदा, भरुच, दाहोद, पंचमहल

(स) सूरत उपजोन – सूरत, डॉग, वलसाड़, नवसारी, दादरा–नगरहवेली, दमन, तापी

(द) जामनगर उपजोन – जामनगर, पोरबंदर, राजकोट, सुरेन्द्रनगर

(इ) अमरेली उपजोन – अमेरली, जूनागढ़, भावनगर, दीव

(फ) गांधीधाम उपजोन – भुज (कच्छ)

(ज) महेसाणा उपजोन – महेसाणा, पाटण, बनासकाँठा

(2) पुष्कर जोन –

(अ) उदयपुर उपजोन – उदयपुर, डूंगरपुर, बाँसवाड़ा, चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(ब) पुष्कर उपजोन – अजमेर (पुष्कर), डेगाना (नागौर)
(स) भरतपुर उपजोन – भरतपुर, धौलपुर, करौली, अलवर
(द) चुरू उपजोन – चुरू, झुंझुनू, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर, बीकानेर
(इ) जयपुर उपजोन – जयपुर, टोंक, दौसा, सीकर
(फ) जोधपुर उपजोन – जोधपुर, जालोर, बाड़मेर, जैसलमेर
(ज) कोटा उपजोन – कोटा, बूँदी, झालावाड़, बाराँ, सवाई माधोपुर
(च) राजसमन्द उपजोन – राजसमन्द, पाली, भीलवाड़ा, सिरोही

हमारे संगठन का युग ऋषि : निर्देशित प्रारूप

1. युग निर्माण अभियान – सृजन साधना का त्रिवेणी संगम है।
2. योजना एवं शक्ति परमात्म सत्ता की।
3. संरक्षण एवं मार्गदर्शन ऋषिसत्ता का।
4. पुरुषार्थ एवं सहकार युगसाधकों का।

युग निर्माण अब किसी वर्ग विशेष अथवा क्षेत्र विशेष तक सीमित नहीं रह सकता। पुरुषार्थ की तीनों धाराओं (प्रचारात्मक, सृजनात्मक, संघर्षात्मक) के लक्ष्य व्यापक रहें।

प्रचारात्मक – नवसृजन का संदेश क्षेत्र के 100 प्रतिशत व्यक्तियों तक पहुँचे। इन्हें इसमें साझेदारी के लिए सहमत करने का नैष्ठिक प्रयास हो।

सृजनात्मक – जो जितने अंशों में सहमत हों, उन्हें उसके अनुरूप साधना, स्वाध्याय, संयम एवं सेवा कार्यों में लगने के लिए प्रेरित–प्रशिक्षित कियाजाए। बौद्धिक, नैतिक एवं सामाजिक क्रान्ति के जरिए व्यक्ति, परिवार एवं समाज निर्माण में प्रवृत्त कराया जाय। उसके लिए समयदान, अंशदान का नैष्ठिक क्रम बने। स्नेह, सम्मान एवं सहयोग देकर आगे बढ़ाया जाए।

संघर्षात्मक – युग सृजन के मार्ग में आने वाली आन्तरिक और बाहरी रुकावटों को विवेक और जुझारू साहस के साथ पार करने की व्यूह रचना बनाई–चलाई जाय।

उक्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए साधना, संगठन, सशक्तिकरण के सुनिश्चित लक्ष्य रखें।

साधना इतनी समर्थ बने कि व्यक्तित्व परिष्कार और विकास कठिन न लगे।

संगठन इतना समर्थ बने कि अपने क्षेत्र में युग सृजन की जिम्मेदारियाँ उठाना भारी न लगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

व्यक्तित्व बने प्रखर–परिष्कृत।

संगठन बने सबल–व्यवस्थित।

कार्यशैली में लाएँ सुधार–निखार।

केन्द्र एवं क्षेत्र के संयोग से बने सृजनशील संगठित इकाइयों का सुसंबद्ध विकेन्द्रित तंत्र।

साधक दैनन्दिनी

साधक दैनन्दिनी (डायरी) की योजना नववर्ष पर साधकों के लिए प्रेम भरा उपहार है। नए साल में साधनापथ पर बढ़ चलने के लिए संकल्पित साधकों के लिए भाव भरा मार्गदर्शन–संदेश है। उनके उन्नत साधनामय जीवन की सफलता के लिए सच्ची कल्याणकामना है। नववर्ष में प्रायः नई दैनंदिनी का उपयोग अपनी जीवनचर्या के कुछ खास बिंदुओं का स्मरण रखने के लिए कर सकते हैं। कुछ लोग इसका प्रयोग रूपसे पैसे एवं चीज–सामान का हिसाब रखने के लिए करते हैं, पर ये सब सामान्य बातें हैं। ईश्वरीय दिव्यता को अपने मानवीय जीवन में उतार लेने के लिए संकल्पित साधकों का जीवन किसी भी स्थिति में सामान्य नहीं है। ऐसे संकल्पवान् साधक सदा ही विशिष्ट होते हैं, उनकी इस विशिष्टता के अनुरूप उनकी दैनंदिनी की योजना भी विशिष्ट होनी चाहिए।

इस साधना सत्य को ध्यान में रखते हुए अपने गायत्री परिजनों के लिए साधक दैनन्दिनी की योजना बनाई गई है। वर्षों से परमपूज्य गुरुदेव रचित युगसाहित्य से परिचित, प्रेरित एवं प्रभावित हममें से प्रायः सभी मनुष्य जीवन के परम लक्ष्य की ओर गतिशील हैं। हम सभी जानते हैं कि मनुष्य जीवन का परम लक्ष्य सर्वसमर्थ भगवान् की अपने जीवन से अभिन्नता को अनुभव करना है। उनके अनन्य प्रेम को प्राप्त करते हुए भागवत चेतना को अपनी अंतर्चेतना में अवतरित कर लेना है। वस्तुतः ज्ञान, भक्ति, मोक्ष सब इसी के अलग–अलग नाम हैं। स्वल्पश्चकालो बहवश्च विघ्नः यही जिदंगी का सच है। जीवन का समय थोड़ा है और बाधा, विघ्नों, विपदाओं की बाढ़ आई हुई है।

युग–परिवर्तन का दौर है। युगांतरीय चेतना असुरता को परास्त ही नहीं, नेस्तानाबूद करने के लिए कटिबद्ध है। देवशक्तियों का असुरता के साथ घनघोर संग्राम चल रहा है। विध्वंसक आसुरी शक्तियाँ समाप्त होते–होते भी प्रलयकाल के दृश्य उपस्थित कर रही हैं। व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन का कोई भी क्षेत्र विघ्न–बाधाओं की विपदा से अछूता नहीं है। कालनेमि के कुचक्र हर कहीं कोहराम मचाए हुए हैं। ऐसे आपदा–विपदा से भरे जीवन में जो मनुष्य जल्दी–से–जल्दी अपने जीवन–लक्ष्य को पहचानकर, उस ओर सावधानी से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बढ़ता हुआ उसे प्राप्त कर लेता है, वही बुद्धिमान् है। उसी का जन्म सफल है, उसी का जीवन सार्थक है और उसी की साधना श्रेष्ठ है।

याद रहे, यदि अपना यह मनुष्य जीवन यों ही बेकार की बातों में, स्वार्थ एवं अहं की क्षणिक तुष्टि के लिए विद्रूप स्वाँग तथा ईर्ष्या, द्वेष, प्रपंच के ढोंग रचते बीत गया, तो फिर पीछे पछताने के सिवाय और कोई उपाय न रह जाएगा, इसलिए हममें से हर एक को आज और अभी नववर्ष की शुरुआत मानकर इसी पवित्र क्षण में अपनी स्थिति पर विचार करके अपने साधनात्मक कर्तव्य के पालन में जुट जाना चाहिए। तनिक सोचें तो सही, हम सभी भगवान महाकाल के अंश हैं, महातपस्वी युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ परम पूज्य गुरुदेव की संतानें हैं, क्या क्षुद्रताओं से घिरे रहना हममें से किसी की शोभा देता है?

जो पहले से साधना कर रहे हैं, वे आगे बढ़ें। जिन्होनें अभी साधना की शुरुआत नहीं की है, वे करें और जल्दी करें। हम सभी ईश्वरप्राप्ति के दिव्य जीवनपथ पर आ जाएँ और इस लक्ष्य को ध्यान में रखकर सावधानी के साथ आगे बढ़ते रहें, इसी उद्देश्य से यह साधक दैनंदिनी की योजना तैयार की गई है। इसके अंतर्गत 24 प्रारंभिक नियम बनाए गए हैं। ये चौबीस नियम गायत्री महामंत्र के चौबीस मंत्राक्षरों की भाँति हैं। अतएव इन नियमों का पालन स्वयं विश्वासपूर्वक करना चाहिए। इस संबंध में प्रतिदिन अपनी साधना का समीक्षात्मक ब्योरा लिखा जाए तो और उत्तम है। यदि संभव बन पड़े, तो अपने कुछ प्रियजनों का साधक समूह बनाकर उसमें परस्पर यह साधनात्मक समीक्षा सुनानी चाहिए। किसी दिन किसी नियम के टूट जान पर आवश्यक दंड विधान को आग्रहपूर्वक स्वीकार करना चाहिए। शान्तिकुंज आकर पत्र लिखकर अथवा भेंट–मुलाकात कर अवसर मिलने पर इस संबंध में और अधिक उपयोगी परामर्श किया जा सकता है।

साधक दैनंदिनी की योजना में साधकों के लिए जो चौबीस नियम बनाए गए हैं, उनमें से प्रथम बारह नियम ग्रहण के हैं और बाद के बारह नियम त्याग के हैं। अर्थात् पहले बारह नियमों में यह बताया गया है कि क्या हम संकल्पपूर्वक करें, बाद के बारह नियमों में यह बताया गया है कि क्या हम दृढ़तापूर्वक न करें।

ग्रहण के नियम–

(1) सर्वत्र भगवत्दृष्टि–

जहाँ तक बने, दिन भर में जिस किसी से व्यवहार करना पड़े, उसे भगवान का स्वरूप समझना। यह सोचना कि हमारे प्रिय प्रभु ही एक अंश से हमसे मिलने आए हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(2) ईश्वर स्मरण–सद्गुरु स्मरण–

प्रत्येक आधे घंटे पर ईश्वर का एवं अपने सद्गुरु का (नाम, रूप, लीला, गुण आदि का) स्मरण करना और स्मरण आने पर न भूलने का प्रयास करना।

(3) सूर्योदय पूर्व जागरण–

बीमारी आदि कोई विषमता या किसी आपदा के अलावा प्रत्येक स्थिति में सूर्य उदय होने से पहले उठ जाना।

(4) प्रातः स्मरण और प्रणाम–

प्रातःकाल उठते ही माता गायत्री, परम पूज्य गुरुदेव का स्मरण करना और पृथ्वी माता को प्रणाम करने के बाद अपने गुरुजनों को प्रणाम करना। यदि माता–पिता आदि गुरुजन दूर हों तो उन्हें मन–ही–मन प्रणाम करना।

(5) नियमित गायत्री साधना–

गायत्री की दैनिक साधना विधि के अनुसार नियमित गायत्री साधना करते हुए नित्यप्रति कम–से–कम एक माला गायत्री मंत्र का जप करना। गायत्री साधकों को रविवार या गुरुवार कम–से–कम एक समय का उपवास अवश्य करना चाहिए।

(6) गीता एवं युगसाहित्य का अध्ययन–

प्रतिदिन भगवत्गीता के कम–से–कम दस श्लोकों का एवं परमपूज्य गुरुदेव रचित साहित्य के किसी अंश में से कम–से–कम एक पैराग्राफ का अर्थ चिंतन करते हुए अध्ययन करें। इस क्रम में साधकगण गुरुदेव के साधनापरक साहित्य का स्वयं चुनाव करें।

(7) निष्काम सेवा व स्वाध्याय–

पूरे दिन कम–से–कम एक काम ऐसा जरूर करें, जिसमें अपना तनिक भी स्वार्थ एवं थोड़ी–सी भी अहं भावना न हो। जैसे विनम्र भाव से कहीं सफाई आदि की जाए अथवा किसी बीमार आदि की सेवा की जाए। यदि किसी दिन कोई ऐसा अवसर न मिले तो किसी के कल्याण के लिए भगवान से भावभरी प्रार्थना की जाए। यह भी सेवा का ही एक रूप है। स्वाध्याय के क्रम में अखण्ड ज्योति पत्रिका के किसी लेख को विचारपूर्वक पढ़ा जाए अथवा किसी श्रेष्ठ विचारपूर्ण साहित्य को पढ़ा जाए और उस पर कुछ पंक्तियों में समीक्षात्मक नोट लिखा जाए। इस तरह के स्वाध्याय क्रम से मौलिक सृजन चेतना जाग्रत होती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(8) **आत्मबोध–तत्वबोध–**

प्रातः जागरण के तुरंत बाद भगवान का स्मरण करते हुए यह सोचना कि प्रभुकृपा से हमें यह एक दिन का जीवन मिला है। इसके सार्थक उपयोग के लिए संकल्पित होना। इसी तरह रात्रि सोते समय दिन भर के कामों की समीक्षा करते यह चिंतन करते हुए सोना कि हमारा समूचा अस्तित्व प्रभु में समर्पित, विसर्जित एवं विलीन हो रहा है। प्रत्येक दिन अपने नए जीवन का एवं प्रत्येक रात्रि अपनी मृत्यु का अनुभव करना ही आत्मबोध–तत्वबोध की साधना का सार है।

(9) **कर्तव्यपालन–**

सामान्य जनों के लिए घर में, कार्यालय में, विद्यार्थियों के लिए अपने पठन–पाठन से संबंधित जो भी कर्तव्य हों, उन्हें पूरे संकल्प एवं मनोयोगपूर्वक करना। कर्तव्य के प्रति कर्मठ भाव ही साधक जीवन की कसौटी है।

(10) **स्वच्छता–सुव्यवस्था –**

बाह्य जीवन एवं आंतरिक जीवन में स्वच्छता एवं सुव्यवस्था के लिए सदा सचेष्ट रहना। स्वच्छ एवं सुव्यवस्थित जीवनशैली ही साधकों की पहचान है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

(11) **नियमित ध्यान–**

कम से कम पंद्रह मिनट नियमित ध्यान करना। ध्यान के पंद्रह मिनट कभी भी निकाले जाएँ, पर इसका समय निश्चित होना चाहिए, भले ही यह रात्रि को सोते समय हो।

(12) **नियमपालन–निरीक्षण –**

प्रतिदिन सायंकाल कुछ समय इस बात की जाँच में लगाना कि दैनंदिनी के नियमों का किस तरह पालन हुआ। किसी भी भूल के लिए आवश्यक प्रायश्चित करना। कल भूल न हो, इस बात का दृढ़ संकल्प करना।

त्याग के नियम

1. **दूसरे के अहित का त्याग –** जान–बूझकर कभी किसी का अहित न करना।
2. **असत्य भावना का त्याग –** षड़यंत्र, कुचक्र जैसी असत्य भावनाओं से दूर रहना, जान–बूझकर किसी के लिए हानिकर असत्य न बोलना।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

3. **दूषित दृष्टि का त्याग** – पुरुष महिलाओं के प्रति, महिलाएँ पुरुषों के प्रति वासना भरी दृष्टि से न देखें। पवित्र दृष्टि, पवित्र भावना ही साधक का लक्षण है।

4. **परिग्रह का त्याग** – जान–बूझकर किसी का हक न लेना। अपने पास भी अनिवार्य आवश्यकता से अधिक वस्तुओं का संग्रह न करना।

5. **क्रोध का त्याग** – उत्तम तो यही है कि किसी भी स्थिति में साधक के मन में क्रोध न आए, परंतु यदि कभी मन में क्रोध आ जाए तो किसी भी तरह उसकी क्रिया बाहर न हो।

6. **फैशन का त्याग** – फैशन के अतिरेक से बचना। स्वछाता एवं सादगी से रहा जाए। बनाव–श्रृंगार के झूठेपन से बचा जाए।

7. **अश्लील विनोद का त्याग** – गंदी हँसी–मजाक न करना।

8. **ईर्ष्या द्वेष का त्याग** – किसी भी स्थिति में न तो किसी से द्वेष–दुर्भाव रखना और न ही किसी से ईर्ष्या करना। दूसरों की प्रगति–उन्नति एवं प्राप्ति में प्रसन्नता अनुभव करना।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

9. **परनिंदा का त्याग** – जान–बूझकर किसी की चुगली–निंदा न करना।

10. **मादक वस्तु व व्यसन का त्याग** – तंबाकू, सिगरेट, बीड़ी, भाँग, गाँजा, चरस, शराब आदि का सेवन न करना। जुआ आदि किसी भी व्यसन से बचना, दूर रहना।

11. **अभक्ष्य खान–पान का त्याग** – माँस–मछली–अंडा आदि अभक्ष्य वस्तुओं का सेवन न करना। लहसुन–प्याज का भी सेवन न करना।

12. **समय नष्ट करने की प्रवृत्ति का त्याग** – ताश, चौपड़ आदि में समय न गँवाना। जहाँ तक हो सके, व्यर्थ की बातें न करना।

साधक यदि इन चौबीस नियमों का दृढ़तापूर्वक पालन करते रहेंगे तो उनके जीवन में शुभ परिवर्तन होना अनिवार्य है। इन नियमों के साथ की गई थोड़ी–सी गायत्री साधना महान फलदायी होगी, ऐसा सुनिश्चित मानें।

नियम उल्लंघन होने पर प्राश्चित विधान – इन उपर्युक्त नियमों के पालन में किसी भी दिन कोई भूल होने पर साधकगण प्रत्येक भूल के लिए एक समय का उपवास अथवा गायत्री महामंत्र की एक माला का जप प्रायश्चित स्वरूप अवश्य करें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

साधक दैनंदिनी के प्रकाशित होने तक किसी कापी अथवा रजिस्टर में उपर्युक्त क्रम के अनुसार दैनंदिन बना ली जाए और आज ही नववर्ष का प्रथम दिन मानकर इन नियमों का दृढ़तापूर्वक पालन शुरू कर दिया जाए। इन नियमों के पालन में जितनी दृढ़ता होती चली जाएगी, अंतर्चेतना उतनी ही प्रकाशित होने लगेगी। विषय भोगों से अपने आप ही मन हटकर भगवान में लगने लगेगा।

भगवान और भोगों में मूलभूत सात अंतर बताए हैं। –

1. भगवान को पाने के लिए अपनी इच्छा का तीव्र से तीव्रतर और तीव्रतम हो जाना पर्याप्त है, जबकि भोगों की प्राप्ति हमारी इच्छा से नहीं, कर्मों से होती है।
2. भगवान एक बार मिलने पर कभी भी नहीं बिछुड़ते, जबकि भोग मिलकर कभी बिछुड़े बिना नहीं रहते।
3. भगवान जब मिलते हैं, सदा ही पूरे मिलते हैं, जबकि भोग जब भी मिलते हैं, सदा ही अधूरे मिलते हैं।
4. भगवान को पाने की इच्छा अंतःकरण में जगते ही पापों का नाश होने लगता है, जबकि भोगों के पाने की चाहत जगते ही पाप होने शुरू हो जाते हैं।
5. भगवान को पाने की साधना में हम ज्यों–ज्यों आगे बढ़ते हैं, मन में शांति भरती जाती है, जबकि भोगों को पाने की कोशिश का मन अशांत और विक्षिप्त होता चला जाता है।
6. भगवान की याद करते हुए जीने वाला सदा सुख–शांतिपूर्वक देह का त्याग करता है, जबकि भोगों की चिंता एवं चिंतन में लगा हुआ व्यक्ति हमेशा ही अशांति एवं दुःखों से पीड़ित होकर मरता है।
7. भगवान की याद करते हुए शरीर छोड़ने वाला सदा ही अपने आराध्य प्रभु के पास जाता है, जबकि भोगों को याद करते हुए शरीर छोड़ने वाला निश्चय ही नरकों एवं निम्न योनियों में जाता है।

संत सदा ही ये सचाई अपने जीवन में अनुभव करते रहे हैं। साधना–पथ ही श्रेष्ठतम जीवन–पथ है। परम पूज्य गुरुदेव ने अपने जीवन का सार–निष्कर्ष इसी एक वाक्य में कहा है। फिर भला हम सब इस श्रेष्ठतम जीवन–मार्ग से क्यों चूकें। हम विचारशील हैं, विवेकवान हैं, इसकी परख की कसौटी एक ही है कि हम साधक दैनंदिनी की इस योजना में कितने उत्साह, निष्ठा एवं श्रद्धा से भागीदार बनते हैं। साधक दैनंदिनी के इन चौबीस नियमों को अपने किस तरह धारण–ग्रहण किया, इसकी सूचना शान्तिकुंज, हरिद्वार के पते पर अवश्य दें। ध्यान रहे, ये चौबीस नियम ही चौबीस अक्षरों वाले गायत्री महामंत्र की साधना की सफलता के लिए साधकों का मार्ग प्रशस्त करेंगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

साधक दैनंदिनी का प्रारूप

दिनांक..................... से .... तक   साधक का नाम..........................

ग्रहण करने के नियम (नियम भरने के लिए)

तारीख	वार	सर्वत्र भगवत् दृष्टि	ईश्वर स्मरण सद्गुरु स्मरण	सूर्योदय पूर्व जागरण	प्रातः स्मरण और प्रणाम	नियमित गायत्री साधना	गीता एवं युग साहित्य का अध्ययन	निष्काम सेवा व स्वाध्याय	आत्मबोध तत्वबोध	कर्तव्य पालन	स्वच्छता सुव्यवस्था	नियमित ध्यान	नियम पालन निरीक्षण

दिनांक..................... से .... तक   साधक का नाम..........................

त्याग करने के नियम (नियम भरने के लिए)

तारीख	वार	दूसरे के अहित का त्याग	असत्य भावना का त्याग	दूषित दृष्टि का त्याग	परिग्रह का त्याग	क्रोध का त्याग	फैशन का त्याग	अश्लील विनोद का त्याग	ईर्ष्या द्वेष का त्याग	परनिंदा का त्याग	मादक वस्तु व व्यसन का त्याग	अभक्ष्य खान–पान का त्याग	समय नष्ट करने की प्रवृत्ति का त्याग

हमारा युग निर्माण सत्संकल्प

नित्य पाठ करें, धीरे–धीरे पढ़ें।

समझकर पढ़ें, श्रद्धापूर्वक पढ़ें।।

युग निर्माण अभियान जिसे लेकर गायत्री परिवार निष्ठा और तत्परतापूर्वक अग्रसर हो रहा है, उसका बीज सत्संकल्प है। यह हमारे प्रयासों का एक सुनिश्चित प्रारूप–घोषणा पत्र है, जिसके आधार पर हमारी सारी विचारणा, योजना, गतिविधियाँ एवं कार्यक्रम संचालित होंगे। इसका प्रत्येक सूत्र व्यक्ति, परिवार, समाज एवं राष्ट्र को आमूल–चूल बदलने की आधारशिला के रूप में रखा गया है। एकता, समता की सर्वांगपूर्ण रूपरेखा–वसुधैव कुटुम्बकम् की समग्र परिकल्पना इसमें की गई है। इस घोषणा पत्र को हम ठीक प्रकार से समझें, इस पर मनन और चिंतन करें तथा यह निश्चय करें कि हमें अपना जीवन इसी ढाँचे में ढालना है। दूसरों को उपदेश करने की अपेक्षा इस संकल्प पत्र में आत्म निर्माण का सारा ध्यान केन्द्रित किया गया है। युग परिवर्तन के लिए जिस अवतार की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आवश्यकता है, वह पहले आकांक्षा रूप में ही अवतरित होगा। इसी अवतार का सूक्ष्म स्वरूप ही यह युग निर्माण सत्संकल्प है।

हमारा युग निर्माण सत्संकल्प

- हम ईश्वर को सर्वव्यापी, न्यायकारी मानकर उसके अनुशासन को अपने जीवन में उतारेंगे।
- शरीर को भगवान् का मंदिर समझकर आत्म–संयम और नियमितता द्वारा आरोग्य की रक्षा करेंगे।
- मन को कुविचारों और दुर्भावनाओं से बचाये रखने के लिए स्वाध्याय एवं सत्संग की व्यवस्था रखे रहेंगे।
- इन्द्रिय संयम, अर्थ संयम, समय संयम और विचार संयम का सतत अभ्यास करेंगे।
- अपने आपको समाज का एक अभिन्न अंग मानेंगे और सबके हित में अपना हित समझेंगे।
- मर्यादाओं को पालेंगे, वर्जनाओं से बचेंगे, नागरिक कर्त्तव्यों का पालन करेंगे और समाज निष्ठ बने रहेंगे।
- समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी को जीवन का एक अविच्छिन्न अंग मानेंगे।
- चारों ओर मधुरता, स्वच्छता, सादगी एवं सज्जनता का वातावरण उत्पन्न करेंगे।
- अनीति से प्राप्त सफलता की अपेक्षा नीति पर चलते हुए असफलता को शिरोधार्य करेंगे।
- मनुष्य के मूल्यांकन की कसौटी, उसकी सफलताओं, योग्यताओं एवं विभूतियों को नहीं, उसके सद्विचारों और सत्कर्मों को मानेंगे।
- दूसरों के साथ वह व्यवहार नहीं करेंगे, जो हमें अपने लिए पसन्द नहीं।
- नर–नारी परस्पर पवित्र दृष्टि रखेंगे।
- संसार में सत्प्रवृत्तियों के पुण्य प्रसार के लिए अपने समय, प्रभाव, ज्ञान, पुरुषार्थ एवं धन का एक अंश नियमित रूप से लगाते रहेंगे।
- परम्पराओं की तुलना में विवेक को महत्व देंगे।
- सज्जनों को संगठित करने, अनीति से लोहा लेने और नव सृजन की गतिविधियों में पूरी रुचि लेंगे।
- राष्ट्रीय एकता एवं समता के प्रति निष्ठावान् रहेंगे। जाति, लिंग, भाषा, प्रान्त, सम्प्रदाय आदि के कारण परस्पर कोई भेद–भाव न बरतेंगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

- मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है, इस विश्वास के आधार पर हमारी मान्यता है कि हम उत्कृष्ट बनेंगे और दूसरों को श्रेष्ठ बनायेंगे, तो युग अवश्य बदलेगा।
- हम बदलेंगे—युग बदलेगा, हम सुधरेंगे—युग सुधरेगा। इस तथ्य पर हमारा परिपूर्ण विश्वास है।
- इसी आधार पर हमारी सारी विचारणा, योजना, गतिविधियाँ एवं कार्यक्रम संचालित होते हैं। इसे 'नवयुग का संविधान' घोषणा पत्र भी कहा जा सकता है। इसे दैनिक धर्मकृत्य की तरह नित्य प्रातःकाल अवश्य पढ़ना चाहिए। जीवन साधना क्रम में एक–एक सूत्र का चिन्तन एवं क्रिया पद्धति में अभ्यास करना चाहिए। सामाजिक समारोहों पर 'एक व्यक्ति उच्चारण करे और शेष उसे दुहरायें' की शैली में पढ़ा एवं दुहराया जाना चाहिए।

इस प्रकार अपनी दैनिक साधना को समायोजित करने का निर्देश परमपूज्य गुरुदेव ने दिया है।

प्रज्ञामण्डल/महिला मण्डल/युवा मण्डल

www.vicharkrantibooks.org

महिला मण्डल स्वरूप और संगठन –

यह युगसंधि काल है। मनुष्य मात्र को संभावित विनाश से बचाकर उज्ज्वल भविष्य की ओर गति देने के लिए दैवी योजना ऋषितंत्र के माध्यम से लागू की जा रही है। मनुष्यों को दुर्भाव, दुर्बुद्धि और दुष्कर्मों के शिकंजे से मुक्त करके उन्हें सद्भाव, सद्बुद्धि एवं सत्कर्म से सम्पन्न बनाने के लिए युगऋषि ने देव संस्कृति के दुर्लभ सूत्रों को सर्वसुलभ बनाकर उन्हें जन–जन तक पहुँचाने के कार्य योजना बनायी है। यह कार्य जाग्रत् आत्माओं, सद्वृत्ति सम्पन्नों के संगठन द्वारा सम्पन्न किया जाना है। प्रज्ञा मण्डल–महिला मण्डल इसी देव परिवार की मूलभूत इकाइयाँ हैं। मण्डल के नैष्ठिक सदस्यों/सदस्याओं द्वारा किसी निर्धारित क्षेत्र, मोहल्ले, ग्राम में घर–घर देव संस्कृति के सूत्रों को पहुँचाने, स्थापित करने का उत्तरदायित्व संभालना होता है।

अनिवार्य सूत्र : नवसृजन अभियान के अन्तर्गत हर भावनाशील–विचारशील नर/नारी से आग्रह किया जाता है कि वे इस दैवी अभियान में निष्ठापूर्वक भागीदार बनें। इस संदर्भ में उनसे कुछ अपेक्षाएँ की जाती हैं।

विश्वास करें कि यह युगसंधि का अति महत्वपूर्ण समय है। स्रष्टा मनुष्य को विनाश की विभीषिकाओं से बचाकर उज्जवल भविष्य तक ले जाने के लिए कृतसंकल्प है। परिस्थितियाँ चाहे जितनी खराब दिखै, दैवी प्रेरणा और मानवी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पुरुषार्थ के संयोग से उज्ज्वल भविष्य सुनिश्चित है। हमें इस शुभ कार्य में ईश्वर की साझेदारी स्वीकार करने का सौभाग्य खोना नहीं है।

दुर्बुद्धि ने दुर्गति पैदा की है, सद्बुद्धि से सद्गति प्राप्त होगी। इसलिए रोज नियम से सवेरे नहाधोकर कम से कम दस मिनट सद्बुद्धि जगाने वाले 'गायत्री महामंत्र' का निष्ठापूर्वक जप करें। जप के समय भावना करें कि हम सबको सद्बुद्धि का दिव्य प्रवाह प्राप्त हो रहा है। हमारा शरीर, मन, अंतःकरण दैवी अनुशासन को स्वीकार करके उज्ज्वल भविष्य के अनुरूप बन रहा है। किसी भी मत या संप्रदाय के लोग इस साधना को निःसंकोच कर सकते हैं। गायत्री मंत्र में परमात्मा का कोई नाम या रूप निर्धारित नहीं है, जिनसे गायत्री मंत्र न सधे, वे उक्त भावना के साथ, अपनी आस्था के अनुरूप इष्ट मंत्र या नाम जप के साथ प्रार्थना कर सकते हैं।

वर्तमान समय में अपने व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन को अनगढ़ से सुगढ़ बनाने के लिए व्यावहारिक, विवेक सम्मत, प्रभावशाली सूत्र युग ऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने लिख–छापकर सबके लिए सुलभ बना दिये हैं। उनके एक अंश को रोज पढ़ या सुनकर जीवन में धारण करने का प्रयास करें।

स्वयं इस साधना में लगे रहकर अपने परिवार–जनों, परिचितों को भी इस सौभाग्यशाली प्रक्रिया से जोड़ने का प्रयास करें। इसके लिए अपने समय और साधनों का एक अंश (न्यूनतम दो घण्टा समय तथा 25 पैसे) नित्य निकालें।

ईश्वर के साथ साझेदारी के इस क्रम को अपनाने वाले कम से कम 5 व्यक्ति एक प्रज्ञा मण्डल गठित कर सकते हैं। इसी प्रकार से 5 महिलाएँ मिलकर स्वतंत्र महिला मण्डल का गठन कर सकती हैं।

मण्डल का गठन : युग संधि काल में, दैवी प्रयोजन के लिए ईश्वर की साझेदारी के यह सूत्र जिन्हें रुचें, ऐसे कोई भी प्राणवान् व्यक्ति अकेले ही प्रज्ञामण्डल के गठन की शुरुआत कर सकते हैं। इसका सूत्र हैं, एक से पाँच, पाँच से पच्चीस।

इच्छुक नर/नारी अपने चार साथियों, सहयोगियों को इस प्रक्रिया के लिए सहमत करें। जब उनका व्यक्तिगत क्रम चल पड़े, तो सप्ताह में एक बार सामूहिक उपासना, सामूहिक स्वाध्याय–सत्संग की व्यवस्था बनाएँ। इसे साप्ताहिक साधना संगोष्ठी कहते हैं। इसे किसी परिजन के घर पर या किसी सार्वजनिक पवित्र शांत स्थान पर सम्पन्न किया जा सकता है। इसके लिए साप्ताहिक अवकाश का दिन उपयुक्त रहता है।

पाँचों सदस्य अपना दैनिक एवं साप्ताहिक क्रम नियमित रूप से चलाते रहकर किसी सक्रिय संगठित समूह (स–3) से अपने मण्डल को जोड़ लें। केन्द्र

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

को भेजी जाने वाली प्रत्येक रिपोर्ट की प्रति अपने स–3 को भी दें। मंडलों के प्रमुख सदस्यों में अथवा स–3 की समन्वय समिति में कोई भी मतभेद होने पर समन्वय समिति की तुरन्त बैठक बुलाकर समाधान कर लेना चाहिए। समाधान न निकलने पर केन्द्र की सहायता लेने में कोई हर्ज नहीं है।

साप्ताहिक संगोष्ठी का स्थान यदि बदला जाय, तो उसे एक सप्ताह पहले ही निर्धारित–घोषित कर दिया जाना चाहिए। प्रत्येक सदस्य अपने परिचितों तथा जहाँ गोष्ठी होनी है, उस मोहल्ले के आम लोगों को उसमें भाग लेने के लिए प्रेरित–आमंत्रित करें।

प्रयास किया जाना चाहिए कि नगर/गाँव के हर मोहल्ले में पुरुष/महिला प्रज्ञा मण्डल गठित और सक्रिय हो जाएँ, ताकि उनके माध्यम से घर–घर में देव संस्कृति के सूत्रों को स्थापित और विकसित करने का क्रम सुचारू रूप से चलाया जा सके। क्षेत्र की आवश्यकता के अनुसार समर्थ मण्डल अपने सक्षम सदस्यों के माध्यम से अनेक मण्डल विकसित करने का क्रम बनाते रह सकते हैं।

कोई नवगठित मण्डल जब कम से कम 6 माह नियमित रूप से सक्रिय रहे और अपनी कार्य योजना के अनुसार अपने निर्धारित क्षेत्र की जिम्मेदारियाँ संभाल ले, तब उसका पंजीयन शांतिकुंज से करा लेना चाहिए।

घर–घर आस्तिकता का वातावरण बनाना चाहिए, संस्कार परम्परा की स्थापना करके परिवारों को पुनः नर–रत्नों की खदान बनाने का प्रयास करना, इसके लिए पर्याप्त संख्या में समयदानी–कर्मठ कार्यकर्त्ताओं को खोज निकालना तथा प्रशिक्षित करना।

इतना क्रम चल पड़े, तो फिर विविध रचनात्मक, सुधारात्मक (अशिक्षा निवारण, विद्याविस्तार, नशा निवारण, स्वास्थ्य संवर्धन, स्वच्छता संवर्धन, अंध ाविश्वास, कुरीतियों का निवारण, पर्यावरण–वृक्षारोपण, स्वावलम्बन, कुटीर उद्योगों का विकास) कार्यों को हाथ में लिया जा सकता है।

प्रज्ञा मण्डल, महिला मण्डल एवं युवा मण्डल तथा संगठन की अन्य इकाईयों हेतु निर्धारित अर्थानुशासन –

पूज्य गुरुदेव ने अपने अभियान की अर्थव्यवस्था साधकों, सहयोगियों के श्रद्धा भरे अंशदान से चलाने की रीति–नीति निर्धारित की है। इसके लिए वे कहते रहे हैं कि हर साधक, सहयोगी देवप्रयोजन के लिए कम से कम आधी रोटी या आधे कप चाय जितना अंशदान, अन्न या नगद रूप मे अवश्य करे। इस क्रम में भी भीतर से ईमानदार और बाहर से प्रामाणिक बने रहना आवश्यक है। इसके लिए आवश्यक है कि दान दाता को पक्की रसीद दी जाये तथा प्राप्त साधनों का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ठीक से हिसाब भी रखा जाये।

(1) प्रज्ञा मण्डल/महिला मण्डल/युवा मण्डल यद्यपि केन्द्र शान्तिकुंज, हरिद्वार से पंजीकृत हैं किन्तु शासकीय रेवेन्यू विभाग से पंजीकृत नहीं होने के कारण अपने नाम से रसीद बुक नहीं छपा सकते हैं। वे किसी शक्तिपीठ/प्रज्ञापरठ कि रजिस्टर्ड ट्रस्ट से रसीद बुक लेकर कार्य करें।

(2) इसी तरह कोई भी नव चेतना विस्तार केन्द्र (स–3) अथवा विकास खण्ड/जिला संयुक्त समन्वय समिति भी अपनी कोई रसीद बुक न छपायें बल्कि मण्डल की तरह अपने जिले के किसी ट्रस्ट की रसीद बुकों का ही उपयोग करें। अपने मिशन की प्रामाणिकता, पारदर्शिता एवं विश्वसनीयता अपनाये रखने हेतु इसे अनिवार्य मानकर उक्त प्रक्रिया ही अपनायें।

(3) प्रज्ञा मण्डल/महिला मण्डल/युवा मण्डल अपने कार्यक्रमों की आय में से मार्ग व्यय, टेलीफोन, पत्राचार, भोजन, पर्व–त्यौहार के आयोजन आदि मदों में आवश्यक राशि खर्च कर सकते हैं।

साथ ही मण्डल अपनी आवश्यकता हेतु दरी, माईक, दीपयज्ञ/यज्ञ के उपकरण, संगीत उपकरण आदि स्थायी सामान भी क्रय कर सकते हैं। लेकिन इन सामानों को क्रय करने से पूर्व जिस ट्रस्ट की रसीद बुकें प्राप्त की है उससे पूर्वानमति प्राप्त करना आवश्यक होगी।

(4) किसी मण्डल द्वारा क्रय किया गया सारा सामान ट्रस्ट/जिला ट्रस्ट स्टॉक रजिस्टर में प्रविष्टि करने के बाद सम्बन्धित मण्डल अथवा संयुक्त समन्वय समिति को सौंप दिया जायगा। ट्रस्ट/जिला ट्रस्ट की रसीद बुकों से एकत्र धन से रसीदें जाने के कारण यद्यपि यह ट्रस्ट की सम्मति मानी जायेगी किन्तु उसका उपयोग सम्बन्धित मण्डल करते रहेंगे तथा अपने पास उसे सुरक्षित रखेंगे।

(5) विवाद/मत भिन्नता की स्थिति में उपजोन/ जोनल केन्द्र अथवा शान्तिकुंज से मार्गदर्शन प्राप्त करें तथा तदनुसार आगे कदम बढ़ायें।

(6) देव परिवारों से ज्ञान घटों, धर्मघटों, अंशदानियों, यज्ञ संस्कारों तथा अन्य प्रकार से जो धन एकत्रित होता है, उसका हिसाब हर साप्ताहिक सत्संग में सबके सामने रखा जाता रहे।

(7) ट्रस्ट से रसीद लेने वाले प्रज्ञा मण्डल/महिला मण्डल/युवा मण्डल उन रसीदों के माध्यम से इकट्ठा किए गए स्वेच्छा सहयोग का हिसाब रखेंगे। हर माह या पीठ द्वारा निर्धारित अवधि में अपना हिसाब प्रामाणिक वाउचरों के साथ पीठ के लेखा विभाग के पास जमा कराते रहेंगे। यदि उनके हिसाब में कोई कमी होगी, तो लेखा विभाग के सदस्य उन्हें इंगित करके ठीक कराएँगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(8) हिसाब के साथ बची हुई रकम में से कुछ राशि मण्डल अपने पास रख सकते हैं, लेकिन उस राशि को औसत आवश्यकता से अधिक नहीं होने देना चाहिए। संचित पैसा अकारण तकरार एवं शक का कारण बनता है। बचत अधिक होने की स्थिति में उसे पीठ या केन्द्र (जिनकी रसीद बुकों का उपयोग किया जा रहा है) पर जमा करा दें।

(9) बचत की राशि को मण्डल के नाम से ट्रस्ट की खाता–बहियों में जमा दिखाया जायेगा। आवश्कतानुसार उस राशि को मण्डल के हित में मिशनरी कार्यों हेतु वापस भी किया जा सकेगा। ट्रस्ट/जिला ट्रस्ट यदि उसका उपयोग अपनी शक्तिपीठ/प्रज्ञापीठ के लिये अथवा मिशन सम्बन्धी अन्य कार्यों में करना चाहे तो वह सम्बन्धित मण्डल से परामर्श कर, उसे विश्वास में लेकर ही करे।

मण्डलों का गठन–

प्रारंभ में कोई भी पाँच नैष्ठिक साधक/साधिकाएँ मिल जुलकर प्रज्ञा/महिला मण्डल बना सकते हैं। गायत्री परिवार के प्रत्येक सदस्य को निर्धारित पँचशीलों (भावभरी नियमित उपासना एवं आत्म परिष्कार की साधना, स्वाध्या, संस्कार, सहाकर एवं संगठन) का पालन अनिवार्य माना जाना चाहिए।

उपासना –

विश्वास करें कि विश्व नियन्ता विनाश की भावानाओं को निरस्त करके मनुष्य मात्र के लिए उज्जवल भविष्य रचने को तत्पर है। भावभरी उपासना द्वारा हम उसके शक्तिप्रवाहों से जुड़ें और उसका लाभ पाएँ। दुर्बुद्धि से दुर्गति एवं सद्बुद्धि से सद्गति का नियम अकाट्य है। इसलिए रोज नियम से सबेरे नहा धोकर कम से कम दस मिनट गायत्री महामंत्र का जप निष्ठा पूर्वक करें। जप के समय भावना करें कि सबको सद्बुद्धि का दिव्य प्रवाह प्राप्त हो रहा है। हमारा शरीर, मन, अन्तःकरण दैवी अनुशासन को स्वीकार करके उज्जवल भविष्य के अनुरूप बन रहा है। किसी भी मत या सम्प्रदाय के नर–नारी इस साधना को निःसंकोच कर सकते हैं। गायत्री मंत्र में ईश्वर का कोई नाम व रूप निर्धारित नहीं है। इसलिए किसी दे प्रतीक के सामने इसका जप किया जा सकता है। जिनसे गायत्री मंत्र न सधे वे उक्त भावना के साथ अपनी श्रद्धा के अनुरूप इष्ट मंत्र या नाम जप के साथ प्रार्थना कर सकते हैं। व्यक्तित्व को परिष्कृत बनाने हेतु उपासना साधना का नियमित क्रम चलाना।

स्वाध्याय –

ईश अनुग्रह से प्राप्त जीवन की विभिन्न क्षमताओं को सही दिशा में लगाने की दृष्टि स्वाध्याय से मिलती है। व्यक्तिगत एवं पारिवारिक जीवन को अनगढ़ता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

से बचाकर सुगढ़ बनाने के लिए व्यावहारिक, विवेक सम्मत, प्रभावशाली सूत्र युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने लिख छापकर सबके लिए सुलभ बनाए हैं। उनके कुछ अंश नित्य पढ़/सुनकर उन्हें जीवन में धारण करने का प्रयास करें।

संस्कार –

आत्म शोधन हेतु संस्कार परंपरा अपनायें। अपने जन्मदिन, विवाह दिवस, संस्कार अवश्य करायें। सहाकर– लोक कल्याण हेतु आत्म विस्तार के क्रम में नियमित अंशदान, समयदान न्यूनतम एक घण्टा एवं 50 पैसा नित्य लोक मंगल के लिए निकाले।

संगठन–

अपने घर परिवार में भी सामूहिक निर्णय को लागू करें। गायत्री परिवार के संगठन की इकाई के सक्रिय सदस्य बनें मण्डल संचालक अपने मण्डल के सदस्यों को उक्त पंचशीलों को अपनाने हेतु प्रेरित करते रहें।

किसी भी प्रज्ञा/महिला मण्डल में सदस्यों की संख्या क्रमशः बढ़ाते हुए 50–100 तक ले जाई जा सकती है। प्रत्येक मण्डल के लगभग 2000 से 5000 की आबादी वाले क्षेत्र में नव सृजन की गतिविधियाँ चलाते रहने की जिम्मेदारी संभालनी होती है।

साप्ताहिक संगोष्ठी –

प्रज्ञा/महिला मण्डलों के लिए साप्ताहिक सत्संग–संगोष्ठी का क्रम चलाना अनिवार्य रखा गया है। इसके तीन चरण हैं– (1) सामूहिक उपासना (2) सामूहिक स्वाध्याय–सत्संग (3) प्रगति की समीक्षा एवं अगले चरणों का निर्धारण। इन सभी का अपना–अपना असाधारण महत्व है।

सामूहिक उपासना से साधकों के मन एक होते हैं, जिससे आत्मीयता बढ़ती है तथा संकीर्ण स्वार्थो से ऊपर उठकर इच्छाओं–आकांक्षाओं में सामूहिक हित के भाव बढ़ने लगते हैं। देव परिवारों के विकास के लिए ऐसा होना अनिवार्य है। इससे श्रद्धा सजल एवं विकसित होती है।

सामूहिक स्वाध्याय सत्संग से विचारों में एकरूपता आती है, मतभेद तथा संशय समाप्त होते हैं तथा श्रेष्ठ पुरुषों के आदर्श विचारों को जीवन में धारण करना सहज संभव हो जाता हैं। नवसृजन की दिशा में एक जुट होकर पुरुषार्थ करने के लिए यह आवश्यक हैं। इससे प्रज्ञा प्रखर बनती है।

प्रगति समीक्षा और नये निर्धारणों के माध्यम से अपने लिए आवश्यक परिष्कार तथा विकास का जीवन्त क्रम बना रहता है। विकास के क्रम में स्वाभाविक रूप से होने वाली चूकों तथा उभरने वाले दोषों का समय पर उपचार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करते हुए अपनी बढ़ती हुई क्षमता तथा मिलने वाले दिव्य अनुदानों को सुनियोजित करने का सहज क्रम बन जाता है। इससे निष्ठा सुदृढ़ होती जाती है।

कार्यविधि–

सामूहिक उपासना के क्रम में पहले प्रेरणाप्रद भजन–कीर्तन करना चाहिए। इससे अंतःकरण तनावमुक्त होता है, हीन भावना के निवारण और उमंग–उल्लास के संचार का सुयोग बनता है। सुविधानुसार ढपली, मँजीरे, करताल आदि का प्रयोग करते हुए कीर्तन के माध्यम से भक्तिरस में डूबने का प्रयास करना चाहिए। इसके बाद सामूहिक रूप से सस्वर गायत्री मंत्र बोलकर गुरु वंदना तथा सर्वदेव नमस्कार का क्रम चलाएँ। फिर मंच पर स्थापित 5 दीपक प्रज्वलित करके 24 बार सामूहिक रूप से गायत्री मंत्र का उच्चारण एक स्वर में एक साथ कर दीपयज्ञ सम्पन्न करें। भावना करें कि मंत्र के प्रभाव से गुरु–ईश अनुग्रह से हम सबके मन एक हो रहे हैं। मंत्र पूरे होने पर 15 मिनट मौन मानसिक जप करें। भावना करें कि हम सबकी सद्भावना संयुक्त होकर मनुष्य मात्र के लिए उज्जवल भविष्य की संरचना में ऋषिसत्ता के प्रयासों के साथ जुड़ रही है। युगशक्ति का संचार हम सबके अंदर हो रहा है। समय पूरा होने पर संचालन कर्त्ता द्वारा सस्वर गायत्री मंत्र बोला जाय, सब साथ दें। भावना करें कि हम दिव्य अनुदान पाकर दिव्य संरक्षण में युग धर्म निर्वाह के लिए तैयार हो गए हैं।

सामूहिक सत्संग के लिए विषय पहले से निर्धारित रहें। सत्संग में शामिल होने वालों के स्तर और उनकी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए चुने जायें। इसके लिए पूज्य गुरुदेव के साहित्य, मिशन की पत्रिकाओं के महत्वपूर्ण अंश चुने जा सकते हैं। पाक्षिक में परिजनों के लिए छापे जाने वाले मार्गदर्शक सूत्र सबके ध्यान में लाना भी जरूरी हैं। एक सप्ताह पहले ही निर्धारण हो जाने से लोग उस विषय को पढ़–समझ कर आते हैं और अधिक लाभ उठा पाते हैं। निर्धारित अंश पढ़कर सुनाने तथा सुयोग्य व्यक्तियों द्वारा उसके व्यावहारिक पक्ष को स्पष्ट करने का क्रम चलाना चाहिए। विभिन्न पक्षों से विचार सामने आने से हर व्यक्ति की मनन–चिंतन की क्षमता विकसित होती है। विचारों को पचाकर जीवन में संचरित करना संभव होता है। विचारों को समझने तथा व्यक्त करने की सामर्थ्य क्रमशः बढ़ती जाती है जिससे जीवन के परिष्कार एवं विकास का सहज क्रम चल पड़ता है।

तीसरे चरण प्रगति समीक्षा में सत्संग के बाद व्यक्तिगत एवं टोलीगत स्तर पर स्वीकार किए गए उत्तरदायित्वों की प्रगति समीक्षा की जानी चाहिए। जिनका समयदान और जन सम्पर्क का क्रम ठीक चल रहा हैं, उनकी सराहना करने तथा चूकने वालों को प्रोत्साहन–सहयोग देकर आगे बढ़ाने का क्रम बनाया जाय। साधना एवं सेवा कार्यों में जो कठिनाइयाँ आती हों। उनके समाधान खोजे, सुझाए

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जाने चाहिए। घर–घर सम्पर्क करने एवं संस्कार आदि घरेलु कार्यक्रम सम्पन्न नए चरण निर्धारित किए जाने चाहिए। केन्द्रीय निर्देशों–पत्रों के प्रकाश में अपने दायित्वों को स्पष्ट कर लेना चाहिए।

अंत में अगले सप्ताह के लिए सूचनाएँ देकर, शांपिपाठ एवं प्रसाद वितरण के साथ समापन किया जाना चाहिए।

ध्यान देने योग्य बातें—

◆ संगोष्ठी के लिए निर्धारित स्थल पर पूर्व व्यवस्था के लिए मण्डल के किन्हीं सदस्यों को निर्धारित समय से 15–20 मिनट पूर्व पहुँच कर वहाँ स्वच्छता, व्यवस्था कर लेनी चाहिए। इसके लिए पहले से ही जिम्मेदारी स्वीकारी या सौंप दी जानी चाहिए।

◆ कार्यक्रम निर्धारित समय पर प्रारम्भ एवं समाप्त कर देने की सावधानी बरती जानी चाहिए। इससे मण्डल की तत्परता और प्रामाणिकता का स्तर बढ़ता है। शामिल होने वाले भी निःसंकोच होकर भाग लेने लगते है।

◆ साप्ताहिक संगोष्ठी के बाद नियमित सदस्यगण दो–दो, तीन–तीन की टोलियाँ बनाकर कम से कम 5 घरों में सम्पर्क करते प्रसाद देते हुए घर लौटे। इस सम्पर्क क्रम में नए घरों में सद्विचार पहुँचाने का प्रयास करें। पुराने सम्पर्क के जो लोग संगोष्ठी में न पहुँचे हों, उनके कुशल समाचार लेने और गोष्ठी का विवरण देने का कार्य इस सम्पर्क क्रम में किया जाना उचित है।

◆ कार्यक्रम के संचालन के लिए किन्ही अनुभववृद्ध उपयुक्त सदस्य/सदस्या को जिम्मेदारी सौंप देनी चाहिए। आने वालों को सम्मानपूर्वक यथा स्थान क्रमबद्ध ढंग से बिठाने तथा अन्य व्यवस्थाओं के लिये युयोग्य स्वयं सेवक नियुक्त रहने चाहिए। निर्धारित तीनों चरणों के सहित कार्यक्रम को डेढ़ से दो घण्टे में समाप्त कर लेना चाहिए।

मण्डलों के अन्य कार्य –

मण्डलों के अन्य कार्यों को प्रायः 3 भागों में विभाजित किया गया है–

(1) **प्रचारात्मक–** घर–घर आस्तिकता का वातावरण बनाना चाहिए, संस्कार परम्परा की स्थापना करके परिवारों को पुनःनर रत्नों की खदान बनाने का प्रयास करना, इसके लिए पर्याप्त संख्या में समयदानी–कर्मठ कार्यकर्त्ताओं को खोज निकालना तथा प्रशिक्षित करना। उन्हें शांतिकुंज में चलने वाले अतिथि सत्र, साधना सत्र, युग शिल्पी सत्र, रचनात्मक सत्र में भाग लेने हेतु प्रेरित करना, भेजना।

(2) **सृजनात्मक –** इतना क्रम चल पड़े, तो फिर विविध

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रचनात्मक–सुधारात्मक (अशिक्षा निवारण, विद्याविस्तार, नशा निवारण, स्वास्थ्य संवर्द्धन, अंधविश्वास, कुरीतियों का निवारण, पर्यावरण–वृक्षारोपण, स्वावलम्बन, कुटीर–उद्योगों का विकास) आदि कार्यों को हाथ में लिया जा सकता है।

(3) **संगठनात्मक** – मण्डल के सदस्य अपने मंडलों की गतिविधियाँ चलाते हुए उसे विकसित और पुष्ट बनाने का प्रयास करें। निकटवर्ती क्षेत्रों में चलने वाले कई मण्डल मिलकर एक सक्रिय संगठित समूह (स–3) बनाने का प्रयास करें। यदि पहले से ही कोई स–3 सक्रिय है, तो अपने मण्डल को उसके साथ जोड़ लें।

व्यवस्था क्रम–

मण्डल अपने संगठन की आधारभूत इकाई है। कई मण्डल मिलकर ही बड़ी संगठित इकाइयाँ बनाएंगे। क्षेत्र में संगठन की स्थिति एवं शक्ति का ऑकलन मण्डलों के द्वारा उपलब्ध जानकारियों, आँकड़ों के आधार पर ही होगा। अस्तु, हर मण्डल के पास अपने मण्डल से सम्बद्ध प्रामाणिक एवं नवीनतम जानकारियों का लेखा–जोखा (रिकार्ड) होना चाहिए। हर मण्डल अपने पास एक रजिस्टर एवं फाईल रखे, जिसमें अपने मण्डल संबंधी प्रामाणिक जानकारियाँ निम्नानुसार अंकित हों।

- मण्डल के कार्य क्षेत्र का कुल आबादी।
- मण्डल के कर्मठ सदस्यों की संख्या एवं सूची।
- नियमित उपासक–वरणी/भागीदारों की संख्या एवं सूची।
- विभिन्न पत्रिकाओं के ग्राहकों की संख्या एवं सूची।
- दीक्षित व्यक्तियों एवं देवस्थापना करा चुके परिवारों की संख्या एवं सूची।
- जिन घरों में संस्कार, जन्मदिन आदि मनाये जा चुके हैं या नियमित मनाये जाते हैं, उनकी संख्या एवं सूची।
- ऐसे प्रभावशाली व्यक्तियों की सूची, जो समयदानियों, सदस्यों की नियमित सूची में भले न आते हों, किन्तु मिशन से प्रभावित हैं तथा उनके प्रभाव एवं संसाधनों का लाभ समय–समय पर मिशन को मिलता रहता है।

कर्मठ सदस्यों का कर्त्तव्य है कि वे उक्त सभी प्रकार के व्यक्तियों से नियमित सम्पर्क रखें। उन्हें अपने देव परिवार का सदस्य मानते हुए उनसे आत्मीयता एवं सहयोग के भाव विकसित करें। उनके विकास और प्रगति के लिए सचेष्ट रहें। उन्हें समर्थक, साधक, सहयोगी स्तर से क्रमशः विकसित करते हुए समयदानी एवं कर्मठ कार्यकर्ता स्तर तक ले जाने का प्रयास करें। इसके लिए सम्पर्क की जिम्मेदारी परस्पर बाँट लें। हर साप्ताहिक सत्संग के बाद अपने सम्पर्क अध्ययन के आधार पर अपने परिवार की समीक्षा करें। हर माह अपनी सूचियों में आवश्यक संशोधन कर लिया करें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अर्थानुशासन–

पूज्य गुरुदेव ने अपने अभियान की अर्थव्यवस्था साधकों, सहयोगियों के श्रद्धा भरे अशंदान से चलाने की रीति–नीति निर्धारित की। इसके लिए वे कहते हैं कि हर साधक, सहयोगी देवप्रयोजन के लिए कम से कम आधी रोटी या आधे कप चाय जितना अंश दान, अन्न या नगद रूप में अवश्य करें। सामर्थ्य और भावनानुसार अधिक अंशदान देने के लिए सब को छूट है। पूज्य गुरुदेव चाहते हैं कि अपने संगठन की छवि समाज के सामने देवता, दाता की ही रहे, याचक की नहीं। अपनी श्रद्धा से हम जो अंशदान निकालें, उसी को एकत्रित करके पूरी ईमानदारी ओर भरपूर कौशल के साथ उसे खर्च करें। इस क्रम में भी भीतर से ईमानदार और बाहर से प्रमाणिक बने रहना आवश्यक है। जो भीतर से ईमानदारी नहीं बरत पाते वे गुरुसत्ता द्वारा स्थापित मर्यादा तोड़ने के पात्र ही बनते हैं।

जो लोग ईमानदार होते हुए भी अर्थ व्यवस्था की प्रामाणिक पारदर्शी व्यवस्था नही बना पाते हैं, वे जनविश्वास खो देते हैं और अपयश के पात्र बनते हैं। प्रज्ञा मण्डल/महिला मण्डल आदि अपने क्षेत्र में साधकों, सहयोगियों को अंशदान एवं समयदान के लिए प्रेरित करें। प्राप्त साधन, धन एवं समय का सुनियोजन ईमानदारी और सूझबूझ के साथ करने की पवित्र जिम्मेदारी निभायें। अंशदान के नियोजन का क्रम यों बनायें–

- एक डुप्लीकेट पुस्तिका अथवा कापी पर अंशदान अंकित करके उस पर दाता के हस्ताक्षर करा लिया करें। साप्ताहिक सत्संग या पारिवारक संस्कार समारोह आदि में जो धन आरती या देव दक्षिणा में चढ़ता है, उसी के एक अंश से उस पर में युग साहित्य स्थापना या किसी पत्रिका को चालू करने का निर्णय भी लिया जा सकता है।

- जो धन एकत्रित होता है, उसका हिसाब हर साप्ताहिक सत्संग में सबके सामने रखा जाता रहे। वही उसके खर्च के मदों पर भी चर्चा की जा सकती है। यदि उसका कुछ अंश केन्द्र या किसी पीठ में सहयतार्थ देना है तो वह निर्णय भी आम सहमति के साथ ही किया जाये।

परिजन जो मण्डल का/स–3 का हिसाब अपने पास रखते हैं, वो भी अपने अंशानुदान को संयुक्त खाते में ही जमा करें। इससे नुक्ताचीनी करने, वालों को शान्त किया जा सकेगा और विश्वस्तों को उत्साहित किया जा सकेगा।

कुछ मण्डल अपने मण्डल के नाम से रसीदें छपवा लेते हैं, ऐसा करना विधि सम्मत नहीं है। ध्यान रहे कि जो संस्थान शांतिकुंज से मान्यता प्राप्त सरकारी रेवेन्यू (वित्तीय) अनुशासन में पंजीकृत (रजिस्टर्ड) नहीं है, उनकी छपाई गयी रसीदें प्रशासन की दृष्टि में वैधानिक नहीं होती। इसलिए किसी मण्डल को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शान्तिकुंज के रजिस्ट्रेशन के आधार पर ही रसीदें नहीं छपा लेनी चाहिए। वैध ाानिक अर्थानुशासन का परिपालन हम सबके लिए आवश्यक है।

पीठों से तालमेल –

यदि मण्डल या स–3 की समन्वय समिति के सदस्य अपने हिसाब को अध िक प्रामाणिक बनाने के लिए समीपस्थ प्रज्ञापीठ, शक्तिपीठ के रजिस्टर्ड ट्रस्ट की रसीद बुकों का इस्तेमाल करना चाहिए। उसके लिए अनुशासन निम्नानुसार है – केन्द्र की ओर से पीठों के मूर्धन्य परिजनों को निर्देश दिए गए हैं कि वे अपनी कानूनी समिति (ट्रस्ट) के अलावा क्षेत्र के कर्मठ एवं प्रामाणिक परिजनों की एक कार्यकारिणी समिति भी बना कर रखें। यह समिति समीपवर्ती क्षेत्र (शहर या कस्बे) के संगठन (स–3 आदि) को अनुशासित ढंग से अपने साथ जोड़कर रखेगी। किसी मण्उल को स–3 की समन्वय समिति या किसी संयुक्त समन्वय समिति के नामित प्रतिनिधि (सम्पर्क सूत्र) पीठ के ट्रस्ट की रसीदों की माँग आवेदन पत्र देकर करेंगे। पीठ की कार्यकारिणी या संसस की संस्तुति की पीठ का लेखा विभाग से आवश्यक संख्या में रसीदें इश्यू कर दी जाएँगी। प्राप्तकर्त्ता उन्हें बाकायदा हस्ताक्षर करके प्राप्त करेंगे। उन रसीदों को अपने संगठन के मण्डलों के प्रामाणिक सदस्यों को सौंपने एवं उनसे हिसाब रसीदों सहित पीठ के लेखा विभाग को उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी वे ही नामित सदस्य सँभालेंगे।

पीठ से रसीद लेने वाले मण्डल उन रसीदों के माध्यम से इकट्ठा किए गए स्वेच्छा सहयोग का हिसाब रखेंगे। हर माह या पीठ द्वारा निर्धारित अवधि में अपना हिसाब प्रामाणिक बाउचरों के साथ पीठ के लेखा विभाग के पास जमा करते रहेंगे। यदि उनके हिसाब में कोई कमी होगी, तो लेखा विभाग के सदस्य उन्हें इंगित करके ठीक कराएंगे।

हिसाब के साथ बची हुई शेष रकम से कुछ राशि मण्डल या स–3 के सदसय अपने पास रख सकते है। लेकिन उस राशि की औसत आवश्यकता से अधिक नहीं देना चाहिए। संचित पैसा अकारण तकरार एव शक का कारण बनता है। बचत अधिक होने की स्थिति में उसे पीठ से सम्बन्धित संयुक्त समन्वय समिति (संसस) के साथ परामर्श करके पीठ या केन्द्र को दे देना चाहिए। इससे उस राशि का उपयोग किन्हीं अविकसित क्षेत्रों को विकसित करने या सृजन सैनिकों के लिए आवश्यक वस्तुएं जुटाने के लिए किया जा सकेगा।

बचत की सहयोग राशि से पीठ या संयुक्त समन्वय समिति (संसस) कार्यालय के स्तर पर संगीत उपकरण, साउण्ड सिटम, छोटे आयोजन के लायक शामियाने, बैनर, प्रदर्शनी आदि की व्यवस्था की जा सकती है। इससे छोटे–छोटे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आयोजनों की लागत घटेगी और सुविधा बढ़ेगी।

इस प्रकार जहाँ अर्थ व्यवस्था की प्रामाणिक एवं पारदर्शी व्यवस्था बनेगी, वहाँ आपसी विश्वास और सहयोग बढ़ता रहेगा।

महिला मण्डल द्वारा संचालित गतिविधियाँ

(1) कार्यकर्ता बहिनों की बौद्धिक, कर्मकाण्ड, संगीत व अंग्रेजी कक्षाएँ प्रशिक्षण
(2) महिला मण्डल पंजीयन
(3) कम्प्यूटरीकृत महिला मण्डल रजिस्ट्रेशन
(4) पत्राचार (5) ज्ञानघट
(6) वाचनालय (7) मासिक गोष्ठी
(8) प्रतिमाह 24 तारीख सामूहिक श्रमदान
(9) युग शिल्पी सत्र की बहिनों की कक्षा व्यवस्था
(10) यज्ञ संचालन
(11) संगीत कक्षा संचालन
(12) नौ दिवसीय, परिवार निर्माण प्रवचन व्यवस्था
(13) प्रत्येक दूसरे माह दीपयज्ञ संचालन व्यवस्था
(14) गायत्री माता मंदिर एवं शिव मंदिर व्यवस्था
(15) शिव मंदिर सुरक्षा व्यवस्था
(16) आस्विन एवं चैत्र नवरात्रि में सामूहिक साधना
(17) जन संपर्क व्यवस्था
(18) परिव्राजक सत्र में कक्षा
(19) ब्रह्मवादिनी बहिनों की टोली प्रशिक्षण व्यवस्था
(20) आकस्मिक एवं आवश्यकतानुसार मरीजों की सेवा
(21) शांतिकुंज महिला सुरक्षा टोली
(22) स्वावलम्बन (अगरबत्ती व फल संरक्षण)
(23) संस्कार व समाधि स्थल
(24) दीक्षा संस्कार
(25) बहिनों का सांस्कृतिक कार्यक्रम
(26) चौके वाली बहिनों की प्रौढ़ शिक्षा, संगीत, कर्मकाण्ड व सिलाई कक्षा व्यवस्था
(27) कुपोषण निवारण यज्ञायोजन में भागीदारी (टोली)
(28) गुरुवासरीय सामूहिक साधना—प्रातः 5 से 6

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महिला मण्डल रिकार्ड : एक दृष्टि में

क्र.	केन्द्र में स्थापित विभाग	कार्यरत बहनें
(1)	महिला मण्डल कार्यालय में कार्यरत बहिनें	60
(2)	जोनल विभाग महिला मण्डल	30
(3)	कम्प्यूटर विभाग महिला मण्डल	22
(4)	सकाम डाक महिला मण्डल	7
(5)	संस्कार पत्राचार महिला मण्डल	15
(6)	पत्र नकल	20
(7)	महिला पत्राचार विभाग	15
(8)	युग शिल्पी सत्र की बहिनों का प्रशिक्षण	62
(9)	संगीत गायन, वादन	32
(10)	यज्ञ संसद संचालन	38
(11)	समाधि स्थल	80
(12)	दीक्षा संस्कार संचालन	16
(13)	संस्कार व्यवस्था	122
(14)	स्वावलम्बण (अगरबत्ती)	16
(15)	स्वावलम्बन (फल संरक्षण)	5
(16)	संभाषण, परिवार निर्माण, परिव्राजक कक्षा व्यवस्था (उद्बोधन)	15
(17)	शिव मंदिर सुरक्षा व्यवस्था	35
(18)	शिव मंदिर श्रृंगार व्यवस्था	5
(19)	गायत्री माता मंदिर पूजा आरती	11
(20)	शांतिकुंज महिला सुरक्षा टोली	7
(21)	अंग्रेजी कक्षा व बौद्धिक कक्षा	3
(22)	बहिनों का सांस्कृतिक कार्यक्रम	10
(23)	आँगनबाड़ी प्रशिक्षण	25
(24)	चौके वाली बहिनों के प्रशिक्षण में संलग्न बहिनें	6
(25)	कुपोषण निवारण यज्ञायोजन टोली	30
(26)	जन संपर्क–भवनानुसार	30
(27)	दक्षिण भारत प्रकोष्ठ	3
(28)	विदेश विभाग	3
(29)	गायत्रीकुंज महिला मण्डल में बहिनें	5

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(30)	ब्रह्मवर्चस	17
(31)	बांगला विभाग	6
(32)	चिकित्सा विभाग	3
(33)	कम्प्यूटरीकृत महिला मण्डल रजिस्ट्रेशन संख्या	5500

आय के स्रोत

1.	ज्ञान घट से आवक (मासिक)	9000
2.	कार्यकर्ता बहिनें (संख्या–350) अंशदान	6500
3.	देव सं. वि. वि.,–छात्राएँ (संख्या 588) अंशदान	3166
4.	शिव मंदिर से आवक (सन् 2008)	13000

महिला मण्डल : फेस एक

क्र.	राज्य		संख्या
(1)	मध्यप्रदेश		620
(2)	महाराष्ट्र		455
(3)	मणीपुर		00
(4)	मेघालय		00
(5)	मिजोरम		00
(6)	नागालैण्ड		00
(7)	उड़ीसा		200
(8)	पंजाब	–	06
(9)	राजस्थान	–	148
(10)	सिक्किम	–	01
(11)	तमिलनाडू	–	03
(12)	त्रिपुरा	–	00
(1)	उत्तरप्रदेश	–	1185
(2)	उत्तराखण्ड	–	74
(3)	पं बंगाल	–	99

महिला मण्डल : फेस दो

क्रं.	राज्य		संख्या
(1)	असम	–	12
(2)	आन्ध्रप्रेश	–	39

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(3)	बिहार	–	1132
(4)	चण्डीगढ़	–	2
(5)	छत्तीसगढ़	–	108
(6)	दादरा नागर हवेली	–	1
(7)	डमन–डीव	–	2
(8)	दिल्ली	–	23
(9)	गोवा	–	4
(10)	गुजरात	–	799
(11)	हरियाणा	–	38
(12)	हिमाचल प्रदेश	–	17
(13)	जम्मू कश्मीर	–	5
(14)	झारखण्ड	–	427
(15)	कर्नाटक	–	000
(16)	केरल	–	00

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

आपदा प्रबंधन

हर युग में परमात्मा युग की समस्याओं के समाधान हेतु अपने संकल्पों के अनुसार विभिन्न रूपों से अवतरित होता रहा है। वर्तमान युग की विभीषिका को दूर करने हेतु अवतारी चेतना की भूमिका व पूर्व तैयारी 1926 के वसंत पंचमी के ब्रह्ममूर्तकाल में परमपूज्य गुरुदेव के घर हिमालय की सूक्ष्म शरीरधारी सत्ता द्वारा विशिष्ट प्रयोजन के उद्देश्य व आगमन से प्रारंभ हुयी। ब्रह्ममुहूर्त में गायत्री संध्या से निमग्न 15 वर्ष के किशोरवय गुरुदेव को उनके समक्ष स्थापित दीपक की लौ से प्रकट हो हिमालयवासी ऋषिसत्ता अर्थात् दादागुरुदेव ने भावी परिस्थितियों हेतु उनकी भूमिका का बोध कराया।

- **दृष्टा का मिशन** – दादा गुरुदेव ने गुरुदेव को भविष्य में आने वाली सृजनात्मक व विध्वंसात्मक परिस्थितियों की जानकारी दी। भविष्य की दो संभावनाएँ – विध्वंस अर्थात आपदा व महाविनाश की एवं सृजन अर्थात नवयुग का सूत्रपात।
- **भावी दायित्व** – भविष्य के निर्माण अर्थात युग निर्माण हेतु दो प्रकार के प्रबंधन के अवलम्बन का मार्गदर्शन दिया गया – आपदा प्रबंधन– युग आपदा व महाविनाश के निवारण के लिए सेवाकार्य एवं जीवन प्रबंधन – नवयुग का सूत्रपात् अर्थात् जीवन साधना।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

◆ **कार्य की रूपरेखा व स्वरूप** – युग आपदा के निवारण हेतु 1. सुविधा संवर्धन, 2. पीड़ा निवारण व 3. पतन निवारण। नवयुग के सूत्रपात हेतु 1. स्वस्थ शरीर अर्थात् उपासना – आत्मिक गुणधर्मों के अवलम्बन में जीवन में महानता का बोध व वरण, 2. स्वच्छ मन अर्थात साधना – आत्मिक गुणधर्मों को जीवन में धारण करना व महानता का आचरण, 3. सभ्य समाज अर्थात् आराधना – वसुधैव कुटुम्बकम् के भाव से लोकमंगल की प्रवृत्ति।

◆ **आपदा क्या है** – जन सामान्य की दृष्टि में – ऐसी विनाशकारी परिस्थिति जिसमें मानवीय प्रयास निरर्थक हो जाये। व्यक्ति, पशु व जीवन निर्वाह के सभी स्रोत या तो नष्ट हो जाये या उपयोग लायक न रहे। सर्वथा विनाशकारी या विपत्तिकारी परिस्थिति। रोमन में आपदा को बुरा नक्षत्र या समय कहते हैं। ऑक्सफोर्ड के अनुसार 'डिसएस्ट्रो', डिस=बुरा या अशुभ व एस्ट्रो= नक्षत्र के रूप में भी कह सकते हैं। प्राचीन काल में इसे अशुभ नक्षत्रों का प्रकोप माना जाता था।

◆ **मिशन की दृष्टि में** – प्राकृतिक प्रकोप, मानवता पर कहर बरपाने वाली, अचानक आई बड़ी दुर्घटना, विपत्ति या बड़े पैमाने पर जान–माल को हानि पहुँचाने वाली प्रतिकूल परिस्थिति के रूप में। दृष्टिकोण का विकृत होना। कुसंस्कार के कारण व्यक्ति का पतन। पर्यावरण का प्रदूषण। व्यक्ति द्वारा व्यसन, रूढ़िवादिता व कुरीतियों का शिकार। बेरोजगारी। जनसंख्या विस्फोट व स्वास्थ्य संकट। व्यक्तिगत व सामूहिक अस्वच्छता की वृत्ति।

◆ **आपदा के प्रकार** – 1. प्राकृतिक आपदायें – (अ) मौसम सम्बंधी आपदायें – तूफान, चक्रवात, ओलावृष्टि, शीतलहर, लू, सूखा, अकाल। (ब) स्थानगत आपदायें – भूस्खलन और बाढ़ (स) भूमि और भूमि निर्मित आपदायें – भूकम्प, सुनामी व ज्वालामुखी, (द) जैविक आपदायें – कीड़ों मकोड़ों का हमला व छूत रोग की महामारियाँ।

(2) मानवकृत आपदायें – (अ) शहरी गड़बड़ी (ब) दंगे व प्रदर्शन (स) युद्ध, परम्परागत युद्ध व गैर परम्परागत युद्ध (द) शरणार्थी (इ) यातायात दुर्घटनायें व औद्योगिक दुर्घटनायें

(3) सामाजिक–प्राकृतिक आपदायें – (अ) पेड़ों की अंधाधुंध कटाई, (ब) पहाड़ी इलाकों में सड़कों का निर्माण, (स) पहाड़ी इलाकों में सुरंख खोदने से व (द) पहाड़ी इलाकों में खनन करना।

◆ **आपदा व घटना में अन्तर** – किसी भी प्रकार की प्राकृतिक या मानवीकृत आपदा आपदा नहीं है। घटना व जोखिम का योग आपदा है।

◆ **आपदा प्रबंधन** – आपदा के नकारात्मक व सकारात्मक पक्ष को समझना व अनुकूल दिशा प्रदान करना आपदा प्रबंधन है। आपदा के नकारात्मक पक्ष को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

न्यूनतम कर उसके हितकारी पक्ष से सभी को लाभान्वित करने की व्यवस्था देना ही आपदा प्रंधन है। सरकार मात्र पीड़ा निवारण को ही आपदा प्रबंधन कहती है।

◆ **आपदा प्रबंधन से विपदा प्रबंधन की वृत्ति का विकास** – सामूहिक सहायता के यंत्रवत् तरीके में भावना का समावेश करने व प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में सच्ची सेवापरक भाव को जागृत करना। एक दूसरे के कष्टों में तुरंत सहयोग की वृत्ति को विकसित करना इसका प्रमुख भावनात्मक लक्ष्य है।

◆ **आपदा प्रबंधन के उद्देश्य** – सभी प्रकार की आपदाओं जैसे प्राकृतिक, मानवी, तकनीकी स्तर, स्वरूप व कारणों को पूरी तरह समझकर उसके निवारण के लिए बचाव, राहत व पुनर्वास हेतु एक प्रशिक्षित तन्त्र स्थापित करना ताकि सभी प्रकार की आपदाओं को अधिकाधिक प्रभावहीन किया जा सके।

◆ **आपदा का मूल्यांकन** – यद्यपि भारत जैसे विकासशील देश में आपदा का सामना करने के लिये सावधानीपरक नियम कम ही है, फिर भी आपदा या संकट के केन्द्र बिन्दु, व्यापार, इसे रोकने का कम करने तथा प्रशासनिक नीतियों के साथ समन्वय की दृष्टि से, आपदा के मूल्यांकन के अंतर्गत भौतिक, भौगोलिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा मनौवैज्ञानिक कारकों पर ध्यान दिया जाना है। क्योंकि इन कारकों पर आपदाओं का प्रभाव व समुदाय का योगदान निर्भर करता है। आपदा का मूल्यांकन स्थानीय स्तर पर, दुर्बल भौतिक परिस्थितियां, दुर्बल स्थानीय अर्थ व्यवस्था तथा सामाजिक परिस्थितियाँ, विशिष्ट मानकों की कमी, असुरक्षित, निम्न स्वास्थ्य व आय स्तर, असुरक्षित आधारभूत ढांचा, उचित एहतियात नहीं लिया जाना व सरकारी तंत्र एवं समुदाय तंत्र के प्रमाणों को एक दूसरे पर भी निर्भर करता है।

◆ **आपदा के न्यूनीकरण हेतु** – विभिन्न प्रकार की आपदाओं हेतु उसके अनुरूप ही उपाय किया जाना सामयिक दृष्टि से उपयोग व उपयुक्त होता है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संयुक्त राष्ट्र ने 1990 से 2000 दशक को प्राकृतिक आपदा न्यूनीकरण का अंतराष्ट्रीय दशक घोषित किया था। 23 दिसम्बर 2005 को भारत सरकार ने इस दिशा में विधेयक पारित कर कानून भी बना दिया।

◆ **आपदा प्रबंधन की कार्यशैली** – (1) खोज व बचाव – प्रशिक्षित स्वयंसेवकों द्वारा तकनीकी टीम के माध्यम से प्रबंधन टीम द्वारा पीड़ितों को सुरक्षित स्थान पर पहुँचाना। पीड़ितों की चिकित्सा और प्राथमिक उपचार। हताहतों की पहचान करना। अस्पताल में भर्ती कराना। मृत व्यक्तियों का अंतिम संस्कार करना ताकि महामारी न फैलें।

(2) राहत – उपरोक्त बिन्दुओं पर कार्य आपदा प्रबंधन टीम के अंतर्गत होगा इसके गायत्री परिवार के निम्न प्रकार की टीम की तत्काल आवश्यकता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

होगी – प्रबंधन टीम, तकनीकी टीम, स्वयंवेकों की टीम, दानदाता व संसाधन उपलब्ध की आपूर्ति करने वाली टीम।

(3) पुनर्वास – इसके अन्तर्गत पीड़ितों की तात्कालिक परिस्थितियों का सर्वे कर पूरी सूची तैयार करना। इसके आधार पर उन्हें आवास निर्माण की सामग्री, बर्तन व तिरपाल आदि का सेट बना कर प्रदान करना। इस प्रकार की सामग्रियाँ स्थानीय परिस्थितियों को ध्यान में रखकर देना।

◆ **आपदा प्रबंधन में स्वयंसेवकों का वर्गीकरण व नियोजन** – आपदा प्रबंधन के कार्यों को संचालित करने के लिए चार प्रकार के स्वयंसेवक/कार्यकर्त्ताओं की आवश्यकता होती है, जो उपलब्ध है – (1) प्रबंधन वर्ग – प्रबंधन वर्ग के अन्तर्गत निम्न दायित्व निर्धारित किये गये हैं – सर्वेक्षण, नियोजन, आवास, चिकित्सा, निर्माण, परिवहन, स्टोर, भोजनालय, मीडिया–पत्रकार, मीडिया–फोटोग्राफी, विद्युत, लेखा, संचार, जल–कल, सुरक्षा आदि।

(2) तकनीकी वर्ग – इसमें निम्न दायित्व निर्धारित किये गये हैं – इंजीनियरिंग कार्य (निर्माण, विद्युत, संचार, आर्किटेक्चर, कारपेण्टर, प्लम्बर–जलकल व राजगीर), चिकित्सा कार्य (चिकित्सक व पैरामेडिकल स्टॉफ), मीडिया (पत्रकार, फोटोग्राफी व वीडियोग्री), परिवहन (चालक व मैकेनिक), भोजनालय – पाकशास्त्री

(3) स्वयंसेवक वर्ग – सभी विभागों व अन्य कार्यों हेतु।

(4) आपूर्ति वर्ग – व्यक्तिगत रूप से, स्वयंसेवी संस्थायें, सामाजिक संस्थायें, व्यापारिक संस्थायें, धार्मिक/आध्यात्मिक संस्थायें।

आदर्श ग्राम विकास योजना –

आपदा प्रबंधन की टीम द्वारा प्राकृतिक संकट के साथ–साथ अस्वच्छता, बेरोजगारी, स्वास्थ्य संकट, पर्यावरण प्रदूषण व व्यसन–कुरीति को स्थाई आपदा मानकर आदर्श ग्राम योजना के माध्यम से रचनात्मक प्रयास किया जाता है।

शांतिकुंज आपदा राहत कार्य का विवरण

क्र.	प्रोजेक्ट का स्वरूप	स्थान व प्रान्त	कार्यविधि
1.	भूकम्प राहत कार्य	उत्तरकाशी–उत्तराखण्ड	21 अक्टूबर 1991
2.	भूकम्प राहत कार्य	भचाऊ/भुज–गुजरात	फरवरी 2001
3.	भूकम्प राहत कार्य	लातूर–महाराष्ट्र	01 अक्टूबर 1993
4.	भूकम्प राहत कार्य	चमोली–उत्तरकाशी	29 मार्च 1999

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्र.	प्रोजेक्ट का स्वरूप	स्थान व प्रान्त	कार्यविधि
5.	भूकम्प राहत कार्य	गौरीकुण्ड, गुप्तकाशी–उत्तराखण्ड	जुलाई 2001
6.	भूस्खलन/बादल फटना राहत कार्य	बूढ़ा–केदार, नई टिहरी–उत्तराखण्ड	12 अगस्त 2004
7.	भूस्खलन/बादल फटना राहत कार्य	फटारुद्रप्रयाग–उत्तराखण्ड	17 जुलाई 2001
8.	भूस्खलन/बादल फटना राहत कार्य	दाफ्ता, पिथौरागढ़–उत्तराखण्ड	9–11 अगस्त 2001
9.	बाढ़ राहत कार्य	दमोह/सागर – म.प्र.	15 जुलाई 2005
10.	बाढ़ राहत कार्य	गुजरात	01 जुलाई 2005
11.	बाढ़ राहत कार्य	सूरत, गुजरात	08 अगस्त 2006
12.	बाढ़ राहत कार्य	बिहार	08 से 30 अगस्त 2007
13.	बाढ़ राहत कार्य	गोंदिया–महाराष्ट्र	16–30 अगस्त 2007 से
14.	बाढ़ राहत कार्य	मुम्बई–महाराष्ट्र	26 जुलाई 2006
15.	बाढ़ राहत कार्य	बस्ती/संतकबीर नगर–उ.प्र.	28 जुलाई–8 अगस्त 2008
16.	बाढ़ राहत कार्य	आजमगढ़	30 जुलाई–15 अगस्त 2008
17.	बाढ़ राहत कार्य	सहरसा–बिहार	25 अगस्त–18 सितं. 2008
18.	आइला, बाढ़ राहत कार्य	24 परगना, पं.बंग.	25 मई–30 जुलाई 2009
19.	बाढ़ राहत पुनर्वास कार्य	आजमगढ़	1–2 जनवरी 2009
20.	तूफान	उड़ीसा	28 अगस्त–30 अक्टू. 1999
21.	सूनामी	चेन्नई/नागपट्टम–तमिलनाडु	26 अगस्त 2007
22.	अग्निकाण्ड	त्यूनी, देहरादून–उत्तराखण्ड	15–18 मई 2005

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्र.	प्रोजेक्ट का स्वरूप	स्थान व प्रान्त	कार्यविधि
23.	अग्निकाण्ड	डुमनपुरी, लक्सर, हरिद्वार–उत्तराखण्ड	11 फरवरी 2004
24.	अग्निकाण्ड	नौरंगाबाद, हरिद्वार–उत्तराखण्ड	13 जनवरी 2007
25.	अग्निकाण्ड	दुवाराखास, आजमगढ़–उ.प्र.	24 अप्रैल–07 मई 2008
26.	अग्निकाण्ड	ढाटमोर, तह. मोरी, उत्तरकाशी–उत्तराखण्ड	28 नवं.–02 दिसं. 2006
27.	अग्निकाण्ड	चण्डीघाट, हरिद्वार –उत्तराखण्ड	01–03 मई 2009
28.	सूखा राहत कार्य	बुन्देलखण्ड–उ.प्र.	01 अप्रैल–30 मई 2008

श्रीराम झोला पुस्तकालय

स्वाध्याय क्यों करें? –

युग साहित्य के स्वाध्याय में ही मानव में देवत्व का उदय, धरती पर स्वर्ग का अवतरण और युग निर्माण सत् संकल्प पूरा करने की शक्ति है।

- **देवत्व** – उत्तम ग्रंथों का अध्ययन करके मनुष्य, महापुरुष, महात्मा, ऋषि और देवता बन सकता है।
- **स्वर्ग** – स्वर्ग का दृश्य अस्तित्व कहीं नहीं है। उत्तम पुस्तकों का सानिध्य मनुष्य को जहां भी मिलता है, वहीं उसे स्वर्ग की अनुभूति होने लगती है।
- **देवता** – अच्छी पुस्तकें जाग्रत देवता की तरह हैं, उनके अध्ययन, मनन, चिंतन के द्वारा पूजा करने पर तत्काल ही वरदान पाया जा सकता है।
- **दुःखनाशक** – संसार के भीषण भव सागर में डूबे, उतरते सभी मनुष्यों के लिए पुस्तकें उस प्रकाश स्तंभ के समान सहायक होती हैं, जैसे समुद्र में चलने वाले जहाजों के लिए प्रकाश गृह। उत्तम पुस्तकों के सहारे मनुष्य भवसागर की भयंकर लहरों को भी सरलतापूर्वक पार कर सकता है।
- **सुख, शांति, संतोष** – जीवन का चरम और परम लक्ष्य विद्या विस्तार है जिससे सुख, शांति, और संतोष प्राप्त होता है, या यों कहें दुख से मुक्ति, सुख की प्राप्ति।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

- **परम पुण्य** – जितना पुण्य, धन–धान्य सहित इस समस्त पृथ्वी को दान देने से मिलता है, उसका तीन गुना या उससे भी अधिक पुण्य स्वाध्याय करने वालों को प्राप्त होता है।
- **उपासना–पूजा** – उपासना, पूजा, अर्चना, तप, व्रत, दान आदि के समकक्ष स्वाध्याय को भी पुण्य प्रयोजन में अति आदरपूर्वक सम्मिलित किया गया है।
- **समग्र रूपांतरण** – समग्र रूपांतरण आदि चाहते हो तो सद्‌विचारों को पढ़ो, जानो और समझने का प्रयास करो।
- **व्यक्ति निर्माण** – आत्म शोधन और आत्म निर्माण का सबसे प्रधान विधान स्वाध्याय ही माना गया है।
- गुरुदेव से वार्त्तालाप – श्रेष्ठ सज्जनों से वार्ता कर सकना उनके साहित्य द्वारा बड़ी सरलता से हो सकता है। स्वाध्याय के माध्यम से यह सुविधा हर घड़ी उपलब्ध हो सकती है।
- **सुसंस्कार** – सद्‌ग्रंथों में सन्निहित साधु–वाणियचों का निरंतर अध्ययन मनन करते रहने से मन पर सुसंस्कारों की स्थापना होती है, जिससे चित्त आप से आप दुष्कृत्यों की ओर से फिर जाता है।
- **सरस्वती** – सरस्वती स्वाध्यायी का अनुगमन करती है।
- **मनोरंजन** – विद्या अध्ययन सर्वोत्तम मनोरंजन है।
- **सच्चरित्रता** – चारित्रिक उज्ज्वलता, स्वाध्याय का साधारण और मनोवैज्ञानिक फल है।
- **बुद्धिमानी** – काव्य शास्त्र विनोदेन कालो गच्छति धीमताम्। स्वाध्यायी ही बुद्धिमान होते हैं।
- **ईश्वर प्राप्ति** – 'स्वाध्याय योग साध्यया परमात्मा प्रकाशते' स्वाध्याय युक्त साधनों से परमात्मा का साक्षात्कार होता है।
- **अगले जन्म का साथी** – मरने के बाद ज्ञान ही साथ जाता है। जहाँ तक आदमी पहुँचे रहते हैं, अगला जन्म उसके बाद से शुरू होता है। 'इकजामिनी इज वेटर देन इकजामिनर' एक जन्म की पढ़ाई से नहीं होता।
- **कामधेनु** – तत्व ज्ञानी की वाणी कामधेनु है, वह श्रोताओं को प्रगति प्रदान करती है, समस्याओं को सुलझाती है, शत्रुता को मित्रता में बदलती है।
- **पारस** – ज्ञान को ही पारस मणि कहा गया है। लोहा पारस को छूकर सोना बन जाता है। या नहीं? पारस कहीं है या नहीं? यह बातें संदिग्ध हैं, पर ज्ञानरूपी पारस को स्पर्श कर तुच्छ श्रेणी के व्यक्ति ऊँचे–ऊँचे स्थान पर पहुँचे, यह निर्विवाद सत्य है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

- **अमृत** – मनोविकार से परेशान, दुःखी, चिंतित मनुष्य के लिए उसके दुख–दर्द के समय उत्तम पुस्तकें अमृत हैं। स्वाध्याय निःसंदेह एक ऐसा अमृत है जो मानस में प्रवेश कर मनुष्य की पाशविक प्रवृत्तियों को नष्ट कर देता है।
- **सबसे बड़ा दान** – ज्ञान दान ही सबसे बड़ा दान होता है।
- **सबसे बड़ी सेवा** – विद्या विस्तार ही युग की सबसे बड़ी सेवा है।
- **सर्वोत्तम धर्म** – झोला पुस्तकालय चलाना सबसे अच्छा धर्म, पूजा और यज्ञ है।
- **आनंद** – स्वाध्याय से बढ़कर आनंद कुछ नहीं।
- **योग** – पुस्तकों के अध्ययन से ही ऐसी तल्लीनता प्राप्त हो जाती है, जो लंबी योग साधनाओं से भी नहीं होती।
- **सौभाग्य का द्वार** – जिसने पढ़ने का महत्व जान लिया, उसने सौभाग्य का द्वार पा लिया।
- **अमर** – एक मात्र सच्चा ज्ञान ही लोक–परलोक का अक्षय तत्व और सच्चा साथी है। बाकी सब कुछ नश्वर है मिथ्या है।

www.vicharkrantibooks.org

श्रीराम झोला पुस्तकालय क्यों चलाएँ?

धनी मानी लोग अन्न, मिष्ठान, औषधि के बंडल इत्यादि वितरण करके जो पुण्य प्राप्त करते हैं, हम निर्धन लोग सद्ज्ञान का अमृत बाँटकर उससे हजारों–लाखों गुना पुण्य प्राप्त कर सकते हैं।

मनुष्य की प्रवृत्ति और दिशा को आदर्शवादिता की ओर मोड़ देने से बढ़कर और कोई परमार्थ इस धरती पर नहीं है।

वस्तुतः व्यक्ति परिवर्तन ही युग परिवर्तन है। विचार शुद्धी ही मनुष्य की सबसे बड़ी सेवा है। ज्ञान दान इस युग का सबसे बड़ा यज्ञ है। ज्ञान दान से बढ़कर आज की परिस्थिति में और कोई दान नहीं। ज्ञान साधना ही इस युग की सबसे बड़ी साधना है।

आज की स्थिति में एक ही उपाय है जिससे युगांतरकारी प्रबल प्रेरणा घर–घर तक, जन–जन तक पहुँचाई जा सकती है, और वह है झोला पुस्तकालय।

झोला पुस्तकालय चलाने वाला इस युग का सच्चा लोकसेवक, सच्चा परमार्थी, सच्चा ज्ञानी, सच्चा विवेकवान और सच्चा ईश्वर भक्त माना जाएगा। हमें यह भूलना नहीं चाहिए कि विश्व का भावी नेतृत्व महिलाओं के हाथ में होगा। पुरुष वर्ग नेतृत्व की दृष्टि से पूर्णतया असफल रहा है। अब नारी की बारी है। वह अपनी श्रद्धा, निष्ठा, वात्सल्य, समर्पण, तप, त्याग की स्वाभाविक विशेषताओं के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कारण अगले दिनों संसार का नेतृत्व करेगी। नारी को लोक नेतृत्व के लिए तैयार करने एवं पात्रता प्रदान करने का काम सद्ज्ञान प्रसार झोला पुस्तकालय आंदोलन ही कर सकता है।

भगवान ज्ञान रूप है। जहां जितना सद्ज्ञान है, समझना चाहिए वहां उतना भगवान है। ज्ञान परायण व्यक्ति वस्तुतः भगवान में ही रमण करता है और उन्हीं में लीन माना जाता है। नारद जी की स्थिति ऐसी ही थी। वे मानते थे कि दुखी प्राणियों का कल्याण एकमात्र सद्ज्ञान से ही हो सकता है।

संसार के समस्त दुखों का, व्यक्ति के समस्त कष्टों का, समाज के समस्त संकटों का एकमात्र कारण विचारों का विकृत हो जाना ही है। आज यदि दुःखों के स्थान पर सुखों की स्थापना अभीष्ट हो तो इसका एक ही उपाय है, सही ढंग से सोचने की कला सिखाएँ, जो काम झोला पुस्तकालय अभियान के द्वारा सबसे आसानी से हो सकेगा।

जिसे सही सोचने वाला, सही करने वाला बना दिया गया, उसके साथ असीम उपकार किया गया मानना चाहिए और जो इस पुण्य परमार्थ को कर सके उसकी गणना धरती के देवताओं में करनी चाहिए। भूसुर ब्राह्मण को कहते हैं। ब्राह्मण अर्थात् सद्ज्ञान प्रसार के लिए, जन जागरण के लिए जीवन उत्सर्ग करने वाला। झोला पुस्तकालय चलाना सबसे बड़ा धर्म, यज्ञ, तप, दान, साधना, पुण्य परमार्थ एवं ईश्वर भक्ति है।

युग निर्माण योजना इस विश्व की सबसे बड़ी क्रान्ति है। यह तुम्हारे जीवनकाल में हो रही है। यह तुम्हारा सौभाग्य है। तुम अपनी अंतरात्मा से पूछो कि क्या इसमें तुम्हारा कुछ भी सहयोग नहीं हो सकता? अंतरात्मा कहे कि कुछ तो हो ही सकता है, तो सबसे पहले झोला पुस्तकालय चलाओ और अमृत शुरू करो।

युग निर्माण फिल्म्स

(भारतीय संस्कृति का संदेश प्रदान करने वाला एक ऐतिहासिक धारावाहिक)

'मंथन' धारावाहिक भारतीय संस्कृति के उन मूल्यों की प्रतिष्ठापना का प्रयास है, जिन्हें दुर्भाग्यवश हम आज भुला बैठे हैं। युग निर्माण फिल्म्स (प्रा.लि) की यह प्रस्तुति अपने आप में अनूठी है क्योंकि यह काल यात्रा के प्रवाह में बुद्धकाल से अब तक के कथानकों, घटनाक्रमों के माध्यम से दर्शाती हुई दर्शक को चिन्तन का मंथन करने के लिये विवश करती है कि बहिरंग की सुखोपभोग की दौड़ में दौड़ रहा मानव आज जिस तरह आस्था संकट से ग्रसित है किस प्रकार मन की चिरस्थायी शांति पा सकता है। अध्यात्म–धर्म–संस्कृति जीवन जीने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की एक शैली का नाम है, न कि बहिरंग का ढकोसला भरा प्रदर्शन, ऐसे में आज की समस्त समस्याओं का हल क्या 'अध्यात्म' के रूप में देव संस्कृति के निर्धारणों के रूप में तलाश किया जा सकता है, इसी केन्द्र बिन्दु पर हर धारावाहिक एक कथा के माध्यम से दर्शकों को एक निष्कर्ष पर पहुँचने की प्रेरणा देता है, गुत्थियों का हल सुझाता है तथा राष्ट्र के सांस्कृतिक नवजागरण की आशा के दीप जलाता है। बावन खण्डों में प्रस्तुत यह धारावाहिक गायत्री परिवार के संचालक–अधिष्ठाता श्री परमपूज्य पं. श्रीराम शर्मा जी आचार्य (शांतिकुंज हरिद्वार) द्वारा निर्धारित सिद्धांतों की धुरी पर बनाया गया है। प्रथम धारावाहिक गौतम बुद्ध के जन्म से लेकर उनके 'सिद्धार्थ' से 'बुद्ध' बनने की यात्रा का वर्णन करता है। सिद्धार्थ के रूप में महाराजा शुद्धोधन के घर जन्में बाल राजकुमार के 'संभवामी युगे–युगे' के आश्वासन को चरितार्थ करने आये रूप को हिमालय वासी ऋषि–सत्तायें पहचानती हैं। हिमालयवासी कुछ ऋषि आकर भावी बुद्ध को अपनी गोद में खिलाकर राजा के समक्ष भविष्यवाणी कर जाते हैं कि यह बौद्धिक क्रांति का अग्रदूत बनेगा– सारी धरती को विवेक का मूलमंत्र देगा।

राजा बाल्यकाल से ही सिद्धार्थ के आमोद–प्रमोद की उचित व्यवस्था करते हैं। कहीं भी किसी प्रकार का दुख सिद्धार्थ न देखना पड़े, इसके लिये भोग विलास की सारी सुविधायें महल में जुटाते हैं, भोगों से अतृप्त, मन के शांति–उद्विग्नता को लेकर युवा सिद्धार्थ अपने सारथी को लेकर महल के प्रांगण से बाहर जाता है तो वृद्ध नर–नारी, अशक्त–बीमार, जन समुदाय व मृत व्यक्तियों को कंधे पर ले जाये जाने वाला दृश्य पहली बार देखता है। उसके सारथी से किये गये प्रश्नों का एक ही उत्तर निकलता है 'यह सब के साथ होता है।' – 'हर मनुष्य की यह नियति होती है' यहीं से वह करुणा उपजती है जो उसे बुद्ध बना देती है। महल–वैभव त्याग कर वे कठोर तप कर आत्मबोध कर उस चिर शाश्वत सौन्दर्यवान तत्व की प्राप्ति करते है। जो मानव मात्र के लिये 'बुद्धं शरणं गच्छामि' (हम विवेक की शरण में जाते हैं) 'संघं शरणं गच्छामि' (हम संगठन की सत्ता में विश्वास जताते हैं) 'धम्मं शरणं गच्छामि' (हम धर्म की कर्त्तव्यपरायणता को अंगीकार करते हैं) उस जमाने की समस्या का समाधान इन्हीं सूत्रों से निकला था। यही प्रक्रिया आज उसके उत्तरार्द्ध के रूप में प्रज्ञावतार के रूप में दुहराई जा रही है जब लाखों व्यक्ति युग परिवर्तन के लिये भोग–विलास छोड़कर सज्जनता को, विवेकशीलता को अंगीकार कर एक विराट् ममत्व भरे संगठन गायत्री परिवार के साथ जुड़ते हुए देव संस्कृति दिग्विजय का उपक्रम करते देखे जा रहे हैं। यही प्रथम धारावाहिक का समापन सारांश के साथ होता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धारावाहिक क्रमांक 2 — उपगुप्त के सौन्दर्य बोध की कथा पर आधारित है। उपगुप्त बुद्धकालीन समय में हुए हैं व सम्राट अशोक के गुरु माने जाते हैं। उस स्तर का व्यक्तित्व उनका तभी बन पाया जब उनने अपनी जीवन यात्रा में आये वासना प्रधान आकर्षणों से मोहित हो सच्चे सौन्दर्य की उपासना की शिक्षा वासवदत्ता नामक गणिका को दी जो उनके बहिरंग रूप पर आकर्षित थी। उनने गणिका की अनुचरि सहेलियों को एक ही संदेश दिया कि वे उचित समय पर उसके पास आयेंगे। एक षड़यंत्र के कारण राजा द्वारा उस पर एक सामन्त को जहर देकर मारने का लंछन लगाकर उसे कुरूप—अपमानित कर शहर से बाहर निकाल दिया गया। तब उपगुप्त उनकी सेवा सुश्रुषा के लिये पहुँचे व कहा — अब उचित समय है जब तुम्हें मेरी जरूरत है। तुम्हें मेरी आत्मा के सौंदर्य, जो करुणा व दया—सेवा का रूप है, उसे देखना चाहिए था, न कि बहिरंग के सौन्दर्य को। वासवदत्ता का पश्चाताप वासना पर करुणा की विजय का प्रतीक है।

धारावाहिक क्रमांक 3 — इसमें कोषा नामक गणिका द्वारा बौद्ध भिक्खुमठाधीश को आत्मा की भूख व देह की भूख का अन्तर का शिक्षण देने वाली कथा है। जो कोषा सब कुछ अपने सौन्दर्य के बल पर पा सकती थी व अपने आप को अकिंचन पाती है जब उसे नगर वधु मानकर एक चोर भी अपने गहने नहीं चुराता, उसे वापस दे जाता है। बौद्ध भिक्षु भी भिक्षा में दिये गये बहुमूल्य आभूषण लौटा देता है। उसे एकाएक सब कुछ निस्सार जान पड़ता है। जिसके लिये वह अपना शरीर बेचती रही। किन्तु मठाधीश उसके सौन्दर्य से प्रभावित हो उससे प्रणय की भिक्षा मांग बैठते हैं। स्तब्ध कोषा उनसे एक सहस्त्र मुद्रा लेकर आने की मांग करती है। उनके शिष्यों से एकत्र कर लाने पर वह पांव के तलुवे से लगड़कर उन सभी को नाली में फेकती चली जाती है। मठाधीश के ज्ञानचक्षु खुल जाते हैं कि सच्चा सौन्दर्य वह नहीं जो उसे इस सीमा तक नीचा गिराता चला गया। ऊँचे से ऊँचे स्थान पर बैठा आदमी भी गिर सकता है। यदि वह अपने विवेक पर नियंत्रण न रखे।

धारावाहिक क्रमांक 4 — भिक्खुविनायक संघ के नियमों का पालन करने की शपथ लेने के बावजूद अपने ज्ञान के अजीर्ण के कारण वाणी की वाचालता का प्रमाण समय—समय पर देते रहते हैं। जहाँ अवसर मिलता है, व्याख्यान देने लगते हैं, पर लोग उनकी कथनी—करनी एक न देख कर उन पर हंसते हैं, तब भी वे समझ नहीं पाते कि गलती कहाँ हो रही है। भगवान बुद्ध के उपदेश के श्रवण के बाद कि 'मात्र शब्दों का उल्लेख करने से नहीं भिक्खु के आचरण से धर्म का प्रसार होगा'' — यह धारावाहिक समाप्त होता है। समाज के तथाकथित बुद्धिजीवी—ज्ञानी—नेतृत्व देने वालों के लिये यह संदेश है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धारावाहिक क्रमांक 5 – श्रेष्ठि कोटिकर्ण अपनी शोषण–वृत्ति, संचय–वृत्ति छोड़कर अपने दोष समर्पित कर भिक्खु बन जाते हैं। एक चोर उनके यहाँ वही मुद्रिका चुराने आता है जो कभी उनने एक सम्पन्न व्यक्ति से लेकर रख ली थी। उसे पकड़ने के बाद वे उसे कहते हैं कि इस मुद्रिका सहित कुछ धन–आभूषण भी वह चोर उसी सम्पन्न के घर रख आये ताकि उसकी निर्धनता मिटे। किन्तु स्वाभिमानी पर्णदत्त भिक्षा में पुनः उन्हीं कोटिकर्ण को वही सब कुछ लौटा देते हैं कि एक चोरों का दल कार्तियानी के यहाँ प्रवेश करता है जो पर्णदत्त के समय–समय पर सहायता करती रही है। उसकी दासी उसे बार–बार सचेत करती है कि चोर सारा धन उठाये लिये जा रहे हैं किन्तु वह कहती है कि असली धन तो ज्ञान है स्वर्ण तो यहाँ है, वह धन तो निरर्थक है। चोरों के स्वामी का हृदय परिवर्तन हो जाता है एवं वह अपनी चौर्य वृत्ति बदल कर भिक्षु बन जाता है।

अन्य– सभी कथानकों के माध्यम से मानवी वृत्तियों के प्रत्यावर्तन व जीवन परिवर्तन का शिक्षण सुगम भाषा में दिया गया है इसके पश्चात् छठे से तेरहवें एपीसोड तक यशोधरा द्वारा राहुल के दान, अंगुलीमान का हृदय परिवर्तन, अम्बपाली का गणिका से सन्नारी बन जाना, चण्ड अशोक का कलिंग विजय के बाद हृदय परिवर्तन, सुप्रिया द्वारा अकाल में दान का शिक्षण, गौतमी के विलाप पर जीवन दर्शन का शिक्षण, कुमारजीव की विदेश में बौद्ध धर्म विस्तार प्रवृज्या तथा अंतिम कौण्डिण्य ऋषि द्वारा दक्षिण–पूर्वी एशिया में बौद्ध संस्कृति के प्रचार–प्रसार का वर्णन है।

यह धारावाहिक तत्कालीन समय का दस्तावेज तो है ही, आज की समस्याओं का समाधान भी प्रदान करता तथा काल के प्रवाह में पीछे जाकर व्यक्ति को भारतीय संस्कृति के शाश्वत मूल्यों का शिक्षण भी देता है। इसी क्रम में आगे महावीर, चाणक्य से लेकर अनेकानेक ऋषि–महापुरुषों के कथानक–आख्यान कड़ी रूप में आज के समय के महर्षि दयानंद, विवेकानंद, श्री अरविंद, एवं पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी तक का प्रस्तुतीकरण इसमें किया है।

गायत्री कुँज : देवसंस्कृति विश्वविद्यालय

युग ऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने पाँच दशक पूर्व समाधि की उच्च अवस्था में एक ऐसे विश्वविद्यालय का स्वप्न देखा, जो शैक्षणिक तन्त्र में नव प्राण का संचार कर दैवीय युग के लिए महामानवों की पौध तैयार करे। इसकी चर्चा करते हुए उन्होंने कहा था 'नया जीवन हमेशा विश्वविद्यालयों से शुरू हुआ, नया युग हमेशा विश्वविद्यालयों में गढ़ा गया है विश्वविद्यालयों के अन्तर्गत ही सदैव मानव जाति का रूपांतरण हुआ और व्यक्तित्व में दैवीय गुणों का समावेश किया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गया है। ये विश्वविद्यालय वर्तमान विश्वविद्यालयों की तरह नहीं थे, जिसमें किशोरों के मस्तिष्क में पूर्ण ज्ञान अनुप्राणित किया जाता था। साथ ही विद्यार्थियों को दैवीय गुणों से सम्पन्न किया जाता था।' मानव जाति की स्वस्थ एवं प्राणवान पौध इन विश्वविद्यालयों में तैयार की जाती थी, जो विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न महान व्यक्तियों एवं श्रेष्ठ नागरिकों को उत्पन्न करती थी। वस्तुतः इन विश्वविद्यालयों की नर्सरी में महामानवों को गढ़ा जाता था। नालन्दा तथा तक्षशिला इसी प्रकार के विश्वविद्यालय थे। इस प्रकार के विश्वविद्यालय की स्थापना गुरुदेव का एक पवित्र स्वप्न था, जो मानवता के दैवीय उद्भव पर आधारित जीवन के नैतिक एवं श्रेष्ठ मूल्यों की शिक्षा प्रदान करे व प्राचीन सन्तों, ज्ञानियों तथा ऋषियों की दिव्य दृष्टि तथा आध्यात्मिक प्रज्ञा शक्ति द्वारा निर्मित देव संस्कृति को पुनर्जीवित कर सके।'' देव संस्कृति विश्वविद्यालय आचार्य जी के इसी दैवीय स्वप्न का मूर्तरूप है।

प्रारम्भ – यह दृढ़ विश्वास किया जाता है कि विश्वविद्यालय अपने विद्यार्थियों में इंसानियत, सहिष्णुता तर्क क्षमता, उदारता एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा दूरदृष्टि जैसे सद्गुणों का समावेश कर राष्ट्रीय जीवन को उन्नत एवं सशक्त बनाने में निर्णायक भूमिका अदा करेगा। गुरुदेव के उपयुक्त प्रशंसनीय उपाख्यान के आधार पर वेदमाता गायत्री ट्रस्ट ने 'देवसंस्कृति विश्वविद्यालय' खोलने का निर्णय लिया।

स्थिति – भारत के उत्तरांचल राज्य में हरिद्वार ऋषिकेश रोड पर प्रथमतः भूमि प्राप्त की गयी। भूमि पूजन 23 मई 1999 को भारत के प्रसिद्ध सन्तों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

मिशन का कथन – विश्व के सांस्कृतिक पुनर्जागरण के लिए समर्पित विश्वविद्यालय।

निर्देशक मूल्य/प्रतिबद्धताएँ – मिशन के कथन के अनुसरण के लिए देवसंस्कृति विश्वविद्यालय वचनबद्ध है – भारतीय संस्कृति के आधारभूत गुणों का प्रचार एवं प्रसार। वेदकालीन शिक्षा प्रणाली के पुनर्जीवन द्वारा सामूहिक जीवन समूह का बौद्धिक विस्तार, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक कल्याण। समाज में देश प्रेम तथा सेवा के भाव का संचार करना। वैदिक ज्ञान को सम्पूर्ण संसार में फैलाने के लिए प्रतिभाओं की नई पीढ़ी का विकास करना। शैक्षणिक गुणवत्ता तथा आध्यात्मिक गतिविधियों के विश्वव्यापी प्रसार एवं समृद्धि के लिए अन्य प्रसिद्ध राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय संस्थानों के साथ काम करना। शोध, अध्यापन तथा प्रशासन में गुणवत्ता व नैतिकता के अन्तर्राष्ट्रीय मानकों को बनाए रखना।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उद्देश्य – देव संस्कृति के आदर्शों एवं सिद्धान्तों का प्रचार–प्रसार। धर्म दर्शन व संस्कृति जैसी देव संस्कृति की विभिन्न धाराओं पर शोध व शिक्षण कार्य। ज्योर्तिविज्ञान, आर्युविज्ञान, योग विज्ञान और मनोविज्ञान जैसी देव संस्कृति की अन्य विविध धाराओं पर शिक्षण एवं शोध कार्य। स्वरोजगार, आपदा प्रबंधन और ग्रामीण प्रबंधन जैसे पाठ्यक्रमों पर शोध एवं शिक्षण, जिससे कि आचार्य जी के चिंतन पर आधारित नए समाज का निर्माण हो।

विश्वविद्यालय की शक्तियाँ तथा कार्य –

1. भारत की सभी शाखाओं में भारतीय संस्कृति तथा सम्बन्धित क्षेत्रों को निर्देश प्रदान करना तथा ज्ञान की उन्नति और विस्तार के लिए शोध की तैयारी करना।
2. डिग्री तथा दूसरी शैक्षणिक योग्यताओं को संस्थापित करना।
3. डिग्री तथा दूसरी शैक्षणिक योग्यताएँ प्रदान करने के लिए उन विद्यार्थियों की परीक्षा लेना, जिन्होंने विश्वविद्यालय में चलने वाले पाठ्यक्रम में अध्ययन अथवा सम्बन्धित कालेज अथवा दूरस्थ शिक्षा प्रणाली का अनुसरण किया हो। विश्वविद्यालय, सम्बन्धित कालेज अथवा दूरस्थ शिक्षा तन्त्र के अन्तर्गत शोध कार्य किया हो।
4. विश्वविद्यालय अध्यादेश में वर्णित आधार तथा स्थितियों के अनुसार सम्मानार्थ डिग्री या शैक्षणिक विशेषताएँ प्रदान करना।
5. विश्वविद्यालय अध्यादेश के अनुसार फेलोशिप, स्कालरशिप तथा पुरस्कार प्रदान करना।
6. अध्यादेश में उल्लिखित नियमों के अनुसार फीस की मांग करना, प्राप्त करना तथा उसमें परिवर्तन करना।
7. संविधान की धारा 6 में वर्णित भारतीय संस्कृति व अन्य क्षेत्रों की शिक्षा के विस्तार हेतु प्रयास करना।
8. विद्यार्थियों तथा कर्मचारियों के लिए पाठ्यक्रम की शिक्षा से अलग अन्य क्रियाओं की तैयारी करना।
9. विश्वविद्यालय या सम्बन्धित कालेज में अधिकारियों तथा कर्मचारियों की नियुक्ति का निर्धारण।
10. श्री वेद माता गायत्री ट्रस्ट, हरिद्वार की पूर्ण सम्मति के आधार पर ही विश्वविद्यालय अथवा सम्बन्धित कालेज ट्रस्ट अथवा दान में मिली किसी चल अथवा अचल सम्पत्ति की व्यवस्था रखरखाव व खरीदफरोक्त या समाप्ति करना किसी भी प्रकार का दान या उपहार आदि स्वीकार कर सकता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

11. विश्वविद्यालय तथा सम्बन्धित कालेज के विद्यार्थियों के लिए निवास स्थान का निर्माण करना व हाल आदि बनाना।

12. विश्वविद्यालय व सम्बन्धित कालेज के विद्यार्थियों को अनुशासन बद्ध करना, उनके आवास का निरीक्षण व नियंत्रण करना साथ ही उनके स्वास्थ्य संवर्धन का ध्यान रखना।

13. प्रशासनिक, लिपिक, चतुर्थ श्रेणी, व अन्य आवश्यक पदों पर नियुक्ति करना।

14. समय–समय पर विश्वविद्यालय द्वारा तय किये गये विभिन्न प्रयोजनों हेतु दूसरे विश्वविद्यालय का सहयोग लेना और साथ–साथ कार्य करना।

15. दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम की व्यवस्था करना।

16. शिक्षकों और अन्य कर्मचारियों हेतु रिफ्रेशर कोर्स, अनुकूलन कार्यक्रम, कार्यशाला, सेमीनार व अन्य कार्यक्रम आयोजित करना।

17. शिक्षा परिषद की स्वीकृति से विशिष्ट समितियों द्वारा विश्वविद्यालय में प्रवेश के मानक तय करना।

18. विश्वविद्यालय के अन्तर्गत अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति व अन्य श्रेणी के विद्यार्थियों का किसी भी विषय में प्रवेश हेतु विशेष उपबंध बनाना।

19. विश्वविद्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की सभी श्रेणी हेतु सेवा शर्तों का निर्धारण करना।

20. विश्वविद्यालय हेतु किये जाने वाले आवश्यक कार्यों की पूर्ति हेतु वे सभी काम करना, जिनकी पूर्वोक्त शक्ति प्रासंगिक रूप से हो।

21. स्नातक, परास्नातक व शोध के विषयों का निर्धारण विश्वविद्यालय द्वारा किया जायेगा जो कि यू.जी.सी. व ए.आई.सी. टी.ई. द्वारा संरक्षित रहेंगे। परन्तु विभिन्न पाठ्यक्रमों में डिप्लोमा तथा प्रमाण–पत्र कोर्स संचालित करने के लिए विश्वविद्यालय स्वतंत्र होगा।

22. विश्वविद्यालय की शैक्षिक गतिविधियों को ट्रस्ट की गतिविधियों से अलग रखना।

विशिष्टताएँ –

देव संस्कृति विश्वविद्यालय उन मूल्यों, परम्पराओं और आदर्शों के प्रति समर्पित है, जो हमें भारत की दिव्य भूमि के ऋषियों, सन्तों और विद्वानों की तप–त्याग एवं साधनामय जीवन पद्धति से विरासत में मिले हैं। सम्पूर्ण व्यक्तित्व का परिष्कार और विकास केवल साधना या विद्या द्वारा हो सकता है। यह संस्था अपने श्रेष्ठ व सर्वांगीण शिक्षा प्रयासों द्वारा विद्यार्थियों को उपरोक्त से अवगत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कराता है। वस्तुतः यह सही अर्थों में विद्या का 'आलय' है और जीवन विद्या के विस्तार का आलोक केन्द्र है।

- **जीवन जीने की कला –**

(अध्यापन व शोध का अभिन्न घटक) 'जीवन जीने की कला' विषय के रूप में कुछ ही विश्वविद्यालय में पढ़ाया जाता है। हमारे विश्वविद्यालय ने इस अध्यापन कार्यक्रम को आवश्यक अंग के रूप में शुरू करने में प्रारम्भिक भूमिका निभायी है। इस विषय के द्वारा विद्यार्थी बहुत से तथ्य सीखता है कि इस लौकिक जगत को कैसे सींचे और इसमें कैसे जीयें। 'हम कौन हैं और हमारा लक्ष्य क्या है?' मात्र शिक्षा इसका ज्ञान नहीं देती है। सोचने की कला, काम करने की कला और संगठन की कला, संयुक्तः जीवन जीने की कला कहलाती है। जीवन जीने की कला का यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को स्वप्रबन्ध के विविध सिद्धान्तों से अवगत कराता है व उन्हें आत्म–विस्तार और विकास की ओर ले जाने में सहायता करता है।

- **ज्ञान दीक्षा समारोह –**

ज्ञान दीक्षा समारोह वैदिक पद्धति और विधि के द्वारा नये वातावरण में शिक्षा की शुरुआत हेतु विद्यार्थियों की सहायता के लिये किया जाने वाला एक विशिष्ट समारोह है। यह समारोह पुराने गुरुकुल और अरण्यक जैसे नालन्दा, तक्षशिला के सम्पूर्ण घटनाक्रमों की याद दिलाता है। इसके अन्तर्गत विद्यार्थी आदर्श व अनुशासन के लिए दृढ़ता के साथ संकल्पित होते हैं, आचार्य भी विद्यार्थियों को अच्छा ज्ञान देने के लिए संकल्प लेते हैं। इस प्रकार विश्वविद्यालय के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु मिलजुल कर काम करने के प्रयास की प्रेरणा इस समारोह में मिलती है।

- **उन्मुखीकरण कार्यक्रम –**

विश्वविद्यालय का पहला उद्देश्य और मुख्य बिन्दु भारतीय संस्कृति को समझना और इसे ग्रहण करना है। इस उद्देश्य की क्रमशः पूर्ति हेतु दो सप्ताह का प्रस्तावित कार्यक्रम शान्तिकुंज के तत्वावधान में आयोजित होता है। वैज्ञानिक अध्यात्मवाद को समझने के लिए यहाँ शांति संवाहक आध्यात्मिक वातावरण उपलब्ध है। उन्मुखीकरण कार्यक्रम निरन्तर चलने वाला कार्यक्रम है। इसका आयोजन आगे बढ़ने के लिए व्यवहार की विविध विधाएँ और कुछ नया प्राप्त करने हेतु किया जाता है। यह उन्मुखीकरण कार्यक्रम विश्वविद्यालय प्रवास के दौरान भविष्य के लिए भी नयी दिशा प्रदान करता है।

- **समयदान –**

इस विश्वविद्यालय की नींव अध्यापक हैं, जो अपना ज्ञान, प्यार और स्नेह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विद्यार्थियों को दान करते हैं। यहाँ पर वेतन भुगतान की कोई संरचना नहीं है, लेकिन अध्यापकों के जीवन निर्वाह के लिए न्यूनतम् सहयोग राशि प्रदत्त की जाती है। विविध विषयों में पारंगत विद्वान अतिथि अध्यापक यहाँ आकर विद्यार्थियों को अपनी सेवा प्रदान करते हैं। इसी विचार से विद्यार्थी भी ओत–प्रोत रहते हैं। वे यहाँ आकर ज्ञान प्राप्त करते हैं और शिक्षा की समाप्ति के बाद छात्रगण स्वेच्छा से अपना तीन महीने का समय दान सामाजिक कार्यों के लिए करते हैं। इसका परिणाम बहुत ही सुखद है, जो कि अन्य विश्वविद्यालयों के अनुकरणीय है।

- **विश्वविद्यालय के सर्वांगीण विकास में परिजनों की भागीदारी –**

देव संस्कृति विश्वविद्यालय पूर्णतया वेदमाता गायत्री ट्रस्ट के धन पर आधारित है, जो कि एक धर्मार्थ संस्था है। वअ अखिल विश्व गायत्री परिवार का अंग है यह संस्था पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के 'मुट्ठी फण्ड स्कीम' का दर्शन है, जिसमें मिशन का प्रत्येक सदस्य व गुरुदेव के अनुयायी एक रुपया प्रतिदिन दान करते हैं। इस संस्था के विचार और आदर्श को मानने वाले लाखों अनुयायी सक्रिय रूप से विश्वविद्यालय के सर्वांगीण विकास और उन्नति के लिए कार्यरत है। यह लोगों के धन के सदुपयोग और त्याग का एक सबसे अच्छा उदाहरण है।

- **परिवीक्षा काल** (शिक्षा का अभिन्न अंग) –

शिक्षा कार्यक्रम में परिवीक्षा काल को भी एक महत्वपूर्ण अंग के रूप में रखा गया है। सभी विद्यार्थी तीन महीने की प्रायोगिक प्रशिखण अवधि को देश के विभिन्न भागों में फैले चेतना केन्द्र, शक्ति पीठों (हमारे सक्रिय केन्द्र) में पूरा करते हैं। यह प्रायोगिक सत्र विद्यार्थियों को उनके विषय में विशेषज्ञता प्राप्त करने में सहायता करता है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य भारतीय संस्कृति का विस्तार और सामान्य जनता में जागरूकता उत्पन्न करना है। इसके परिणाम बहुत ही प्रेरणाप्रद रहे हैं, जो कि सामान्य लोगों के अतिरिक्त बहुत से सामाजिक राजनीतिक और प्रशासनिक व्यक्तियों द्वारा स्वीकृत एवं प्रशंसित है।

आध्यात्मिक जीवन शैली –

यह विश्वविद्यालय का सर्वोत्कृष्ट प्रयोगशाला है जो कि एक तपस्थली के रूप में सत्य, ज्ञान तथा व्यक्तित्व में दैवीय क्षमताओं के विकास के लिए विकसित की गयी है जो कि एक तपस्थली के रूप में विकसित की गई है। यहाँ छात्रों के जीवन में सत्य ज्ञान और सदाचार के सहारे देवी शक्तियों के विकास के भरसक प्रयास किये जाते हैं। यह विश्वविद्यालय देव संस्कृति के सिद्धान्तों के अनुशीलन व प्रसार हेतु प्रतिबद्ध है तथा वैज्ञानिक अध्यात्मवाद को बढ़ावा देता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

- **परिवेश** – विश्वविद्यालय भारत के उत्तरांचल राज्य में हरिद्वार ऋषिकेश रोड पर हिमालय क्षेत्र में स्थापित किया गया है। यह भूमि गंगा की पवित्र लहरों और अध्यात्मिकता के आन्तरिक प्रवाह द्वारा संस्कारित है। इसके सौन्दर्यीकरण का भरपूर प्रयास किया गया है।

- **उत्कृष्ट स्थापत्य** – हरियाली से घिरा हुआ विश्वविद्यालय प्रांगण वास्तुशास्त्र के सिद्धान्तों के अनुसार निर्मित है। अति प्राचीन काल में भारत भूमि की एक अमूल्य विद्या के रूप में व्यक्तिगत जीवन को राष्ट्रीकृत जीवन से जोड़ता हुआ, पृथ्वी पर एक आदर्श जीवन यापन की स्थितियों को सुविरिचित करता रहा है।

- **धूम्रपान मुक्त प्रांगण** – स्वस्थ जीवन चर्या बनाये रखेने के लिए प्रांगण में धूम्रपान का कड़ा निषेध है। हरियाली से भरपूर परिवेश नयनाभिराम दृश्यावली खिले रंग–बिरंगे फूल, यहाँ आध्यात्मिक वातावरण का सृजन करते हैं जो यहाँ आगंतुकों को शांति एवं आनंद की एक विरल अनुभूति कराते हैं।

- **आध्यात्तिमक वातावरण** – विश्वविद्यालय में गुजारा गया समय सभी के लिए एक यादगार बन जाता है। एक समय अध्ययन, अन्वेषण, विकास व अपेक्षित परिवर्तन का होता है, जो न केवल विद्यार्थियों के शैक्षिक जीवन से जुड़ा है, बल्कि उनके सामाजिकजीवन के साथ–साथ अध्यात्मिक जीवन के अनुकूल से भी सम्बन्धित है। वर्तमान समय के साथ कदम ताल में तथा विद्यार्थियों की व्यक्तिगत उन्नति व विकास के लिए विश्वविद्यालय बहुत सी क्रियाओं में हिस्सा लेने के लिए कई अवसर प्रस्तुत करता है। यह सभी को जाति, धार्मिक, मत, क्षेत्र तथा धर्म का विचार किये बिना आध्यात्मिक विकास की ओर ले जाता है।

- **प्रज्ञेश्वर महादेव मन्दिर** – विश्वविद्यालय प्रांगण के मध्य में प्रज्ञेश्वर महादेव का सुन्दर मंदिर स्थित है। इस मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा मार्च 2003 में वैदिक स्त्रोत के पाठ तथा मन्त्रों के उच्चारण के बीच हुई। मुख्य शिवलिंग उगते सूर्य के सामने हैं तथा इसका प्रवेश पूर्व की ओर है। मन्दिर में एक खुले रंगमंच की तरह बैठने की व्यवस्था है, जो विद्यार्थियों तथा दर्शनार्थियों के लिए एक ध्यान स्थली के रूप में कार्य प्रयुक्त है।

- **यज्ञशाला** – प्रांगण में स्थित यज्ञशाला में यज्ञ करना विद्यार्थियों के दैनिक जीवन चर्या का अभिन्न अंग है। गुरुदेव के दर्शन के अनुसार यज्ञ केवल अग्नि में आहुति डालना भर नहीं है। यज्ञ का व्यापक अर्थ, अपने साधन व क्षमताओं को परहित में नियोजित करना तथा दूसरों के जीवन को सुवासित करना है। यज्ञ के लाभ वैज्ञानिक आधार पर भी सिद्ध हुए हैं। यज्ञ थैरेपी की ओर विश्व

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समुदाय का ध्यान आकर्षित हुआ है।

◆ **गौशाला** – गौ पालन तथा संवर्धन आज के परिप्रेक्ष्य में अत्यधिक महत्वपूर्ण है। गरीबी उन्मूलन की दिशा में इसका विशेष महत्व है। गाय पर आधारित उद्योग की प्रभावकारिता तथा उत्पादन क्षमता को विकसित करने के क्रम में हमारा विश्वविद्यालय एक मॉडल की तरह है। विश्वविद्यालय में गौशाला की विशिष्ट सार्थकता है।

◆ **ध्यान की कक्षाएं** – मानसिक स्थिरता आध्यात्मिक विकास के लिए आवश्यक है। सुव्यवस्थित विचार क्रम का विकास मन की चंचलता को काफी हद तक कम करता है। विश्वविद्यालय के आदरणीय कुलाधिपति के आध्यात्मिक विकास तथा ध्यान विषयक उद्‌बोधन सुनकर विद्यार्थीगण कृतार्थ होते हैं। आध्यात्मिक ग्रन्थों एवं जीवन की, वास्तविक घटनाओं के उदाहरण तथा अभ्यास इस कक्षा के आवश्यक घटक है। कक्षा का उद्‌देश्य इसमें भाग लेने वालों में तपश्चर्या की मनोवृत्ति का विकास करना है। जीवन की चुनौतियों का सामना करना ही वास्तविक तपश्चर्या है। यह शरीर मन तथा आत्मा की शक्ति को बढ़ाता है। इन कक्षाओं में भाग लेने के पश्चात् विद्यार्थी, तरंगि, एक प्रेरणायुक्त जीवंत अभ्यास है तथा आध्यात्मिक शक्ति सम्पन्न महसूस करता है।

◆ **अन्तः ऊर्जा सत्र** – पाँच दिन का अन्तः ऊर्जा सत्र आत्मा तथा परमात्मा के घनिष्ठ सम्बन्ध पर केन्द्रित है। नियमित आत्म समीक्षा तथा ध्यान के द्वारा लोग आत्म परिष्कार करते हुए जीवन के परम लक्ष्य आत्म ज्ञान की ओर बढ़ते हैं। परिणामस्वरूप व्यक्ति ताजगी एवं ज्ञान से प्रदीप्त होते हैं और मन को सशक्त कर कठिनाइयों से जूझने की क्षमता विकसित करते हैं।

विश्वविद्यालय एक दृष्टि में –

अपनी विशिष्ट कार्यपद्धति एवं लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालय निम्न क्रियाओं के साथ विकास पथ पर अग्रसर हुआ है –

1. उत्तरांचल शासन विधाई एवं संसदीय कार्य विभाग सं. 123/विधाई एवं संसदीय कार्य/2002 देहरादून 11 अप्रैल 2002 को विश्वविद्यालय की स्थापना हुई।
2. उत्तरांचल की प्रथम निर्वाचित विधान सभा ने अध्यादेश को 11–04–2002 को एक नियम में परिवर्तित कर दिया।
3. विश्वविद्यालय ऋषि भूमि उत्तरांचल तथा देवभूमि भारत दोनों के उत्थान के लिए प्रतिबद्ध है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

4. प्रथम शैक्षणिक सत्र की शुरुआत 23–07–2002 के दिन ज्ञान दीक्षा समारोह के साथ हुई।
5. 2002 में अध्यादेश के पास होते ही विभिन्न प्रशासनिक इकाइयों जैसे – प्रशासक मंडल, प्रबंध, मंडल, शैक्षणिक परिषद, वित्त समिति का गठन किया गया।
6. शैक्षणिक कार्यक्रम, पाठ्यक्रम तथा मूल्यांकन के तरीकों का निर्धारण शिक्षा मण्डल द्वारा साधना, स्वास्थ्य व स्वालंबन संकायों में शिक्षा व सोच के उभरते स्वरूपों को ध्यान में रखते हुए किया गया।
7. व्यवस्थापक मण्डल, प्रबंध मण्डल व शैक्षणिक परिषद तथा वित्त समिति की सभायें नियत समय अन्तराल पर होती रहती हैं।
8. 12–11–2002 को यू.जी.सी. ने देवसंस्कृति विश्वविद्यालय को मान्यता दी।
9. वेदमाता गायत्री ट्रस्ट, शांतिकुंज, हरिद्वार के द्वारा पूँजी तथा राजस्व दोनों वित्तीय आवश्यकताएँ पूरी होती हैं।

◆ **विश्वविद्यालय के कुलाधिपति** – प्रांतीय विश्वविद्यालयों की परम्पराओं के अनुसार, राज्य का राज्यपाल इस विश्वविद्यालय का कुलाधिपति नहीं है बल्कि विश्वविद्यालय के नियमों के अनुसार, कुलाधिपति की नियुक्ति वेदमाता गायत्री ट्रस्ट के द्वारा है, जो विश्वविद्यालय का पूर्णकालिक अधिकारी होता है। वर्तमान में श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति हैं।

◆ **प्रशासनिक ढाँचा** – विश्वविद्यालय का प्रशासनिक कार्यालय मुख्य प्रशासनिक भवन में स्थित है। रजिस्ट्रार का कार्यालय का ढाँचा निम्नानुसार है – कुलसचिव, उपकुलसचिव, सहायक कुलसचिव, छात्र कल्याण अधिकारी, कानून अधिकारी, स्वागत अधिकारी, अनुभाग अधिकारी, कार्यालय सहायक।

विश्वविद्यालय में आयोजित सेमीनार

◆ **मूल्यपरक शिक्षा** : राज्य के माननीय मुख्यमंत्री श्री नारायण दत्त तिवारी ने विश्वविद्यालय में आयोजित प्रथम सेमीनार का उद्घाटन किया। यह सेमीनार 25 व 26 अप्रैल 2002 को आयोजित किया गया, जिसमें 200 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

◆ **शिक्षा में तकनीक का योगदान** : यह सेमीनार अन्तर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ प्रो. थॉम्स, डेनमार्क और प्रो डेनियल, स्विटजरलैण्ड की अध्यक्षता में अक्टूबर 2002 में आयोजित किया गया। इस सेमीनार में भारतीय शिक्षा पद्धति परिपेक्ष्य में आधुनिक तकनीक के प्रयोग पर प्रकाश डाला गया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

• **विज्ञान, अध्यात्म और सामाजिक मूल्य** : यह सेमीनार विज्ञान व अध्यात्म फोरम ने अपने चतुर्थ वार्षिक दिवस के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय के निर्देशन में यह सेमीनार 16 व 17 नवम्बर 2002 को आयोजित किया। इस सेमीनार में डॉ. एस.एस. दारा, डॉ. वी.पी. पण्ड्या, डॉ. वी.के. हजारे, डॉ. सी.एस. चौधरी, डॉ. शर्मा अन्य वैज्ञानिकों ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किये। इस सेमीनार में विज्ञान व अध्यात्म का सम्बन्ध व उनका सामाजिक मूल्यों पर प्रभाव पर प्रकाश डाला गया।

• **उत्तरांचल में उच्च शिक्षा** : पर्यावरणविद श्री सुन्दर लाल बहुगुणा ने अपने प्रेरणादायी भाषण में भारतीय संस्कृति के विभिन्न पक्षों पर बल दिया। माननीय कुलाधिपति डॉ. प्रणव पण्ड्या ने विभिन्न प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए अपने विचार व्यक्त किये। उन्होंने कहा आध्यात्मिक मूल्यों द्वारा उच्च शिक्षा पद्धति को नई दिशा की ओर मोड़ा जा सकता है। साथ ही हमारे विश्वविद्यालय द्वारा उच्च शिक्षा पद्धति को नई दिशा प्रदान की जा सकती है, जिसके द्वारा न केवल भीतरी मूल्यों में परिवर्तन लाया जा सकता है बल्कि युवाओं के अन्तः व बाह्य व्यक्तित्व को विकसित किया जा सकता है।

सेमीनार –

29 नवम्बर 2004 को विश्वविद्यालय के प्रार्थना हाल में 'सकारात्मक सोच' पर आयोजित इस सेमिनार में श्री आर.के. मित्तल (आई.ए.एस.) प्रमुख सचिव उत्तरांचल सरकार, संस्थापक और प्रमुख कबीर शांति मिशन (सकारात्मक सोच पर समर्पित एक मिशन) प्रमुख वक्ता रहे। आदरणीय कुलपति डॉ. एस.पी. मिश्र एवम् समस्त स्टाफ सदस्यों ने सेमीनार में हिस्सा लिया।

उनके व्याख्यान के प्रमुख अंश निम्न हैं – हमारे जीवन में घटने वाली प्रत्येक घटना प्रकृति की एक सुनियोजित व्यवस्था के अन्तर्गत होती है। जब कभी हम किसी समस्या पर विचार करते हैं, प्रकृति अप्रत्यक्ष रूप से समाधान ढूढ़ने के लिए हर संभव मदद करती है। यही वजह है कि एक सकारात्मक व्यक्ति, प्रकृति का हिस्सा होता है। वही एक नकारात्मक व्यक्ति प्रकृति से दूर होता है। सही मायनों में इंसान बनने के लिए हमें अपने जीवन में इन सब बातों को साबित करना पड़ेगा। संघर्ष ही वह आधार है, जो हमें मानवता और दिव्यता की ओर ले जाता है।

• **विश्वविद्यालय में भारतीय विश्वविद्यालय संघ द्वारा आयोजित सांस्कृतिक परिषद गोष्ठी** – भारतीय विश्वविद्यालय ने 15 से 16 मई 2004 को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विश्वविद्यालय परिसर में गोष्ठी आयोजित की। चयनित विश्वविद्यालयों के कुलपति और सांस्कृतिक समन्वयकों ने इसमें भाग लिया। 15 मई 2004 को सांस्कृतिक समिति ने पिछले वर्ष के कार्यक्रमों की समीक्षा की और भविष्य के कार्यक्रमों की योजना बनायी।

◆ **ग्रामीण परियोजना** – विश्वविद्यालय के प्रत्येक शैक्षिक विभाग ने एक-एक गाँव को गोद लिया है, ताकि वहाँ शिक्षा व जीवन स्तर ऊपर उठ सके। ग्रामवासी स्वयं जविका अर्जन तो करे ही, साथ ही इसमें दूसरों की भी मदद कर सकें।

कार्यशालाएँ

◆ **प्राणिक हीलिंग पर जी. स्वर्णकाल, हैदराबाद द्वारा कार्यशाला** – प्राणिक हीलिंग फाउंडेशन, आंध्रप्रदेश की संस्थापक ट्रस्टी जी स्वर्णमाला द्वारा विश्वविद्यालय परिसर में 22 व 23 मार्च 2004 को विद्यार्थियों हेतु कार्यशाला आयोजित की गई। इन्होंने यह विद्या अपने गुरु मास्टर चोआ कोक सुई (आधुनिक संस्थापक प्राणिक हीलिंग व अराहतिक योग, फिलीपीन्स) से सीखी। प्राणिक हीलिंग सीखना सभी के लिए बहुत सरल है। यह विद्या साधारण व असाध्य दोनों प्रकार के रोगों के उपचार में प्रभावशाली है। इस विद्या के अन्तर्गत सात प्रमुख चरण है, जिनसे मौलिक प्राणिक हीलिंग पाठ्यक्रम से अवगत कराया जाता है। प्राणिक हीलिंग एक प्राचीन विज्ञान है। यह रोगोपचार की ऐसी कला है, जिसमें प्राण या जीवन ऊर्जा का प्रयोग समस्त शारीरिक व ऊर्जा शरीर को स्वस्थ बनाने में किया जाता है।

सुश्री स्वर्णमाला का कथन है कि गायत्री मंत्र साधना शरीर के अन्तः व बाह्य प्रभामंडल (औरा) व समस्त ऊर्जा स्तरों को बढ़ाने हेतु सर्वोत्तम साधना है। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के संस्थापक गुरुदेव श्रीराम शर्मा आचार्य ने प्राणिक हीलिंग की कला पर कई पुस्तकें व वाङ्मय लिखी हैं। उन्होंने अपनी पुस्तकों में शरीर व रोगी के शरीर के ऊर्जा स्तरों को बढ़ाने व उनमें संतुलन रखने के कई तरीकों का वर्णन किया है।

◆ **फाइन आर्टस पर कार्यशाला** – श्रीमती नलिनी तनेजा ने मौलिक फाइन आर्टस विषय पर 15 दिवसीय विशेष कार्यशाला का आयोजन विद्यार्थियों व स्टॉफ हेतु किया। प्रशिक्षणार्थियों ने प्रशिक्षण के दौरान श्रीमती तनेजा के चित्रों की प्रदर्शनी का अवलोकन भी किया। इस प्रदर्शनी की आगंतुकों द्वारा काफी प्रशंसा हुई। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों में न केवल चित्रकला के प्रति रुचि जगाई

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बल्कि उनके भीतक के कलाकार को थोड़ा से अंतराल में बाहर लाने का प्रयास किया।

◆ **विभिन्न सेमिनारों/कार्यशालाओं में कुलपति की भागीदारी** – भारतीय उद्योग परिषद उत्तरांचल व सी.एम.बी.डी. द्वारा संयुक्त रूप से परेड ग्राउण्ड, देहरादून में 4 दिसम्बर 2003 से 9 दिसम्बर, 2003 तक आयोजित 'स्वदेशी मेला' में माननीय कुलपति जी ने भाग लिया। इस प्रदर्शनी के अंतर्गत उत्तरांचल के बेरोजगार युवाओं एवं महिलाओं हेतु एक कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें उद्यमिता विकास एवं स्वरोजगार के अवसरों पर विशेष ध्यान दिया गया। इस कार्याशाला में प्रसिद्ध एवं विद्वान वक्ताओं ने अपने विचार प्रकट किये। इन वक्ताओं में भारत सरकार, उत्तरांचल सरकार, आई.आई.टी. रुड़की, एफ.आर.आई., सिडबी, केविक, नाबार्ड व अनेक उद्योगपति शामिल थे।

यह एक दिवसीय कार्यशाला स्वरोजगार को भविष्य के तौर पर अपनाने के लिए आम जन को प्रेरित करने हेतु प्रथम बार आयोजित की गई। माननीय कुलपति एस.पी. मिश्र ने 'उद्यमिता विकास एवम् स्वरोजगार के अवसर' विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

◆ **विशेष** – किसी भी देश व समाज का उत्थान पतन उसकी युवा जनसंख्या पर निर्भर करता है, जो कि उत्पादकता के कार्यों से जुड़ी हो। प्रथमतः समाज में प्रचलित उद्यमिता संस्कृति उसके स्वरोजगार के महत्व को दर्शाती है। द्वितीयतः उद्यमिता संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए हमें ईमानदार, परिश्रमी और धर्म चेतना पर आधारित अध्यात्मपरक उद्यमिता कार्यक्रमों का निर्माण करना चाहिये। तृतीयतः उद्यमिता कार्यक्रमोंके प्रोत्साहन हेतु शैक्षिक हस्तक्षेप की आवश्यकता होगी। चतुर्थतः गाय सम्बंधी उत्पादों पर आधारित ग्रामीण उद्यमिता कार्यक्रमों के उत्थान, पर्यावरण संरक्षण तथा जड़ी बूटी खेती आदि प्रगति प्रोत्साहन देना चाहिये। अन्ततः उत्तरांचल में प्रति व्यक्ति रोजगार के अवसरों में बढ़ोत्तरी हेतु प्रयास करने होंगे। साथ ही हमें अध्यात्म–स्वास्थ्य सम्बन्धी परियोजनाओं को शुरू करना होगा, जिसमें योग, यज्ञ, प्राकृतिक चिकित्सा व आयुर्वेद भी शामिल हो। विभिन्न योग चिकित्साओं के अभ्यास हेतु एक योग केन्द्र भी होना चाहिये।

माननीय कुलपति 23 जुलाई 2004 को बैंगलौर में 'एडूसट प्रयोग नीति विषयक' पर आयोजित सम्मेलन में शामिल हुए। उन्होंने 'बदलते समय में उद्यमिता शिक्षा की आवश्यकता' विषय पर भारतीय उद्यमिता संस्थान, गोहाटी आसाम में 3 मार्च 2005 को आयोजित राष्ट्रीय सेमीनार में भाग लिया। माननीय कुलपति 'विज्ञान एवम् तकनीक द्वारा विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम' में शामिल हुए,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जो कि भारत सरकार नई दिल्ली द्वारा आई.सी.आर.आई.एस.ए.टी, हैदराबाद में 4 मई 2005 को आयोजित किया गया। पादरे कॉनसीकेओ कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, वरना, गोवा में 18 फरवरी 2005 को 'टेक्नेविजन 2005' के दौरान माननीय कुलपति ने अपना सम्बोधन प्रस्तुत किया।

- **विदेशों में भागीदारी** – 'लघुवित्तीय व्यवस्था एवम् युवा व्यापार' विषय पर मालद्वीप, श्रीलंका में आयोजित क्षेत्रीय कार्यशाला में विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित हुए। बरौनी, दारुसलेम में युवा व्यापार स्थापना विषय पर आयोजित क्षेत्रीय सेमिनार में विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित हुए। काठमाण्डू नेपाल में आयोजित तकनीकी संस्थानों के आचार्यों, नीति निर्माताओं और आयोजकों हेतु प्रशिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में विशेष के रूप में उपस्थित हुए।

सेमिनारों में भागीदारी

विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों नें विभिन्न सेमीनारों में भाग लिया। इन सेमीनारों व प्रतिभागी विद्यार्थियों की कुल संख्या निम्न है –

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

विषय	विद्यार्थियों की संख्या	सेमीनारों की संख्या
नैदानिक मनोविज्ञान	58	10
मानवीय चेतना व योग विज्ञान	134	12
भारतीय संस्कृति व पर्यटन प्रबंधन	29	11
धर्म विज्ञान	30	14

शोध –

हमारे विश्वविद्यालय में निम्नलिखित विद्यार्थी शोध कार्य कर रहे हैं –

Sr.	Topic	Name of the Student
1.	A comparative study of the effects of an Ayurvedic Formulation and some yogic practices on Madhumeha (Diabetes Mellitus) Niddam Patients -	Devashish Bharadwaj
2.	Effects of selected yogic practices on physical and	

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

Sr.	Topic		Name of the Student
	physiological variables on deaf & dumb children	-	Shamsher Singh
3.	समकालीन दार्शनिकों की योग साधना (एक विवेचनात्मक अध्ययन एवं मूल्यांकन)	–	Madhusudan Ratudi
4.	औपनिषदिक प्राण विद्या का वैज्ञानिक विवेचना	–	Somlata Jha
5.	यौगिक एवं वैज्ञानिक संदर्भ में योग सूत्र एवं शिव संहिता का तुलनात्मक अध्ययन एवं विवेचन	–	Devendra Kumar Arya
6.	मंत्र योग का वैज्ञानिक विवेचन	–	Amrit Lal Gurvendra
7.	तंत्र योग में धारणा का विवेचनात्मक अध्ययन (विज्ञान भैरव के विशेष संदर्भ में)	-	Rajesh Kumar Raj
8.	प्राचीन भारत में यज्ञ का उद्भव एवं विकास	–	Ravindra Singh
9.	Psychophysiological Changes as related to Yoga Nidra	-	Kamakhya Kumar
10.	यौगिक अभ्यासों को मनो शारीरिक चरों पर प्रभाव एक प्रयोगात्मक अध्ययन	–	Rachana Sirohi
11.	Air Quality Modelling to non-conventional solution through Vedic Science for environmental Problems	-	Mamta Saxena
12.	Some Investigations into the Chemical & Pharmaceutical Aspects of Yagyopathy : Studies in Pulmonary Tuberculosis	-	Meenakshi Raguvanshi

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

Sr.	Topic	Name of the Student
13.	समकालीन साधिकाओं की योग साधना 21वीं सदी के परिप्रेक्ष्य में (एक विवेचनात्मक अध्ययन एवं मूल्यांकन) –	Saraswati Ratudi
14.	आचार्य श्री की स्वर्ण जयन्ति साधना का समायोजन मनस्तापीयता पर प्रभाव –	Indu Sharma
15.	नारद भक्तिसूत्र एवं शांडिल्य भक्ति सूत्र का तुलनात्मक अध्ययन –	Shikha Rani
16.	सूफीमत की रहस्यमयी योग साधनाओं का विवेचन –	Suman Chaudhary
17.	कपालभाति व अनुलोम–विलोम प्राणायाम का चिन्ता, अवसाद व फेफड़े की क्षमता पर प्रभाव का अध्ययन –	Bhanu Prakash Joshi
18.	To study the effect of Yogic Practices in autoimmune diseases with special reference to Rhenatoid Arthritis -	Vijay Singh
19.	यौगिक अभ्यासों का शारीरिक विकलांग व्यक्तियों की कुण्ठा, आत्महीनता एवं असुरक्षा की भावना पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन–	Bhavana Srivastav
20.	Yogic Management of Low Back Pain -	Parul Agrawal
21.	महिलाओं के प्रजनन संस्थान संबंधी रोगों पर यौगिक अभ्यास एवं प्राकृतिक चिकित्सा के प्रभाव का अध्ययन –	Seema Chauhan
22.	अंतः ऊर्जा जागरण सत्र का शरीर क्रिया विज्ञान एवं मनोवैज्ञानिक स्तर पर पड़ने	

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

Sr.	Topic		Name of the Student
	वाले प्रभाव का अध्ययन	–	Arun Kumar Sao
23.	विद्यार्थियों के निकट दृष्टिदोष एवं दूर दृष्टिदोष के यौगिक प्रबंधन	–	Aradhana
24.	To study the effects of Nadishodhana, Bhramari Pranayama & Om chanting on memory enhancement of college students.	-	Kanchan Joshi
25.	भ्रामरी प्राणायाम एवं नाद साधना का कर्मचारी, महिलाओं की कुण्ठा एवं चिन्ता पर प्रभाव	–	Shivani Sharma
26.	हठ यौगिक अभ्यास का अस्थमा के रोगियों पर प्रभाव का अध्ययन	–	Sh. Dayanand Sinha
27.	आचार्य श्री की योग साधनाओं का शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव का अध्ययन	–	Rajni Rautela
28.	आचार्य श्रीराम शर्मा द्वारा प्रतिपादित प्रज्ञायोग एवं प्राणाकर्षण प्राणायाम का बाल अपराधियों के मनोवैज्ञानिक स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन	–	Sunil Deshmukh
29.	आयुर्वेद पंचकर्म एवं यौगिक षट्कर्म का तुलनात्मक अध्ययन एवं विवेचन	–	Sunil Kumar
30.	प्राणाकर्षण प्राणायाम ज्योति अवतरण के ध्यान साधना एवं नाद साधना द्वारा वृद्धों की मनोकायिक समस्याओं का प्रबंधन	–	Ritu Pandey
31.	श्री दुर्गासप्तशती में योग के विविध आयाम: एक विवेचनात्मक अध्ययन	–	Charu Sharma

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

Sr.	Topic	Name of the Student
32.	वर्तमान समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में शांतिकुंज द्वारा किये गये योग शिक्षण के प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन –	Kamta Prasad Sahu
33.	प्रत्यावर्तन साधना का किशोर एवं किशोरियों के शैक्षणिक चिन्ता आत्म सम्मान, सृजनात्मकता एवं आत्मविश्वास स्तर में पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन –	Monika Sharma
34.	21वीं सदी के परिप्रेक्ष्य में रामकृष्ण परमहंस एवं आचार्य श्रीराम शर्मा की यौगिक साधनाओं का विवेचनात्मक अध्ययन एवं मूल्यांकन –	Nitin Dhomme
35.	योग के विविध परम्पराओं के परिप्रेक्ष्य में स्वामी विवेकानन्द की योग साधना के विविध आयामों का विवेचनात्मक अध्ययन –	Poonam Mishra
36.	श्रीमद्भागवत में योग की विविध धारायें एक विवेचनात्मक अध्ययन –	Rashmi Sharma
37.	महर्षि पतंजलि एवं युग ऋषि आचार्य श्रीराम की यौगिक प्रक्रियाओं का तुलनात्मक अध्ययन एवं विवेचन –	Shalini Devi
38.	छात्रों के समायोजन, मनस्तापियता स्तर पर ऊँ उच्चारण, उज्जायी प्राणायाम व शीतली प्राणायाम का प्रभाव –	Shweta Rawat

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

Sr.	Topic		Name of the Student
39.	रामचरित मानस में योग के विविध आयाम – एक विवेचनात्मक अध्ययन	–	Neetu Saxena
40.	तंत्र योग की विविध परम्पराओं के परिप्रेक्ष्य में युगऋषि आचार्य श्रीराम शर्मा के तंत्र योग का समीक्षात्मक अध्ययन	–	Garima
41.	Depression Management through Psychospiritual Pakage	-	Ritu Mishra
42.	A Holistic Psychotherapeutic Approach for the Management of Obsessive % Compulsive disorder (OCD)	-	Deepak Singh
43.	महामृत्युंजय मंत्र जप का मानसिक स्थिति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन	–	Pragya Rana
44.	शिक्षित बेरोजगार युवाओं में व्याप्त मनोवैज्ञानिक विक्षुब्धता	–	Manisha
45.	Effect of Tratak Sadhana on Memory Improvement - A study	-	Rashmita Sharma
46.	Psychoneurotic Disorders as related to guilt feelings	-	Reena Saini
47.	To study the effect of "Yug Shilpi Training Programme" (As conducted by shantikunj, Haridwar) on some psychological measures, a follow up study	-	Santosh Kumar Vishwakarma
48.	किशोरों की समायोजन समस्या पैतृक स्वीकरण व अस्वीकरण से सम्बंधित तथ्य का अध्ययन	–	Sarita Rathore

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

Sr.	Topic		Name of the Student
49.	Development of Personality traits among adolescents as related to perceived home environment	-	Shweta
50.	मनो–अध्यात्मिक विकास कार्यक्रम का सामान्य मानसिक योग्यता साम्वेगिक स्थिरता सृजनात्मकता एवं आत्मविश्वास स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन	–	Akhileshwar Sao
51.	किशोरों के साम्वेगिक आवश्यकताओं की परिपूर्ति के संदर्भ में शैक्षणिक निष्पादन तथा मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन	–	Archana Dubey
52.	To study to effects of counseling, Nadishodhana Pranayama and Kamdhenu Arka on the level of anxiety, depression, immune system of AIDS patients.	-	Vinita Sharma
53.	A therapeutic package for the management of attention deficit hyperative syndrome (ADHS) of childrens.	-	Ritu Chauhan
54.	नाटक और प्रणव का आत्मविश्वास, चिन्ता, अवसाद और कुण्ठा पर प्रभाव का अध्ययन	–	Smita Singh
55.	मद्यपानता एवं मद्यपान व्यसनी की समस्याओं पर यौगिक अभ्यास (पैकेट के प्रभाव का अध्ययन)	–	Vidya Bhushan Varma
56.	Manastap avam sambandhit jyotish char	-	Pooja Kaushik

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

Sr.	Topic		Name of the Student
57.	यज्ञ द्वारा निम्न रोग–प्रतिरोधक क्षमता के रोगियों में उत्पन्न मनोवैज्ञानिक लक्षणों का प्रबंधन	–	Pooja Sharma
58.	यज्ञ चिकित्सा का मानसिक मंदता से ग्रस्त बच्चों के बुद्धि–लब्धि पर प्रभाव का अध्ययन	–	Priti Shukla
59.	यज्ञापैथी द्वारा मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन	–	Shalini Sharma
60.	प्रज्ञायोग व्यायाम, नादयोग तथा स्वाध्याय का विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य तथा आशावादी–निराशावादी मनोवृत्ति पर प्रभाव	–	Subhash Kashyap
61.	A study of frustration tolerance and neurotism as related to personality type in spiritual and normal environment	-	Srujana Kaur Sodhi
62.	सास–बहु के सम्बंधों को प्रभावित करने वाले सामाजिक, मानसिक तथा अध्यात्मिक कारकों का अध्ययन	–	Vandana Chauhan
63.	प्रार्थना का मानसिक स्वास्थ्य एवं आत्मविश्वास पर प्रभाव का अध्ययन	–	Namrata Bihariya
64.	युग निर्माण मिशन का जीवन शैली एवं मूल्य उन्मुखीकरण पर प्रभाव का अध्ययन	–	Avinash Bihariya
65.	A stydy of adjustment and academic performance of the children of leprosy patients.	-	Aarti Gupta
66.	श्रीमद्भगवतगीता में व्यक्तित्व संप्रत्यय एवं समग्र मनः चिकित्सा के प्रारूप का अध्ययन	–	Gayatri Chaudhary
67.	A study of the effects of psycho-herbal yogic package on insomnia	-	Mahasweta Chopdar
68.	The Scientific and spiritual secret of Cosmophysics	-	an exploratory study
69.	Screening and analysis of different medicinal and aromatic plants in context with chronic active hepatic disease	-	Jaya Savita

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

व्यावहारिक विज्ञान पर द्विभाषी शोध पत्रिका –

व्यावहारिक विज्ञान पर विश्वविद्यालय ने एक द्विभाषी शोध पत्रिका शुरू की। इसका प्रथम संस्करण 4 दिसम्बर 2003 को स्नेह सलिला शैलबाला पण्ड्या द्वारा विमोचित किया गया। मौलिक शोध पत्र, पुस्तक समीक्षा और देव संस्कृति के समाचार इसके अभिन्न अंग है।

तीर्थ यात्रा साइकिल रैली –

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के पन्द्रह उत्साही युवकों ने शिवरात्री के पावन–पर्व पर 18 फरवीर 2004 को एक तीर्थ यात्रा साइकिल रैली आयोजित की। मिशन के उद्‌देश्यों का प्रचार करने, बुरी प्रवृत्तियों और अंधविश्वास को दूर करने के इरादे से वे हरिद्वार से सटे गाँवों में घूमे।

शांतिकुंज से निकली यह रैली रास्ते भर प्रज्ञा गीत गान, नारे लगाना, गुरुदेव का साहित्य वितरित करना और दीवार लेखन करती रही। ये विभिन्न इन्टर कालेजों में भी गये और वहाँ के स्टाफ और विद्यार्थियों को योग आसनों, दीप यज्ञ व प्रेरक गीतों द्वारा उनहोंने प्रेरणा दी।

www.vicharkrantibooks.org

दुष्ट/वृत्तियों और व्यसन उन्मूलन के लिए आयोजित रैली –

गायत्री परिवार के द्वारा चलाये जा रहे सप्तक्रांति आन्दोलन के अंतर्गत दुष्ट वृत्तियों और व्यसनों का उन्मूलन प्रमुख है। इस आंदोलन के एक भाग के अन्तर्गत, होली के शुभ अवसर पर 250 छात्रों द्वारा एक रैली आयोजित की गयी, जिसमें बुरी आदतों और कुरीतियों का पुतला जलाया गया। व्यसन की लत समाज के युवा वर्ग को बर्बाद कर रही है, जिससे पूरा राष्ट्र प्रभावित हो रहा है। रैली का मुख्य उद्देश्य, बैनर, और प्रेरणापद गीतों के माध्यम से युवाओं के बीच जागरूकता लाना है।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के छात्रों द्वारा युवा जागृति साइकिल रैली –

देवसंस्कृति विश्वविद्यालय के छात्रों द्वारा युवा जागृति साइकिल रैली देव संस्कृति विश्वविद्यालय से ऋषिकेश तक आयोजित की गयी। रैली पर जाने से पूर्व आदरणीय कुलाधिपति महोदय, डॉ. प्रणव पण्ड्या जी और आदरणीय शैल जीजी द्वारा शुभाशीष दिये गये। समाज में ग्रामीण विकास योजनाओं का प्रचार करना ही रैली का प्रमुख उद्देश्य था। इसके अलावा योग क्रियाएँ, और युग निर्माण मिशन द्वारा शुरू की गयी सप्त क्रांति आंदोलनों के बारे में भी जानकारी दी गयी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ऋषिकेश जाते वक्त दीवार लेखन का कार्य भी हुआ।

साइकिल रैली की उपलब्धियाँ हैं – मिशन के साहित्य का वितरण, ग्रामीण क्षेत्रों में सफाई कार्यक्रम, वृक्षारोपण (अशोक, आंवला, नीम, शीशम, आदि के पौधे लगाये गये), सौ से अधिक जगहों पर गायत्री परिवार के स्लोगन लिखे गये, अखंड ज्योति पत्रिका का वितरण 400 से भी अधिक घरों में, रैली के समापन पर इस शुभ कार्य हेतु अपने जेब खर्च से विद्यार्थियों ने 51 साइकिलें खरीदने का निर्णय लिया।

तम्बाकू नियंत्रण के समग्र प्रयास के लिए आयोजित सभा –

नागपुर के एक संगठन ने टौबेको एसोसियेशन के साथ मिलकर 6 और 9 मार्च 2005 को विश्वविद्यालय परिसर में एक सभा का आयोजन किया। तम्बाकू का सेवन न केवल हमारे स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालता है, बल्कि अर्थव्यवस्था, कृषि, कानून तथा व्यक्तिगत और सामाजिक व्यवहार पर भी इसका बुरा असर होता है। इसलिए तम्बाकू नियंत्रण के लिए बहुआयामी प्रयास होने चाहिए। यज्ञ करते समय देवदक्षिणा के रूप में एक बुराई को छोड़ना और एक अच्छाई को ग्रहण करने का संकल्प लेना पड़ता है। इसके अलावा नियमित प्रज्ञा योग, प्राणायाम, और यौगिक क्रियाएं जैसे जल नेति, कपालभाती, कुंजल, आदि भी बेहत प्रभावकारी हैं।

पर्यावरण का व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव पड़ता है। आध्यात्मिक ऊर्जा से भरा शांतिकुंज का दिव्य वातावरण तम्बाकू खाने की इच्छा को दबाता है। आयुर्वेदिक औषधियाँ जैसे अकरकरा, गुडमार के सेवन से तम्बाकू खाने की इच्छा कम होती है। विश्वविद्यालय साईकिल रैली की सहायता से सारे भारत में नशा मुक्ति कैम्प आयोजित कर रहा है।

प्रथम दीक्षान्त समारोह –

देव संस्कृति विश्वविद्यालय का प्रथम दीक्षान्त समारोह सोमवार, 8 नवम्बर 2004 को आयोजित हुआ। विद्यार्थियों ने विषय ज्ञान के अतिरिक्त अपनी संस्कृति की पहचान व श्रेष्ठ संस्कारों को भी आत्मसात किया। ये स्नातक विद्यार्थी, भारतीय संस्कृति, धर्मविज्ञान, अंग्रेजी में प्रवीणता, नैदानिक, मनोविज्ञान, मानवीय चेतना व योग विज्ञान तथा समग्र स्वास्थ्य प्रबंधन आदि विभिन्न पाठ्यक्रमों से सम्बंधित रहे।

यह त्रिदिवसीय दीक्षांत समारोह 06 नवम्बर, 2004 को सांस्कृतिक समारोहों के साथ प्रारम्भ हुआ। इसमें दीक्षांत समारोह सम्बंधी अभिभाषण हुए व अंतिम दिन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

8 नवम्बर, 2004 को डिग्रियों का वितरण किया गया। मानवीय उपराष्ट्रपति, श्री भैरो सिंह शेखावत को विशेष अतिथि के रूप में बुलाया गया, जिन्होंने दीक्षान्त समारोह को सम्बोधित किया।

गुरुदेव के सपनों का विश्वविद्यालय –

जीवनोत्कर्ष की शिक्षा ही संजीवनी विद्या है। यह निश्चित है कि इसके आधार पर विकसित हुआ व्यक्तित्व, अनेक उपलब्धियाँ हस्तगत करने में समर्थ होता है।

विषय चरित्र निष्ठा का हो या शिल्प संगीत का उसके लिए आवश्यक यह है कि शिक्षक को अपने विषय में प्रवीण पारंगत होना चाहिए। इससे कम में न तो शिक्षार्थी प्रभावित होते हैं और न उनकी बातें गले उतरती हैं।

जिस युग में हमें रहना पड़ रहा है उसकी समस्याओं, आवश्यकाताओं और समाधानों को समझने के लिए शिक्षा की एक प्रकार से अनिवार्य आवश्यकता हो गई है। यद्यपि पढ़ा हुआ विषय मुद्दतों तक दुहराया जाता रहता है, पर देखा जाता है कि वह लकीर पीटने की तरह रह गया है। उसका एक अंश भी जीवनचर्या में अपना स्थान नहीं पाता। यदि प्रचलित शिक्षा की नए सिरे से समीक्षा की जा सके तो बहुत ही हितकर होगा।

चरित्र निष्ठा नागरिकता, सामाजिकता ऐसे प्रसंग हैं जिनकी न केवल उथली जानकारी का विहंगावलोकन कराया जाए वरन् इतना समृद्ध प्रशिक्षण हो कि विद्यार्थी को उन्हें मानने के लिए ही नहीं वरन् हृदयंगम करने के लिए सहमत होना पड़े।

कृषि पशुपालन कुटीर उद्योग, मधुमक्खीपालन, कपड़ा उद्योग, सिलाई, धुलाई, रंगाई, छपाई जैसे अनेक सहकारी उद्योग हैं यदि इनका प्रचलन सहकारिता के आधार पर व्यवस्थापूर्वक होने लगे तो शिक्षितों या अशिक्षितों में से किसी को भी बेकारी की शिकायत न करनी पड़े। सर्वसाधारण के लिए निर्धारित शिक्षा में इन विषयों का समावेश होना चाहिए। भले ही इसके लिए पाठ्यक्रमों में से उन विषयों को घटाना या हटाना पड़े जो बहुमुखी जानकारियों में वृद्धि तो करता है पर उसका व्यावहारिक उपयोग सर्वथा संदिग्ध है।

समग्र शिक्षा की आवश्यकता तभी पूरी हो सकती है जब वह व्यक्ति की समानता और प्रतिभा को साथ–साथ विकसित करे। प्राचीन काल की गुरुकुल पद्धति में यही प्रयत्न होता था। यदि अपनी वर्तमान शिक्षा प्रणाली की कार्यपद्धति को उसी पुरातन ढांचे में ढाला गया होता तो शिक्षितों को हर दृष्टि से सुविकसित और स्वावलम्बी पाया गया होता।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शिक्षा व्यवस्था का बहुत अंश ऐसा है जो सरकार नहीं कर पा रही, उसके लिए दोषारोपण करने की अपेक्षा यही अच्छा है कि अपनी आवश्यकता देखते हुए अपने साधान स्वयं जुटाएँ। घर–परिवार की सारी व्यवस्था तो हम स्वयं ही निबाहते हैं फिर शिक्षा में तो कमी आज दिखाई देती है उसकी पूर्ति के लिए मिल–जुलकर व्यवस्था क्यों नहीं की जा सकती?

देश के 100 करोड़ नागरिकों के लिए एक करोड़ अध्यापकों की आवश्यकता होगी। इतने लोगों को वेतन पर रखना असंभव है। हमें समयदानी अध्यापक निकालकर समय की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता की पूर्ति करनी चाहिए।

इन दिनों जानकारियाँ पर बढ़ाने वाली शिक्षा का प्रचलन रह गया है ऐसा कोई समर्थ तंत्र खड़ा नहीं हो सका जो मानवीय गरिमा के अनुरूप गुण, कर्म, स्वभाव में आदर्शवादी उत्कृष्टता को हृदयंगम करा सके।

वर्तमान शिक्षा पद्धति के परिणामों की विवेचना करने पर यह सोचने के लिए बाध्य–सा हो जाना पड़ता है कि आज शिक्षा संस्थाएँ जिस रूप में चल रही है उनसे क्या मानवीय जीवन की आवश्यकताएँ पूरी होती हैं, यदि नहीं तो क्या इसका परिवर्तन और सुधार नहीं किया जाना चाहिए? और यदि किया जाना चाहिए तो उसका स्वरूप क्या हो सकता है? इसका एक ही उत्तर है कि विद्यार्थी जीवन में तपश्चर्या, तत्परता और संयम भावना जागृत की जाए। गुरु–शिष्यों के संबंध में स्नेह, अपनत्व और आदर, अनुशासन के मूल्यों की प्रतिष्ठा की जाए। इसके लिए सर्वप्रथम योग्य, विचारवान, दृढ़चरित्र तथा प्रज्ञावान अध्यापकों को ढूँढ़ निकाला जाए। शिक्षा की नींव जब तक चरित्रवान व्यक्तियों के हाथों में नहीं पड़ेगी तब तक राष्ट्रीय जीवन के विकास की समस्या हल न हो सकेगी। राष्ट्र को ज्ञानवान, प्राणवान, शक्तिवान, समुन्नत और सुविकसित बनाने के लिए वर्तमान शिक्षा पद्धति में परिवर्तन की नितान्त और अनिवार्य आवश्यकता है।

ज्ञान और आचरण में, बोध और विवेक में जो सामंजस्य प्रस्तुत कर सके उसे ही सही अर्थों में शिक्षा या विद्या कहा जा सकता है।

प्रचलित शिक्षा पद्धति छात्रों के सामने कोई ध्येय, कोई आदर्श उपस्थित नहीं कर पाती या कहना चाहिए वह ध्येयहीनता के अंधकार में धकेलती है तो उस स्थिति में जो ज्ञान जीवन को सुसज्जित और सुरभित बनाता वह ज्ञान कहाँ उपलब्ध हो पाता है। शिक्षा का मूल उद्देश्य व्यक्तित्व का समग्र विकास है। शिक्षा को जीवन से सीधी जुड़ी हुई होना चाहिए।

यथार्थता की तली तक पहुँचने के लिए किस प्रकार की गोताखोरी की जानी चाहिए, इसी का सिखाना शिक्षा का उद्देश्य है।

यदि कहीं कोई सच्चे अर्थ में विद्यालय जीवित हो तो उसका लक्ष्य भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विद्यार्थियों में स्वतंत्र चेतना का विकास करना ही होगा। शिक्षा का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए छात्र में वह साहस विकसित करना पड़ेगा कि वह विवेक और सत्य का सहारा लेकर यथार्थता की तह तक पहुँच सके। सब जंजालों के आवरण को चीरकर जो सत्य को समझने और स्वीकार करने को तत्पर हो सकें ऐसी ऋतंभरा प्रज्ञा को प्रसुप्ति से विरक्त कर सक्रिय जागरण में संलग्न करना ही विद्या का मूल उद्देश्य है।

शिक्षा के प्रयोजन को अभी हमारे यहाँ ठीक से समझा ही नहीं गया। शासक वर्ग और प्रबुद्ध व्यक्ति भी उसे पर्याप्त महत्व नहीं देते। जो भी समस्याएँ दिमागी जड़ता और मानसिक पिछड़ेपन से सम्बद्ध हैं उनका उन्मूलन शिक्षा के व्यापक कार्यक्रम द्वारा ही किया जा सकता है।

ज्ञान के दो अंग हैं– एक शिक्षा और दूसरा विद्या। शिक्षा वह है जो स्कूल–कॉलिजों में पढ़ाई जाती है जिसे पढ़कर लोग क्लर्क, डॉक्टर, वकील, इंजीनियर, प्रोफेसर आदि बनते हैं। विद्या वह है जिसे प्राप्त कर मनुष्य अपनी मान्यताओं, आकांक्षाओं एवं आदर्शों का निर्माण करता है। इसे प्राप्त करने का माध्यम स्कूल–कॉलिज ही नहीं वरन् स्वाध्याय और सत्संग भी हैं। चिन्तन और मनन से, सत्साहित्य पढ़ने से, सज्जनों के साथ रहने से विद्या का आविर्भाव होता है।

संजीवनी –

आज देश में शिक्षा के अनेकों विद्यालय–विश्वविद्यालय मौजूद हैं पर जीवन जीने की कला सिखाने वाला एक भी नहीं है। यह बड़े खेद का विषय है। प्राचीन काल में प्रत्येक गुरुकुल जीवन जीने की कला अवश्य सिखाता था। पुस्तकीय ज्ञान तो उतना ही रहता था जितना सामान्य जीवन में काम आए शेष तो वहाँ सबकुछ वही सिखाया–पढ़ाया जाता था जिसके आधार पर मनुष्य अपनी प्रत्येक समस्या को सुलझानें, प्रत्येक कठिनाई को पार करने और प्रत्येक परिस्थिति में आगे बढ़ने में सफल हो सके। आज उस प्रकार की शिक्षा का कोई प्रबन्ध कहीं भी न होने से मानव जाति की कितनी बड़ी हानि हो रही है इसकी कल्पना नहीं की जा सकती।

राष्ट्र निर्माण के लिए जैसा समाज बनाना है वह परिवार निर्माण के आधार पर ही तो बनेगा। जिस प्रकार परिवारों के समूह का नाम समाज है, इसी प्रकार व्यक्तियों के समूह को परिवार कहते हैं। परिवार व्यक्तियों के समूह से बनता है। इसलिए व्यक्ति निर्माण से परिवार निर्माण और उससे समाज निर्माण, राष्ट्र निर्माण या युग निर्माण का उद्देश्य पूरा हो सकता है। व्यक्ति निर्माण के द्वारा ही हम राष्ट्र निर्माण के लक्ष्य तक पहुँच सकते हैं। व्यक्ति निर्माण के लिए इस प्रकार की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शिक्षा–दीक्षा नितान्त आवश्यक है जिसके आधार पर मानव जीवन का उद्देश्य, गौरव, सदुपयोग एवं व्यवहार समझा जा सके और उसे दैनिक व्यवहार में कैसे उतारा जाय यह सीखा जा सके। इसके लिए ऐसे प्रशिक्षण की अनिवार्य आवश्यकता है जिससे व्यक्तिगत जीवन की असंख्य समस्याओं को सुलझाने और प्रगति पथ पर वस्तुतः बढ़ चलने का मार्ग प्रशस्त हो सके। इसे हेतु संजीवनी विद्या की सर्वांगपूर्ण शिक्षा व्यवस्था का प्रबंध करना पड़ेगा।

कल्पना –

हमारे मस्तिष्क में एक ऐसे विश्वविद्यालय की कल्पना है जिसमें चार वर्ष का पाठ्यक्रम हो। उसमें मानव जीवन की प्रत्येक कठिनाई को हल करने और हर परिस्थिति के व्यक्ति को अपने ढंग से आगे बढ़ने के लिए जो भी मार्गदर्शन आवश्यक हो, वह सब उस अवधि में सिखा दिया जाय। बिगड़े हुए स्वास्थ्य को कैसे सुधारा जाये और सुधरे स्वास्थ्य को कैसे बढ़ाया जाय इस सम्बन्ध में शरीर की भीतरी और बाहरी जानकारी चिकित्सा, परिचर्या, आहार, व्यायाम आदि प्रत्येक स्थिति के उपयुक्त परिपूर्ण जानकारी कराई जाय। खेलकूद, शस्त्र संचालन, तैरना, घुड़सवारी आदि सभी बातें उस शिक्षार्थी को भली–भाँति अभ्यास में रहनी चाहिए। मानसिक स्वास्थ्य की रक्षा के लिए चिन्ता, भय,निराशा, शोक, आवेश, उत्तेजना, ईर्ष्या, कुढ़न, अहंकार आदि कुविचारों से बचने और यदि उनके अभ्यास में आ गये हों तो उन्हें किस प्रकार हटाया जाय इसकी मनोविज्ञान के अनुरूप ऐसी विधियाँ बताई जाएँ जिनसे मानसिक दुर्गुणों का सरलतापूर्वक समाधान हो सके। इसी प्रकार स्वभाव में मधुरता, सहनशीलता, नम्रता, सज्जनता का समावेश कैसे हो और आशा, उत्साह, साहस, धैर्य, दूरदर्शिता, उदारता, संयम, नियमितता जैसे श्रेष्ठ गुण कैसे अभ्यास में आएँ इसका क्रियात्मक साधन कराके शिक्षार्थी को इस योग्य बनाया जाय कि उसे मनस्वी एवं श्रेष्ठ पुरुषों की श्रेणी में गिना जा सके।

इन्द्रियाँ जहाँ हमारे लिए अभिन्न मित्र हैं, वहाँ असंयत होने पर वे शत्रु का रूप धारण कर लेती हैं। स्वास्थ्य को नष्ट और मन को उद्विग्न करके मनुष्य को किसी काम का नहीं छोड़ती। असंयत जिह्वा इन्द्रिय और कामन्द्रिय ने कितने होनहारों को धूल चाटने के लिए विवश कर दिया इसकी बड़ी विषम करुण कथा है। इन्द्रियों के उफान को कैसे रोका जाय और संयमी रहकर कैसे तेजस्वी, मनस्वी बना जाय इसका उपायों समेत विधान जानकर कोई उस मार्ग पर चले तो गृहस्थ रहकर भी योगी–तपस्वियों की तरह तन और मन से परिपुष्ट बना जा सके।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समय का वर्गीकरण, विभाजन, दिनचर्या, कार्यक्रम एवं व्यवस्था बनाकर एक–एक क्षण का कैसे सदुपयोग किया जाय, जिससे महापुरुषों की भाँति इन 24 घण्टों में ही इतनी प्रगति की जा सके कि दूसरों को जादू एवं दैवी वरदान की तरह प्रतीत हो। हर वस्तु की उचित व्यवस्था रखी जाय तो वह बहुत दिन टिकेगी और सुन्दर रहेगी। धन को बजट बनाकर खर्च किया जाय, एक–एक पाई के सदुपयोग का ध्यान रखा जाय तो कम आमदनी में भी बहुत व्यवस्थित, संतुष्ट एवं विकसित जीवन जिया जा सकता है। फिजूलखर्ची को परले सिरे की मूर्खता मानकर उसे कठोरतापूर्वक रोकना ही बुद्धिमानी है। सफाई, सुन्दरता का सबसे सस्ता, सरल और श्रेष्ठ तरीका है। शरीर, वस्त्र, मकान, सामान आदि सभी को स्वच्छ, सुन्दर और कलात्मक रखा जाय तो अभिनव आकर्षण इन्हीं अपनी दैनिक वस्तुओं में से फूट पड़ेगा। इन तथ्यों को कई लोग जानते तो हैं, पर उन्हें स्वभाव का अंग नहीं बना पाते। चाहते तो हैं कि हम इस प्रकार के बनें, पर वैसा हो नहीं पाता। प्रस्तावित विश्वविद्यालय में इन सभी विषयों को मनोविज्ञान, शरीर शास्त्र, समाजशास्त्र, नीति एवं विज्ञान के आधार पर ऐसा प्रशिक्षण दिया जाय कि व्यक्तित्व को श्रेष्ठ बनाने के मार्ग की बाधाओं को आसानी से हल किया जा सके।

आस्तिकता को भिखमंगापन का आडम्बर रचने की वस्तु न रहने देकर आत्मा को महानात्मा परमात्मा बनने की, नर को नारायण रूप में परिणत करने की प्रचंड प्रक्रिया बनाया जा सकता है। पर आज तो वह उतने विकृत रूप में है के पूजा पाठ करने वालों की मानसिक एवं अन्य प्रकार की स्थिति और भी गई बीती होती है जब कि होना यह चाहिए था कि उपासना करने वाले का आत्मबल दूर से ही चमकता और वे स्वभावतः दूसरे लोगों की अपेक्षा अधिक उत्कृष्ट दृष्टिगोचर होते। पर वे वैसे होते नहीं इससे यही सिद्ध होता है कि उनकी आस्तिकता असली नहीं नकली है। असली आस्तिकता का स्वरूप और साधन सीखा जा सके, ऐसी शिक्षा को जिस विद्यालय में सिखाया जा सके वह निश्चय ही बहुत महत्वपूर्ण हो सकता है।

वासना, तृष्णा, आलस्य एवं पाप–तापों से मुक्त जीवन ही परलोक में मुक्ति का माध्यम बन सकता है। जिसने उस लोक में अपने लिए स्वर्गीय परिस्थितियाँ बना लीं, उस लोक में ही स्वर्ग प्राप्ति के अधिकारी होंगे। देवताओं के अनुग्रह के अधिकारी वे बनेंगे जो देवताओं के अनुमोदित मार्ग पर चल रहे होगें। ईश्वर की कृपा उन्हें मिलेगी जिन्होंने घट–घट वासी परमात्मा के प्रति अपनी श्रद्धा और सद्भावनाओं का परिचय दिया होगा। उपासना में कर्मकाण्ड नहीं आन्तरिक शुद्धि की प्रधानता मानी जाती है। इन तथ्यों को यदि भली प्रकार समझा जा सके तो परलोक बनाने के इच्छुक सद्गति पाने के अभिलाषी भ्रम जंगलों से निकलकर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उस मार्ग पर चलें जिस पर चलने से वस्तुतः आध्यात्मिक प्रगति का आनन्द मिल सकता है। ऐसा सद्ज्ञान ही किसी को अध्यात्म के प्रत्यक्ष सत्परिणामों से समुचित रीति से लाभान्वित कर पायेगा। इस अभाव की पूर्ति के लिए शास्त्रों और ऋषियों की आदि परम्पराएँ जिस विद्यालय में सिखाई जाएँ उसी से अध्यात्मवाद की सच्ची सेवा बन पड़ेगी।

माता–पिता और वयोवृद्धों का सम्मानपूर्ण परिपालन, भाई–बहिनों के प्रति राम–भरत जैसा स्नेह जिस घर में न रहे उसे प्रेत–पिशाचों का निवास, श्मशान ही कहा जाएगा। गृहस्थ का स्वग्र वहीं है जहाँ पति–पत्नी के बीच अटूट विश्वास, स्नेह, सद्भाव रहता है। एक दूसरे के पूरक अंग बनकर रहते हैं और एक दूसरे की त्रुटियों को निबाहते हुए उसे उदारता, क्षमा, सहिष्णुता एवं सहायता की भावना रखते हुए ऊँचा उठाने और आगे बढ़ाने का प्रयत्न करते रहते हैं। जिस घर की अर्थ व्यवस्था पर पत्नी का नियंत्रण रहता है उस घर की लक्ष्मी कभी विदा नहीं होती। जहाँ मतभेद के कारणों पर खुले मन से विचार विनिमय होता रहता है और समस्याओं को सुलझाने के लिए समाधान किये जाते रहे हैं वहाँ न तो मनोमालिन्य रह सकता है और न असंतोष पनप सकता है। जिन घरों में मुस्कान, विनोद, आशा और उत्साह की धाराएँ चेहरों पर थिरकती रहती है वहाँ कोई भी अभाव अखरता नहीं, बालकों का शरीर तो माता–पिता के शरीरों में से बनता ही है साथ ही उनका मन, स्वभाव एवं आदर्श भी बहुत कुछ उन्हीं की मनोभूमि में से बन जाता है। पाँच वर्ष की उम्र तक बालक अपने स्वभाव और संस्कारों का आधा भाग परिपक्व कर चुका होता है। उसे यह शिक्षण किसी प्रवचन से नहीं, वरन् अभिभावकों के स्वभाव–संस्कारों से उपलब्ध होता है। इसलिए विचारशील माता–पिता का कर्तव्य हो जाता हे कि वे आहार–विहार, पालन–पोषण का व्यावहारिक ज्ञान तो रखें ही अपने आपको उन सद्गुणों से सम्पन्न भी करें जिन्हें बालकों में देखने की उनकी इच्छा है। संतुति का निर्माण अपने आप में एक अत्यन्त विशद्, गम्भीर और महत्वपूर्ण विकास है। इसकी जानकारी न होने से कुसंस्कारी सन्तान से प्राप्त होने वाले दुःखों को अभिभावक भोगते हैं और अपनी नादानी का पश्चाताप मरते–मरते तक करते रहते हैं। कोई विद्यालय यदि गृहस्थ को स्वर्ग की तरह रचना कर सकने की शिक्षा दे सके तो निःसंदेह उससे पृथ्वी पर स्वर्ग के अवतरण की भूमिका ही प्रस्तुत हो सकती है।

चारों ओर फैली हुई धृष्टता को सहन नहीं किया जा सकता है। भलमनसाहत को कमजोरी मानकर गुण्डागर्दी और भी पनपती है इसलिए उसके शमन के लिए संघर्ष भी आवश्यक है। सरकार ने कानून, पुलिस, न्यायालय, जेल, फाँसी आदि की व्यवस्था दष्टता से निपटने के लिए बनाई है, पर इतना ही पर्याप्त नहीं, जनता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

को भी उससे निपटने का संघर्ष करना होता है। अन्यथा वह कानून की पकड़ से बचकर आतंक के सहारे अपनी जड़ जमाये बैठी रहती है। दुष्टता के विरूद्ध संघर्ष का भी, सीमा–शत्रुओं से लड़ने की तरह एक विशेष युद्ध शास्त्र है जिसमें साम, दाम, दण्ड, भेद के चारों हथियार प्रयोग करने पड़ते हैं। इस युद्ध विद्या की जानकारी ने होने पर गुण्डों को परास्त करना कठिन पड़ता है। जीवन विद्या में यह ज्ञान भी एक महत्वपूर्ण स्थान रहता है। इसलिए उसका प्रशिक्षण भी आवश्यक है।

इनके अतिरिक्त भी अनेक विषय ऐसे हैं जिनकी शिक्षा उस व्यक्ति को प्राप्त करनी चाहिए जो मनुष्य जीवन को सार्थक बनाने का इच्छुक हो। ऐसा एक विश्वविद्यालय देश में होना ही चाहिए जो सच्चे मनुष्य, बड़े मनुष्य, महान मनुष्य, सर्वाणपूर्ण मनुष्य बनाने की आवश्यकता पूर्ण कर सके। माना कि आज हर आदमी अपने बच्चों को नौकरी कराने के लिए पढ़ाता है। सरकारी डिग्रियों का ही कुछ मूल्य माना जाता है। फिर भी ऐसे समझदार लोग अभी दुनिया में बाकी हैं जो यह सोचते हैं कि उनका बालक यदि मानवीय गुणों से सम्पन्न हुआ तो किसी भी प्रकार अपनी आजीविका उनसे अच्छी तरह कमा लेगा तो ग्रेजुएट बनने के बाद तरक्की करते हुए सड़ी–गली जिन्दगी बिताते रहते है। फिर कुछ लोग ऐसे भी तो हैं जिनके पास कृषि, उद्योग आदि ऐसे काम मौजूद हैं जिन्हें करते हुए उनके बच्चे सुविधापूर्वक निर्वाह कर सकें। इस प्रकार के लोग तो यह संजीवनी शिक्षा का प्रशिक्षण अपने बच्चों के लिए उपयोगी समझ ही सकते हैं।

सोचा यह जा रहा है कि 16 से 20 वर्ष तक के किशोरों को चार वर्ष तक उपरोक्त शिक्षा दी जाय। यही आयु बनने–बिगड़ने की होती है। यह चार वर्ष जो निर्माण का शिक्षण प्राप्त करते और उसके उपयुक्त वातावरण में रहते हुए बिता लेगा वह अपने परिवार के लिए, समस्त समाज के लिए आशा का केन्द्र ही बनकर निकलेगा। 16 वर्ष की आयु में आमतौर से जूनियर हाईस्कूल–मिडिल तक की शिक्षा पूरी हो जाती है। इससे आगे को भाषा, गणित, इतिहास, संस्कृत, अंग्रेजी, साइंस, व्यापार, कानून, लेखन, भाषण, व्यायाम, सामान्य ज्ञान का ऐसा पाठ्यक्रम हो जो जीवन में काम आने वाले विविध विषयों का इतना ज्ञान करा सके जो वर्तमान बी.ए. स्तर की अपेक्षा कम नहीं, वरन् बढ़कर ही हो।

शिक्षा की फीस न हो। खाने–पीने का खर्च छात्र स्वयं उठाएँ। विद्वान् वानप्रस्थी निःशुल्क रूप से शिक्षा का कार्य करें। छात्रों के रहन–सहन और आचार–व्यवहार पर सर्वोपरि ध्यान रखा जाय। जीवन विद्या के हर पहलू पर गहरा अध्ययन करने के बाद शिक्षाक्रम पूरा कर लेने पर यह छात्र बीस वर्ष की आयु में अपने घर का काम सँभालेंगे तो उनसे उनका परिवार एवं कारोबार चमक उठेगा। यदि वे इस विश्वविद्यालय से संबंधित देशव्यापी अगणित विद्यालयों में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अध्यापक का काम करना चाहेंगे तो भी उनकी आवश्यकता रहेगी ही। इस प्रकार सरकारी डिग्री से वंचित रह जाने पर भी जीवन विद्या विश्वविद्यालय में चार साल तक पढ़े हुए छात्रों का यह शिक्षण निरर्थक गया हुआ न समझा जाएगा।

सैद्धान्तिक और व्यवहारिक—थ्योरी और प्रेक्टिकल का सर्वांणपूर्ण पाठ्यक्रम बनाना होगा। उसके लिए ग्रन्थों का चुनाव तथा शिक्षण पद्धति और प्रणाली का निर्माण करने की आवश्यकता होगी। कार्य कठिन है पर उसके किए बिना कोई गति नहीं। सरकार ऐसी प्रणाली आसानी से बना सकती थी पर उससे आज की परिस्थितियों में कुछ विशेष आशा नहीं की जा सकती। फिर कभी जरूरी नहीं कि हर कार्य सरकारी ही हो। गैर सरकारी क्षेत्र भी बहुत कुछ कर सकते हैं। संजीवनी विद्या की शिक्षा का एक सर्वांगपूर्ण विश्वविद्यालय 'अखण्ड ज्योति परिवार' भी चला सकता है। इसके लिए धन की नहीं भावनाओं की आवश्यकता है। भावनापूर्ण परिजन यदि चाहेंगे तो यह शिक्षण पद्धति एक स्थान से आरम्भ होकर देशव्यापी रूप में विस्तृत होकर युग निर्माण के उपयुक्त वातावरण उत्पन्न करने में सहायक सिद्ध हो सकेगी।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

विश्वविद्यालय का शुभारंभ –

यह विश्वविद्यालय परम पूज्य गुरूदेव वेदमूर्ति तपोनिष्ठ युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के दिव्य स्वप्न का मूर्त रूप है। लगभग पाँच दशाब्दी पूर्व उन्होंने एक ऐसे विश्वविद्यालय का स्वप्न संजोया था जो नालन्दा और तक्षशिला के स्तर का हो। जहाँ ऐसे महामानवों—देवपुरुषों की पौध तैयार की जा सके जो समाज, राष्ट्र और विश्व के लिए श्रेष्ठतम नागरिक, समर्पित सेवक और प्रखर राष्ट्रभक्त की भूमिका निभा सके। जहाँ से कौडिण्य और कुमारजीव सरीखे विद्यार्थी निकलें, जो देश की धरती और विश्व वसुन्धरा में देव संस्कृति की संवेदना का विस्तार कर सकें। जहाँ के आचार्य और विद्यार्थी मिलकर एक नये युग को जन्म दे सकें।

इन गौरवपूर्ण स्थापना का बीजारोपण तब हुआ जब परम वन्दनीय माता जी ने इस भूमि के दिव्य संस्कारों को पहचाना। वर्ष 1990 में श्रद्धांजलि समारोह के समय माता जी जब इस भूखण्ड पर गई तो उन्हें कुछ दिव्य अनुभूतियाँ हुई, उन्होंने कहा कि यह भूमि बहुत ही जागृत और दिव्य संस्कारों से भरी—भरी है तभी से माननीय डॉ. प्रणव पण्ड्या और श्रद्धेया जीजी के मार्गदर्शन में वेदमाता गायत्री ट्रस्ट द्वारा इस भूमि को क्रय करने के विषय में सोचा जाने लगा। बाद के वर्षों में इस भूमि के क्रय करने की व्यवस्था बनी और 23 मई 1999 को ब्रह्मलीन स्वामी कल्याणदेवी जी महाराज, निवर्तमान जगतगुरू स्वामी सत्यमित्रानन्द गिरी जी महाराज, स्वामी अवधेशानन्द गिरी जी, मुनी चिदानन्द जी, प्रो.के.के. अग्रवाल,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कुलपति, इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय, दिल्ली तथा स्व. श्री नरेन्द्र मोहन, सांसद एवं सम्पादक, दैनिक जागरण प्रभृति अनेक राजनीतिज्ञों, संतों एवं शिक्षाविदों की गरिमामयी उपस्थिति में इसका वैदिक विधि–विधान से भूमि पूजन सम्पन्न हुआ।

परिसर निर्माण कार्य– विश्वविद्यालय भवन देव संस्कृति के साधना मंन्दिर हैं। इसे ध्यान में रखकर ही भवनों का निर्माण और विकास किया गया। सर्वप्रथम 4065 वर्गमीटर में शैक्षणिक भवन बनकर तैयार हुआ, जिसमें 30 बड़े कक्ष हैं तथा एक बहुउद्देश्यीय विशाल कक्ष है।

1387 वर्ग मीटर में एक विशाल भण्डार गृह है। तीन मंजिले इस भवन में सामान चढ़ाने–उतारने के लिए अत्याधुनिक लिफ्ट लगी हुई है। छात्रावास भवन 7035 वर्गमीटर में फैला है। तीन मंजिले इस भवन में 72 डोरमेट्री हैं जिनमें प्रत्येक में 8 छात्रों के रहने की सुविधा है। साथ ही 4 विशालकाय कक्ष हैं, जिनमें 2 में मैस है तथा शेष 2 विभिन्न कार्यक्रमों के उपयोगार्थ हैं। इन विशाल कक्षों के नीचे अद्योभूतल पर एक दीर्घकाय व्यायामशाला बनाई गई है।

इसके अतिरिक्त 8597 वर्गमीटर में आवासीय भवन निर्मित किए गये हैं। इनमें 129 फ्लैट्स हैं, जिनमें 1 कमरे के 48, 2 कमरे के 54 तीन कमरे के 18 और चार कमरे वाले 9 फ्लैट्स हैं।

www.vicharkrantibooks.org

इसी के साथ 1221 वर्गमीटर में पाँच मंजिला मुख्य ग्रंथागार निर्मित किया गया है, जिसका उद्घाटन श्रद्धेय कुलाधिपति डॉ. प्रणव पण्ड्या जी द्वारा 16 जुलाई, 2004 को सम्पन्न किया गया है। इस भवन के ऊपर एक वेधशाला का निर्माण प्रस्तावित है।

ग्रन्थागार के निकट ही 18 कक्षों का तीन मंजिल का एक सुन्दर अतिथि भवन निर्मित किया गया है। प्रत्येक कक्ष में दो लोगों के ठहरने की समुचित व्यवस्था है।

देव संस्कृति महाविद्यालय के रूप में विश्वविद्यालय का बीजारोपण–

16 जुलाई, 2001 को देव संस्कृति महाविद्यालय में पठन–पाठन का श्रीगणेश हुआ। इसे हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर से सम्बद्ध रखा गया तथा चार विषयों में स्नातकोत्तर कक्षायें प्रारम्भ की गई। इनमें प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व में एम. ए. दर्शनशास्त्र में एम.ए. नैदानिक मनोविज्ञान में एम.ए. तथा योग विज्ञान में एक वर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा की कक्षाएं शुरू की गई।

अभी यह महाविद्यालय मात्र 6–7 माह का शिशु ही था कि उत्तरांचल के महामहिम राज्यपाल महोदय ने एक अध्यादेश जारी करके देव संस्कृति विश्वविद्यालय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

को स्वीकृति प्रदान कर दी। उत्तरांचल विधानसभा ने सर्वसम्मति से देव संस्कृति विश्वविद्यालय विधेयक 2002 पर अपनी स्वीकृति की मोहर लगा दी। जिसे महामहिम राज्यपाल ने 11 अप्रैल 2002 को अपनी अनुमति प्रदान की। इस प्रकार देव संस्कृति विश्वविद्यालय विधायी रूप से अस्तित्व में आ गया जिसे 24 जुलाई, 2002 को व्यावहारिक रूप से पठन–पाठन प्रारम्भ कर मूर्त रूप दिया गया। इसका वित्त व्यवस्था प्रशासन वेदमाता गायत्री ट्रस्ट शांतिकुंज के अधीन है। विश्वविद्यालय स्वपोषित है। यू.जी.सी. अथवा शासन के किसी भी स्तर से यहाँ कोई अनुदान नहीं लिया जाता। छात्रों से भी यहाँ कोई शिक्षण शुल्क नहीं लिया जाता। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि महामहिम राज्यपाल उत्तरांचल ने अपने अधिकार का प्रत्यायोजन कर डॉ. प्रणव पण्ड्या जी को इस विश्वविद्यालय का कुलाधिपति बनाना स्वीकार किया।

देव संस्कृति के प्रणेता ऋषियों की परम्परा को जीवन्त जागृत करने के लिए शिक्षण की चार धाराएँ, चार संकायों–साधना, स्वास्थ्य, शिक्षा और स्वावलम्बन द्वारा प्रवाहित हुई। प्रारम्भ में वर्तमान में निम्नलिखित 10 पाठ्यक्रम चलाये गये –

	पाठ्यक्रम का नाम	अवधी	सीट
1.	एम.ए./एम.एस–सी. नैदानिक मनोविज्ञान	2 वर्ष	30
2.	एम.ए/एम.एस–सी. मानवीय चेतना एवं योग विज्ञान	2 वर्ष	30
3.	एम.ए. भारतीय संस्कृति एवं पर्यटन प्रबंधन	2 वर्ष	30
4.	पी.जी. डिप्लोमा–मानवीय चेतना एवं योग विज्ञान	1 वर्ष	30
5.	पी.जी. डिप्लोमा–बायो–मेडिकल सिस्टम्स	1 वर्ष	20
6.	पी.जी. डिप्लोमा–बायो–इन्फॉर्मेटिक्स	1 वर्ष	30
7.	सर्टीफिकेट कोर्स–मानवीय चेतना एवं योग विज्ञान	6 माह	30
8.	सर्टीफिकेट कोर्स–ग्राम प्रबन्धन	6 माह	30
9.	सर्टीफिकेट कोर्स–समग्र स्वास्थ्य प्रबंधन	6 माह	30
10.	सर्टीफिकेट कोर्स–धर्म विज्ञान	6 माह	40

प्रस्तावित भवन– ऊँ के आकार का एक आयुर्वेद अनुसंधान केन्द्र प्रस्तावित है। इसकी फार्मेसी का तिमंजिला भवन 1423 वर्गमीटर में तैयार हो चुका है। 6044 वर्गमीटर में बनने वाले इस अनुसंधान केन्द्र में आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित प्रयोगशालायें, रोगियों के लिए वार्ड, बाह्य रोगी विभाग, आयुर्वेद प्रदर्शनी एवं आयुर्वेद ग्रंथालय के कक्षा होंगे।

इसके साथ ही प्रशासनिक भवन एवं सभागार (प्रेक्षागृह) है। दो मंजिला

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रशासनिक भवन 1162 वर्गमीटर में बनाया गया है, जिसमें स्वागत कक्ष, दूरभाष केन्द्र, कम्प्यूटर नेटवर्क, सूचना कक्ष, लेखा व मुख्य कार्यालय है। सभागार 1159 वर्गमीटर में आधुनिक सुविधाओं से युक्त है।

2040 वर्गमीटर में एक स्वावलम्बन संकाय भवन है, जिसमें प्रशिक्षण कक्ष, प्रयोगशाला, प्रदर्शनी एवं कार्यशाला है। मुख्य परिसर में 536 वर्गमीटर में एक विराट ध्यान कक्ष बनाये जाने का प्रस्ताव है। साथ ही 358 वर्गमीटर में एक यज्ञशाला भी स्थापित है।

विदेशों में माननीय कुलाधिपति जी के महत्वपूर्ण कार्यक्रम

2000

29 मई 2000, 2 जून इंग्लैण्ड में जागरण रथ यात्रा का शुभारम्भ लीस्टर शहर में। प्रजापति हॉल में प्रथम पूजन के समय उद्‌बोधन में कहा पात्रता का विकास ही साधना है। जप, ध्यान आदि इसी के निमित्त साधन हैं। शक्ति कलश को श्रद्धांजलि अर्पित करने का तात्पर्य है हम अपनी पात्रता बढ़ाएँ। लेस्टर कौंसिल ऑफ फेथ के प्रीस्ट डेविड क्लाई से मुलाकात। जर्मन स्ट्रीट में यूथ वार्ता एवं 1 जून को वेस्ट एण्ड लंदन स्थित यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन में सेमिनार। 200 विद्यार्थियों के बीच सांइस एण्ड स्प्रीच्यूअलिटी पर उद्‌बोधन। उन्होंने छात्राओं को बताया कि अध्यात्म मूढ़ मान्यताओं और अंधविश्वासों का पिटारा नहीं, बल्कि विज्ञान सम्मत दर्शन है।

15 जून से, हिन्दू मंदिर कल्चरल सेंटर प्रोफेशनल रोड पर गायत्री माता की प्राण प्रतिष्ठा श्रद्धेय डॉ. साहब द्वारा। अपसर्ग ऑफ इंडियन कल्चरल एण्ड रोल ऑफ यूथ विषय पर 500 युवाओं के बीच उद्‌बोधन। टोनी क्लेमेंट एवं कंसुलर जनरल श्री भंडारी की उपस्थिति। शिकागों में महापूर्णाहुति आयोजन। भवय दीपयज्ञ। मानव सेवा मंदिर के मुख्य कन्वेन्शान सेंटर में सम्पन्न यह आयोजन। टीचिंग ऑफ वेदान्त एण्ड उपनिषद्, स्ट्रेस मैंनेजमेंट, आर्ट ऑफ लिविंग, हर्वल हीलिंग विषय पर उद्‌बोधन। शक्तिमंदिर में 8–9 जुलाई को महापूर्णाहुति आयोजन। 5000 व्यक्तियों की भागीदारी अटलांटा में। 24000 दीपको का दीप महायज्ञ। श्रद्धेय डॉ.साहब ने ध्यान के प्रकार, जप के साथ ध्यान, ध्यान से चिकित्सा, रंगोपर ध्यान आदि रोचक विषयों पर मार्मिक उद्‌बोधन भी दिया।

2001

15 जून 2001, गायत्री सांइटिफिक एक्स्पो 2001 के मुख्य अतिथि। 15 हजार लोगों की सहभागिता। 19 सेमिनार–151 कुण्डीय यज्ञ, भव्य दीप महायज्ञ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मिशिगन स्टेट डेट्राइट में 12 से 14 जून गायत्री महोत्सव 'सफलता के कारण' विषय पर उद्‌बोधन। लगभग 4000 लोगों की सहभागिता।

6 जुलाई 2001—मिलान इटली मे, केमोना के गुरुद्वारे में। भारतीय संस्कृति की व्याख्या। 400 परिजनों की उपस्थिति। सुदृढ़ ईश्वर विश्वास, आदर्शों के प्रति आस्था और गुरुकार्यों में गहरी लगन उस श्रद्धा के परिचायक हैं, जो सद्‌गुरु पानके सौभाग्य को सार्थक बनाती है। गायत्री परिवार इटली की स्थापना। मिलान के आदर्श हिन्दू समिति में दीपयज्ञ 700 लोगों की उपस्थिति भारतीय संस्कृति की महानता का बोध। कौतोहाल दीपकों से जगमगा उठा।

22 अगस्त—विश्व हिन्दू परिषद् ऑफ अमेरिका द्वारा आयोजित विश्व धर्म प्रसार यात्रा का शुभारम्भ श्रद्धेय डॉ. साहब द्वारा वाशिंगटन डी.सी. में। उद्‌बोधन में भारत की गौरवशाली संस्कृति का मार्मिक चित्रण किया। उन्होंने संत—शहीद—सुधारकों की भूमि बताते हुए कहा कि इस गौरवशाली भूमि ने अपनी संतानों को फिर पुकारा है। 5000 लोगों की उपस्थिति थी। यही कार्यक्रम शिकागों के मानव सेवा मंदिर में ढ़ाई हजार लागों के बीच एवं टोरण्टो के ओकविल हिन्दू टेम्पल में 2000 लोगों के बीच हुआ।

27 अगस्त, 'गायत्री चेतना केन्द्र' का लोकार्पण कुलाधिपति द्वारा बोल्टन में 108 कुण्डीय यज्ञ के साथ। वेदान्त और गीता पर मनन करने योग्य व्याख्या। 300 लोगों ने दीक्षा ली। 200 युवकों को ध्यान का एवं योग का अभ्यास। लीस्टर में लार्ड मेयर जान की उपस्थिति। अल्टरनेटिव मेडिसिन पर उद्‌बोधन।

2002

13 सितम्बर से 19 सितम्बर, गोल्डर इरा ग्रुप ऑफ कम्पनीज द्वारा मखवासी में 108 कुण्डीय यज्ञ एवं बक्स लेमिनेक फलेम्मो ग्राफिक मशीन का उद्‌घाटन। 5000 लोगों की उपस्थिति। श्री भूलाभाई के यज्ञीय पुरुषार्थ की सराहना करते हुए कहा – साउथ अफ्रिका के परिजन 'लवेबल प्यूपिल' हैं। 1992 एवं 2002 के दक्षिण अफ्रिका में भारी परिवर्तन आ गया है। अब गोरों का नहीं सबका स्वराज्य है। पाटीदार सोसायटी के श्री भारत शादा मंदिर में 5000 बच्चों के बीच उद्‌बोधन हुआ। विषय था 'फिजिकल, मेंटल, स्प्रीच्यूअल फिटनेस'। कन्डोर एवेन्यू के गायत्री आश्रम में गायत्री परिवार की मीटिंग हुई। 200 कार्यकर्त्ता उपस्थित थे।

2003

13 मार्च से 30 मार्च – इंग्लैण्ड प्रवास। लीस्टर—गायत्री चेतना केन्द्र में कार्यकर्ता गोष्ठी 300 परिजनों की उपस्थिति। पूर्वी लंदन में प्रज्ञा मण्डल की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्थापना। 17 मार्च को इंग्लैण्ड में होलिका दहन, बुराई की होली। 500 लोगों की उपस्थिति डीवीसी का एक अंग एमटीवी में इण्टरव्यू लाइव प्रसारित। जनरल प्रेक्टिशनर्स के बीच होलिस्टिक हेल्थ एवं हर्बल हीलिंग विषय पर उद्बोधन। 200 लोगों की उपस्थिति।

08 मई से 26 मार्च 2003 – आकलैण्ड–न्यूजीलैण्ड में माउन्ट एवरेस्ट विजेता सर एडमण्ड हिलेरी से मुलाकात। लगभग डेढ़ घण्टे तक देव संस्कृति विश्वविद्यालय के बारे में चर्चा। उन्हें मिशन की पुस्तकें भेंट की। उन्होंने कहा – 'भारत' शब्द में पवित्रता एवं आध्यात्मिकता की अनुभूति होती है।

भारत भवन हॉल वेलिंगटन में 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ में उद्बोधन 2000 लोग उपस्थित थे। उन्होंने कहा – 100 वर्षों बाद यह प्रवास नई प्रेरणा लेकर आया है। न्यूजीलैण्ड शांत देश है, शांतिप्रियता का संदेश अन्य देशों में जाना चाहिए। इंडीयन कल्चरल सोसायटी लोवरहट में दीपयज्ञ हुआ। सिटी मेयर जॉन टेरिस उपस्थित थे। ऑकलैण्ड में कार्यकर्ता गोष्ठी एवं लंदन में ट्रस्टियों से चर्चा हुई। गायत्री चेतना केन्द्र के विस्तार की योजनाएँ बनीं।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

2004

26 अगस्त से 9 सितम्बर 2004 अन्तर्राष्ट्रीय योग सम्मेलन में डॉ. प्रणव पण्डया विशिष्ट अतिथि। यौगिक साइंस एण्ड कम्प्लीमेण्टरी मेडिशिन सिस्टम विषय पर उद्बोधन। 'योग' 'स्व' का विश्व ब्रह्माण्ड में समर्पण। अस्टांग योग के बिना अधूरी। पंचकोष, षटचक्र, नाड़ी, पंचप्राण की व्याख्या। प्रतिभागीगणों में विवेकानन्द केन्द्र बंगलोर के एच.आर. नागेन्द्र एवं कैंसर चिकित्सा विज्ञानी इयान गावलर। श्री राजकुमार वैष्णव पूरे प्रवास में थे। विवेकानंद योग इंस्टीट्यूट द्वारा आयोजित यह कार्यक्रम। यूनिवर्सिटी ऑफ सिडनी एवं यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नालॉजी सिडनी में स्ट्रेस मैनेजमेंट पर वर्कशाप। 50 प्रतिभागीगण। गायत्री परिवार आस्ट्रेलिया की स्थापना। सितम्बर–अक्टूबर 2005 में सम्पन्न होने वाले अश्वमेध महायज्ञ सिडनी की भूमिका। 24 स्थानों पर 24 उद्बोधन। मेडिशिनल इफेक्ट ऑफ मेडिटेशन एण्ड योगा, बेनेफिट ऑफ मेडिटेशन एण्ड योगा, इम्पारटेन्स ऑफ योग।

29 जुलाई से 18 अगस्त 2004 इंडियन कल्चरल सोसायटी न्यूजर्सी (गाधी नगर वेन) में 108 कुण्डीय यज्ञ, गांधी मंदिर का लोकार्पण। इस अवसर पर डॉ. प्रणव पण्ड्या ने यज्ञ का वैज्ञानिक स्वरूप प्रस्तुत किया। लगभग 3000 प्रतिभागीगणों की उपस्थिति रही। 4 से 8 अगस्त को पेन स्टेट यूनिवर्सिटी में 300 अमेरिका भर के युवाओं का यूथ कैम्प आयोजित किया गया। पर्सनल सक्सेज, हर्डल इन एचिविंग सक्सेस, टूल्स एण्ड टेक्निक आइस ब्रेकिंग सेशन हुआ। कुलाधिपति ने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सफलता की व्याख्या करते हुए कहा – सफलता वही सच्ची है जो स्थायी प्रभाव डाल सके। उन्होंने समय, श्रम, तनाव, धैर्य आदि पर सनतुलन स्थापित करने को सफलता की प्रमुख कुंजी बताया।

शिकागो में गायत्री ज्ञान मंदिर में कार्यकर्ता गोष्ठी का आयोजन हुआ। इसमें 300 कार्यकर्ता उपस्थित थे। सेनहोजे अमेरिका के ऑरेकल मुख्यालय में माइण्ड बाडी मेडिशिन–होलिस्टिक हीलिंग विषय पर उद्‌बोधन हुआ। 80 उच्च अधिकारी एक्जीक्यूटिव उपस्थित थे। स्टेट ऑफ कैलिफोर्निया सिटी ऑफ आर्टेसिया के मेयर सैली द्वारा 'स्प्रीच्यूअल लीडर' अवार्ड दिया गया। सेरिशेस परफार्मिंग आर्ट सेंटर में 'अवेकन द इनर स्ट्रेन्थ थ्रू साधना एण्ड स्प्रीच्यूअलिटी' विषय पर उद्‌बोधन हुआ। यही यूथ कांफ्रेंस एवं देव संस्कृति एज्यूकेशन ट्रस्ट की स्थायी सीनेटर कांग्रेस मेन एडवर्ड रायस ने की। यहीं पर 'प्रोफेशनल लीडरशीप' रोल पर उद्‌बोधन हुआ जिसमें 75 चिकित्सक उपस्थित थे।

मनोविज्ञान विभाग –

मनोविज्ञान की स्नातकोत्तर कक्षाएँ विश्वविद्यालय प्रारम्भ होने के साथ 2001 में आरम्भ हुई। इस पाठ्‌यक्रम में कुल मिलाकर 16 प्रश्न पत्र हैं तथा 4 प्रैक्टिकल, दो रिसर्च प्रोजेक्ट एवं एक लघु शोध का प्रवधान है। मनोविज्ञान के पाठ्‌यक्रम में यू.जी.सी. द्वारा संस्तुत पाठ्‌यक्रम को सम्मिलित किया गया है। इसके साथ ही साथ नेट तथा प्रतियोगी परीक्षाओं का समावेश भी पाठ्‌यक्रम में है। इस पाठ्‌यक्रम की विशेषता यह है कि इसके अन्तर्गत आयुर्वेद के चार प्रश्न पढ़ पढ़ाए जाते हैं जिनका सम्बन्ध मानसिक व्याधियों से है। यह इस पाठ्‌यक्रम की विशेषता है जो भारतवर्ष के किसी अन्य विश्वविद्यालय में नहीं पाई जाती। विद्यार्थियों को उन जड़ी–बूटियों का ज्ञान कराया जाता है जिनका उपयोग मानसिक रोगों में लाभकारी है।

मनोविज्ञान विभाग के अन्तर्गत मनोचिकित्सा केन्द्र की स्थापना की गई है जिसमें विद्यार्थियों को मानसिक रोगियों की चिकित्सा सम्बन्धी प्रशिक्षण दिया जाता है। इस मनोचिकित्सा केन्द्र में विभिन्न प्रकार के मानसिक रोगी आते हैं और उनका सफलतापूर्वक उपचार किया जाता है। इस प्रशिक्षण को प्राप्त करने के बाद विद्यार्थी इस योग्य हो जाता है कि वह स्वयं अपना क्लीनिक स्थापित कर मनोरोगियों को उचित परामर्श देकर अपना जीवन यापन कर सके। विद्यार्थियों के पाठ्‌यक्रममें तथा अलग से भी व्यक्तित्व परीक्षण, अभिरुचि परीक्षण, बुद्धि परीक्षण आदि का भी प्रशिक्षण दिया जाता है। विश्वविद्यालय में इसकी भी व्यवस्था है कि विद्यार्थी प्राणिक हीलिंग, योगनिद्रा, रेकी, एक्यूप्रेशर आदि का प्रशिक्षण प्राप्त कर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उनका उपयोग मानसिक चिकित्सा में कर सकें। बच्चों के व्यावहारिक प्रशिक्षण के लिए प्रत्येक वर्ष बच्चों के शैक्षणिक भ्रमण का भी प्रबंध किया जाता है। गत वर्ष मनोविज्ञान विभाग के स्नातकोत्तर छात्र निमहांस, विवेकानन्द योग अनुसंधान संस्थान तथा बंगलौर विश्वविद्यालय गए। वहाँ पर उन्होंने मानसिक रोगियों की विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों को देखा एवं उनका अध्ययन किया।

मनोविज्ञान विभाग में शोध की पूरी सुविधा है। यहाँ पर विद्यार्थी विभिन्न विषयों पर शोधकार्य करने में संलग्न है। विभाग की अपनी बोर्ड ऑफ स्टडीज तथा रिसर्च डिग्री कमेटी है जिनकी सहायता से पाठ्यक्रम को अद्यतन रखा जाता है तथा शोध की दिशाएँ निर्धारित की जाती हैं। अभी केवल इस पाठ्यक्रम को पास कर एक ही बैच निकला है जिसमें 28 विद्यार्थी थे, उन सभी ने इस पाठ्यक्रम को प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किया।

योग विभाग –

योग विभाग के द्वारा समय–समय पर किए गए स्वास्थ्य क्रांति–नैतिक क्रांति व बौद्धिक क्रांति के आयोजन व शैक्षणिक भ्रमण व राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता व अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में योगदान किया गया है जिसकी संक्षिप्त रूप रेखा इस प्रकार है–

जनवरी 2004 – 10 से 14 जनवरी 2004 अंतर्विश्वविद्यालयीन योग प्रतियोगिता टी.सी.बी. विश्वविद्यालय भागलपुर (बिहार) में छात्र (7) व छात्राओं (7) के साथ श्री सुरेश वर्णमाल (टीम प्रबंधक), श्री अमृतलाल गुरवेन्द्र (छात्र प्रशिक्षक) एवं सुश्री सरस्वती रतूड़ी (छात्रा प्रशिक्षक)। इसी माह में एस.सी.ई.आर.टी. विशेष प्रशिक्षण में सहभागी को योग और स्वास्थ्य व एकाग्रता व ध्यान पर उद्‌बोधन व योग आसन क्रिया का प्रशिक्षण दिया।

फरवरी 2004 – इस माह में अन्तर्राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग संगोष्ठी सूर्या फाउंडेशन, झिझोली 23 से 25 फरवरी तक श्री सुरेश वर्णवाल एवं सुश्री सरस्वती रतूड़ी के साथ 17 छात्र–छात्राओं ने भागीदारी की। 22वीं राष्ट्रीय योग प्रतियोगिता – विजय श्री महल अन्नानगर, चेन्नई में श्री सुरेश वर्णवाल के निर्देशन में 12 छात्रों में 6 चयनित एवं 4 छात्रों ने भागीदारी की।

मार्च 2004 – महाशिवरात्री के दिन योग विभाग के छात्रों के निर्देशन में कुरीति उन्मूलन व सत्प्रवृत्ति संवर्द्धन हेतु प्रज्ञेश्वर महाकाल प्रांगण से अनन्तपुर (रुड़की) तक साईकिल यात्रा निकाली गई।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अप्रैल 2004 – 10 से 12 तक ओसवाल नग, शाहजहाँपुर उ.प्र. में योग शिविर का आयोजन किया गया।

मई 2004 – 29 मई 2004 गायत्री जयंती के दिन 'योग चिकित्सा संदर्शिका' पुस्तक का विमोचन कुलाधिपति श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी व श्रद्धेय शैल दीदी के कर कमलों से हुआ। 20 से 27 मई 2004, गोपेश्वर, चमोली, उत्तरांचल में योग शिविर का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

जून 2004 – विश्वविद्यालय में योग चिकित्सा श्रृंखला का आयोजन विभिन्न बीमारियों पर 1 जून से 28 जून तक सम्पन्न हुआ। 22 जून को सायं 5.00 'युवाओं की समस्या एवं योग' के संदर्भ में 'ऑल इण्डिया रेडियो' पर युवावाणी कार्यक्रम का 'आकाशवाणी–नजीबाबाद केन्द्र' से प्रसारण किया गया। योग विभाग के प्रवक्ता श्री कामाख्या जी ने इस चर्चा में भागीदारी की। 26 से 30 जून तक ब्रजघाट, मुरादाबाद उ.प्र. में योग शिविर कार्यक्रम सम्पन्न किया गया। 3 जून से 8 जून तक एस.सी.ई.आर.टी. के प्रशिक्षण में योग एवं स्वास्थ्य, एकाग्रता एवं ध्यान पर उद्‌बोधन व योग शिविर का आयोजन किया गया।

जुलाई 2004 – 1 से 7 जुलाई तक सम्बल, मुरादाबाद में योग शिविर का आयोजन सम्पन्न हुआ। इन्हीं तारीखों में तेन्दूखेड़ा, नरसिंहपुर में योग शिविर का आयोजन सम्पन्न हुआ। 9 से 14 जुलाई तक शिवपुरी, म.प्र. में योग प्रशिक्षण एवं चिकित्सा शिविर का आयोजन सम्पन्न हुआ। 13 से 18 जुलाई तक एस.सी.आर.ई.टी. के प्रशिक्षण में योग का व्यवहारिक ज्ञान, स्वास्थ्य, एकाग्रता एवं ध्यान पर उद्‌बोधन। 17 से 31 जुलाई तक केन्द्रीय जेल, सागर म.प्र. में योग शिविर का आयोजन सम्पन्न हुआ। जिसको सम्पन्न श्रीरामशंकर दियाबर की टोली ने किया।

अगस्त 2004 – 1 अगस्त से 7 अगस्त तक ठाकुर देवालय, सागर म.प्र. में योग शिविर सम्पन्न हुआ। 2 से 7 अगस्त तक पटियाला, पंजाब में योग शिविर सम्पन्न हुआ। 17 से 8 अगस्त तक बम्बई, रायगढ़ में योग शिविर सम्पन्न हुआ।

सितम्बर 2004 – 28 सितम्बर को योग चिकित्सा संदर्शिका के द्वितीय संस्करण का विमोचन हुआ।

अक्टूबर 2004 – 1 से 2 अक्टूबर में राष्ट्रीय सेमिनार में 'भारत में भ्रष्टाचार उत्पत्ति कारण एवं समाधान' पर उद्‌बोधन। 2 से 8 अक्टूबर तक शुच्चोमंडीह (भटिण्डा, पंजाब) में योग शिविर का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। 9 से 17 अक्टूबर तक गंगसर, जैतीमंडी (फरीदकोट) में योग शिविर एवं योग प्रशिक्षण का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। 10 से 20 अक्टूबर में योग चिकित्सा शिविर विश्वविद्यालय में सम्पन्न हुआ। 15 से 19 अक्टूबर तक फिक्की द्वारा आयोजित विश्वस्तरीय संगोष्ठी में भागीदारी। 19 से 23 अक्टूबर तक फजीलका (फिरोजपुर, पंजाब) में योग चिकित्सा शिविर एवं योग प्रशिक्षण का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। 24 से 30 अक्टूबर तक थर्मल कम्पनी, एन.एफ.एल. कम्पनी (भटिण्डा, पंजाब) में योग ध्यान शिविर एवं चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। जिसे संपन्न कराने की श्री रमाशंकर दियाबर एवं श्री नन्द कुमार पाण्डेय की टोली गई। 21 अक्टूबर को अतर्राष्ट्रीय योग प्रतियोगिता के सहभागी का चयन विश्वविद्यालय में किया गया। 28 अक्टूबर से 29 अक्टूबर तक अन्तर्राष्ट्रीय योग प्रतियोगिता में चयनित छात्र एवं छात्राओं राष्ट्रीय योग प्रतियोगिता कुरुक्षेत्र में भागीदारी की।

भारतीय संस्कृति एवं पर्यटन प्रबंधन विभाग –

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के भारतीय संस्कृति एवं पर्यटन प्रबंधन विभाग द्वारा विद्यार्थियों को आध्यात्मिक पर्यटन की जानकारी एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोण को विकसित करने हेतु नियमित विषय पाठ्यक्रम के अतिरिक्त समय–समय पर प्रदर्शनियों एवं शैक्षणिक भ्रमण योजनाओं का आयोजन किया गया।

www.vicharkrantibooks.org

बसंत पर्व के अवसर पर विभाग की प्रदर्शनी – जनवरी 2004 में बसंत पर्व पर आयोजित प्रदर्शनी में विभाग द्वारा विषय सम्बंधित विभिन्न पहलुओं जैसे भारतीय संस्कृति, इतिहास, पुरातत्व तथा पर्यटन आदि की जानकारी विभिन्न माध्यमों से प्रदर्शित की गई।

पुरातात्विक उत्खनन का प्रयोगात्मक अध्ययन – मार्च 2004 में द्वितीय सेमेस्टर में पाठ्यक्रमानुसार पुरातात्विक उत्खनन प्रणाली की जानकारी प्राप्त करने हेतु विद्यार्थीगण विश्वविद्यालय परिसर से लगभग 12 कि.मी. दूर गढ़ीश्यामपुर (जिला देहरादून) नामक पुरास्थल पर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के इतिहास एवं पुरातत्व विभाग द्वारा कराये जा रहे उत्खनन कार्य को देखने गये। लगभग 222 गुना 150 गुना 10 मीटर आकार के लगभग 3100 वर्ष पूर्व से मध्यकालीन पुरावशेषों को संजोये टीले पर जारी उत्खनन कार्य के माध्यम से सभी विद्यार्थियों ने पुरातत्व विज्ञान के सभी प्रयोगात्मक पहलुओं तथा खदान–विन्यास, उत्खनन तकनीक, स्तर विन्यास, रिकार्डिंग, भृदभाण्ड शाला तथा मृदभाण्ड एवं अन्य पुरावस्तुओं का संकलन, विभाजन एवं अंकन आदि की विस्तृत जानकारी प्राप्त की।

स्थानीय संस्कृति एवं विभिन्न धर्म स्थलों का अवलोकन – जुलाई

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

2004 के अंतिम सप्ताह में विभाग के विद्यार्थियों द्वारा हरिद्वार एवं इसके आस–पास के आध्यात्मिक एवं पर्यटन केन्द्रों पर भ्रमण किया गया। पाठ्यक्रम के अनुरूप विद्यार्थियों द्वारा हरि की पैड़ी, दक्षेश्वर मंदिर विल्वकेश्वर महादेव, सतीघाट, महामाया मंदिर, पार्श्वनाथ जैन मंदिर, सप्तऋषि क्षेत्र, इतिहास एवं पुरातत्व संग्रहालय–गुरुकुल कॉगड़ी विश्वविद्यालय तथा शांतिकुंज आदि का भ्रमण किया गया।

आंचलिक संस्कृति का दर्शन – अक्टूबर 2004 के द्वितीय सप्ताह में तृतीय सेमेस्टर के विद्यार्थियों द्वारा देव भूमि उत्तरांचल के आध्यात्मिक एवं नैसर्गिक सौन्दर्य से भरपूर कुमॉऊ परिक्षेत्र का भ्रमण किया गया। छः दिवसीय शैक्षणिक भ्रमण कार्यक्रम में विद्यार्थियों द्वारा गार्जिया देवी, नैकुचियाताल, सतताल, भीमताल, खुर्पाताल, हनुमानगढ़ी, नैनीदेवी मंदिर, नैनीझील, नैनीताल, कैचीधाम, अल्मोड़ा, जागेश्वर मंदिर, लख्यूउडयार, गोलू मंदिर, गायत्री शक्तिपीठ, चितई, कटारमल्लसूर्य मंदिर, कौसानी, बैजनाथ, रानीखात, मनकामेश्वर मंदिर, कुमाऊ रेजीमेन्ट संग्रहालय, खैड़ाखान बाबा मंदिर, चिरबटिया गार्डन, दुर्गा मंदिर, राम मंदिर एवं बिनसर महादेव आदि का भ्रमण किया गया।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

समग्र स्वास्थ्य प्रबन्धन पाठ्यक्रम –

समग्र स्वास्थ्य प्रबन्धन विभाग की ओर से चलाए जा रहे कोर्स होलिस्टिक हेल्थ मैनेजमेंट का उद्देश्य आयुर्वेद के माध्यम से सम्पूर्ण स्वस्थ, सभ्य एवं सुखी समाज की स्थापना करना है क्योंकि आयुर्वेद में ही समग्र जीवन के हित की बात कही गयी है। वेदों में ज्ञान विज्ञान की अकूत सम्पदा भरी पड़ी है और इनके ज्ञान की विशेषता ही इनकी पहचान है और इन्हीं का एक अंग है आयुर्वेद। आयुर्वेद सम्पूर्ण जीवन विज्ञान है जो आध्यात्मिकता और दर्शन से अनुप्राणित है। यह निर्विवाद सत्य है कि इसी विशेषता के कारण मानव जीवन के जितना निकट यह है उतना अन्य कोई नहीं।

इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर इस पाठ्यक्रम की रूपरेखा रची गयी है। व्यक्ति के जीवन के हर पक्ष की स्वस्थता और सम्पन्नता के हितार्थ ही पाठ्यक्रम को चार रूपों में बांटा गया है जिसमें सैद्धान्तिक और क्रियात्मक दोनों पक्ष हैं।

जहाँ एक ओर सम्पूर्ण स्वास्थ्य शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, अध्यात्मिक स्वास्थ्य की बात है वहीं दूसरी तरफ योग, प्राकृतिक दिनचर्या और प्राकृतिक वनौषधियों पेड़ पौधों द्वारा स्वास्थ्य संरक्षण एवं रोगोपचार की बात कही गयी है। इसी प्रकार यज्ञ को सम्पूर्ण चिकित्सा पद्धति के रूप में विकसित किया जा रहा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है। हर्बल ट्रीटमेंट और फूल पत्तियों के माध्यम से अक्षुण्ण स्वास्थ्य प्राप्ति की कला सिखाई जाती है क्योंकि औषधियों की हमारी प्राचीन आयुर्वेदिक पद्यति मूल पौधों के उपयोग हेतु मुख्यतः पौधों पर आधारित मैटीरिया मेडिका पर ही आश्रित है। भारत में पौधों से प्राप्त रोगहारी और रोग निवारक दोनों औषधियों के ज्ञान का प्रचुर भण्डार उपलब्ध है। प्राचीन काल के विद्वानों ने जिन औषधीय पौधों का वर्णन किया है उन्हीं पर आधारित परम्परा हमारी आज की विशेषता है।

वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों द्वारा रोग निवारण जैसे प्राणिक हीलिंग, रेकी, एक्यूप्रेशर, मंत्र चिकित्सा, या चिकित्सा एवं घरेलू मसालों द्वारा उपचार कर स्वास्थ्य प्राप्ति करना हमारा उद्देश्य है क्योंकि ये सभी पद्धतियां निरापद हानिरहित एवं प्राकृतिक है।

इसी प्रयोग की प्रामाणिकता के लिए विद्यार्थियों द्वारा ही विभिन्न प्रकार की जड़ी बूटियों से रोगोपचार हेतु हवन सामग्री निर्मित की गयी है। जिनसे मधुमेह, वातव्याधि, कैंसर, ओजक्षय, नेत्र विकार आदि में आशातीत परिणाम प्राप्त हो रहे हैं।

स्वावलम्बन एवं स्वरोजगार को बढ़ावा देने हेतु सहज ही हमारे आसपास उपलब्ध प्राकृतिक पेड़ पौधों के माध्यम से घरेलू स्तर पर विभिन्न प्रकार की औषधियों का निर्माण जैसे – दंतमंजन, दर्दनिवारक, तेल, हर्बल कॉफी, फेस पैक, हर्बल केश पाउडर, च्यवनप्राश, मूव, विक्स, बाम आदि का निर्माण जिससे स्वास्थ्य और आर्थिक निर्भरता दोनों उद्देश्य पूरे हो सकें।

विद्यार्थियों के सम्पूर्ण विकास एवं दृढ़ता, परिपक्वता हेतु ही अध्ययन के उपरान्त परिवीक्षा अवधि का निर्धारण किया गया जिससे सैद्धान्तिक और प्रायोगिक दक्षता प्रमाणित हो सके और समाज में उनका नियोजन किया जा सके। इसी पृष्ठभूमि को स्थाई एवं दृढ़ बनाने हेतु ग्रामीण स्तर पर सापताहिक सेवा योजना का शुभारम्भ किया गया है जिसमें ग्राम स्वच्छता, स्वास्थ्य, सुरक्षा, नशा, उन्मूलन आदि विभिन्न प्रकार की सामाजिक बद्धता हेतु उन्हें गांवों में ले जाया जाता है जिसे वे सुचारू रूप से संचालित कर रहे हैं। स्वस्थ एवं निरोध जीवन हेतु स्वास्थ्य रक्षक नियुक्त करना और स्वावलम्बी, कर्मठ नागरिक बनाना ही इसका मूल उद्देश्य है।

नवयुग की संरचना हेतु चलाए जा रहे सप्त आंदोलनों में से एक प्रमुख स्वास्थ्य है। जिसके तहत समग्र स्वास्थ्य प्रबंधन पाठ्यक्रम के माध्यम से यह स्वास्थ्य क्रांति लाने का प्रयास किया जा रहा है जिसके माध्यम से देश भर में स्वास्थ्य प्रहरी नियुक्त कर अपनी ही प्राकृतिक सम्पदा (जड़ी बूटियों और घरेलू मसालों) से स्वस्थ, सुखी एवं निरोग समाज की स्थापना का लक्ष्य हम पूरा कर सकें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धर्मविज्ञान विभाग –

आज राष्ट्र, धर्म और संस्कृति संकट में है। इसकी रक्षा और समृद्धि के लिए राष्ट्र को गुरुगोविन्द सिंह, सुभाष चन्द्र बोस, चन्द्रशेखर आजाद, आदि गुरु शंकराचार्य ऋषि दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द कुमारिल भट्ट, कुमार जीव, भगिनी निवेदिता, रानीलक्ष्मीबाई और दुर्गावती जैसे प्राणवान व्यक्तित्वों की आवश्यकता है, जिसकी पूर्ति हेतु धर्मविज्ञान पाठ्यक्रम चलाया जा रहा है।

वस्तुतः धर्म विज्ञान कमांडों जैसा कोर्स है। इसमें धर्म के विज्ञान सम्मत स्वरूप की सभी विधाओं का प्रशिक्षण दिया जाता है। धर्म दर्शन, भारतीय संस्कृति, आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा, प्राण चिकित्सा, एक्यूप्रेशर, योग विज्ञान, यज्ञ विज्ञान गणितीय–ज्योतिष, वक्तृत्व कला तथा युगसंगीत आदि विषयों के अध्ययन के पश्चात् पात्र स्वावलम्बी बनकर समाज में योग्य एवं आचरणवान्, प्रशिक्षक की भूमिका निभाने में सक्षम बन जाता है। यह कोर्स करने के बाद सेना में ऑफीसर स्तर के पद धर्म–शिक्षक के लिए विशेष अवसर मिल सकता है।

धर्म विज्ञान विभाग अब तक चार सत्रों का सफलतापूर्वक प्रशिक्षण कर चुका है इसको पढ़कर निकले हुए छात्र राष्ट्र भक्ति की भावना से ओतप्रोत होकर धर्म–संस्कृति के विस्तार के लिए उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं। कई छात्र देव संस्कृति विश्वविद्यालय में महत्वपूर्ण पदों पर कार्य कर रहे हैं। कई छात्र लोकसेवा को ही अपने जीवन का लक्ष्य बनाकर आदिवासी क्षेत्रों में धर्म–संस्कृति के विस्तार के लिए विपरीत परिस्थितियों से जूझ रहे हैं। इस कोर्स के अच्छे परिणाम से प्रभावित होकर बड़ी संख्या में विदेशी छात्र प्रवेश के लिए उत्सुक होकर आ रहे हैं। इस वर्ष मारीशस से एक छात्र श्री ज्ञान सिंह धर्मविज्ञान विभाग में पढ़ रहे हैं।

अगले दिनों धर्मविज्ञान विभाग द्वारा ऐसे छात्र–छात्राओं को प्रशिक्षित करने की योजना है जो कुमार जीव, महेन्द्र, संघमित्रा, स्वामी विवेकानंद तथा भगिनी निवेदिता की तरह विदेशों में भी धर्म–संस्कृति की ध्वजा–पताका फहरा सकें। अगले वर्ष जुलाई माह से धर्म विज्ञान में एक वर्ष का डिप्लोमा कोर्स की तैयारी चल रही है। इसमें धर्म–दर्शन, भारतीय संस्कृति आदि विषयों के अलावा अंग्रेजी में प्रवचन–लेखन, कम्प्यूटर–संचालन, आफिस मेनेजमेन्ट, प्रोजेक्ट मैनेजमेन्ट, पर्सनल मैनेजमेन्ट, संगठन, नियोजन तथा लेखन–कला का विधिवत प्रशिक्षण दिया जायेगा। इन विषयों के अलावा शक्ति और साहस के विकास के लिए जूडो–कराटे का विशेष प्रशिक्षण दिया जायेगा। एक वर्ष में इन विषयों के साथ कम्प्यूटर का प्रशिक्षण प्राप्त करके छात्र–छात्राएं स्वावलम्बी बनकर धर्म–संस्कृति के विस्तार की महती भूमिका निभा सकेंगे।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय तथा विभाग के अनुभवी शिक्षकों के सतत्

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सानिध्य में रहकर छात्रगण धर्म–संस्कृति का विस्तार कर सकें, इसके लिए प्रखर धर्म परिषद् का गठन किया गया है। इस परिषद के माध्यम से छात्रगण अन्य धर्मों के बीच समन्वय स्थापित करके धर्म–संस्कृति का विस्तार करेंगे। छात्रगण धर्मों के बीच समन्वय स्थापित कर सकें, इस निमित शिक्षण अवधि के दौरान छः धर्मों (सनातन, मुस्लिम, ईसाई, सिख, बौद्ध जैन) का विधिवत् अध्ययन कराया जाता है। साथ में व्यावहारिक तथा प्रयोगात्मक ज्ञान के लिए विभिन्न धर्मों के धार्मिक स्थलों (मंदिर, मस्जिद, चर्च, गुरुद्वारा) में जाकर योग्य धर्म गुरुओं द्वारा शिक्षण कराया जाता है। इसी दौरान आपस में मेल–मिलाप से सभी धर्मों के बीच समन्वय की भूमिका तैयार होती है।

धर्म विज्ञान के विद्यार्थी तीन माह के लिए परिवीक्षा हेतु क्षेत्रों में जाकर अन्य धर्मावलम्बियों के बीच सर्वधर्म सभा का आयोजन करते हैं। इस सभा के माध्यम से परम पूज्य गुरुदेव के प्रखर और मानव मात्र के लिए कल्याणकारी विचारों की उनके बीच में स्थापना करते हैं। मुस्लिम समाज के बीच संवाद स्थापित करने के लिए धर्म विज्ञान विभाग प्रत्येक वर्ष प्रगतिशील मुस्लिम भाईयों का आमंत्रित करके रोजा इफ्तार पार्टी का आयोजन करता है। इसके अलावा हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध एवं जैन धर्म के धर्मगुरुओं को बुलाकर गोष्ठियाँ आयोजित करता है। अन्य धर्मावलम्बियों द्वारा आमंत्रित करने पर धर्म विज्ञान के मेधावी छात्र 'सर्व धर्म सभा' को सम्बोधित करने के लिए भी जाते हैं।

जो परिजन मिशन को अन्य धर्मावलम्बियों के बीच में पहुँचाना चाहते हैं। वे धर्म विज्ञान विभाग से सम्पर्क करके ऐसे तेजस्वी छात्रों को अपने यहां भी बुला सकते हैं। ये छात्र विभिन्न धर्म, योग, प्रवचन, संगीत, कर्मकाण्ड ज्योतिष, आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा, एक्यूप्रेशर तथा प्राण चिकित्सा में प्रवीण रहते हैं। ऐसे छात्र–छात्राएँ जिनके हृदय में राष्ट्र, धर्म और संस्कृति की पीड़ा हो और जो अपने जीवन में कुछ कर गुजरना चाहते हैं। ऐसे भावनाशील और प्राणवान् विद्यार्थियों का अध्ययन हेतु धर्म विज्ञान विभाग का आमंत्रण है। वह दिन दूर नहीं, जब ऐसे ही तेजस्वी छात्र–छात्राएं देव संस्कृति विश्वविद्यालय की स्थापना के उद्देश्य को पूरा करके पूज्य गुरुदेव वंदनीया माता जी के स्वप्न को साकार करेंगे।

कम्प्यूटर विभाग –

विश्वविद्यालय के पास नवीनतम कम्प्यूटरों से सुसज्जित लैब है, जिसमें इंटरनेट सुविधा वी–सेट के माध्यम 24 घंटे उपलब्ध है। सन् 2004 से देव संस्कृति विश्वविद्यालय के सभी विद्यार्थियों को बेसिक कम्प्यूटर शिक्षा प्रदान करने का निर्णय लिया गया। इस कोर्स में फंडामेंटल कम्प्यूटर, एम.एस. ऑफिस, एच.

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

टी.एम.एल., फ्रंट पेज, डाटाबेस मेनेजमेंट सिस्टम और कम्प्यूटर लेंग्वेज 'सी प्रोग्रामिंग' इत्यादि को रखा गया है। इससे पूर्व ग्रीष्म अवकाश में, शांतिकुंज के बालकों एवं कार्यकर्ता महिलाओं के लिए विशेष कम्प्यूटर प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की गयी। इस कार्यशाला में 50 बालक एवं 15 कार्यकर्ता महिलाओं को प्रशिक्षण दिया गया। इसी प्रकार अगस्त–सितम्बर माह में शांतिकुंज के जोनल विभाग के 16 कार्यकर्ताओं (पुरुष) के लिए भी विशेष प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें उपरोक्त कार्यकर्ता लाभान्वित हुए।

देश के विभिन्न शहरों में आयोजित हुए विभिन्न राष्ट्रीय सेमिनारों में विभाग की भागीदारी रही है। आई.आई.आई.टी.एम. ग्वालियर में आई.पी.आर. की ऑन लाइन एजुकेशन में रोल विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सेमीनार आई.आई.टी.आई. इलाहाबाद में विश्वविद्यालय मेनेजमेन्ट में आई.टी. की भूमिका विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सेमीनार में भाग लिया।

(हार्डवेयर एवं मेंटिनेंस) पर जे.एन.यू. नई दिल्ली में आयोजित (प्रशिक्षण) कार्यशाला में विभाग की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। विश्वविद्यालय के प्रेजेन्टेशन के साथ–साथ विद्यार्थियों तथा स्टाफ मेम्बर्स हेतु टाइपिंग एवं प्रशिक्षण कार्य भी विभाग द्वारा किया जाता है।

कम्प्यूटर विभाग विश्वविद्यालय का एक महत्वपूर्ण अंग है। मनोविज्ञान विभाग, योग विभाग, परीक्षा सेल तथा पुस्तकालय आदि समस्त विभागों में कम्प्यूटर उपलब्ध है। विश्वविद्यालय की आधिकारिक वेबसाइट www.dsw.ogr है। वेब–साइट का समय–समय पर अपडेशन कम्प्यूटर लैब के कार्यों में सम्मिलित है। भविष्य में विभाग डिस्टेंस एजुकेशन एवं ऑनलाइन एजुकेशन को प्रारम्भ करने पर कार्यरत है।

बायो–इन्फारमेटिक्स विभाग –

जुलाई 2004 सत्र से विश्वविद्यालय में एक नया कोर्स 'पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन बायो इन्फारमेटिक्स' शुरू किया गया है। इसमें तकनीकी सहयोग बायो इन्फारमेटिक्स इंस्टीट्यूट, नोएडा द्वारा प्रदान किया जा रहा है। विषय को सरल एवं सरस बनाने हेतु गहन 'बोर्ड ऑफ स्टडीज' हुई। इसके बाद एक रोजगार परक कोर्स को नया स्वरूप उभरा एक Visiting Faculty BII, Noida की भी इस कोर्स के दौरान विश्वविद्यालय में बनी रहेगी। कुल 26 छात्र–छात्राएं इस कोर्स में अध्ययनरत् है। वर्तमान में छात्र–छात्राओं का समूह 10 दिवसीय विशेष ट्रेनिंग हेतु Noida में प्रशिक्षणरत् है।

कोर्स में कम्प्यूटर का अधिक महत्त्व होने के कारण बायो इन्फारमेटिक्स की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अलग से कम्प्यूटर लैब निर्मित की गई है। कम्प्यूटर एवं इंटरनेट की सुविधा प्रदान की गयी है।

ग्राम प्रबंधन विभाग –

भारत गांवों का देश है, यहां की 2 तिहाई आबादी गाँवों में बसती है। गाँवों को समुन्नत व स्वावलम्बी बनाना ही राष्ट्र का वास्तविक उत्थान है। आजादी के बाद पिछले 57 वर्षों में जो प्रयास हुए वे भारत की विशिष्टताओं एवं आवश्यकताओं के अनुरूप ग्रामीण विकास को वह स्वरूप एवं दिशाधारा नहीं दे सके जो गांवों में ऐसी स्थिति पैदा करती जिससे गांवों से शहरों की ओर तेजी से हुए पलायन एवं गन्दी बस्तियों के रूप में बढ़ती शहरी आबादी की वर्तमान गम्भीर समस्याओं से बचा जा सकता।

भारत ऋषि प्रधान, गाँव प्रधान, कृषि प्रधान, श्रम प्रधान, वर्षा आश्रित एवं विभिन्न मान्यताओं वाला विविधतापूर्ण देश है। इन विशिष्टाताओं, आवश्यकताओं एवं ऋषि प्रणीत सूत्रों के अनुरूप गाँवों के आर्थिक विकास, मानव संसाधन विकास तथा प्राकृतिक संसाधनों के विकास एवं संरक्षण हेतु तकनीक विकसित करने कार्य योजना बनाने, शिक्षण की व्यवस्था करने तथा तद्नुरूप विकास का ढाँचा खड़ा करने के उद्देश्य से जुलाई 2004 से विश्वविद्यालय में 'ग्राम प्रबंधन पाठ्यक्रम' प्रारंभ किया गया है।

प्रथम चरण में जुलाई 2004 से 'ग्राम प्रबंधन' का 6 माह का प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम लोकसेवी कार्यकर्त्ताओं के लिए प्रारंभ किया गया है, जिसका उद्देश्य उन्हें समग्र ग्राम्य विकास (कृषि, पशुपालन, ग्रामोद्योग, शिक्षा, प्राथमिक स्वास्थ्य, पर्यावरण, वर्षाजल संरक्षण, आपदा प्रबंधन, व्यक्ति एवं परिवार निर्माण, नारी उत्थान, शिक्षा निवारण एवं कुरीति उन्मूलन आदि) हेतु भारतीय ग्रामीण परिस्थितियों एवं सांस्कृतिक मूल्योंके अनुरूप विकास के सूत्रों, तकनीक एवं कार्यक्रमों के स्वरूप से अवगत व अभ्यास कराकर उनकी तकनीकी क्षमता विकसित करना है ताकि वे इस ज्ञान एवं अनुभव का लाभ ग्रामीण जनता को दे सकें। साथ ही उन्हें स्थानीय ग्रामीण संसाधनों (कृषि, पशुधन एवं प्राकृतिक संसाधन आदि) एवं वहाँ की आवश्यकता पर आधारित छोटी–पूंजी वाले, श्रम आधारित, अल्प प्रशिक्षण से चलाए जा सकने योग्य लगभग 40 कुटीर उत्पादों का निर्माण सिखाना है ताकि वे श्रमजीवी–स्वावलम्बी लोक सेवी के रूप में विकसित हों और ग्रामीण बेरोजगारी निवारण हेतु सक्षम मार्गदर्शक का कार्य कर सकें। इसके साथ ही उन्हें सार्वभौमिक एवं व्यावहारिक ऋषि प्रणीत उन जीवन सूत्रों से अवगत व अभ्यस्त कराना भी है जो उनके अपने व्यक्तित्व निर्माण एवं परिवार निर्माण में सहायक हो सके तथा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उनमें समाज के प्रति सेवा का भाव विकसित व सुदृढ़ कर सकें। पाठ्यक्रम में कृषि प्रबंधन, पशुधन प्रबंधन, ग्रामोद्योग, शिक्षा, प्राथमिक स्वास्थ्य, मानव संसाधन विकास, आस्तिकता सम्वर्धन एवं ग्राम तीर्थ की स्थापना कुल 7 विषय निर्धारित किए गये हैं, जिनकी थ्योरी का ज्ञान देने के साथ–साथ प्रायोगिक शिक्षण देना तथा प्रत्येक शनिवार को विद्यार्थियों की टीम को अपने निर्धारित गाँवों में जाकर ग्रामीणों के साथ कार्य करने का अभ्यास करना तथा सत्र के अन्त में उसकी प्रोजेक्ट रिपोर्ट प्रस्तुत करना भी पाठ्यक्रम का अंग है।

महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ –

कु. इन्दु शर्मा ने अन्तर्विश्वविद्यालयीन राष्ट्रीय योग प्रतियोगिता 2002 में अमृतसर में प्रथम स्थान प्राप्त किया। तथा बाइसवीं राष्ट्रीय योगासन प्रतियोगिता, चेन्नई में तृतीय स्थान प्राप्त किया। 23वीं राष्ट्रीय प्रतियोगिता के लिए राज्य स्तर पर 14 छात्र–छात्राओं का चयन किया गया जिसमें – सीनियर वर्ग में 1. रवीन्द्र, 2. समरेश कश्यप, 3. इन्दू शर्मा, 4. श्वेता रावत, 5. ज्योति चौहान, 6. सीमा चौहान, 7. आराधना, 8. नीलम सिंह, 9. अमृत लाल गुर्वेन्द्र, 10. सतीश चन्द्र शर्मा, 11. महेश पाण्डेय, तथा जूनियर वर्ग में – 12. ऋचा, 13. प्राची, 14. दीपान्जली थे।

लोक प्रशासन संस्थान नई दिल्ली द्वारा आयोजित 'निर्धनता तथा बेरोजगारी की असमहित समस्याएँ' विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त, कु. अंजुलता नेमा माननीय उपराष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत।

www.vicharkrantibooks.org

जिन्होंने आचार्य पं. श्रीराम शर्मा के जीवन के विविध क्षेत्रों में पी–एच.डी. उपाधि प्राप्त की –

1. डॉ. मन्दाकिनी श्रीमाली – (पी–एच.डी.) आचार्य श्रीराम शर्मा का सर्वांगीण दर्शन, डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा 1995
2. मृणालिनी शर्मा – आचार्य श्रीराम शर्म का सामाजिक चिन्तन, डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा
3. अरुण कुमार जायसवाल – प्राचीन भारत की वैदिक संस्कृति सम्बध (प्रारंभ से गुप्तकाल तक), गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
4. मिनाक्षी सिंह – प्राचीन भारत एवं ईरान के सांस्कृतिक सम्बन्ध (प्रारंभ से गुप्तकाल तक), गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
5. ममता अरोड़ा – आचार्य श्रीराम शर्मा का सर्वांगीण शिक्षा दर्शन
6. मधुलता – आचार्य श्रीराम शर्मा का धर्म–दर्शन एक आलोचनात्मक अध्ययन
7. अनिता सेंगर– वैदिक रुद्र एक विवेचनात्मक अध्ययन, गुरुकुल कांगड़ी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विश्वविद्यालय, हरिद्वार
8. – लोक साहित्य के संदर्भ में पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के साहित्य की उपयोगिता
9. भावना द्विवेदी – (लघु शोध प्रबंध) वैदिक दर्शन की सृष्टि संरचना का वैज्ञानिक मूल्यांकन, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
10. कृष्णकान्त तिवारी – आधुनिक परिप्रेक्ष्य में सांस्कृतिक पुनरुत्थान हेतु आचार्य श्रीराम शर्मा का योगदान, एक ऐतिहासिक अध्ययन
11. पूनम शुक्ला – षोडश संस्कारों का तुलनात्मक अध्ययन (गृह्यसूत्र, मनुस्मृति, महर्षि दयानंद कृत संस्कार विधि तथा पंत्र श्रीराम शर्मा कृत षोडश संस्कार विवेचन वैज्ञानिक अर्थ में), छत्रपति साहूजी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर 2000
12. पूनम सिंह – आचार्य श्रीराम शर्मा जी के साहित्य में युग चेतना
13. डॉ. वर्षा वानखड़े – जीवन मूल्योंके परिप्रेक्ष्य में पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के साहित्य में नारी संवेदना, डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर
14. गुलाब राव पान्से – पं. श्रीराम शर्मा के दर्शन में मृत्यु परक जीवन परिदृश्य पर आधारित दार्शनिक अनुशीलन, हमीदिया कॉलेज भोपाल
15. राजीव कुमार – आचार्य पं. श्रीराम शर्मा के सामाजिक विचार – एक समाज शास्त्रीय अध्ययन, पी.जी. कॉलेज भौगांव, मैनपुरी (म.प्र.)
16. गोविन्द शुक्ला – अभिनव समाज के नव निर्माण में गायत्री परिवार की भूमिका – एक समाज शास्त्रीय अध्ययन (पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के सन्दर्भ में), कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, सेमरिया, रीवा (म.प्र.)
17. डॉ. शशिकान्त – संस्कार परंपरा द्वारा समाजोत्थान की दिशा में गायत्री परिवार की भूमिका।

लघुशोध प्रबंध –

18. सुनील कुमार सक्सेना – यज्ञ वातावरण शोधन एवं स्वास्थ्य संवर्धन, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर 1989
19. सुनील कुमार सक्सेना – (एम–फिल–।।, पेपर), ऋग्वेद में प्रयुक्त गायत्री छन्दों का परिशीलन, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर 1991
20. Alok Kumar - Yug Nirman Movement (A Social Study) M. Phil, Ch. Charansingh University Meerut, 1997
22. Hemadri ^ Physiological and Behavioural Responces of Human Subjects Following Jap, Dyhan (Meditation),

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

and Selected Yogic Exercises, Gurukul Kangri University, Haridwar.

देव संस्कृति विश्वविद्यालय : एक दृष्टि में

- कुलपिता का स्वप्न देव संस्कृति विश्वविद्यालय के रूप में साकार।
- वर्ष 2002 में हिमालय की गोद में गंगा तट के निकट स्थापना।
- 84 एकड़ भूमि पर हरिद्वार–ऋषिकेश मार्ग पर सुरम्य वातावरण में स्थित।
- उत्तरांचल सरकार के अधिनियम द्वारा गायत्रीकुंज में स्थापना।
- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से विधिवत मान्यता प्राप्त।
- श्रीवेदमाता गायत्री ट्रस्ट, शांतिकुंज, हरिद्वार द्वारा पोषित।
- विभिन्न धर्मों की वाटिकाओं के मध्य अनूठी स्थापत्य कला वाले भवन।
- विशाल भवन में अंतर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक अध्ययन केन्द्र की स्थापना।
- भारतीय ज्ञान की श्रेष्ठता प्रतिपादित करते ज्योतिर्विज्ञान के विशाल यंत्र।
- उच्च शिक्षित शिक्षकों–कर्मियों द्वारा निर्वाह हेतु मात्र मानदेय स्वीकार्य।
- सत्र के आरंभ में भव्य ज्ञानदीक्षा संस्कार का आयोजन।
- पूर्णतया आवासीय परिसर में विद्यार्थियों की दिनचर्या पर विशेष ध्यान।
- आप्टिकल फाइबर की मदद से पूर्णतया कम्प्यूटरीकृत संस्थान।
- छात्रों को स्वावलम्बी बनाने वाले पाठ्यक्रमों पर विशेष जोर।
- विज्ञान और अध्यात्म का सुन्दर संगम करने का प्रयास।
- विश्वविद्यालय में 20 राज्यों के विद्यार्थियों का प्रतिनिधित्व।
- विभिन्न विदेशी विशेषज्ञों का समय–समय पर आगमन।
- समय–समय पर विदेशी छात्रों के समूह के साथ प्रत्यक्ष सम्पर्क।
- माननीय कुलाधिपति द्वारा 'गीता एवं ध्यान' पर हर सप्ताह विशेष कक्षाएं।
- पाठ्यक्रम के साथ 'जीवन प्रबन्धन' का भी प्रशिक्षण।
- छात्रों के प्रशिक्षण एवं रोजगार की व्यवस्था के लिए विशेष विभाग।
- प्रशासन, चिकित्सा, पत्रकारिता, विधि आदि क्षेत्रों की प्रतिभाओं द्वारा समयदान।

स्वर्णिम सफलताओं की बानगी –

1. वर्ष 2006 में ईरान में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय ध्यान कार्यशाला में विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. एस.पी. मिश्र द्वारा विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व। भारत के एकमात्र प्रतिनिधि के रूप में उनका शोध–पत्र प्रकाशित।
2. वर्ष 2006 में हरिद्वार में आयोजित अमृत महोत्सव में भारत माता मंदिर के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संस्थापक एवं निवर्तमान शंकराचार्य महामंडलेश्वर स्वामी सत्यमित्रानंद गिरि जी द्वारा कुलपति डॉ. एस. पी. मिश्र को सारस्वत सम्मान।

3. वर्ष 2006 में विश्वविद्यालय की आचार्या एवं पूर्व छात्रा कु. इन्दू शर्मा हरिद्वार में आयोजित नेशनल योग चैम्पियनशिप में स्वर्ण विजेता। इंडियन योग फेडरेशन द्वारा 17 से 19 नवम्बर तक आयोजित इस प्रतियोगिता में 25 राज्यों के प्रतिभागियों ने शिरकत की। 18 से 25 आयुवर्ग के बीच उनका मुकाबला करीब 100 प्रतिभागियों से था।

4. वर्ष 2006 में वाराणसी में आयोजित राष्ट्रीय योग प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय के विद्यार्थी समरेक कश्यप को स्वर्णपदक। आल इंडिया योग कल्चरल फेडरेशन के तत्वावधान में यह प्रतियोगिता 12 से 14 मई, 2006 तक आयोजित की गयी, जिसमें बीस राज्यों के प्रतिभागियों ने भाग लिया।

5. देहरादून में आयोजित एनएसएस के युवा महोत्सव, 06 में अनुशासन के सभी पांच पुरस्कार विश्वविद्यालय की छात्राओं सरिता बेहरा, अलका गुप्ता, विनीत, कीर्ति शर्मा एवं गीतिका पांडेय को प्राप्त।

6. सितम्बर 2006 में नयी दिल्ली में आयोजित इंटरनेशनल डाक्यूमेंटी फोरम में पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग द्वारा विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व। स्क्रिप्ट राइटिंग एवं निर्देशन पैनल में शामिल।

7. देहरादून में आयोजित हर्बल एक्सपो, 2005 में विश्वविद्यालय को प्रथम पुरस्कार प्राप्त। राज्यपाल महामहिम सुदर्शन अग्रवाल ने विश्वविद्यालय के स्टॉल का निरीक्षण किया और इसकी भूरि–भूरि सराहना की।

8. वर्ष 2003 में अमृतसर में आयोजित अंतरविश्वविद्यालयीन राष्ट्रीय योग चैम्पियनशिप में विश्वविद्यालय की छात्रा कु. इन्दु शर्मा स्वर्ण पदक विजेता। प्रतियोगिता में भारत के 67 विश्वविद्यालय ने शिरकत की।

दीक्षा से दीक्षान्त तक –

अथ के बिना इति कैसे? श्रम के बिना सफलता का विचार? बिन बीज पुष्प की कल्पना? और यदि ये नहीं तो दीक्षा बिना दीक्षान्त कैसा? इन्हीं विचारों के चलते देव संस्कृति विश्वविद्यालय ने सत्र के आरम्भ में ज्ञानदीक्षा प्रक्रिया आरम्भ हुई। लक्ष्य था, विद्यार्थी की मनोभूमि उच्चस्तरीय ज्ञान ग्रहण करने हेतु निर्मित की जा सके। इस संस्कार में आचार्यों को भी दीक्षित करने की व्यवस्था की गयी। उन्हें विद्यार्थियों के माध्यम से नये युग के निर्माण का महान दायित्व जो निभाना है।

ज्ञान दीक्षा के प्रथम चरण में विद्यार्थियों पर पवित्र जल छिड़कर पवित्रीकरण किया जाता है और प्रार्थना की जाती है – ऊँ पवित्रता नः सन्मार्ग नयेत्। ऊँ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पवित्रता नः महत्तां प्रयच्छतु। ऊँ पवित्रता नः शान्तिं प्रददातु। अर्थात् पवित्रता हमें सन्मार्ग पर चलाए। पवित्रता हमें महान बनाए। पवित्रता हमें शान्ति प्रदान करे। इसके पश्चात् विद्यार्थी को प्राणायाम के माध्यम से प्राणतत्व ग्रहण करने की प्रेरणा दी जाती है। तत्पश्चात् ज्ञान प्राप्त करने के लिए मस्तिष्क का संस्कार सम्पन्न किया जाता है – ऊँ मस्तिष्कं शान्तं भूयात्। ऊँ अनुचितः आवेशः मा भूयात्। ऊँ शीर्षं उन्नतं भूयात्। ऊँ विवेकः स्थिरी भूयात्। अर्थात् हमारा मस्तिष्क शान्त रहे। उनमें कोई अनुचित आवेश न आये। हमारा मस्तक सदा ऊँचा रहे और इसमें उचित अनुचित का भेद करने वाला विवेक सदैव विद्यमान रहे। इसके पश्चात् विद्यार्थी एवं आचार्य मिलकर मातृभूमि की वंदना के माध्यम से राष्ट्र निष्ठा की शपथ लेते हैं। इसके बाद क्रम आरम्भ होता है, कुलाधिपति महोदय द्वारा प्रतीक रूप में कुछ विद्यार्थियों के वस्त्र पर विश्वविद्यालय के प्रतीक चिन्ह बैच सुशोभित करने का, जिसे सभी विद्यार्थी देव संस्कृति विश्वविद्यालय का आत्मिक अंग बना लेते हैं। विद्यार्थी एवं आचार्य दोनों का ही विश्वविद्यालय में समान दायित्व है अतः दोनों घटक साथ साथ यश एवं आध्यात्मिक आभा बढ़ाने के लिए संकल्पित होते हैं। इसके पश्चात् कुलाधिपति इस प्रकार के दीक्षित होने का संकल्प कराते हुए कहते हैं – स्वाध्यायान्मा प्रमदः। धर्मान्न प्रमदितव्यं। कुशलान्न प्रमदितव्यम्। भूत्यै न प्रमदित्यं। यानि अवनद्यानि, कर्माणि तानि सेवितव्यानि, नो इतराणि। यानि अस्माकम् सुचरितानि, तानि त्वयोपास्यानि, नो इतराणि। अर्थात् स्वाध्याय में प्रमाद न करें। धर्माचरण में प्रमाद न करें। कौशल में अभ्यास में प्रमाद न करें। संसाधनों के विकास में प्रमाद न करें। जो दोष रहित कर्म हैं उन्हीं का सेवन करें। अन्य नहीं। जो श्रेष्ठ चरित्र हैं उन्हीं का अनुकरण करें अन्य का नहीं। विद्यार्थी इन सभी का उत्तर 'मान्यं' कह कर देता है। और अंत में ज्ञान के माध्यम से पूर्णता को प्राप्त करने के संकल्प के साथ ज्ञान दीक्षा सम्पन्न हो जाती है और साथ ही आरंभ हो जाता है, विद्यार्थी के व्यक्तित्व को हर विधि से समग्र बनाने का उपक्रम।

भगवद्‌गीता कहती है – नहि ज्ञानं सदृशं पवित्रमिहि विद्यते, अर्थात् इस संसार में ज्ञान से पवित्र कुछ भी नहीं है। इसी ज्ञान के जल से स्नान करके ही मनुष्य स्नातक हो सकता है। यह कोई अत्युक्ति नहीं। शास्त्रों में स्नातक का अर्थ ही है भली प्रकार से स्नान कर चुका। इसी ज्ञान गंगा में स्नान करने के बाद विद्यार्थी के दीक्षान्त का समय आता है। दीक्षान्त में कर्मक्षेत्र की दहलीज पर खड़ा विद्यार्थी पुनः स्वाध्याय, धर्म, कुशलता के अभ्यास और संसाधनों के विकास में प्रमाद न करने का संकल्प लेता है। इसके पश्चात् वह परमात्मा से निवेदन करता है कि वे निरंतर उस पर ज्ञान की अमृत वृष्टि करते रहें। वह सत्य, शिव अर्थात् कल्याणकारी एवं सुन्दर भाव स्वयं में जागृत रखने के लिए प्रार्थना करता है और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

साथ ही परम सत्ता से माँगता है वह साहस, जो समाज में व्याप्त कुरीतियों का दलन कर दे, जिसके बाद वह अपनी सृजन शक्ति से नूतन जगत की रचना कर सके। वस्तुतः ज्ञान दीक्षा में जहाँ विद्यार्थी अपने उत्कर्ष के लिए स्वयं को आचार्य के सम्मुख समर्पित करता है वहीं दीक्षान्त में प्रतिभा पुष्प के रूप में विकसित हो चुके इस विद्यार्थी को आचार्यों द्वारा उनकी स्वीकृति से समाजदेव के चरणों में अर्पित कर दिया जाता है।

मानव चेतना एवं योग विभाग –

इक्कीसवीं सदी को योग का युग बनाने के लिए युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा 'आचार्य' ने आज से करीब पचास वर्ष पूर्व ही शंखनाद कर दिया था। अपने कुलपिता के इस अभियान को आधुनिक तकनीक की मदद से और गतिशील बनाने के लिए देव संस्कृति विश्वविद्यालय में मानव चेतना एवं योग विभाग की स्थापना की गयी। विीाग की स्थापना के पीछे मूल अवधारणा यह थी कि समग्र व्यक्तित्व के निर्माण करने वाले योग को मात्र दवा का विकल्प न समझ लिया जाए। महर्षि पातंजलि ने भी यम–नियम के अनुशासन के बाद ही आसन का प्रावध ाान किया था। यह योग इसके आगे भी प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा की सीढ़ियों से बढ़ाता हुआ समाधि का सुख देने में भी सक्षम था।

पाठ्यक्रम की विशिष्टताएँ – विश्वविद्यालय द्वारा वर्तमान समय में योग में एम.ए., एम.एससी., कला स्नातक, विज्ञान स्नातक, डिप्लोमा एवं प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं। इनमें राजयोग, हठयोग आदि विषयों के साथ–साथ शरीर रचना एवं शरीर क्रिया विज्ञान का भी व्यावहारिक ज्ञान सम्मिलित है। इसके अलावा इसमें एक्यूप्रेशर, प्राणिक हीलिंग, स्वाथ्यवृत्त विज्ञान आदि को भी जोड़ा गया है। जिसका उद्देश्य योग के चिकित्सीय पक्ष की समझ विकसित करने के साथ–साथ कुछ नवीन व्यावहारिक पद्धतियों को जोड़कर स्वस्थ जीवन की पृष्ठभूमि तैयार करना है।

कला के परास्नातक–स्नातक पाठ्यक्रमों के साथ ही गीता, सांख्य एवं पातंजलिकृत योग सूत्रों को विधिवत अध्ययन, स्व–प्रबन्धन, प्राकृतिक चिकित्सा के मूलभूत सिद्धान्त एवं उपयोग, ध्यान एवं मंत्रयोग की वैज्ञानिकता के साथ–साथ विशेष रूप से योग के दार्शनिक पक्ष एवं उनका भारतीय संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन सम्मिलित है। विज्ञान के परास्नातक एवं स्नातक पाठ्यक्रमों में विशेष रूप से कम्प्यूटर एवं मनोविज्ञान के अध्ययन को जोड़ा गया है। इसका उद्‌देश्य सूचना एवं तकनीकी के युग में योग की प्रासंगिकता समाज को अनुभूत कराना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है। इसमें योग का ज्ञान ई. लर्निंग के माध्यम से देश–विदेश तक पहुँचाने का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इसके अतिरिक्त पाठ्यक्रमों में तनाव प्रबंधन, समय प्रबंधन आदि पर विशेष बल दिया गया है। प्रमाणपत्र पाठ्यक्रमों का मूल उद्देश्य समाज के बीज योग की प्रासंगिकता को स्पष्ट करना है।

सभी पाठ्यक्रमों में जहाँ योग को जनसामान्य के लिए उपयोगी बनाने का प्रयास किया गया वहीं विशिष्ट क्षेत्रों यथा – पुलिस, प्रशासन, कार्पोरेट सेक्टर का आदि के लिए योग के विशिष्ट पैकेज तैयार करने का प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

उपलब्ध सुविधायें – योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा हेतु दो प्रयोगशालाएँ। विदेशियों के योग प्रशिक्षण हेतु विशिष्ट पैकेज। अत्याधुनिक उपकरणों के माध्यम से ध्यान एवं योगनिद्रा आदि के मानसिक–शारीरिक प्रभावों का अध्ययन। संगीत पर ध्यान हेतु विशिष्ट मुक्ताकाशीय परिसर।

अर्जित उपलब्धियाँ –

1. वर्ष 2006 में ही बनारस में आयोजित राष्ट्रीय योगासन चैम्पियनशिप में विश्वविद्यालय के विद्यार्थी समरेश कश्यप को स्वर्ण पदक प्राप्त।
2. रायवाला (देहरादून) एवं अम्बाला कैंट (हरियाणा) में सैन्य कर्मियों के लिए विशेष शिविर आयोजित।
3. समन्वयक द्वारा लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ एवं जैन विश्व भारतीय संस्थान, डाडनूं राष्ट्रीय संगोष्ठी में शोध–पत्र प्रस्तुत।
4. नवम्बर, 05 में लखनऊ में योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा चिकित्सा विषय पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में विद्यार्थियों द्वारा पांच शोधपत्र प्रस्तुत।
5. विश्वविद्यालय के दल द्वारा एनटीपीसी, कोरबा में योग से समग्र जीवन प्रबंधन विषय पर विभिन्न व्याख्यान।
6. लखनऊ में 30 नवम्बर 05 को योग और प्राकृतिक चिकित्सा विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार में बारह विद्यार्थियों द्वारा विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व।
7. देहरादून में 26 से 28 दिसम्बर 05 तक आयोजित उत्तरांचल हर्बल एक्सपो में प्रवक्ता अमृतलाल गुर्वेन्द्र और समरेश कश्यप के नेतृत्व में भागीदारी। (प्रथम स्थान प्राप्त)
8. विभाग द्वारा विश्वविद्यालय के समस्त विद्यार्थियों के लिए प्राणिक हीलिंग एवं एक्यूप्रेशर का विशेषज्ञों से प्रशिक्षण।
9. वर्ष 2005 में ही सुखाड़िया विश्वविद्यालय में समरेश कश्यप ने व्यक्तिगत स्तर पर रजत पदक प्राप्त किया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अनुसंधान के क्षेत्र में –

आधुनिक जगत को योग की प्रासंगिकता स्पष्ट करने एवं इस विधा से समस्याओं के निदान करने हेतु विश्वविद्यालय में तीस से अधिक पी–एच.डी. विद्यार्थी शोध कार्य में संलग्न हैं। योगनिद्रा एवं विभिन्न ध्यान पद्धतियों के मनोकायिक रोगों का प्रभाव पर यहाँ विभिन्न शोध कार्य चल रहे हैं। साथ ही आर्थराइटिस, मधुमेह, शरीर की प्रतिरोधक क्षमता से संबंधित रोगों पर योग के प्रभाव का अध्ययन किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त योग के साधना पक्ष पर भी अनुसंधानों में विशिष्ट ध्यान दिया जा रहा है।

समाज को योगदान –

जन–सामान्य को निःशुल्क चिकित्सकीय परामर्श। मात्र लागत राशि पर चिकित्सकीय सुविधा भी उपलब्ध। आम लोगों के लिए प्राकृतिक चिकित्सा, एक्युप्रेशर, प्राणिक हीलिंग की मात्र लागत राशि पर सुविधा। शैक्षणिक संस्थानों में अब तक लगभग 300 से अधिक योग कार्यक्रम। देश के विभिन्न हिस्सों में विद्यार्थियों द्वारा एक हजार से अधिक शिविरों का आयोजन। विभाग द्वारा विश्वविद्यालय परिसर में समय–समय पर तीन से लेकर बीस दिन तक के योग शिविर आयोजित किये जाते हैं जिनमें सामान्य लोगों से लेकर चिकित्साधिकारी तक सम्मिलित होते हैं। इनमें से कतिपय प्रमुख शिविर निम्नलिखित हैं – 10–20 अक्टूबर 2004 योग एवं पूरक चिकित्सा शिविर (जनसामान्य के लिए)। 01–10 जून, 05 योग एवं पूरक चिकित्सा शिविर (जन सामान्य के लिए)। 27–30 अगस्त, 2005 योग एवं पूरक चिकित्सा शिविर (जिला चिकित्साधिकारियों के लिए)। 06–10 जनवरी, 2006 योग एवं पूरक चिकित्सा शिविर (जिला चिकित्साधिकारियों के लिए)। 26–31 मार्च, 06 योग एवं पूरक चिकित्सा शिविर (जन सामान्य हेतु)। 20–26 अप्रैल, 06 योग एवं पूरक चिकित्सा शिविर (जन सामान्य हेतु)

स्वर्णिम संभावनाएँ –

भारत के दूरदराज के गाँवों से लेकर कार्पोरेट वर्ल्ड तक योग के प्रचार प्रसार के साथ विद्यार्थी यहाँ के प्रशिक्षण के माध्यम से एक सम्मानजनक जीवन स्तर प्राप्त कर रहे हैं। विभिन्न राज्यों ने योग को अपने यहाँ जब से अनिवार्य कर लिया है तब से इस क्षेत्र में रोजगार के द्वार और अधिक खुल गये हैं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा विश्वविद्यालय स्तर पर योग के प्रशिक्षण को बढ़ावा दिये जाने के बाद हमारे यहाँ के विद्यार्थी देव संस्कृति विश्वविद्यालय के साथ अन्य विश्वविद्यालयों में भी योगाचार्य के पद पर नियुक्त हुए हैं। योग को विभिन्न विषयों से जोड़कर वैज्ञानिक अनुसंधान के क्षेत्र में भी काफी संभावनाएँ हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनोविज्ञान विभाग

विद्यार्थी की संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक योग्यता का सर्वांगीण विकास कर उसे मनोविज्ञान के क्षेत्र में विशिष्ट दक्षताप्रदान करना ही मनोविज्ञान विभाग का मकसद है। यह विभाग मनोविज्ञान के मूल स्वरूप और सिद्धान्तों को तो महत्व देता ही है, साथ ही यह योग एवं आयुर्वेद जैसी प्राचीन भारतीय विधाओं से मनोविज्ञान का नाता जोड़ने में अभूतपूर्व भूमिका निभा रहा है। विभाग द्वारा मनो–आध्यात्मिक प्रतिरूप विकसित करने में अहम भूमिका निभाई गई है। इस मॉडल क़े अन्तर्गत मनोवैज्ञानिक पद्धति से इलाज के साथ योग निद्रा, प्राणिक हीलिंग, रेकी, एक्यूप्रेशर आदि विधाओं के सुन्दर तालमेल के द्वारा मनोरोगियों का इलाज किया जाता है। यही कारण है कि अब तक 250 से अधिक जटिल समझे जा रहे मामलों में विभाग को सफलता प्राप्त हुई है।

पाठ्यक्रम की विशिष्टताएँ –

इस पाठ्यक्रम में यू.जी.सी. द्वारा संस्तुत पाठ्यक्रम को सम्मिलित किया गया है, साथ ही प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु विशिष्ट ज्ञान का समावेश भी पाठ्यक्रम में है। इस पाठ्यक्रम की विशेषता यह है कि इसके अन्तर्गत आयुर्वेद के चार प्रश्न–पत्र पढ़ाये जाते हैं, जिनका सम्बन्ध मानसिक व्याधियों से है। यह विशेषता भारतवर्ष के किसी अन्य विश्वविद्यालय में नहीं पाई जाती। विद्यार्थियों को उन जड़ी–बुटियों का ज्ञान कराया जाता है, जिनका उपयोग मानसिक व्याधियों में लाभकारी है।

विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम में तथा अलग से भी व्यक्तित्व परीक्षण, अभिरूचि परीक्षण, बुद्धि परीक्षण आदि का भी प्रशिक्षण दिया जाता है। साथ ही मनो–आध्यात्मिक प्रतिरूप के क्षेत्र में भी विद्यार्थी को दक्ष बनाया जाता है। विद्यार्थियों के व्यावहारिक प्रशिक्षण के लिए प्रत्येक वर्ष शैक्षणिक भ्रमण का भी प्रबन्ध किया जाता है, जिसमें विद्यार्थी मानसिक अस्पताल, मेडिकल कॉलेज, निमहांस, विमहांस जैसे संस्थानों में जाकर मानसिक रोगियों की विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों का अवलोकन व अध्ययन करते हैं। मनोविज्ञान विभाग में शोध की पूरी सुविधा है। यहाँ पर 27 विद्यार्थी विभिन्न में शोध कार्य करने में संलग्न है। विभाग की अपनी बोर्ड ऑफ स्टडीज तथा रिसर्च डिग्री कमेटी है, जिनकी सहायता से पाठ्यक्रम को अद्यतन रखा जाता है तथा शोध की दिशाएँ निर्धारित की जाती हैं।

उपलब्ध सुविधाएँ–

(1) तीन विशिष्ट प्रयोगशालाएँ – आधुनिक उपकरणों से युक्त इन तीन प्रयोगशालाओं में विभिन्न विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों के लिए शोध उपकरण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उपलब्ध हैं जिनमें विभिन्न बायोफीड मशीनें हैं। विशेष रूप से उल्लेखनीय यह है कि इन आधुनिक मशीनों के सहारे योग एवं मनोविज्ञान के सम्बन्ध पर भी विभिन्न शोध किए जा रहे हैं। उदाहरण के तौर पर पसीने की ग्रंथियों की सक्रियता मापने में सक्षम मशीन पर इस सम्बन्ध में शोध किए जा रहे हैं कि ध्यान तनाव को कम करने में कैसे कारगर है? इसी प्रकार ई.एम.जी. बायोफीडबैक मशीन के जरिये सकारात्मक चिंतन से तानव कम होने की प्रक्रिया का मापन किया जा सकता है।

(2) मनोचिकित्सा केन्द्र – मनोविज्ञान विभाग के अन्तर्गत अनूठे पंचकोणीय मनोचिकित्सा केन्द्र की स्थापना की गई हैं, जिसमें विद्यार्थियों को मानसिक रोगियों की चिकित्सा संबंधी प्रशिक्षण दिया जाता है। इसे केन्द्र में साइको–काउंसलिंग केन्द्र के अलावा उपलब्ध दर्पण चिकित्सा कक्ष और योगनिद्रा कक्ष इसे विशिष्ट बनाते हैं। इस चिकित्सा केन्द्र में विभिन्न प्रकार के मनोरोगी आते हैं और उनका सफलतापूर्वक उपचार किया जाता है। अब तक इस क्लीनिक में 250 से अधिक मरीजों का सफल इलाज किया जा चुका है। इसमें ऐसे मरीज भी शामिल हैं, जो बारह वर्षों से अनिद्रा से परेशान थे।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

विभागीय उपलब्धियाँ

1. लंदन में मनोचिकित्सा के क्षेत्र में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे डॉ. चिन्मय पण्ड्या द्वारा 'संज्ञानात्मक व्यवहारात्मक चिकित्सा एवं ध्यान का महत्व' विषय पर व्याख्यान।

2. आस्ट्रेलिया की जानी–मानी मनोचिकित्सक डॉ. शैलजा चतुर्वेदी एवं हैदराबाद की प्राणिक हीलिंग विशेषज्ञ श्रीमती स्वर्णमाला द्वारा व्याख्यान श्रृंखला।

3. प्रो. ओ.पी. मिश्र की योग्यताओं और दक्षताओं के फलस्वरूप उन्हें उत्तरांचल लोक सेवा आयोग एवं संघ लोक सेवा आयोग में, चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ, रूहेलखंड विवि बरेली तथा हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विवि श्रीनगर की रिसर्च डिग्री कमेटी तथा उपरोक्त तीनों विश्वविद्यालयों की बोर्ड ऑफ स्टडीज में एवं भारत सरकार के इंडियन काउंसिल आफ सोशल रिसर्च के विभिन्न प्रोजेक्ट्स के मूल्यांकन हेतु विशेषज्ञ के रूप में नियुक्ति किया गया।

4. ओ.पी. मिश्र की रूहेलखंड विश्वविद्यालय की चयन समिति में भी विशेष के रूप में नियुक्ति हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वर्णिम संभावनाएँ

मनोविज्ञान विभाग के उत्तीर्ण विद्यार्थी वर्तमान में अस्पतालों, शिक्षण संस्थाओं एवं मानसिक मन्दता संस्थानों में मनोवैज्ञानिक एवं परामर्शदता के रूप में नियुक्त हैं। इस प्रशिक्षण को प्राप्त करने के बाद विद्यार्थी इस योग्य हो जाता है कि वह स्वयं अपना क्लीनिक स्थापित कर मनोरोगियों को उचित परामर्श देकर सम्मानपूर्वक अपना जीवनयापन कर सके तथा पीड़ितों की सेवा के असुअवसर का लाभ उठा सके।

पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग –

जब–जब समाज में आदर्शवादी मान्यताओं को चोट पहुँचायी गयी, राष्ट्र संकटों से घिरा, लोकमानस विचलित हुआ, तब–तब पत्रकारिता ने अपनी अहम् जिम्मेदारी निभायी है। गांधी जी ने इसे आत्मबल पर आधारित अपने अनूठे अहिंसक युद्ध का माध्यम बनाया, तो श्रीअरविन्द ने इसे युवा मन में क्रांति के बीज बोने के साधन के रूप में आत्मसात् किया। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलपिता पं. श्रीराम शर्मा 'आचार्य' ने भी प्रखर दैनिक 'सैनिक' के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम के यज्ञ में अपनी आहुति डाली। दीप यज्ञ हो या दीवार लेखन, अखंड ज्योति हो या प्रज्ञा अभियान पाक्षिक, पत्र से प्रेष्य के हृदय को स्पर्श करना हो या जनसंचार माध्यमों से युग परिवर्तन की उद्घोषणा, आचार्यश्री का अनूठा जनसंचार युग परिवर्तन का माध्यम बनता रहा है।

आज तकनीक के क्षेत्र में शिखर छूने के बावजूद पत्रकारिता की पवित्रता मलिन पड़ती जा रही है। आदर्श के अभाव में वह केवल समाज का दर्पण भर बन बैठी है। मूल्यनिष्ठा के क्षेत्र में इस दुर्घटना के समय आचार्यश्री का यह विचार आज और भी प्रासंगिक हो जाते हैं कि नवयुग आयेगा तो विचार शोधन द्वारा, क्रांति होगी तो वह लहू और लोहे से नहीं, विचारों की विचारों से काट द्वारा। आचार्य श्री के अनुसार यह युग आध्यात्मिक साम्यवाद का होगा, जिसके लिए सृजन धर्मी संवेदनशील कलम को महती भूमिका निभानी है। वर्तमान युग में किशोंरों और युवाओं के लिए प्रेरणास्त्रोत बन चुके महामहिम डा.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के विचार भी कुछ ऐसे ही है। "देश में सृजनात्मक क्षमता वाले नेताओं का अनुपात जितना ज्यादा होगा, विकसित भारत के नवनिर्माण के सपने को सच करनेकी कोशिशों में सफलता मिलने की सम्भावनायें उतनी अधिक होंगी। इसमें मीडिया को साझीदार बनने के साथ–साथ राष्ट्रीय विकास में सकारात्मक आलोचक की भूमिका निभानी होगी। वस्तुतः विकासपरक संचार जैसी जनसंचार की नयी अवधारणाएँ पत्रकारिता को उसके मूल लक्ष्य से जोड़ने में अहम् भूमिका निभा रही हैं। इन्हीं अवधाराणाओं के साथ विश्वविद्यालय में आरंभ पत्रकारिता एवं जनसंचार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विभाग का प्रसास है कि सृजनशील संचारकर्मियों एवं संवेदनशील प्रखर पत्रकारों के रूप में राष्ट्र के चरणों में प्रतिभा पुष्प अर्पित किये जा सकें।

विभागीय संसाधन एवं सहयोग–

विशाल योजना के अनुरूप विद्यार्थियों को प्रशिक्षित करने के लिए विभाग में आधुनिक तकनीकों से युक्त एक मीडिया लैब हैं, जिसमें 21 कम्प्यूटर, स्लाइड प्रोजेक्टर, हैंडीकैम, डिश चैनेलों से सुसज्जित टेलीविजन आदि शामिल है। इनके माध्यम से विभाग के अनुभवी प्रशिक्षण छात्र–छात्राओं को प्रशिक्षित करते हैं। के विशेष प्रशिक्षण के लिए आधुनिकता संसाधनों से युक्त शांतिकुंज का मीडिया प्रभाग सतत सक्रिय रहता है। इस विभाग का अपना आडियो एवं वीडियों प्रोडक्शन रूम है। प्रज्ञा चैनल, सामाजिक मुद्दों से जुड़ी वीडियों पत्रिका युग प्रवाह, 'कम्युनिटी रेडियो' द्वारा भी विद्यार्थियों के प्रशिक्षण में मदद मिलेगी। निकट भविष्य में विभागीय स्टूडियो सहित प्रशिक्षण से जुडा समग्र तंत्र विकसित करने की भी योजना है। विभाग में ही समाचार पत्रों से संदर्भित संदर्भ कक्ष भी विकसित किया गया है, जिसमें छात्र अपने विषय से जुड़े समाचार, आलेखों आदि का संकलन करते हैं। यह सामग्री एवं जनसंचार विभाग के विद्यार्थियों के अध्ययन, लेखन एवं संपादन के लिए प्राणसंचार करती है।

www.vicharkrantibooks.org

अतिथि विशेषज्ञों द्वारा प्रशिक्षण–

मीडिया जगत से जुड़े राष्ट्रीय स्तर के प्रतिनिधियों को अतिथि शिक्षक के रूप में विभाग द्वारा आमंत्रित करके विद्यार्थियों को समय–समय पर उनके अनुभवों का लाभ दिलाने की योजना रखी गयी है। इसके अन्तर्गत अब तक विभाग में साइबर जर्नलिस्ट एवं टेलीविजन पत्रकार अरूण आनंद, अमिताभ चक्रवर्ती, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, श्रीमयंक जी, प्रो. शिवाजी सरकार, आई.आई. एम.सी. दिल्ली, डॉ. हेमंत जोशी, आई.आई एम.सी. दिल्ली, श्रीमती मंजरी जोशी, समाचार वाचिका दूरदर्शन दिल्ली के जाने माने पत्रकार रवीन्द्र अरजरिया, प्रिंट तथा इलेक्ट्रानिक मीडिया, डॉ एम एस शुक्ला रेडियो पत्रकारिता, डॉ. सुभाष शर्मा, आर्थिक प्रभारी लोकमत समाचार, सहित मीडिया जगत की लगभग 1200 से अधिक स्थापित हस्ताक्षर विद्यार्थियों को मार्गदर्शन दे चुके है।

पाठ्यक्रम की विशिष्टताएँ–

विभाग में चल रहे पत्रकारिता एवं जनसंचार विषय में एम.ए. पाठ्यक्रम पूर्णतया वैज्ञानिक है। पाठ्यक्रम में अवधारणा एवं प्रायोगिक कार्यों के बीच

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया गया है। संचार के तकनीकी पहलुओं पत्रकारिता के गौरवमयी अतीत, समग्र विकास के संचार के रिश्ते आदि की जानकारी के अलावा इसमें समाचार लेखन, संपादन, अनुवाद, रेडियो–टीवी–वेब जर्नलिज्म की उनको विधिवत जानकारी दी जाती है। साथ ही राष्ट्रीय राजनीतिक प्रणाली, संवैधानिक परंपरा का चिंतन–विश्लेषण की दृष्टि जाग्रत करने पर जोर दिया जाता है। पाठ्यक्रम में छात्र–छात्राओं की नगरीय, ग्रामीण एवं मलिन बस्तियों के अतिरिक्त धार्मिक, शैक्षणिक संस्थानों का भ्रमण, सर्वेक्षण कराना आदि भी शामिल हैं।

छात्रों द्वारा किये गये अन्य प्रयास–

पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के विद्यार्थियों द्वारा दिल्ली के कनाट प्लेस, 10 से अधिक व्यापारिक, धार्मिक संस्थानों एवं मलिन बस्तियों की समस्याओं पर प्रोजेक्ट बनाये गये। तीर्थ स्थलों जैसे हरिद्वार में हरि की पैड़ी के सौंदर्यीकरण की विश्लेषणानात्मक रिपोर्टिंग भी की गयी। व्यापार क्षेत्र की कठिनाइयां एवं उनका समाधान, वंदेमातरम्, मीडिया एवं समाज, भंमडलीकरण, नारी एवं विज्ञापन, मीडिया में बाजारवाद, पत्रकारिता दस वर्ष बाद जैसे 35 से अधिक विषयों पर कार्यशालायें सम्पन्न हो चुकी हैं।

www.vicharkrantibooks.org

व्यक्तित्व विकास के अन्य प्रयोग–

विभाग के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के बीच परस्पर अपनत्व भरे संबंधों से शिक्षण एवं व्यक्तित्व विकास में मदद मिलती है। इस क्रम में छात्रों एवं शिक्षकों का जन्मदिन विभाग में ही सामूहिक मनाने की परम्परा है। जन्मदिन उत्सव में आने वाले खर्च के लिए विभाग में एक कोष रखा गया है, जिसमें सभी सदस्य प्रतिमाह 5–5 रूपयें जमा करते हैं। इस राशि का लेखा विभाग के ही विद्यार्थी अपने स्तर से देखते हैं। विभागीय परिसर में प्रतिमाह सामूहिक श्रमदान की व्यवस्था है। इसके अतिरिक्त सामूहिक ध्यान, स्वाध्याय आदि की भी व्यवस्था है।

भावी योजनाएँ एवं संभावनाएँ–

समाज में परिवर्तन जनसहभागिता बिना संभव नहीं। नागरिक पत्रकारिता, ग्रामीण पत्रकारिता, सामुदायिक पत्रकारिता इसी सहभागिता के सहारे चलती हैं। संपूर्ण भारत में प्रत्येक 20 किमी के परितः एक मीडिया केन्द्र की स्थापना करना विभागीय संकल्प में है। इस केन्द्र का कार्य होगा कि इस क्षेत्र के हर जनसमुदाय की पीड़ा–कठिनाइयों से जुड़कर उसका समाधान निकाले, तथा समाज में परस्पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पारिवारिकता विकसित करें।

एक आकलन के मुताबिक देश को 25 हजार युवा पत्रकारों की तुरंत आवश्यकता है। इस हेतु विश्वविद्यालय परिसर में अगले दिनों मीडिया से जुड़े कई प्रकार के डिप्लोमा कोर्स चलाये जाने प्रस्तावित हैं। स्नातक स्तर पर भी इस विषय को नियोजित करना शामिल है। इतने से भी लक्ष्यपूर्ति संभव नहीं दिखती। अतः इस विश्वविद्यालय के घटक महिविद्यालयों में भी यह कोर्स शुरू करने की योजना है। अपितु, नवगठित मीडिया केन्द्रों को भी प्रशिक्षण केन्द्र के रूप में विकसित करने की आवश्यकता पड़ेगी। यह विराट् संकल्पना पूज्यवर की ही है, जिसकी शुरूआत उन्होंने सन् 1946 में की थी। इस अभियान को प्रोत्साहित करने के लिए विभाग द्वारा शांतिकुंज मीडिया प्रभाग को केन्द्र में रखकर एक पत्रकारिता परिषद का गठन किया है।

वस्तुतः शिशु अवस्था का यह पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग भविष्य का विराट् वट वृक्ष अपने में संजोकर आगे बढ़ रहा है, जो निश्चित ही 'मानव में देवत्व के उदय एवं धरती पर स्वर्ग के अवतरण' का लक्ष्य तय करने में समर्थ होगा। विचारक्रांति के इस अभियान मे जनमानस से हर संभव योगदान की अपेक्षा रहेगी।

www.vicharkrantibooks.org

भारतीय संस्कृति एवं पर्यटन प्रबंधन विभाग –

संस्कृति किसी भी राष्ट्र के लिए सबसे अनमोल संपत्ति होती है। दुनिया में आज संस्कृतियों के संघर्ष की अवधारणा पेश की जा रही है जबकि हमारे कुलपिता पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का दृढ़ मत था– "संघर्ष संस्कृतियों के बीच नहीं संस्कृति और अपसंस्कृति के बीच होता है।" मौनमहाभारत के इस काल में भारतीय संस्कृति सम्पूर्ण विश्व में अत्यंत अपेक्षा भरी दृष्टि से देखी जा रही है। ऐसे में राष्ट्र के हर नागरिक के लिए अपनी शक्ति–अपनी संस्कृति का ज्ञान अत्यंत महत्वपूर्ण हो गया है।

दूसरी तरफ पर्यटन का संस्कृति से सीधा नाता है। सदियों से तीर्थ यात्रा एवं प्रव्रज्या के रूप में पर्यटन का एक उद्देश्यपरक स्वरूप भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है। वृहत्तर भारत का निर्माण इस पर्यटन द्वारा ही संभव हो सका। दूसरी तरफ आज कुछ स्थानों पर आधुनिक पर्यटन के नाम पर अपसंस्कृति फैलने के समाचार समाज को चिंतित कर रहे हैं। यह कहना गलता होगा कि यह विदेशियों की अपेक्षा है, सत्य यह है कि संभवतः हम ही अपनी संस्कृति की मूलभूत विशिष्टताओं को रूचिकर रूप में प्रस्तुत नहीं कर पा रहे हैं। आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, ग्रामीण, चिकित्सा एवं प्राकृतिक पर्यटन जैसे स्वरूप निश्चित ही हमारे लिए नयी संभावनाओं को जन्म दे रहे हैं। इसके अतिरिक्त रोजगार संकट के इस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

युग में पर्यटन अत्यंत आश्वस्त करने वाले क्षेत्र के रूप में उभरा है। इन समस्त स्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए ही वर्ष 2003 में देव संस्कृति विश्वविद्यालय में भारतीय संस्कृति एवं पर्यटन प्रबंधन विभाग का शुभारांभ किया गया।

पाठ्यक्रम की विशिष्टताएँ –

विभाग के अन्तर्गत दो पाठ्यक्रम चलते हैं–

(1) बी.ए. त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम (2) एम. ए. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम

इनमें भारतीय संस्कृति से सम्बंधित विषयों के अतिरिक्त प्रबंधन (मैनेजमेंट), होटल प्रबंधन, टूर एवं ट्रेवेल, साहसिक, आध्यात्मिक, प्राकृतिक, सांस्कृतिक एवं ग्रामीण पर्यटन आदि सम्मिलित है। इसमें नेट एवं प्रतियोगी परीक्षाओं के पाठ्यक्रम का भी समावेश है। साथ ही एक रिसर्च प्रोजेक्ट एव एक लघु–शोध प्रबंध का प्रावधान है। इस पाठ्यक्रम के पश्चात् विद्यार्थी लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं में भी भाग ले सकता है। इस विभाग से संबंधित चार शोध प्रबंध कार्य प्राच्य विषय संकाय के अन्तर्गत चल रहे हैं एवं साम॰ विद्यार्थियों का चयन पी–एच.डी. के लिए हुआ है।

उपलब्ध सुविधाएँ –

(1) व्यावहारिक प्रशिक्षण के लिए राज्यस्तरीय एवं राष्ट्रीय स्तरीय के शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन।

(2) समय–समय पर विशेषज्ञों के अतिथि व्याख्यान एवं कार्यशालाएँ।

(3) व्यावहारिक प्रशिक्षण देने के लिए टूर एवं ट्रेवेल प्रयोगशाला।

(4) कम्प्यूटर प्रयोगशाला एवं न्यूनतम शुल्क में इन्टरनेट सुविधाएँ।

(5) भारतीय संस्कृति एवं पर्यटन प्रबंधन से संबंधिति विभिन्न विषयों पर शोध की सुविधा।

स्वर्णिम संभावनाएँ–

(1) पर्यटन व संस्कृति मंत्रालयों एवं तत्सम्बंधित विभागों में महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्ति।

(2) उच्च शिक्षा विभाग में भारतीय संस्कृति एवं पर्यटन के प्रवक्त पदों पर नियुक्ति।

(3) सांस्कृतिक, स्वास्थ्य, आर्थिक, ग्रामीण आध्यात्मिक क्षेत्र में शोध पर कार्य के सुअवसर।

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(4) एयर लाइन्स एवं सहयोगी संस्थाओं में विभिन्न पदों पर नियुक्ति।
(5) बैंकिग के क्षेत्र में सहयोगी पदों पर नियुक्ति।
(6) मैनेजमेंट के क्षेत्र में विविध अवसर।
(7) निली ट्रैवल एजेन्सी का संचालन।
(8) टूर ऑपरेटर व गाइड के रूप में निजी कार्य।
(9) टूर प्रबंधन के रूप में सेवाएँ।
(10) होटल के क्षेत्र में विभिन्न पदों पर सेवा के अवसर।
(11) साहसिक पर्यटन के क्षेत्र में प्रयास व अन्यों के प्रेरणा के अवसर।

भारतीय संस्कृति एवं पर्यटन प्रबंधन की उपलब्धियाँ एवं योगदान—

(1) भारतीय संस्कृति एवं पर्यटन प्रबंधन विभाग द्वारा उत्तरांचल, राजस्थान, नयी दिल्ली एवं उ.प्र. के मथुरा, वृन्दावन आगरा आदि क्षेत्रों में शैक्षणिक यात्रा का आयोजन।
(2) पर्यटन दिवस पर विशिष्ट कार्यक्रमों का आयोजन।
(3) यात्रा व्यवसाय, एयर टिकटिंग, फरानेंस मैनेजमेंट पर सेमिनार का आयोजन।
(4) गढ़वाल मोटर्स आर्गनाइजेशन द्वारा विभाग के विद्यार्थियों उमाकांत इंदौलिया एंव अरुणेश पाराशर को चार धाम यात्रा हेतु टूर मैनेजर का विशिष्ट प्रशिक्षण।
(5) सितम्बर, 2005 में आयोजित राष्ट्रीय स्तरीय योग प्रतियोगिता उदयपुर, राजस्थान में छात्रों का चयन।
(6) दिसम्बर, 2005 में पन्तनगर में राष्ट्रीय सेवायोजना के सांस्कृतिक कार्यक्रम 'उत्तरांचल प्रतियोगिता' में अंजलि, गीता, संगीता को प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त।
(7) जून, 2006 में इस विभाग के 14 पास आउट विद्यार्थी कैम्पस इंटरव्यू में इण्डियन एयरलाइन्स की एस्ट्राकान बैंक साल्यूसन लिमिटेड कम्पनी, दिल्ली द्वारा कस्टमर केयर एक्जीक्यूटिव पद पर चयनित।

धर्म विज्ञान विभाग —

धर्म और जीवन का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। धर्म मनुश्य के लिए प्राण वायु की तरह आवश्यक ओर अनिवार्य है। विज्ञान सम्मत धर्म, मनुष्य के व्यक्तित्व को श्रेष्ठ और कृत्य को आदर्शवादी बनाता है। हमारे ऋषि अध्यात्म विज्ञान के वैज्ञानिक थे। जीवन के नियमों के खोजकर्ता थे। इन नियमों पर चलकर मनुष्य भौतिक व आध्यात्मिक जीवन को सफल, सुखद और प्रगतिशील बना सकता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन की इस विद्या का सिखाने वाली विधा का नाम 'धर्म विज्ञान' है।

धर्म का सच्चा स्वरूप जहाँ अनुपम आनंद की अनुभूति कराता है वहीं धर्म की गलत व्याख्या ने अतीत से लेकर आज तक अनेक बार धरती की सही व्याख्या की आवश्यकता और अधिक बढ जाती है। इस धर्तप्राण देश में सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन का प्रमुख माध्यम धर्म ही हो सकता है। इन परिस्थितियों में आवश्यकता है, प्रगतिशील तथा विज्ञान सम्मत धर्म की। यही धर्म मनुष्य को महामानव और देवमानव बनाने में समर्थ हैं

आज जब दुनिया के अनेक प्रमुख विश्वविद्यालयों– कैम्ब्रिज और ऑक्सफोर्ड आदि में धर्म विज्ञान को महत्व दिया जा रहा है, देवभूमि भारत तो इस पर विशिष्ट ध्यान देने की आवश्यकता है। इसी अवधारणा के साथ देव संस्कृति विश्वविद्यालय में धर्म विभाग का श्रीगणेश किया गया।

पाठ्यक्रम की विशिष्टताएँ –

इस छः माह के प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम में सनातन, ईसाई, इस्लाम, सिख, जैन और बौद्ध धर्म के विषय में ज्ञानवर्द्धन के साथ योग, आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा, प्राण चिकित्सा, एक्यूप्रेशर, ज्योतिष, प्रवचन कला, जीवन जीने की कला तथा संगीत का विधिवत शिक्षण दिया जाता है। धर्म विज्ञान विभाग में जहाँ एक ओर छात्र–छात्राओं को धर्म के प्रगतिशील और विज्ञान सम्मत स्वरूप समाज में धर्म की स्थापना के लिए इसके व्यावहारिक पक्ष पर भी प्रकाश डाला जाता है। स्वावलम्बी बनने के साथ–साथ व्यक्तित्व के गठन, सुंसंस्कारी बनने, सफल पारिवारिक व भौतिक जीवन जीने तथा राष्ट्र संस्कृति को ऊँचा उठाने की दृष्टि से यह पाठ्यक्रम बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है। समय की मांग और छात्र–छात्राओं के फीडबैक को ध्यान में रखकर अगले बैच से योग और आयुर्वेद के उपयोगी अंश को ओर विस्तृत रूप में पढ़ाने का निर्णय लिया गया है।

उपलब्ध सुविधाएँ –

(1) सर्वधर्म समभाव के आधार प्राचीन पद्धति के अनुसार विशिष्ट अध्यापन कक्ष।
(2) विभिन्न धर्मों के आराधना स्थलों में जाकर उनकी अर्चना पद्धति समझना।
(3) विभिन्न धर्मों से सम्बन्धित पवित्र वृक्षों की वाटिकाएँ।
(4) प्राचीन काल के गौरव की याद दिलाते ज्योतिर्विज्ञान के विशालकाय यंत्र।
(5) संगीत पर ध्यान करने के लिए विशिष्ट मुक्ताकाशीय परिसर।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विभागीय उपलब्धियाँ –

(1) विभाग के समन्वयक श्री दुर्गेश द्विवेदी द्वारा 'यज्ञ–मंत्रार्थ संदर्शिका' पुस्तक का लेखन।

(2) विभाग के वरिष्ठ प्रवक्ता श्री महेन्द्र शर्मा द्वारा 'ज्योतिर्विज्ञान : एक परिचय' पुस्तक का लेखन।

(3) अक्टूबर माह में अतिथि प्रवक्ता के रूप में दर्शनशास्त्र के प्रसिद्ध विद्वान् डा. एच.एन. मिश्र द्वारा बौद्ध दर्शन और अद्वैत दर्शन विषय पर लेखन।

(4) विश्वविद्यालय में धर्म विज्ञान विभाग द्वारा प्राण चिकित्सा विषय पर कार्यशालाओं का आयोजन।

स्वर्णिम संभावनाएँ–

इस पाठ्यक्रम में प्रवीण होकर उत्तीर्ण छात्र–छात्राओं के आदर्शनिष्ठ जीवनयापन की राहें स्वतः प्रकाशित होने लगती हैं। धर्म विज्ञान पढ़े हुए छात्र सेना में सम्मानित पद पर जा सकते हैं। इसके अलावा सरकारी–गैर सरकारी संस्थानों (स्कूल, कॉलेज प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र, योग चिकित्सा केन्द्र आदि) में नैतिक शिक्षा अध्यापक, योग प्रशिक्षण, जीवन जीने की कला के प्रशिक्षण के रूप में तथा देव संस्कृति विश्वविद्यालय, विचार क्रान्ति अभियान की गतिविधियों से जुड़कर अपनी आजीविका सँवार सकते है एवं समाज को बहुत कुछ दे सकते हैं।

जो शिक्षा बेरोजगार और व्यक्तित्वहीन नागरिकों की भीड़ जमा करती हो, वह निरर्थक है। आज बेरोजगारी के युग में भी ईमानदार, देशभक्त, योग्य, कर्मठ तथा चरित्रनिष्ठ व्यक्तियों की बहुत माँग है। विभाग के छात्र–छात्राओं में योग्यता के साथ इन गुणों का भी विकास हो, विश्वविद्यालय द्वारा इस पर विशेष ध्यान दिया जाता है। यही कारण है कि विभाग से पढ़कर निकले छात्र–छात्राओं को सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थायें सम्मानजनक मासिक आय पर नियुक्ति के अवसर प्रदान कर रही है।

समग्र स्वास्थ्य प्रबंधन विभाग

मनुष्य की पहली और सर्वाधिक महत्वपूर्ण आवश्यकता उसका स्वास्थ्य है, क्योंकि यही जीवन के सभी उद्देश्यों की पूर्ति करा सकता है। प्राचीन और नवीन शोधों से यह सिद्ध हो गया है कि मनुष्य प्रकृति के जितना निकट होकर इसके नियमों के अनुरूप जीवनयापन करेगा, उतनी ही लम्बी आयु वह प्राप्त करेगा। कृत्रिमता से भरा जीवन सिर्फ शारीरिक–मानसिक–आर्थिक कष्ट ही लाएगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दुनिया का यह दुर्भाग्य है कि तमाम वैज्ञानिक प्रगति के बावजूद भी रोगों का कहर कम होने का नाम नहीं ले रहा है। उदाहरण के तौर पर भारत में प्रत्येक वर्ष लगभग 20 लाख लोग तपोदिक से संक्रमित होते हैं, जिसमें 4.50 लाख जिंदगियों को मौत निगल लेती है। इस रोग पर हर वर्ष लगभग 12,000 करोड़ रूपये का खर्च किया जाता है। इसी प्रकार यदि हम अन्य बीमारियों के आंकड़े जोड़ें तो पाएँगे कि आर्थिक आय का काफी बड़ा हिस्सा स्वास्थ्य रक्षण में ही निकल जाता है। दूसरी तरफ हमारे देश की आधुनिक चिकित्सा पद्धतियाँ आम आदमी की पहुँच से बाहर निकल गई हैं। ऐसे में वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों की ओर मुड़ना आम आदमी की जरूरत बन गई हैं। यह सोचना भूल होगी कि वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियाँ कम प्रभावी हैं। हमारे प्राचीन चिकित्सकीय ज्ञान की प्रभावोत्पादकता को देखते हुए इसमें विदेशियों का विश्वास बढ़ता जा रहा है। ऐसे में यह आवश्यक है कि हम अपने प्राचीन चिकित्सकीय ज्ञान की महत्ता समझें और उसकी मदद लें।

इस ज्ञान की एक अहम विशेषता यह है कि इसका जोर इस बात पर है कि व्यक्ति बीमारी की गिरफ्त में ही न आये यह इसके लिए व्यक्ति के मानसिक, शारीरिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य यानी समग्र रूप से स्वस्थ रहने पर विशेष ध्यान देता है। इसके लिए आयुर्वेद में अद्भुत ज्ञान भरा पड़ा है। प्राचीन काल में यह भी चिकित्सा पद्धति का अत्यंत महत्वपूर्ण भाग था, जिसकी आज यज्ञोपैथी के नाम से वैज्ञानिकों के बीच स्वीकार्यता बढ़ती जा रही है। यज्ञ हो या आयुर्वेद, इनकी एक प्रमुख विशिष्टता इनका सार्वजनिक रूप से सुलभ होना है। इन्हीं के ज्ञान को जन–जन में पहुँचाकर स्वास्थ्य के क्षेत्र में आधारभूत क्रांतिकारी कदम उठाना ही विश्वविद्यालय के समग्र स्वास्थ्य प्रबन्धन विभाग का उद्देश्य है।

www.vicharkrantibooks.org

पाठ्यक्रम की विशिष्टताएँ–

(1) विद्यार्थियों को इस प्रकार प्रशिक्षण देना कि वे सम्पूर्ण स्वास्थ्य की अवधारणा से अवगत होकर अपने आसपास के वातावरण में उपलब्ध वस्तुओं वनस्पतियों, वृक्षों, पुष्पों आदि का प्रयोग करके रोग निवारण कर सकें।

(2) तुलसी, हल्दी, नीम, भृंगराज, सदाबहार जैसी अनमोल औषधियों की मदद से तेल, चूर्ण, अवलेह आदि घरेलू स्तर पर स्वयं ही तैयार कर सकें।

(3) विद्यार्थियों को यह ज्ञान दिया जा सके के यज्ञ एक धार्मिक कर्मकांड ही नही एक सफल–सक्षम वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति है, जिसके माध्यम से आयुर्वेदिक औषधियाँ औषधीय धूम्र के रूप में शरीर में प्रवेश कर रोगों का विनाश करती हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(4) आज बेरोजगारी के समय में विद्यार्थियों में स्वरोजगार की प्रवृत्ति को विकसित करना और उन्हें आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रशिक्षण देना।

उपलब्ध सुविधाएँ

(1) विभाग द्वारा 28 प्रकार की रोग निवारक हवन सामग्रियाँ का निर्माण प्रायोगिक स्तर पर चल रहा है, जिसके चमत्कारिक परिणाम उपलब्ध हुए हैं। इसी क्रम में चिकनगुनिया नाम महामारी पर इस सामग्री का प्रयोग जालौर (राजस्थान) के भीलमाल इलाके में किया गया जिसमें आशातीत सफलता मिली।

(2) देहरादून में आयोजित राष्ट्रीय स्तर के हर्बल एक्सपो, 2005 में विभाग की प्रदर्शनी को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। महामहिम राज्यपाल विशेष रूप से विभाग के स्टॉल पर पधारे तथा विश्वविद्यालय को प्रशस्ति–पत्र व प्रतीक चिन्ह से सम्मानित किया।

(3) विद्यार्थियों द्वारा च्यवनप्राश, छुहारा पाक, अश्वगंधा पाक, हर्बल काफी, केश कल्प पाउडर तथा दर्द निवारक तेल का निर्माण अक्टूबर, 05 से आरंभ।

(4) छात्रों द्वारा देश के विभिन्न हिस्सों में समग्र स्वास्थ्य की अवधारणा से अवगत कराने एवं आयुर्वेदिक औषधियों का ज्ञान प्रदान करने के लिए कई विशेष शिविरों का आयोजन।

स्वर्णिम संभावनाएँ –

विद्यार्थियों को इस स्तर का प्रशिक्षण दिया जाता है कि वे युग निर्माण मिशन या व्यावसायिक संस्थानों से स्वास्थ्य संरक्षक के रूप में जुड़ सकते हैं। इसके अतिरिक्त वह अत्यंत कम लागत में अपना कुटीर उद्योग भी आरंभ कर सकते हैं।

समाज को योगदान –

समाज को योग्य स्वास्थ्य संरक्षक उपलब्ध कराने के अलावा विभाग में समाज के प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन निःशुल्क चिकित्सकीय परामर्श की सुविधा उपलब्ध है। साथ ही ग्रामीण एवं पर्वतीय दुर्गम स्थानों की समस्याओं को देखते हुए इन क्षेत्रों में विशेष चिकित्सकीय शिविर आयोजित किये जाते हैं। विभाग द्वारा विभिन्न रोगों के निवारण के लिए तैयार औषधीय हवन सामग्री से भी समाज को प्रत्यक्ष–परोक्ष लाभ पहुँचा है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

घरेलू चिकित्सा के प्रभावशाली सूत्र

परम्परागत स्वास्थ्य संरक्षण हमारी भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषता रही है। हमारे पूर्वजों के पास ज्ञान–विज्ञान का अकूत भण्डार था, जिनका उपयोग वह जीवन रक्षा तथा दीर्घायुष्य हेतु करते थे। यह ज्ञान–विज्ञान उन्हें ऋषियों–मुनियों, पीर पैगम्बरों से मिला था। घरेलू मसालों का प्रयोग एक ओर जहाँ स्वाद, सुगंध व पौष्टिकता के लिये होता था, वहीं दूसरी ओर विभिन्न प्रकार की बीमारियों में भी वही मसाले सहजता से प्रयुक्त किये जाते थे। घरेलू मसालों से चिकित्सा सम्बन्धी दैनिक जीवन में उपयोगी कुछ सूत्र (फार्मूले) अपनी आँगनबाड़ी कार्यकर्ती बहिनों के उपयोग हेतु सस्नेह समर्पित हैं।

(1) बच्चों की सर्दी, खाँसी, जुकाम, सिरदर्द एवं गले की खराश हेतु काली मिर्च, पिप्पली, सोंठ के त्रिकुट का एक से डेढ़ ग्राम चूर्ण मधु (शहद) के साथ दिन में 2–3 बार लेने पर यह सभी प्रकार की गले की तकलीफों में रामबाण का काम करता है।

(2) बलगम, सर्दी, खाँसी में भुनी हुई हल्दी का चूर्ण मधु के साथ एक से दो ग्राम की मात्रा में लेना बेहद लाभप्रद होता है।

(3) भोजन के एक घण्टा पहले देशी हल्दी का आधा चम्मच चूर्ण जल के सथ लेने से सभी प्रकार के पेट के रोगों में बहुत फायदा होता है, विशेषकर बवासीर में।

(4) हल्दी का प्रयोग सौन्दर्य निखारने में तथा सभी मांगलिक कार्यों में सदैव से होता रहा है। चोट, दर्द, गठिया, वात इत्यादि में एक चम्मच हल्दी चूर्ण गर्म दूध में डालकर पीने से शीघ्र आराम होता है। हल्दी एंटीबायोटिक, एंटीसेप्टिक, एंटीएलर्जिक होने के कारण ही सभी रूपों सदैव से प्रयुक्त की जाती रही है।

(5) गले की सूजन, खांसी, कफ, मुख से दुर्गन्ध, आदि में लौंग चूसने से विशेष लाभ होता है।

(6) लौंग को घी में भूनकर चूसने से सूखी खांसी, सिर में दर्द, आवाज फटने में लाभ मिलता है। विशेषकार स्त्रियों में गर्भावस्था के प्रारंभिक 3 महीनों में जब मिचली/उल्टी ज्यादा आती है तब तवे पर लौंग भूनकर लेने से फायदा होता है।

(7) दांतों के दर्द हेतु लौंग का तेल लाभप्रद है। लौंग का पानी बुखार से पीड़ित लोगों तथा सद्यप्रसूता (बच्चे के जन्म के तुरंत बाद) बहिनों के लिये बहुत लाभदायक है।

(8) खड़ी धनिया एवं खड़ी सौंफ का शर्बत मस्तिष्क रोगो एवं गर्भावस्था में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बहुत फायदेमंद होता है।

(9) अदरक का रस एवं शहद समान मात्रा में सर्दी, जुकाम, खरास, कफ, सीने में शीतजन्य जकड़ाहट तथा बच्चों के टॉंसिल्स आदि में विशेष लाभकारी है।

(10) काली मिर्च एवं सोंठ का चूर्ण 2–3 ग्राम बराबर मात्रा में मक्खन या घी के साथ लेने पर सिरदर्द, कफ, खांसी, आवाज फटने व गले के दर्द में राहत दिलाता है। इसे दिन में 2 बार लेना चाहिए।

(11) आधा ग्राम पिप्पली में सेंधा नमक मिलाकर गुनगुने पानी से दिन में दो बार लेने से जमा हुआ कफ निकलता है। इससे खांसी व सर्दी में भी लाभ मिलता है।

(12) पेट दर्द में पुदीनें का रस चीनी या बताशे में रखकर लेने से अचूक लाभ होता है।

(13) बड़ों या बच्चों का पेट दुःखने, कब्ज रहने में भुनी हुई हींग की थोड़ी मात्रा जल के साथ लेने पर शीघ्र लाभ होता है। बच्चों का पेट फूलने और कब्ज होने पर हींग को पानी या कच्चे दूध में घिसकर नाभि के आसपास लेप करने से गैस–कब्जियत दूर होती है और पेट साफ होता है। किसी भी उम्र के स्त्री–पुरूष के लिये भारीपन, गैस बनना, पुराना कब्ज, दस्त, अपच में अजवाईन एवं हींग का प्रयोग लाभ दायक होता है।

(14) अजवायन चूर्ण व सेंधा नमक अजीर्ण में लाभदायक है। अजवायन और कालानमक नीबूं के ऊपर रखकर गर्म करके खाने से शीघ्र फायदा होता है।

(15) अजवायन सत्, कपूरसत्, पिपरमिंटसत् को मिलाकर उसके 3–4 बूंद बताशे में रखकर खिलाने से हैजे में तुरंत आराम होता है।

(16) पुरानी खांसी एवं अस्थमा में कफ अधिक आने पर अजवायन को पानी में उबालकर पीने अथवा इन्हें भूनकर उसका एक चम्मच चूर्ण लेने से कफ ढीला होकर आसानी से निकल जाता है।

(17) सूतिका रोगों में कष्टार्तव विशेष उपयोगी है। प्रसव के बाद अजवाईन का पानी या साबुत अजवायन के सेवन से गर्भाशय का संशोधन होता है, वात का शमन होता है और अग्नि सम रहती है।

(18) कुमारियों के लिए घृत कुमारी, घी कुंवार (एलोवेरा) प्रकृति का एक प्रमुख वरदान है। स्त्रियों के सम्पूर्ण रोंगों, समस्त विकारों में तथा मासिकजन्य तकलीफों में यह विशेष लाभदाय है। पाचन संस्थान, रक्तबह संस्थान, त्वचा के विकारों, मधुमेह, बवासीर सभी में यह उपयोगी है। इसको रस,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जैली, शर्बत, लड्डू, चूर्ण किसी भी रूप में प्रयुक्त किया जा सकता है। वर्तमान में सौन्दर्य प्रसाधन के क्षेत्र में कायाकल्प औषधि के रूप में इसका सबसे ज्यादा उपयोग होता है।

(19) सौंफ, मिश्री, खाने से मुंह की दुर्गन्ध दूर होती है, भोजन ठीक पचता है, मस्तिष्क शीतल रहता है।

(20) मैथी के पत्तों को घी में भूनकर खाने से आमातिसार मिटता है। जोडो के दर्द, कमर दर्द, मांसपेशीजन्य ऐंठन में मैथी तलकर इसका एक चम्मच चूर्ण दूध के साथ लेने से स्थाई लाभ होता है। प्रसव के बाद मेथी, अजवायन, सोंठ, हल्दी तथा गुड़ के लड्डू का सेवन करने से कमर दर्द, पेट में गैस, गर्भाशय की शुद्धि/संकोच एवं रक्तशुद्धि तथा स्तन्य वृद्धि होती है।

(21) मधुमेह में आधा चम्मच मेथी चूर्ण व आधा चम्मच कच्ची हल्दी पेट लेने से फायदा होता है।

(22) बार–बार उल्टी होने पर बड़ी इलायची के बीजों को भूनकर उसका आधा चम्मच चूर्ण और थोड़ा शहद दिन में तीन बार लेने से लाभ होता है। बड़ी इलायची को छिलके सहित भूनकर या पानी में उबालकर लेने से भी लाभ होता है। इससे उल्टी व मिचली में विशेष लाभ होता है।

(23) जीरा सर्वश्रेष्ठ पाचक है। वृद्धावस्था में जब भोजन पूर्णरूपोण चबाया न जा सके, तब भुने जीरे का आधा चम्मच चूर्ण भोजन के बाद गुनगुने पानी से लेने से पाचन अच्छी तरह होता है।

(24) जीरा चूर्ण एक ग्राम (भुना) पिप्पली एवं सोंठ को एक कप मट्ठे के साथ दिन में 3–4 बार लेने से निरंतर जलीय अतिसार (डायरिया) दस्त में फायदा होता है। गोदुग्ध का मट्ठा यदि मिल सके तो अति–उत्तम है।

(25) कटने पर, खून बहने पर फिटकरी का प्रयोग शीघ्र लाभकारी होता है। इससे त्वचा पर निशान नहीं बनता है, रक्त का बहना रुक जाता है।

(26) जल जाने पर कच्चे आलू को पीसकर लगाना तथा घृतकुमारी का गूदा लगाना लाभदायक होता है।

(27) बवासीर में फिटकरी युक्त गर्म पानी का बाह्यप्रयोग दर्द एवं मस्सों में जलन तथा सूजन को रोकता है। यह पानी को शुद्ध करने का सर्वश्रेष्ठ विकल्प है। फिटकरी व दालचीनी में टी.वी. के रोगाणुओं को खत्म करने की शक्ति है। इससे रोग प्रतिरोधक क्षमता की वृद्धि होती है। आधा चम्मच चूर्ण शहद के साथ लेना चाहिए।

(28) चेहरे पर झांई–मुहांसे, दाग धब्बे आदि में जायफल को कच्चे दूध में घिकर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लगाने से लाभ होता है। जायफल चूर्ण 125 से 150 मिलीग्राम गुनगुने पानी के साथ दिन में 2–3 बार लेने से दस्त (पानी की तरह बार–बार जलीय स्राव) में लाभ होता है।

(29) पके हुए देशी टमाटर प्रातः खाली पेट लेने से प्रतिरक्षा प्रणाली मजबूत होती है, विटानि 'सी' की प्राप्ति होती है तथा कैंसर कोशिकाओं की वृद्धि भी रुकती है।

(30) पके देशी टमाटर, सेंधा नमक और कालीमिर्च का चूर्ण मिलाकर सुबह खली पेट पर्याप्त मात्रा में लेने से पेट के कीड़े मरते हैं, पेट साफ होता है। मट्ठे के साथ एक चम्मच राई पीसकर पीने से पेट के कीड़े मर जाते है।

(31) बार–बार आंव आने पर बेल का गूदा दिन में 2–3 बार लेने से रोग ठीक होता है। अनार के छिलके का चूर्ण शहद के साथ 4–5 ग्राम की मात्रा में लेने से पेचिश/आंव ठीक होती है।

(32) अदरक में नींबू का रस और सेंधा नमक मिलाकर उसका भोजन से पहले सेवन करने से पाचन ठीक होता है। इससे गैस, भारीपन नहीं रहता।

(33) गैस ज्यादा बनने पर चाय या 'प्रज्ञापेय' बनाते समय उसमें एक तेजपत्र डाल देने से फायदा होता है।

(34) पका पपीता नियमित या ऋतु के अनुसार लेने उदर विकार एवं नेत्र विकारों में फायदा होता है। लीवर हेतु पपीते का सेवन फायदेमंद होता है।

(35) नित्य आंवले का सेवन करने से अथवा आंवले का रस या उसका चूर्ण एक चम्मच लेने से बुढ़ापा जल्दी नहीं आता। मांसपेशियाँ स्वस्थ और सुडौल रहती हैं। आंवाला किसी भी रूप में लेना सदैव लाभदायक होता है।

(36) सर्दियों में काले तिल का एवं बाजरे का प्रयोग लाभदायक होता है। बालें की वृद्धि हेतु काले तिल, आंवला व भृंगराज का प्रयोग उपयोगी है।

(37) अमरूद की पत्तियाँ या चमेली की पत्तियाँ चबाने पर मुंह के छालों में जल्दी आराम मिलता है। अमरूद विटामिन 'सी' का सबसे बढ़िया स्त्रोत है। सूखी खांसी एवं सर्दी में अमरूद भूनकर या उबालकर थोड़ा सेंधा नमक मिलाकर खाने से लाभ होता है।

(38) अमरूद की पत्तियाँ (मुलायम 10–12 पत्तियाँ) चबाकर खाने से पेट ठीक रहता है।

(39) दिन में कम से कम 10–12 ग्लास पानी पीने से सभी विकारों से रक्षा होती है। पेट के सभी रोगों में, कब्ज, अपच, मोटापा, बवासीर, मधुमेह में सुबह 2–3 गुनगुना शुद्ध जल पीना रामबाण सिद्ध होता है।

(40) नींबू पानी का सेवन प्रत्येक ऋतु में सभी रोगों से रक्षा करता है तथा त्वचा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की चमक बनी रहती है, भोजन का पाचन ठीक होता है, त्वचा के रोग नहीं होते।

(41) वर्षा व गरमी के मौसम में नींबू, नमक, चीनी व पानी का शरबत बनाकर उसका सेवन करने से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है, शरीर में निर्जलीकरण की क्रिया रुकती है।

(42) एक चम्मच हरड़ चूर्ण सेंधा नमक के साथ मिलाकर खाने से कफ का शमन, घी के साथ लेने से वात का शमन तथा चीनी (शक्कर) या गुड़ के साथ लेने से पित्त का शमन होता है।

(43) माईग्रेन (अर्द्ध–कपारि) के दर्द में जिस हिस्से में दर्द हो, उसके उल्टे तरफ की नाक में नींबू का दो बूंद रस डालते ही दर्द में आराम हो जाता है।

(44) गूलर के कच्चे फल के सेवन से श्वेत प्रदर (ल्यूकोरिया) में आराम मिलता है।

(45) आग से जल जाने पर तत्काल जले स्थान पर आलू के छिलके रखने से जलनप समाप्त होती है तथा घाव ठीक हो जाता है।

(46) कट जाने पर उस स्थान पर घी और शहद बराबर–बराबर मिलाकर लगाने से खून का बहना बन्द हो जाता है तथा संक्रामक रोगों से भी बचाव होता है।

(47) बालों में रूसी और जुंए हो जाने पर पान के पत्ते में कपूर पीस कर लगा लें, उसे सिर पर पूरी तरह बांध कर पाँच घण्टे के लिये छोड़ दें। रूसी तथा जुँए बिल्कुल नष्ट हो जायेंगे।

(48) मोटे लोगों के लिये खाने के बाद गुनगुना या गर्म जल घूंट–घूंट करके पीना बड़ा हितकारी होता है।

(49) आधा ग्राम सोंठ शहद के साथ दिन में दो बार लेने से आम का पाचन होता है, आंव एवं जोडों के दर्द में इससे बहुत लाभ होता है।

(50) किसी भी आहार का अधिक सेवन, हर समय भोजन, तला–भुना व बासी भोजन, गरिष्ठ भोजन, ज्यादा ठण्डा या ज्यादा गर्म भोजन सदैव रोग पैदा करता है। दो बार के भोजन के बीच कम से कम छः घण्टे का अन्तर अवश्य रखना चाहिए।

(51) सुस्वास्थ्य के लिये सबसे महत्वपूर्ण, सरल और अपने हाथ का उपाय–भोजन को खूब चबा–चबारक खाने से और भूख से थोड़ा कम खाने तथा पेट के 3 हिस्से (1) भोजन (2) जल (3) वायु के संचरण हेतु खाली रखने से रोग कभी पास नहीं भटकते है। रोटी–सब्जी–दाल के एक ग्राम को 24 बार चबाना चाहिये, चावल का कौर 10 और 12 बार चबाना चाहिये। इससे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अन्न की पूरी शरीर शक्ति को मिलती है। भोजन के बीच पानी पीना बहुत नुकसानदायक होता है। भोजन के आधा घण्टा पहले और खाने के एक घण्टा बाद यही जल अमृत की तरह काम करता है।

यह साबित हो चुका है कि यदि इतना कर लिया जाये तो कई रोगों से शरीर की रक्षा अपने आप हो जाती है। क्या खाएँ? कब खाएँ? कैसे खाएँ? के विषय में थोड़ा सा भी ध्यान देना अच्छे स्वास्थ्य के लिये बहुत लाभदायक होता है। महान चिन्तक, विचारक वल लेखक पं. श्रीराम शर्मा 'आचार्य' द्वारा इय विषय पर लिखी पुस्तकें समाज के लिये पथ–प्रदर्शक का काम करती है।

आशा है, हमारी आँगनबाड़ी बहिनें अपने क्षेत्र के शिशुओं, महिलाओं और अन्य भाईयोंके उत्तम स्वास्थ्य, आकर्षक सौन्दर्य और समृद्धि के लिये उनका ऊपर लिखे उपयोगी सूत्रों की जानकारी देकर जनसामान्य को लाभान्वित करेंगी तथा इन सूत्रों का अधिक से अधिक विस्तार अपने कार्यक्षेत्र में करेंगी।

ग्राम प्रबन्धन विभाग –

विभाग की स्थापना का लक्ष्य ग्राम विकास को वह दिशाधारा देना है, जिसकी भारत की मौजूदा परिस्थितियों को देखते हुए युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने संकल्पना की थी। इसके लिए पाठ्यक्रमों की संरचना करना, विभिन्न स्तर पर शिक्षण–प्रशिक्षण की व्यवस्था बनाना, अध्ययन सामग्री तैयार करना तथा जनता के सहयोग से जन–स्तर पर असली भारत अर्थात् गाँवों के विकास का तंत्र विकसित कर इसके लिए मॉडल विकसित करना (ग्राम तीर्थ की स्थापना) विभाग का उद्देश्य है।

गतिविधियाँ –

1. छात्रों के लिए छह माह के 'ग्राम प्रबंधन' प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम तथा ग्रामीण लोकसेवी कार्यकर्त्ताओं के लिए नौ दिवसीय एवं 45 दिवसीय स्वावलम्बी ग्राम्य विकास प्रशिक्षणों का संचालन।
2. प्रशिक्षणार्थियों को श्रम–आधारित ऐसे कुटीर उद्योगों का व्यावहारिक प्रशिक्षण देना, जो गाँव की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं तथा कम पढ़े–लिखे लोगों द्वारा न्यूनतम पूंजी से भी चलाए जा सकते हैं, ताकि प्रशिक्षणार्थी स्वयं स्वावलम्बी बन सकें और दूसरों को प्रेरित व प्रशिक्षित कर सकें।
3. प्रशिक्षणार्थियों को, विभागीय गोशाला स्थित–सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट परिसर में कूड़े–कचरे से विभिन्न विधियों द्वारा कम्पोस्ट खाद बनाना सिखाना यथा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

– गढ्डा विधि, नडेप विधि, वर्मी कम्पोस्टिंग, गोबर गैस स्लरी आदि, ताकि वे इसे टिकाऊ खेती, रोजगार, स्वच्छता अभियान के रूप में अपना सकें एवं औरों को भी सिखा सकें।

4. हरिद्वार के बहादराबाद विकासखण्ड में 5 गाँव गोद लेकर उनमें स्वावलम्बी ग्राम्य विकास का कार्य करना।
5. विभाग के क्षेत्रों में आने वाले परिजनों, दर्शकों व आगन्तुकों को ग्राम्य विकास, बेरोजगारी, कृषि, पशुपालन, स्वास्थ्य एवं व्यक्तित्व विकास सम्बंधी समस्याओं के समाधान हेतु नियमित परामर्श व मार्गदर्शन की व्यवस्था।
6. युगऋषि की ग्राम तीर्थ योजना (स्वावलम्बी ग्राम्य विकास) को साकार रूप देने हेतु क्षेत्रीय स्तर पर प्रशिक्षण की व्यवस्था के लिए जगह–जगह रचनात्मक प्रशिक्षण केन्द्रों की स्थापना व पुराने केन्द्रों का सुदृढ़ीकरण, प्रशिक्षण केन्द्रों की मॉनीटरिंग व मार्गदर्शन की व्यवस्था।
7. क्षेत्रों में जगह–जगह गोशालाओं की स्थापना कराना, प्रशिक्षित कार्यकर्त्ताओं द्वारा स्थापित नयी गोशालाओं को लगातार मार्गदर्शन देना तथा उन्हें स्वावलम्बी बनाने की ओर अग्रसर करना।
8. क्षेत्र में ग्राम तीर्थ योजना के कार्यक्रमों को गति देने, स्थानीय मार्गदर्शन व पर्यवेक्षण हेतु समय–समय पर विभागीय टोलियों का क्षेत्रीय भ्रमण आयोजित करना।
9. 45 दिवसीय ग्राम्य विकास प्रशिक्षण प्राप्त लोकसेवी कार्यकर्त्ताओं का 3 माह के समयदान हेतु क्षेत्रों में नियोजन करना तथा उनके द्वारा गाँव में रहकर 5–5 दिन के निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार प्रशिक्षण आयोजित कराना तथा उनकी मॉनीटरिंग करना।
10. सरकारी, गैरसरकारी संस्थाओं से पत्राचार तथा क्षेत्रीय परिजनों का पत्राचार एवं टेलीफोन से सतत् मार्गदर्शन करना।

विभाग में उपलब्ध सुविधाएँ –

- प्रायोगिक प्रशिक्षण हेतु गौमूत्र अर्क निर्माण प्रयोगशाला, कुटीर उत्पाद निर्माण प्रयोगशाला तथा तत्सम्बंधी शान्तिकुंज की स्थापित अन्य प्रयोगशालाएँ विभागीय पुस्तकालय।
- कृषि एवं पशुपालन के प्रायोगिक प्रशिक्षण हेतु सुव्यवस्थित कम्पोस्ट निर्माण (सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट), एक बड़ा गोबर गैस प्लांट एवं सुव्यवस्थित गौशाला।
- ग्राम्य विकास, बेरोजगारी, कृषि, पशुपालन, स्वास्थ्य एवं व्यक्तित्व विकास

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सम्बंधी परामर्श एवं समस्याओं पर मार्गदर्शन की सुविधा।

◆ योग्यता के अनुसार छह माह के 'ग्राम प्रबन्धन' पाठ्यक्रम, 45 दिवसीय लोकसेवी स्वावलम्बी ग्राम्य विकास प्रशिक्षण, 9 दिवसयी रचनात्मक प्रशिक्षण तथा 6 दिन के स्वावलम्बन सम्बंधी प्रशिक्षण की सुविधा।

◆ ग्राम्य विकास के विभिन्न कार्यक्रम संचालित करने के लिए देश के विभिन्न क्षेत्रों में दो सौ से अधिक 'गायत्री परिवार रचनात्मक ट्रस्टों' की स्थापना।

◆ देश के विभिन्न क्षेत्रों में चालीस से अधिक ग्राम्य विकास एवं स्वावलम्बन प्रशिक्षण केन्द्रों की स्थापना एवं वहाँ से ग्रामीणों के प्रशिक्षण की व्यवस्था।

◆ यहाँ से प्रशिक्षण प्राप्त कार्यकर्त्ताओं के माध्यम से क्षेत्रों में सौ से अधिक सार्वजनिक गोशालाएँ एवं एक हजार से अधिक व्यक्तिगत गोशालाएँ स्थापित।

◆ गोशाला स्थित 'सॉलिड वेस्ट मेनेजमेंट' यूनिट द्वारा विभिन्न कम्पोस्टिंग विधियों से इतनी जैविक खाद बनायी जा रही है कि शांतिकुंज व गायत्रीकुंज परिसरों के बागवानी विभाग की अधिकांश आवश्यकता पूरी हो सके।

◆ केंचुआ, खाद निर्माण का मैनुअल तैयार कर जनसामान्य को उपलब्ध कराने, खाद निर्माण प्रक्रिया को सरल व अधिक व्यावहारिक बनाने की व्यवस्था।

◆ विभाग द्वारा दिए गये प्रशिक्षण, अन्यत्र से दिलाये गये प्रशिक्षण तथा स्वावलम्बन की प्रकाशित की गई पुस्तकों के आधार पर अनेक लोगों ने अपने कुटीर उद्योग प्रारंभ कर रोजगार प्राप्त किया है।

◆ छह माह के सत्रोपरान्त तीन माह की इन्टर्नशिप (जनवरी–मार्च 2005, जुलाई–सितम्बर 2005, जनवरी–मार्च 2006) के दौरान लगभग नब्बे गाँवों में पाँच–पाँच दिन के स्वावलम्बी ग्राम्य विकास में पाँच–पाँच दिन के स्वावलम्बी ग्राम्य विकास के प्रशिक्षणों का आयोजन।

◆ हर दो माह बाद 45 दिन के प्रशिक्षण से निकले 2–2 कार्यकर्त्ताओं की पाँच से सात टोलियाँ देश के विभिन्न क्षेत्रों में 3 माह के समयदान में भेजी जा रही है। प्रत्येक टोली समयदान अवधि में दस से बारह गाँवों में पांच दिन के व्यावहारिक प्रशिक्षण वहीं रहकर दे कर रही है।

कम्प्यूटर साइंस विभाग –

अतीत के श्रेष्ठ मूल्यों का आधुनिक तकनीक के साथ सुन्दर संगम ही परिवर्तन की पहल कर सकता है। देव संस्कृति विश्वविद्यालय ने अपने कुलपिता की इस अवधारणा को साकार कर दिखाया है। यही कारण है कि यहाँ जहाँ अतीत की गौरव गाथा कहते धर्म विज्ञान एवं योग जैसे पाठ्यक्रम हैं, वहीं आधुनिक विश्व की अहम जरूरत कम्प्यूटर साइंस विभाग भी हैं। इस विभाग की यह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विशिष्टता है कि यह मात्र अपने विद्यार्थियों को ज्ञान देने तक सीमित नहीं रहता है बल्कि, यह विश्वविद्यालय को आधुनिक बनाने के साथ विभिन्न विभागों के आचार्यों एवं विद्यार्थियों को भी कम्प्यूटर दक्ष बनाने में संलग्न है।

पाठ्यक्रम की विशिष्टताएँ –

विशेष रूप से विभाग के इतिहास में एक नया अध्याय और जुड़ गया, जब जुलाई माह से बी.एससी. कम्प्यूटर साइंस कोर्स प्रारम्भ हुआ। यह पाँच वर्षीय इंटीग्रेटेड कोर्स है, जिसमें निष्णात् होने के पश्चात् छात्र–छात्राओं को एम.सी.ए. की उपाधि प्रदान किया जाना निर्धारित हुआ है। जाने–माने विद्वानों के परामर्श से विभागीय शिक्षकों ने बी.एस–सी. कम्प्यूटर का पाठ्यक्रम तैयार किया है। शिक्षण पद्धति में पारंपरिक पद्धतियों के एक आधुनिक तकनीकों का समावेश किया। छात्रों को Multimedia Presentation के द्वारा Lesson Plan अच्छे से समझाये जा रहे हैं। साथ ही Quiz का अनूठा प्रयोग इस हेतु किया गया।

उपलब्ध सुविधायें –

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

137 कम्प्यूटरों, लेजर प्रिंटर, स्कैनर आदि की सुविधा से युक्त दो प्रयोगशालायें। इंटरनेट सुविधा। V-sat के जरिये इंटरनेट सुविधा। प्रतिदिन की 20 मेगा बाइट डाउनलोड क्षमता वाला इंटरनेट विंडो एक्सप्लोरर। शोध को बढ़ावा देने के लिए रिसर्च ग्रुप, जिसके कन्वीनर श्री विपुल पटेल (अमेरिका) है, विश्वविद्यालय की वेब साइट www.dsv.org के अपडेशन हेतु विद्यार्थियों, आचार्यों एवं अन्य विशेषज्ञों की टीम।

स्वर्णिम सफलताएँ –

विश्वविद्यालय आज लगभग पूर्णतः कम्प्यूटरीकृत कर लिया गया है, जिससे कार्य की गुणवत्ता तथा कार्याविधि में गुणात्मक परिवर्तन आया है। विश्वविद्यालय में कम्प्यूटर का मेंटिनेंस विभाग द्वारा ही किया जाता है। विभिन्न विभागों में स्थापित कम्प्यूटर,आपस में अत्याधुनिक फाइबर ऑप्टिकल्स केबल के द्वारा नेटवर्किंग के जरिए जुड़ गये हैं। परिणाम स्वरूप कम्प्यूटरों के मध्य डाटा ट्रांसफर सुविधाजनक हो गया है। विश्वविद्यालय का एक याहू ग्रुप है, जो विश्व भर के विद्यार्थियों की इस विश्वविद्यालय के संबंध में जिज्ञासा शांत करता है।

विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के ब्रोशर की डिजाइनिंग में विभाग का अहम योगदान है। विश्वविद्यालय का ग्राफिक डिजायनिंग का कार्य तथा देव संस्कृति जनसंचार कार्यक्रम एवं प्लेसमेंट सैल का डाटा बेस, भी विभाग द्वारा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तैयार किया गया।

विभाग द्वारा पत्रकारिता, भारतीय संस्कृति एवं पर्यटन प्रबंधन, मनोविज्ञान आदि विभागों को तकनीकी सुविधान प्रदान की जाती है।

भावी योजनाएं –

अन्तर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक अध्ययन केन्द्र के नवनिर्मित भवन में 80 कम्प्यूटर वाली एक नई लैब की स्थापना का कार्य आरंभ हो गया है। इस लैब में ब्रॉडबैंड इन्टरनेट कनेक्शन प्रस्तावित है। यह एक wi-fi-zone होगा। भविष्य में ई–एजुकेशन भी विभाग के द्वारा कराये जाने का प्रस्ताव है। आगे आने वाले कम्प्यूटर विभाग की विभिन्न शाखाओं की स्थापना विश्वविद्यालय के प्रस्तावित कॉलेजों में किए जाने की भी योजना है।

राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई

विश्वविद्यालय के कुलपिता पं. श्रीराम शर्मा 'आचार्य' का विचार था कि सेवा से संवेदना का विस्तार होता है, जिसके माध्यम से ही सम्पूर्ण मानव जाति में एकता स्थापित कराकर आध्यात्मिक साम्यवाद की नींव रखी जा सकती है। सेवा की इस संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए विश्वविद्यालय में वर्ष 2005 में राष्ट्रीय सेवा योजना का शुभारम्भ हुआ। समस्त विश्वविद्यालय की कार्यसूची में शामिल सप्त क्रान्तियों 1. शिक्षा, 2. स्वास्थ्य, 3. जीवन साधना, 4. स्वावलम्बन, 5. हरीतिमा संवर्द्धन, 6. नारी जागरण एवं 7. व्यसन मुक्ति–कुरीति उन्मूलन की दिशा में इस इकाई की महत्वपूर्ण भूमिका है। वर्तमान में विश्वविद्यालय की एनएसएस इकाई में सौ विद्यार्थी पंजीकृत है, जिनके लिए राष्ट्रीय सेवा योजना का सिद्धान्त वाक्य मुझको नहीं तुमको जीवन दर्शन बन चुका है। और एनएस.एस. के प्रतीक सूर्य के रथ चक्र की तरह वे सदा परहित में गतिशील रहने के लिए संकल्पित हैं।

विशेष शिविर –

देव संस्कृति विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई निरक्षरों को साक्षर करना, अनपढ़ों को पढ़ाना, स्कूल न जाने वाले बच्चों की पढ़ाई के प्रति प्रेरित करना, पूरे गाँव की गलियों–नालियों व सड़कों की सफई कर स्वच्छता का महत्व बताना, गंदगी से फैलने वाली बीमारियों के प्रति सचेत करना, वृक्षारोपण के प्रति जागरूकता पैदा करना, स्वास्थ्य की देखभाल, गंभीर बीमारियों से बचाव के उपाय, शारीरिक विकलांगों व निर्बल असहाय व्यक्तियों की सहायता, सरकारी योजनाओं व उन्नत कृषि के तरीकों की जानकारी, पशुपालन, पशु स्वास्थ्य के बारे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में मार्गदर्शन, उर्वरकों, स्थानीय जड़ी–बूटियों, घरेलू मसालों–औषधियों आदि के बारे में जानकारी, नारी जागरण और मूढ़ मान्यताओं के उन्मूलन के प्रति जन जागरण पैदा करने जैसे कार्य इस शिविर के माध्यम से किये गये।

सामाजिक आर्थिक सर्वेक्षण में पाया गया कि गाँवों में तम्बाकू सेवन (हुक्का) अधिकांश घरों में होता है, इसे देखते हुए छात्रों द्वारा दीपयज्ञ के माध्यम से सत्प्रवृत्ति संवर्द्धन–दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन के प्रयास किये गये। लोगों ने यज्ञ में दक्षिणा के रूप में एक बुराई छोड़ने और एक अच्छाई ग्रहण करने का संकल्प लिया। सर्दी के मौसम में गाँव में रहकर छात्र–छात्राओं ने जिस अपनेपन के भाव से सेवा कार्य किये, उसमें ग्रामवासियों के दिलों में उन्होंने अपना गहरा स्थान बना लिया।

अनुशासन के सभी पाँच पुरस्कार –

राष्ट्रीय सेवा योजना तृतीय युवा महोत्सव 14–20 अक्टूबर, 2006 देहरादून में देव संस्कृति विश्व–विद्यालय की छात्राओं को अनुशासन से सम्बन्धित सभी पाँच पुरस्कारों से नवाजा गया। आयोजकों का कहना था कि एक ही शिक्षण संस्था को सभी पुरस्कार प्रदान करना परंपरा में तो नहीं है, लेकिन देव संस्कृति विश्वविद्यालय जैसे अनुशासन की कहीं झलक भी नहीं मिलती। इसके अतिरिक्त अलका गुप्ता को सर्वश्रेष्ठ स्वयंसेवी का पुरस्कार प्रदान किया गया।

स्वयं को प्राप्त सम्मान से किया सम्मानित –

वर्ष 2005 में 24 से 30 दिसम्बर तक पन्तनगर कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित एनएसएस के द्वितीय युवा महोत्सव में देव संस्कृति विश्वविद्यालय की राष्ट्रीयसेवा योजना इकाई ने भाग लिया। मा. मुख्यमंत्री जी के उद्बोधन के बाद सरिता बहेरा द्वारा प्रस्तुत ओडिसी नृत्य ने सबको मंत्र मुग्ध कर दिया और यहीं से देव संस्कृति विश्वविद्यालय की जो खुशबू वहाँ बिखरनी प्रारम्भ हुई, वह निरन्तर अपना विस्तार करती ही गई। बात विभिन्न प्रतियोगिताओं में श्रेष्ठ प्रदर्शन कर पुरस्कार जीतने की हो या अपने विचार और व्यवहार से जनमानस का दिल जीतने की, हर जगह देव संस्कृति विश्वविद्यालय विजेता घोषित हुआ।

प्रतियोगिताओं में पुरस्कार की दृष्टि से यद्यपि वाद–विवाद में प्रथम स्थान रहा तो नृत्य और गायन में द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ, जबकि रस्साकस्सी में कुमाऊँ विश्वविद्यालय के साथ देव संस्कृति विश्वविद्यालय संयुक्त रूप से प्रथम रहा। किन्तु सबसे बड़ा पुरस्कार रहा – मंच से अधिकारियों द्वारा देव संस्कृति विश्वविद्यालय की छात्राओं से प्रेरणा लेना तथा बहुत कुछ सीखने की बात कहना।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अन्य विश्वविद्यालयों से पाश्चात्य परिधानों में आये छात्र–छात्राओं के बीच देव संस्कृति का परिधान भी अलग से अपना प्रभाव डाल रहा था। सम्भवतः इसीलिए राष्ट्रीय सेवायोजना स्वयंसेवियों के लिए कुछ इसी प्रकार की ड्रेस हेतु डेढ़ करोड़ रुपये के अनुदान की घोषणा माननीय मुख्यमंत्री जी ने की। इस महोत्सव में सबसे यादगार वह क्षण रहा जब पतंगनगर कृषि विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति जी ने अपना कीमती उपहार (जो उनहें प्राप्त हुआ था) देव संस्कृति विश्वविद्यालय की छात्रा सरिता बहेरा को उसके ओडिसी नृत्य (दशावतार) से प्रभावित होकर प्रदान कर दिया। उनके शब्दों में इस श्रेष्ठ उपहार की सच्ची हकदार यही बालिका है।

खेल प्रकोष्ठ

युगऋषि का स्वप्न था कि देव संस्कृति विश्वविद्यालय में समग्र मनुष्य का निर्माण किया गया। व्यक्तित्व के समग्र विकास में खेलों की अहम भूमिका है। खेल सिर्फ शारीरिक स्वस्थता ही नहीं देते, बल्कि मानसिक रूप से भी व्यक्ति को मजबूत बनाते हैं। इसी दृष्टिकोण से देव संस्कृति विश्वविद्यालय में खेलों को विशेष महत्व दिया जा रहा है। विश्वविद्यालय के खेल प्रकोष्ठ का प्रयास है कि जहाँ आधुनिक खेलों में विद्यार्थियों को सिद्धहस्त बनाया जाए, वहीं देश के पारंपरिक खेलों को भी बढ़ावा दिया जाए।

विकास की राह में चंद अहम कदम –

माननीय कुलाधिपति महोदय के निर्देशन में पिछले एक वर्ष के दौरान विश्वविद्यालय परिवसर में खेलों के एक उच्च श्रेणी के बास्केट बॉल ग्राउंड का निर्माण कराया गया, जिसमें फाइबर ग्लास बोर्ड लगाये। साथ ही वालीबॉल का एक ग्राउंड तथा टी.टी. चैस, कैरम के लिए एक विशाल हॉल भी उपलब्ध कराया गया। अंतर्राष्ट्रीय निशानेबाजी प्रतियोगिताओं को देश के लिए सोने की खान बना देने वाले खिलाड़ियों समरेश जंग एवं जसपाल राणा को विश्वविद्यालय में आमंत्रित कर उनका सम्मान करने से भी विद्यार्थियों में खेल के प्रति उत्साह और जागृत हुआ है। इसके अतिरिक्त शारीरिक सौष्ठव के अन्तर्गत विश्वविद्यालय में लाठी प्रशिक्षण भी आरंभ किया गया है।

भावी कदम –

भारतीय खेलकूद को प्रोत्साहन हेतु शीघ्र ही एक अन्तर्विभागीय कबड्डी प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। नजदीकी कॉलेजों के साथ कुछ प्रतियोगिताएँ शीघ्र ही प्रस्तावित हैं। साथ ही कुछ चयनित खेलों के विधिवत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रशिक्षण हेतु अन्तर्राष्ट्रीय कोचों को बुलाने की दिशा में भी प्रयास किया जा रहा है। एक उच्च श्रेणी का मल्टीजिम, एक 400 मीटर का खेल मैदान एवं लान टेनिस ग्राउंड देव संस्कृति विश्वविद्यालय में स्थापित किया जाना है। मा. कुलाधिपति जी ने विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के लिए स्क्वैश और निशानेबाजी के प्रशिक्षण दिलाने के लिए भी आवश्यक निर्णय लिए हैं।

विश्वविद्यालय खेल समिति शीघ्र ही एक वार्षिक खेल कैलेण्डर (सचित्र) जारी करने जा रही है। आकर्षक कवर की इस पुस्तिका में वर्ष भर में आयोजित होने वाले खेलों के वितरण सहित खेल विभाग की महती उपलब्धियाँ भी संकलित होंगी।

सांस्कृतिक प्रकोष्ठ –

कला के माध्यम से समाज का जन जागरण करना ही सांस्कृतिक प्रकोष्ठ का मुख्य उद्देश्य है। वर्तमान समय में हिंसा तथा अश्लीलता के फूहड़ प्रदर्शन से कला की गरिमा धूमिल हो गई है। ऐसी परिस्थिति में सांस्कृतिक प्रकोष्ठ कला के क्षेत्र में एक ऐसा प्रयास है, जिससे स्वस्थ मनोरंजन के साथ–साथ लोकशिक्षण भी जुड़ा है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

सांस्कृतिक प्रकोष्ठ की हर प्रस्तुति मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा तथा समाज की समस्याओं के समाधान पर ही आधारित होती है। युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा 'आचार्य' जी ने संस्कृति के क्षेत्र में दो महान सूत्र दिये हैं – कलातंत्र से लोक शिक्षण तथा लोकरंजन से लोकमंगल। इन्हीं को आधार बनाकर हम आगे बढ़ रहे हैं।

सांस्कृतिक प्रकोष्ठ का एकमात्र उद्देश्य समाज को नई दिशा देना तथा मानव जाति को उज्ज्वल भविष्य की ओर अग्रसर करना है। कला के सशक्त माध्यम द्वारा यह संभव है। कला विचार क्रांति और भावनात्मक नवनिर्माण से सीधी जुड़ी है, क्योंकि वह व्यक्ति के मानस पटल तथा हृदयगत भावों से सीधा सम्बन्ध स्थापित करती है। कला उत्कर्ष की दिशा में आगे बढ़े, इस दिशा में देव संस्कृति विश्वविद्यालय के सांस्कृतिक प्रकोष्ठ ने अभी तक कुछ उल्लेखनीय प्रयास किए, जो निम्नवत है –

भव्य नाट्य प्रस्तुतियाँ –

1. **मृत्युंजय** – इसमें महाभारत के पात्र कर्ण के माध्यम से दिग्भ्रमित प्रतिभाओं को संदेश दिया गया कि अधर्म के पक्ष से हटकर धर्म की शरण में आएँ। दीक्षांत समारोह के अवसर पर मंचित इस नाटक को टेलीप्ले के रूप में शांतिकुंज के इलेक्ट्रानिक मीडिया प्रभाग द्वारा रिकॉर्ड कर विभिन्न स्थानों पर प्रदर्शित किया गया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

2. अग्निपुरुष – इस प्रस्तुति में विष्णुगुप्त चाणक्य के जीवन के आधार पर संदेश दिया गया कि अकेले व्यक्ति के संकल्प के आधार पर भी राष्ट्र का निर्माण किस प्रकार किया जा सकता है।

3. यज्ञपुत्री – यह नाट्य प्रस्तुति द्रौपदी के जीवन के ऊपर आधारित थी। नाटक के माध्यम से दर्शाया गया कि नारी का अपमान समाज में महाभारत का कारण बन सकता है।

4. वंदे कृष्णम् जगद्गुरुम् – योगेश्वर कृष्ण की मनोभूमि को आधार बनाकर मंचित इस प्रस्तुति में अधर्म, असत्य तथा अनीति की पक्षधर शक्तियों से हर प्रकार से संघर्ष करने का संदेश सुन्दरता के साथ पिरोया गया।

5. यज्ञदेव – लुधियाना अश्वमेध यज्ञ के अवसर पर मंचित इस नाटक में पौराणिक प्रतीकों के माध्यम से जीवन को समाज हित के लिए यज्ञमय कर देने का संदेश दिया गया।

लघुनाटिकाएँ –

1. **मटकानंद** – इसमें धार्मिक पाखंड पर करारी चोट की गई।
2. **नशे की भूल** – इस प्रस्तुति के माध्यम से नशे के घृणास्पद स्वरूप को सामने लाया गया।
3. **अंतरात्मा की आवाज** – इसमें संवेदना के महत्व को लोगों के सामने रखा गया।
4. **उजाले की किरण** – इसमें नारी शिक्षा की आवश्यकता प्रतिपादित की गई।
5. **सरस्वती की सगाई** – इसमें बाल विवाह की कुरीति पर चोट की गयी।
6. **शंकराचार्य** – इसमें आदि शंकराचार्य के जीवन के प्रेरक तत्व प्रस्तुत किए गए।
7. **नचिकेता** – यह ब्रह्मज्ञान के पिपसु नचिकेता के यम से संवाद पर आधारित थी। इसमें जीवन के गूढ़ रहस्य स्पष्ट किए गए।

नुक्कड़ नाटक –

मंच पर सुन्दर नाट्य प्रस्तुतियाँ पेश करने के साथ सांस्कृतिक प्रकोष्ठ ने देश के विभिन्न कोनों में समाज के बीच जाकर नुक्कड़ नाटक भी प्रस्तुत किये, जिनमें रोचक अंदाज में जीवन संदेश गुथे थे। इनमें प्रमुख थे –

1. **जीवन साधना** – साधना का वास्तविक स्वरूप।
2. **मुझसे दूर रहो** – नशे के कहर पर प्रहार।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

3. **भ्रूण हत्या** – अजन्मे शिशु के अधिकार।
4. **निन्यानबे का फेर** – कुरीति उन्मूलन।
5. **मुझे मत काटो** – पर्यावरण संतुलन।
6. **नारी जागरण** – नारी शक्ति।
7. **आत्म निर्भर** – स्वावलम्बन।

इसके अतिरिक्त प्रकोष्ठ द्वारा विभिन्न अवसरों पर भारतीय संस्कृति की गरिमा के अनुरूप नृत्य, संगीत आदि कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। होली के अवसर पर नशे की अर्थी के तौर पर निकाला गया जुलूस भी आम लोगों के आकर्षण का केन्द्र रहा।

विशेष क्षण –

गुजरात के गांधीधाम नगर के गणेश भवन सभागार में वंदे कृष्णम् जगद्गुरुम् का मंचन। विश्वविद्यालय की छात्राओं द्वारा नृत्य, अनुशासन तथा गायन में प्रथम, द्वितीय पुरस्कार जीतना। अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर भव्य प्रस्तुतियां।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

ग्राम तीर्थों की आराधना कर रहा विश्वविद्यालय

विश्वविद्यालय के कुलपिता युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा 'आचार्य' का विचार था कि नये भारत के निर्माण के लिए हमें गाँवों के सर्वांगीण विकास को नवयुग के धर्म के रूप में स्वीकार करना होगा। ग्राम तीर्थ शब्द उनकी इसी अवधारणा को प्रतिबंबित करता है। उनका कहना था कि संस्कारयुक्त, व्यसनमुक्त, स्वच्छ, स्वस्थ, शिक्षित, स्वावलम्बी एवं सहकार–सहयोग से भरे–पूरे गाँव ही धरती पर स्वर्ग का वातावरण विनिर्मित करेंगे। साम्यवाद ने कभी रक्तरंजित क्रांति के जरिये समानता की बात सोची थी, लेकिन इन गाँवों से बिना रक्त का एक कतरा बहाये आध्यात्मिक साम्यवाद की संकल्पना दुनिया तक फैलेगी। आध्यात्मिक साम्यवाद के इस युग में हर व्यक्ति ईमानदारीपूर्वक अपनी आवश्यकतानुसार अपनी आवश्यकतानुसार ब्राह्मणोचित संसाधनों का प्रयोग करेगा और अपनी सम्पूर्ण प्रतिभा के अनुसार समाज हित में कार्य करेगा। इन ग्राम तीर्थो को वर्तमान प्रचलित शब्दावली के अनुसार ग्राम प्रबन्धन, ग्राम विकास एवं प्रबन्धन, आदर्श गाँव योजना, स्वावलम्बी ग्राम्य विकास आदि कुछ भी नाम इसे दिए जा सके हैं, परन्तु मूल अवधारणा असली भारत की सेवा है।

इस दृष्टिकोण के आधार पर ही विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों ने गाँवों को अपना कार्यक्षेत्र बना रखा है, जहाँ विश्वविद्यालय के विद्यार्थी विश्वविद्यालय में अर्जित ज्ञान का उपयोग करते हैं। बदले में विद्यार्थी देश की मेरुदण्ड ग्रामीणों से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन के व्यावहारिक सूत्र सीखते हैं। ग्राम प्रबंधन विभाग ने तो गाँवों के विकास के लिए विश्वविद्यालय में एक मॉडल विकसित करने का कार्य आरंभ कर दिया है।

ग्राम तीर्थ योजना के प्रमुख आधार –

आध्यात्मिकता का आधार देगा भौतिक विकास का मूलाधार – आध्यात्मिकता का उद्देश्य मनुष्य को व्यक्तिवादिता से हटाकर सामूहिकता–सामाजिकता की ओर, स्वार्थपरता से हटाकर परमार्थ परायणता की ओर ले जाना है। इसके बिना लोक कल्याण–परहित की किसी भी योजना का सफल होना संभव नहीं है। योजना बनाने से लेकर उसे क्रियान्वित करने तक में परहित एवं प्रकृति हित सध सके, यह आस्तिकता का सहारा लेकर ही संभव हो सकेगा। योजना से लाभान्वित होने वाले गरीब लोगों को भी यदि सदुपयोग की रीति–नीति नहीं सिखायी गयी, तो बढ़ी हुई आय उन्हें व्यसनी, अहंकारी एवं जमाखोर बनाकर अनिष्ट ही करेगी, सहकार–सहयोग के लाभ से भी वे वंचित ही रहेंगे। अतः आस्तिकता संवर्धन स्वावलम्बी ग्राम्य विकास योजना (ग्रामतीर्थ योजना) का मूलाधार है।

जनस्तर पर विकास का तंत्र – विकास जनता की आवश्यकता है अतः जनशंक्ति को आधार बनाकर ही ग्रामीण भारत का नक्शा बदला जा सकता है। इस हेतु नियमित समयदान, अंशदान व श्रमदान के आधार पर विकास की प्रक्रिया को गति देने की आवश्यकता है। शासन–प्रशासन का हर बात के लिए मुँह देखने से ही गाँवों की यह हालत हुई है। ग्रामीणों की अपनी शक्ति से ही ग्रामीण भारत का विकास होगा।

ऋषि सूत्रों पर आधारित विकास – विकास इच्छाओं की पूर्ति के लिए नहीं, आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए (भोगवाद आधारित नहीं–उपयोगवाद, सादगी संयमवाद आधारित विकास), शोषण पर नहीं पोषण पर आधारित विकास (मिल बाँटकर खाने की रीति–नीति पर आधारित), विकास बिकाऊ नहीं टिकाऊ (प्रकृति का दोहन नहीं पोषण एवं संतुलन), विकास कुछ के लिए नहीं (मुट्ठीभर, समर्थ सबल वर्ग के लिए नहीं) सब के लिए–बहुसंख्यक वर्ग के लिए।

जमीनी सच के मुताबिक तकनीक एवं कार्यक्रम – भारत की अपनी विशिष्ट भौगोलिक एवं सामाजिक परिस्थितियों एवं तदुनुरूप आवश्यकताएँ हैं, जो दुनिया से भिन्न हैं। अतः टेक्नोलॉजी एवं कार्यक्रमों का उद्देश्य एवं स्वरूप वह हो जो समस्याओं को सुलझाए, उलझाए नहीं। भारत ऋषि प्रधान, गाँव प्रधान, कृषि प्रधान, श्रमप्रधान, वर्षा–आश्रित एवं भावनाशील निवासियें वाला विविधतापूर्ण देश है। अतः इसके समग्र विकास (कृषि, उद्योग, स्वास्थ्य, शिक्षा, पर्यावरण जलप्रबंधन,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नारी पुनरुत्थान आदि) का लक्ष्य, स्वरूप तथा कार्ययोजनाएं–प्रचलन से भिन्न होनी चाहिए, उसमें आवश्यक मूल तत्व जुड़ने चाहिए। इसलिए अपना ग्राम्य विकास कार्यक्रम इसी धुरी पर आधारित है और सरकारी ग्राम्य विकास कार्यक्रम से उद्देश्य एवं एप्रोच में बिलकुल भिन्न है।

सहकार होगा विकास का आधार – मनुष्य एवं समाज के अस्तित्व एवं प्रगति का आधार सहयोग एवं सहकारिता है। परस्पर सहयोग, समझौते, समन्वय से असंभव को संभव बनाया जा सकता है। वर्तमान परिस्थितियों में न तो स्वल्प पूँजी से काम चलने वाला है और न एकाकी श्रम से। विभिन्न प्रकार की प्रतिस्पर्धाएँ एवं समस्याएँ इस बात के लिए विवश करती हैं कि मिल जुलकर काम करने की प्रवृत्ति पनपे।

युग ऋषि का कहना है 'उपार्जन के हर क्षेत्र में अगले दिनों सहकारिता ही काम देगी। बड़े–बड़े मिल कारखाने इन दिनों लिमिटेड कम्पनियों के रूप में चल रहे हैं। बड़े उद्योग ही नहीं, अब छोटे उद्योग भी मिलजुल कर ही चल सकेंगे। लोकमंगल की, समाज कल्याण की समस्याओं का समाधान भी संगठित प्रयासों से ही हो सकता है। एकाकी प्रयत्न इस संदर्भ में असफल रहेंगे।' अतः आर्थिक एवं भौतिक विकास की सभी गतिविधियों में सहकारी आन्दोलन को बढ़ावा देना होगा। मिलजुलकर काम करने से ही अन्ततः समस्याओं का समाधान होगा।'

हमारी अनूठी कार्यप्रणाली – गाँवों में विश्वविद्यालय द्वारा निम्न गतिविधियाँ भी प्रमुख रूप से संचालित की जाती है –

1. दीपयज्ञ आदि के माध्यम से गाँव में जाति–पाँति आदि की दीवारें तोड़ना, 2. कृषि आधारित कुटीर उद्योगों का प्रशिक्षण, 3. गाँवों की अर्थव्यवस्था के आधार गायों का संवर्द्धन, 4. जनस्तर पर स्वतंत्र, समानान्तर शिक्षण तंत्र बनाना, 5. सामूहिक श्रमदान, सामूदायिक कार्य एवं आपदा प्रबंधन, 6. भूमि एवं वर्षा जल संरक्षण प्रबंधन (वाटरशेड मैनेजमेंट), 7. हरीतिमा संवर्धन, 8. ठोस कूड़े कचरे का निस्तारण एवं प्रबंधन (सॉलिड वेस्ट मैनेजमेन्ट), 9. वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों का विकास, प्रयोग एवं प्रचलन, 10. दैनिक जीवन का व्यवहारिक ज्ञान, 11. व्यसनमुक्ति एवं कुरीति उन्मूलन, 12. नारी पुनरुत्थान, 13. युवा शक्ति को दिशाधारा एवं नियोजन, 14. ग्रामीण सुरक्षा एवं न्याय व्यवस्था, 15. पंचायतराज संस्था–सक्रियता, सहभागिता एवं प्रशिक्षण व्यवस्था।

इन विषयों पर विश्वविद्यालय की मातृसंस्था शान्तिकुंज एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय में शिक्षण–प्रशिक्षण की व्यवस्था है। केन्द्र स्तर पर नौ दिवसीय रचनात्मक प्रशिक्षण, 45 दिवसीय लोकसेवी स्वावलम्बी ग्राम्य विकास प्रशिक्षण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तथा 6 मासीय 'ग्राम प्रबन्धन प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम' विशेष रूप से इसके लिए निर्धारित है। क्षेत्रों में छह दिवसीय प्रशिक्षणों की व्यवस्था रचनात्मक प्रशिक्षण केन्द्रों के माध्यम से की गई है। इस दिशा में अभी काफी कुछ करना शेष है, लेकिन हमारे कदमों ने राह की पहचान कर ली है।

गुरु दक्षिणा है परिवीक्षाकाल

देव संस्कृति विश्वविद्यालय की ही तरह अनूठी है इसकी इन्टर्नशिप अथवा परिवीक्षाकाल। प्राचीन काल में जिस प्रकार गुरुदक्षिणा के बिना शिक्षा पूर्ण नहीं होती थी, उसी प्रकार जहाँ परिवीक्षाकाल के बिना ज्ञानार्जन पूर्ण नहीं होता। तीन माह चलने वाली इस इन्टर्नशिप में विद्यार्थी के सामने एक ही लक्ष्य रहता है कि वह विश्वविद्यालय में पल–पल में अर्जित ज्ञान से समाज को क्षण–क्षण कितना लाभ पहुँचा सकता है। बदले में विद्यार्थी को भी एक अनुपम अनुदान मिलता है। वह उस समाज की मीठी–तीती सच्चाइयों से रूबरू हो जाता है, जिसे भविष्य में उसकी कर्म–भूमि बनना है।

युग निर्माण की ओर वेला में खड़े समाज को युग परिवर्तन की दहलीज लंघाने के लिए विश्वविद्यालय के हर विभाग के एक–एक विद्यार्थी को परिवीक्षाकाल की शर्त को पूर्ण करना पड़ता है। यह बात अलग है कि इन्टर्नशिप के दौर के अनुभव इतने आकर्षक होते हैं कि हर नया विद्यार्थी इसके लिए दिन गिनता रहता है और जब औपचारिक पाठ्यक्रम समाप्त होने के बाद इसके लिए समय आता है तब योग के विद्यार्थी योगासनों, मनोविज्ञान के विद्यार्थी साइकोकाउंसलिंग, पत्रकारिता के विद्यार्थी सृजनशील कलम एवं जनसंचार कौशल, भारतीय संस्कृति पर्यटन प्रबंधन के विद्यार्थी संस्कृति एवं पर्यटन संबंधी अपने ज्ञान, धर्म विज्ञान के विद्यार्थी विभिन्न धर्म ग्रंथों के ज्ञान और समग्र स्वास्थ्य प्रबंधन पाठ्यक्रम के विद्यार्थी यज्ञोपैथी एवं आयुर्वेदिक औषधियों के माध्यम से समाज देव के चरण पखारने के लिए निकल पड़ते हैं। समाज को लाभ पहुँचाने का कार्य एकांगी न रह जाए, इसलिए हर विद्यार्थी को अन्य विषयों का मूलभूत ज्ञान प्रदान किया जाता है। साथ ही साथ उन्हें दीपयज्ञों जैसी उन पद्धतियों में भी पारंगत किया जाता है जिन्हें युगऋषि ने सर्वधर्म समन्वय के लिए अनुपम विधि के रूप में विकसित करके उसे सर्वोपयोगी बनाया था।

इस परिवीक्षाकाल की ही देन है कि विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश, राजस्थान, दिल्ली के मैदानी इलाकों के विकास की दौड़ में पिछड़े इलाकों में सृजनशील कार्यों के माध्यम से परिवर्तन का संदेश दिया। उन्होंने मुख्य धारा से अलग हो गये नक्सलियों से अपना भावनात्मक रिश्ता स्थापित कर लिया और नई दिशा में सोचने का वातावरण देने में सहयोग दिया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इन विद्यार्थियों ने सुदूर दक्षिण के तमिलनाडु के राज्य के समुद्री किनारों पर मछुआरों के साथ देव संस्कृति की गंगा बहायी, तो सबसे खतरनाक हो रहे उत्तर पूर्व राज्यों में भी जाकर स्वधर्म समभाव का भाव जगाने का प्रयत्न किया।

विद्यार्थियों ने सिक्किम की दुर्गम पहाड़ियों के बीच रहने वाली जनजातियों के बीच कुछ इसी तरह का जनजागरण किया। जब उन्हें यह पता चला कि ये छात्र काफी दूर से उनके बारे में जानने, उनसे मिलने और उन्हें योग जैसी स्वस्थ रहने वाली विद्या से अवगत कराने आए हैं तो हैरानी के साथ उनकी आंखों में आँसू छलक आए। शायद यह आँसू खुशी के थे, कि चलो किसी को तो उनके बारे में फिक्र है। कोई तो उनके लिए कुछ करने की सोचता है।

इन्टर्नशिप के छात्रों ने ऐसा ही रिश्ता जोड़ा बिहार के कुछ अति पिछड़े गाँवों से। कच्ची शराब की भट्ठियों का धधकना जहाँ की नियति बन चुकी थी। जहाँ इंतजार करती पत्नियों और बच्चों को शराब के नशे में धुत पुरुषों की गालियाँ खाने की आदत सी पड़ चुकी थी। तीन माह में ही परिवर्तन की कुछ ऐसी बयार बही कि कुछ जगहों पर तो शराब की भट्ठियों की जगह गौशालाओं ने ले ली।

इन्हीं अभिनव प्रयासों में शामिल है– यहाँ के विद्यार्थियों द्वारा देश की विभिन्न जेलों में कैदियों के बीच जाकर उन्हें योग का प्रशिक्षण देना। मानसिक तनाव को कम करने वाला ध्यान, यज्ञ और गायत्री मंत्रों का जप अब कई जेलों के कैदियों की नियमित दिनचर्या बन चुकी है। तमाम कैदियों द्वारा तम्बाकू, बीड़ी, सिगरेट आदि को त्याग देना परिवीक्षाकाल की सफलता को बताने के लिए बहुत हद तक काफी है।

यह कहना सम्भवतः उचित न होगा कि अपनी शिक्षा को व्यावहारिक रूप देने क्षेत्र में पहुँचे विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को शत–प्रतिशत सफलता ही हाथ लगी, लेकिन जगह– जगह से विश्वविद्यालय को प्राप्त हो रहे सराहना–पत्र इस बात की तस्दीक करने के लिए काफी है कि परिवीक्षाकाल के कदम सार्थक दिशा की ओर बढ़ रहे हैं। विश्वविद्यालय का मानना है कि देश–दुनिया को एक सूत्र में पिरोने का कार्य देव संस्कृति ही कर सकती है और हमारे विद्यार्थियों ने इसके दूत बनने का बीड़ा उठा लिया है।

जन–जन तक पहुँचा देव संस्कृति का सन्देश

जन–जन के सद्भाव–सहयोग से निरंतर विकसित हो रहा यह विश्वविद्यालय जनता जनार्दन को ही समर्पित है। समाज देव के चरणों में प्रतिभा पुष्प अर्पित करना ही इसका लक्ष्य है देव संस्कृति की मशाल को जन–जन तक पहुँचाने के लिए कुलाधिपति महोदय के निर्देशक की अगुवाई में यह विभाग स्थापित हुआ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक छोटी सी अवधि में विभाग के कतिपय प्रयास निम्नवत् हैं –

1. जन–जन से नाता –

शिक्षाविदों, पत्रकारों, वैज्ञानिकों, अधिकारियों, जनप्रतिनिधियों एवं विशेषज्ञ स्तर की प्रतिभाओं के साथ सहयोग का आदान–प्रदान करने के लिए इस विभाग का जन–सामान्य से सीधा सम्पर्क रहता है। समाज निर्माण जैसे कार्यों में यह विभाग कुलपति एवं कुलाधिपति महोदय के निर्देश पर अन्य गैर सरकारी संगठनों एवं सृजनशील व्यक्तियों के सहयोग से सामाजिक कार्यों का संचालन करता है। उदाहरण के तौर पर रक्तदान शिविरों का आयोजन एवं गंगा सफाई जैसे कार्यों में प्रभावी समन्वयन इसके चंद उदाहरण हैं। विश्वविद्यालय के प्रतिभाशाली पूर्व विद्यार्थियों से नियमित सम्पर्क में रहने का दायित्व भी इसी विभाग को दिया गया है। यह विभाग पत्रों से लेटर इंटरनेट तक के माध्यम से जन–जन तक देव संस्कृति का संदेश पहुँचाने का कार्य कर रहा है। दुनिया की आस राष्ट्र की युवा प्रतिभाओं से आत्मीय सम्बन्ध विकसित करना एवं उन्हें 'देव संस्कृति दिग्विजय अभियान' में सम्मिलित करने के लिए भी यह विभाग प्रयासरत है। श्रद्धेय कुलाधिपति के निर्देश पर निशानेबाजी प्रतियोगिताओं में राष्ट्र को शिखर के देशों में सम्मिलित करने वाले समरेश जंग एवं जसपाल राणा हेतु 'युवा प्रतिभा सम्मान' कार्यक्रम का दायित्व इसी विभाग को सौंपा गया। इसके अतिरिक्त उत्तरांचल राजभवन और राज्य की विधानसभा सहित विभिन्न महत्वपूर्ण पुस्तकालयों में हमारे कुलपिता पं. श्रीराम शर्मा 'आचार्य' द्वारा रचित सम्पूर्ण वाङ्मय साहित्य की स्थापना, राज्य के सभी गांवों में आंगनवाड़ी कार्यकत्री बहिनों के माध्यम से नारी जागरण, बाल विकास–परिवार निर्माण सम्बंधी साहित्य का प्रसार एवं राज्य के सभी 32 जिला पुस्तकालयों में कुलपिता की प्रमुख पुस्तकें स्थापित करने की सुखानुभूति पाने में भी यह विभाग सफल रहा।

2. पुलिस कर्मिकों– विद्यालयों हेतु योग शिविर –

राष्ट्र की आन्तरिक सुरक्षा के आधार पुलिस अधिकारी व कर्मचारी तनावग्रस्तता के कारण आत्महत्या एवं सहकर्मियों पर हमले जैसे आत्मघाती कदम उठा रहे हैं। इससे जनित अनुचित आक्रोश का सामना प्रायः आम जनता को भी करना पड़ता है। इस विकराल समस्या से मुक्ति पाने के लिए कुलाधिपति महोदय के निर्देश पर विश्वविद्यालय के जनसम्पर्क एवं सेवायोजन विभाग ने मानव चेतना एवं योग विज्ञान विभाग से समन्वय स्थापित कर छह माह से कम अवधि के भीतर उत्तरांचल, उत्तर प्रदेश एवं हिमालय प्रदेश में सुरक्षाकर्मियों के लिए कई योग शिविर आयोजित कराये, जिनमें विश्वविद्यालय के योगाचार्यों ने तनाव प्रबंधन के लिए विशिष्ट आसनों एवं ध्यान आदि का प्रशिक्षण प्रदान किया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अब तक आयोजित प्रमुख कार्यक्रम निम्नवत हैं –

1. पुलिस प्रशिक्षण महाविद्यालय, सीतापुर (उ.प्र.) में 494 नवनियुक्त सब इंस्पेक्टरों एवं उच्चाधिकारियों को प्रशिक्षण।
2. पुलिस प्रशिक्षण विद्यालय, मुरादाबाद (उ.प्र.) में 322 प्रोन्नत सब इंस्पेक्टरों एवं अन्य उच्चाधिकारियों को प्रशिक्षण।
3. डॉ. भीमराव अम्बेडकर उ.प्र. पुलिस अकादमी, मुरादाबाद (उ.प्र.) में 350 डिपटी एसपी एवं विशेष श्रेणी के सब इंस्पेक्टरों को प्रशिक्षण।
4. पुलिस लाइन, मुरादाबाद (उ.प्र.) में 500 नवनियुक्त सिपाहियों को प्रशिक्षण।
5. पुलिस लाइन, हरिद्वार (उत्तरांचल) में राज्य पुलिस के नवनियुक्त 400 सिपाहियों को योग का ज्ञान।
6. गृह मंत्रालय, भारत सरकार के कांगड़ा (हिमालय प्रदेश) स्थित सशस्त्र सीमा बल के प्रशिक्षण केन्द्र में 150 अधिकारियों एवं 596 नवनियुक्त आरक्षियां को प्रशिक्षण।
7. हिमालय प्रदेश के कुल्लू जिले में स्थित सशस्त्र सीमा बल के प्रशिक्षण केन्द्र में 105 अधिकारियों समेत 787 नवनियुक्त आरक्षियों को योग शिक्षण।

www.vicharkrantibooks.org

पुलिस प्रशिक्षण विद्यालय, मुरादाबाद के प्रमुख हरिशंकर शुक्ल, आईपीएस के शब्दों में 'देव संस्कृति विश्वविद्यालय द्वारा दिया गया यह प्रशिक्षण बढ़ते तनाव के शिकार पुलिसकर्मियों के लिए अत्यंत सार्थक रहा, जिससे उन्हें श्रेष्ठ जीवन जीने के लिए नयी ऊर्जा मिली।' इसके साथ ही नयी पीढ़ी को शारीरिक–मानसिक रूप से सबल करने के लिए हाल ही में रुड़की (हरिद्वार) से विभिन्न विद्यालयों में योग शिविरों के आयोजन की वृहद् योजना पर कार्य शुरू किया गया है।

3. न्यूज फीचर एंड पब्लिकेशन सेल की स्थापना –

समाज को दिशा देने का दायित्व संभालने वाले पत्रकारों के सहयोग से सृजन अभियान को गति देने के लिए कुलाधिपति के निर्देश पर जनसम्पर्क एवं सेवायोजन विभाग के अंतर्गत 'न्यूज फीचर एंड पब्लिकेशन सेल' की स्थापना की गयी है, जिसका दायित्व पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के प्रवक्ता अमिताभ श्रीवास्तव को दिया गया है। विश्वविद्यालय से सम्बद्ध विविध विषयों पर समाचार एवं फीचरों का लेखन इसी इकाई के जिम्मे है। इसके अतिरिक्त इंटर्नशिप के जरिये देश के कोने–कोने तक देव संस्कृति का संदेश पहुंचाने हेतु यूं होइये सफल, नाता विज्ञान एवं अध्यात्म का, अमृत कथाएं, परिवार बने स्वर्ग आदि पुस्तिकाओं का लेखन, संपादन इसी इकाई द्वारा किया गया है। विश्वविद्यालय से सम्बंधित ब्रोशर आदि विविध सामग्रियों का लेखन–प्रकाशन भी इसी विभाग द्वारा किया गया है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

4. देव संस्कृति जनसंचार कार्यक्रम –

देव संस्कृति की विशिष्टताओं से जन–जन को लाभान्वित करने के लिए मानवीय कुलाधिपति महोदय द्वारा जुलाई माह में 'गुरुपूर्णिमा' के पावन अवसर पर देव संस्कृति जनसंचार कार्यक्रम का श्रीगणेश किया गया। कार्यक्रम के अन्तर्गत मात्र कागज और छपाई के लागत मूल्य पर विभिन्न आवेदकों को हर माह एक विशिष्ट पत्रिका प्रेषित की जाती है, जिसमें देव संस्कृति का ज्ञान सूत्र रूप में उपलब्ध रहता है।

अब तक देव संस्कृति के विभिन्न आयामों पर देव संस्कृति आरंभ से आज तक, कैसे मुनष्य बने देव, देव संस्कृति के दिव्य प्रतीक, देव संस्कृति एवं दिव्य कलाएं, देव संस्कृति एवं विज्ञान पुस्तिकाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं। पहली पत्रिका के प्रकाशन के मात्र दो माह के भीतर पत्रिका के पांच हजार सदस्य बन गए थे। आगामी जनवरी से आरम्भ होने वाले नए चरण के लिए व्यक्तिगत प्रतिभागियों के अतिरिक्त विद्यार्थियों पर विशेष रूप से ध्यान केन्द्रित किया जा रहा है। कार्यक्रम के अंत में सभी प्रतिभागियों को एक प्रमाण–पत्र देने की योजना है। गुरुवर के स्नेहाशीष से पत्रिका की लोकप्रियता निरंतर बढ़ रही है। मध्यप्रदेश की सेंधवा शक्तिपीठ ने दिव्य प्रतीकों पर लिखित पुस्तिका के आधार पर ध्वजों पर देव संस्कृति के प्रतीकों की विराट शोभायात्रा निकाली।

5. सेवायोजन – समाज को प्रतिभा पुष्पों का अर्पण–

देश के सभी कोनों में में विभिन्न संस्थाओं में देव संस्कृति विश्वविद्यालय के पासआउट विद्यार्थियों को सेवायोजित कराकर वहाँ देव संस्कृति के दूतों को प्रतिष्ठित करने का कार्यक्रम बनाया गया है। विभाग के प्रयासों से विश्वविद्यालय के सभी विभागों के छात्र–छात्राओं को विभिन्न राज्यों की विविध संस्थाओं में रोजगार मिला। इन संस्थाओं में इण्डियन एयनलाइन्स की नई दिल्ली स्थित स्ट्रैकॉन बी.पी.ओ. कम्पनी, साक्षरता निकेतन लखनऊ, (उ.प्र.), माँ भगवती विद्यारण्यक अजीजपुर, बदायूँ (उ.प्र.), गौ सेव समिति भीलमाल–जालौर (राजस्थान), संज्ञा संवर्द्धन संस्था नागपुर (महाराष्ट्र), निर्वाण मानसिक रोग अस्पताल लखनऊ (उ.प्र.), दैनिक जागरण देहरादून, अमर उजाला देहरादून (उत्तरांचल), एम.आई.टी. मैनेजमेन्ट कॉलेज, मेरठ (उ.प्र.), गायत्री शक्तिपीठ राजकोट (गुजरात), भारतीय सेना, उत्कल योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र राउरकेला (उड़ीसा), इन्हांस इंस्टीटयूट ऑफ मेन्टल हेल्थ, नई दिल्ली आदि सम्मिलित हैं। युवा कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के 'नेहरू युवा केन्द्र संगठन' तथा ग्रामीण भारत की गैर सरकारी संस्थाओं के परिसंघ सी.एन.आर.आई., नई दिल्ली के सहयोग से देश भर की पंचायतों और बड़ी स्वयंसेवी संस्थाओं में विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के सेवायोजन के नए–नए द्वार खुल रहे हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विश्वविद्यालय के आंगन में देव संस्कृति एवं योग विज्ञान

देव संस्कृति जीवन की शक्तियों, सिद्धियों एवं विभूतियों को निखारने की जीवन शैली है। योग इसे सम्पन्न करने की वैज्ञानिक एवं प्रयोगात्मक प्रक्रिया। दोनों ही जीवन की उत्तरोत्तर परिष्कृति कर उसे दैवीय व दिव्य बनाते हैं। यह सब होता है अनगढ़ जीवन को सुगढ़ बनाने से। देव संस्कृति को यदि कोई सम्पूर्ण आस्था से अपना लेता है तो इसके सूत्र, सिद्धान्त एवं प्रक्रियाएँ अनायास ही इसे अपनाने वाले के जीवन को परिष्कृत एवं परिशोधित करने लगती है। कोई कैसा भी क्यों न हो? देव संस्कृति का संसर्ग एवं सम्पर्क उसे दैवी सम्पत्ति का अनुदान दिए बिना नहीं रहता। ठीक यही स्थिति योग विज्ञान की है। योग की प्रयोगात्मक प्रक्रियाएँ चाहे जो भी सम्पन्न करे, उसे विभूतियों के वरदान मिलते ही हैं।

इस प्रसंग में महत्वपूर्ण बात यह है कि देव संस्कृति और योग विज्ञान दोनों ही मनुष्य मात्र के लिए है। इनतें जाति, वर्णा, वंश, धनी, निर्धन, ऊँच, नीच आदि का न तो कोई भेद है और न बन्धन। देश की सीमाएँ भी इसके प्रभाव को सीमित नहीं करतीं। देव संस्कृति में प्रतिपादित सूत्र धरती के किसी भी कोने में, किसी के भी द्वारा अपनाए जा सकते हैं। हर कहीं और किसी पर भी इसके प्रभाव समान रूप से दिखाई देते हैं। यही बात योग विज्ञान की प्रक्रियाओं के बारे में है। सम्पूर्ण धरती में रहने वाले सभी मनुष्य इसके अधिकारी हैं। जिनके भी हृदय में आध्यात्मिक भाव हैं और जिनके भी मस्तिष्क वैज्ञानिक चिन्तन से सम्पन्न हैं, वे सभी योग के प्रयोग के प्रभावों को स्वयं के जीवन में परख सकते हैं, प्रकट कर सकते हैं।

देव संस्कृति एवं योग विज्ञान दोनों ही हिमालय की कोख से जन्में हैं। भारत की पवित्र भूमि पर इनका अनुसंधान व विकास हुआ है। लेकिन इनका अन्वेषण करने वाले ऋषियों ने कभी भी इन पर अपना मालिकाना हक नहीं जताया। उनकी दृष्टि में स्वत्व एवं स्वार्थ से मानव हित कहीं अधिक ऊँचे थे। मानव कल्याण उनके के लिए सर्वोपरि था। इन महान् ऋषियों की खोज का यही अर्थ था कि सम्पूर्ण मनुष्य किसी न किसी तरह से देवत्व की ओर अग्रसर हो और समूची धरती पर जैसे भी सम्भव हो, स्वर्ग के फूल खिलाए जा सकें। बौद्धिक सम्पदा कानून को अपना मौलिक अधिकार मानने वाले बुद्धिजीवियों के लिए यह बात आज कितनी ही अटपटी क्यों न लगे, पर सच यही है। और यही शायद महान् अध्यात्मवेत्ता ऋषि एवं बुद्धि प्रवण वैज्ञानिक में मौलिक अन्तर है। वैज्ञानिक कितना भी बुद्धिमान क्यों न हो, धन, नाम, यश, आदि अपने हितों को छोड़ने में उसे भारी हिचकिचाहट होती है। परन्तु अध्यात्मवेत्ता अपनी उपलब्धि के पहले ही चरण में स्वयं के सभी हितों को छोड़ देता है। यहाँ तक कि उसे स्वयं का परिचय ठुकराने में भी हिचकिचाहट नहीं होती।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आध्यात्मिक भाव एवं वैज्ञानिक दृष्टि— संक्षेप में कहें तो 'वैज्ञानिक अध्यात्मवाद' — यही देव संस्कृति एवं योग विज्ञान का सम्पूर्ण सच है। इस सच के अनुसंधानकर्त्ता महान् ऋषियों का निष्कर्ष यही है कि दो ही तरह की कार्य संस्कृति धरती पर सम्भव हैं— एक दैवी एवं दूसरी आसुरी। महाभारत के महानायक महान् योग वैज्ञानिक श्रीकृष्ण के गीता बचन हैं— मनुष्यों में सम्भावनाएँ ही दो हैं— द्वौ भूत सर्गो लोकेऽस्मिन्दैव आसुर एव च देव एवं असुर। जो संवेदनशील हैं, परहित के लिए जीते हैं वे ही देव हैं, ओर जो केवल निजी स्वार्थ और अहं की निष्ठुर के लिए जीवन यापन करते हैं, वे ही असुर हैं।

कार्य संस्कृति दैवी हो सके— यहाँ तक जो अभी तक आसुरी कार्य संस्कृति में लिप्त हैं, उनका देवत्व में रूपान्तरण हो सके, देव संस्कृति का विधान एवं योग का विज्ञान इसीलिए है। देव संस्कृति इसके लिए चार पुरुषार्थ चतुष्य का विधान रचती है और योग इसके लिए आठ प्रयोगों का विज्ञान निर्देशित करता है। पुरुषार्थ चतुष्य हो या फिर अष्टांग योग, इनमें गहरा जुड़ाव है। ये दोनों ही आपस में बड़े घुलनशील हैं। देव संस्कृति द्वारा निर्धारित— धर्म, काम, अर्थ, मोक्ष एवं योग विज्ञान द्वारा अन्वेषित— यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा व समाधि, इनमें विचारणीय सम्बन्ध है।

बात 'धर्म' की करें तो तुलसी बाबा कहते हैं— परहित सरिस धरम नहीं भाई अर्थात् दूसरों के हित से बड़ा और कोई धर्म नहीं। युगऋषि आचार्य श्री कहते हैं— 'अपने प्रति कठोरता एवं दूसरों के प्रति उदारता' यही धर्म है। संक्षेप में संवेदनशील एवं लोकहित परायण जीवन ही धार्मिक जीवन है। योग ने ऐसे जीवन की प्राप्ति के लिए दो वैज्ञानिक प्रक्रियाएँ अन्वेषित की है, और ये हैं— यम—नियम। यम—नियम का दृढ़तापूर्वक पालन किसी में भी धर्म भावना का संचार एवं विकास कर सकता है। 'योग विज्ञान' अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह को 'यम', एवं शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय व ईश्वरशरणाति को 'नियम' के रूप में परिभाषित करता है। इनके प्रयोग से किसी भी मानवीय हृदय में धर्म भावना जाग्रत् हो सकती हैं।

'काम' देव संस्कृति का अन्य महत्वूपर्ण अंग है। योग विज्ञान के अन्वेषक कहते हैं, काम तत्व मूलतः प्राण से सम्बन्धित है। इसका सही और समुचित प्रयोग हो, इसके लिए प्राण की शुद्धि अनिवार्य है। योग में इसके लिए आसन—प्राणायाम के प्रयोग निर्देशित है। आसन—प्राणायाम के सही एवं व्यावहारिक प्रयोगों के द्वारा काम तत्व की शुद्धि एवं इसका रूपान्तरित उपयोग किया जा सकता है, प्राण तत्व की शुद्धि के बिना काम मात्र एक विकार बनकर रह जाता है, जो कि सम्पूर्ण जीवन में विकृति का विष घोलता है। आसन—प्राणायाम के निर्धारित प्रयोग से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

काम की विकृति–परिष्कृति में बदलती है और विष अमृत का रूप लेता है।

'अर्थ' देव संस्कृति का तीसरा पुरुषार्थ है। अर्थ प्रतीक है जीवन की उपलब्धियों का । इसका सम्बन्ध है जीवन की सार्थकता से। उपलब्धियों के लिए योग विज्ञानी प्रत्याहार व धारणा को महत्व देते है। प्रत्याहार एवं धारणा के प्रयोग मानसिक सामर्थ्य का अतुलनीय विकास करते हैं। इस विकास की प्रक्रिया के साथ पवित्रता का अर्जन भी होता रहता है। पवित्रता के अभाव में विकसित मानसिक शक्तियाँ कुटिलताओं की व्यूह रचना ही करती हैं। पवित्रता विहीन प्रतिभा ने ही संहारक एवं विनाशक सरंजाम जुटाए हैं। धरती पर आज जो भी विनाश लीलाएँ हो रही हैं, वे सबकी सब पवित्रता विहीन प्रतिभा के खेल हैं। 'प्रत्याहार' भोग लालसाओं से आत्म जिज्ञासा की ओर मुड़ चलने का विज्ञान है और 'धारणा' पवित्र भावनाओं को धारण करने की योग्यता। इन दोनों की परिणति पवित्र प्रतिभा के रूप में प्रकट होती है और इसके प्रभाव से जीवन को जो अर्थ मिलता है, उससे कभी अनर्थ नहीं खड़े होते।

'मोक्ष' देव संस्कृति का चतुर्थ पुरुषार्थ है। योग विज्ञान इसके लिए ध्यान एवं समाधि के विविध प्रयोग निर्देशित करता है। ध्यान से संस्कार शुद्धि होती है। कर्मबीजों का क्षय होता है। मानवीय चेतना में कई तरह के सूक्ष्म रूपान्तरण एवं प्रत्यावर्तन घटित होते हैं। यह प्रक्रिया यदि सही ढंग से चल सके, तो योग साधक में समाधि घटित होती है ओर इस समाधि के कई अन्तर–अवान्तरों को पार करते हुए कैवल्य अर्थात् मोक्ष फलित होता है। समाधि के परमोचच शिखर में मोक्ष स्वयमेव प्रकाशित होता है। देव संस्कृति के सिद्धान्त हों अथवा योग की वैज्ञानिक प्रक्रियाएँ, मोक्ष दोनों की परम उपलब्धि है। यहाँ मनुष्य का दैवी जीवन अपनी पूर्णता पाता है तो वहाँ ईश्वरीय विभूतियाँ अपनी सम्पूर्णता प्रकट करती है।

देव संस्कृति हो या योग, इन दोनों का सच एक ही है। आज मानव के हित में इसे सार्वभौमिक बनाने की बहुत बड़ी आवश्यकता हैं। जरूरत इस बात की है कि देव संस्कृति के सिद्धान्तों को तकनीकों में बदला जाय। ऐंसी तकनीकें जो व्यक्ति, परिवार एवं समाज की उलझनों को सुलझा सकें। योग के सूत्र भी आज बहुआयामी प्रक्रियाओं के अन्वेषण की माँ करते हैं। सच भी यह है कि देव संस्कृति एवं योग की तकनीकों का अन्वेषण–अनुसंधान अलग–अलग नहीं, एक साथ किया जाना चाहिए, क्योंकि ये दोनों वस्तुतः एक हैं। इसी सच को देव संस्कृति विश्वविद्यालय के तपः पूत आँगन में प्रकट किया जा रहा है। यहाँ पर योग विज्ञान सहित अन्य विभागों में जो अनुसंधान हो रहे हैं, उन सबकी दिशा– 'मानव कल्याण' ही है। 'मनुष्य बने देवता और धरती बने स्वर्ग', यही उद्देश्य यहाँ की अनुसंधान प्रक्रियाओं में फलित हो रहा है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विभिन्न विश्वविद्यालयों से
कुलपिता पं. श्रीराम शर्मा 'आचार्य' जी पर सम्पन्न शोध

डॉ. गायत्री किशोर त्रिवेदी	गायत्री–सावित्री एक अध्ययन	कानपुर वि.वि.
डॉ. गोविन्द मिश्रा	पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के साहित्य में उपासना, साधना, आराधना	गोरखपुर वि.वि.
डॉ. पूनम सिंह	पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के साहित्य में युगचेतना	जौनपुर वि.वि.
डॉ. सुशीला गुप्ता	प्रज्ञा पुराण एक अध्ययन (डी.लिट)	मेरठ वि.वि.
डॉ. मंदाकिनी शर्मा	आचार्य श्रीराम शर्मा का सर्वांगीण दर्शन	आगरा वि.वि.
डॉ. दीनदयाल शर्मा	प्रज्ञा पुराण का सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन	मेरठ वि.वि.
डॉ. वर्षा वानखेड़े	पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के साहित्य में नारी संवेदना	सागर वि.वि.
डॉ. उषा खंडेलवाल	आध्यात्मिक मान्यताओं का वैज्ञानिक प्रतिपादन (पं. श्रीराम शर्मा जी के सम्बन्ध में)	जबलपुर वि.वि.
डॉ. मंदाकिनी शर्मा	श्रीराम कृष्ण परमहंस एवं आचार्य श्रीराम शर्मा के दार्शनिक विचारों डॉ. का तुलनात्मक और विवेचनात्मक अध्ययन (डी.लिट)	भीमराव अम्बेडकर वि.वि. आगरा
डॉ. सविता द्विती	पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के शिक्षादर्शन का आलोचनात्मक अध्ययन	फैजाबाद अवध वि.वि.
डॉ. शशिकांत त्रिपाठी	संस्कार परम्परा द्वारा समाजोत्थान की दिशा में गायत्री परिवार की भूमिका	जौनपुर वि.वि.
डॉ. रमेश भाई परमार	पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी का शिक्षण–चिंतन	सूरत वि.वि.
डॉ. सुलोचना शर्मा	आचार्य श्रीराम शर्मा का समाज दर्शन	हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल वि.वि.

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

डॉ. हेमाद्रि साव	Physiological and Behavioural Responses of human subjects following Japa, Yogya (Yajna) and selected Yogic exercises	गुरुकुल कांगड़ी वि.वि.
डॉ. आलोक कुमार	Rural Social Transformation a Study of the Impact of Yog Nirmar Movement	चौधरी चरण सिंह वि.वि.
डॉ. इन्द्रेश पथिक	वैदिक चिंतन के परिप्रेक्ष्य में पं. श्रीराम शर्मा	गुरुकुल कांगड़ी वि.वि.
डॉ. विजय कुमार मिश्र	हिन्दी पत्रकारिता में पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का योगदान	लखनऊ वि.वि. लखनऊ
डॉ. जे.जी. चौहान	पं. श्रीराम शर्मा का राजनीतिक एवं सामाजिक योगदानः एक मूल्यांकन	अमरावती वि.वि
अजय कुमार मिश्र	उपनिषद परम्परा में पं. श्रीराम शर्मा आचार्य रचित प्रज्ञोपनिषद् की प्रासंगिकता	लखनऊ वि.वि. लखनऊ
श्रीमती अंजली सिंह राघव	पत्रकारिता में अखण्ड ज्योति का योगदान	गुरुकुल कांगड़ी वि.वि. हरिद्वार
श्रीमती विजयलक्ष्मी निगम	आध्यात्मिक पत्रकारिता में अखण्ड ज्योति का योगदान	कानपुर वि.वि.
श्रीमती विद्योत्तमा रस्तोगी	प्राचीन भारत में सूर्योपासना एक विवेचन	गुरुकुल कांगड़ी वि.वि. हरिद्वार
सुश्री रश्मि शुक्ला	पं. श्रीराम आचार्य जी का युगीन कर्मकाण्ड एक विवेचन	कानपुर वि.वि.
श्रीमती महिमा माहेश्वरी	पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के साहित्य में लोक मंगल की भावना	जीवाजी वि.वि. ग्वालियर
ओंकार नाथ पाण्डेय	Social Change and Yog Nirman Movement of Shantikunj - A Georgraphical Study	गोरखपुर वि.वि.

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भावना द्विवेदी	आचार्य श्रीराम शर्मा के वाङ्मय में मानव–चेतना–एक समीक्षात्मक अध्ययन	गुरुकुल कांगड़ी वि.वि. हरिद्वार
ममता अरोरा	श्रीराम शर्मा आचार्य का सर्वांग शिक्षा दर्शन एवं उनके शिक्षा सम्बन्धी प्रयोगों का मूल्यांकन	दयानन्द महिला प्रशिक्षण महाविद्यालय कानुपर
कृष्णकांत तिवारी	भारत वर्ष के सांस्कृतिक पुनरुत्थान में आचार्य श्रीराम शर्मा का योगदान	कोटा वि.वि
राजीव कुमार वर्मा	आचार्य पं. श्रीराम शर्मा के सामाजिक विचार एक समाजशास्त्रीय अध्ययन	डॉ. भीमराव अम्बेडकर वि.वि. आगरा
गोविन्द शुक्ला	अभिनव समाज के नव निर्माण में गायत्री परिवार की भूमिका – एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के संदर्भ में)	कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय सेमरिया, रीवा
गुलाबराव पान्से	पं. श्रीराम शर्मा के दर्शन में मृत्यु परक जीवन परिदृश्य पर आधारित दार्शनिक अनुशीलन	हमीदिया कालेज, भोपाल वि.वि.
श्रीमती शशिकला दार्शनिक	आचार्य श्रीराम शर्मा का आचार दर्शन आधुनिक संदर्भ में : एक अध्ययन	गुरुकुल कांगड़ी वि.वि. हरिद्वार

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

अधिकांश शोध जो पूर्ण हो चुके हैं

प्राच्य अध्ययन में पी–एच.डी. हेतु पंजीकृत छात्र–छात्राओं का विवरण

1. **डॉ. देवाशीष भारद्वाज** – A comparative study to the Effects of an Ayurvedic Formulation & Some Yogic Practices on Madhureha (Diabetes Mellitus), NIDDM

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

Patients.

2. शाम्भवी मिश्रा – The Scientific and spiritual secrets of cosmophysics-an exploratory study.
3. जया सविता – Screening and analysis of Different Medicinal herbs in context with chronic active hepatic disease.
4. मनोज कुमार राव – प्राचीन भारतीय संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में इक्कीसवीं सदी : एक विवेचनात्मक अध्ययन।
5. गोवर्धन लाल सगीतरा – भारतीय संस्कृति में तीर्थ परम्परा।
6. श्रीमती मोना – प्राचीन भारतीय संस्कृति का एक प्रमुख केन्द्र उत्तराखण्ड
7. छतराम कैवर्त्य – भारत एवं चीन के सम्बंधों का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन (छठी शताब्दी ई.पू. से बारहवीं शताब्दी तक)
8. शाम्भवी तिवारी – अग्नि पुराण का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन।
9. रीमा श्रीवास्तव – योग वशिष्ठ में योगविद्या का समीक्षात्मक अध्ययन।
10. श्री शिवनारायण प्रसाद– भारतीय संस्कृति के प्रसार में संगीत की भूमिका (विशेष संदर्भ – पं. श्रीराम शर्मा आचार्य)
11. अनीता वाजपेयी – आचार्य श्री के साहित्य में संवेदना के विविध आयाम।
12. कृष्णा चौधरी – आचार्य पं. श्रीराम शर्मा की ज्ञान–मीमांसा : एक दार्शनिक अध्ययन।
13. श्रीमती मंजरी – Diversity of Pteridophytic Flora of Sonbhadra Area (UP) with Special Reference to their Ethnobotany and Conservational Strategies.

मनोविज्ञान पी–एच.डी. हेतु पंजीकृत छात्र–छात्राओं का विवरण

1. ऋतु मिश्रा – Depression Management Through Psychospiritual pakage.
2. दीपक सिंह – A Holistic Psychotherapeutic Approach for the Management of Obsessive - Com pulsive Disorder (OCD)
3. प्रज्ञा राणा – महामृत्युंजय मंत्र जप का मानसिक स्थिति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

4. **मनीषा** – शिक्षित बरोजगार युवाओं में व्याप्त मनोवैज्ञानिक विक्षुब्धता का अध्ययन।

5. **रश्मिता शर्मा** – Effect of tratak sadhana on memory improvement - A study.

6. **रीना सैनी** – Psychoneurotic Disorders as Related to guilt efflings.

7. **संतोष कुमार विश्वकर्मा**– A study the effect of "yug shilpi traning programme" (as conducted by shanti kunj, haridwar) on some psychological measures, a follow up study.

8. **सरिता राठौर** – किशोरों की समायोजन समस्या पैतृक स्वीकरण व अस्वीकरण से सम्बंधित तथ्य का अध्ययन।

9. **श्वेता** – Development of personality traits among adolescents as related to perceived home environment.

10. **अखिलेश्वर साव** – मनो–आध्यात्मिक विकास कार्यक्रम का सामान्य मानसिक योग्यता, सांवेगिक स्थिरता, सर्जनात्मकता एवं आत्म–विश्वास स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

11. **अर्चना दुबे** – किशोरों के सांवेगिक आवश्यकताओं की परिपूर्ति के संदर्भ में शैक्षणिक निष्पादन तथा मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन।

12. **विनीता शर्मा** – A study of the effects of counselling, nadishodhana pranayama and kamdhenu arka on the level of anxiety, depression & immunesystem of aids patients.

13. **ऋतु चौहान** – A therapeutic package for the management of attention deficit hyperactive syndrome (ADHS) of childrens.

14. **स्मिता सिंह** – त्राटक और प्रणव का आत्मविश्वास, चिन्ता, अवसाद और कुण्ठा पर प्रभाव का अध्ययन।

15. **विद्या भूषण शर्मा** – मद्यपानता एवं मद्यपान व्यसनी की समस्याओं पर यौगिक अभ्यास के प्रभाव का अध्ययन।

16. **पूजा कौशिक** – Mansataap avam sambandhit jyotish char

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

17. **पूजा शर्मा** – यज्ञ द्वारा निम्न रोग–प्रतिरोधक क्षमता के रोगियों में उत्पन्न मनो–वैज्ञानिक लक्षणों का प्रबंधन।

18. **प्रीति शुक्ला** – यज्ञ चिकित्सा का मानसिक मंदता से ग्रस्त बच्चों के बुद्धिलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन।

19. **शालिनी शर्मा** – यज्ञोपैथी द्वारा मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

20. **सुभाष कश्यप** – प्रज्ञायोग व्यायाम, नादयोग तथा स्वाध्याय का विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य, तथा आशावादी–निराशावादी मनोवृत्ति पर प्रभाव।

21. **सृजना कौर सोढ़ी** – A study of frustration tolerance and neuroticism as related to personality type in spiritual and normal environment.

22. **वन्दना चौहान** – सास–बहू के सम्बंधों को प्रभावित करने वाले सामाजिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक कारकों का अध्ययन।

23. **नम्रता बिहारिया** – प्रार्थना का मानसिक स्वास्थ्य एवं आत्मविश्वास पर प्रभाव का अध्ययन।

24. **अविनाश बिहारिया** – युग निर्माण मिशन का जीवन शैली एवं मूल्य उनमुखीकरण पर प्रभाव का अध्ययन।

25. **आरती गुप्ता** – A study of adjustment and academic performance of the children of leprosy patients.

26. **गायत्री चौधरी** – श्रीमद्भगवदगीता में व्यक्तित्व संप्रत्यय एवं समग्र मनःचिकित्सा के प्रारूप का अध्ययन।

27. **महाश्वेता चौपदार** – A study of the Effects of Psycho-Herbal Yogic Package on Insomnia.

योगविज्ञान पी–एच.डी. हेतु पंजीकृत छात्र–छात्राओं का विवरण

1. **शमशेर सिंह** – Effects of selected Yogic Practices on Physical and Physiological variables of deaf and dumb children.

2. **राजेश कुमार** – तन्त्र योग में धारणा का विवेचनात्मक अध्ययन (विज्ञान भैरव के विशेष संदर्भ में)

3. **रचना सिरोही** – यौगिक अभ्यासों का मनोशारीरिक चरों पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रभाव – एक प्रयोगात्मक अध्ययन।

4. **अमृत लाल गुर्वेन्द –** मंत्रयोग का वैज्ञानिक विवेचन।

5. **सरस्वती रतूड़ी –** समकालीन साधिकाओं की योग साधना : 21वीं सदी के परिप्रेक्ष्य में (एक विवेचनात्मक अध्ययन एवं मूल्यांकन)

6. **देवेन्द्र कुमार आर्य –** यौगिक एवं वैज्ञानिक सन्दर्भ में योगसूत्र एवं शिव संहिता का तुलनात्मक अध्ययन एवं विवेचन।

7. **सोमलता झा –** औपनिषदिक प्राण–विद्या का वैज्ञानिक विवेचन

8. **चारु शर्मा –** श्रीदुर्गासप्तशती में योग के विविध आयाम – एक विवेचनात्मक अध्ययन।

9. **भानु प्रकाश जोशी –** कपालभाति व अनुलोम–विलोम प्राणायाम का चिन्ता अवसाद व फेफड़े की क्षमता पर प्रभाव का अध्ययन।

10. **ऋचा शर्मा –** योग मुद्राओं के मनोवैज्ञानिक प्रभावों का अध्ययन।

11. **ऋतु पाण्डेय –** प्राणाकर्षण प्राणायाम, ज्योति अवतरण की ध्यान साधना एवं नाद साधना द्वारा वृद्धों की मनोकायिक समस्याओं का प्रबन्धन।

12. **इन्दु शर्मा –** आचार्य श्री की स्वर्ण जयन्ती साधना का समायोजन मनस्तापीयता पर प्रभाव।

13. **कंचन जोशी –** To study the effects of nadishodhana, bhramari pranayama & om chanting on memory enhancement of college students.

14. **कामता प्रसाद साहू –** वर्तमान समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में शांतिकुंज द्वारा किये गये योग शिक्षण के प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

15. **मोनिका शर्मा –** प्रत्यावर्तन साधना का किशोर एवं किशोरियों के शैक्षणिक चिन्ता, आत्म सम्मान, सृजनात्मकता एवं आत्मविश्वास स्तर में पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

16. **शिखा रानी –** नारद भक्ति सूत्र एवं शांडिल्य भक्ति सूत्र का तुलनात्मक अध्ययन।

17. **शिवानी शर्मा –** भ्रामरी प्राणायाम एवं नाद साधना का कर्मचारी महिलाओं की कुंठा एवं चिंता पर प्रभाव।

18. **विजय सिंह –** A study the effect of yogic practices in autoimmune diseases with special reference to rhewnatoid arthritis.

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

19. **नितिन ढोमणे** – 21वीं सदी के परिपेक्ष्य में श्रीरामकृष्ण परमहंस एवं आचार्य श्रीराम शर्मा की यौगिक साधनाओं का विवेचनात्मक अध्ययन एवं मूल्यांकन।

20. **भावना श्रीवास्तव** – यौगिक अभ्यासों का शारीरिक विकलांग व्यक्तियों की कुंठा, आत्म हीनता एवं असुरक्षा की भावना पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

21. **पारुल अग्रवाल** – Yogic management of low back pain.

22. **पूनम मिश्रा** – योग की विविध परम्पराओं के परिप्रेक्ष्य में स्वामी विवेकानन्द की योग साधना के विविध आयामों का विवेचनात्मक अध्ययन।

23. **रश्मि शर्मा** – श्रीमद्भागवत में योग की विविध धारायें – एक विवेचनात्मक अध्ययन।

24. **श्री दयानन्द सिन्हा** – हठयौगिक अभ्यास का अस्थमा के रोगियों पर प्रभाव का अध्ययन।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

25. **रजनी रौतेला** – आचार्य श्री की योग साधनाओं का शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव का अध्ययन।

26. **शालिनी देवी** – महर्षि पतंजलि एवं युगऋषि आचार्य श्रीराम की यौगिक प्रक्रियाओं का तुलनात्मक अध्ययन एवं विवेचन।

27. **सीमा चौहान** – महिलाओं के प्रजनन संस्थान सम्बंधी रोगों पर यौगिक अभ्यास एवं प्राकृतिक चिकित्सा के प्रभाव का अध्ययन।

28. **सुमन चौधरी** – सूफीमत की रहस्यमयी योग साधनाओं का विवेचन।

29. **सुनील कुमार** – आयुर्वेदिक पंचकर्म एवं योगिक षटकर्म का तुलनात्मक अध्ययन एवं विवेचन।

30. **सुनील देशमुख** – आचार्य श्रीराम शर्मा द्वारा प्रतिपादित प्रज्ञायोग एवं प्राणाकर्षण प्राणायाम का बाल अपराधियों के मनोवैज्ञानिक स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

31. **श्वेता रावत** – छात्रों के समायोजन, मनस्तापियता स्तर पर ऊँ उच्चारण, उज्जयी प्राणायाम व शीतली प्राणायाम का प्रभाव।

32. **नीतू सक्सेना** – रामचरित मानस में योग के विविध आयाम – एक विवेचनात्मक अध्ययन।

33. **अरुण कुमार साव** – अंतः ऊर्जा जागरण सत्र का शरीर क्रिया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विज्ञान एवं मनोवैज्ञानिक स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

34. आराधना – विद्यार्थियों के निकट दृष्टिदोष एव दूर दृष्टिदोष के यौगिक प्रबन्धन।

35. गरिमा – तंत्र योग की विविध परम्पराओं के परिप्रेक्ष्य में युगऋषि आचार्य श्रीरामशर्मा के तंत्रयोग का समीक्षात्मक अध्ययन।

युगदृष्टा ने देखा एक दिव्य स्वप्न

"मेरा एक स्वप्न है और मेरे स्वप्न, दिवा स्वप्न नहीं, दिव्य स्वप्न होते हैं।" यह वाक्य कहते–कहते परम पूज्य गुरुदेव भावलोक की अनुभूतियों में खोने लगे। उनके मुख पर एक अलग ढंग की तेजस्विता दप–दप चमकने लगी। मस्तिष्क का चंद्राकार निशान चमक उठा। गुरुदेव गंभीर हो गए थे। ऐसा लग रहा था, जैसे वह विशेष सत्य बताना चाहते हों। वे भविष्य को एक नई दृष्टि देना चाहते थे। भावमुद्रा कुछ ऐसी ही थी। सचमुच ही उन पलों वे अपनी अनुभूतियों के सागर के कुछ अनमोल रत्न बाँटना चाहते थे। उस दिन भी दोपहर थी, लेकिन यह दोपहर मई महीने की थी। सूर्य भगवान् सब ओर बड़ी उदारता से अपनी धूप लुटा रहे थे। इसकी उष्मा के प्रभाव से हवाएँ भी उष्ण हो गई थीं। गरमी का अहसास सभी को होने लगा था। मौसम के प्रभाव से पैदा हुई तपिश दोपहर में कुछ ज्यादा बढ़ जाती थी, लेकिन गुरुदेव की सामान्य दिनचर्या भी तपश्चर्या थी। इस पर मौसम का कोई प्रभाव नहीं पड़ता था। न कोई घट–बढ़ और न ही कोई हेर–फेर। सदा ही वह अपने तप में तपते थे।

उनके तप की तपन सूर्य की तपन से कुछ अलग थी। सूर्य की तपन से केवल देह तपती है। बाहरी परिस्थितियों में इसकी अनुभूति होती है, लेकिन गुरुदेव के तप की तपन की अनुभूति मन व प्राण करते थे। संपूर्ण अंतःकरण एवं आंतरिक प्रकृति व परिस्थिति में इसकी अनुभूति होती थी। उनके संग के कुछ पल भी जीवन में धन्यता लाने वाले थे। जो भी उनसे मिलता, अपनी पात्रता के अनुसार उनसे कुछ–न–कुछ अवश्य पा लेता। उनके देने का अंदाज निराला था। वे रोग, शोक, कष्ट, कठिनाई आदि लौकिक समस्याओं का ही निवारण–निराकरण नहीं करते थे, आत्मा की क्यारी में भी बीज बोते थे। अपने तप की ऊर्जा–उष्मा से उन्हें उगाते–बढ़ाते थे।

ऐसे तपोमूर्ति गुरुदेव बोल रहे थे, "बेटा, इस देश और धरती में जब भी नया जीवन अंकुरित हुआ, विश्वविद्यालयों में हुआ। जब भी नया युग आया, तो उसकी शुरुआत विश्वविद्यालयों से हुई। जब नए मनुष्य गढ़े गए, उन्हें नई दिशा मिली तो विश्वविद्यालयों से मिली, पर ये विश्वविद्यालय आज के जैसे नहीं थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उनमें शिक्षा रटाने और पैसा बटोरने की जगह विद्या के वरदान दिए जाते थे। महामानवों–देवपुरुषों की पौध तैयार की जाती थी। नालंदा, तक्षशिला के विश्वविद्यालय ऐसे ही थे।''

''यहाँ के ऊर्जावान् आचार्य और प्राणवान् विद्यार्थी मिलकर प्राणऊर्जा का ऐसा प्रवाह पैदा करते है थे कि पूरे देश के प्राण लहलहा उठते थे। सारी धरती पर जीवन मूल्यों के वरदान बरस जाते थे।'' कहते–कहते गुरुदेव एक पल के लिए रुक गए। पल–क्षण की इस भाव समाधि में शायद वह किसी सत्य को मूर्त होता हुआ देख रहे थे। अपनी दृष्टि–पथ में आए इस सत्य को प्रकट करते हुए वह कहने लगे, 'ऐसे ही एक विश्वविद्यालय की स्थापना मेरा भी स्वप्न है।'

सुनने वाले अपने सद्गुरु की सामर्थ्य से परिचित थे। उन्हें मालूम था कि उनके गुरुदेव युग के विश्वामित्र हैं। उनमें नवसृजन की, नई सृष्टि रचने की सामर्थ्य है। सुनने वाले की सोंच की कड़ियाँ गुरुदेव की वाणी से प्रवाहित हो रहे प्राण प्रवाह में विलीन हो गईं। अब केवल उनके शब्द ही ध्वनित हो रहे थे, ''यह विश्वविद्यालय ऐसा होगा, जहाँ से कौडिन्य और कुमारजीव जैसे विद्यार्थी निकलेंगे, जो देश की धरती और विश्व–वसुंधरा में देव संस्कृति की संवेदना का विस्तार करेंगे।''

'यह देव संस्कृति का ऐसा ध्रुव केन्द्र होगा, जहाँ देश के कोने–कोने से ही नहीं, विश्व के हर भू–भाग से लोग आएँगे और जानेंगे कि भारतीय संस्कृति क्या है? यहाँ भारतीय संस्कृति और भारतीय विद्याओं के हर पहलू पर अध्ययन होगा, शिक्षण होगा, शोध होगी।' अपना यह वाक्य पूरा करते–करते गुरुदेव फिर चुप हो गए, लेकिन यह चुप्पी बस एक क्षण के लिए रही, दूसरे ही क्षण वह फिर बोलने लगे, ''वैसे अभी ब्रह्मवर्चस् शोध संस्थान है, लेकिन यह कहीं छोटा है। इसमें इतना बड़ा काम नहीं हो सकता। इतने बड़े काम के लिए तो एक विश्वविद्यालय चाहिए।''

''देव संस्कृति के व्यापक एवं बहुआयामी अध्ययन, शिक्षण एवं शोध के लिए बना विश्वविद्यालय।'' अपनी इस भविष्य रचना को जैसे उन्होंने एक पल अपनी दिव्य दृष्टि से निहारा। इसी के साथ उनके अधरों पर हलकी सी एक स्मिति रेखा झलकी। उस मुस्कान के प्रकाश में सत्य मुखरित हो उठा। उन्होंने सुनने वालों को टोकते हुए कहा ''देव संस्कृति विश्वविद्यालय कैसा रहेगा यह नाम?'' फिर नाम के महत्व को स्पष्ट करते हुए वह कहने लगे ''नाम किसी व्यक्ति का हो या केन्द्र का, उससे उसके गुण और कार्यों की अभिव्यक्ति हो जानी चाहिए। किसी की पहली झलक उसके नाम से ही मिलती है। हमारे विश्वविद्यालय का नाम कुछ ऐसा हो, जिसे सुनकर ही लोग इसके महत्वपूर्ण उद्देश्यों एवं कार्यों को जान

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सकें, उसके बारे में सोच सकें।"

सुनने वाले गुरुदेव की वाणी को मुग्ध मन से सुन रहे थे। उन्हें यह बात समझ में आ रही थी कि सद्गुरु की दिव्य दृष्टि भविष्य के जिस विश्वविद्यालय को देख रही थी – उसका नाम देव संस्कृति विश्वविद्यालय होगा और वह ब्रह्मवर्चस् का बड़ा और व्यापक रूप होगा। गुरुदेव की योजना शायद अभी पूरी तरह से स्पष्ट नहीं हो पाई थी। वह अभी कुछ और कहना चाहते थे। उनहें अभी कुछ और बताना था। अपने भावों को वाणी देते हुए उन्होंने कहा "बेटा, इस विश्वविद्यालय की स्थापना तक तो हम नहीं रहेंगे, पर तुम लोग इसे स्थापित होते हुए देखोगे। तुम सभी को यह जिम्मेदारी उठानी और निभानी पड़ेगी। इसके लिए तुम लोग अभी से अपनी योग्यता बढ़ाओ।"

"हम इस विश्वविद्यालय के लिए आचार्य चाहते हैं, जो अपने आचरण और जीवन से शिक्षा दे सकें, ऐसे आचार्य। हमें व्याख्यान देने वाले व्याख्याता नहीं चाहिए। बुद्धि और शब्दों से यदि कुछ बदला जा सकता, तो सारी दुनिया न जाने कब की बदल चुकी होती। जो शब्दों से खिलवाड़ करते हैं, वो नट, बाजीगर की तरह बुद्धि की कुलाँचों के चमत्कार दिखाते हैं, ऐसे आडंबर करने वालों से हमारा काम चलने वाला नहीं है। हमें तो संकल्पवान् आचार्य चाहिए। जो अपनी संस्कृति के लिए, मातृभूमि के लिए, विश्व–मानवता के लिए स्वयं को तिल–तिल करके मिटाने का साहस रखते हों।'

'देखो, चाणक्य क्या था! तक्षशिला विश्वविद्यालय का आचार्य था। वह कोरा विद्वान और व्याख्यानबाज नहीं था। उसके अंदर आचरण की निष्ठा थी, संकल्प का बल था। अपने देश और धरती के प्रति अनुराग था। अपनी संस्कृति के लिए समर्पण था, मातृभूमि के लिए मर मिटने की निष्ठा थी। अपने इन्हीं गुणों की ताकत से उसने विदेशी यवनों को खदेड़ा, देश के अत्याचारी और अन्यायी शासकों को धूल–धूसरित करके मिट्टी में मिला दिया। चंद्रगुप्त जैसे साधारण और गलियों में भटकने वाले बालक को पराक्रमी योद्धा, महानायक और नीतिकुशल सम्राट् बना दिया। उसके प्रयासों से एक नए युग की शुरुआत हो गई।"

"मेरा स्वप्न भी कुछ ऐसा ही है। मैं चाहता हूँ कि ऐसे विश्वविद्यालय की स्थापना हो, जिसके आचार्य और विद्यार्थी मिलकर एक नए युग को जन्म दें। भगवान् साक्षी है कि मेरे स्वप्न कभी अधूरे नहीं रहते। मेरा यह स्वप्न भी पूरा होगा, लेकिन इसे तुम सब को मिलकर पूरा करना है। तुम सब लोग मिलकर कुछ ऐसा करना कि ऋषियों द्वारा स्थापित विश्वविद्यालय की महिमा इसमें प्रकट हो सके।" गुरुदेव के वचन तो सदा ही मंत्र थे और हैं। आज जो कुछ भी हो रहा है, उसमें उन्हीं के द्वारा उच्चरित मंत्रों का अर्थ प्रकट हो रहा है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वप्न हुआ साकार

- कुलपिता का स्वप्न देव संस्कृति विश्वविद्यालय के रूप में साकार।
- वर्ष 2002 में हिमालय की गोद में गंगा तट के निकट स्थापना।
- 84 एकड़ भूमि पर हरिद्वार–ऋषिकेश मार्ग पर सुरम्य वातावरण में स्थित।
- उत्तरांचल शासन के अधिनियम द्वारा गायत्रीकुंज की स्थापना।
- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, भारत सरकार से विधिवत मान्यता प्राप्त।
- श्रीवेदमाता गायत्री ट्रस्ट, शांतिकुंज, हरिद्वार द्वारा पोषित।
- विभिन्न धर्मों की वाटिकाओं के मध्य अनूठी स्थापत्य कला वाले भवन।
- विशाल भवन में अंतर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक अध्ययन केन्द्र की स्थापना।
- भारतीय ज्ञान की श्रेष्ठता प्रतिपादित करते ज्योतिर्विज्ञान के विशाल यंत्र।
- उच्च शिक्षित शिक्षकों–कर्मियों द्वारा निर्वाह मात्र हेतु मानदेव स्वीकार्य।
- सत्र के आरंभ में भव्य ज्ञानदीक्षा संस्कार का आयोजन।
- पूर्णतया आवासीय परिसर में विद्यार्थियों की दिनचर्या पर विशेष ध्यान।
- आप्टिकल फाइबर की मदद से पूर्णतया कम्प्यूटरीकृत संस्थान।
- छात्रों को स्वावलम्बी बनाने वाले पाठ्यक्रमों पर विशेष जोर।
- विज्ञान और अध्यात्म के संगम का गम्भीर प्रयास।
- विश्वविद्यालय में 20 राज्यों के विद्यार्थियों का प्रतिनिधित्व।
- विभिन्न विदेशी विशेषज्ञों का समय–समय पर आगमन।
- समय–समय पर विदेशी छात्रों के समूह के साथ प्रत्यक्ष सम्पर्क।
- माननीय कुलाधिपति द्वारा 'गीता एवं ध्यान' पर हर सप्ताह विशेष कक्षाएँ।
- पाठ्यक्रम के साथ 'जीवन प्रबन्धन' का भी प्रशिक्षण।
- विद्यार्थियों के प्रशिक्षण एवं रोजगार की व्यवस्था के लिए विशेष विभाग।

पाठ्यक्रम

स्नातकोत्तर उपाधि पाठ्यक्रम –

एम.ए.– यौगिक साइंस एंड ह्यूमन एक्सीलेंस।

एम.एस–सी.– एप्लाइड योग एंड होलिस्टिक हेल्थ।

एम.ए./एम.एस–सी. – नैदानिक मनोविज्ञान।

एम.ए. – पत्रकारिता एवं जनसंचार।

एम.ए. – भारतीय संस्कृति एवं पर्यटन प्रबंधन

(अवधि : 2 वर्ष, अधिकतम आयु : तीस वर्ष, अर्हता : न्यूनतम पचास प्रतिशत अंकों के साथ स्नातक)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम –

पत्रकारिता एवं जनसंचार

मानवीय चेतना एवं योग विज्ञान

(अवधि : एक वर्ष, अधिकतम आयु 30 वर्ष, अर्हता : न्यूनतम पचास प्रतिशत अंकों के साथ स्नातक)

इंटीग्रेटेड स्नातक पाठ्यक्रम –

मानवीय चेतना एवं योग विज्ञान।

मनोविज्ञान।

अंग्रेजी साहित्य एवं कम्युनिकेशन स्किल

भारतीय संस्कृति

कम्प्यूटर स्किल

संस्कृति एवं संस्कृति का आधारभूत पाठ्यक्रम

जीवन जीने की कला (अनिवार्य विषय)

अर्हताएँ –

इंटरमीडिएट में न्यूनतम 50 प्रतिशत अंक होना अनिवार्य।

जो छात्र स्नातक स्तर पर तीसरे वर्ष योग के विशेष प्रश्नपत्रों के साथ अंग्रेजी साहित्य और कम्यूनिकेशन स्किल पढ़ेंगे, उन्हें ही एम.ए./एम.एस–सी. योग विज्ञान से सम्बंधित पाठ्यक्रम में प्रवेश दिया जाएगा। जो छात्र मनोविज्ञान व अंग्रेजी विषय तीसरे वर्ष में लेंगे, उन्हें एम.ए./एम.एस–सी. मनोविज्ञान में प्रवेश दिया जायेगा।

प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम –

ग्राम प्रबंधन

धर्मविज्ञान

एप्लाइड योग एण्ड होलिस्टिक हेल्थ

समग्र स्वास्थ्य प्रबंधन

मानवीय चेतना एवं योग विज्ञान

व्यवहार विकृतियाँ एवं मनोचिकित्सा

(अवधि : छह माह)

अर्हताएँ –

व्यवहारिक विकृतियां एवं मनोचिकित्सा हेतु मेडिकल ग्रेजुएट (बी.ए.एम.एस./एम.बी.बी.एस.)

धर्म विज्ञान तथा मानवीय चेतना एवं योग विज्ञान के लिए 10+2 में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

न्यूनतम 40 प्रतिशत अंक अनिवार्य।

अन्य प्रमाण पत्र पाठ्यक्रमों के लिए स्नातक डिग्री।

आयु सीमा अधिकतम 30 वर्ष, केवल धर्म विज्ञान एवं ग्राम प्रबंधन पाठ्यक्रमों हेतु अधिकतम आयु 35 वर्ष, तथा पांच वर्ष की छूट समाज सेवा के कार्यों की पुष्टि होने पर।

शिक्षण प्रक्रिया में सार्थक परिवर्तन की नयी पहल –

देव संस्कृति विश्वविद्यालय ने शिक्षण प्रणाली में एक सार्थक परिवर्तन लाने की पहल करते हुए सप्ताह में एक दिन अध्यापन कार्य गैर पारंपरिक पद्धति से करना आरम्भ कर दिया है। यहाँ हर शनिवार को शिक्षण कार्य समूह–चर्चा, वाद–विवाद, सेमीनार, क्षेत्र भ्रमण एवं विभिन्न विषयों के विद्यार्थियों–आचार्यों में संवाद के माध्यम से कराया जाएगा।

इस प्रक्रिया से विद्यार्थियों की शिक्षण प्रक्रिया में भागीदारी और बढ़ेगी, जो उनके विकास के लिए आवश्यक है। मनोविज्ञान विभाग ने अब तक जहाँ सामुदायिक मानसिक स्वास्थ्य, आपदा के समय मनोवैज्ञानिक सहायता, मनोवैज्ञानिक परीक्षण, आयुर्वेद और मनोविज्ञान जैसे विषयों पर सेमीनार आयोजित किये हैं, वहीं जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग द्वारा आयोजित सेमिनारों में भूमण्डलीकरण और भारत, परंपरागत जनसंचार माध्यमो का प्रभाव, जैसे सामयिक विषयों पर चर्चा की गयी। इसके अलावा विशिष्ट कार्यक्रमों में यदि धरती बोलने लगे, यदि अमेरिका आध्यात्मिक हो जाए, यदि मूक पशुओं की सरकार बने, जैसे रोचक विषयों पर भी विद्यार्थियों ने अपने विचार व्यक्त किये हैं। भारतीय संस्कृति एवं पर्यटन विभाग ने 'बुद्ध एवं महावीर स्वामी', सूफीवाद, सिक्कों में झलकती संस्कृति जैसे विषयों पर सेमिनार आयोजित किये। योग विभाग द्वारा आयोजित सेमिनारों में कर्मयोग, हठयोग, योग से जीवन प्रबंधन, योग का मनोविज्ञान से रिश्ता, योग और आधुनिक शरीर विज्ञान जैसे विषयों पर विद्यार्थियों ने अपने विचार व्यक्त किये।

कम्प्यूटर विभाग ने जहाँ आर्टीफीशियर इंटेलीजेंस और आधुनिकतम तकनीक जैसे विषयों पर सेमीनार आयोजित किये, वहीं धर्म विज्ञान ने 'मूर्तिपूजा का मनोविज्ञान', स्वधर्म समभाव, युग निर्माण योजना, धर्म एवं स्वास्थ्य, प्राचीन गौरव प्राप्ति की दिशा में कदम, जैसे विषयों पर संगोष्ठियों का आयोजन किया। समग्र स्वास्थ्य विभाग ने यज्ञ का विज्ञान, आयुर्वेद और दिनचर्या, मसाले एवं स्वास्थ्य जैसे विषयों पर सेमिनार आयोजित किये।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आमजन के लिए चिकित्सा का अनोखा संगम

कहाँ मनुष्य में देवतुल्य शक्तियों का स्वामी होने की अपार क्षमताएँ और कहाँ निजी शारीरिक पीड़ाओं से कराहते व्यक्ति। इस विषम स्थिति को दूर करने के लिए ही 'प्रज्ञा योग' के जन्मदाता हमारे कुलपिता पं. श्रीराम शर्मा 'आचार्य' ने स्वास्थ्य को युग परिवर्तन के लिए प्रारंभिक आवश्यकता बताया है। उन्हीं के बताये मार्ग पर चलते हुए विश्वविद्यालय के मानवीय चेतना एवं योग विज्ञान विभाग ने हाल ही में विभिन्न रोगों से पीड़ित व्यक्तियों के इलाज के लिए नियमित विशेष चिकित्सकीय सुविधा विश्वविद्यालय में आरंभ की, जिसमें योग के साथ प्राकृतिक चिकित्सा, प्राणिक हीलिंग और एक्यूप्रेशर चिकित्सा पद्यतियों का सुन्दर संगम है।

सेवाभावी आधार पर आरंभ की गयी इस नियमित व्यवस्था से पहले प्रायोगिक आधार पर कई शिविर लगाये गये, जो काफी सफल रहे। विभाग की एक अन्य आवश्यकता इस अक्टूबर माह में अब पूरी हो गयी, जब कुलाधिपति आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या ने प्राकृतिक चिकित्सा विभाग के पृथक् उपचार भवन का उद्घाटन किया। इसमें तीन मालिश कक्ष, एक वाष्प स्नान कक्ष, एक स्पाइनल स्प्रे रूम, दो कटि स्नान कक्ष, एक पूर्ण डूब स्नान कक्ष, एक एनिमा कक्ष और एक स्नान कक्ष शामिल हैं। इसमें मिट्टी स्नान के लिए तीन जगह व्यवस्था है साथ ही चरण और भुजा स्नान के लिए भी विशेष उपकरण हैं। सूर्य चिकित्सा की भी यहां उत्तम व्यवस्था है।

www.vicharkrantibooks.org

हमारा रबर ब्वाय बना राष्ट्रीय योग चैम्पियन

विश्वविद्यालय के छात्र समरेश कश्यप ने बीसवीं राष्ट्रीय योगासन चैम्पियन में स्वर्णपदक जीतने का करिश्मा कर दिखाया। चि. समरेश कश्यप ने आल इंडिया योग कल्चरल फेडरेशन के तत्वावधान में 12 से 14 मई 2006 तक वाराणसी उ.प्र. में आयोजित प्रतियोगिता में सोने का पदक हासिल किया है। ज्ञात हो कि इससे पूर्व वर्ष 2003 में विश्वविद्यालय की छात्रा इंदू शर्मा ने यह उपलब्धि हासिल करके विश्वविद्यालय का नाम सम्पूर्ण देश में रोशन किया था।

प्रतियोगिता में बारह राज्यों की बीस टीमों ने भाग लिया था। इन्टरनेशनल योग फेडरेशन से सम्बद्ध इस संस्था ने प्रतियोगिता का आयोजन योग विज्ञान में केन्द्र सरकार की सर्वोच्च संस्था 'आयुष' के मानकों के आधार पर किया था। इस चैम्पियनशिप के लिए उत्तरांचल से सात सदस्यीय दल गया था, जिसमें सोने का पदक मात्र समरेश को हासिल हो सका, जब कि एक अन्य पदक स्वतंत्र प्रतिभागी श्री रमनीश वत्स (अब देव संस्कृति विश्वविद्यालय के छात्र) को प्राप्त हुआ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समरेश की सफलता पर लखनऊ आकाशवाणी एवं लखनऊ दूरदर्शन ने उन्हें विशेष साक्षात्कार के लिए अपने यहाँ आमंत्रित किया। इन्दिरानगर लखनऊ स्थित गायत्री ज्ञान मंदिर पर आयोजित समरेश की योग प्रस्तुति को देखने के लिए भी भारी भीड़ उमड़ी। समरेश ने यहाँ पर वृष्चिक आसन, एक पाद हस्तासन, मयूरासन, एक हस्त मयूराशन और नौलि क्रिया का सुन्दर प्रदर्शन किया, जिसे वहाँ उपस्थित भारी जनसमूह का तो प्रोत्साहन मिला ही, मीडियाने भी उनके प्रदर्शन की भूरि–भूरि सराहना की।

यूँ लौटेगी गाँवों की गरिमा

गाँव यानी भारतीय समाज और अर्थव्यवस्था की रीढ़। यह चोटिल है, इसीलिए राष्ट्र स्वाभिमान से खड़ा नहीं हो पा रहा है। अब तक आधुनिक शिक्षण व्यवस्था की आंखें इसके कष्ट के प्रति मुंदी रही, जिससे हर दिशा में अंधेरा बढ़ता चला गया। ग्राम प्रबंधन विभाग ने इस समस्या का उपचार करने की दिशा में एक छोटा सा मगर अहम कदम उठाया है।

बानगी के तौर पर स्पष्ट करें कि विभाग ने हरिद्वार जिले के बहादराबाद विकासखण्ड के तीन पिछड़े गांवों रसूलपुर, कुतुबपुर और धनौरी की गोद लेकर उन्हें मॉडल के रूप में विकसित करने का संकल्प लिया है। विभाग के छात्रों को भी इससे ग्रामीण समस्याओं का रूप समझने में मदद मिली है। विभाग के दल ने इन गाँवों में पहले स्थानीय ग्रामवासियों को जोड़कर उनके साथ स्वच्छता अभियान चलाया। ग्रामीणों के लिए प्रौढ़ शिक्षा की कक्षाएँ आयोजित की गयीं। साथ ही उन्हें कीट नियंत्रक, कम्पोस्ट एवं केंचुआ खाद बनाना सिखाया जा रहा है। उन्हें कुटीर उद्योगों का प्रशिक्षण देने की भी व्यवस्था है। बाल संस्कारशालाएँ खोली गयी हैं, जहाँ होमवर्क में मदद करने के साथ श्रेष्ठ मनोरंजन देने की भी व्यवस्था की है।

ग्राम प्रबंधन विभाग के इस कदम से उत्साहित धर्मविज्ञान विभाग ने गंगा भोगपुर गाँव को आदर्श गांव के रूप में विकसित करने का संकल्प लेकर वहाँ प्रति रविवार विभिन्न सेवाकार्य आरम्भ किए हैं, जिन्हें ग्रामवासियों का अपार प्यार व सहयोग मिल रहा है।

जिला चिकित्सा अधिकारियों की अनूठी बैठक

यह एक अनोखी क्लास थी। इसके छात्र थे उत्तर प्रदेश के जिला चिकित्सा अधिकारी और अध्यापक थे देव संस्कृति विश्वविद्यालय और गायत्री तीर्थ शांतिकुंज के आचार्यवृन्द। यह कार्यक्रम संजय गांधी स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संस्थान, लखनऊ ने भारत सरकार और यूरोपीय यूनियन के निर्देश पर आयोजित किया था।

27 से 30 अगस्त, 05 तक चली इस विशेष कक्षा में छात्रों की सीखने की ललक जहाँ देखते ही बनती थी, वहीं आचार्य सीमित समय में योग समेत देव संस्कृति का ज्यादा से ज्यादा ज्ञान बाँटने के लिए व्यग्र दिखायी पड़े। शायद उन्हें मालूम था कि ये छात्र निश्चित ही उनका ज्ञान हजारों को बांटकर आमजन को लाभान्वित करेंगे। उद्घाटन सत्र में विश्वविद्यालय के कुलाधिपति माननीय डॉ. प्रणव पण्ड्या ने रोल ऑफ मेडिसिन्स ऑन इमोशन्स विषय पर प्रभावी व्याख्यान दिया। उन्होंने विश्व सवास्थ्य संगठन द्वारा अवसादजनित बीमारियों की बढ़ती संख्या की चर्चा करते हुए भावनाओं के परिष्कार पर विशेष बदल दिया। एसजीपीजीआई के जन सांख्यिकी विभाग के अध्यक्ष डॉ. सी.एम. पाण्डेय, विशेष रूप से उपस्थित थे।

संजय गांधी पीजीआई ने इस प्रशिक्षण के परिणामों से प्रेरित होकर 6 से 10 फरवरी 2006 की तिथियों में पुनः विश्वविद्यालय में जिला चिकित्साधिकारियों का प्रशिक्षण सत्र आयोजित किया, जो काफी प्रभावी रहा।

www.vicharkrantibooks.org

दुनिया की आस–युवाओं के लिए विश्वयात्रा –

देश एवं दुनिया की आस युवा शक्ति को उसके अंदर छिपी शक्ति से परिचित कराने के लिए कुलाधिपति डॉ. प्रणव पण्ड्या ने इस वर्ष भारत समेत कई देशों में अनेक युवा शिविरों के माध्यम से लाखों युवकों का विश्वविद्यालय से प्रत्यक्ष–परोक्ष सम्बन्ध स्थापित किया। सिडनी अश्वमेध यज्ञ के समय 23 सितम्बर से 7 अक्टूबर 2005 तक उन्होंने आस्ट्रेलियाई युवाओं को विश्वविद्यालय एवं देव संस्कृति से जोड़ने में उल्लेखनीय भूमिका निभायी।

14 जुलाई से 7 अगस्त 2006 के बीच उनके निर्देशन में हैरिसबर्ग स्थित पैन यूनिवर्सिटी (अमेरिका), लंदन सिटी (वेस्ट ओटारियो, कनाडा) तथा व्हाइट वाटर विश्वविद्यालय (विस्कान्सिन, अमेरिका) में चार दिवसीय युवा शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में फ्रैंडशिप, रिलेशनशिप एवं लीडरशिप विषय पर कुलाधिपति महोदय का व्याख्यान विदेशी युवाओं में विशेष आकर्षण का केन्द्र रहा। इसी दौरै में श्रद्धेय ड़ॉ. साहब द्वारा शिकागो में चेतना केन्द्र का उद्घाटन किया गया। जोहान्सबर्ग (दक्षिण अफ्रीका) में 21 मई से आयोजित अश्वमेध यज्ञ के समय भी उन्होंने हजारों युवकों को विश्वविद्यालय के दर्शन से परिचित कराया। इसके अतिरिक्त कुलाधिपति ने देश में अनेक स्थानों पर युवा शिविर आयोजित कर युवा शक्ति से विश्वविद्यालय का भावनात्मक सम्बंध स्थापित किया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दुनिया भर से एकत्र हुई प्रवासी प्रतिभाएँ –

महाभारत में महर्षि कृष्ण द्वैपायन व्यास कहते हैं, ज्ञान के लिए दुनिया में कोई दीवार नहीं है। यह तो मानव मात्र के उत्थान के लिए होता है। सच भी है भारत की देन 'शून्य' से आज पूरी दुनिया का गणित चल रहा है। और यूरोपवासी एडीसन के बल्व से पूरी दुनिया प्रकाशित है। भारतीय संस्कृति का प्रकाश पूरी दुनिया में पहुंचाने के लिए भी यह आवश्यक है कि दुनिया में हर संकीर्ण सीमा से पार निकला जाए। इस दिशा में विश्वविद्यालय का एक अहम प्रयास है – अंतर्राष्ट्रीय युवा शिविर।

14 से 27 जुलाई 2005 तक विश्वविद्यालय में विश्व के प्रमुख देशों में आयी चुनिंदा युवा प्रवासी प्रतिभाएँ एकत्र थीं। उम्र थी 14 से 26 वर्ष इस वर्ष के शिविर का विषय था – 'नेतृत्व क्षमता का विकास।' विश्वविद्यालय की अवधारणा थी कि इन्हें विदेश में भारत का सांस्कृतिक दूत बनाया जाये। इस लक्ष्य हेतु प्रतिभागियों के लिए 'जीवन–प्रबन्ध' की विशेष कक्षाएँ आयोजित की गयीं। कुलाधिपति महोदय ने प्रतिभागियों को कर्मयोग पर विश्व के महानतम ग्रंथ 'गीता' का मर्म समझाया। युवा प्रतिभाओं ने वेदमंत्रों के अंग्रेजी भावार्थ जानने में भी विशेष रुचि दिखायी। इन सबके बीच सांस्कृतिक कार्यक्रमों के रंग भी खूब बिखरे।

www.vicharkrantibooks.org

युवा प्रतिभाओं जसपाल–समरेश का अभिनन्दन –

विपरीत परिस्थितियों से लोहा लेकर मंजिल पर अपनी सफलता का ध्वज गाड़ने वाली युवा प्रतिभाओं को देव संस्कृति विश्वविद्यालय एवं सामाजिक–आध्यात्मिक संस्था शांतिकुंज ने सम्मानित करने का निर्णय लिया है। इस क्रम का आरंभ करते हुए 12 अगस्त 06 को विभिन्न अंतराष्ट्रीय निशानेबाजी प्रतियोगिताओं में देश के लिए अनेक स्वर्ण पदक अर्जित कर चुके पद्मश्रीजयपाल राणा और अर्जुन पुरस्कार विजेता समरेश जंग को अखिल विश्व गायत्री परिवार प्रमुख एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ. प्रणव पण्ड्या द्वारा शांतिकुंज में सम्मानित किया गया।

ज्ञात हो कि पद्मश्री जयपाल राणा ने इस वर्ष आस्ट्रेलियन कप की सेन्ट्रल फायर प्रतिस्पर्धा में विश्व रिकार्ड बनाया है। इससे पूर्व उन्होंने वर्ष 1994 में स्टैंडर्ड पिस्टल जूनियर मैन प्रतियोगिता में भी विश्वकीर्तिमान बनाया था। सेन्टर फायर पिस्टल प्रतियोगिता में 1994 में एशियाई और 2002 में राष्ट्रमंडल रिकार्ड भी उनके नाम है। वे 24 बार राष्ट्रीय रिकार्ड भी बना चुके हैं। अर्जुन पुरस्कार विजेता श्री समरेश जंग ने इसी वर्ष राष्ट्रमंडल खेलों में पाँच स्वर्ण सहित सात पदक हासिल किये। इसके लिए उन्हें इन खेलों में डेविड डिक्सन सम्मान से भी नवाजा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गया। श्री जंग विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में अब तक 26 स्वर्ण 16 रजत और 8 कांस्य पदक जीत चुके हैं। इस अवसर पर अंतराष्ट्रीय खिलाड़ी एवं श्री समरेश जंग की पत्नी श्रीमती अनुजा जंग भी मौजूद थीं।

युवा मन में छिपे अर्जुन को दिशा –

विश्वविद्यालय में यूं तो कुलाधिपति द्वारा प्रति सप्ताह ली जाने वाली गीता की हर कक्षा विशिष्ट होती है, लेकिन प्रत्येक शारदीय नवरात्रि के अवसर पर एक सप्ताह के विशिष्ट गीता पारायण की अनुभूति हर एक श्रोता के हृदय पर अमिट हो गयी। पूरे नवरात्रि काल में कुलाधिपति ने गीता के प्रथम छह अध्यायों के माध्यम से 'कर्म योग' सातवें से बारहवें अध्याय के माध्यम से 'भक्तियोग' और तेरहवें से अठारहवें अध्याय के माध्यम से ज्ञान योग के मर्म को स्पष्ट किया।

माननीय कुलाधिपति डॉ. प्रणव पण्ड्या ने कहा कि हर युवा मन में एक अर्जुन छिपा है, जिसे क्षमतावान् होने के बावजूद जीवन की दिशा नजर नहीं आती। युवा मोहनदास महात्मा गांधी, तिलक लोकमान्य और नरेन्द्र विवेकानन्द यूँ ही नहीं बन गये। उन्हें यह स्थान दिलाने में श्रीमद्‌भागवतगीता ने माँ की भूमिका निभायी है। शक्ति अर्जन करने के महत्वपूर्ण पर्व नवरात्र पर कर्मयोग की अनुपम कृति गीता वर्तमान युग के युवाओं की भी दुविधाएं समाप्त कर उन्हें जीवन जीने की कला सिखा सकती है। कुलाधिपति ने कहा कि गीता में कर्मयोग के साथ ज्ञानयोग एवं भक्तियोग का अद्‌भुत संगम है। उन्होंने कहा कि मानव मन की समस्याओं का अत्यंत मनोवैज्ञानिक समाधान करने वाली गीता आज भी भटकती दुनिया को दिशा दिखा सकती है।

कुलाधिपति ने कहा कि गीता हमें कर्मफल से मुक्ति के मार्ग पर ले चलती है। यह हमें उत्कृष्टम कर्म करने का संदेश देती है, साथ ही यह कहती है कि निष्काम भावना से किया गया कर्म बोझ नहीं बनता। निष्काम कर्म करने वाला मनुष्य यदि परिस्थितियोंवश असफल रहा तो उसका हृदय नहीं टूटता और वह फिर अगले प्रयास में जुट जाता है और यदि वह सफल रहा तो उसमें अहंभाव सिकसित नहीं होता। क्योंकि यह अहंभाव ही ईश्वरत्व प्राप्ति में सबसे बड़ी बाधा है। कुलाधिपति ने कहा कि संवेदना से मनुष्य का दायरा विकसित होता है। जिनके हृदय में संवेदना का यह पुष्प विकसित हो गया, वे मनुष्य से देवता बन गये।

अंतर्मन को गढ़ता ध्यान –

इस अनूठे विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों के अंतर्मन को गढ़ने का गुरुत्तर कार्य कुलाधिपति की विशिष्ट ध्यान की कक्षाएँ निरंतर चर रही हैं, जिनके माध्यम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

से युवा मन में सृजनशील परिवर्तन लाने का एक मौन चक्र चल रहा है। ध्यान की इन कक्षाओं में विश्वविद्यालय का प्रमुख दर्शन 'विज्ञान एवं अध्यात्म का समन्वय' विशेष रूप से मुखरित होता है। कुलाधिपति डॉ. प्रणव पण्ड्या की वाणी में ध्यान इस सदी का सर्वमान्य होने जा रहा है। वे अपने हर व्याख्यान में प्रत्येक विशिष्ट ध्यान की वैज्ञानिक व्याख्या से स्पष्ट करते हैं कि किस प्रकार वह ध्यान अंतर्मन को रूपांतरित कर देता है। हर सप्ताह शारीरिक–मानसिक समस्याओं के मुताबिक एक अनूठे ध्यान की कक्षा लगती है। कुसंस्कारों के कारण जन्मीं मानसिक समस्याओं से छुटकारा दिलाने में सक्षम नाभि पर सूर्य का ध्यान, एकाग्रता के लिए दीप का ध्यान, दृष्टिकोण में व्यापकता की प्राप्ति के लिए आकाश तत्व का ध्यान, अहं के विलय के लिए बहते झरने का ध्यान, समर्पण के लिए मृत्यु का ध्यान, समग्र व्यक्तित्व के लिए पूज्य आचार्य श्री का ध्यान विद्यार्थी नियमित रूप से अपनी आवश्यकतानुसार करते हैं। परिवर्तन का अवसर तो उनके खिले चेहरे बयां करते हैं।

फूलों सी जिंदगी सिखाता जीवन प्रबंधन –

www.vicharkrantibooks.org

आज की युवावस्था में कांटों सी चुभन न हो, वह फूल बन खिले, मुस्कुराये और हर पल जग में सुगंध बिखेरे युवाओं की जिंदगी में व्यक्तिगत पीड़ा का स्थान संवेदना ले ले। अपने छोटे से कष्ट के लिए उठने वाली चीख दूसरे के लिए गिरने वाले अनमोल आँसू के रूप में बदल जाये, युवा मन में बिखरे मोती एक माला के रूप में जुड़ जायें जो राष्ट्रदेव के कंठ का हार बन जाय, ऐसे लक्ष्य लेकर विश्वविद्यालय में आरंभ किया गया 'जीवन प्रबंधन' पाठ्यक्रम यहाँ के विद्यार्थियों की मुस्कान बन गया है।

जीवन प्रबंधन के पाठ्यक्रम में प्रथम चरण के अंतर्गत जीवन की संभावनाओं की चर्चा की गयी। साथ ही इसमें विद्यार्थियों में अपने व्यक्तित्व के प्रति समझ विकसित की गयी। दूसरे भाग में जीवन की विकृतियों एवं इनके समाधान के विषय में विद्यार्थियों को वैज्ञानिक ढंग से बताया गया। तीसरे एवं अंतिम चरण में जीवन लक्ष्य, व्यक्तित्व विकास, व्यवहार कुशलता, सामंजस्य, समय प्रबंधन, तनाव मुक्ति आदि के विषय में स्वर्णिम जानकारियां दी गयी। इस पाठ्यक्रम में जहाँ सकारात्मक चिंतन की शक्ति को गहराई से आत्मसात् कराया जाता है वहीं व्यक्ति एवं वातावरण के रिश्ते को भी मनोवैज्ञानिक विधि से समझाया जाता है। सामयिक एवं आम जिंदगी से जुड़े उदाहरण इस पाठ्यक्रम की लोकप्रियता में और श्रीवृद्धि करते हैं। पाठ्यक्रम की एक अहम सफलता विद्यार्थियों में आत्म मूल्यांकन करने के गुण का विकास है। समस्त सफलताओं की शुरुआत इसी एक बिन्दु से तो होती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जन–जन में पहुँचा परिवर्तन का संदेश –

सृजन से जुड़ी गतिविधियों को शिखर पर पहुंचाने के लिए समाज का साथ जरूरी है। इसी दर्शन के साथ माननीय कुलाधिपति महोदय द्वारा विश्वविद्यालय में जनसंपर्क एवं सेवायोजन विभाग की स्थापना की गयी है। चंद महीनों में ही प्रकोष्ठ ने कतिपय महत्वपूर्ण सफलताएँ अर्जित की हैं, जो निम्नवत हैं –

- देश के विभिन्न क्षेत्रों के शिक्षाविदों, वैज्ञानिकों, अधिकारियों, पत्रकारों, जनप्रतिनिधियों, विशेषज्ञ स्तर की प्रतिभाओं एवं जनसामान्य से सम्पर्क–समन्वय।
- विश्वविद्यालय में पधारने वाले आगन्तुकों का स्नेह–सौजन्यपूर्ण मार्गदर्शन।
- न्यूज फीचर सेल द्वारा विविध विषयों पर समाचार एवं फीचरों का लेखन एवं अनेक प्रतिष्ठित पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशन।
- पासआउट विद्यार्थियों को शासकीय–अशासकीय विभागों, शिक्षा, स्वास्थ्य, मीडिया आदि संस्थानों एवं स्वयंसेवी सामाजिक संगठनों में सेवायोजित कराने में सफलता। गायत्री परिवार में सेवार्थ समयदान करने के इच्छुकों से नियमित सम्पर्क व मार्गदर्शन।
- राज्यों के पुलिस विभागों एवं प्रांतीय व केन्द्रीय पुलिस बलों हेतु योग–ध्यान प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन। यह अभियान राष्ट्रीय स्वरूप ले रहा है।
- नयी पीढ़ी के उन्नयन हेतु विभिन्न विद्यालयों में विविध प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन।
- जन–जन तक देव संस्कृति का संचार करने के लिए देव संस्कृति जनसंचार कार्यक्रम की पुस्तिकाओं हेतु शोध, लेखन, संपादन।
- इंटर्नशिप के जरिये देश के कोने–कोने तक देव संस्कृति का संदेश पहुंचाने हेतु यूँ होइये सफल, नाता विज्ञान एवं आध्यात्म का, अमृत कथाएँ, परिवार बने स्वर्ग आदि पुस्तकों का संपादन।
- विश्वविद्यालय से सम्बंधित ब्रोशर एवं अन्य पत्र–पत्रिकाओं का लेखन, सम्पादन, प्रकाशन।
- विश्वविद्यालय में अध्ययन कर चुके विद्यार्थियों से पत्राचार कर उनकी प्रतिभा के सुनियोजन की बहुआयामी योजना पर कार्य।
- उत्तरांचल राजभवन और राज्य की विधानसभा सहित विभिन्न महत्वपूर्ण पुस्तकालयों में कुलपिता पं. श्रीराम आचार्य द्वारा रचित सम्पूर्ण वाङ्मय साहित्य की स्थापना।
- राज्य के सभी गाँवों में आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों के माध्यम से नारी जागरण, बाल विकास–परिवार निर्माण आदि विषयों सम्बंधी साहित्य का प्रसार।
- राज्य के सभी 32 शासकीय पुस्तकालयों में कुलपिता की प्रमुख 24 पुस्तकें स्थापित करने में सफलता।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तनावग्रस्त पुलिस कार्मिकों को नयी ऊर्जा की सौगात –

देश के बाहर और अंदर बैठे दुश्मनों से मोर्चा ले रहे सुरक्षाकर्मियों के लिए एक तीसरा दुश्मन तैयार हो गया है – उनके अंदर विषबेल सा पनपता तनाव। सुरक्षाकर्मियों की आत्महत्याएँ, और सहकर्मियों पर हमले इसका प्रमण है।

इस विकराल समस्या से मुक्ति पाने के लिए कुलाधिपति महोदय के निर्देश पर विश्वविद्यालय के जनसम्पर्क एवं सेवायोजन विभाग ने छह माह से कम अवधि के भीतर विश्वविद्यालय के योग विज्ञान विभाग के सहयोग से उत्तरांचल, उत्तरप्रदेश एवं हिमालय प्रदेश में सुरक्षाकर्मियों के लिए विश्वविद्यालय के योग शिविर आयोजित कराये, जिनमें तनाव प्रबंधन के लिए विशिष्ट आसनों एवं ध्यान आदि के प्रशिक्षण की व्यवस्था थी। अब तक आयोजित प्रमुख कार्यक्रम निम्नवत हैं –

- पुलिस प्रशिक्षण महाविद्यालय, सीतापुर (उ.प्र.) में 10 जून, 2006 से आयोजित शिविर में योगाचार्यों श्री कामता प्रसाद साहू एवं श्री गुलाम असकरी जैदी द्वारा 494 नवनियुक्त सब इंस्पेक्टरों एवं उच्चाधिकारियों को प्रशिक्षण।
- तीन अगस्त से इन्हीं योगाचार्यों द्वारा पुलिस प्रशिक्षण विद्यालय, मुरादाबाद (उ.प्र.) में 322 प्रोन्नत सब इंस्पेक्टरों एवं अन्य उच्चाधिकारियों को प्रशिक्षण।
- डॉ. भीमराव अम्बेडकर उ.प्र. पुलिस अकादमी, मुरादाबाद (उ.प्र.) में 21 अगस्त से आयोजित शिविर में योगाचार्यों ने 350 डिप्टी एसपी एवं विशेष श्रेणी के सब इंस्पेक्टरों को प्रशिक्षण।
- पुलिस लाइन, मुरादाबाद (उ.प्र.) में 28 अगस्त से इन्हीं आचार्यों द्वारा 500 नवनियुक्त सिपाहियों को प्रशिक्षण।
- पुलिस लाइन, हरिद्वार (उत्तरांचल) में 26 जुलाई से योगाचार्य ने 400 पुरुष व महिला सिपाहियों को योग के प्रभावी सूत्र दिये।
- गृह मंत्रालय, भारत सरकार के कांगड़ा (हिमांचल प्रदेश) स्थित सशस्त्र सीमा बल के प्रशिक्षण केन्द्र में योगाचार्य द्वारा 150 अधिकारियों एवं 596 नवनियुक्त आरक्षियों को प्रशिक्षण दिया।
- हिमांचल प्रदेश के कुल्लू जिले में स्थित सशस्त्र सीमा बल के प्रशिक्षण केन्द्र में योगाचार्यों द्वारा 105 अधिकारियों समेत 787 नवनियुक्त आरक्षियों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया।
- इन संस्थानों के प्रमुखों ने शिविरों के आयोजन से जवानों को मिले लाभों के लिए विश्वविद्यालय की आत्मीय सराहना की। पुलिस प्रशिक्षण विद्यालय, मुरादाबाद के प्रमुख हरिशंकर शुक्ल, आईपीएस के शब्दों में "देव संस्कृति विश्वविद्यालय द्वारा दिया गया यह प्रशिक्षण बढ़ते तनाव के शिकार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पुलिसकर्मियों के लिए अत्यंत सार्थक रहा, जिससे उन्हें श्रेष्ठ जीवन जीने के लिए नयी ऊर्जा मिली।'

देश के विभिन्न राज्यों के पुलिस प्रशिक्षण संस्थानों में यह कार्यक्रम विस्तार ले रहे हैं, वहीं उत्तरांचल, उत्तरप्रदेश एवं दिल्ली सहित विभिन्न प्रान्तों के विद्यालयों में विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं शिक्षाधिकारियों के लिए बहुआयामी योग शिविरों की श्रृंखला आरम्भ की गयी है। इन शिविरों में बड़ी संख्या में विद्यार्थी व शिक्षक रुचिपूर्वक भाग ले रहे हैं। इन शिविरों के माध्यम से भारत के करोड़ों किशोर युवा विद्यार्थियों से सम्पर्क करने तथा उन्हें जीवनबोध कराने की विश्वविद्यालय की योजना है।

घर–घर तक पहुँचा देव संस्कृति का ज्ञान –

जन–जन तक देव संस्कृति का उपयोगी ज्ञान पहुँचाने के लिए विश्वविद्यालय ने वर्ष 2006 के जुलाई माह में देव संस्कृति जनसंचार कार्यक्रम का श्रीगणेश किया। माननीय कुलाधिपति डॉ. प्रणव पण्ड्या महोदय द्वारा पावन गुरुपूर्णिमा के अवसर पर इस कार्यक्रम की प्रथम पुस्तिका 'देव संस्कृति : आरंभ से आज तक' का विमोचन किया गया। इस कार्यक्रम के तहत देव संस्कृति के विभिन्न आयोमों पर अब तक प्रथम अंक के अतिरिक्त अन्य तीन पुस्तिकाएँ, कैसे मनुष्य बनें देव, देव संस्कृति के दिव्य प्रतीक और देव संस्कृति एवं दिव्य कलाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं। शोध छात्रों का एक दल युगऋषि के वाङ्मय समेत विविध ग्रंथों का अध्ययन करता है, तत्पश्चात् गहन शोध के बाद पत्रिका का लेखन–संपादन किया जाता है। पहली पत्रिका के प्रकाशन के समय तक पत्रिका के पांच हजार सदस्य बन गए थे। आगामी जनवरी से आरम्भ होने वाले नये चरण के लिए व्यक्तिगत प्रतिभागियों के अतिरिक्त विद्यार्थियों पर विशेष रूप से ध्यान केन्द्रित किया जा रहा है। कार्यक्रम के अंत में सभी प्रतिभागियों को एक प्रमाण–पत्र देने की भी योजना है। सागर तुल्य देव संस्कृति को आमजन के लिए बिन्दुवत् प्रस्तुत करने का प्रयास करती है इन पुस्तिकाओं को लोगों का अपार स्नेह मिल रहा है।

रक्तदान से बनाया रिश्ता –

उत्तरांचल में रक्त संकट के मद्देनजर विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने देहरादून स्थित अनूठे आईएमए ब्लड बैंक के आव्हान पर समाज के पीड़ित वर्ग के लिए रक्तदान दिया। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन की उत्तरांचल शाखा द्वारा स्थापित आईएमए ब्लड बैंक ने चेतावनी दी थी कि प्रदेश में मरीजों के लिए भीषण रक्त संकट है। एसोसिएशन के मुताबिक अकेले राजधानी देहरादून में आवश्यकता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

का मात्र तीस फीसदी रक्त उपलब्ध है। संकट से निपटने के लिए रक्तदान ही एक विकल्प है।

इस अपील पर देव संस्कृति विश्वविद्यालय ने प्रथम चरण में 21 जुलाई को पैंतालीस छात्रों का दल रक्तदान के लिए देहरादून भेजा। आईएमए ब्लड बैंक के निदेशक (जनसम्पर्क एवं मानव संसाधन) श्रीमती विनीता श्रीवासतव के नेतृत्व में 29 अगस्त को विश्वविद्यालय परिसर में रक्तदान शिविर का आयोजन किया, जिसका उद्‌घाटन कुलाधिपति डॉ. प्रणव पण्डया ने किया। इस शिविर में 205 लागों ने रक्तदान किया, जिसमें विद्यार्थियों के अतिरिक्त आचार्य एवं स्टॉफजन भी सम्मिलित थे।

निजी विश्वविद्यालयों का प्रतिनिधित्व –

देव संस्कृति विश्वविद्यालय को थाईलैंड की राजधानी बैंकाक में आयोजित भारत के सभी प्रमुख विश्वविद्यालयों के सम्मेलन में यू.जी.सी. से मान्यता प्राप्त देश के निजी विश्वविद्यालयों का प्रतिनिधित्व करने का गौरव मिला। सकाल ग्रुप एवं देश की जानी–मानी आईटी कम्पनियों द्वारा 'नोबल एजुकेशन' विषय पर आयोजित बैंकाक सम्मेलन में देश केनिजी विश्वविद्यालयों इस सम्मेलन का प्रमुख लक्ष्य उच्च शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए सम्मेलन में यह निर्णय लिया गया कि रोजगार की समस्या को दूर करने के लिए औद्योगिक क्षेत्र और विश्वविद्यालयों को साथ मिलकर काम करना चाहिये, जिससे रोजगार की समस्या को दूर किया जा सके। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालयों के बीच प्रभावी नेटवर्किंग के लिए भी रणनीति तैयार की गयी।

बौद्ध देश थाईलैंड के कुछ विश्वविद्यालयों के प्रतिनिधियों ने सर्वधर्म समन्वय की दिशा में कार्यरत इस विश्वविद्यालय के धर्मविज्ञान विभाग को देखने की इच्छा जतायी।

14 एवं 15 जून 2006 को कुलपति महोदय ने ईरान के 'रिसर्च एण्ड एजुकेशनल इंस्टीट्यूट फार माइंड एंड बाडी प्योरीफिकेशन' के आमंत्रण पर तेरान में ध्यान पर आयोजित प्रथम अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में चेतना के क्षेत्र में विज्ञान–अध्यात्म समन्वय विषय पर व्याख्यान दिया।

सेवा के लिए समर्पित एन.एस.एस. इकाई –

सप्त क्रान्तियों यथा – शिक्षा, स्वास्थ्य, जीवन साधना, स्वावलम्बन, हरीतिमा संवर्द्धन, नारी जागरण तथा व्यसन मुक्ति–कुरीति उन्मूलन की दिशा में सक्रिय विश्वविद्यालयों की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई ने 21 से 30 दिसम्बर, 2005 तक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बूढ़पुर जट, गुरुकुल नारसन, हरिद्वार में विशेष शिविर आयोजित किया। इस शिविर में निरक्षरों को साक्षर करना, पूरे गाँव की गलियों–नालियों सड़कों की सफाई कर स्वच्छता के महत्व को बताना, वृक्षारोपण, असहायों की सहायता, सरकारी योजनाओं की जानकारी, स्थानीय जड़ी–बूटियों से परिचय एवं नारी जागरण जैसे कार्यक्रम विद्यार्थियों ने किए।

खेलों ने दी उत्साह को उछाल –

जिस जीवन में कोई उत्साह न हो, सफलता के लिए कोई ललक न हो, वह जीवन भी क्या जीवन कहलाएगा? इसी भावना के आधार पर विश्वविद्यालय में खेलों को विशेष महत्व देने का प्रयास किया जा रहा है। विश्वविद्यालय में पिछले एक वर्ष के दौरान उच्च श्रेणी के बास्केट बाल ग्राउंड का निर्माण कराया गया, जिसमें फाइबर ग्लास बोर्ड स्थापित किये गये हैं। साथ ही बालीबाल का एक ग्राउंड तथा टेबल टेनिस, चैस व कैरम के लिए एक विशाल हॉल भी उपलब्ध करााया गया। शारीरिक सौष्ठव के अंतर्गत लाठी चलाने का प्रशिक्षण भी धर्म विज्ञान के क्षेत्रों द्वारा तकरीबन 50 छात्रों को दिया जा रहा है।

www.vicharkrantibooks.org

विश्वविद्यालय में इसके अतिरिक्त एक विशाल क्रिकेट ग्राउंड है। विश्वविद्यालय तथा छात्राओं को इस खेल में बढ़ावा देने का विशेष प्रयास किया जा रहा है। इसके लिए नियमित अंतराल पर यहाँ महिला क्रिकेट का आयोजन भी किया जाता है। कुलाधिपति डॉ. प्रणव पण्ड्या के निर्देशानुसार विश्वविद्यालय में टीम स्पर्धाओं को विशेष महत्व दिया जा रहा है, जिससे कि विद्यार्थियों में सामूदायिकता की भावना और विकसित हो। योग का स्वास्थ्य के क्षेत्र में होने के साथ–साथ जीवन के अन्य क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण स्थान है। इसी कारण योग को एक खेल के रूप में भी बढ़ावा देने का विश्वविद्यालय ने प्रयास किया है। विभिन्न राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में निरन्तर स्वर्णिम सफलताएँ प्राप्त करना इस बात का प्रमाण है कि इस दिशा में हमारी कोशिशें विफल नहीं गईं।

तकनीक का शिखर छूता पुस्तकालय –

देव संस्कृति विश्वविद्यालय की तरह यहाँ का 'आर्यभट्ट पुस्तकालय' भी अनूठा है। विश्वविद्यालय की भाँति ही इसमें ज्ञान के अमृत और तकनीक की शक्ति का अनूठा संगम है और इस अनुपम संस्था की तरह ही यह अनूठे ढंग से विद्यार्थियों में नैथ्तकता का संचार कर रहा है।

छह मंजिला यह पुस्तकालय यूँ तो अपनी शैशावस्था में है, क्योंकि इसे बने मात्र तीन ही वर्ष गुजरे हैं लेकिन यह अभी से कई दृष्टियों से मिशाल बन चुका

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है। यह उत्तरांचल का दूसरा ऐसा पुस्तकालय है, जहाँ अत्याधुनिक 'बार कोड स्कैनिंग' प्रणाली है। इस प्रणाली के तहत पुस्तक के क्रय होते ही उस पर बार कोड डाल दिये जाते हैं। हर छात्र के पुस्तकालय कार्ड में भी बार कोड अंकित किया जाता है। काउंटर पर बुक इशू करते समय 'फ्लैट बेड स्कैनर' पर कार्ड स्वैप किया जाता है, जिससे स्कैनर चंद सेकेंड में ही कोड पढ़ लेता है और विद्यार्थी से सम्बद्ध सभी रिकार्ड कम्प्यूटर पर आ जाते हैं। इसके पश्चात् विद्यार्थी स्वयं गुक का बार कोड स्कैन करते हैं। वह पुस्तक अपने आप कम्प्यूटर में उनके नाम पर दर्ज हो जाती है। इस पूरी प्रक्रिया में चंद सेकेंड का समय लगता है। बार कोड स्कैनिंग से एक अन्य बड़ी सुविधा यह है कि इसकी मदद से विद्यार्थी, लेखक, प्रकाशक या विषय के आधार पर मनचाही पुस्तक चुटकियों में प्राप्त कर सकते हैं। पुस्तकालय को शीघ्र ही ऑन लाइन करने की योजना है, जिससे विश्व के किसी भी कोने में बैठा विद्यार्थी मनचाही पुस्तक अपने नाम 'बुक' करवा सके।

यूँ तो पुस्तकालय में अभी मात्र ग्यारह हजार पुस्तकें, लेकिन निश्चित ही ये सागर से निकले मोतियों के समान हैं। विभिन्न विषयों के इनसाइक्लोपीडिया इसकी शोभा है। मनोविज्ञान एवं योग विषय पर देश-विदेश के संकलित पुस्तकें इसकी विशेषता हैं।

यहाँ का 'ऑनेस्टी काउंटर' अपनी तरह का अनूठा प्रयोग है। इस काउंटर पर रजिस्टर, नोटबुक, पेन, फोल्डर इत्यादि स्टेशनरी बिक्री के लिए रखी रहती है, पर विक्रेता कोई नहीं होता, हर सामग्री पर मूल्य अंकित है। विद्यार्थी स्वयं सामग्री का चयन करते हैं और इस पर अंकित मूल्य वहां रखे कैश बॉक्स में डाल देते हैं। उनकी स्वयं की आत्मा के सिवाय कोई उन पर नजर नहीं रखता है। यह प्रयोग पुस्तकालय के शुभारम्भ से ही चल रहा है और इसकी सफलता पर विश्वविद्यालय परिवार को गर्व है।

सेवायोजित किये जाने वाले कुछ विद्यार्थियों की सूची : एक बानगी

क्र.	नाम	विभाग	कॉलेज
1.	अंजनी पुंडरीक	योग	आई.आई.एम.टी. मैनेजमेंट कॉलेज 'ओ' पाकेट, गंगा नगर मेरठ (उ.प्र.)
2.	ऋतु शर्मा	"	" " "
3.	श्रीधर चतुर्वेदी	"	जन शिक्षण संस्थान, वाराणसी
4.	सुश्री मोनिका रानी	"	साक्षरता निकेतन, लखनऊ
5.	सुश्री निधि पाठक	मनोविज्ञान	" " "

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्र.	नाम	विभाग	कॉलेज
6.	श्री मनोहर लाल बोहरा	योग	" " "
7.	आलोक द्विवेदी	मनोविज्ञान	संज्ञा सर्वधन संस्थान, नागपुर
8.	मंगेश त्रिवेदी	योग	आयुष्मिता नेशनल हर्बल हेल्थ सेण्टर, जनाकीपुरम, लखनऊ (उ.प्र.)
9.	बालकृष्ण पाण्डेय	धर्मविज्ञान	योग एवं मेडिटेशन सेण्टर, दिल्ली
10.	महेश विश्वकर्मा	एच.एच.एम.	माँ भगवती महिला विद्यारण्यक अजीजपुर, बदायूँ (उ.प्र.)
11.	विशाल रॉय	भा.सं. एवं प.प्र.	बी.पी.ओ. कम्पनी, स्ट्रैकॉन बैंक ऑफिस, इण्डियन एयर लाइन्स, दिल्ली
12.	सुश्री नीलिमा मिश्रा	"	" " " "
13.	सुश्री अनुपमा शर्मा	"	" " " "
14.	सुश्री अर्चना सिंह	"	" " " "
15.	सुश्री रीना शर्मा	"	" " " "
16.	सुश्री अंजली कुमारी	"	" " " "
17.	सुश्री गीता कुमारी	"	" " " "
18.	ज्ञानदीप मिश्र	मनोविज्ञान	इमहान्स इन्स्टीट्यूट ऑफ हेल्थ एण्ड न्यूरो साइन्सेज, नई दिल्ली
19.	सूरज गुप्ता	धर्मविज्ञान	गोयल गंगा ग्रुप, पुणे (महाराष्ट्र)
20.	दिनेश मालवीय	"	" " " "
21.	दिलीप सराह	"	" " " "
22.	राकेश कुमार	"	" " " "
23.	सुश्री रक्षा अग्रवाल	योग	रमन फिटनेस एण्ड स्पोर्ट एकेडेमी, गुड़गाँव (हरि)
24.	सुश्री शिखा उपाध्याय	"	" " " "
25.	सुश्री श्रुति वशिष्ठ	"	" " " "
26.	सुश्री विजय लक्ष्मी सोनी	"	" " " "
27.	सुश्री नमिता सिंह	"	" " " "
28.	प्रवीण श्रीवास्तव	बायो इन्फॉर्मेटिक्स	किरन पाण्डीकैमिकल्स लिमिटेड, पुडुचेरी
29.	मुरली कृष्ण नायर	"	" " " "

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्र.	नाम	विभाग	कॉलेज
30.	उत्कर्ष स्थापक	भा.सं. एवं प.प्र.	" " " "
31.	रजनीश पाण्डेय	योग	" " " "
32.	अजय कुमार	"	" " " "
33.	शिवाकान्त त्रिपाठी	योग विभाग	गायत्री ज्ञान योग समिति, राजकोट (गुजरात)
34.	प्रवीणचन्द्र त्रिपाठी	"	" " " "
35.	विजय ठाकुर	"	" " " "
36.	अमित चौधरी	एच. एच. एम.	प्राकृतिक चिकित्सा सेण्टर, भीनलाल (राजस्थान)
37.	विनोद शर्मा	"	" " " "
38.	अमित कुमार शुक्ल	मनोविज्ञान	सरस्वती मा.वि. सुल्तानपुर (उ.प्र)
39.	आनंद कुमार	"	गायत्री विद्यापीठ गाँधीधाम (गुजरात)
40.	रामशंकर दियावार	योग विभाग	मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान, नई दिल्ली
41.	वन्दना महेश्वरी	पत्रकारिता	अमर उजाला,देहरादून
42.	पारितोषिक कोडिन्य	"	दैनिक जागरण, देहरादून
43.	प्रभात गुप्ता	"	" " " "
44.	उमाशंकर तिवारी	"	दैनिक जागरण देहरादून
45.	चन्द्रप्रकाश तिवारी	धर्मविज्ञान	भारतीय थल सेना
46.	संतोष तिवारी	पत्रकारिता	आई.बी.एन.–7गाँधीनगर (गुजरात)
47.	संजय ओझा	योग	के.आई.ई.टी. गाजियाबाद (उ.प्र.)
48.	सत्येन्द्र कुमार	"	" " " "
49.	आशीषा श्रीवास्तव	"	" " " "
50.	सुश्री आराधनास	"	" " " "
51.	सुश्री श्वेता	"	" " " "
52.	सुश्री प्रीती शुक्ला	मनोविज्ञान	" " " "
53.	सुश्री मोनिका शर्मा	योग	बी.एच.ई.एल. हरिद्वार
54.	श्री सानुज सिन्हा	पत्रकारिता	मैट्रिक्स मल्टीमीडिया, नई दिल्ली
55.	श्री गौरव श्रीवास्तव	"	" " " "
56.	सुश्री रश्मि	"	" " " "

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्र.	नाम	विभाग	कॉलेज
57.	सुश्री मनीषा	"	डी.एल.ए.समाचार पत्र गाजियाबाद
58.	श्री राकेश ओझा	योग विभाग	आई.टी.एस. डेन्टल कॉलेज, गाजियाबाद (उ.प्र.)
59.	सुश्री ज्योति वर्मा	"	पी.जी.कॉलेज, ऋषिकेश (उत्तराखण्ड)
60.	सुश्री नीतू	"	" " " "
61.	भानू प्रताप जोशी	"	पी.जी.कॉलेज हल्द्वानी (उत्तराखण्ड)
62.	कंचन जोशी	"	पी.जी.कॉलेज खटीमा (उत्तराखण्ड)
63.	सुश्री शिवानी	"	" " " "
64.	सुश्री रितु पाण्डेय	"	वनस्थली विद्यापीठ (राजस्थान)
65.	सुश्री श्वेता रावत	"	" " " "
66.	सचिन	"	पातजंलि योग पीठ दयानंद ग्राम, हरिद्वार
67.	पंकज दुबे	"	देहली पब्लिक स्कूल, आगरा (उ.प्र.)
68.	सुश्री सौदामिनी गुप्ता	"	" " " "
69.	सुश्री ऋतु मिश्रा	मनोविज्ञान	इन्टरनेशल स्कूल, अहमदाबाद (गुजरात)
70.	सौरभ शर्मा	योग विभाग	हैदाराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद
71.	सुश्री खुशबू रानी	"	हिन्दुस्तान इंजीनियरिंग कॉलेज, आगरा (उ.प्र.)
72.	सुश्री अनुजा रावत	"	डी.ए.बी. गर्ल्स डिग्री कॉलेज, यमुनानगर (हरियाणा)
73.	सुश्री रीना अग्निहोत्री	"	" " " "
74.	समरेश कश्यप	"	बाबा कॉन्सट्रक्शन कंपनी, गाजियाबाद (उ.प्र.)
75.	सुश्री सीमा चौहान	"	मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान, नई दिल्ली

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्र.	नाम	विभाग	कॉलेज
76.	रूचि बंसल	मनोविज्ञान	काउन्सलर, एयरफोर्स, नई दिल्ली
77.	कविता ढींगरा	"	'खुशी फाउण्डेशन' सिलवर मॉल, इन्दौर
78.	सुश्री रेनू	मनोविज्ञान	राजकीय चिकित्यालय, हरद्विार (उत्तराखण्ड)
79.	संदीप रावत	योग	आनंदा योग चिकित्सा सेण्टर, ऋषिकेश
80.	वन्दना बिष्ट	"	कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, रुड़की
81.	हरीश कुमार सिंह	"	जन शिक्षण संस्थान ए.टी.ई. नोयडा (गाजियाबाद)
82.	मणिकांत	"	गोयल गंगा ग्रुप, पुणे (महाराष्ट्र)
83.	पूरन चन्द्र दसमाना	"	शा. हाईस्कूल, नयाल, पिथौरागढ़ (उत्तराखण्ड)
87.	मुकेश मीणा	"	शा. आयुर्वेद चिकित्सा सेवा (राजस्थान)
88.	प्रेमशंकर पाण्डेय	"	शुगर मिल में सेवारत।
89.	डॉ रामकृष्ण गुप्ता	"	स्वास्थ्य परामर्श सेवा बड़वानी (म.प्र.)
90.	गरविश कपाड़िया	"	इंजीनियरिंग संस्थान में कार्यरत।
91.	टिकेश्वर प्रधान	"	स्वास्थ्य परामर्श सेवा, गायत्री शक्तिपीठ रायगढ़
92.	विकास चौधरी	"	निजी संस्थान सेवारत, देहरादून।
93.	सुश्री अंजली त्रिवेदी	"	क्लीनिकल साइकोलॉजिस्ट, नर्सिंगहोम,नई दिल्ली
129.	चन्द्र शेखर चौधरी	"	स्वास्थ्य परामर्श सेवा, उड़ीसा
130.	विष्णु चरण बेहरा	"	चिकित्सा एवं स्वास्थ्य परामर्श सेवा, ढेंकानाल उड़ीसा
131.	अजीत कुमार सिंह	"	स्वास्थ्य परामर्श निजी सेवा, वाराणसी (उ.प्र.)
132.	मुकेश गुप्ता	"	अध्यापक, प्रइावेट स्कूल, सराहकेला (झारखण्ड)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्र.	नाम	विभाग	कॉलेज
133.	प्रेम प्रकाश जायसवाल	"	अध्यापक, प्राइवेट विद्यालय, कोरबा (छ.ग.)
134.	विक्की अरोड़ा	"	प्रशिक्षक, प्राइवेट विद्यालय, देहरादून (उत्तराखण्ड)
135.	गौरव श्रीवास्तव	"	" " " "
136.	हरिओम लोटन	"	अध्यापक, प्राइवेट विद्यालय, बागली, देवास (मप्र)
137.	हरिओम गुप्ता	योग	गोयल गंगा ग्रुप, पुणे (महाराष्ट्र)
140.	मनोज राव	भा.सं.एवं प.प्र.	भा.स. एवं प.प्र. विभाग, देसंविवि, हरिद्वार
141.	सुश्री रागिनी शर्मा	योग	अजमेर विश्वविद्यालय, (राजस्थान)
142.	अभिषेक कुमार	"	जेट एयरवेज, नई दिल्ली
143.	हेमंत तिवारी	"	योग चिकित्सा सेण्टर, गुड़गाँव (हरियाणा)
144.	मनोज सिंह	"	प्रखर पांतजलि योग पीठ काशीपुर, उत्तराखण्ड
145.	धर्मेन्द्र शर्मा	"	" " " "
146.	अनिल राणा	"	'आरोग्यम्', लखनऊ (उ.प्र.)
147.	शैलेन्द्र दुबे	"	विदेश विभाग, शांतिकुंज, हरिद्वार
148.	शैलेन्द्र त्रिपाठी	"	शिक्षक, गोरखपुर
149.	भूपेन्द्र	"	गाँधीधाम (कच्छ) गुजरात
150.	अवधेश शर्मा	धर्मविज्ञान	अतिथि शिक्षक, शा.प्रा.वि. स्तभानपुर अशोक (म.प्र.)
151.	दीपक नन्दवंशी	मनोविज्ञान	'खुशी' एन.जी.ओ. लखनऊ (उ.प्र.)
152.	अमित दुबे	"	" " " "
153.	वीरेन्द्र तिवारी	धर्मविज्ञान	जे.सी.ओ. थलसेना
154.	जितेन्द्र कुमार	"	योग एवं मेडिटेशन सेण्टर, शिमला (हिमालय)
155	सारिका त्यागी	"	आंगनबाड़ी योजना, मोदीनगर (उ.प्र.)

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्र.	नाम	विभाग	कॉलेज
156.	उपमा कुमारी गुप्ता	"	योग एवं मेडिटेशन सेण्टर, दिल्ली
157.	दीपा सिंह	"	प्राइमरी पाठशाला, संत कबीरनगर (उ.प्र.)
158.	दीपक कौशिक	"	योग शिक्षण संस्थान, श्री गंगानगर (राजस्थान)
161.	सुश्री नूतन मिस्त्री	"	मातृभूमि विद्यालय, सूरत (गुजरात)
162.	प्रदीप कुमान सिन्धु	"	योग एवं केडिटेशन सेण्टर पानीपत (हरियाणा)
164.	संतोष शर्मा	"	कृष्णा फूड प्रोडेक्ट, रायबरेली (उ.प्र.)
165.	श्रीराम सोनारे	"	पुस्तकालय विभाग, देसंविवि, हरिद्वार
166.	श्रीमती गीता देवी शर्मा	"	प्रज्ञा म्युज़िक सेण्टर, राँची (झारखण्ड)
170.	पंकज कुमार शर्मा	"	योग एवं ज्योतिष केन्द्र, दिल्ली
175.	मुकेश चन्द्रकार	"	सरस्वती शिशु मंदिर, दुर्ग (छ.ग.)
176.	अरविन्द भारती	"	योग एवं मेडिटेशन सेण्टर, शिमला (हिमाचल)
186.	आलोक प्रकाश	"	सुरक्षा एजेन्सी जमुई (बिहार)
187.	राजा राम सिन्हा	"	प्राइमरी पाठशाला, रायपुर (छ.ग.)
199.	सौरभ तिवारी	"	काल सेण्टर, दिल्ली
208.	सुश्री हर्षाबेन	"	योग एवं मेडिटेशन केन्द्र, (गुजरात)
211.	ओमप्रकाश तेजरा	"	सजल श्रद्धा आरोग्य धाम, लखनऊ (उ.प्र.)
212.	रमाकांत पारिक	"	दैनिक भास्कर प्रेस, सीकर (राजस्थान)
223.	शिवानी गुप्ता	योग	कैमरेज फाउंडेशन, देहरादून (उत्तराखण्ड)

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्र.	नाम	विभाग	कॉलेज
224.	स्मिता शीतल	"	मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान, नई दिल्ली
225.	संतोष विश्वकर्मा	"	" " " "
226.	सेवाराम	एच.एच.एम.	निजी स्वावलंबन से संबद्ध, यमुनानगर (हरियाणा)
227.	रामध्यान शर्मा	"	निजी स्वावलंबन से संबद्ध, जहाँनाबाद
228.	यशवंत पुष्पक	"	निजी व्यवसाय, शाजापुर (म.प्र.)
229.	रविशंकर	"	निजी स्वावलंबन, गोड्डा (झारखण्ड)
230.	योगेश कुमार	"	प्राइवेट नर्सिंग होम, सहारपुर (उ.प्र.)
231.	भगवमी प्रसाद सिंह	"	निजी व्यवसाय, बहराइच (उ.प्र.)
232.	विकास पालीवाल	"	निली व्यवसाय, बहराइच (उ.प्र.)
233.	विनोद कुमार शर्मा	"	जनस्वास्थ्य रक्षक, मिरजापुर (उ.प्र.)
234.	श्रद्धा थापा	"	स्वास्थ्य परामर्श सेवा, काठमांडू (नेपाल)
235.	रावल जायेश	"	मेडिकल रिप्रेजेन्टेटिव, महेषाणा (गुजरात)
236.	मनीष शर्मा	"	निजी व्यवसाय, मऊरानीपुर, झाँसी (उ.प्र.)
237.	भुवनेश्वर सिंह साहू	"	अध्यापक, प्राइवेट विद्यालय, कांकेट (उड़ीसा)
238.	धीरज गुप्ता	"	अध्यापक, प्रा. विद्यालय, मऊरानीपुर, झाँसी (उ.प्र.)
239.	अमित कुमार	"	अध्यापक प्राइवेट विद्यालय, नालंदा (बिहार)
240.	प्रदीप कुमार पाठक	"	प्राइवेट चिकित्सा संस्थान, बुलदशहर (उ.प्र.)
241.	रवीन्द्र सिंह	"	स्वास्थ्य परामर्श सेवा, बागपत उप्र.

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्र.	नाम	विभाग	कॉलेज
242.	संगीता श्रीवास्तव	"	स्वास्थ्य परामर्श सेवा, हजारीबाग (झारखण्ड)
243.	राहुल शर्मा	"	निजी व्यवसाय से संबद्ध, बागपत (उ.प्र.)
245.	स्वप्ना सिन्हा	"	निजी स्वास्थ्य परामर्श सेवा, संत कबीरनगर (उ.प्र.)
246.	हरीश कुमार सिंह	योग	इंजीनियरिंग कॉलेज, नोयडा (उ.प्र.)
247.	नितिन ढोमने	"	प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान संस्था, रामनगर नैनीताल (उत्तराखण्ड)
248.	अजय पाल	"	के.जी. मेडिकल यूनिवर्सिटी लखनऊ (उ.प्र.)
252.	दीपक कुमार झाँ	योग	प्रतिष्ठित होटल का हेल्थ केयर सेण्टर, गोवा
253.	सागर सिंह पंवार	"	" " " "
254.	नमिता भार्गव	मनोविज्ञान	क्लीनिकल साइकोलॉजिस्ट, प्राइवेट अस्पताल दिल्ली
255.	रेखा पारीक	"	'खुशी फाउण्डेशन' रामनगर, आलमबाग, लखनऊ
256.	भानुप्रताप	योग	परमार्थ निकेतन, ऋषिकेश (उत्तराखण्ड)
257.	आनंद	"	भंडारी स्विज कॉटेज, तपोवन, लक्ष्मण झूला, ऋषिकेश
258.	मनीष कोइली	"	प्राकृतिक चिकित्सालय एवं योग संस्थान, यमुनानगर
259.	भुवन चन्द्रपत	धर्मविज्ञान	स्वास्थ्य परामर्श केन्द्र, अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)
260.	दीपक कौशिक	"	योग सेण्टर, श्रीगंगानगर, (राजस्थान)
261.	देवन्द्र कुमार धाकड़	"	रेलवे सुरक्षा बल, रेल विभाग

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्र.	नाम	विभाग	कॉलेज
262.	कृष्ण दास ठिकारे	"	धर्मतंत्र से लोक शिक्षण केन्द्र, बिल्लीमोडा (गुजरात)
264.	प्रदीप कुमार	"	योग शिक्षक, प्रा. विद्यालय, पानीपत (हरियाणा)
266.	संतोष कुमार सिन्हा		गोपालन सेवा, लंखीमपुर खीरी (उ.प्र.)
267.	कंचन कुमार	एच.एच.एम.	कम्प्यूटर ऑपरेटर, शांतिकुंज जोनल कार्यालय
268.	मकवाना दक्षा भरतभाई	"	एन.जी.ओ. सेक्टर, (गुजरात)
269.	दिनेश मालवीय	धर्मविज्ञान	गोयल गंगा ग्रुप पूणे, (महाराष्ट्र)
270.	सूरज गुप्ता	"	" " " "
271.	देवाशीष	"	" " " "
272.	राकेश प्रसाद	"	" " " "
273.	दिलीप प्रसाद	"	" " " "
274.	नेतराम	"	" " " "
275.	हरिओम	योग	" " " "
276.	नीतू सक्सेना	"	पं. ललित मोहन शर्मा पी.जी. कॉलेज ऋषिकेश
277.	ज्योति वर्मा	"	" " " "
278.	सुवंश कुमार सिन्हा	"	प्रशिक्षक/प्रवक्ता योग संस्थान मगध विश्वविद्यालय बोध गया (बिहार)
279.	वीरेन्द्र पटले	"	मनोविज्ञान (साइको काउन्सलर मैनेजर) PALS INFOTECH CHENNAI

यहां मात्र कुछ बानगी दी जा रही है, वास्तविकता में 80 से 85 प्रतिशत छात्र रोजगार प्राप्त कर रहे हैं।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

योग आरोग्य पॉलीक्लीनिक

युग दृष्टा पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के सप्त सूत्री कार्यक्रमों को आधार मानकर देव संस्कृति विश्वविद्यालय ने शिक्षा के क्षेत्र में कई अभिनव प्रयोग किये जो सफल रहे, शिक्षा के साथ स्वास्थ्य को जोड़ते हुए स्वास्थ्य–शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवा के प्रयास भी सार्थक एवं उत्साह वर्द्धक सिद्ध हुए हैं। स्वास्थ्य के क्षेत्र में मानवीय चेतना एवं योग विज्ञान विभाग द्वारा कई योग चिकित्सा शिविर एवं नियमित योग व प्राकृतिक चिकित्सा आदि की सेवाएं दी जाती रही हैं। योग आरोग्य पॉलीक्लीनिक की शुरुआत उन्हीं सद्परिणामों को ध्यान में रखकर किया गया एक अनूठा एवं अभिनव प्रयोग है। आशा करते हैं कि योग एवं वैकल्पिक चिकित्साओं का यह अनूठा प्रयास सबके लिये उपयोगी सिद्ध होगा।

उपलब्ध चिकित्सा सुविधाएँ – योग चिकित्सा, प्राकृतिक चिकित्सा, पंचकर्म चिकित्सा, यज्ञ चिकित्सा, मनोवैज्ञानिक चिकित्सा, एक्यूप्रेशर चिकित्सा, प्राण चिकित्सा, आयुर्वेदिक चिकित्सा

अतिरिक्त सेवायें – स्वास्थ्य लाभ हेतु उपयोगी प्राकृतिक वातावरण, ठहरने हेतु स्वच्छ वेन्टिलेटेड डॉमेंट्री, पैथॉलॉजी जाँच प्रयोगशाला, सभी तरह के चिकित्सा विशेषज्ञ, ओ.पी.डी. सेवा उपलब्ध

विशेष – हर माह तीन योग आरोग्य शिविर (जनवरी, मई, जून एवं दिसम्बर को छोड़कर) 1–9 तारीख – आर्थराइटिस, स्पोंडलाइटिस, बैक पेन साइटिका आदि के रोगियों के लिए। 11–19 तारीख – डायबिटीस, मोटापा, उदर रोग, तथा स्त्री रोग हेतु, 21–29 तारीख – दमा, ब्रोंकाइटिस, उच्च रक्तचाप एवं हृदय रोग हेतु।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय

नियमावली – देवसंस्कृति विश्वविद्यालय की स्थापना देव संस्कृति के महान् आदर्शों के अनुरूप उत्कृष्ट व्यक्तित्व को गढ़ने–ढ़ालने के लिए की गई है। इस हेतु विश्वविद्यालय के छात्र–छात्राओं के लिए कतिपय नियमों को पालन करना एक अनिवार्य दायित्व बन जाता है, ताकि विश्वविद्यालय का वातावरण प्राचीन काल के गुरूकुलों की भाँति तपःपूत बना रहे और यहाँ अध्ययनरत छात्र–छात्राएँ अपने जीवन लक्ष्य की दिशा में आगे बढ़ सकें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अनिवार्य नियम –

1. विश्वविद्यालय में अध्ययनरत सभी छात्र–छात्राओं को छात्रावास में रहना अनिवार्य है।

2. छात्र–छात्राएँ भारतीय वेशभूषा को अनिवार्य रूप से धारण करेंगे।

3. भारतीय वेशभूषा का तात्पर्य पुरुषों अथवा छात्रों के लिए धोती–कुर्ता या पायजामा–कुर्ता होगा। महिलाएँ अथवा छात्राएँ इसी प्रकार साड़ी–ब्लाउज अथवा सलवार कुर्ता पहनेंगी।

4. विश्वविद्यालय में भोजन व्यवस्था आश्रम–जीवन के अनुकूल रखी गयी है। सभी को अनिवार्यतः यही सादा भोजन ग्रहण करना होगा।

5. विश्वविद्यालय में किसी भी प्रकार का नशा अर्थात् शराब, बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकू, यहाँ तक कि पान खाना भी कठोरतापूर्वक वर्जित है।

6. विश्वविद्यालय की प्रार्थना सभा एवं यज्ञ आदि कार्यक्रमों में सभी की उपस्थिति अनिवार्य है।

7. विश्वविद्यालय की अनुशासन समिति एवं कुलपति के द्वारा समय–समय पर जो निर्देश जारी किये जाएँगे, उनका पालन करना सभी के लिए अनिवार्य होगा।

8. संयम, सादगी एवं कर्त्तव्य परायणता को सभी को अनिवार्यतः अपनाना होगा।

9. छात्र–छात्राओं की प्रत्येक कक्षा में 80 प्रतिशत उपस्थिति अनिवार्य है, इसके बिना वे परीक्षा में बैठने के अधिकारी नही होंगे। इसके साथ ही यदि संबंधित प्रमाणपत्र अथवा देय राशि जमा नहीं की गयी है तो भी वे परीक्षा में नहीं बैठ सकेंगे।

10. विश्वविद्यालय में किसी भी तरह की अनुशासनहीनता करने पर अनुशासन समिति/कुलपति को दण्डात्मक कार्यवाही करने का पूर्ण अधिकार है।

11. दण्ड व्यवस्था का निर्धारण अनुशासन समिति की सिफारिश पर कुलपति द्वारा किया जायेगा।

12. परीक्षा संबंधी नियम पृथक से प्रकाशित किए गए है। उन नियमों का पालन करना अनिवार्य होगा।

13. विश्वविद्यालय द्वारा समय–समय पर निर्धारित किए गए नियम अनिवार्यतः

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मान्य होंगे।

14. रिपीट की अनुमति सभी को दो प्रश्न पत्रों में होगी।

15. परीक्षा परिणाम घोषित होने के 30 दिन के भीतर निर्धारित शुल्क प्रति प्रश्न–पत्र 50/– रूपये जमा करके पुनर्गणना करायी जा सकती है।

16. सम्मानीय सुप्रीम कोर्ट के अनुसार रैगिंग दण्डनीय अपराध है। यह रैगिंग मुक्त, व्यसन मुक्त एवं प्रदूषण मुक्त परिसर है।

प्रवेश–प्रक्रिया –

- स्नातकोत्तर, डिप्लोमा और प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रमों में प्रवेश–प्रक्रिया प्रवेश–परीक्षा पर आधारित होगी।
- इन सभी पाठ्यक्रमों में छात्र–छात्राएँ समान रूप से प्रवेश पाने के अधिकारी हैं। देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार के अतिरिक्त जयपुर, लखनऊ, नौयडा, भोपाल, पटना, राजनांदगांव केन्द्रों पर भी 21 जून, 2009 को प्रवेश परीक्षा आयोजित होगी। अभ्यर्थी केवल दो परीक्षा केन्द्रों का चयन कर सकता है। उनमें से कोई एक केन्द्र विश्वविद्यालय द्वारा आवंटित किया जायेगा।
- स्नाकोत्तर एवं डिप्लोमा पाठ्यक्रमों में प्रवेश पाने के इच्छुक छात्र/छात्रा का 10+2+3 पाठ्यक्रम के अनुरूप कम से कम 50 प्रतिशत अंकों के साथ स्नातक (ग्रेजुएट) होना आवश्यक है।
- प्रमाणपत्र पाठ्यक्रमों में 10+2 स्तर पर 45 प्रतिशत अंक होना अनिवार्य है।
- आरक्षण उत्तराखण्ड शासन के नियमानुसार।
- प्रवेश के सम्बन्ध में अन्तिम निर्णय प्रवेश–परीक्षा के संयोजक/कुलपति का होगा।
- विश्वविद्यालय को यह अधिकार है कि वह किसी भी आवेदन–पत्र को किसी भी स्तर पर बिना किसी पूर्व सूचना के निरस्त कर सकता है।
- विश्वविद्यलाय में संचालित होने वाले पाठ्यक्रमों का विवरण पुस्तिका में आगे संलग्न है।
- प्रवेश–परीक्षा लिखित एवं साक्षात्कार पर आधारित होगी।
- लिखित परीक्षा के प्राप्तांक के आधार पर ही साक्षात्कार हेतु बुलाया जायेगा।
- प्रवेश–परीक्षा प्रवेशार्थियों की चयनित विषय के प्रति ज्ञान, अभिरूचि और सामान्य ज्ञान पर आधारित होगी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रवेश परीक्षा –

- इसमें प्रवेशार्थियों के अध्ययन के उद्देश्य, देव संस्कृति के आदर्शों के प्रति लगाव एवं आश्रम जीवन शैली को अपनाने की उनकी क्षमता भी परखी जाएगी।
- विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए स्वीकृत संख्या इसी पुस्तिका में पाठ्यक्रम शीर्षक के अन्दर लिखी गई है।
- स्नातक स्तर पर पाठ्यक्रमों में प्रवेश पाने के लिए 10+2 की मैरिट तथा साक्षात्कार आधार होगा। इन आवेदकों की लिखित परीक्षा होगी।
- Complimentry form स्वीकार नहीं किया जाएगा।
- आयुसीमा अधिकतम 30 वर्ष सभी के लिए। मात्र ग्राम प्रबन्धन एवं उद्यमिता विकास तथा धर्म विज्ञान के आवेदक एक वर्ष से अधिकतम पाँच वर्ष तक जितने वर्ष का किसी पंजीकृत सामाजिक संस्था में सेवा कार्य किया हो आयुसीमा में उतनी अवधि की छूट दी जाएगी। परन्तु 35 वर्ष से अधिक नहीं।
- आवेदक एक ही फार्म में केवल 2 विषय भर सकेगा।
- सेमेस्टर परीक्षा प्रणाली के अंतर्गत प्रत्येक छः माह में परीक्षा होगी।
- विश्वविद्यालय में परीक्षा उत्तीर्ण करने हेतु प्रत्येक पेपर में 40 प्रतिशत अंक एवं कुलयोग 50 प्रतिशत होना अनिवार्य है।
- इन्टर्नशिप स्नाकोत्तर एवं डिप्लोमा हेतु 2 माह का परिवीक्षा काल रखा गया है, जो कि ग्रीष्म अवकाश में किया जाएगा। सर्टिफिकेट कोर्स हेतु 3 माह परिवीक्षा काल रखा गया है। परिवीक्षा काल पूर्ण एवं संतोषजनक होने की दशा में ही अंक सूची देने का प्रावधान है।
- प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए 100 अंक का वस्तुनिष्ठ प्रश्न–पत्र अंग्रेजी अनुवाद नहीं है।
- जमा की गई धनराशि लौटाई नही जाएगी।

अध्ययनोपयोगी सुविधाएँ

- विश्वविद्यालय में छात्र–छात्राओं के अध्ययन के लिए उच्चस्तरीय पुस्तकालय की सुविधा उपलब्ध है।
- विश्वविद्यालय में नियुक्त नियमित आचार्यगणों के अतिरिक्त प्रत्येक विषय के विशेषज्ञ अतिथि प्रवक्ताओं की व्यवस्था की गई है।
- विश्वविद्यालय में नियमित पाठ्यक्रमों के अतिरिक्त कुछ ऐसी कक्षाओं का संचालन किया गया है, जो छात्र–छात्राओं के जीवन निर्माण एवं भविष्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निर्माण के लिए लाभकारी होंगे।

- विश्वविद्यालय में समय–समय पर विविध संगोष्ठियों का आयोजन किया जाता है, जिसमें छात्र–छात्राएँ अपनी भागीदारी करते और लाभान्वित होते हैं।
- छात्र–छात्राओं की माँग की उपयोगिता समझे जाने पर कुलपति एवं सम्बद्ध आचार्यों के द्वारा अध्ययनोपयोगी अतिरिक्त सुविधाओं की व्यवस्था की जाती है।
- विश्वविद्यालय में छात्र–छात्राओं की शोध अभिरूचि को बढ़ावा देने के लिए पाठ्यक्रम के अनुरूप विविध शोध परियोजनाओं को भी लागू किया गया है।
- अंग्रेजी भाषा का ज्ञान भी विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों को दिया जा रहा है। शीघ्र ही अन्य विदेशी भाषाओं के कोर्स भी प्रारंभ किए जाएँगे।
- विद्यार्थियों के लिए निःशुल्क कम्प्यूटर कक्षा चलाई जा रही है, इसमें मूल ज्ञान के अतिरिक्त इन्टरनेट का विशेष पाठ्यक्रम सम्मिलित किया गया है।
- क्रीड़ा के क्षेत्र में रूचि लेने वाले विद्यार्थियों के लिए– कैरम, शतरंज, बैडमिन्टन, वॉलीबॉल, क्रिकेट, फुटबाल तथा टेबल–टेनिस आदि खेलों की सुविधा विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान की गई है। शरीरिक बल एंव शरीर सौष्ठव के लिए व्यायाम की भी सुविधा विश्वविद्यालय में है।
- पढ़ाई के अतिरिक्त शेष समय का सदुपयोग करने हेतु संगीत सीखने में रूचि लेने वाले विद्यार्थियों के लिए हारमोनियम, तबला एवं ढपली आदि संगीत सिखाने की व्यवस्था निःशुल्क है।
- श्रद्धेय कुलाधिपति जी द्वारा विद्यार्थियों के आध्यात्मिक विकास हेतु 'गीता ज्ञान' एवं 'ध्यान धारणा' की विशेष कक्षायें आयोजित की जाती हैं जिनमें छात्र रूचिपूर्वक भाग लेते हैं।

प्रवेश परीक्षा का प्रारूप

परीक्षा योजना –

यह परीक्षा स्नातकोत्तर, डिप्लोमा और प्रमाण पत्र पाठ्यक्रमों के लिए निम्नानुसार आयोजित की जाएगी। स्नातक स्तर पर प्रवेश के लिए लिखित परीक्षा होगी।

1. लिखित परीक्षा

   – प्रथम प्रश्नपत्र (वस्तुनिष्ठ प्रश्नों पर आधारित)..............................100 अंक

   – द्वितीय प्रश्नपत्र (दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों पर आधारित).......................50 अंक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

2. साक्षात्कार..30 अंक

3. पिछला शैक्षिणिक रिकॉर्ड..20 अंक

कुल..200 अंक

चयन, वरीयता क्रम में किया जायेगा। इसके उपरान्त इन चयनित आवेदकों का साक्षात्कार विशेषज्ञों की समिति द्वारा किया जाएगा इस संदर्भ में अंतिम निर्णय का अधिकार चयन समिति को होगा।

1. प्रथम प्रश्नपत्र का स्वरूप–

सामान्य ज्ञान (राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियाँ, नवीन अन्वेषण–अनुसंधान, साहित्य, देव संस्कृति, खेल, आध्यात्मिक अभिरूचि, शान्तिकुज्ज, युगऋषि आचार्य श्री एवं उनके द्वारा प्रवर्तित जीवन मूल्य आदि विषय) तर्क क्षमता जैसे विषयों पर 100 वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जायेंगे।

(क) इस प्रश्न पत्र की अवधि 1 घंटा होगी, (ब) यह प्रश्न पत्र 100 अंक का होगा, (स) प्रत्येक सही उत्तर के लिए 1 अंक एवं प्रत्येक गलत उत्तर के लिए –1 अंक निर्धारित है।

2. द्वितीय प्रश्नपत्र का स्वरूप–

यह द्वितीय प्रश्नपत्र दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों पर आधारित होगा। इसकी अवधि तीन घंटे की होगी। इसके तीन खण्ड होंगे।

प्रथम खण्ड– इसमें अंग्रेजी ज्ञान को परखने के लिए प्रश्न पूछे जायेंगे। ये प्रश्न अंग्रेजी से हिन्दी एवं हिन्दी से अंग्रेजी अनुवाद एंव किसी समकालीन विषय पर अंग्रेजी भाषा में निबन्ध लिखने पर आधारित होंगे।

द्वितीय खण्ड– इसमें देव संस्कृति, शान्तिकुंज्ज, युगऋषि आचार्यश्री एवं अन्य आध्यात्मिक विषयों पर आधारित प्रश्न होंगे।

तृतीय खण्ड– इसमें प्रवेश हेतु चुने गये विषय पर आधारित सामान्य प्रश्न पूछे जायेंगे। यह खण्ड प्रत्येक विषय के अनुरूप भिन्न–भिन्न होगा।

तीनों खण्डों के लिए उत्तर पुस्तिकाएँ पृथक–पृथक होंगी।

प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम के आवेदकों के लिए प्रथम प्रश्न–पत्र नहीं होगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रवेश परीक्षा हेतु अध्ययनोपयोगी सामग्री–

1. जानकारियाँ एवं तर्क क्षमता हेतु सामन्य ज्ञान व सामान्य अंग्रेजी।
2. देव संस्कृति, शान्तिकुंज आदि विषयों के लिए निम्न पुस्तकें उपयोगी हैं–
   (1) हमारे प्रमुख संस्थान
   (2) वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं. श्री राम शर्मा आचार्य अखिल विश्वगायत्री परिवार के संरक्षक, संस्थापक
   (3) स्वतंत्रता सेनानी हमारे गुरुदेव
   (4) जीवन विद्या का आलोक केन्द्र–देव संस्कृति विश्वविद्यालय
   (5) शांतिकुंज और उसकी उपलब्धियाँ
   (6) ब्रहमवर्चस शोध संस्थानः प्रयोजन और प्रयास
   (7) अखण्ड ज्योति (मासिक पत्रिका)
   (8) प्रज्ञा अभियान पाक्षिक
   (9) युग निर्माण योजना (मासिक पत्रिका)
3. चुने हुए विषय की अभिरूचि की परीक्षा के लिए विषय से सम्बन्धित साहित्य उपयोगी होगा।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

विशेष– लिखित परीक्षा में चुने गये विद्यार्थी ही साक्षात्कार के योग्य माने जायेंगे।

स्नातक पाठ्यक्रम–

4. स्नातक पाठ्यक्रमों में प्रवेश पाने के लिए 10+2 की मैरिट तथा साक्षात्कार आधार होगा। इन आवेदकों की लिखित प्रवेश परीक्षा होगी।

प्रवेश–परीक्षा हेतु आवेदन पत्र

नोट–

1. प्रवेश–परीक्षा में सम्मिलित होने के लिए अधिकतम दो विषयों में आवेदन कर सकते है। प्राथमिकता के आधार पर क्रमांक 1 व 2 विषयों का उल्लेख करें। एक आवेदन के लिए रु.200/– एवं दो आवेदन के लिए रू.300/– का बैक ड्राफ्ट कुलसचिव, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शांतिकुंज, हरिद्वार किसी भी राष्ट्रीयकृत बैंक द्वारा जारी आवेदन पत्र के साथ संलग्न करें।

1. पाठ्यक्रम जिसमें प्रवेश लेना है–
   1.. 2..
2. केन्द्र का नाम, जहाँ प्रवेश परीक्षा चाहते है
   1.. 2..

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(दे.सं.वि.वि., नौयडा, जयपुर, पटना, लखनऊ, राजनांदगाँव, भोपाल)

अभ्यर्थी केवल दो परीक्षा का चयन कर सकता है उनमें से कोई एक केन्द्र विश्वविद्यालय द्वारा आवंटित किया जायेगा।

2. ड्राफ्ट का विवरण– ड्राफ्ट सं ....

दिनांक ....

मूल्य ....

बैंक का नाम ....

3. परीक्षार्थी का पूरा नाम..............................

(हाईस्कूल प्रमाणपत्र के अनुसार)

4. पिता का पूरा नाम ....

5. आयु : वर्ष..................माह..................दिन..................(31 मार्च तक)

6. हाईस्कूल प्रमाण–पत्र के अनुसार जन्म–तिथि (प्रमाण–पत्र संलग्न करें) :

अंकों में.............................. शब्दों में..............................

7. स्थाई पता..............................

वर्तमान पता..............................

....

फोन नं.............................. फोन नं..............................

8. अनुसूचित जाति/जनजाति/पिछड़ी जाति/महिलाएँ/भू.पू. सैनिकों के आश्रित/विकलांग व्यक्ति/स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के आश्रित (प्रमाण–पत्र संलग्न करें।) ....

10. शैक्षणिक योग्यता (प्रमाण–पत्र तथा अंकपत्रों की प्रमाणित प्रतिलिपि संलग्न करें।)

उत्तीर्ण परीक्षा	बोर्ड/वि.वि.	वर्ष	श्रेणी	प्रतिशत	विषय
हाईस्कूल					
इण्टरमीडिएट					
स्नातक					
स्नातकोत्तर					
अन्य योग्यताएं					

मैं घोषणा करता/करती हूँ कि मेरी जानकारी और विश्वास के अनुसार ऊपर दिया गया विवरण बिल्कुल सही है।

पिता/संरक्षक के हस्ताक्षर अभ्यर्थी के हस्ताक्षर

दिनांक :..............................

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम विवरण

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम परम्परागत शिक्षा पद्धति से भिन्न है। यह छात्रोन्मुखी पद्धति है और पठन–पाठन की प्रक्रिया में विद्यार्थी सक्रिय रूप से भागीदार होता है। अधिकांश शिक्षा आमने–सामने संप्रेषण के बजाय दूरस्थ शिक्षा माध्यमों से दी जाती है। शिक्षा प्रदान करने के लिए विश्वविद्यालय बहु–माध्यम दृष्टिकोण का उपयोग करता है, जिसमें निम्नलिखित शामिल हैं–

(क) स्वशिक्षण लिखित सामग्री –

सैद्धांतिक और प्रयोगात्मक दोनों प्रकार के कार्यक्रमों के लिए विद्यार्थियों को अध्ययन सामग्री दी जाती है। यह अध्ययन सामग्री विद्यार्थी को संबंधित अध्ययन केंद्र से स्वयं प्राप्त करनी होगी।

(ख) सहायक दृश्य–श्रव्य सामग्री –

अध्ययन केन्दों में विशिष्ट सत्र के अंतर्गत मल्टीमीडिया के द्वारा जानकारी प्रदान की जाती है।

(ग) परामर्श सत्र –

परामर्श सत्रों का आयोजन अध्ययन केन्द्र द्वारा तैयार किए गए कार्यक्रमों के अनुसार किया जाता है। ये अध्ययन केन्द्रों पर आयोजित किए जाते हैं।

(घ) क्रियात्मक कार्य –

कुछ कार्यक्रमों में क्रियात्मक कार्य का समावेश है। जिनके लिए समय–सारणी अध्ययन केन्द्र दी जाती है। इसकी सुविधाएँ अध्ययन केन्द्रों पर उपलब्ध हैं। क्रियात्मक कार्यों में विद्यार्थियों की उपस्थिति अनिवार्य है।

(ड.) प्रायोगिक कक्षा –

योग के पाठ्यक्रम के प्रत्येक सत्र में 20 दिन की प्रायोगिक कक्षाएँ तथा स्वास्थ्य संरक्षण में 6 दिन की प्रायोगिक कक्षाएँ विभिन्न केन्द्रों में आयोजित की जायेंगी। इनमें न्यूनतम 80 प्रतिशत उपस्थिति अनिवार्य है।

वह विद्यार्थी जो किसी अध्ययन केन्द्र से नही जुड़े है उन्हें अपने खर्च पर देवसंस्कृति विश्वविद्यालय में आकर प्रायोगिक सत्र, करना होगा।

(च) साधना सत्र –

देव संस्कृति विश्वविद्यालय साधारण शैक्षणिक संस्थानों से भिन्न है। यह आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक व्यापकता में विस्तीर्ण है। विभिन्न अध्ययन केन्द्रों से जुड़े विद्यार्थियों के लिए विशेष्ज्ञ साधना शिविरों का आयोजन विश्वविद्यालाय परिसर में किया जाएगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(छ) मूल्यांकन पद्धति –

इस कार्यक्रम में द्विस्तरीय मूल्यांकन पद्धति है–

(1) सत्रीय कार्य (2) सत्रांत परीक्षाएँ

सत्रीय कार्य के माध्यम से सतत् मूल्यांकन किया जाता है जो अध्यापक जाँच के माध्यम से होता है। प्रत्येक विद्यार्थी को सत्रीय कार्य संबंधित अध्ययन केन्द्र में जमा करना आवश्यक है। सत्रीय कार्यों के लिए पूर्णांकों का 20 प्रतिशत तक अंक निर्धारित है। सत्रांत परीक्षाएँ विभिन्न अध्ययन केन्द्रों पर में आयोजित की जाती हैं। सत्रीय कार्य तथा सत्रांत परीक्षा में विद्यार्थी को प्रत्येक पत्र में 50 प्रतिशत अंक प्राप्त करना अनिवार्य है।

व्यक्तित्व परिष्कार

(प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम –अवधि 6 माह)

इस कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य मनुष्य को रचनात्मक एवं विधेयात्मक जीवन दिशा प्रदान करना है। मनुष्य के व्यक्तिव में विचारों का महत्वपूर्ण स्थान है। इसझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी तथा बहादुरी से जीवन में सफलता प्राप्त की जा सकती है। आज के भौतिकवादी जीवन में यह कार्यक्रम जीवन प्रबंधन में सहायक सिद्ध होगा।

- यह कार्यक्रम व्यक्ति को विधेयात्मक दिशा प्रदान करेगा।
- आध्यात्म जीवन शैली की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालेगा।
- क्षमता विकास हेतु तकनीकों की जानकारी प्रदान करेगा।
- सामाजिक परामर्शदता इस कार्यक्रम के माध्यम से सामाजिक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत कर सकेंगे।

पत्र	विषय	प्रत्येक प्रश्न पत्र के लिए निश्चित अंक	सत्रीय कार्य के लिए निश्चित अंक
प्रथम पत्र	रचनात्मक जीवन की कला	80	20
द्वितीय पत्र	मानव विकृतियाँ : निदान एवं समाधान	80	20
तृतीय पत्र	आध्यात्मिक जीवन	80	20
चतुर्थ पत्र	परियोजना कार्य	100	–

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिवार प्रबंधन

(प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम – अवधि 6 माह)

समाज की मूल इकाई परिवार है। पारिवारिक सामंजस्यता, नारी जागरण तथा बालकों का समग्र विकास समाज को दृढ़ता प्रदान करता है। वर्तमान समय में पारिवारिक विघटन के कारण विभिन्न प्रकार की सामाजिक समस्याएँ उत्पन्न हो रहीं है। आज की आवश्यकता यह है कि इस संस्था को दृढ़ किया जाये तथ जनमानस को इस हेतु शिक्षित किया जाये।

- यह कार्यक्रम युवा नर–नारी को अपनी परिवार प्रबंधन की दिशा प्रदान करेगा।
- भारतीय नारी इस कार्यक्रम के माध्यम से अपने जीवन के विविध आयामों की सुव्यवस्था के प्रति जागरूक हो सकेगी।
- सामाजिक उत्थान से संबंधित कार्यसेवियों के लिए यह कार्यक्रम उपयोगी रहेगा।
- इस कार्यक्रम के माध्यम से गैर सरकारी संस्थानों तथा सामाजिक संगठनों में रोजगार के अवसर प्राप्त हो सकते हैं।

पत्र	विषय	प्रत्येक प्रश्न पत्र के लिए निश्चित अंक	सत्रीय कार्य के लिए निश्चित अंक
प्रथम पत्र	परिवार निर्माण	80	20
द्वितीय पत्र	भारतीय नारी	80	20
तृतीय पत्र	बाल निर्माण	80	20
चतुर्थ पत्र	परियोजना कार्य	100	–

भारतीय संस्कृति

(प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम – अवधि 6 माह)

"सा प्रथमा संस्कृतिर्विष्ववारा" की उक्ति यह सिद्ध करती है कि भारतीय संस्कृति ही विश्व की सर्वप्रथम संस्कृति है। इस संस्कृति की विशेषता यह है कि वह आध्यात्मिक जीवन की ओर मनुष्य को प्रेरित करती है तथा शांतिपूर्वक सह अस्तित्व की दिशा निर्धारित करती है। वर्तमान समय की विभिन्न समस्याओं के समाधान इस संस्कृति में निहित हैं।

- इस कार्यक्रम के माध्यम से भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्वों की जानकारी प्राप्त होगी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

- भारतीय संस्कृति के विश्वव्यापी विस्तार एवं इसके योगदान के महत्व को समझा जा सकेगा।
- प्रतियोगिता परीक्षा देने वाले प्रतिभागियों में ज्ञान का संवर्धन हो सकेगा।
- यह पाठ्यक्रम आध्यात्मि पर्यटन के क्षेत्र में रोजगार प्रदान करने हेतु सहायक सिद्ध होगा।

पत्र	विषय	प्रत्येक प्रश्न पत्र के लिए निश्चित अंक	सत्रीय कार्य के लिए निश्चित अंक
प्रथम पत्र	भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्व	80	20
द्वितीय पत्र	भारतीय संस्कृति के विश्वव्यापी विस्तार	80	20
तृतीय पत्र	तीर्थ के विविध आयाम	80	20
चतुर्थ पत्र	परियोजना कार्य	100	–

योग प्रवेशिका

(प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम – अवधि 6 माह)

योग व्यक्ति, परिवार एवं सामाजिक समुदाय के स्वस्थ, सुखी व समुन्नत जीवन का रहस्य है। वैज्ञानिक अनुसंधानों से यह प्रमाणित हो चुका है कि योग जीवन के सभी पहलुओं को स्वस्थ एवं सुविकसित कर सकता है। योग मानवीय जीवन के सभी आयामों को मूल्यवान बनाने की सर्वोत्तम विधि है।

- इस कार्यक्रम के माध्यम से व्यक्ति शारीरिक स्वास्थ्य एवं मानसिक प्रसन्नता की विभिन्न तकनीकों का ज्ञान प्राप्त कर सकता है।
- यह कार्यक्रम यौगिक चिकित्सा में रोजगार प्राप्त करने के इच्छुक व्यक्तियों के लिए सहायक सिद्ध होगा।
- वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति में भविष्य तलाशने वाले व्यक्तियों के लिए यह उपयोगी होगा।
- सामाजिक स्वास्थ्य कार्यक्रम में कार्यरत व्यक्तियों के लिए यह सहायक होगा।

पत्र	विषय	प्रत्येक प्रश्न पत्र के लिए निश्चित अंक	सत्रीय कार्य के लिए निश्चित अंक
प्रथम पत्र	योग परिचय	80	20
द्वितीय पत्र	हठ योग	80	20
तृतीय पत्र	योग एवं स्वास्थ्य	80	20
चतुर्थ पत्र	परियोजना कार्य	100	–
पंचम पत्र	प्रायोगिक कार्य	100	–

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वास्थ्य संरक्षण

(प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम – अवधि 6 माह)

मनुष्य के जीवन की अनिवार्य आवश्यकता अपने शरीर को स्वस्थ रखना है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य आयुर्वेद के प्रति जागरूकता एवं समग्र स्वास्थ्य (शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक और सामाजिक स्वास्थ्य) के प्रति जन सामान्य को लाभान्वित कर जाग्रत करना है, जिसके माध्यम से व्यक्ति अपनी क्षमताओं का पूर्ण उपयोग करके अपने श्रेष्ठ लक्ष्यों को प्राप्त कर सकें।

- इस पाठ्क्रम के माध्यम से आप आयुर्वेद, वैकल्पिक चिकित्सा, प्राकृतिक चिकित्सा योग एवं यज्ञोपैथी (यज्ञ द्वारा चिकित्सा) जैसे विषयों का ज्ञान प्राप्त कर अपने स्वास्थ को सुधार सकते हैं।
- आप एक कुशल स्वास्थ्य संरक्षक बन, जन सामान्य को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक कर सकते है।
- प्रकृति प्रदत्त वनस्पतियों जड़ी–बूटियों एवं घरेलू मसालों का औषधीय उपयोग कर रोग निवारण कर सकते हैं।
- आधुनिक चिकित्सा पद्धति के दुष्परिणाम को देखते हुए, लोगों को पुनः वनौषधियों के सेवन में रूचि उत्पन्न कर उन्हें स्वस्थ रख सकते हैं।

पत्र	विषय	प्रत्येक प्रश्न पत्र के लिए निश्चित अंक	सत्रीय कार्य के लिए निश्चित अंक
प्रथम पत्र	स्वास्थय प्रबंधन	80	20
द्वितीय पत्र	शरीर संरचना एवं वैकल्पिक उपचार विधियाँ	80	20
तृतीय पत्र	वानस्पतिक द्रव्यों का औषधीय उपयोग	80	20
चतुर्थ पत्र	परियोजना कार्य	100	–
पंचम पत्र	प्रायोगिक कार्य	100	–

योग विज्ञान

(डिप्लोमा पाठ्यक्रम – अवधि 1 वर्ष)

असंतुलित दिनचर्या, अकर्मण्य जीवन शैली एवं तकनीकी क्रांति से उपजे विभिन्न शारीरिक मानसिक व्याधियाँ मानव जीवन के अस्तित्व के लिए संकट बन गई हैं। योग ऋषि–मुनियों, साधु संतों के अनुभवी जीवन का सार है। यह एक साधना पद्धति ही नहीं अपितु एक व्यवहारिक विज्ञान भी है। इस कार्यक्रम के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

माध्यम से समकालीन योगियों के सूत्रों को भी जानने में सहयोग मिलेगा।

- इस कार्यक्रम के माधयम से व्यक्ति योग प्रशिक्षक के पद पर स्कूल, कॉलेज एवं शैक्षणिक संस्थानों में कार्य कर सकता हैं
- विभिन्न व्यावसायिक संस्थानों में योग प्रशिक्षक के रूप में कार्य के अवसर प्राप्त हो सकते हैं।
- अस्पताल एवं अन्य चिकित्सा केन्द्रों में रोजगार करने प्राप्त करने हेतु सहायक सिद्ध हो सकता है।
- सामाजिक क्षेत्र में इस कार्यक्रम के द्वारा कार्य किया जा सकता है।

पत्र	**विषय**	**प्रत्येक प्रश्न पत्र के लिए निश्चित अंक**	**सत्रीय कार्य के लिए निश्चित अंक**
प्रथम सत्र			
प्रथम पत्र	योग के आधारभूत तत्व	80	20
द्वितीय पत्र	हठ योग परिचय	80	20
तृतीय पत्र	शरीर क्रिया विज्ञान	80	20
चतुर्थ पत्र	वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियाँ	100	–
पंचम पत्र	क्रियात्मक कार्य	100	–
द्वितीय सत्र			
प्रथम पत्र	योग सूत्र का परिचयात्मक अध्ययन	80	20
द्वितीय पत्र	योग एवं स्वप्रबन्धन	80	20
तृतीय पत्र	स्वस्थवृत्त एवं आहार चिकित्सा	80	20
चतुर्थ पत्र	परियोजना कार्य	100	–
पंचम पत्र	क्रियात्मक कार्य	100	–

नियमावली

- **प्रवेश** – आवेदक एक सत्र में केवल एक ही पाठ्यक्रम में प्रवेश प्राप्त कर सकता है।
- **अस्थायी प्रवेश** – जो आवेदक अर्हक परीक्षा दे रहें हैं, वे भी दूरस्थ शिक्षा के विविध कार्यक्रमों के लिए आवेदन कर सकते हैं। विद्यार्थियों को यथाशीघ्र अर्हक परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपरांत प्रमाण पत्र जमा कराना होगा अन्यथा उनका प्रवेश रद्द कर दिया जायेगा।
- **अपूर्ण आवेदन पत्र** – अपूर्ण आवेदन पत्र आवेदकों को बिना सूचित किए अस्वीकृत कर दिये जाएगे। अतः आवेदकों को सलाह दी जाती है कि वे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सम्बद्ध खाने को ध्यानपूर्वक भरें और सभी अनिवार्य प्रमाणपत्रों की सत्यापित प्रतियाँ संलग्न करें। विश्वविद्यालय के अन्य कार्यालयों में भेंजे गए आवेदन पत्रों पर विचार नही किया जायेगा।

- **पाठ्यक्रम की अवधि** – प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम पूरा करने की न्यूनतम अवधि 6 माह है तथा अधिकतम अवधि 1 साल 6 माह है। विद्यार्थी को परीक्षा देने के लिए 3 सत्र दिए जाएगें। इस अवधि में उससे कोई अतिरिक्त शुल्क नही लिया जाएगा। डिप्लोमा पाठ्यक्रम पूरा करने की न्यूनतम अवधि 1 वर्ष है तथा अधिकतम अवधि 3 वर्ष है। विद्यार्थी को परीक्षा देने के लिए 6 सत्र दिए जाएगें। इस अवधि में उससे कोई अतिरिक्त शुल्क नहीं लिया जाएगा।
- **पुनः प्रवेश** – जो विद्यार्थी स्वीकृत अधिकतम अवधि के भीतर अपना कार्यक्रम पूरा नही कर पाते, वे अतिरिक्त 1 वर्ष के लिए पुनः प्रवेश ले सकते हैं। विद्यार्थी को यथानुपात आधार पर प्रति पाठ्यक्रम के लिए शुल्क अदा करना होगा।
- **शुल्क की वापसी** – एक बार जमा किया गया शुल्क किसी भी परिस्थिति में वापस नही किया जाएगा। इसे विश्वविद्यालय के किसी अन्य कार्यक्रम के साथ भी समायोजित नही किया जाएगा।
- **पाठ्यक्रम सामग्री** – विद्यार्थी को यह सामग्री तथा कार्यक्रम निर्देशिका अध्ययन केंद्र से स्वयं प्राप्त होगी
- **परिचय पत्र** – परिचय पत्र अध्ययन केंद्र द्वारा छात्रों को जारी किया जाता है। छात्रों को अध्ययन केन्द्रों में परामर्श सत्र में भाग लेने तथा सत्रांत परीक्षा से संबंधित विभिन्न गतिविधियों में भागीदारी के लिए इसे अपने साथ रखना आवश्यक है।

प्रथम सम्पर्क कैसे करें?

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के विद्यार्थी गन्तव्य तक पहुँचकर एक पारिवारिक गोष्ठी करें। तत्पश्चात् गायत्री शक्तिपीठ के स्थानीय ट्रस्टी या गायत्री परिवार प्रतिनिधि के साथ विभिन्न संघ–संस्था, विद्यालय, सरकारी कार्यालय, स्कूल–कॉलेज तथा विश्वविद्यालय में अपनी टोली के साथ जाएँ। आप रोटरी क्लब, विविध एसोशिएशन, भारत विकास परिषद, पब्लिक सेक्टर जैसी संस्थाओं से स्थानीय गायत्री परिजनों के सहयोग से सम्पर्क कर सकते हैं। पूर्व से निर्धारित सभी कार्यक्रम कुशलतापूर्वक करें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपने पास देव संस्कृति विश्वविद्यालय एवं यहाँ के सभी विभागों की जानकारियाँ तथा शान्तिकुंज का ब्रोशर व कुछ साहित्य अवश्य रखें और उन संघ–संस्थाओं में जाकर यह सामग्रियाँ भेंट करके अपनी बात बताएँ। आप क्या–क्या कर सकते हैं और कैसे कार्यक्रम दे सकते हैं, स्पष्ट रूप से उन्हें बताएँ और कार्यक्रम आयोजन हेतु विनम्रतापूर्वक् आग्रह करें।

योग शिविर, अन्य कार्यक्रम, प्रशिक्षण व परामर्श शिविर का आयोजन कम से कम सुविधाओं में करने की मनःस्थिति बनाएँ। सुविधा अच्छी हो या कम, अच्छी प्रस्तुति देने की कोशिश करें।

आप निम्नांकित कार्यक्रम कर सकते हैं–

1. योग प्रशिक्षण– समयावधि, आवश्यक व्यवस्थाओं एवं सहमति के अनुसार,
2. योग चिकित्सा एवं परामर्श शिविर,
3. कार्यशाला तथा Presentation निम्न विषयों पर –
   Role of yoga in day of day life, Yogic Relaxation, Stress Management, Time Management, Life Management, Diet Management, Health Management,

www.vicharkrantibooks.org

योग तथा वैकल्पिक चिकित्सा परामर्श देते समय ध्यान दें।

- योग व प्राकृतिक चिकित्सा हेतु आवश्यक सामग्री, उपकरण व पुस्तकें अपने पास सदैव रखें।

- योग व प्राकृतिक चिकित्सा परामर्श कार्य में सुगमता–सुलभता हो, इसके लिए विवरण पत्रक साथ रखें। इसमें शांतिकुंज व देव संस्कृति विश्वविद्यालय का पता व योग आरोग्य पॉलीक्लीनिक के सम्पर्क नम्बर भी अंकित हों। इसकी फोटो प्रतियाँ करा लें। जो भी व्यक्ति परामर्श हेतु आयें, उनका नाम, पता, आयु तथा रोग लिखने का कॉलम इसमें होना चाहिए। परामर्श हेतु चिकित्सा विधि व कोई आयुर्वेदिक औषधि का सुझाव देना हो तो उस पर लिख दें। इससे वह व्यक्ति जब दुबारा आएगा तो आपको शीघ्रता से उसकी जानकारी मिलेगी और कभी वह देव संस्कृति विश्वविद्यालय आना चाहे तो यहाँ का पता और सम्पर्क नम्बर भी उसके पास रहेगा।

- योग प्रशिक्षण और योग चिकित्सा परामर्श का समय अलग–अलग रखें। परामर्श का समय दिन में या सांयकाल में उपयुक्त होता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कार्यक्रम संचालन करते समय ध्यान देने योग्य प्रमुख बातें–

- कार्यक्रम की अवधि और दिनों की सरंचना के आधार पर योग (आसन, प्राणायाम, ध्यान आदि) पैकेज पहले से तैयार कर लें।
- इस पैकेज में प्रज्ञायोग, प्राणाकर्षण, प्राणायाम पर विशेष ध्यान दें।
- प्रत्येक कार्यक्रम के अन्त में लोगों से फीडबैक अवश्य लें। इससे अपनी कमियाँ पता चलेगी तथा आगे और सुधार हो सकेगा। लोगों को वास्तव में जो चाहिये, आप वह दे सकेंगे। आपका अपना विकास भी सम्भव हो सकेगा।
- अपने समूह के व्यक्तियों से भी आप अपनी प्रस्तुति के बारे में फीडबैक लें। यह कार्य प्रवास स्थल पर आकर करें।
- अगले हफ्ते के कार्यक्रमों की पूरी रूपरेखा बनाकर सदैव साथ रखें। इससे तारीख/समय, विषय, स्थान की सुस्पष्टता रहेगी तथा भूल–चूक की गम्भीर हानियों से बच सकेंगे।

awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

हमारी इण्टर्नशिप : एक अभिनव परम्परा

वर्ष 2002 से ही इण्टर्नशिप कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया था। प्रथम बैच की इण्टर्नशिप टोलियाँ जुलाई, 2003 में विश्वविद्यालय से निकली थीं। मार्च, 2009 तक इण्टर्नशिप के 12 कार्यक्रम सम्पन्न हो चुके हैं और 454 टोलियों द्वारा 11,000 से अधिक योग शिविर तथा 20,000 से अधिक अन्य विविध छोटे–बड़े कार्यक्रम देश के 20 से अधिक राज्यों के शहरी व ग्रामीण अंचलों में सम्पन्न कराए। देखा गया है कि इण्टर्नशिप के दौरान छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व में चमत्कारिक परिवर्तन आता है, उनका आशातीत आत्मबल बढ़ता है और वह जीवन व समाज के यथार्थ को निकट से देखते व उससे काफी कुछ सीखते हैं।

- जिसे विषय पर आप Presentation देने जा रहे हैं, उसके बारे में अपने साथियों के बीच पहले ही खुलकर चर्चा करें। ऐसा करने से नयी–नयी धारणा, तर्क एवं आयाम सामने आयेंगे, जो Presentation को और अधिक प्रभावकारी बना देंगे।
- अगले एक हफ्ते के कार्यक्रमों की रूपरेखा पहले से बना कर रखें।
- Presentation की प्रथम Slide में देव संस्कृति विश्वविद्यालय व अपने पाठ्यक्रम का परिचय दें और अपने बारें में संक्षेप में बताएँ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

- Presentation देते समय संस्कृत के श्लोक व सूत्र, अंग्रेजी के कथन तथा महापुरुषों के उद्‌गारों को जोड़ने का प्रयास करें, इससे विषयवस्तु की गहनता बढ़ती है।
- Presentation देने वाले को पोशाक व वस्त्र विन्यास (Dress setting) की गरिमा पर ध्यान रखना चाहिए। गायत्री मन्त्र का दुपट्टा कन्धे पर अवश्य डालें।
- आत्मविश्वास के साथ प्रस्तुति दें, अपनी गु/सत्ता का स्मरण करते हुए उनकी शक्ति पर विश्वास रखें, Presentation बहुत अच्छा होगा।
- Presentation देते समय शरीर की मुद्रा (Posture) तथा हावभाव (Zesture) पर भी ध्यान दें। शरीर को बहुत ज्यादा हिलाने, अनावश्यक मुस्कुराने, अस्तव्यस्त दिखने तथा अस्थिरता से बचने का प्रयास करें। आपकी दृष्टि श्रोताओं (Audiance) की तरफ होनी चाहिए।
- जिस विषय पर आपकी जानकारी तथा ज्ञान कम है उस विषय की गहराई में अधिक जाने से बचें।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

प्रस्तुति के अन्त में प्रश्नोत्तरी के लिए कुछ समय अवश्य रखें। प्रस्तुति का समापन शान्तिपाठ तथा किसी लोकप्रिय प्रार्थना के साथ करें।

- प्रस्तुति के अन्म में सभी प्रतिभागियों को शान्तिकुंज तथा देव संस्कृति विश्वविद्यालय आने का आमन्त्रण दें और संक्षेप में यहाँ की गतिविधियों की जानकारी दें। सभी से अपनी Website, www.dsvv.org तथा www.awgp.org पर विजिट करने का आग्रह अवश्य करें।

Presentation की तैयारी कैसे करें?

- Presentation तैयार करने के लिए पूरे समूह के विद्यार्थी बैठकर चर्चा करें।
- विश्वविद्यालय में जब इन्टर्नशिप प्रशिक्षण चलता है, उस अवधि में समय निकालकर लाइब्रेरी में बैठकर पुस्तकें एवं अन्य सामग्री तथा इन्टरनेट का प्रयोग कर अच्छा Presentation तैयार करें। इसमें अनुभवी वरिष्ठों को सहयोग भी लें।
- यह Presentation आप अपने ही कोर्स की पुस्तकों के सहयोग से भी तैयार कर सकते हैं, क्योंकि यह सब विषय किसी न किसी रूप में आपके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कोर्स में उपलब्ध हैं।

- कोशिश करें कि Presentation कम्प्यूटर से Power Point विधि से तैयार करें। ऐसा Presentation अच्छा और प्रभावशाली होता है।
- Presentation तैयार करते समय समयावधि पर विशेष ध्यान दें। Pres entation कम से कम समय का, लेकिन प्रभाव हो।

प्रभावी Presentation कैसे दें?

- Presentation देने का दिन निर्धारित करें। बिना तैयारी का Presentation कम प्रभावी हो सकता है।
- जिस स्थान व संस्था में प्रस्तुति देना हो उस संस्था का परिचय व मूलभूत जानकारियाँ अवश्य प्राप्त करें। इसका बहुत प्रभाव पड़ता है और उस संस्था में आपकी स्वीकार्यता बढ़ती है।

☛ गायत्री परिवार के जिन स्वजनों/शक्तिपीठों ने आपका विशेष ध्यान रखा हो और कार्यक्रमों में विशेष सहयोग किया हो तथा आप जिन्हें माननीय कुलाधिपति जी का सराहना-पत्र भिजवाना उचित समझते हो, का नाम व पूरा पता, सम्पर्क नं. सहित पृथक् शीट पर तैयार करके साथ लाएँ।

☛ विद्यार्थी कृपया विशेष ध्यान रखें– कोई भी शिकायत होने या कठिनाई आने पर आप विश्वविद्यालय के जनसम्पर्क, प्रसार एवं सेवायोजन विभाग को सूचना दें। सीधे मा. कुलाधिपति जी या कुलपति महोदय अथवा शांतिकुंज के प्रमुखों को सूचना देने से उनके कार्य में व्यवधान आता है। विभाग द्वारा समस्या का निराकरण कराया जायेगा तथा आवश्यकतानुसार वरिष्ठजनों को अवगत कराया जाएगा।

☛ मंच पर लगाने के लिए एक "बैनर" प्रत्येक टोली को दिया जा रहा है, वापसी पर उसे जनसम्पर्क विभाग में जमा कर दें।

☛ देव संस्कृति जनसंचार कार्यक्रम की पूरी योजना की मार्गदर्शिका आपको दी जा रही है। कृपया अभियानपूर्वक इसके सदस्य बनाकर लायें।

☛ इण्टर्नशिप के दौरान कहीं कोई बड़ा आयोजन बनता है, जिसमें आपको लगता है कि विश्वविद्यालय से सीनियर्स की सेवा की जरूरत है तो कृपया समय रहते जनसम्पर्क विभाग को सूचित करें। व्यवस्था कराने का यथासम्भव प्रयास किया जाएगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

☛ विश्वविद्यालय के पूज्य कुलपिता के जन्म शताब्दी समारोहों (जे.एस.एस.) के विषय में दिशा–निर्देशनों का सेट प्रत्येक विद्यार्थी को दिया गया है। कृपया अध्ययन करके क्षेत्रों में इन कार्यक्रमों की चर्चा करें। इण्टर्नशिप ट्रेनिंग के दौरान शांतिकुंज प्रतिनिधियों द्वारा दिए गए मार्गदर्शनों को विशेष रूप से नोट करें हृदयगम करेंऔर कार्य स्थल पर उनका उपयोग करने का कष्ट करें।

☛ विश्वविद्यालय के ऐसे प्रवक्ताओं, जो यहाँ के विद्यार्थी रहे हैं और उनने स्वयं सफल इण्टर्नशिप की है, द्वारा ट्रेनिंग के दौरान दिए गए 'टिप्स' को विशेष रूप से अमल में लाने का प्रत्येक इण्टर्नशिप विद्यार्थी से आग्रह है।

☛ जनसम्पर्क, प्रसार एवं सेवायोजन विभाग द्वारा प्रत्येक इण्टर्नशिप स्थल सम्बन्धी शक्तिपीठ को जो–जो सामग्री एवं पत्र भेजे गए हैं, उन्हें नोटिस बोर्ड पर कृपया समस्त विद्यार्थी पढ़ लें, अवगत हो लें तथा मुख्य बिन्दु नोट भी कर लें। सभी जानकारियाँ होने पर आपको कार्य–व्यवहार में सुविधा होगी।

इण्टर्नशिप पर जाने वाले छात्र–छात्राओं के लिए अन्य उपयोगी सुझाव

- यदि आपके पास MP3 (प्लेयर सुविधायुक्त) हो, तो इसमें गायत्री मन्त्र, महामृत्युन्जय मन्त्र, बैकराउण्ड इन्स्ट्रूमेन्टल म्युजिक सुरक्षित रखें, जो प्रशिक्षण तथा कार्यक्रम संचालन के लिए उपयोगी होगा। इस सुविधा के मोबाईल सेट का भी उपयोग कर सकते हैं।
- इण्टर्नशिप के दौरान अखबारों व पत्र–पत्रिकाओं में आपके द्वारा संचालित कार्यक्रम की कोई खबरें छपी हो तो उसकी कटिंग सुरक्षित रखें। यह प्रेस कतरने रिपोर्ट बनाते समय काम आयेंगी। टी.वी. पर प्रसारण का विवरण भी रिपोर्ट में दें।
- जिस संघ, संस्था तथा स्थल पर कार्यक्रम का आयोजन करें उनके पूरे पते नोट कर लें। इससे आगामी दिनों में उनसे सम्पर्क साधने में मदद मिलेगी तथा विश्वविद्यालय की ओर से आभार–पत्र भेजा जा सकेगा।
- सहयोग रसीद बुक अपने पास हमेशा रखें। आय–व्यय का हिसाब पारदर्शी रखें। इसे सुरक्षित रखें और वापस आते ही कृपया जमा करें।
- क्षेत्र में सम्पर्क में आने वाले प्रमुख साहित्यकारों, कवियों के नाम, पते, फोन, ई.मेल, फैक्स आदि का विवरण कृपया पृथक् शीट पर लिखकर लायें। ऐसा करके शान्तिकुंज द्वारा देश के साहित्यकारों को परम पूज्य गुरुदेव के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

साहित्यकार स्वरूप से जोड़ने की योजना को मूर्त रूप देने में आप सहयोगी बनेंगे।

ऐसे प्रशासनिक व पुलिस अधिकारी तथा विशिष्ट जनप्रतिनिधि जो आपके कार्यक्रमों में तथा विश्वविद्यालय/युग निर्माण मिशन में रूचि लें, के नाम व पते पूर्ण विवरण के साथ पृथक् शीट पर एकत्र कर लें और विश्वविद्यालय के जनसम्पर्क विभाग में उपलब्ध करा दें। इसी तरह कार्यक्रम कराने वाली संस्थाओं के प्रमुखों के भी विवरण लाएँ। विश्वविद्यालय से इन विशिष्टजनों को शुभकामना पत्र भेजने और उन्हें सम्पर्क में बनाए रखने में इससे सहायता मिलेगी।

हर निमिष उनका साथ रहा। अंतिम बीस वर्ष शांतिकुंज या सूक्ष्म शरीर से हिमालय में बीते। ऋषि परम्परा का बीजारोपण, सिद्ध तीर्थ गायत्री तीर्थ का निर्माण एवं वैज्ञानिक अध्यात्मवाद के लिये संकल्पित ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान व समर्थक साहित्य का लेखन इसी अवधि में हुआ। जीवन भर उनने लिखा, हर विषय को स्पर्श किया एवं जीवन मूरि की तरह भाव–संवेदना को अनुप्राणित करने वाली अपनी लेखनी साधना की। स्वयं के बारे में वे कहते थे – 'न हम अखबार नवीस है, न बुक सेलर, हम तो युगदृष्टा हैं। हमारे ये विचार, क्रान्ति के बीज हैं। ये फैल गए तो सारी विश्व–वसुधा को हिलाकर रख देंगे।'

गद्य ही नहीं, पद्य पर भी उनकी उतनी ही पकड़ थी। हजारों को प्रेरित कर उनने सृजनात्मक काव्य लिखवाया। लेखनी उनकी पन्नों के माध्यम से करोड़ों व्यक्तियों के जीवन को बदलती चली गयी। प्रायः श्रेष्ठ लेखक, श्रेष्ठ वक्ता नहीं होते। किन्तु उनकी ओजस्वी अमृतवाणी ने लाखों का कायाकल्प कर दिया। करुणा छलकाती उनकी वाणी, अंतः को स्पर्श करती हुई जीवन–शैली बदलने को प्रेरित रहती प्रतीत होती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

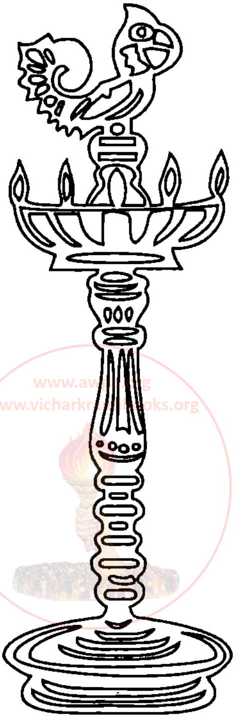

गायत्री तीर्थ शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

फोन-01334-260602,260309, 260328 फैक्स 260688

ईमेल- shantikunj@awgp.org

बेवसाइट-www.awgp.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।
- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्‌घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्‌बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्‌भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at

www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org